प्रकाशकः
श्रीमन्त सेठ शितावराय लक्ष्मीचन्द्र,
जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय,
अमरावती [वरार]



मुद्रक—
टी. एम्. पाटील,
मॅनेजर
सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती [वरार]

THE

ṢAṬKHAṆḌĀGAMA

OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL. III

DRAVYA-PRAMĀṆĀNUGAMA

Edited

with introduction, translation, notes and indexes

BY

HIRALAL JAIN, M A., LL B.,
C P Educational Service, King Edward College, Amraoti

ASSISTED BY

Pandit **Phoolchandra**
Siddhānta Shāstrī

Pandit **Hiralal** Siddhānta Shastrī,
Nyāyatīrtha.

With the co-operation of

Pandit **Devakinandana,**
Siddhānata Shāstrī

Dr. A N. Upadhye,
M. A., D Litt.

Published by

Shrimanta Seth Shitabrai Laxmichandra,

Jaina Sāhitya Uddhāraka Fund Kāryālaya,

AMRAOTI (Berar)

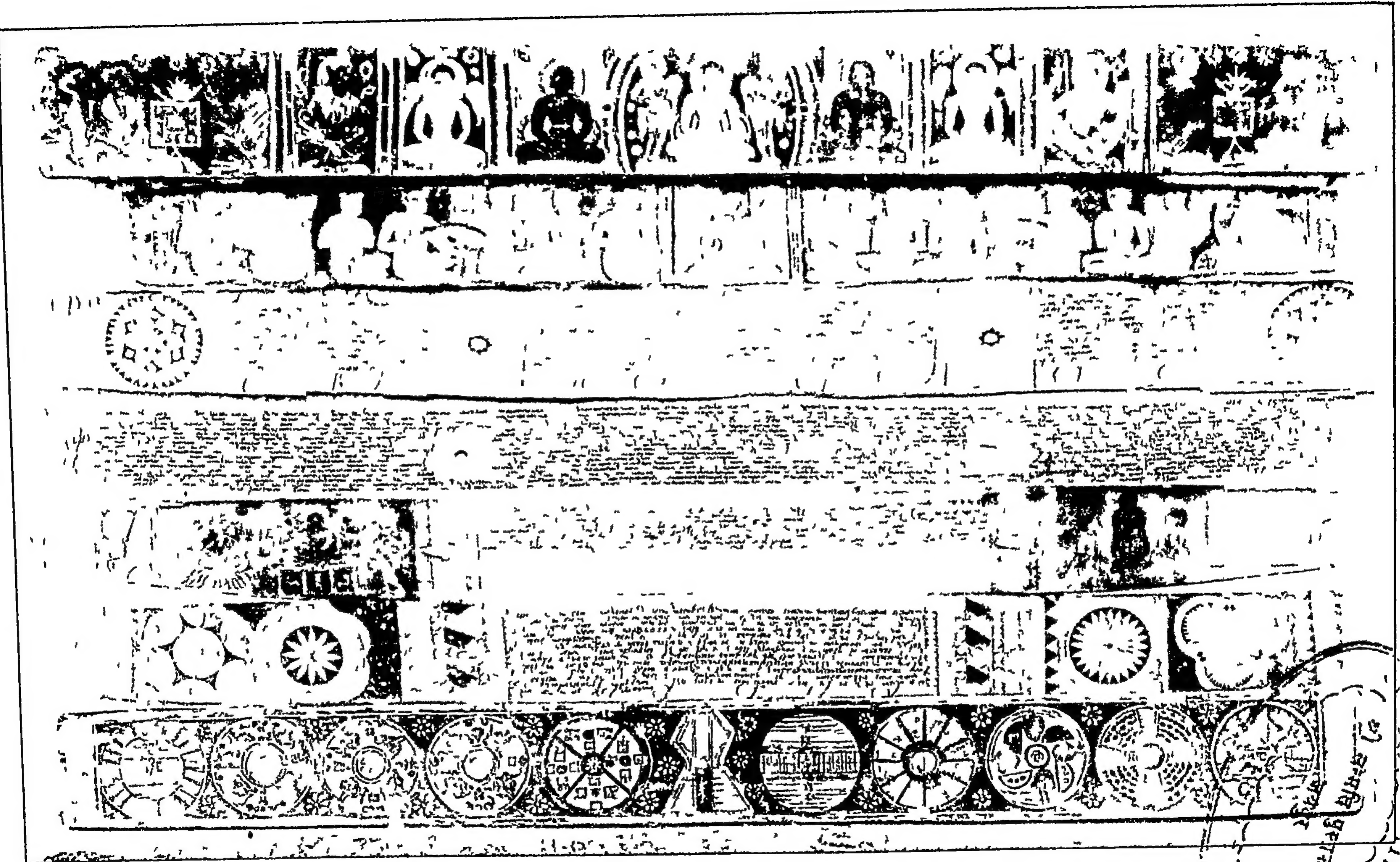
1941

Price rupees ten only.

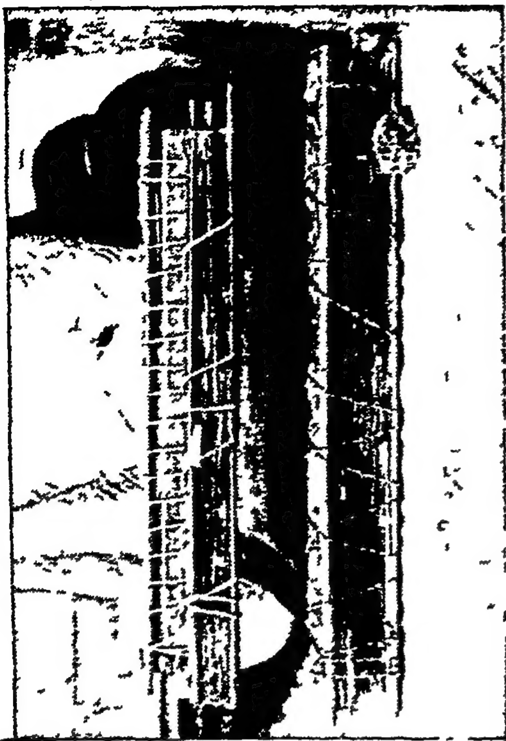
Published by—
Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Sāhitya Uddhāraka Fund Karyālaya,
AMRAOTI (Berar)



Printed by—
T M Patil, *Manager,*
Saraswati Printing Press,
AMRAOTI (Berar)



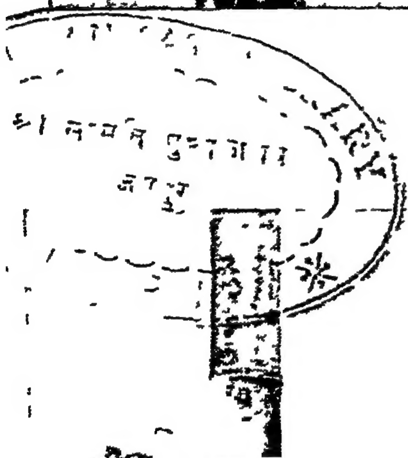
१. मूडबिद्रीमें सिद्धान्त ग्रंथोंके कुछ खुले हुए सचित्र व लिखित ताड़पत्र.



२. मूडबिद्रीमें सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतियां बंधी हुई



३. मूडबिद्रीका सिद्धान्त मंदिर (गुरुबसदि)



४. मूडबिद्रीका सहस्रस्तंभ मंदिर (बड़ा मंदिर)

श्री

अतिशय क्षेत्र मूडबिद्रीकी जिस सम्मान्य भट्टारक-परम्पराने इन अनुपम सिद्धान्त ग्रंथोंकी चिरकालसे बड़ी सावधानी और सतर्कतापूर्वक रक्षा की, तथा अब सुअवसर प्राप्त होने पर विद्वत्संसारको उनका लाभ दिया, उसीके भूतपूर्व और वर्तमान गुरुओंके सत्प्रयत्नोंकी स्मृतिमें यह ग्रंथ विशेष रूपसे समर्पित है।

त्वदीयं वस्तु, भो स्वामिन्,
तुभ्यमेव समर्प्यते ।



५. मूडबिद्रीके स्वर्गीय भट्टारक
चारुकीर्ति स्वामी



६. मूडबिद्रीके वर्तमान भट्टारक
चारुकीर्ति स्वामी



७. मूडविद्रीय सिद्धान्त वसदिके ट्रस्टी नगरसेठ श्री. देवराजजी



९. सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतिलिपि व मिलान करनेवाले
सरस्वती-भूषण पं. लोकनाथजी शास्त्री



८. मूडविद्रीय सिद्धान्त वसदिके ट्रस्टी
श्रीयुक्त धर्मपालजी

प्राक् कथन

हमें यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि गत द्वितीय भागके प्राक् कथनमें हमने मूडबिद्री सिद्धान्तभवनके अधिकारियोके सहयोगसवधी जो मूचना प्रकट की थी, वह क्रियात्मक रूपमें परिणत हुई। इसके प्रमाण पाठक इसी भागके साथ प्रकाशित साहित्यसामग्रीमें देखेंगे। हमने महाधवलके अन्तर्गत ग्रथ-रचनाके संवधमे एक स्वतत्र लेखके[1]द्वारा जो चिन्ता और जिज्ञासा प्रकट की थी, उसने उक्त सिद्धान्त भवनकी क्रियात्मक शक्तिको जागृत कर दिया। शीघ्र ही हमें स्वय **भट्टारक स्वामी चारुकीर्तिजी** द्वारा महाधवलके सवधमे अनेक सूचनाएं और उसका परिचय भी प्राप्त हुआ और उसी सिलसिलेमे सिद्धान्तग्रथोके ताडपत्रों, मदिरो व अधिकारियो व कार्यकर्ताओंके चित्र भी उन्होंने भिजवानेकी कृपा की, व ताड़पत्रीय प्रतियोंसे पाठ-मिलानकी सुविधा भी करा दी। इस पुण्य कार्यमे हमारे सदा सहायक **पं. लोकनाथजी शास्त्री** ने उक्त महाधवल-परिचय और मूडबिद्रीका कुछ इतिहास भी लिख भेजनेकी कृपा की, तथा वे अपने दो सहयोगी **पं. नागराजजी शास्त्री** और **पं. देवकुमारजी शास्त्री** के साथ मिलान कार्यमें दत्तचित्त भी हो गये। इस समस्त सहयोगके फलस्वरूप इस भागके साथ हम मूडबिद्री, वहाकी सिद्धान्तप्रतियों, मन्दिरो और अधिकारियोंके चित्र व परिचय और इतिहास पाठकोंके सन्मुख प्रस्तुत कर रहे है। यही नहीं, अब तक प्रकाशित तीनों भागोंके पाठका ताडपत्रीय प्रतियोसे मिलान व तत्संबंधी निष्कर्ष अत्यन्त परिश्रमपूर्वक सुव्यवस्थित करके पाठकोके विचारार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। एक ध्यान देने योग्य हर्षकी बात यह है कि मूडबिद्रीमें धवलसिद्धान्तकी एक संपूर्ण ताडपत्रीय प्रतिके अतिरिक्त दो और ताड़पत्रीय प्रतिया हैं। यद्यपि ये बहुत अधिक त्रुटित हैं– इनके बीचके सैकडो पत्र अप्राप्य हो गये हैं– तथापि जितने हैं उतने पाठसशोधनकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि, इनमें परस्पर पाठभेद भी पाये जाते हैं जहासे हमारे मिलानमें दिये हुए 'ब' खडके पाठभेदोकी उत्पत्ति संभव है। विशेषतः मिलानके 'ब' खडमे दिये हुए भाग एकके पृष्ठ २२८ से अन्ततकके पाठभेद तो यहीं से उत्पन्न हुए विदित होते हैं। यथाशक्ति इन त्रुटित प्रतियोके मिलान लेनेका भी हमने प्रयत्न किया है, किन्तु वर्तमान परिस्थितिमें इनका उतना और उसप्रकार उपयोग नहीं हो पाया जितना सूक्ष्मताकी दृष्टिसे अभीष्ट है। यथावसर इन प्रतियोंका विशेष परिचय देने और उपयोग लेनेका भी प्रयत्न किया जायगा। इस महान् साहित्यिक निधिको सर्वोपादेय बनानेमे सहायताके लिये मूड़बिद्रीके उक्त महानुभावोंका हम जितना उपकार माने, थोड़ा है।

---

१ यह लेख जैन गजट, जैन मित्र, जैन सदेश, जैन बोधक आदि पत्रोंमें नवम्बर १९४० में प्रकट हुआ था। उसका पूर्णरूप अन्तिम सूचनाओं तकके समाचार लेकर दिसम्बर १९४० के जैन सिद्धान्त भास्करमें प्रकाशित हो चुका है।

प्रस्तुत भागके पाठ-संशोधन व अनुवादमें सम्पादकोंको विशेष कठिनाईका साम्हना करना पड़ा है। एक तो यहांका विषय ही बड़ा सूक्ष्म है, और दूसरे उसपर धवलाकारने अपने समयके गणित शास्त्रकी गहरी पुट जमाई है। इसने हमें बढा हैरान किया, तथापि किसी अज्ञात शक्तिकी प्रेरणा, जनताकी सद्भावना और विद्वानोंके सहयोगसे वह कठिनाई भी अन्ततः हल हो ही गई, और अब हम यह भाग भी पूर्व भागोंके समान कुछ आत्मविश्वासके साथ पाठकोंके हाथमें सौंपते हैं। मूल भागमें सामान्य विषय-प्ररूपणके अतिरिक्त कोई २८० शकाएं उठाकर उनका समाधान किया गया है। इसके गहन, अपरिचित और दुरूह भागको अनुवादमें बीजगणित और अकगणितके कोई २८० उदाहरणों तथा ५० विशेषार्थो व ३२३ पादटिप्पणोंद्वारा सुगम और सुबोध बनानेका प्रयत्न किया गया है। इसका गणित वैठानेमें हमें हमारे कालेजके सहयोगी, गणितके अध्यापक **प्रोफेसर काशीदत्तजी पांडे,** एम. ए., से विशेष सहायता मिली है। उन्होने कई दिनोंतक लगातार घंटों हमारे साथ बैठ बैठकर करण-गाथाओंको समझने समझाने व अन्य गणित व्यवस्थित करनेमें बड़ी रुचि और लगनसे खूब परिश्रम किया है। गाथा न. २८ (पृ. ४७) का गणित नागपुरके वयोवृद्ध गणिताचार्य, हिस्लप कालेजके भूतपूर्व गणिताध्यापक **प्रोफेसर जी. के. गर्दे**ने बैठा देने की कृपा की है, तथा उसीका दूसरा प्रकार, एवं पृ. ५०-५१ पर दिये हुए पश्चिम-विकल्पका जो गणित संबंधी सामजस्य प्रस्तावनाके पृ. ६६ पर 'अर्थसबंधी विशेष सूचना' शीर्षकसे दिया गया है वह लखनऊ विश्वविद्यालयके गणिताचार्य व 'हिन्दू गणितशास्त्रका इतिहास' के लेखक **डाक्टर अवधेश नारायणसिंहजी**ने लगाकर भेजनेकी कृपा की है। इस अत्यन्त परिश्रम पूर्वक दिये हुए सहयोगके लिये उपर्युक्त सभी सज्जनोंके हम बहुत ही कृतज्ञ हैं। इस भागमें यदि कुछ सुन्दर और महत्त्वपूर्ण सम्पादन कार्य हुआ है तो वह इसी सहयोगका परिणाम है। हा, जो कुछ त्रुटिया और स्खलन रहे हों उनका उत्तरदायित्व हमारे ही ऊपर है, क्योंकि, अन्ततः समस्त सामग्रीको वर्तमान रूप देनेकी जिम्मेदारी हमारी ही रही है।

इन सिद्धान्त ग्रंथोंकी ओर विद्वान् पाठक कितने आकर्षित हुए हैं, यह उन अभिप्रायोंसे स्पष्ट है जो या तो समालोचनादिके रूपमें विविध पत्रोंमें प्रकाशित हो चुके हैं, या जो विशेष पत्रों द्वारा हमें प्राप्त हुए हैं। उन सभी सदभिप्रायोंके लिये हम लेखकोंके विशेष आभारी हैं। इन अभिप्रायोंमें ऐसी अनेक सैद्धान्तिक व अन्य शकाएं भी उठाई गई हैं जो ग्रंथके सूक्ष्म अध्ययनसे पाठकोंके हृदयमे उत्पन्न हुईं। कितने ही अंशोमे उन शंकाओंके उत्तर भी हम यथाशक्ति उन उन पाठकोंको व्यक्तिगत रूपसे भेजते गये हैं। अब हम उनमेंसे कुछ महत्त्वपूर्ण शकाएं और उनके समाधान, इस भागकी भूमिकामें पृष्ठक्रमसे व्यवस्थित करके प्रकाशित कर रहे हैं, जिससे ग्रंथराजके सभी पाठकोंको लाभ हो और इस सिद्धान्तके समझने समझाने में सहायता पहुचे। गहन सिद्धान्तोंके अर्थपर प्रकाश डालनेवाले अभिमतों का हम सदैव आदर करेंगे।

सम्पादन-संबंधी हमारी शेष साधन-सामग्री और सहयोगप्रणाली पूर्ववत् ही इस भागके लिए भी उपलब्ध रही। हमें **अमरावती जैन मन्दिरकी** हस्तलिखित प्रतिके अतिरिक्त **आराके सिद्धान्तभवन** और **कारंजाके महावीर ब्रह्मचर्याश्रमकी** प्रतियोंका मिलानके लिये लाभ मिलता रहा, तथा **सहारनपुरकी** प्रतिके नोट किये हुए पाठभेद भी समुपलब्ध रहे। अतएव हम उनके अधिकारियोंके बहुत आभारी हैं। मूड़बिद्रीय प्रतियोंके मिलान प्राप्त हो जानेसे हमने इन प्रतियोंके परस्पर पाठ-भेद व छूटे हुए पाठ आदि देना आवश्यक नहीं समझा।

हमारे सम्पादनकार्यमें विशेषरूपसे सहायक **पं. देवकीनन्दनजी सिद्धान्तशास्त्री** गत तीन चार मास बहुत ही व्याधिग्रसित रहे, जिसकी हमें अत्यन्त चिन्ता और आकुलता रही। यद्यपि अभी भी वे बहुतही दुर्बल हैं, तथापि व्याधि दूर हो गई है और वे उत्तरोत्तर स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं जिसका हमें परम हर्ष है। हमे आशा और विश्वास है कि वे शीघ्र ही पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करके अपनी विद्वत्ताका लाभ हमें देते रहनेमें समर्थ होंगे।

हमारे सहयोगी **पं. फूलचन्द्रजी सिद्धान्तशास्त्रीका** नवजात पुत्र गत फरवरी मासमे अत्यन्त रुग्ण हो गया, जिससे फरवरीके अन्तमें पंडितजीको अकस्मात् देश जाना पडा। यथाशक्ति खूब उपचार करने पर भी दुर्दैवसे पंडितजीको पुत्र-वियोगका अपार दुख सहन करना पडा, जिसका हमें भी अत्यन्त शोक है, और शेष कुटुम्बकी सहानुभूतिसे हृदय द्रवित होता है। तबसे फिर पडितजी वापिस नहीं आ सके। चूंकि इस समय पडित फूलचन्द्रजी हमारे सन्मुख नही हैं, इससे हमें यह निस्संकोच प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि प्रस्तुत कठिन ग्रन्थको वर्तमान स्वरूप देनेमें पडितजीका भारी प्रयास रहा है, जिसके लिये शेष सम्पादकवर्ग उनका बहुत आभारी है।

प्रथम भागके प्रकाशित होनेसे ठीक आठ माह पश्चात् ही दूसरा भाग जुलाई १९४० मे प्रकाशित हुआ था। मार्च १९४१ मे आठ माहके पश्चात् ही यह तीसरा भाग प्रकाशमें आ रहा है। जो कुछ सहयोग और सहानुभूति इस महत्त्वपूर्ण साहित्यके प्रकाशनमें मिल रही है उससे आशा और विश्वास होता है कि यह पुण्य कार्य सुचारु रूपसे प्रगतिशील होता जायगा।

किंग एडवर्ड कॉलेज,
अमरावती
१–४–४१

हीरालाल जैन

प्रस्तावना

INTRODUCTION.

1. Cooperation of the Moodbidri Authorities and Collation of the Palmleaf Manuscripts.

It will be noticed with the greatest pleasure by every one interested in the publication of this series that the present Volume is appearing with the full cooperation of the authorities at the pontifical seat at Moodbidri where the old palmleaf Mss of this unique work are deposited and worshipped The publication of the first two volumes and our ceaseless afforts, as well as of those who realised the value and importance of this venture, brought about this miraculous and most welcome change in the outlook of those who had so far stood apart and looked upon the undertaking with doubts and misgivings The immediate occasion for the change was provided by the publication of my article in which anxiety was expressed concerning the real contents of the palmleaf Ms which goes by the name of Mahadhavala It aroused a sensation amongst those who had any idea of the possible contents of those Mss l and stirred the hearts of all concerned An examination of the palmleaf Mss. was, therefore, immediately arranged and I was soon informed by telegrams and letters about the results of that examination The contact thus established proved lasting and the collation of the Dhavala Mss with the published part of the work was carried out The collation of the rest of the work is also proceeding, thanks to the sympathetic attitude of the authorities and the cooperation of a band of learned people there

As a result of the search, two more old but incomplete palmleaf Mss of Dhavala have been discovered These would prove of immense value in settling the text more accurately At present, the collation of all these palmleaf Mss in a thorough and accurate manner was not possible, but it might be hoped that this will also be accomplished in the near future The result of the Moodbidri collations, so far, has been that of the 488 variants noticed in the text of the three volumes yet published, including the present volume, 149 contribute towards the improvement of the text in the matter of sense or expression or both, 62 appear to be optionally acceptable, 157 are phonetic options of the Prakrit language, while 120 are unacceptable, being scribal or other errors These have been properly classified by us in an appendix and the general results are embodied in the Hindi Introduction (page 49) It was necessry to emend the translation very slightly only at 78 places in all Our principles of text constitution and translation, as laid down by us in the Introduction to Volume I, are thus mostly borne out by this collation The position of the euphonic *ya* may have to be reconsidered, but we must wait for more material. Of the 19 expressions which were not found in the available Mss. but were thought to be necessary by us and were, therefore, added and placed within brackets in the

present Volume, 13 have been found almost verbatim in the palmleaf Mss We re-examined the remaining 6 additions and found that even if we omit them from their allotted positions we have to infer the sense from the context.

2. Contents of the Mahādhavala manuscript.

The examination of the Mahādhavala palmleaves corroborated our doubts as well as fulfilled our hopes The Ms has been found to contain, on the first twenty-seven leaves, a work which has been called **Sattakamma-Panchika** A careful examination of the extracts received by us from that work reveals the fact that it is a gloss on the first four out of the eighteen Adhikaras or chapters contained in the supplementary part of Dhavalā which is entirely the composition of Vīrasena without any strata of old Sutras The author and the date of this gloss remain yet obscure.

The rest of the Mahādhavala Ms. contains the **Mahabandha**, presumably the composition of Āchārya Bhūtabali himself. This is indicated by the nature of the contents examined in the light of what has been said about the Mahābandha of Bhutabali in the Dhavala and Jayadhavala

3. Subject matter of this volume.

The subject matter of this volume is the enumeration of souls in each of the fourteen stages of spiritual advancement (Gunasthānas), and in the different varieties of life and existence called the soul-quests (Mārganāsthānas) These have been calculated in terms of infinite (Ananta), innumerable (Asamkhyāta) and numerable (Samkhyāta), and the standards have been first explained and defined. Living beings are infinite in number Of these, the major bulk, which also is infinite in number, consists of beings that are on the lowest rung of the spiritual ladder, the first stage of mental evolution (Mithyātvins) Of the rest, again, the major part are the absolved beings (Mukta or Siddha) who are also infinite The beings in the stages from the 2nd to the 5th are innumerable, while those in the last nine stages (6th to 14th) are in all just three less than nine crores. The author of Dhavala has illustrated these quantities arithmetically by taking the entire living creation to be 16, out of which 13 would fall under the first category, while the remaining 3 would include the Siddhas and all the souls of the other thirteen stages We have tried to carry this illustration further by splitting up the 3 as well so as to allot 2 to the Siddhas and distribute the remaining 1 among the thirteen stages according to their quantitative order. (See Intro. page 37)

The soul quantities, according to the subdivisions falling under the Mārganāsthānas, have been defined and illustrated in his own way by the author But we have tried to work the same out in figures that are consistent with the Gunasthāna distribution, keeping the entire Jivarāshi as 16, the Mithyādrishtis as 13, the Siddhas 2, and the rest comprised within 1. The categories falling under the fourteen Mārganāsthānas are 63, of which 23 are infinite, 32 innumerable, and 8 numberable. It would be interesting to note that the entire human race is said to be innumerable, but those that are found in the stages from the 2nd to the 14th are just three less than eight hundred and seventy-eight crores These are spread over all

the two and half Dvipas or mainlands over which the human population is spread (Page 38-43)

4 Scientific Importance of the Work.

The distribution of souls in the various stages of spiritual advancement and the varieties of life and existence is based upon certain Jaina dogmas which are in their nature inscrutable An attempt has been made by the authors of the Sutras and the Commentary to put the distribution in a precise mathematical from The authors have made full use of the mathematical knowledge of their times, which reveals a considerably high state of development during the earliest centuries of the Christian era when the Sutras were composed, as well as during the latter part of the 8th and the earlier part of the 9th century when the commentary was written The author of the Sutras shows a clear conception of infinity and orders of infinity within infinity in their application to matter, time and space Within the sphere of finite numbers he mentions figures from one to hundred, thousand, tens and hundreds of thousands, and crores, also their multiples, squares and square roots, as well as the fundamental operations of arithmetic, namely, addition, subtraction, multiplication and division The commentator has amplified this knowledge considerably in the light of what was known at his time Several practical methods of division have been explained. There is a free use of the place value notation The use of fraction has been frequently made in order to arrive at quotients with particular divisors, or to determine divisors when a particular quotient is given This indicates the knowledge of fractions at that stage The processes of evolution and involution are identical with those current in modern mathematics Thus, we notice the use of powers (Vargita-samvargita) and roots (Varga-mula) This indicates that the author of Dhavala had a clear knowledge of the law of indices and possibly of the theory of logarithms, as may be inferred from the relations shown between the Varga-shalakas and Ardhacchedas ‡ The rule of three was an operation well known to the author for the purposes of showing variations We also find the use of the summation of an arithmatic series The author is also found to have employed the mensuration formula for a circle The ratio of the circumference to the diameter is taken as a little less than $\sqrt{10}$, and it is just possible that approximations to this value in a fractional form to a fair degree of accuracy were known to the author.

It may be hoped that the work will considerably widen our knowledge about the state of mathematics and its application to the problems of life in ancient India As I have already acknowledged in my foreword, my colleague Professor K D. Panday, M A, has interpreted for me many of the author's formulas and has also assisted in framing the illustrations, while Dr. Avadhesh Narain Singh, D Sc, Professor

‡ The number of times that a particular figure is multiplied by itself is its Varga-shalākas, while the number of times that a particular figure is successively halved is its ardhacchedas.

of Mathematics in the Lucknow University and the author of the History of Hindu Mathematics has contributed the interpretations of formulas which are set forth by us on page 66 of the Hindi Introduction. Both these scholars are at present studying the work from the point of view of its mathematical importance, and some of my remarks above are based upon information already supplied by them The emendation of the text of the verse 28 as well as its explanation and illustration as given in our translation are the contributions of Professor G. R. Garde, M A, the well known Sanskritist and Mathematician of Nagpur.

5. Other Topics.

Other topics discussed in the Hindi Introduction are as follows —

1 An account of the palmleaf manuscripts as well as of the institutions and personalities of Moodbidri, together with a short history of the place, has been given with illustrations It appears that the Jaina institutions of Moodbidri date from about the 11th century, with a back ground that may be about four centuries older. The foundation of the pontifical seat was laid during the 12th century and the zenith of prosperity was reached during the following two or three centuries (Page 1-6)

2 A little more light is shed on what have been called by the author of Dhavalā the Northern and Southern Schools of thought (Uttara Pratipatti and Dakshina pratipatti), to which we had drawn attention in the Introduction to Vol I, page iii & 57, and which are cited more than once in the text now presented. (Page 92, 94, 98 of the text) One mention of these Schools noticed by us in the Jayadhavalā associates one school with Arya Mankhu and the other with Nāgahasti. An attempt is being made by us to get more light on this important subject (page 15).

3 Our conclusions about the authorship of Namokara Mantra expressed in the Introduction to Vol II, created a considerable stir amongst people who have come to regard the sacred formula as eternal. A reconsideration of the pertinent text in the light of the readings obtained from the palmleaf Mss of Moodbidri, corroborates our previous conclusions so far as the linguistic expression of the sacred formula in its present form is concerned. But there is no contradiction in regarding the sense of the formula as even older than Pushpadanta (Page 16)

4 After the publication of the first Vol, a great interest in the subject matter of the work was aroused and a number of questions were received by us from time to time for more light about the text and its interpretation We tried to satisfy the curiousity of our inquirers then and there, and now we reproduce here in a properly arranged form a set of twenty-- four questions with answers, because we considered them important from one point of view or another. It will be seen from these that our principles of text constitution and interpretation are fully justified (Page 18-31)

१ चित्र परिचय.

१

ऊपरसे नीचेकी ओर प्रथम सचित्र ताड़पत्र श्रीधवल ग्रंथका है। इसके मध्यमें एक तीर्थंकरका चित्र है, जिसके दोनों ओर अनुमानतः यक्ष-यक्षिणी खडे किये गये हैं। इसके दोनों ओर दो दो तीर्थंकरोंके और चित्र हैं, तथा उनके एक ओर यक्ष और दूसरी ओर यक्षिणी चित्रित हैं। फिर दोनों छोरोंपर प्रवचन करते हुए आचार्य व श्रोता श्रावकोंके चित्र हैं।

दूसरा सचित्र ताड़पत्र भी श्रीधवल ग्रंथराजका है। वीचमें तीर्थंकर विराजमान हैं, और आजू वाजू सात सात भक्त वन्दना करते हुए दिखाये गये हैं।

तीसरा ताड़पत्र श्रीधवलका कनाड़ी लिपिमें हस्त-लिखित है।

चौथा ताड़पत्र कनाड़ी लिपिमें हस्त-लिखित श्रीमहाधवल ग्रंथका है।

पांचवां ताड़पत्र श्रीजयधवल ग्रंथका है। वीचमें कनाड़ीका हस्तलेख तथा आजू वाजू चित्र हैं।

छठवां ताड़पत्र श्रीमहाधवलका २७ वां पत्र है, जहां 'सत्तकम्मपंचिका' पूरी हुई कही जाती है। इसके भी वीचमें हस्तलेख और आजू वाजू चक्राकार चित्र है।

सातवां ताड़पत्र त्रिलोकसार ग्रंथके भीतरका है।

२

नीचेसे ऊपरकी ओर प्रथम ग्रंथ श्रीधवल सिद्धान्त (षट्खंडागम) है। इसके ताड़पत्रोंकी लम्बाई २ फुट, चौडाई २॥ इंच, तथा पत्र संख्या ५९२ है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रायः १४ पंक्तिय हैं, और प्रत्येक पंक्तिमें लगभग १३८ अक्षर हैं। इसप्रकार प्रत्येक ताड़पत्रपर श्लोक-संख्या लगभग १२०॥। आती है, जिससे कुल ग्रंथका प्रमाण ७१४८४ श्लोकोंके लगभग आता है।

अभीतक यही समझा जाता था कि धवलाकी प्राचीन ताड़पत्रीय प्रति एकमात्र यही है। किन्तु अब खोजसे ज्ञात हुआ है कि वहां धवलाकी दो और भी ताड़पत्रीय प्राचीन प्रतियां हैं, जिनकी ताड़पत्रोंकी संख्या क्रमशः ८०० और ६०५ है। इनमें पाठभेदभी कहीं कहीं बहुत कुछ पाया जाता है। किन्तु इन दोनों प्रतियोंके वीचवीच के अनेक ताड़पत्र अप्राप्य हैं, और इस प्रकारा ये दोनोही प्रतियां बहुत कुछ त्रुटित हैं। इनका प्रशस्तियों आदि सहित विशेष परिचय आगेके भागमें देनेका प्रयत्न किया जायगा।

दूसरा ग्रंथ श्रीमहाधवल कहलाता है। इसके ताड़पत्रोंकी लम्बाई २ फुट ४ इंच, चौड़ाई २॥ इंच तथा पत्रसंख्या २०० है। प्रत्येक पृष्ठपर प्रायः १३ पंक्तिया, और प्रत्येक पंक्तिमें

लगभग १७० अक्षर है। इस प्रकार प्रत्येक ताड़पत्रपर श्लोक-संख्या १३८ आती है, जिससे कुलग्रंथका प्रमाण २७६०० श्लोकोंके लगभग आता है। किन्तु बड़े बडे पारिभाषिक शब्दोंके सूक्ष्म-रूप बनाकर लिखे गये है, इससे श्लोक प्रमाण अधिक भी हो सकता है।

तीसरा ग्रंथ श्रीजयधवल सिद्धान्त है। इसके ताड़पत्रोंकी लम्बाई २। फुट, चौड़ाई २॥ इंच, तथा पत्रसंख्या ५१८ है। प्रत्येक पृष्ठपर प्राय: १३ पंक्तियां, और प्रत्येक पंक्तिमें लगभग १३८ अक्षर हैं। इस प्रकार प्रत्येक ताड़पत्रपर श्लोक-संख्या लगभग १२० आती है, जिससे कुल ग्रंथका प्रमाण ६११२४ श्लोकोंके लगभग आता है।

३

यह मूडविद्रीका वही सुप्रसिद्ध मंदिर है, जहां सिद्धान्त ग्रंथोंकी ताडपत्रीय प्रतियां शताब्दियोंसे विराजमान हैं। इन्हींके कारण यह मन्दिर **'सिद्धान्त मन्दिर'** या **'सिद्धान्त वसदि'** कहलाता है। अनेक रत्नमयी प्रतिमायें भी यहां विराजमान हैं, जिनके दर्शनके लिये प्रतिवर्ष दूर दूरसे यात्री आते हैं। यहांके मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकर हैं। यहीं भट्टारक गद्दी है, जिससे इसे **'गुरु वसदि'** भी कहते हैं। इसका सब कार्यभार एक पंचायतके आधीन है, जिससे यह **'पंचायती मन्दिर'** भी कहलाता है।

४

यह मूडविद्रीका **'वडा मन्दिर'** है। यहा के मूलनायक श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकर हैं, जिनकी मूर्ति सुवर्ण आदि पंच धातुओंकी बनी मानी जाती है। इसकी इमारत तीन मंजिलकी है। दूसरे मंजिलपर **'सहस्रकूट चैत्यालय'** बहुत ही मनोज्ञ है। तीसरे मंजिलमें छोटी बडी ४० प्रतिमाएं विराजमान हैं जो स्फटिकमयी हैं। इसीलिये इस मंजिलको **'सिद्धकूट'** भी कहते है। मन्दिरके सन्मुख एक 'मानस्तंभ' और एक 'ध्वजस्तंभ' खड़ा है। तीनों मंजिलोंमें स्तंभोंकी संख्या कोई एक हजार है, जिससे इस मन्दिरका नाम **'सहस्रस्तंभ'** या हजार स्तंभवाला मन्दिर प्रसिद्ध हुआ है। अपनी अनुपम सुन्दरताके कारण यह मन्दिर **'त्रिभुवन-तिलक-चूडामणि'** भी कहलाता है।

५

ये मूडविद्रीके स्वर्गीय भट्टारक **श्रीचारुकीर्ति स्वामी** हैं। आप संस्कृतके अच्छे विद्वान् थे, तथा अन्य अनेक भाषाओंके भी जानकार थे। आपके समयमें मूडविद्री में अच्छी धर्मप्रभावना हुई। आपने कई जगह कितने ही जैनमंदिरोंका जीर्णोद्धार कराया व पंचकल्याणादि कराये। आपकेही सुसमय में श्रीधवल और श्रीजयधवल, इन दोनो सिद्धांत ग्रंथोंकी प्रतिलिपियां हुईं थीं, और तीसरे सिद्धान्त ग्रंथ महाधवलकी प्रतिलिपिका कार्य भी प्रारम्भ हो गया था। अजैन जनतामें भी आपका अच्छा गौरव और सन्मान रहा।

६

ये मूडबिद्रीके वर्तमान भट्टारक **श्रीचारुकीर्ति स्वामी** हैं, जो सिद्धान्त बसदिके मुख्य अधिकारी हैं। आप अपनी मातृभाषा कनाड़ी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी आदि अनेक भाषाओंके ज्ञाता हैं। उत्तर भारतमें भी आप दीर्घकाल तक रह चुके हैं। आपके ही समयमें श्रीमहाधवलकी प्रतिलिपि पूर्ण हुई। आपके ही सरल स्वभाव और उदार विचारोंका यह सुफल है कि वहांकी पंचायतद्वारा श्रीमहाधवलकी प्रतिलिपि जिज्ञासु समाज को प्राप्य बनानेका प्रस्ताव स्वीकृत हो गया है। आप जीर्णोद्धारादि धार्मिक कार्योंमें खूब दत्तचित्त रहते हैं। ग्रंथोंका जीर्णोद्धार कार्य भी आपकी दृष्टिके ओझल नहीं रह सका। हमारे सिद्धान्त-ग्रंथके संशोधन व प्रकाशन कार्यमें अब हमें आपकी पूर्ण सहानुभूति और सहायता मिल रही है, जिसके सुफल पाठक इस ग्रंथभागमें तथा आगे भी देखेंगे।

७

आप मूडबिद्रीके नगरसेठ **श्रीदेवराजजी सेठी** हैं। सिद्धान्तमन्दिरके आप पंच हैं, और भट्टारकजीके सत्कार्योंमें आपकी सम्मति और सहयोग रहता है। आप भी सिद्धान्तग्रंथोंके सुप्रचार के पक्षपाती हैं।

८

आप मूडबिद्री सिद्धान्तमन्दिरके पंच श्रीयुक्त **धर्मपालजी** हैं। आप एक बडे उत्साही युवक हैं, और सिद्धान्तग्रंथोंके सुप्रचार करानेमें आपकी विशेष रुचि है।

९

सरस्वती भूषण **पं. लोकनाथजी शास्त्रीका** पैतृक निवासस्थान मूडबिद्री ही है। आपका विद्याभ्यास स्वनामधन्य स्वर्गीय पं. गोपालदासजी बरैयाकी अध्यक्षतामें मोरेना विद्यालयमें हुआ था। तत्पश्चात् आपने मूडबिद्रीकी जैन संस्कृत पाठशालामें बीस वर्ष तक अध्यापन कार्य किया, और अनेक ऐसे योग्य विद्वान् उत्पन्न किये जो अब उस प्रान्तमें धर्म और समाजकी भारी सेवा कर रहे हैं। आपने अपने निरंतर कठिन परिश्रमसे वीरवाणीविलास सिद्धान्तभवनकी स्थापना की है जिसमें मुद्रित व हस्तलिखित ताडपत्रादि चार हजार ग्रंथोंसे ऊपरका संग्रह है। यहांसे आप एक वीरवाणी ग्रंथमालाका भी संपादन करते हैं, जिसमें सोलह ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। आप मूडबिद्रीके भंडारसे अलभ्य ग्रंथोंकी प्रतिलिपि कराकर मुंबई, आरा, इंदौर, सहारनपुर, कलकत्ता आदि शास्त्रभंडारोंको भेज चुके हैं, जिसकी श्लोक सं. ८५००० से भी ऊपर हो गई है। आपका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य सिद्धान्तग्रंथोंकी प्रतिलिपियोंसे संबंध रखता है। जैसा हम प्रथम भागकी भूमिकामें कह आये हैं, महाधवलकी नागरी प्रतिलिपि पहले पहल आपके द्वारा ही सन् १९१८ से १९२२ तक की गई थी। सन् १९२४ में आपने सहारनपुर पहुंचकर वहांकी धवला और जयधवलाकी कनाड़ी और नागरी प्रतियोंका मिलान करवाया था। वर्तमानमें हमारी

महाधवलकी प्रतिसंबंधी शंकाओंपर आपने ही अपने दो तीन सहयोगी विद्वानोंसहित उक्त प्रतिकी जांच पड़ताल की, और बहुमूल्य परिचय भेजनेकी कृपा की। हमारे प्रकाशित व प्रकाशनीय ग्रंथांशोंका ताड़पत्रीय प्रतियोंसे मिलान भी आपके ही द्वारा किया जा रहा है। आपकी आयु इस समय पचास वर्षकी है। लगभग दस वर्षसे श्वासकी व्याधिसे पीड़ित होते हुए भी आप साहित्यसेवाके कार्यसे विश्रान्ति नहीं लेते, और प्रस्तुत सिद्धान्तप्रकाशन कार्यमें तो आप अत्यन्त तन्मयताके साथ जी तोड़कर सहयोग दे रहे हैं, जिसके सुफल पाठक इस भागमें तथा आगे प्रकाशनीय भागोंमें देखेंगे।

२ मूडबिद्रीका इतिहास

दक्षिण भारतका कर्नाटक देश जैन धर्मके इतिहासमें अपना एक विशेष स्थान रखता है। दिगम्बर जैन सम्प्रदायके अधिकांश सुविख्यात और प्राचीनतम ज्ञात आचार्य और ग्रंथकार इसी प्रान्तमें हुए हैं। आचार्य पुष्पदन्त, समन्तभद्र, पूज्यपाद, वीरसेन, जिनसेन, गुणभद्र, नेमिचन्द्र, चामुण्डराय आदि महान् ग्रंथकारोंने इसी भूभागको अलंकृत किया था।

इसी दक्षिण कर्नाटक प्रान्तमें ही मूडबिद्री नामका एक छोटासा नगर है जो शताब्दियोंसे जैनियोंका तीर्थक्षेत्र बना हुआ है। कहा जाता है कि यहां जैनधर्मका विशेष प्रभाव सन् ११०० ईस्वीके लगभग होय्सल-नरेश बल्लालदेव प्रथमके समयसे बढा। तेरहवीं शताब्दिमें यहांकी पार्श्वनाथ बसदिको तुलुवके आलूप नरेशोंसे राज्यसन्मान मिला। पन्द्रहवीं शताब्दिमें विजयनगरके हिन्दू नरेशोंके समय इस स्थानकी कीर्ति विशेष बढ़ी। शक १३५१ (सन् १५२९) के देवराय द्वितीयके एक शिलालेखमें उल्लेख है कि वेणुपुर (मूडबिद्री) उसके भव्यजनोंके लिये सुप्रसिद्ध है। वे शुद्ध चारित्र पालते हैं, शुभ कार्य करते हैं, और जैनधर्मकी कथाओंका श्रवण करते है। यहांके स्थानीय राजा भैररसने अपने गुरु वीरसेन मुनिकी प्रेरणासे यहांके चन्द्रनाथ मन्दिर को दान दिया था। सन् १४५१–५२ में यहाकी होस बसदि (त्रिभुवन-तिलक-चूडामणि व बड़ा मन्दिर) का 'भैरादेवी मण्डप' नामसे प्रसिद्ध मुखमण्डप विजयनगर नरेश मल्लिकार्जुन इम्मडिदेवरायके राज्यमें बनाया गया था। विरूपाक्ष नरेश के राज्यमें उनके सामन्त विट्ठरस ओडेयरने सन् १४७२–७३ में इसी बसदिको भूमिदान दिया था। यहां सब मिलाकर अठारह बसदि (जिनमन्दिर) हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध 'गुरु बसदि' है जहां सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतियां सुरक्षित हैं और जिनके कारण वह 'सिद्धान्त बसदि' भी कहलाती है। यह नगर 'जैन काशी' नामसे भी प्रसिद्ध है। यहा अब जैनियोंकी जनसंख्या बहुत कम रहगई है, किन्तु जैन संसारमें इसका पावित्र्य कम नहीं हुआ। यहांकी गुरुपरंपरा और सिद्धान्त रक्षाके लिये यह स्थान जैन धार्मिक इतिहासमें सदैव अमर रहेगा[1]।

---

१ देखो Salatore's Mediaeval Jainism, P. 351 ff., and, Ancient Karnataka P. 410-11.

मूडबिद्रीके पंडित लोकनाथजी शास्त्रीने मूडबिद्रीका निम्न इतिहास लिखकर भेजनेकी कृपा की है। कनाड़ी भाषामें वांसको 'बिदिर' कहते हैं। बांसोंके समूह को छेदकर यहांके सिद्धान्त मंदिरका पता लगाया गया था, जिससे इस ग्रामका 'बिदुरे' नाम प्रसिद्ध हुआ। कनाड़ीमें 'मूड' का अर्थ पूर्व दिशा होता है, और पश्चिम दिशाका वाचक शब्द 'पडु' है। यहां मूल्की नामक प्राचीन ग्राम पडुबिदुरे कहलाता है, और उससे पूर्वमें होनेके कारण यह ग्राम मूडबिदुरे या मूडबिदिरे कहलाया। वंश और वेणु शब्द वास के पर्यायवाची होनेसे इसका वेणुपुर अथवा वंशपुर नामसे भी उल्लेख किया गया है। अनेक व्रती साधुओंका निवासस्थान होनेसे इसका नाम व्रतिपुर या व्रतपुर भी पाया जाता है।

यहां की गुरुवसदि अपरनाम सिद्धान्त वसदिके सम्बधमें यह दंतकथा प्रचलित है कि लगभग एक हजार वर्ष पूर्व यहांपर वांसोंका सघन वन था। उस समय श्रवणबेलगुल (जैनबिद्री) से एक निर्ग्रंथ मुनि यहां आकर पडुबस्ती नामक मंदिरमें ठहरे। पडुबस्ती नामक प्राचीन जिनमंदिर अब भी वहां विद्यमान है, और उस मंदिरसे सैकड़ों प्राचीन ग्रंथ स्वर्गीय भट्टारकजीने मठमें विराजमान किये हैं। एक दिन उक्त निर्ग्रंथ मुनि जब बाहर शौचको गये थे तब उन्होंने एक स्थानपर एक गाय और व्याघ्रको परस्पर क्रीडा करते देखा, जिससे वे अत्यन्त विस्मित होकर उस स्थानकी विशेष जांच पड़ताल करने लगे। उसी खोजबीनके फलस्वरूप उन्हें एक वांसके भिरेमें छुपी हुई व पत्थरों आदिसे घिरी हुई पार्श्वनाथ स्वामीकी काले पाषाणकी नौ हाथ प्रमाण खड्गासन मूर्तिके दर्शन हुए। तत्पश्चात् जैनियों-केद्वारा उसका जीर्णोद्धार कराया गया, और उसी स्थानपर 'गुरुबसदि' का निर्माण हुआ। उक्त मूर्तिके पादपीठपर उसके शक ६३६ (सन् ७१४) में प्रतिष्ठित किये जानेका उल्लेख पाया जाता है। उसके आगेका गद्दीमंडप (लक्ष्मी मंडप) सन् १५३५ में चोलसेठीद्वारा निर्मापित किया गया था। इस वसदिके निर्माण का व्यय छह करोड रुपया कहा जाता है जिसमें संभवतः वहां की रत्नमयी प्रतिमाओंका मूल्य भी सम्मिलित होगा। इस मन्दिरके गुप्तगृहमें सुवर्णकलशोंमें 'सिद्ध रस' स्थापित है, ऐसा भी कहते हैं।

एक किंवदन्ती है कि होय्शल-नरेश विष्णुवर्धनने सन् १११७ में वैष्णव धर्म स्वीकार करके हलेबीडु अर्थात् दोरसमुद्रमें अनेक जिन मन्दिरोंका ध्वंस कर डाला, व जैनधर्मपर अनेक अन्य अत्याचार किये। उसी समय एक भयंकर भूकंप हुआ और भूमि फटकर एक विशाल गर्त वहां उत्पन्न होगया, जिसका संबंध नरेशके उक्त अत्याचारोंसे बतलाया जाता है। उनके उत्तराधिकारी नारसिंह और उनके पश्चात् वीर बल्लालदेवने जैनियोंके क्षोभको शान्त करनेके लिये नये मन्दिरोंका निर्माण, जीर्णोद्धार, भूमिदान आदि अनेक उपाय किये। वीर बल्लालदेवने तो अपने राज्यमें-शान्ति-स्थापनाके लिये श्रवणबेलगुलसे भट्टारक चारुकीर्तिजी पंडिताचार्यको आमंत्रित किया। वे दोरसमुद्र

पहुंचे और उन्होंने अपनी विद्या व बुद्धिके प्रभावसे वहांका सब उपद्रव शान्त किया, जिससे जैन-धर्मकी अच्छी प्रभावना हुई। इसका कुछ उल्लेख बिळगीके शासन लेखमें भी पाया जाता है, जो इस प्रकार है--

"कर्णाटक-सिद्धसिंहासनाधीश्वर-बल्लालरायं प्रार्थिसे श्री चारुकीर्तिपंडिताचार्यर् इंतु कीर्तियं पडेदर्"

तिर्थ रायननेंदु ने—
ल्बाधिपडे तन्न मंत्रजपविधियिनदं ॥
कुंग्रलकार्थि सूळदु य—
शं बडेदेसकक्के पंडितार्यने नोंतं ॥

दोरसमुद्रसे चारुकीर्तिजी महाराज अपने शिष्योंसहित मूडबिद्री आये और उन्होने वहां गुरुपीठ (भट्टारक गद्दी) स्थापित की, यहां आते समय उन्होंने पासही नल्लूर ग्राममें भी भट्टारक गद्दी स्थापित की थी, किन्तु वर्तमानमें वहां कोई अलग भट्टारक नहीं हैं, वहांके मठका सब प्रबन्ध मूडबिद्री मठसे ही होता है। यह मूडबिद्रीमें भट्टारक गद्दी स्थापित होनेका इतिहास है, जिसका समय सन् ११७२ ईस्वी बतलाया जाता है। तबसे भट्टारकोंका नाम चारुकीर्ति ही रखा जाता है, यद्यपि उसके साथ साथ कुछ स्वतत्र नामों, जैसे वर्धमानसागर, अनन्तसागर, नेमिसागर आदिका भी उल्लेख पाया जाता है। धवलादि सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतियां यहां धारवाड ज़िलेके बंकापुरसे लाई गईं, ऐसी भी एक जनश्रुति है। इस मठसे दक्षिण कर्नाटकमें जैनधर्मका खूब प्रचार व उन्नति हुई। वर्तमानमें मठकी संपातिसे वार्षिक आय लगभग दस हजारकी है।[1]

२ महाबंधकी खोज

१ खोजका इतिहास

षट्खंडागमका सामान्य परिचय उसके प्रथम दो भागोंमें प्रकाशित भूमिकाओंमें दिया जा चुका है[2]। वहां हम बतला आये हैं कि धरसेनाचार्यसे आगमका उपदेश पाकर पुष्पदन्त और भूतबलि आचार्योंने उसकी छह खंडोंमें ग्रन्थरचना की, जिनमेंसे प्रथम पांच खंड उपलब्ध श्रीधवलकी प्रतियोंके अन्तर्गत पाये जाते हैं और छठे खंड महाबन्धके सम्बन्धमें धवल तथा जयधवलमें यह सूचना पाई जाती है कि महाबंध स्वयं भूतबलि आचार्यका रचा हुआ ग्रन्थ है, उसमें बंधविधानके चार प्रकारों प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश का खूब विस्तारसे वर्णन किया गया है, तथा यह वर्णन इतना विशद और सर्वमान्य हुआ कि यतिवृषभ और वीरसेन जैसे आचार्योंने अपनी अपनी ग्रन्थरचनामें उसकी सूचनामात्र दे देना पर्याप्त समझा; उस विषयपर और कुछ विशेष कहनेकी उन्हें गुंजायश नहीं दिखी।

१ देखो लोकनाथशास्त्रीकृत मूडबिद्रेय चरित (कनाडी).
२ देखो प्रथम भाग, भूमिका पृ. ६३ आदि, व द्वि. भाग भूमिका पृ. १५ आदि.

इस महाबंधकी अभीतक कोई प्रति प्रकाशमें नहीं आई। किन्तु हम सब यह आशा करते रहे हैं कि मूडबिद्रीके सिद्धान्तभवनमें जो महाधवल नामकी कनाडी प्रति ताडपत्रोंपर तृतीय सिद्धान्तग्रन्थ रूपसे सुरक्षित है, वही भूतबलिकृत महाबंध ग्रन्थ है। इस आशाका आधार अभीतक केवल हमारा अनुमान ही था, क्योंकि न तो कोई परीक्षक विद्वान् उस प्रतिका अच्छीतरह अवलोकन कर पाया था और न किसीने उसके कोई विस्तृत अवतरण आदि देकर उसका सुपरिचय ही कराया था। उस प्रतिका जो कुछ थोड़ासा परिचय उपलब्ध हुआ था, वह मूडबिद्रीके पं. लोकनाथजी शास्त्रीकी कृपासे उनके वीरवाणीविलास जैन सिद्धान्त भवनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९३५) के भीतर पाया जाता था। उस परिचयमें दिये गये महाधवल प्रतिके प्रारंभिक भागके सूक्ष्म अवलोकनसे मुझे ज्ञात हुआ कि वह ग्रन्थरचना महाबंध खंडकी नहीं है, किन्तु संतकम्मके अन्तर्गत शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी एक ' पचिका ' है, जिसे उसके कर्ताने ' पंचियरूवेण विवरणं सुमहत्थं ' कहा है। उन अवतरणोंसे महाबंधका कहीं कोई पता नहीं चला। मैंने अपनी इस आशंकाको एक लेखके द्वारा प्रकट किया और इस बातकी प्रेरणा की कि महाधवलकी प्रतिका शीघ्रही पर्यालोचन किया जाना चाहिए और महाबंधका पता लगानेका प्रयत्न करना चाहिये। इस लेखके फलस्वरूप मूडबिद्रीमठके भट्टारकस्वामी व पंचोंने उस प्रतिकी जांचकी व्यवस्था की, और शीघ्र ही मुझे तारद्वारा सूचित किया कि महाधवल प्रतिके भीतर सत्कर्मपंचिका भी है, और महाबंध भी है। तत्पश्चात् वहांसे पं. लोकनाथजी शास्त्रीद्वारा संग्रह किये हुए उक्त प्रतिमेंके अनेक अवतरण भी मुझे प्राप्त हुए, जिनपरसे महाधवल प्रतिके अन्तर्गत ग्रन्थरचनाका यहां कुछ परिचय कराया जाता है।

२ सत्कर्मपंचिका परिचय

महाधवल प्रतिके अन्तर्गत ग्रन्थरचनाके आदिमें ' संतकम्मपंचिका ' है, जिसकी उत्थानिका का अवतरण अनेक दृष्टियोंसे महत्वपूर्ण है। यद्यपि यह अवतरण पूर्व प्रकाशित धवलाके दोनों भागोंकी भूमिकाओंमें यथास्थान उद्धृत किया जा चुका है, तथापि वह उक्त रिपोर्टपरसे लिया गया था, और कुछ त्रुटित था। अब यह अवतरण हमें इस प्रकार प्राप्त हुआ है।

वोच्छामि सत्तकम्मे पंचियरूवेण विवरणं सुमहत्थं।

" महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदिवेदणाओ (दि-) चउव्वीसमणियोगद्दारेसु तत्थ कदिवेदणा त्ति जाणि अणियोगद्दाराणि वेदणाखंडम्हि, पुणो पास-कम्म-पयडि-बंधण चत्तारि अणियोगद्दारेसु तत्थ बंध-बधणिज्जणामणियोगेहि सह वग्गणाखंडम्हि, पुणो बंधविधाणणामणियोगो महाबंधम्मि, पुणो बंधगाणियोगो खुद्दाबंधम्हि सप्पवंचेण परूविदाणि। पुणो तेहिंतो सेसट्ठारसाणियोगद्दाराणि सत्तकम्मे सव्वाणि परूविदाणि। तो वि तस्साइगंभीरत्तादो अत्थविसमपदाणमत्थे थोरुद्धयेण पंचियसरूवेण भणिस्सामो। "

इस उत्थानिकासे सिद्धान्तग्रन्थोंके सम्बन्धमें हमें निम्न लिखित अत्यन्त उपयोगी और महत्वपूर्ण सूचनाएं बहुत स्पष्टतासे मिल जाती हैं—

१ महाकर्मप्रकृतिपाहुडके चौबीस अनुयोगद्वारोंमेंसे प्रथम दो अर्थात् कृति और वेदना, वेदनाखंडके अन्तर्गत रचे गये हैं। फिर अगले स्पर्श, कर्म, प्रकृति और बंधनके चार भेदोंमेंसे बंध और बंधनीय वगणाखडके अन्तर्गत है। बंधविधान महाबंधका विषय है, तथा बंधक खुद्दाबंध खंडमें सन्निहित है। इस स्पष्ट उल्लेखसे हमारी पूर्व बतलाई हुई खंड-व्यवस्थाकी पूर्णतः पुष्टि हो जाती है, और वेदनाखंडके भीतर चौबीसों अनुयोगद्वारोंको मानने तथा वर्गणाखंडको उपलब्ध धवलाकी प्रतियोंके भीतर नहीं माननेवाले मतका अच्छी तरह निरसन हो जाता है।

२ उक्त छह अनुयोगद्वारोंसे शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी ग्रन्थरचनाका नाम सत्तकम्म (सत्कर्म) है, और इसी सत्कर्मके गंभीर विषयको स्पष्ट करनेके लिए उसके थोडे थोड़े अवतरण लेकर उनके विषमपदोंका अर्थ प्रस्तुत ग्रंथमें पंचिकारूपसे समझाया गया है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि शेष अठारह अनुयोगद्वारोंसे वर्णन करनेवाला यह सत्कर्म ग्रन्थ कौनसा है? इसके लिए सत्कर्मपंचिकाका आगेका अवतरण देखिए, जो इस प्रकार है-

तं जहा। तत्र ताव जीवदव्वस्स पोग्गलदव्वमवलंबिय पज्जायेसु परिणमणविहाणं उच्चदे- जीवदव्वं दुविहं, संसारिजीवो मुक्कजीवो चेदि। तत्थ मिच्छत्तासंजमकसायजोगेहि परिणदसंसारिजीवो जीव-भव-खेत्त-पोग्गल-विवाइसरूवकम्मपोग्गले बंधियूण पच्छा तेहिंतो पुव्वुत्त-छव्विहफलसरूवपज्जायमणेयभेयभिण्णं संसरदो जीवो परिणमदि त्ति। एदेसिं पज्जायाणं परिणमणं पोग्गलणिबंधणं होदि। पुणो मुक्कजीवस्स एवं-विध-णिबंधणं णत्थि, किंतु सत्थाणेण पज्जायंतरं गच्छदि। पुणो—

जस्स वा दव्वस्स सहावो दव्वंतरपडिबद्धो इदि।

एदस्सत्थो-एत्थ जीवदव्वस्स सहावो णाणदंसणाणि। पुणो दुविहजीवाणं णाणसहावविवक्खिद-जीवेहिंतो वदिरित्त-जीवपोग्गलादि-सव्वदव्वाणं परिच्छेदणसहावेण पज्जायंतरगमणणिबंधण होदि। एवं दंसणं पि वत्तव्वं।

यहां पंजिकाकार कहते हैं कि वहांपर अर्थात् उनके आधारभूत ग्रन्थके अठारह अधिकारोंमेंसे प्रथमानुयोगद्वार निबंधनकी प्ररूपणा सुगम है। विशेष केवल इतना है कि उस निबंधनका निक्षेप छह प्रकारसे बतलाया गया है। उनमें तृतीय अर्थात् द्रव्यनिक्षेपके स्वरूपकी प्ररूपणामें आचार्य इस प्रकार कहते हैं। जिसका खुलासा यह है कि यहां पर पुद्गलद्रव्यके अवलंबनसे जीवद्रव्यके पर्यायोंमें-परिणमन विधानका कथन किया जाता है। जीवद्रव्य दो प्रकारका है, संसारी व मुक्त। इनमें मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योगसे परिणत जीव ससारी है। वह जीवविपाकी, भवविपाकी, क्षेत्रविपाकी और पुद्गलविपाकी कर्मपुद्गलोंको बांधकर- अनन्तर उनके निमित्तसे पूर्वोक्त छह प्रकारके फलरूप अनेक प्रकारकी पर्यायोंमें संसरण करता है, अर्थात् फिरता है। इन पर्यायोंका परिणमन पुद्गलके निमित्तसे होता है। पुनः मुक्तजीवके इस प्रकारका परिणमन नहीं पाया जाता है। किन्तु वह अपने स्वभावसे ही पर्यायान्तरको प्राप्त होता है। ऐसी स्थितिमें 'जस्स वा दव्वस्स सहावो दव्वंतरपडिबद्धो इदि' अर्थात् 'जिस द्रव्यका स्वभाव द्रव्यान्तरसे प्रतिबद्ध है' इति।

इस प्रकरणके मिलानके लिए हमने वीरसेन स्वामीके धवलान्तर्गत निबन्धन अधिकारको निकाला। वहां आदिमें ही निबंधनके छह निक्षेपोंका कथन विद्यमान है और उनमें तृतीय द्रव्य-निक्षेपका कथन शब्दशः ठीक वही है जो पंजिकाकारने अपने अर्थ देनेसे ऊपरकी पंक्तिमें उद्धृत किया है और उसीका उन्होंने अर्थ कहा है। यथा—

णिबंधणेत्ति अणियोगद्दारे णिबंधणं ताव अप्पयदणिबंधणणिराकरणट्ठं णिक्खिवियव्वं। तं जहा-णामणिबंधणं, ठवणणिबंधणं, दव्वणिबंधणं, खेत्तणिबंधणं, कालणिबंधणं, भावणिबंधणं चेदि छव्विहं णिबंधणं होदि।

इसके पश्चात् नाम और स्थापना निबंधनका स्वरूप बतलाया गया है और उसके पश्चात् द्रव्यनिबंधनका वर्णन इस प्रकार है—

जं दव्वं जाणि दव्वाणि अस्सिदूण परिणमदि, **जस्स वा सद्दस्स (दव्वस्स) सहावो दव्वंतरपडिबद्धो** त दव्वणिबंधणं। (धवला क. प्रति, पत्र १२६०)

प्रतिमें 'सद्दस्स' पद अशुद्ध है, वहां 'दव्वस्स' पाठ ही होना चाहिए। यहां वाक्यके ये शब्द 'जस्स वा दव्वस्स सहावो दव्वंतरपडिबद्धो' ठीक वे ही हैं, जो पंजिकामें भी पाये जाते हैं, और इन्हीं शब्दोंका पंजिकाकारने 'एत्थ जीवदव्वस्स सहावो णाणदंसणाणि' आदि वाक्योंमें अर्थ किया है। यथार्थतः जितना वाक्यांश पंजिकामें उद्धृत है, उतने परसे उसका अर्थ व्यवस्थित करना कठिन है। किन्तु धवलाके उक्त पूरे वाक्यको देखनेमात्रसे उसका रहस्य एकदम खुल जाता है। इसपरसे पंजिकाकारकी शैली यह जान पड़ती है कि आधारग्रन्थके सुगम प्रकरणको तो उसके अस्तित्वकी सूचनामात्र देकर छोड़ देना, और केवल कठिन स्थलोंका अभिप्राय अपने शब्दोंमें समझाकर और उसी सिलसिलेमें मूलके विवक्षितपदोंको लेकर उनका अर्थ कर देना। इस परसे पंजिकाकारकी उस प्रतिज्ञाका भी स्पष्टीकरण हो जाता है, जहां उन्होंने कहा है कि 'तस्साइगंभीरत्तादो अत्थविसमपदाणमत्थे थोरुद्धयेण पंचियसरूवेण भणिस्सामो' अर्थात् उन अठारह अनुयोगद्वारोंका विषय बहुत गहन होनेसे हम उनके अर्थकी दृष्टिसे विषमपदोंका व्याख्यान करते हैं, और ऐसा करनेमें मूलके केवल थोड़ेसे उद्धरण लेंगे। यही पंचिकाका स्वरूप है। मूलग्रन्थके वाक्योंको अपनी वाक्यरचनामें लेकर अर्थ करते जाना अन्य टीकाग्रन्थोंमें भी पाया जाता है। उदाहरणार्थ, विद्यानन्दिकृत अष्टसहस्रीमें अकलंकदेवकृत अष्टशती इसीप्रकार गुंथी हुई है। पंजिकाकी यह विशेषता है कि उसमें पूरे ग्रन्थका समावेश नहीं किया जाता, केवल विषमपदोंको ग्रहण कर समझाया जाता है।

सत्कर्मपंचिकाके उक्त अवतरणके पश्चात् शास्त्रीजीने लिखा है—

"इस प्रकार छह द्रव्योंके पर्यायान्तरका परिणमन विधान-विवरण होनेके बाद निम्न प्रकार प्रतिज्ञा वाक्य है—

संपहि पक्कमाहियारस्स उक्कस्सपक्कमदव्वस्स उत्तप्पाबहुगविवरणं कस्सामो। तं जहा—अप्पाबहुगाणमाणस्स उक्कस्सपक्कमदव्वं थोवं। कुदो?" इत्यादि।

आगे चलकर कहा गया है—

चत्तारि आउगाणं णीचुच्चागोदाणं पुणो एक्कारस-पयडीणं सगसेसछप्पण्णवंधपयडिसूचयणमिदि। चउसट्ठिपयडीणमप्पाबहुग गंथयारेहि परूविदं। अम्हेहि पुणो सूचिदपयडीणमप्पाबहुगं गंथउत्तप्पाबहुगबलेण परूविदं।........ ...एवं पक्कमाणिओगो गदो।

आगे चलकर पुनः आया है—

एत्थ पयडीसु जहण्णपक्कमदव्वाण अप्पाबहुगं उच्चदे। तं जहा—सव्वत्थोवमपच्चक्खाणमाणे पक्कम-दव्वं। कुदो? इत्यादि।

यहां उपर्युक्त निबंधन अधिकारके पश्चात् प्रक्रम अधिकारका प्रारम्भ बतलाया है और क्रमशः उसके उत्कृष्ट और जघन्य प्रक्रम द्रव्यके अल्पबहुत्वका कथन किया है, तथा इस बातकी सूचना की है कि चौंसठ प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व ग्रन्थकारने स्वयं कर दिया है, अतः हम यहां केवल उनके द्वारा सूचित प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व उक्त ग्रंथोक्त अल्पबहुत्वके बलसे करते हैं। धवलामें भी निबंधन अनुयोगद्वारके पश्चात् आठवें अनुयोग प्रक्रमका वर्णन है, और वहां उत्तरप्रकृति-प्रक्रमके उत्कृष्टउत्तरप्रकृतिप्रक्रम और जघन्यउत्तरप्रकृतिप्रक्रम ऐसे दो भेद करके वर्णन प्रारम्भ किया गया है। तथा वहां वह सब अल्पबहुत्व पाया जाता है जो पंचिकाकारने स्वीकार किया है और जिसके सम्बन्धमें शंकादि उठाकर उचित समाधान किया है।

उत्तरपयडिपक्कमो दुविहो, उक्कस्सउत्तरपयडिपक्कमो जहण्णउत्तरपयडिपक्कमो चेदि। तत्थ उक्कस्सए पयदं। सव्वत्थोवं अपच्चक्खाणकसायमाणपदेसग्गं। अपच्चक्खाणकोधे विसेसाहिया।......... जहण्णए पयद। सव्वत्थोवमपच्चक्खाणमाणे पक्कमदव्व। कोधे विसेसाहिया। .... एवं पक्कमे त्ति समत्तमणिओगद्दारं। (धवला क. प्रति, पत्र १२६६-६७)

प्रक्रम अधिकारके पश्चात् पंचिकामें उपक्रमका वर्णन इस प्रकार प्रारंभ होता है—

उवक्कमो चउव्विहो—बंधणोवक्कमो उदीरणोवक्कमो उवसामणोवक्कमो विपरिणामोवक्कमो चेदि। तत्थ बंधणोवक्कमो चउव्विहो पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसबंधणोवक्कमणभेदेण। पुणो एदेसिं चउण्णं पि बंधणो-वक्कमाणं अत्थो जहा सत्तकम्मपाहुडम्मि उत्तो तहा वत्तव्वो। सत्तकम्मपाहुडम्मि णाम कदम! महाकम्मपयडिपाहुडस्स चउव्वीसमणियोगद्दारेसु विदियाहियारो वेदणा णाम। तस्स सोलसाणियोगद्दारेसु चउत्थ-छट्ठम-सत्तमणियोगद्दाराणि दव्व-काल-भावविहाणणामधेयाणि। पुणो तहा महाकम्मपयडिपाहुडस्स पंचमो पयडिणामाहियारो। तत्थ चत्तारि अणियोगद्दाराणि अट्ठकम्माणं पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसमत्ताणि परूविय सूचिदुत्तरपयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेससत्तत्तादो। एदाणि सत्तकम्मपाहुडं णाम। मोहणीय पडुच्च कसायपाहुडं पि होदि। (सत्कर्मपंचिका)

यहां उपक्रमके चार भेदोंका उल्लेख करके प्रथम बंधन उपक्रमके, पुनः प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशरूप चार प्रभेदोंके विषयमें यह बतलाया गया है कि इनका अर्थ जिसप्रकार संतकम्मपाहुडमें किया गया है उसप्रकार करना चाहिए। उस संतकम्मपाहुडसे भी प्रकृतमें वेदना-नुयोगद्वारके तीन और प्रकृति अनुयोगद्वारके चार अधिकारोंसे अभिप्राय है। यहां भी पंचिकाकार स्पष्टतः धवलाके निम्न उल्लिखित प्रकरणका विवरण कर रहे हैं—

जो सो कम्मोवक्कमो सो चउव्विहो, बंधणउवक्कमो उदीरणउवक्कमो उवसामणउवक्कमो विपरिणामउवक्कमो चेदि ।...... जो सो बंधणउवक्कमो सो चउव्विहो, पयडिबंधणउवक्कमो ठिदिबंधणउवक्कमो अणुभागबंधणउवक्कमो पदेसबंधणउवक्कमो चेदि ।...... एत्थ एदेसि चउण्हमुवक्कमाण **जहा संतकम्मपयडिपाहुडे परूविदं तहा परूवेयव्वं** । जहा महाबंधे परूविदं, तहा परूवणा एत्थ किण्ण कीरदे ? ण, तस्स पढमसमयबंधम्मि चेव वावारादो । ण च तमेत्थ वोत्तु जुत्त, पुणरुत्तदोसप्पसंगादो । (धवला क. पत्र १२६७)

यहां जो बंधनके चारों उपक्रमोंका प्ररूपण महाबंधके अनुसार न करके संतकम्मपाहुडके अनुसार करनेका निर्देश किया गया है, उसीका पंचिकाकारने स्पष्टीकरण किया है कि महाकम्मपयडिपाहुडके किन किन विशेष अधिकारोंसे यहां संतकम्मपाहुड पदद्वारा अभिप्राय है ।

पचिकामें उपक्रम अधिकारके पश्चात् उदयअनुयोगद्वारका कथन है जैसा उसके अन्तिम भागके अवतरणसे सूचित होता है । यथा--

उदयाणियोगद्दारं गद ।

यहाके कोई विशेष अवतरण हमें उपलब्ध नहीं हुए । अतः धवलासे मिलान नहीं किया जा सका । तथापि उपक्रमके पश्चात् उदय अनुयोगद्वारका प्ररूपण तो है ही । उक्त पंचिका यहीं समाप्त हो जाती है । इससे जान पड़ता है कि इस पंचिकामें केवल निबंधन, प्रक्रम, उपक्रम और उदय, इन्हीं चार अधिकारोंका विवरण है । शेष मोक्ष आदि चौदह अनुयोगोंका उसमें कोई विवरण यहा नहीं है । इससे जान पड़ता है कि यह पंचिका भी अधूरी ही है, क्योंकि पंचिकाकी उत्थानिकामें दी गई सूचनासे ज्ञात होता है कि पंचिकाकार शेष अठारहों अधिकारोंकी पंचिका करनेवाले थे । शेष ग्रन्थभाग उक्त प्रतिमें छूटा हुआ है, या पचिकाकारद्वारा ही किसी कारणसे रचा नहीं गया, इसका निर्णय वर्तमानमें उपलब्ध सामग्री परसे नहीं हो सकता ।

यह पंचिका किसकी रची हुई है, कब रची गई, इत्यादि खोजकी सामग्रीका भी अभी अभाव है । पचिका प्रतिकी अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

श्री जिनपदकमलमधुव्रत-
ननुपम सत्पात्रदाननिरत सम्य-
क्त्वनिधानं कित्ते वधू-
मनसिजनेने शातिनाथ नेसेदं धरेयोळ् ॥

धरेयोळ्.........पुराजिदनुपमं चारुचारित्रनादुन्नतधैर्यं सादिपर्यंत रादिय्र नेनिसि पेंपिंगुणानीकदिं ....सद्भक्तियादेशदि सत्कर्मदा पंचिय विस्तरदिं श्रीमाघणंदिव्रतिगे वरेसिदं रागदिं शांतिनाथ ॥

उदविदमुददि सत्क-
र्मद पंजियननुपमाननिर्वाणसुख-
प्रदमं वरेयिसि शान्तं
मदरहित माघणंदियतिपतिगित्त ॥

श्री माघनंदिसिद्धान्तदेवर्गे सत्कर्मपंजिय श्रीमदुदयादित्य प्रतिसमानं बरेदं ॥ मंगलं महा ॥

पं. लोकनाथजी शास्त्रीकी सूचनानुसार इस " अन्तिम प्रशस्तिमें दो तीन कानडीमें

कंदवृत्त पद्य हैं जो कि शान्तिनाथ राजाके प्रशंसात्मक पद्य हैं। उक्त राजाने ' सत्कर्मपंचिका ' को विस्तारसे लिखवाकर भक्तिके साथ श्री माघनंद्याचार्यजीको दे दिया। प्रति लिखनेवाला श्री उदयादित्य है। "

इसके ताडपत्रोंकी संख्या २७ और ग्रन्थ-प्रमाण लगभग ३७२६ श्लोकके है।

३ महाबंध-परिचय

मूडबिद्रीकी महाधवल नामसे प्रसिद्ध ताड़पत्रीय प्रतिके पत्र २७ पर पूर्वोक्त सत्कर्मपंजिका समाप्त हुई है। २८ वां ताड़पत्र प्राप्त नहीं है। आगे जो अधिकार-समाप्तिकी व नवीन अधिकार-प्रारंभकी प्रथम सूचना पाई जाती है वह इसप्रकार है—

एवं पगदिसमुक्कित्तणा समत्तं (त्ता)। जो सो सव्वबंधो णो सव्वबंधो...इत्यादि।

तथा ' एवं काल समत्तं ' ' एवं अंतरं समत्तं ' इत्यादि।

पं. लोकनाथजी शास्त्रीके शब्दोंमें 'इस रीतिसे भंगविचय, भागाभाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अंतर, भाव और अल्पबहुत्वका वर्णन है'। अल्पबहुत्वकी समाप्ति-पुष्पिका इसप्रकार है—

एवं परत्थाणअद्धाअप्पाबहुगं समत्त। एवं पगदियंधो समत्तो।

इस थोड़ेसे विवरणसे ही अनुमान हो जाता है कि प्रस्तुत ग्रंथरचना महाबंधके विषयसे संबन्ध रखती है। हम प्रथम भागकी भूमिकाके पृष्ठ ६७ पर धवला और जयधवलाके दो उद्धरण दे चुके हैं, जिनमें कहा गया है कि महाबंधका विषय बंधविधानके प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश, इन चारों प्रकारोंका विस्तारसे वर्णन करना है। इन प्रकारोंका कुछ और विषय-विभाग धवला प्रथम भागके पृष्ठ १२७ आदि पर पाया जाता है जहां जीवट्ठाणकी प्ररूपणाओंका उद्गम-स्थान बतलाते हुए कहा गया है—

बंधविहाणं चउव्विहं। तं जहा–पयडिबंधो ट्ठिदिबंधो अणुभागबंधो पदेसबंधो चेदि। तत्थ जो सो पयडिबंधो सो दुविहो, मूलपयडिबंधो उत्तरपयडिबंधो चेदि। तत्थ जो सो मूलपयडिबंधो सो थप्पो। जो सो उत्तरपयडिबंधो सो दुविहो, एगेगुत्तरपयडिबंधो अव्वोगाढउत्तरपयडिबंधो चेदि। तत्थ जो सो एगेगुत्तर-पयडिबंधो तस्स चउवीस अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति। तं जहा–समुक्कित्तणा सव्वबंधो णोसव्वबंधो उक्कस्सबंधो अणुक्कस्सबंधो जहण्णबंधो अजहण्णबंधो सादियबंधो अणादियबंधो धुवबंधो अद्धुवबंधो बंध-सामित्तविचयो बंधकालो बंधंतरं बंधसण्णियासो णाणाजीवेहि भंगविचयो भागाभागाणुगमो परिमाणाणुगमो खेत्ताणुगमो पोसणाणुगमो कालाणुगमो अंतराणुगमो भावाणुगमो अप्पाबहुगाणुगमो चेदि।

यहां प्रकृतिबंध विधानके एकैकोत्तरप्रकृतिबंधके अन्तर्गत जो अनुयोगद्वार गिनाये गये हैं, उनमेंसे आदिके समुत्कीर्तना सर्वबंध और नोसर्वबंध, इन तीन, तथा अन्तके भंगविचयादि नौ अनुयोग-द्वारोंका उल्लेख महाधवलाकी उक्त ग्रंथरचनाके परिचयमें भी पाया जाता है। अतः यह भाग महाबंधके प्रकृतिबंधविधान अधिकारकी रचनाका अनुमान किया जा सकता है। यह प्रकृतिबंध ताड़पत्र ५० पर अर्थात् २३ पत्रोंमें समाप्त हुआ है।

प्रकृतिबंध अधिकारकी समाप्तिके पश्चात् महाधवलमें ग्रंथरचना इसप्रकार है—

' णमो अरहंताणं ' इत्यादि

एत्थो ठिदिबंधो दुविधो, मूलपगदिठिदिबंधो चेव उत्तरपगडिठिदिबंधो चेव । एत्थो मूलपगडिठिदिबंधो पुव्वगमणिज्जो । तत्थ इमाणि चत्तारि अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति । तं जहा–ठिदिबंधठाणपरूवणा, णिसेयपरूवणा अद्धाकंदयपरूवणा अप्पाबहुगेत्ति ।... ...एवं भूयो ठिदिअप्पाबहुगं समत्तं । एवं मूलपगदिठिदिबंधो (धे) चउव्वीसमणियोगद्दारं समत्तं ।

भुजगारबंधेत्ति ।.... ......

' इसप्रकार भुजगारबंध प्रारंभ होकर काल, अन्तर इत्यादि अल्पबहुत्व तक चला गया है ।'

एवं जीवसमुदाहरेत्ति समत्तमणियोगद्दाराणि । एवं ठिदिबंधं समत्तं ।

बंधविधानके इस स्थितिबंधनामक द्वितीय प्रकारका भी कुछ परिचय धवला प्रथम भागसे मिलता है । पृ. १३० पर कहा गया है—

ट्ठिदिबंधो दुविहो, मूलपयडिट्ठिदिबंधो उत्तरपयडिट्ठिदिबंधो चेदि । तत्थ जो सो मूलपयडिट्ठिदिबंधो सो थप्पो । जो सो उत्तरपयडिट्ठिदिबंधो तस्स चउवीस अणियोगद्दाराणि । तजहा–अद्धाछेदो, सव्वबंधो. .... इत्यादि ।

यहा स्थितिबंधके मूलप्रकृति और उत्तरप्रकृति, इसप्रकार दो भेद करके उनमेंसे प्रथमको अप्रकृत होनेके कारण छोड़कर प्रस्तुतोपयोगी द्वितीय भेदके चौबीस अनुयोगद्वार बतलाये गये हैं । इनसे पूर्वोक्त महाधवलकी रचनाके महाबंधसे संबंधकी सूचना मिलती है ।

यह स्थितिबंध ताड़पत्र ५१ से ११३ अर्थात् ६३ पत्रोंमें समाप्त हुआ है ।

इनसे आगे महाधवलमें क्रमशः अनुभागबंध और फिर प्रदेशबंधका विवरण पाया जाता है । यथा—

एव जीवसमुदाहरेत्ति समत्तमणियोगद्दाराणि । एवं उत्तरपगदिअणुभागबंधो समत्तो । एवं अणुभागबंधो समत्तो । × × × ×

जो सो पदेसबंधो सो दुविधो, मूलपगदिपदेसबंधो चेव उत्तरपगदिपदेसबंधो चेव । एत्तो मूलपयदिपदेसबंधो पुव्वं गमणीयो भागाभागसमुदाहारो अट्ठविधबंधगस्स आउगभागो × × × × एवं अप्पाबहुगं समत्तं । एवं जीवसमुदाहारेत्ति समत्तमणियोगद्दारं । एवं पदेसबंधं समत्तं ।

एव बंधविधाणेत्ति समत्तमणियोगद्दारं । एवं चदुबंधो समत्तो भवदि ।

अनुभागबंध ताड़पत्र ११४ से १६९ अर्थात् ५६ पत्रोंमें, व प्रदेशबंध १७० से २१९ अर्थात् ५० पत्रोंमें समाप्त हुआ है ।

यहीं महाधवल प्रतिकी ग्रंथरचना समाप्त होती है । इस संक्षिप्त परिचयसे स्पष्ट है कि महाधवल प्रतिके उत्तर भागमें बंधविधानके चारों प्रकारों–प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशका विस्तारसे वर्णन है, तथा उनके भेद-प्रभेदों व अनुयोगद्वारोंका विवरण धवलादि ग्रंथोंमें संकेतित विषय-विभागके अनुसार ही पाया जाता है । अतएव यही भूतबलि आचार्यकृत महाबंध हो सकता है । दुर्भाग्यतः इसके प्रारंभका ताड़पत्र अप्राप्य होनेसे तथा यथेष्ट अवतरण न मिलनेसे जितनी जैसी चाहिये उतनी छानबीन ग्रंथकी फिर भी नहीं हो सकी । तथापि अनुभागबंध-विधानकी समाप्तिके

पश्चात् प्रतिमें जो पांच छह कनाडीके कंद-वृत्त पद्य पाये जाते हैं, उनमेंसे एक शास्त्रीजीने पूरा उद्धृत करके भेजनेकी कृपा की है, जो इस प्रकार है—

सकलधरित्रीविनुत—
प्रकटितयधीशे मल्लिकब्बे वरेसि सत्पु-
ण्याकर-महावंधद पु—
स्तक श्रीमाघनंदिमुनिगळि गित्तळ्

इस पद्यमें कहा गया है कि श्रीमती मल्लिकाम्बा देवीने इस सत्पुण्याकर महावंधकी पुस्तकको लिखाकर श्रीमाघनन्दि मुनिको दान की। यहां हमें इस ग्रन्थके महावंध होनेका एक महत्त्वपूर्ण प्राचीन उल्लेख मिल गया। शास्त्रीजीकी सूचनानुसार शेष कनाड़ी पद्योंमेंसे दो तीनमें माघनन्द्याचार्यके गुणोंकी प्रशंसा की गई है, तथा दो पद्योंमें शान्तिसेन राजा व उनकी पत्नी मल्लिकाम्बा देवीका गुणगान है, जिससे महाबंध प्रतिका दान करनेवाली मल्लिकाम्बा देवी किसी शांतिसेन नामक राजाकी रानी सिद्ध होती हैं। ये शान्तिसेन व माघनन्दि निःसंदेह वे ही हैं जिनका सत्कर्मपंजिकाकी प्रशस्तिमें भी उल्लेख आया है। प्रतिके अन्तमें पुनः ५ कनाड़ीके पद्य हैं जिनमेंसे प्रथम चारमें माघनन्दि मुनीन्द्रकी प्रशंसा की गई है व उन्हें 'यतिपति' 'व्रतनाथ' व 'व्रतिपति' तथा 'सैद्धान्तिकाग्रेसर' जैसे विशेषण लगाये गये हैं। पांचवें पद्यमें कहा गया है कि रूपवती सेनवधूने श्रीपंचमीव्रतके उद्यापनके समय (यह शास्त्र) श्रीमाघनन्दि व्रतिपतिको प्रदान किया। यथा—

श्रीपंचमियं नोंतुध्यापनेयं माडि वरेसि राध्दांतमना।
रूपवती सेनवधू जितकोप श्रीमाघनन्दि व्रतिपति गित्तळ् ॥

यहां सेनवधूसे शान्तिसेन राजाकी पत्नीका ही अभिप्राय है। नामके एक भागसे पूर्णनामको सूचित करना सुप्रचलित है।

यह अन्तकी प्रशस्ति वीरवाणीविलास जैनसिद्धान्त भवनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९३५) में पूर्ण प्रकाशित है।

उक्त परिचयमें प्रतिके लिखाने व दान किये जानेका कोई समय नहीं पाया जाता। शान्तिसेन राजाका भी इतिहासमें जल्दी पता नहीं लगता। माघनन्दि नामके मुनि अनेक हुए हैं जिनका उल्लेख श्रवणबेलगोला आदिके शिलालेखोंमें पाया जाता है। जब शान्तिसेन राजाके उल्लेखादि संबन्धी पूर्ण पद्य प्राप्त होंगे, तब धीरे धीरे उनके समयादिके निर्णयका प्रयत्न किया जा सकेगा।

हम ऊपर कह आये हैं कि इस प्रतिमें महाबंध रचनाके प्रारंभका पत्र २८ वां नहीं है। शास्त्रीजीकी सूचनानुसार प्रतिमें पत्र नं. १०९, ११४, १७३, १७४, १७६, १७७, १८३, १८४, १८५, १८६, १८८, १९७, २०८, २०९ और २१२ भी नहीं हैं। इसप्रकार कुल १६ पत्र नहीं मिल रहे हैं। किन्तु शास्त्रीजीकी सूचना है कि कुछ लिखित ताड़पत्र विना पत्र-संख्याके भी प्राप्त हैं। संभव है यदि प्रयत्न किया जाय तो इनमेंसे उक्त त्रुटिकी कुछ पूर्ति हो सके।

४ उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति पर कुछ और प्रकाश

प्रथम भागकी प्रस्तावनामें[1] हम वर्तमान ग्रंथभाग अर्थात् द्रव्यप्रमाणप्ररूपणामें के[2] तथा अन्यत्रसे तीन चार ऐसे अवतरणोंका परिचय करा चुके हैं जिनमें 'उत्तरप्रतिपत्ति' और 'दक्षिण-प्रतिपत्ति' इसप्रकारकी दो भिन्न भिन्न मान्यताओंका उल्लेख पाया जाता है। वहां हम कह आये हैं कि 'हमने इन उल्लेखोंका दूसरे उल्लेखोंकी अपेक्षा कुछ विस्तारसे परिचय इस कारणसे दिया है क्योंकि यह उत्तर और दक्षिण प्रतिपत्तिका मतभेद अत्यन्त महत्वपूर्ण और विचारणीय है। संभव है इनसे धवलाकारका तात्पर्य जैनसमाजके भीतरकी किन्हीं विशेष सांप्रदायिक मान्यताओंसे ही हो' यहां हमारा संकेत यह था कि संभवतः यह श्वेताम्बर और दिगम्बर मान्यता भेद हो और यह बात उक्त प्रस्तावनाके अन्तर्गत अंग्रेजी वक्तव्यमें मैंने व्यक्त भी कर दी थी कि—

"At present I am examining these views a bit more closely. They may ultimately turn out to be the Svetambara and Digambara Schools"

उक्त अवतरणोंमें दक्षिणप्रतिपत्तिको 'पवाइज्जमाण' और 'आयरियपरंपरागय' भी कहा है। अब श्रीजयधवलमें एक उल्लेख हमें ऐसा भी दृष्टिगोचर हुआ है जहा 'पवाइज्जंत' तथा 'आइरियपरपरागय' का स्पष्टार्थ खोलकर समझाया गया है और अज्जमंखुके उपदेशको वहां 'अपवाइज्जमाण' तथा नागहस्ति क्षमाश्रमणके उपदेशको 'पवाइज्जंत' बतलाया है। यथा——

को पुण पवाइज्जतोवएसो णाम वुत्तमेदं ? सव्वाइरियसम्मदो चिरकालमव्वोच्छिण्णसपदायकमेणागच्छमाणो जो सिस्सपरंपराए पवाइज्जदे पण्णविज्जदे सो पवाइज्जंतोवएसो त्ति भण्णदे। अथवा अज्जमखु-भयवंताणमुवएसो एत्थापवाइज्जमाणो णाम। णागहत्थिखवणाणमुवएसो पवाइज्जंतो त्ति घेत्तव्वो।

(जयधवला अ. पत्र ९०८)

अर्थात् यहां जो 'पवाइज्जंत' उपदेश कहा गया है उसका अर्थ क्या है ? जो सर्व आचार्योंको सम्मत हो, चिरकालसे अव्युच्छिन्नसंप्रदाय-क्रमसे आ रहा हो और शिष्यपरंपरासे प्रचलित और प्रज्ञापित किया जा रहा हो वह 'पवाइज्जत' उपदेश कहा जाता है। अथवा, भगवान् अज्जमंखुका उपदेश यहां (प्रकृत विषयपर) 'अपवाइज्जमाण' है, तथा नागहस्ति-क्षपणका उपदेश 'पवाइज्जंत' है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये।

अज्जमंखु और नागहस्तिके भिन्न मतोपदेशोंके अनेक उल्लेख इन सिद्धान्त ग्रन्थोंमें पाये जाते हैं, जिनकी कुछ सूचना हम उक्त प्रस्तावनामें दे चुके हैं। जान पड़ता है कि इन दोनों आचार्योंका जैनसिद्धान्तकी अनेक सूक्ष्म बातोंपर मतभेद था। जहां वीरसेनस्वामीके संमुख ऐसे मतभेद उपस्थित हुए, वहा जो मत उन्हें प्राचीन परंपरागत ज्ञात हुआ, उसे 'पवाइज्जमाण' कहा।

१ षट्खण्डागम भाग, १ भूमिका पृष्ठ ५७.

२ देखो पृ. ९२, ९४, ९८ आदि, मूल व अनुवाद.

तथा जिस मतकी उन्हें प्रामाणिक प्राचीन परंपरा नहीं मिली, उसे 'अपवाइज्जमाण' कहा है। प्रस्तुत उल्लेखसे अनुमान होता है कि उक्त प्रतिपत्तियोंसे उनका अभिप्राय किन्ही विशेष गढ़ी हुई मत-धाराओंसे नहीं था। अर्थात् ऐसा नहीं था कि किसी एक आचार्यका मत सर्वथा 'अपवाइज्जमाण' और दूसरेका सर्वथा 'पवाइज्जमाण' हो। किंतु इन्हें दक्षिणप्रतिपत्ति और उत्तरप्रतिपत्ति क्यों कहा है यह फिर भी विचारणीय रह जाता है।

५ णमोकारमंत्रके सादित्व-अनादित्वका निर्णय।

द्वितीय भागकी प्रस्तावना (पृ. ३३ आदि) में हम प्रगट कर चुके हैं कि धवलाकारने जीवट्ठाणखंड व वेदनाखंडके आदिमें जो शास्त्रके निबद्धमंगल व अनिबद्धमंगल होनेका विचार किया है उसका यह निष्कर्ष निकलता है कि जीवट्ठाणके आदिमें णमोकारमंत्ररूप मंगल भगवान् पुष्पदंतकृत होनेसे यह शास्त्र निबद्धमंगल है, किन्तु वेदनाखंडके आदिमें 'णमो जिणाणं' आदि नमस्कारात्मक मंगलवाक्य होनेपर भी वह शास्त्र अनिबद्धमंगल है, क्योंकि वे मंगलसूत्र स्वयं भूतबलिकी रचना न होकर गौतमगणधरकृत हैं। वेदनाखंडमें भी निबद्धमंगलत्व तभी माना जा सकता है, जब वेदनाखंडको महाकर्मप्रकृतिपाहुड मान लिया जाय और भूतबलि आचार्यको गौतम गणधर। अन्य किसी प्रकारसे निबद्धमंगलत्व सिद्ध नहीं हो सकता। इस विवेचनसे धवलाकारका यह मत स्पष्ट समझमें आता है कि उपलब्ध णमोकारमंत्रके आदि रचयिता आचार्य पुष्पदंत ही हैं।

प्रथम भागमें उक्त विवेचनसंबन्धी मूलपाठका संपादन व अनुवाद करते समय हस्तलिखित प्रतियोंका जो पाठ हमारे सन्मुख उपस्थित था उसका सामञ्जस्य बैठाना हमारे लिये कुछ कठिन प्रतीत हुआ, और इसीसे हमें वह पाठ कुछ परिवर्तित करके मूलमें रखना पडा। तथापि प्रतियोंका उपलब्ध पाठ यथावत् रूपसे वहीं पादटिप्पणमें दे दिया था। (देखो प्रथम भाग पृ. ४१)। किंतु अब मूडबिद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतिसे जो पाठ प्राप्त हुआ है वह भी हमारे पादटिप्पणमें दिये हुए प्रतियोंके पाठके समान ही है। अर्थात्—

"जो सुत्तस्सादीए सुत्तकत्तारेण कयदेवताणमोक्कारो तं णिबद्धमंगलं। जो सुत्तस्सादीए सुत्तकत्तारेण णिबद्धदेवताणमोक्कारो तमणिबद्धमंगलं"

अब वेदनाखंडके आदिमें दिये हुए धवलाकारके इसी विषयसंबन्धी विवेचनके प्रकाशमें यह पाठ समुचित जान पड़ता है। इसका अर्थ इसप्रकार होगा—

"जो सूत्रग्रंथके आदिमें सूत्रकारद्वारा देवतानमस्कार किया जाता है, अर्थात् नमस्कार-वाक्य स्वयं रचकर निबद्ध किया जाता है उसे निबद्धमंगल कहते हैं। और जो सूत्रग्रथके आदिमें सूत्रकारद्वारा देवतानमस्कार निबद्ध कर दिया जाता है, अर्थात् नमस्कारवाक्य स्वयं न रचकर किसी अन्य आचार्यद्वारा पूर्वरचित नमस्कारवाक्य निबद्ध कर दिया जाता है, उसे अनिबद्धमंगल कहते हैं।"

इसप्रकार मूडविद्रीकी प्रति व प्रचलित प्रतियोंके पाठकी पूर्णतया रक्षा हो जाती है, उसका वेदनाखंडके आदिमें किये गये विवेचनसे ठीक सामंजस्य वैठ जाता है, तथा उससे धवलाकारके णमोकारमंत्रके कर्तृत्वसंवन्धी उस मतकी पूर्णतया पुष्टि हो जाती है जिसका परिचय हम विस्तारसे गत द्वितीय भागकी प्रस्तावनामें करा आये हैं। णमोकारमंत्रके कर्तृत्वसंवन्धी इस निष्कर्षद्वारा कुछ लोगोंके मतसे प्रचलित एक मान्यताको वड़ी भारी ठेस लगती है। वह मान्यता यह है कि णमोकारमंत्र अनादिनिधन है, अतएव यह नहीं माना जा सकता कि उस मंत्रके आदिकर्ता पुष्पदन्ताचार्य हैं। तथापि धवलाकारके पूर्वोक्त मतके परिहार करनेका कोई साधन व प्रमाण भी अवतक प्रस्तुत नहीं किया जा सका। गंभीर विचार करनेसे ज्ञात होता है कि णमोकारमंत्रसंवन्धी उक्त अनादिनिधनत्वकी मान्यता व उसके पुष्पदन्ताचार्यद्वारा कर्तृत्वकी मान्यतामें कोई विरोध नहीं है। भावकी (अर्थकी) दृष्टिसे जवसे अरिहंतादि पंच परमेष्ठीकी मान्यता है तमीसे उनको नमस्कार करनेकी भावना भी मानी जा सकती है। किंतु 'णमो अरिहंताणं' आदि शब्दरचनाके कर्ता पुष्पदन्ताचार्य माने जा सकते है। इस वातकी पुष्टिके लिये मैं पाठकोंका ध्यान श्रुतावतारसंवन्धी कथानककी ओर आकर्षित करता हूं। धवला, प्रथम भाग, पृ. ५५ पर कहा गया है कि—

'सुत्तमोइण्णं अत्थदो तित्थयरादो, गंथदो गणहरदेवादो त्ति'

अर्थात् सूत्र अर्थप्ररूपणाकी अपेक्षा तीर्थंकरसे, और ग्रंथरचनाकी अपेक्षा गणधरदेवसे अवतीर्ण हुआ है।

यहां फिर प्रश्न उत्पन्न होता है—

द्रव्यभावाभ्यामकृत्रिमत्वत सदा स्थितस्य श्रुतस्य कथमवतार इति ?

अर्थात् द्रव्य-भावसे अकृत्रिम होनेके कारण सर्वदा अवस्थित श्रुतका अवतार कैसे हो सकता है?

इसका समाधान किया जाता है—

एतत्सर्वमभविष्यद्यदि द्रव्यार्थिकनयोऽविवक्षिष्यत्। पर्यायार्थिकनयापेक्षायामवतारस्तु पुनर्घटत एव।

अर्थात् यह शंका तो तव वनती जव यहां द्रव्यार्थिक नयकी विवक्षा होती। परंतु यहांपर पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा होनेसे श्रुतका अवतार तो बन ही जाता है।

आगे चलकर पृष्ठ ६० पर कर्ता दो प्रकारका बतलाया गया है, एक अर्थकर्ता व दूसरा ग्रंथकर्ता। और फिर विस्तारके साथ तीर्थंकर भगवान् महावीरको श्रुतका अर्थकर्ता, गौतम गणधरको द्रव्यश्रुतका ग्रंथकर्ता तथा भूतवलि-पुष्पदन्तको भी खंडसिद्धान्तकी अपेक्षा कर्ता या उपतंत्रकर्ता कहा है। यथा—

'तत्थ कत्ता दुविहो, अत्थकत्ता गंथकत्ता चेदि। महावीरोऽर्थकर्ता।... एवंविधो महावीरोऽर्थकर्ता। ... तदो भावसुदस्स अत्थपदाणं च तित्थयरो कत्ता। तित्थयरादो सुदपज्जाएण गोदमो परिणदो त्ति दव्व-

सुदस्स गोदमो कत्ता। तत्तो गंथरयणा जादेत्ति।... तदो एवं खंडसिद्धंतं पडुच्च भूदवलि-पुप्फयंताइरिया वि कत्तारो उच्चंति। तदो मूलतंतकत्ता वड्ढमाणभडारओ, अणुतंतकत्ता गोदमसामी, उत्ततंतकत्तारा भूदवलि-पुप्फयंतादयो वीयरायदोसमोहा मुणिवरा। किमर्थं कर्ता प्ररूप्यते? शास्त्रस्य प्रामाण्यप्रदर्शनार्थम्, 'वक्तृप्रामाण्याद् वचनप्रामाण्यम्' इति न्यायात्। (षट्खंडागम भाग १, पृष्ठ ६०-७२)

उसी प्रकार, स्वयं धवल ग्रंथ आगम है, तथापि अर्थकी दृष्टिसे अत्यन्त प्राचीन होनेपर भी उपलभ्य शब्दरचनाकी दृष्टिसे उसके कर्ता वीरसेनाचार्य ही माने जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि णमोकारमंत्रको द्रव्यार्थिक नयसे पुष्पदन्ताचार्यसे भी प्राचीन मानने व पर्यायार्थिक नयसे उपलब्ध भाषा व शब्दरचनाके रूपमें पुष्पदन्ताचार्यकृत माननेमें कोई विरोध उत्पन्न नहीं होता। वर्तमान प्राकृत भाषात्मक रूपमें तो उसे सादि ही मानना पड़ेगा। आज हम हिन्दी भाषामें उसी मंत्रको 'अरिहंतोंको नमस्कार' या अंग्रेजीमें 'Bow to the Worshipful' आदि रूपमें भी उच्चारण करते हैं, किंतु मंत्रका यह रूप अनादि क्या, बहुत पुराना भी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि, हम जानते हैं कि स्वयं प्रचलित हिन्दी या अंग्रेजी भाषा ही कोई हजार आठसौ वर्षसे पुरानी नहीं है। हॉं, इस बातकी खोज अवश्य करना चाहिये कि क्या यह मंत्र उक्त रूपमें ही पुष्पदन्ताचार्यके समयसे पूर्वकी किसी रचनामें पाया जाता है? यदि हां, तो फिर विचारणीय यह होगा कि धवलाकारके तत्संबंधी कथनोंका क्या अभिप्राय है। किन्तु जबतक ऐसे कोई प्रमाण उपलब्ध न हों तबतक अब हमें इस परम पावन मंत्रके रचयिता पुष्पदन्ताचार्यको ही मानना चाहिये।

---

६. शंका-समाधान

षट्खंडागम **प्रथम भागके** प्रकाशित होनेपर अनेक विद्वानोंने अपने विशेष पत्रद्वारा अथवा पत्रोंमें प्रकाशित समालोचनाओंद्वारा कुछ पाठसम्बंधी व सैद्धान्तिक शंकाएं उपस्थित की हैं। यहां उन्हीं शंकाओंका संक्षेपमें समाधान करनेका प्रयत्न किया जाता है। ये शंका-समाधान यहां प्रथम भागके पृष्ठक्रम से व्यवस्थित किये जाते हैं।

पृष्ठ ६

१ शंका—'वियलियमलमूढदसणुत्तिलया' में 'मलमूढ' की जगह 'मलमूल' पाठ अधिक ठीक प्रतीत होता है, क्योंकि सम्यग्दर्शनके पचीस मल दोषोंमें तीन मूढ़ता दोष भी सम्मिलित हैं। (विवेकाभ्युदय, ता० २०-१०-४०)

समाधान—'मलमूढ' पाठ सहारनपुरकी प्रतिके अनुसार रखा गया है और मूडबिद्रीसे जो प्रतिमिलान होकर संशोधन-पाठ आया है, उसमें भी 'मलमूढ' के स्थानपर कोई पाठ-परिवर्तन नहीं प्राप्त हुआ। तथा उसका अर्थ सर्व प्रकारके मल और तीन मूढ़ताएं करना असंगत भी नहीं है।

२ शंका—गाथा ४ में 'मह' पाठ है, जिसका अनुवाद 'मुझपर' किया गया है। समझमें नहीं आता कि यह अनुवाद कैसे ठीक हो सकता है, जब कि 'महु' का संस्कृत रूपान्तर 'मधु' होता है ! (विवेकाभ्युदय, ता० २०-१०-४०)

समाधान—प्रकृतमें 'महु' का संस्कृत रूपान्तर 'मह्यम्' करना चाहिए। देखो हैम व्याकरण 'महु मज्झु ङसि ङस्भ्याम्' ८, ४, ३७९. इसीके अनुसार 'मुझपर' ऐसा अर्थ किया गया है।

३ शंका—गाथा ४ मे 'दाणवरसीहो' पाठ है। पर उसमें नाश करनेका सूचक 'हर' शब्द नहीं है। 'वर' की जगह 'हर' रखना चाहिए था। (विवेकाभ्युदय, ता०२०-१०-४०)

समाधान—हमारे सन्मुख उपस्थित समस्त प्रतियोंमें 'दाणवरसीहो' ही पाठ था और मूडबिद्रीसे उसमें कोई पाठ-परिवर्तन नहीं मिला। तब उसमें 'वर' के स्थानपर जबर्दस्ती 'हर' क्यों कर दिया जाय, जब कि उसका अर्थ 'हर' के विना भी सुगम है ! 'वादीभसिंह' आदि नामोंमें विनाशबोधक कोई शब्द न होते हुए भी अर्थमें कोई कठिनाई नहीं आती।

पृष्ठ ७

४ शंका—गाथा ५ में 'दुकयंतं' पाठ है जिसका अर्थ किया गया है 'दुष्कृत अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले' यह अर्थ किसप्रकार निकाला गया, उक्त शब्दका संस्कृत रूपान्तर क्या है, यह स्पष्ट करना चाहिए। (विवेकाभ्युदय, २०-१०-४०)

समाधान—'दुकयंतं' का संस्कृत रूपान्तर है 'दुष्कृतान्त' जिसका अर्थ दुष्कृत अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले सुस्पष्ट है।

५ शंका—गाथा ५ में '-वइं सया दंतं' पाठ है, जिसका रूपान्तर होगा '-पतिं सदा दन्तं'। इसमें हमें समझ नहीं पडता कि 'दन्त' शब्दसे इंद्रियदमनका अर्थ किसप्रकार लाया जा सकता है ? (विवेकाभ्युदय, २०-१०-४०)

समाधान—प्राकृतमें 'दंत' शब्द 'दान्त' के लिये भी आता है। यथा, 'दंतेण चित्तेण चरंति धीरा' (प्राकृतसूक्तरत्नमाला) पाइअसद्दमहण्णओ कोषमें 'दंत' का अर्थ 'जितेन्द्रिय' दिया गया है। इसीके अनुसार 'निरन्तर पंचेन्द्रियोंका दमन करनेवाले' ऐसा अनुवाद किया गया है।

६ शंका—गाथा ६ में 'विणिहयवम्महपसरं' का अर्थ होना चाहिये 'जिन्होंने ब्रह्माद्वैतकी व्यापकताको नष्ट कर दिया है और निर्मलज्ञानके रूपमें ब्रह्मकी व्यापकताको बढ़ाया है'। (विवेकाभ्युदय, २०-१०-४०)

समाधान—जब काव्यमें एकही शब्द दो वार प्रयुक्त किया जाता है तब प्रायः दोनों जगह उसका अर्थ भिन्न भिन्न होता है। किन्तु उक्त अर्थमें 'वम्मह' का अर्थ दोनों जगह 'ब्रह्म' ले लिया गया है, और उनमें भेद करनेके लिए एकमें 'अद्वैत' शब्द अपनी ओरसे डाला गया

है, जिसके लिए मूलमें सर्वथा कोई आधार नहीं है। प्राकृतमें 'वम्मह' शब्द 'मन्मथ' के लिए आता है। हैम प्राकृतव्याकरणमें इसके लिए एक स्वतंत्र सूत्र भी है– 'मन्मथे वः' ८, १, २४२. इसकी वृत्ति है 'मन्मथे मस्य वो भवति, वम्महो'। इसीके अनुसार हमने अनुवाद किया है, जिसमें कोई दोष नहीं।

पृष्ठ १५

७ शंका—आगमे मूले 'सम्मइसुत्ते' इति लिखितमस्य भवद्भिरर्थः कृत. 'सम्मतितर्कें'। सम्मतितर्काख्यं श्वेताम्बरीयग्रन्थमस्ति, तस्य निर्देश आचार्यैः कृतः वा सम्मइसुत्तं नाम किमपि दिगम्बरीयं ग्रन्थं वर्तते? (प झम्मनलालजी तर्कतीर्थ, पत्र ता. ४-१-४१)

अर्थात् मूलके 'सम्मइसुत्ते' से सम्मतितर्कका अर्थ लिया है जो श्वेताम्बरीय ग्रंथ है। आचार्यने उसीका उल्लेख किया है या इस नामका कोई दिगम्बरीय ग्रंथ भी है?

समाधान—'णामं ठवणा दविय' इत्यादि गाथा उद्धृत करके जो सन्मतिसूत्रका उल्लेख किया है वह सन्मतितर्क नामका प्राप्त ग्रन्थ ही प्रतीत होता है, क्योंकि यह गाथा तथा उससे पूर्व उद्धृत चार गाथाएं वहां पाई जाती हैं। सन्मतितर्कके कर्ता सिद्धसेनका स्मरण महापुराण आदि अनेक दिगम्बर ग्रन्थोंमें भी पाया जाता है, जिससे अनुमान होता है कि ये आचार्य दोनों सम्प्रदायोंमें मान्य रहे हैं। इससे अन्य कोई ग्रन्थ इस नामका जैन साहित्यमें उपलब्ध भी नहीं है।

पृष्ठ १९

८ शंका—'वत्थणिरवेक्खो मंगलसद्दो णाममंगलं' इत्यत्र तस्य मंगलस्याधारविषयेऽष्टविधेष्वजीवाधारकथने भाषायां जिनप्रतिमाया उदाहरण प्रदत्त, तत्कथं संगच्छते? ......अजीवोदाहरणे जिनभवनमुदाहियतामिति। (पं. झम्मनलाल जी तर्कतीर्थ, पत्र ता. ४-१-४१)

अर्थात् नाममंगलके आठ प्रकारके आधार–कथनमें भाषानुवादमें अजीव आधारका उदाहरण जिनप्रतिमाका दिया गया है, सो कैसे संगत है? जिनभवनका उदाहरण अधिक ठीक था?

समाधान—धवलाकारने नाममंगलका जो लक्षण दिया है और उसके जो आधार बतलाये हैं, उनसे तो यही ज्ञात होता है कि एक या अनेक चेतन या अचेतन मंगल द्रव्य नाममंगलके आधार होते हैं। उदाहरणार्थ, यदि हम पार्श्वनाथ तीर्थंकरका नामोच्चारण करें तो यह एक जीवाश्रित नाममंगल होगा। यदि हम चौवीस तीर्थंकरोंका नामोच्चारण करें तो यह अनेक जीवाश्रित नाममंगल होगा। यदि हम अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ, या केशरियानाथ आदि प्रतिमाओंका नामोच्चारण करें तो यह अजीवाश्रित नाममंगल होगा, इत्यादि। इस प्रकार जिनप्रतिमा नाममंगलका आधार बन जाती है, जिसका कि उसी पृष्ठपर दी हुई टिप्पणियोंसे यथोचित समर्थन हो जाता है। इसी प्रकार पंडितजी द्वारा सुझाया गया जिनमन्दिर भी अजीव नाममंगलका आधार माना जा सकता है।

पृष्ठ २९

९ शंका—पृ० २९ पर क्षेत्रमंगलके कथनमें लिखा है 'अर्धाष्टारत्न्यादि पंचविंशत्युत्तर-पंचधनु:शतप्रमाणशरीर' जिसका अर्थ आपने 'साढ़े तीन हाथसे लेकर ५२५ धनुष तकके शरीर' किया है, और नीचे फुटनोटमें 'अर्धाष्ट इत्यत्र अर्धचतुर्थ इति पाठेन भाव्यम्' ऐसा लिखा है। सो आपने यह कहासे लिखा है और क्यों लिखा है? (नानकचदजी, पत्र १-४-४०)

समाधान—केवलज्ञानको उत्पन्न करनेवाले जीवोंकी सबसे जघन्य अवगाहना साढ़े तीन हाथ (अरत्नि) और उत्कृष्ट अवगाहना पांचसौ पचीस धनुष प्रमाण होती है। सिद्धजीवोंकी जघन्य और उत्कृष्ट अवगाहना इसीलिए पूर्वोक्त बतलाई है। इसके लिए त्रिलोकसारकी गाथा १४१-१४२ देखिये। संस्कृतमें साढ़े तीनको 'अर्धचतुर्थ' कहते हैं। इसी बातको ध्यानमें रखकर 'अर्धाष्ट' के स्थानमें 'अर्धचतुर्थ'का संशोधन सुझाया गया है, वह आगमानुकूल भी है। 'अर्धाष्ट' का अर्थ 'साढ़े सात' होता है जो प्रचलित मान्यताके अनुकूल नहीं है। इसी भागके पृष्ठ २८ की टिप्पणीकी दूसरी पंक्तिमें त्रिलोकप्रज्ञप्तिका जो उद्धरण (आहुट्ठहत्थपहुदी) दिया है उससे भी सुझाए गये पाठकी पुष्टि होती है।

पृष्ठ ३९

१० शंका—धवलराजमें क्षयोपशमसम्यक्त्वकी स्थिति ६६ सागरसे न्यून बतलाई है, जब कि सर्वार्थसिद्धिमें पूरे ६६ सागर और राजवार्तिकमें ६६ सागरसे अधिक बतलाई है? इसका क्या कारण है? (नानकचदजी, पत्र १-४-४१)

समाधान—सर्वार्थसिद्धिमें क्षायोपशमिकसम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थिति पूरे ६६ सागर वा राजवार्तिकमें सम्यग्दर्शनसामान्यकी उत्कृष्ट स्थिति साधिक ६६ सागर और धवला टीका पृ. ३९ पर सम्यग्दर्शनकी अपेक्षा मंगलकी उत्कृष्ट स्थिति देशोन छयासठ सागर कही है। इस मतभेदका कारण जाननेके पूर्व ६६ सागर किस प्रकार पूरे होते हैं, यह जान लेना आवश्यक है।

धवलाकारने जीवट्ठाण खंडकी अन्तरप्ररूपणामें ६६ सागरकी स्थितिके पूरा करने का क्रम इसप्रकार दिया है:—

एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा लंतव-काविट्ठवासियदेवेसु चोद्दससागरोवमाउट्ठिदिएसु उप्पण्णो। एक्कं सागरोवमं गमिय बिदियसागरोवमादिम्मिए सम्मत्तं पडिवण्णो। तेरस सागरोवमाणि तत्थ अच्छिय सम्मत्तेण सह चुदो मणुस्सो जादो। तत्थ सजमं संजमासंजमं वा अणुपालिय मणुसाउएणूण-बावीससागरोवमाउट्ठिदिएसु आरणच्चुददेवेसु उववण्णो। तत्तो चुदो मणुसो जादो। तत्थ संजममणुपालिय उवरिमगेवज्जे देवेसु मणुसाउगेणूणएक्कत्तीससागरोवमाउट्ठिदीएसु उववण्णो। अंतोमुहुत्तूणछावट्ठिसागरोवमचरिमसमए परिणामपच्चएण सम्मामिच्छत्तं गदो। × × × एसो उप्पत्तिकमो अउप्पण्णउप्पायणट्ठं उत्तो। परमत्थदो पुण जेण केण वि पयारेण छावट्ठी पूरेदव्वा।

अर्थात्—कोई एक तिर्यंच अथवा मनुष्य चौदह सागरोपमकी आयुस्थितिवाले लान्तव

कापिष्ठ कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहांपर एक सागरोपम काल विताकर दूसरे सागरोपमके आदि समयमें सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ और तेरह सागरोपम तक वहां रहकर सम्यक्त्वके साथ ही च्युत होकर मनुष्य हो गया। उस मनुष्यभवमें संयमको अथवा संयमासंयमको परिपालनकर इस मनुष्यभवसम्बन्धी आयुसे कम बाईस सागरोपम आयुकी स्थितिवाले आरण-अच्युत कल्पके देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहासे च्युत होकर पुनः मनुष्य हुआ। इस मनुष्यभवमें संयमको धारणकर उपरिम ग्रैवेयकमें मनुष्य आयुसे कम इकतीस सागरोपम आयुकी स्थितिवाले अहमिन्द्र देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहां पर अन्तर्मुहूर्त कम छयासठ सागरोपमके अन्तिम समयमें परिणामोंके निमित्तसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ। × × × यह उत्पत्तिक्रम अव्युत्पन्नजनोंके व्युत्पादनार्थ कहा है। परमार्थसे तो जिस किसी भी प्रकारसे छयासठ सागरोपमकालको पूरा करना चाहिए।

सर्वार्थसिद्धिकार जो क्षायोपशमिकसम्यक्त्वकी स्थिति पूरे ६६ सागर बता रहे हैं, वह षट्खंडागम के दूसरे खंड खुद्दाबंधके आगे बताये जानेवाले सूत्रोंके अनुसार ही है, उसमें धवला से कोई मतभेद नहीं है। भेद केवल धवलाके प्रथम भाग पृ. ३९ पर बताई गई देशोन ६६ सागरकी स्थितिसे है। सो यहापर ध्यान देनेकी बात यह है कि धवलाकार वेदकसम्यक्त्व या सम्यक्त्वसामान्यकी स्थिति नहीं बता रहे हैं, किन्तु मंगलकी उत्कृष्ट स्थिति बता रहे हैं, और वह भी सम्यग्दर्शनकी अपेक्षासे, जिसका अभिप्राय यह समझमें आता है कि सम्यक्त्व होने पर जो असंख्यातगुणश्रेणी कर्म–निर्जरा सम्यक्त्वी जीवके हुआ करती है, उसीकी अपेक्षा मं+गल अर्थात् पापको गलानेवाला होनेसे वह सम्यक्त्व मंगलरूप है, ऐसा कहा गया है। किन्तु जो जीव ६६ सागर पूर्ण होनेके अन्तिम मुहूर्तमें सम्यक्त्वको छोड़कर नीचेके गुणस्थानोंमें जा रहा है, उसके सम्यक्त्वकालमें होनेवाली निर्जरा बंद हो जाती है, क्योंकि परिणामोंमें संक्लेशकी वृद्धि होनेसे वह सम्यक्त्वसे पतनोन्मुख हो रहा है। अतएव इस अन्तिम अन्तर्मुहूर्तसे कम ६६ सागर मंगलकी उत्कृष्ट स्थिति बताई गई प्रतीत होती है।

अब रही राजवार्त्तिकमें बताये गये साधिक ६६ सागरोपमकालकी बात सो उस विषयमें एक बात खास ध्यान देनेकी है कि राजवार्त्तिककार जो साधिक छयासठ सागरकी स्थिति बता रहे हैं वह क्षायोपशमिकसम्यक्त्वकी नहीं बता रहे हैं किन्तु सम्यग्दर्शनसामान्यकी ही बता रहे हैं, और सम्यग्दर्शनसामान्यकी अपेक्षा वह अधिकता बन भी जाती है। उसका कारण यह है कि एकबार अनुत्तरादिकमें जाकर आये हुए जीवके मनुष्यभवमें क्षायिकसम्यक्त्वकी उत्पत्तिकी भी संभावना है। पुनः क्षायिकसम्यक्त्वको प्राप्तकर संयमी हो अनुत्तरादिकमें उत्कृष्ट स्थितिको प्राप्त हुआ। ऐसे जीवके साधिक छयासठ सागर काल बन जाता है, और क्षायोपशमिकसे क्षायिकसम्यक्त्वको उत्पन्न कर लेनेपर भी सम्यग्दर्शनसामान्य बराबर बना ही रहता है। इसकी पुष्टि जीवस्थान खंडकी अन्तर प्ररूपणाके निम्न अवतरणसे भी होती है:—

' उक्कस्सेण छावट्ठि सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ तं जहा—एक्को अट्ठावीससतकम्मिओ पुव्वकोडाउअमणुसेसु उववण्णो अट्ठवस्सिओ वेदगसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो १ तदो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण २ उवसमसेढीपाओग्गविसोहीए विसुद्धो ३ अपुव्वो ४ अणियट्टी ५ सुहुमो ६ उवसंतो ७ पुणो वि सुहुमो ८ अणियट्टी ९ अपुव्वो १० होदूण हेट्ठा पडिय अंतरिदो देसूणपुव्वकोडि संजममणुपालेदूण मदो तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदीएसु देवेसु उववण्णो। तत्तो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो। खइय पि ट्ठविय संजमं कादूण काल गदो। तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदीएसु देवसु उववण्णो। ततो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो × संजम पडिवण्णो। अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे अपुव्वो जादो लद्धमतर ११ अणियट्टी १२ सुहुमो १३ उवसतो १४ भूओ सुहुमो १५ अणियट्टी १६ अपुव्वो १७ अप्पमत्तो १८ पमत्तो जादो १९ अप्पमत्तो २० उवरि छ अतोमुहुत्ता अट्ठहि वस्सेहि छव्वीसंतोमुहुत्तेहि य ऊणा पुव्वकोडीहि सादिरेयाणि छावट्ठिसागरोवमाणि उक्कस्संतर होदि '

यह विवरण उपशामक जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तरकाल बताते हुए अन्तरप्ररूपणामें आया है। अर्थात् कोई एक जीव उपशमश्रेणीसे उतरकर साधिक छयासठ सागरके बाद भी पुनः उपशमश्रेणीपर चढ़ सकता है। उक्त गद्यका भाव यह है:—

' मोहकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्ता रखनेवाला कोई एक जीव पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और आठ वर्षका होकर वेदकसम्यक्त्व और अप्रमत्त गुणस्थानको युगपत् प्राप्त हुआ। पश्चात् प्रमत्त अप्रमत्त गुणस्थानोंमें कईवार आ जा कर उपशमश्रेणीपर चढ़ा और उतरकर आठ वर्ष और दश अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटी वर्षतक संयमको पालके मरणकर तेतीस सागरकी आयुवाला देव हुआ। वहांसे च्युत होकर पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। यहांपर क्षायिकसम्यक्त्वको भी धारण कर तथा संयमी होकर मरा और पुनः तेतीस सागरोपम की स्थिति वाले देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहांसे च्युत हो पुनः पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और यथासमय संयमको धारण किया। जब उसके संसारमें रहनेका काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण रह गया, तब पहले उपशमश्रेणीपर चढ़ा, पीछे क्षपकश्रेणीपर चढ़कर निर्वाणको प्राप्त हुआ। इसप्रकारसे उपशमश्रेणीवाले जीवका उत्कृष्ट अन्तर आठ वर्ष और छव्वीस अन्तर्मुहूर्तोंसे कम तीन पूर्वकोटियोंसे अधिक छयासठ सागरोपमकाल प्रमाण होता है।

इस अन्तरकाल में रहते हुए भी वह बराबर सम्यग्दर्शनसे युक्त बना हुआ है, भले ही प्रारंभमें ३३ सागर तक क्षायोपशमिकसम्यक्त्वी और बाद में क्षायिकसम्यक्त्वी रहा हो। इस प्रकार सम्यग्दर्शनसामान्यकी दृष्टिसे साधिक छयासठ सागरकी स्थितिका कथन युक्तिसंगत ही है और उसमें उक्त दोनों मतोंसे कोई विरोध भी नहीं आता है।

खुद्दाबंधके कालानुयोगद्वारमें भी सम्यक्त्वमार्गणाके अन्तर्गत सम्यक्त्वसामान्यकी उत्कृष्ट स्थिति ६६ सागरसे कुछ अधिक दी है। यथा——

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्त। उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि। (धवला. अ. प, ५०७)

इस सूत्रकी व्याख्यामें कहा गया है कि कोई मिथ्यादृष्टि जीव तीनों करणोंको करके प्रथमोपशमसम्यक्त्वको ग्रहण कर अन्तर्मुहूर्तकालके बाद वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होकर उसमें तीन पूर्वकोटियोंसे अधिक व्यालीस सागरोपम विताकर बादमें क्षायिकसम्यक्त्वको धारणकर और चौबीस सागरोपमवाले देवोंमें उत्पन्न होकर पुनः पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले जीवके साधिक ६६ सागरकाल सिद्ध हो जाता है।

किंतु वेदकसम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थिति बतलाते हुए पूरे ६६ सागर ही दिये हैं, यथा—

वेदगसम्माइट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि।
(धवला. अ. प, ५०७)

इस सूत्रकी व्याख्या करते हुए कहा गया है कि मनुष्यभवकी आयुसे कम देवायुवाले जीवोंमें उत्पन्न कराना चाहिए और इसी प्रकारसे पूरे ६६ सागर काल वेदकसम्यक्त्वकी स्थिति पूरी करना चाहिए।

उक्त सारे कथनका भाव यह हुआ कि सम्यग्दर्शनसामान्यकी अपेक्षा साधिक ६६ सागर, वेदकसम्यक्त्वकी अपेक्षा पूरे ६६ सागर, और मंगलपर्यायकी अपेक्षा देशोन ६६ सागरकी स्थिति कही है, इसलिए उनमें परस्पर कोई मत-भेद नहीं है।

पृष्ठ ४२

११. शंका—णमो अरिहंताणमित्यत्र अरिमोहस्तस्य हननात् अरिहंता शेषघातिनामविनाभावित्वात् अरिहंता इति प्रतिपादितम्। तदभीष्टमाचार्यैः। पुनः अस्वरसात् उच्यते वा 'रजो ज्ञानदृगावरणादयः मोहोऽपि रज, तेषां हननात् अरिहंता, इति लिखितम् तत्र अरहंता इति पदं प्रतीयते। भवद्भिरपि श्रीमूलाचारादिग्रंथानां गाथाटिप्पणी निम्ने लिखितं तत्र गाथायामपि अरहंता लिखितम्। आचार्याणामुभयमभीष्टं प्रतीयते 'णमो अरिहंताणं, णमो अरहंताणं' परन्तु उभयत्र कथने 'णमो अरिहंताणं' लिखितम्। इत्यत्र लेखकविस्मृतिस्तु नास्ति वान्यत् प्रयोजनम् ? (पं० छम्मनलालजी, पत्र ४-१-४१)

अर्थात् धवलाकारने णमोकारमंत्रके प्रथम चरणके जो विविध अर्थ किये हैं उनसे अनुमान होता है कि आचार्यको अरिहंत और अरहंत दोनो पाठ अभीष्ट हैं। किन्तु आपने केवल 'अरिहंता' पाठ ही क्यों लिखा ?

समाधान—णमोकारमंत्रके पाठमें तो एकही प्रकारका पाठ रखा जा सकता है। तो भी 'णमो अरिहंताणं पाठ रखनेमें यह विशेषता है कि उससे अरि+हंता और अर्हत् दोनो प्रकारके अर्थ लिये जा सकते हैं। प्राकृत व्याकरणानुसार अर्हत् शब्दके अरहंत, अरुहंत व अरिहंत तीनों प्रकारके पाठ हो सकते है। अतएव अरिहंत पाठ रखनेसे उक्त दोनों प्रकारके अर्थों की गुंजाइश रहती है। यह बात अरहंत पाठ रखनेसे नहीं रहती (देखो परिशिष्ट पृ. ३८)

१२ शंका—'अपरिवाडीए पुण सयलसुदपारगा संखेज्जसहस्सा'। और यदि परिपाटी क्रमकी अपेक्षा न की जाय तो उस समय संख्यात हजार सकल श्रुतके धारी हुए। भगवान् महावीरके

समयमें तो गिने चुने ही श्रुतकेवली हुए हैं। संख्यात हजार सकल श्रुतके धारियोंका पता तो शास्त्रोंसे नहीं लगता। अतः यह अंश विचारणीय प्रतीत होता है। (पृष्ठ ६५)

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—त्रिलोकप्रज्ञप्ति, हरिवंशपुराण आदिमें भगवान् महावीरके तीर्थकालमें पूर्वधारी ३००, केवलज्ञानी ७००, विपुलमती मनःपर्ययज्ञानी ५००, शिक्षक ९९००, अवधिज्ञानी १३००, वैक्रियिकऋद्धिधारी ९०० और वादी ४०० बतलाये हैं। इनमें यद्यपि पूर्वधारी केवल तीनसौ ही बतलाये हैं, पर केवलज्ञानी केवलज्ञानोत्पत्तिके पूर्व श्रेणी-आरोहणकालमें पूर्वविद् हो चुके हैं और विपुलमती मनःपर्ययज्ञानी जीव तद्भव-मोक्षगामी होनेके कारण पूर्वविद् होंगे। अवधिज्ञानी आदि साधुओंमें भी कुछ पूर्वविद् हों तो आश्चर्य नहीं। पर अवधिज्ञान आदिकी विशेषताके कारण उनकी गणना पूर्वविदोंमें न करके अवधिज्ञानी आदिमें की गई हो। इस प्रकार परिपाटी क्रमके विना भगवान् महावीरके तीर्थकालमें हजारों द्वादशांगधारी माननेमें कोई आपत्ति नहीं दिखाई देती है।

पृष्ठ ६८

१३ शंका—'धदगारवपडिबद्धो' का अर्थ 'रसगारवके आधीन होकर' उचित नहीं जंचता। गारल (गारव?) दोषका अर्थ मैंने किसी स्थानपर देखा है, किन्तु स्मरण नहीं आता। 'धद' का अर्थ रस भी समझमें नहीं आता। स्पष्ट करनेकी आवश्यकता है।

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—'गारव' पदका अर्थ गौरव या अभिमान होता है, जो तीन प्रकारका है—ऋद्धिगारव, रसगारव और सातगारव। यथा—

तओ गारवा पन्नत्ता। तं जहा—इड्ढिगारवे रसगारवे सातागारवे। स्था. ३, ४.

ऋद्धियोंके अभिमानको ऋद्धिगारव, दधि दुग्ध आदि रसोंकी प्राप्तिसे जो अभिमान हो उसे रसगारव, तथा शिष्यों व भक्तों आदि द्वारा प्राप्त परिचर्याके सुखको सातगारव या सुखगारव कहते हैं।

उक्त वाक्यसे हमारा अभिप्राय 'रसादि गारवके आधीन होकर' से है। मूलपाठका संस्कृत रूपान्तर हमारी दृष्टिमें 'धृतगारवप्रतिबद्धः' रहा है। प्रतियोंमें 'धद' के स्थानपर 'दध' पाठ भी पाया जाता है जिससे यदि दधिका अभिप्राय लिया जाय तो उपलक्षणासे रसगारवका अर्थ आजाता है।

पृष्ठ १४८

शंका १४.—प्रतिभासः प्रमाणञ्चाप्रमाणञ्च' इत्यादि वाक्यमें प्रतिभासका अनध्यवसायरूप अर्थ ठीक प्रतीत नहीं होता। मेरी समझमें उसका अर्थ वहां ज्ञान-सामान्य ही होना चाहिए, क्योंकि ज्ञानका प्रामाण्य और अप्रामाण्य बाह्यार्थ पर अवलम्बित है, अतः वह विसंवादी भी हो

सकता है और अविसंवादी भी। अनध्यवसाय विसंवादी ज्ञानका भेद है। उसमें जिस तरहसे विसंवादित्व और अविसंवादित्वकी चर्चा दी गई है वह स्याद्वादकी दृष्टिके अनुकूल होते हुए भी चित्तको नहीं लगती। (जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—यद्यपि प्रतिभासका जो अर्थ किया गया है, वह स्वयं शंकाकारके मतसे भी सदोष नहीं है, तथापि यदि प्रतिभासका अर्थ ज्ञानसामान्य भी ले लिया जाय, तो भी कोई आपत्ति नहीं आती है। ऐसी अवस्थामें अनुवाद पंक्ति १२ में 'और अनध्यवसायरूप जो प्रतिभास है' के स्थानमें 'और जो ज्ञान-सामान्य है' अर्थ करना चाहिए।

पृष्ठ १९६

१५ **शंका**— 'असर्वज्ञानां व्याख्यातृत्वाभावे आर्षसन्ततेर्विच्छेदस्यार्थशून्याया वचनपद्धतेरार्षत्वाभावात्'। यहां विच्छेदस्य' के स्थानमें 'विच्छेद.' पाठ अच्छा जंचता है। उससे वाक्यरचना भी ठीक हो जाती है। (जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—प्राप्त प्रतियोंसे जो पाठ समुपलब्ध हुआ उसकी यथाशक्ति संगति अनुवादमें बैठा ली गई है। मूडबिद्रीसे भी उस पाठके स्थानपर हमें कोई पाठान्तर प्राप्त नहीं हुआ। तथापि 'विच्छेदस्य' के स्थानपर 'विच्छेदः स्यात्' पाठ स्वीकार कर लेनेसे अर्थ और अधिक सीधा और सुगम हो जाता है। तदनुसार उक्त शंकाका अनुवाद इस प्रकार होगा—

शंका—असर्वज्ञको व्याख्याता नहीं मानने पर आर्ष-परम्पराका विच्छेद हो जायगा, क्योंकि, अर्थशून्य वचन-रचनाको आर्षपना प्राप्त नहीं हो सकता है।

पृष्ठ २१३

१६ **शंका**—संस्कृत (मूल) में जो 'णवक' शब्द आया है उसका अर्थ आपने कुछ न करके 'नवक' ही लिखा है। सो इसका क्या अर्थ है? (नानकचदजी, पत्र १-४-४०)

समाधान—'नवक' का अर्थ नवीन है, इसलिए सर्वत्र नवीन बंधनेवाले समयप्रबद्ध को नवक समयप्रबद्ध कह सकते हैं। पर प्रकृतमें विवक्षित प्रकृतिके उपशमन और क्षपणके द्विचरमावली और चरमावली अर्थात् अन्तकी दो आवलियोंके कालमें बंधनेवाले समयप्रबद्धको ही नवकसमयप्रबद्ध कहा है। इस नवकसमयप्रबद्धका उस विवक्षित प्रकृतिके उपशमन या क्षपणकालके भीतर उपशम या क्षय न होकर उपशमन या क्षपणकालके अनन्तर एक समय कम दो आवलीकालमें उपशम या क्षय होता है। एक समय कम दो आवलीकालमें उपशम या क्षय कैसे होता है, इसके लिए प्रथमभाग पृष्ठ २१४ का विशेषार्थ देखिये। विशेषके लिए देखिये लब्धिसार, क्षपणासार।

पृष्ठ २५०

१७ **शंका**—शंकाका प्रारंभ प्रथम पंक्तिमें आये हुए 'तथापि' शब्दसे जान पड़ता है, न

कि उससे पूर्वके 'शरीरस्य स्थौल्यनिर्वर्तकं' इत्यादिसे, क्योंकि उसी शास्त्रीय परिभाषाके करनेपर, जो उससे पहले नहीं की गई है, शंकाकारने 'तथापि' से शंकाका उत्थान किया है।

(जैनसदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—यहांपर 'तथापि' से शंका मान लेनेपर 'शरीरस्य स्थौल्यनिर्वर्तक कर्म बादरमुच्यते' इसे आगमिक परिभाषा मानना पड़ेगी। परन्तु यह आगमिक परिभाषा नहीं है। धवलाकारने स्वयं इसके पहले 'न बादरशब्दोऽयं स्थूलपर्याय' इत्यादि रूपसे इसका निषेध कर दिया है। अतः शंकाकारके मुखसे ही स्थूल और सूक्ष्मकी परिभाषाओंका कहलाना ठीक है, ऐसा समझकर ही उन्हें शंकाके साथ जोड़ा गया है।

पृष्ठ २९७

१८ **शंका**—'ऋद्धेरुपर्यभावात्' पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है, उसके स्थानमें 'ऋद्धेरुपरयभावात' पाठ ठीक प्रतीत होता है।

(जैनसदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—उक्त पाठके ग्रहण करनेपर भी 'ऋद्धेरुपरि' इतने पदका अर्थ ऊपरसे ही जोड़ना पड़ता है, और उस पाठके लिए प्रतियोंका आधार भी नहीं है। इसलिए हमने उपलब्ध पाठको ज्योंका त्यों रख दिया था। हालहीमें धवला अ. पत्र २८५ पर एक अन्य प्रकरण सम्बंधी एक वाक्य मिला है, जो उक्त पाठके संशोधनमें अधिक सहायक है। वह इस प्रकार है—'पमत्ते तेजाहारं णत्थि, लद्धीए उवरि लद्धीणमभावा।' इसके अनुसार उक्त पाठको इस प्रकार सुधारना चाहिए 'ऋद्धेरुपरि ऋद्धेरभावात्' अथवा 'ऋद्धे ऋद्धेरुपर्यभावात्' तदनुसार अर्थ भी इस प्रकार होगा—'क्योंकि, एक ऋद्धिके ऊपर दूसरी ऋद्धिका अभाव है'।

पृष्ठ ३००

१९ **शंका**—६० वीं गाथा (सूत्र) का अर्थ करते हुए लिखा है कि 'तत्र कार्मणकाययोगः स्यादिति'। जिसका अर्थ आपने 'इषुगतिको छोडकर शेष तीनों विग्रहगतियोंमें कार्मणकाययोग होता है, ऐसा किया है। सो यहां प्रश्न होता है कि इषुगतिमें कौनसा काययोग होता है?

(नानकचदजी, पत्र १-४-४०)

समाधान—इषुगतिमें औदारिकमिश्रकाय और वैक्रियिकमिश्रकाय, ये दो योग होते हैं, क्योंकि उपपातक्षेत्रके प्रति होनेवाली ऋजुगतिमें जीव आहारक ही होता है। अनाहारक केवल विग्रहवाली गतियोंमें ही रहता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि पाणिमुक्ता, लांगलिका और गोमूत्रिका, इन तीन गतियोंके अन्तिम समयमें भी जीव आहारक हो जाता है, क्योंकि, अन्तिम समयमें उपपातक्षेत्रके प्रति होनेवाली गति ऋजु ही रहती है। इस व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर ही सर्वार्थसिद्धिमें 'एकं द्वौ त्रीन्वानाहारकः' इस सूत्रकी व्याख्या करते हुए यह कहा है कि 'उपपादक्षेत्रं प्रति ऋज्व्यां गतौ आहारकः। इतरेषु त्रिषु समयेषु अनाहारकः।'

पृष्ठ ३३२

२० शंका—सूत्र नं. ९३ में 'सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदट्ठाणे णियमा पज्जत्तियाओ' पर आपने फुटनोट लगाकर "अत्र 'संजद' इति पाठशेषः प्रतिभाति" ऐसा लिखा है। सो लिखना कि यह आपने कहांसे लिखा है, और क्या मनुष्यनीके छठा गुणस्थान होता है? आगे पृ० ३३२ पर शंका-समाधानमें लिखा है कि स्त्रियोंके सयतासंयत गुणस्थान होता है, सो पहलेसे विरोध आता है? (नानकचदजी, पत्र १-४-४०)

"अत्र 'संजद' इति पाठ शेषः प्रतिभाति" यह सम्पादक महोदयोका संशोधन है। ऐसे संशोधनको मूलसूत्रका अर्थ करते समय नहीं जोड़ना उचित प्रतीत होता है। (जैनगजट, ३ जुलाई १९४०)

समाधान—उक्त पाद-टिप्पण देनेके निम्न कारण हैं:—

(१) आलापाधिकारमें मनुष्यस्त्रियोंके आलाप वतलाते समय सभी (चौदह) गुणस्थानोंमें उनके आलाप बतलाये हैं।

(२) द्रव्यप्रमाणानुगममें मनुष्यस्त्रियोंका प्रमाण कहते समय चौदहों गुणस्थानोंकी अपेक्षा उनका प्रमाण कहा है। यथा—

मणुसिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्ठदो, छण्हं वग्गाणमुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेट्ठदो ॥ ४८ ॥ पृ. २६०. मणुसिणीसु सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, सखेज्जा ॥ ४९ ॥ पृ २६१.

(३) आगममें मनुष्यके सामान्य, पर्याप्त, योनिमती और अपर्याप्त, ये चार भेद किये हैं। वहां योनिमती मनुष्यसे भावसे स्त्रीवेदी मनुष्योंका ही ग्रहण किया है। षट्खंडागममें उसी भेदके लिये मणुसिणी शब्द आया है, और उन्हीं भेदोंके क्रमसे वर्णन भी है।

(४) इससे ऊपरके सूत्रमें मनुष्यनियोंको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें जो पर्याप्त और अपर्याप्त बतलाकर इसी सूत्रमें जो शेष गुणस्थानोंमें केवल पर्याप्त ही बतलाया है, इससे भी भाववेदकी ही मुख्यता प्रतीत होती है, क्योंकि गुणस्थानोंमें पर्याप्तत्व और अपर्याप्तत्वकी व्यवस्था भाववेदकी अपेक्षासे ही की गई है।

(५) यदि यहां उक्त पादटिप्पणको ग्रहण न किया जावे तो धवलाकारने इसी सूत्रकी व्याख्यामें जो यह शंका उठाई है कि 'अस्मादेवार्षाद् द्रव्यस्त्रीणां निर्वृत्तिः सिद्ध्येत्' अर्थात्, तो इसी आगमसे द्रव्यस्त्रियोंका मुक्ति जाना भी सिद्ध हो जायगा, ऐसी शंकाके उत्पन्न होनेका कोई कारण नहीं रह जाता है।

इन उपर्युक्त हेतुओंसे यही प्रतीत होता है कि यहां मनुष्यनियोंका भाववेदकी अपेक्षाही प्रतिपादन किया गया है, द्रव्यवेदकी अपेक्षासे नहीं। और इसीलिये उक्त ९३ सूत्रपर 'अत्र 'संजद' इति पाठशेषः प्रतिभाति' यह पादटिप्पण जोड़ा गया है।

२१ शंका—९३ सूत्रके नीचे जो शंका दी है कि हुण्डावसर्पिणी कालसम्बन्धी

स्त्रियोंमें सम्यग्दृष्टि जीव क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं? उसका समाधान करते हुए लिखा है कि 'नहीं; क्योंकि, उनमें सम्यग्दृष्टि जीव उत्पन्न होते हैं'। सो इसका खुलासा क्या है? क्या सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रियोंमें उत्पन्न हो सकता है? (नानकचदजी, १-४-४०)

स्त्रियोंको अपर्याप्तदशामें सम्यक्त्व नहीं होता है, ऐसा गोम्मटसार आदि ग्रंथोंका कथन है। तदनुसार धवलाके द्वितीय खंडमें पृ. ४३० पर भी लिखा है 'इत्थिवेदेण विणा ....' अपर्याप्त-दशामें स्त्रीवेदीको सम्यक्त्व नहीं। किन्तु धवलाके प्रथम खंडमें पृ. ३३२ पर इसके विरुद्ध लिखा है— हुण्डावसर्पिण्या स्त्रीषु सम्यग्दृष्टयः किन्नोत्पद्यन्त इति चेन्न, उत्पद्यन्ते। तत्कुतोऽवसीयते? अस्मा देवार्षात्। ऐसा विरोधी कथन क्यों है? (पं० अजितकुमारजी शास्त्री, पत्र २२-१० ४०)

समाधान—अन्य गतिसे आकर सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रियोंमें उत्पन्न नहीं होता है, यह तो सुनिश्चित है। इसलिए उक्त शंका-समाधानका अर्थ इस प्रकार लेना चाहिए—

शंका—हुंडावसर्पिणीकालमें स्त्रियोंमें सम्यग्दृष्टि क्यों नहीं होते हैं?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उनमें सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं।

यहां 'उत्पद्यन्ते' क्रियाका अर्थ 'होना' लेना चाहिए। इससे स्पष्ट हो जाता है कि हुंडावसर्पिणीकालके दोषसे स्त्रियां सम्यग्दृष्टि न होवें, ऐसा शंकाकारके पूछनेका अभिप्राय है।

अथवा, इस शंका-समाधानका निम्न प्रकारसे दूसरा भी अभिप्राय कदाचित् संभव हो सकता है—

शंका—हुंडावसर्पिणीकालमें जैसे अन्य अनेकों असंभव बातें संभव हो जाती हैं, उसी प्रकारसे अन्य गतिसे आकर सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रियोंमें क्यों नहीं उत्पन्न होते है?

समाधान—सूत्र न. ९३ में कहा है कि 'असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्त्रिया नियमसे पर्याप्त होती हैं' इससे जाना जाता है कि किसी भी कालमें सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रियोंमें उत्पन्न नहीं होते हैं।

इस अभिप्रायके लिये मूलपाठमें 'चेन्न' के पश्चात्का विराम हटा लेना चाहिये। तथापि आगेके संदर्भसे इस अभिप्रायका सामंजस्य यथोचित नहीं बैठता।

पृष्ठ ३४२

२२ शंका—धवलसिद्धान्तानुसार जो द्रव्यसे पुरुष होवे और भावोंमें स्त्रीरूप हो उसे योनिमती कहते हैं। किन्तु गोम्मटसार जीवकांड गाथा १५०, १५६, ३८० से ज्ञात होता है कि द्रव्यमें स्त्री हो, और परिणतिमें स्त्रीभाव हो उसको योनिमती कहते हैं। इस प्रकारकी योनिमतीके १४ गुणस्थान माने है। इसका समाधान कीजिए। (ब्र० लक्ष्मीचद्रजी)

समाधान—योनिमती तिर्यंच स्त्रियोंके उदय प्रकृतियां बतलाते हुए कर्मकांड गाथा नं.

२९६ में कहा है–'पुंसंढूणित्थिजुदा जोणिणीये' अर्थात् योनिमतीके पूर्वोक्त ९७ प्रकृतियोंमेंसे पुरुषवेद और नपुंसक वेदको घटाकर स्त्री वेदके मिला देनेपर ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। मनुष्यनियोंके विषयमें कहा है—'मणुसिणिए त्थीसहिदा' ॥३०१॥ अर्थात् पूर्वोक्त १०० प्रकृतियोंमें स्त्रीवेदके मिला देनेपर और तीर्थंकर आदि ५ प्रकृतियां निकाल देनेपर मनुष्यनियोंके ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यहां योनिमती उसे कहा है जिसके स्त्रीवेदका उदय हो। ऐसे जीवके द्रव्य वेद कोई भी रहेगा तो भी वह योनिमती कहा जायगा। अब रही योनिमतीके १४ गुणस्थान की बात, सो कर्मभूमिज स्त्रियोंके अन्तके तीन संहननोंका ही उदय होता है, ऐसा गो० कर्मकांड की गाथा ३२ से प्रगट है। परन्तु शुक्लध्यान, क्षपकश्रेण्यारोहणादि कार्य प्रथम संहननवालेके ही होते हैं। इससे यह तो स्पष्ट है कि द्रव्यस्त्रियोंके १४ गुणस्थान नहीं होते हैं। पर गोम्मटसारमें स्त्रीवेदीके १४ गुणस्थान बतलाये अवश्य हैं, इसलिए वहां द्रव्यसे पुरुष और भावसे स्त्रीवेदीका ही योनिमती पदसे ग्रहण करना चाहिए। इस विषयमें गोम्मटसार और धवलसिद्धान्तमें कोई मतभेद नहीं है। द्रव्यस्त्रीके आदिके पाच गुणस्थान ही होते हैं। गोम्मटसारकी गाथा नं. १५० में भाववेदकी मुख्यतासे ही योनिमतीका ग्रहण है। गाथा न. १५६ और १५९ म टीकाकारने योनिमतीसे द्रव्यस्त्रीका ग्रहण किया है, किन्तु वहां भी परिणतिमें स्त्रीभाव हो, ऐसा नहीं कहा गया है।

टिप्पणियोंके विषयमें

२३ शंका—धवलाके फुटनोटोंमे दिये गये भगवती आराधनाकी गाथाओंको मूलाराधनाके नामसे उल्लेखित किया गया है, यह ठीक नहीं। जबकि ग्रन्थकार शिवार्य स्वय उसे भगवती आराधना लिखते हैं, तब मूलाराधना नाम उचित प्रतीत नहीं होता। मूलाराधनादर्पण तो प. आशाधरजीकी टीका का नाम है, जिसे उन्होने अन्य टीकाओंसे व्यावृत्ति करनेके लिए दिया था। यदि आपने किसी प्राचीन प्रतिमें ग्रन्थका नाम मूलाराधना देखा हो तो कृपया लिखनेका अनुग्रह कीजिए।

(पं० परमानन्दजी शास्त्री, पत्र २९-१०-३९)

समाधान—टिप्पणियोंके साथ जो ग्रंथ-नाम दिये गये है वे उन टिप्पणियोके आधारभूत प्रकाशित ग्रंथोंके नाम हैं। शोलापुरसे जो ग्रन्थ छपा है, उसपर ग्रन्थका नाम 'मूलाराधना' दिया गया है। वही प्रति हमारी टिप्पणियोका आधार रही है। अतएव उसीका नामोल्लेख कर दिया गया है। ग्रन्थके नामादि सम्बन्धी इतिहासमें जानेके लिए वह उपयुक्त स्थल नहीं था।

२४ शंका—टिप्पणियोंमे अधिकांश तुलना श्वेताम्बर ग्रन्थोपरसे की गई है। अच्छा होता यदि इस कार्यमें दिगम्बर ग्रन्थोका और भी अधिकता के साथ उपयोग किया जाता। इससे तुलना-कार्य और भी अधिक प्रशस्तरूपसे सम्पन्न होता।

(अनेकान्त, ३, २ पृ. २०१)
(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)
(जैनगजट, ३ जुलाई १९४०)

समाधान—प्रथम भागमे कुल टिप्पणियोकी संख्या ८५५ है। उनमेंसे दिगम्बर ग्रन्थोसे ६२२ और श्वेताम्बर ग्रन्थोसे २२८ तथा अन्य ग्रन्थोसे ५ टिप्पणिया ली गईं हैं। यदि ग्रन्थ-संख्याकी दृष्टिसे भी देखा जाय तो टिप्पणीमे उपयोग किये गये ग्रन्थोकी संख्या ७७ है, जिनमें दिगम्बर ग्रन्थ ४०, श्वेताम्बर ग्रन्थ ३०, अजैन ग्रन्थ १, व कोष, व्याकरण, अलकारादि विषयक ग्रन्थोंकी सख्या ६ है। इससे स्पष्ट है कि अधिकाश तुलना किन ग्रन्थोपरसे की गई है। जहा जिस ग्रन्थकी जो टिप्पणी उपयुक्त प्रतीत हुई वह ली गई है। इसमे ध्येय यही रखा गया है कि इस सिद्धान्त विषयसे सम्बन्ध रखनेवाले सभी साहित्यकी ओर पाठकोकी दृष्टि जा सके।

---

७ द्रव्यप्रमाणानुगम

१ द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति

षट्खंडागमके प्रस्तुत भागमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान कराया गया है, अर्थात् यहा यह बतलाया गया है कि समस्त जीवराशि कितनी है, तथा उसमें भिन्न भिन्न गुणस्थानों व मार्गणा-स्थानोंमें जीवोंका प्रमाण क्या है। स्वभावतः प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस अत्यन्त अगाध विषय-का वर्णन आचार्योंने किस आधारपर किया है? यह तो पूर्वभागोंमें बता ही आये है कि षट्-खंडागमका बहुभाग विषय-ज्ञान महावीर भगवान्की द्वादशागवाणीके अगभूत चौदह पूर्वोंमेंसे द्वितीय आग्रायणीय पूर्वके कर्मप्रकृति नामक एक अधिकार-विशेषमेंसे लिया गया है। उसमेंसे भी द्रव्यप्रमा-णानुगमकी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाई गई है—

कर्मप्रकृतिपाहुड, अपरनाम वेदनाकृत्स्नपाहुड (वेयणकसिणपाहुड) के कृति, वेदना आदि चौवीस अधिकारोंमें छठवां अधिकार 'बधन' है, जिसमें बंधका वर्णन किया गया है। इस बधन के चार अर्थाधिकार हैं, बंध, बधक, बंधनीय और बंधविधान। इनमेंसे बंधक नामक द्वितीय अधिकारके एकजीवकी अपेक्षा स्वामित्व, एकजीवकी अपेक्षा काल, आदि ग्यारह अनुयोगद्वार हैं। इन ग्यारह अनयोगद्वारोंमें से पांचवां अनुयोगद्वार द्रव्यप्रमाण नामका है और वहींसे प्रकृत द्रव्य-प्रमाणानुगम लिया गया है। (देखो षट्खंडागम, प्रथम भाग, पृ. १२५–१२६)

यहा प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जब जीवट्ठाणकी सत, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर और अल्पबहुत्व, ये छह प्ररूपणायें बंधविधानके प्रकृतिस्थानबंध नामक अवान्तर अधिकारके आठ अनु-योगद्वारोंमेंसे ली गई हैं, तब यह द्रव्यप्रमाणानुगम भी वहींसे क्यों नहीं लिया, क्योंकि, वहां भी तो यह अनुयोगद्वार यथास्थान पाया जाता था? इसका उत्तर यह दिया गया है कि प्रकृतिस्थानबंधके द्रव्यानुयोगद्वारमें 'इस बंधस्थानके बंधक जीव इतने हैं' ऐसा केवल सामान्य रूपसे कथन किया गया है; किन्तु मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थानोंकी अपेक्षा कथन नहीं किया गया। बंधक अधिकारमें

गुणस्थानोंकी अपेक्षा कथन किया गया है, वहां बतलाया गया है कि मिथ्यादृष्टि जीव इतने होते हैं, सासादनसम्यग्दृष्टि जीव इतने हैं; इत्यादि। अतएव जीवट्ठाणमें द्रव्यप्रमाणानुगमके लिये बंधक अधिकारका यही द्रव्यप्रमाणानुगम उपयोगी सिद्ध हुआ। (देखो षट्. प्रथम भाग, पृ. १२९)

२ प्रमाणका स्वरूप

द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति बतलानेमें जो कुछ कहा गया है उसीसे स्पष्ट है कि यह भिन्न भिन्न गुणस्थानों और मार्गणास्थानोंमें जीवोंका प्रमाण बतलाया गया है। यह प्रमाण चार अपेक्षाओंसे बतलाया गया है, द्रव्य, काल, क्षेत्र और भाव।

१. **द्रव्यप्रमाण**—द्रव्यप्रमाणके तीन भेद हैं, संख्यात, असंख्यात और अनन्त। जो संख्यान पंचेन्द्रियोंका विषय है वह **संख्यात** है। उससे ऊपर जो अवधिज्ञानका विषय है वह **असंख्यात** है और उससे ऊपर जो केवलज्ञानका विषय है वह **अनन्त** है[1]।

संख्यातके तीन भेद हैं, जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट। गणनाका आदि एकसे माना जाता है। किन्तु एक केवल वस्तुकी सत्ताको स्थापित करता है, भेदको सूचित नहीं करता। भेदकी सूचना दोसे प्रारंभ होती है, और इसीलिये दोको संख्यातका आदि माना है[2]। इसप्रकार **जघन्य संख्यात** दो है। **उत्कृष्ट संख्यात** आगे बतलाये जानेवाले जघन्य परीतासंख्यातसे एक कम होता है। तथा इन दोनों छोरोंके बीच जितनी भी संख्यायें पाई जाती हैं वे सब **मध्यम संख्यातके** भेद हैं।

असंख्यातके तीन भेद हैं, परीत, युक्त और असंख्यात, और इन तीनोंमेंसे प्रत्येक पुनः जघन्य, मध्यम और उत्कृष्टके भेदसे तीन प्रकारका होता है। **जघन्य परीतासंख्यातका** प्रमाण अनवस्था, शलाका, प्रतिशलाका और महाशलाका, ऐसे चार कुंडोंको द्वीपसमुद्रोंकी गणनानुसार सरसोंसे भर भरकर निकालनेका प्रकार बतलाया गया है, जिसके लिये त्रिलोकसार गाथा १८–३५ देखिये। आगे बतलाये जानेवाले जघन्य युक्तासंख्यातसे एक कम करने पर **उत्कृष्ट परीतासंख्यातका** प्रमाण मिलता है, तथा जघन्य और उत्कृष्ट परीतके बीचकी सब गणना **मध्यम परीतासंख्यातके** भेद रूप है।

जघन्य परीतासंख्यातके वर्गित-संवर्गित करनेसे अर्थात् उस राशिको उतने ही वार गुणित प्रगुणित करनेसे **जघन्य युक्तासंख्यातका** प्रमाण प्राप्त होता है। आगे बतलाये जानेवाले जघन्य असंख्यातासंख्यातसे एक कम **उत्कृष्ट युक्तासंख्यातका** प्रमाण है और इन दोनोंके बीचकी सब गणना **मध्यम युक्तासंख्यातके** भेद है।

---

१ जं संखाणं पंचिंदियविसओ तं संखेज्जं णाम। तदो उवरि जं ओहिणाणविसओ तमसंखेज्जं णाम। तदो उवरि जं केवलणाणस्सेव विसओ तमणंतं णाम। (पृ. २६७–२६८)

२ 'एयादीया गणणा, बीयादीया हवेज्ज संखेज्जा'। (त्रि. सा, १६) जघन्यसंख्यातं द्विसंख्यं तस्य भेदग्राहकत्वेन एकस्य तदभावात्। (गो. जी. जी. प्र. टीका ११८ गा.)

जघन्य युक्तासंख्यातका वर्ग (य × य) **जघन्य असंख्यातासंख्यात** कहलाता है, तथा आगे बतलाये जानेवाले जघन्य परीतानन्तसे एक कम **उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात** होता है, और इन दोनोके बीचकी सब गणना **मध्यम असंख्यातासंख्यात**के भेदरूप है।

जघन्य असंख्यातासंख्यातको तीन वार वर्गित संवर्गित करनेसे जो राशि उत्पन्न होती है उसमें धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, एक जीव और लोकाकाश, इनके प्रदेश तथा अप्रतिष्ठित और प्रतिष्ठित वनस्पतिके प्रमाणको मिला कर उत्पन्न हुई राशिको पुनः तीन वार वर्गित सवर्गित करना चाहिये। इसप्रकार प्राप्त हुई राशिमे कल्पकालके समय, स्थिति और अनुभागबंधाध्यवसायस्थानोंका प्रमाण तथा योगके उत्कृष्ट अविभागप्रतिच्छेद मिलाकर उसे पुनः तीन वार वर्गित सवर्गित करनेसे जो राशि उत्पन्न होगी वह **जघन्य परीतानन्त** कही जाती है। आगे बतलाये जानेवाले जघन्ययुक्तानन्तसे एक कम **उत्कृष्ट परीतानन्त** का प्रमाण है, तथा बीचके सब भेद **मध्यम परीतानन्त** हैं।

जघन्य परीतानन्तको वर्गित सवर्गित करनेसे **जघन्य युक्तानन्त** होता है। आगे बताये जानेवाले जघन्य अनन्तानन्तसे एक कम **उत्कृष्ट युक्तानन्त**का प्रमाण है, तथा बीचके सब भेद **मध्यम युक्तानन्त** होते हैं।

जघन्य युक्तानन्तका वर्ग **जघन्य अनन्तानन्त** होता है। इस जघन्य अनन्तानन्तको तीन वार वर्गित संवर्गित करके उसमे सिद्ध जीव, निगोदराशि, प्रत्येकवनस्पति, पुद्गलराशि, कालके समय और अलोकाकाश, ये छह राशिया मिलाकर उत्पन्न हुई राशिको पुनः तीन वार वर्गित संवर्गित करके उसमे धर्मद्रव्य और अधर्मद्रव्य सबधी अगुरुलघुगुणके अविभागप्रतिच्छेद मिला देना चाहिये। इस प्रकार उत्पन्न हुई राशिको पुनः तीन वार वर्गित सवर्गित करके उसे केवलज्ञानमेंसे घटावे और फिर शेष केवलज्ञानमे उसे मिला देवे। इस प्रकार प्राप्त हुई राशि अर्थात् केवलज्ञानप्रमाण **उत्कृष्ट अनन्तानन्त** होता है। जघन्य और उत्कृष्ट अनन्तानन्तकी मध्यवर्ती सब गणना **मध्यम अनन्तानन्त** कहलाती है। (देखो पृ. १९२६ तथा त्रिलोकसार गाथा १८-५१)

२. कालप्रमाण—जीवोका परिमाण जाननेके लिये दूसरा माप कालका लगाया गया है, जिसके भेद प्रभेद इसप्रकार है– एक परमाणुको मदगतिसे एक आकाशप्रदेशसे दूसरे आकाशप्रदेशमें जानेके लिये जो काल लगता है वह **समय** कहलाता है। यह कालका सबसे छोटा, अविभागी परिमाण है। असंख्यात (अर्थात् जघन्य युक्तासंख्यात प्रमाण) समयोकी एक **आवलि** होती है। संख्यात आवलियोंका एक **उच्छ्वास** या **प्राण** होता है। सात उच्छ्वासोका एक **स्तोक,** सात स्तोकोंका एक **लव,** और साढे अडतीस लवोकी एक **नाली** होती है। दो नालीका **मुहूर्त** और तीस मुहूर्तका एक **अहोरात्र** या **दिवस** होता है। वर्तमान कालगणनामें अहोरात्र चौवीस घटोका माना जाता है। इसके अनुसार एक मुहूर्त अडतालीस मिनिटका, एक नाली चौवीस मिनिटकी, एक लव $३७\frac{३१}{७७}$ सेकेडका, एक स्तोक $५\frac{१८५}{५३९}$ सेकेडका तथा एक उच्छ्वास $\frac{२८८०}{३७७३}$ सेकेडका पडता है। आवलि और समय एक सेकेंडसे बहुत सूक्ष्म काल प्रमाण होता है। (देखो पृ ६५, तथा ति प. ४, २८४-२८८)

यह कालप्रमाण तालिकारूपमें इस प्रकार रखा जा सकता है—

अहोरात्र या दिवस	=	३०	मुहूर्त	=	२४	घंटे
मुहूर्त	=	२	नाली	=	४८	मिनिट
नाली	=	३८॥	लव	=	२४	मिनिट
लव	=	७	स्तोक	=	३७$\frac{३१}{७७}$	सेकेंड
स्तोक	=	७	उच्छ्वास	=	५$\frac{१८५}{५३९}$	सेकेंड
उच्छ्वास या प्राण	=		संख्यात आवली	=	$\frac{२८८०}{३७७३}$	सेकेंड
आवलि	=		असंख्यात (ज. यु. अस.) समय			
समय	=		एक परमाणुके एक आकाशप्रदेशसे दूसरे आकाशप्रदेशमें मन्दगतिसे जानेका काल			

एक सामान्य स्वस्थ प्राणीके (मनुष्यके) एक बार श्वास लेने और निकालनेमें जितना समय लगता है उसे उच्छ्वास कहते हैं। एक मुहूर्तमें इन उच्छ्वासोंकी संख्या ३७७३ कही गई है, जो उपर्युक्त प्रमाणानुसार इस प्रकार आती है—$२ \times ३८\frac{१}{२} \times ७ \times ७ = ३७७३$। एक अहोरात्र (२४ घंटे) में $३७७३ \times ३० = १,१३,१९०$ उच्छ्वास होते हैं। इसका प्रमाण एक मिनटमें $\frac{३७७३}{४८} = ७८{\cdot}६$ आता है, जो आधुनिक मान्यताके अनुसार ही है।

एक मुहूर्तमेंसे एक समय कम करने पर **भिन्नमुहूर्त** होता है, तथा भिन्नमुहूर्तसे एक समय कम कालसे लगाकर एक आवलि व आवलिसे कम कालको भी **अन्तर्मुहूर्त** कहा है। (पृ. ६७) इस प्रकार एक अन्तर्मुहूर्त सामान्यतः संख्यात आवलि प्रमाण ही होता है, किन्तु कहीं कहीं अन्तर् शब्दको सामीप्यार्थक मानकर असंख्यात आवलि प्रमाण भी मान लिया गया है। (पृ. ६९)

पद्रह दिनका एक **पक्ष**, दो पक्षका **मास**, दो मासकी **ऋतु**, तीन ऋतुओंका **अयन**, दो अयनका **वर्ष**, पांच वर्षका **युग**, चौरासी लाख वर्षका **पूर्वांग**, चौरासी लाख पूर्वांग का **पूर्व**, चौरासी पूर्वका **नयुतांग**, चौरासी लाख नयुतांग का **नयुत**, तथा इसीप्रकार चौरासी और चौरासी लाख गुणित क्रमसे **कुमुदांग** और **कुमुद**, **पद्मांग** और **पद्म**, **नलिनांग** और **नलिन**, **कमलांग** और **कमल**, **त्रुटितांग** और **त्रुटित**, **अटटांग** और **अटट**, **अममांग** और **अमम**, **हाहांग** और **हाहा**[1], **हूहांग** और **हूहू**, **लतांग** और **लता**, तथा **महालतांग** और **महालता** क्रमशः होते हैं। फिर चौरासी लाख गुणित क्रमसे **श्रीकल्प** (या शिर:कंप), **हस्तप्रहेलित** (हस्तप्रहेलिका) और **अचलप्र** (चर्चिका) होते हैं। चौरासीको इकतीस बार परस्पर गुणा करनेसे अचलप्रकी वर्षोंका प्रमाण आता है, जो नव्वे शून्यांकोंका होता है[2]। यद्यपि इन नयुतांगादि काल-गणनाओंका उल्लेख प्रस्तुत ग्रंथभागमें नहीं आया, तथापि संख्यात गणनाकी मान्यताका कुछ बोध करानेके लिये यह

१ हाहांग और हाहा नामक संख्याओंके नाम राजवार्तिक व हरिवंशपुराणके कालविवरणमें नहीं पाये जाते।

२ यह तिलोयपण्णत्तिके अनुसार है। किन्तु चौरासीको इकतीस वार परस्पर गुणित करनेसे $(८४)^{३१}$ Logarithm के अनुसार केवल साठ (६०) अंकप्रमाण ही संख्या आती है।

सब यहां दी गई है। यह सब संख्यात (मध्यम) का ही प्रमाण है। इससे कई गुणे ऊपर जाकर उत्कृष्ट संख्यातका प्रमाण होता है जो ऊपर गणना-मापमे बता ही आये हैं।

आगे क्षेत्रप्रमाणमें बतलाये जानेवाले एक प्रमाण योजन (अर्थात् दो हजार कोश) लम्बा चौड़ा और गहरा कुड बनाकर उसे उत्तम भोगभूमिके सात दिनके भीतर उत्पन्न हुए मेंढेके रोमाग्रों (जिनके और खड कैंचीसे न हो सकें) से भर दे, और उनमेंसे एक एक रोमखंडको सौ सौ वर्षमें निकाले। इसप्रकार उन समस्त रोमोंको निकालनेमें जितना काल व्यतीत होगा, उसे **व्यवहारपल्य** कहते हैं। उक्त रोमोंकी कुल संख्या गणितसे ४५ अंक प्रमाण आती है, और तदनुसार व्यवहारपल्यका प्रमाण ४५ अंक प्रमाण शताब्दियां अथवा ४७ अंक प्रमाण वर्ष हुआ।

इस व्यवहारपल्यको असंख्यात कोटि वर्षोंके समयोंसे गुणित करनेपर **उद्धारपल्यका** प्रमाण आता है, जिससे द्वीप-समुद्रोंकी गणना की जाती है। इस उद्धारपल्यको असंख्यात कोटि वर्षोंके समयोसे गुणित करनेपर **अद्धापल्यका** प्रमाण आता है। कर्म, भव, आयु और काय, इनकी स्थितिके प्रमाणमें इसी अद्धापल्यका उपयोग होता है। जीवद्रव्यकी प्रमाण-प्ररूपणामें भी यथावश्यक इसी पल्योपमका उपयोग किया गया है। एक करोड़को एक करोडसे गुणा करने पर जो लब्ध आता है उसे **कोड़ाकोड़ी** कहते हैं। दस कोड़ाकोडी अद्धापल्योपमोंका एक **अद्धा-सागरोपम** और दस कोडाकोड़ी अद्धासागरोपमोंकी एक **उत्सर्पिणी** और इतने ही कालकी एक **अवसर्पिणी** होती है। इन दोनोको मिलाकर एक **कल्पकाल** होता है।

३. क्षेत्रप्रमाण—पुद्गल द्रव्यके उस सूक्ष्मातिसूक्ष्म भागको परमाणु कहते है जिसका पुन. विभाग न हो सके, जो इन्द्रियो द्वारा ग्राह्य नहीं और जो अप्रदेशी तथा अत, आदि व मध्य रहित है। एक अविभागी परमाणु जितने आकाशको रोकता है उतने आकाशको एक **क्षेत्रप्रदेश** कहते हैं। अनन्तानन्त परमाणुओंका एक **अवसन्नासन्न स्कंध**, आठ अवसन्नासन्न स्कधोंका एक **सन्नासन्न स्कंध**, आठ सन्नासन्न स्कधोंका एक **त्रुटरेणु** (त्रुटिरेणु, तृटरेणु), आठ त्रुटरेणुओंका एक **त्रसरेणु**, आठ त्रसरेणुओका एक **रथरेणु**, आठ रथरेणुओका **उत्तम भोगभूमिसंबंधी बालाग्र**, आठ उत्तम भोगभूमिसबधी बालाग्रोका एक **मध्यम भोगभूमिसंबधी बालाग्र**, आठ मध्यम भोगभूमिसंबधी बालाग्रोंका एक **जघन्य भोगभूमिसंबंधी बालाग्र**, आठ जघन्य भोगभूमिसंबधी बालाग्रोंका एक **कर्मभूमिसंबंधी बालाग्र**, आठ कर्मभूमिसंबंधी बालाग्रोकी एक **लिक्षा** (लीख), आठ लिक्षाओंका एक **जूं**, आठ जूवोंका एक **यव** (यव-मध्य), और आठ यवोंका एक **अंगुल** होता है। अगुल तीन प्रकारका है, उत्सेधागुल, प्रमाणागुल और आत्मांगुल। ऊपर जिस अंगुलका प्रमाण वतलाया है वह **उत्सेधांगुल** (सूचि) है। पाचसौ उत्सेधागुलोंका एक **प्रमाणांगुल** होता है, जो अपसर्पिणीकालके प्रथम चक्रवर्तीके पाया जाता है। भरत और ऐरावत क्षेत्रमें जिस कालमें सामान्य मनुष्यका जो अंगुल प्रमाण होता है वह उस उस कालमें उस उस क्षेत्रका **आत्मांगुल** कहलाता है। मनुष्य, तिर्यंच, देव और नारकियोंके शरीरकी अवगाहना तथा चतुर्निकाय देवोंके निवास और नगरके प्रमाणके लिये उत्सेधागुल ही ग्रहण किया जाता है। द्वीप, समुद्र,

पर्वत, वेदी, नदी, कुंड, जगती (कोट), वर्ष (क्षेत्र) का प्रमाण प्रमाणांगुलसे किया जाता है, तथा भृंगार, कलश, दर्पण, वेणु, पटह, युग, शयन, शकट, हल, मूसल, शक्ति, तोमर, सिंहासन, वाण, नाली, अक्ष, चामर, दुंदुभि, पीठ, छत्र तथा मनुष्योंके निवास व नगर, उद्यानादिका प्रमाण आत्मांगुलसे किया जाता है। छह अंगुलोंका **पाद**, दो पादोंकी **विहस्ति** (वलिस्त), दो विहस्तियोंका **हाथ**, दो हाथोंका **किष्कु**, दो किष्कुओंका **दंड**, **युग**, **धनु**, **मुसल** व **नाली**, दो हजार दंडोंका एक **कोश** तथा चार कोशोंका एक **योजन** होता है। (ति. प. १, ९८-११६)

द्रव्यका अविभागी अंश	= परमाणु	८ जू	= यव
अनन्तानन्त परमाणु	= अवसन्नासन्न स्कंध	८ यव	= उत्सेधांगुल
८ अवसन्नासन्नस्कंध	= सन्नासन्नस्कंध	(५०० उत्सेधांगुल	= प्रमाणांगुल)
८ सन्नासन्नस्कंध	= त्रुटरेणु	६ अंगुल	= पाद
८ त्रुटरेणु	= त्रसरेणु	२ पाद	= विहस्ति
८ त्रसरेणु	= रथरेणु	२ विहस्ति	= हाथ
८ रथरेणु	= उत्तम भो. भू. बालाग्र	२ हाथ	= किष्कु
८ उ. भो. भू. बा.	= मध्यम ,, ,, ,,	२ किष्कु	= दंड, युग, धनु, मुसल या नाली
८ म. भो. भू. बा.	= जघन्य ,, ,, ,,		
८ ज. भो. भू. बा.	= कर्मभूमि बालाग्र		
८ क. भू. बालाग्र	= लिक्षा	२००० दंड	= कोस
८ लिक्षा	= जू	४ कोश	= योजन

अंगुलसे आगेके प्रमाण भी आत्म, उत्सेध व प्रमाण अंगुलके अनुसार तीन तीन प्रकारके होते हैं। एक प्रमाण योजन अर्थात् दो हजार कोश लम्बे, चौडे और गहरे कुंडके आश्रयसे अद्धापल्य नामक प्रमाण निकालनेका प्रकार ऊपर कालप्रमाणमे बता आये है। उसी अद्धापल्यके अर्धच्छेद[1] प्रमाण अद्धापल्योंका परस्पर गुणा करनेपर **सूच्यंगुल**का प्रमाण आता है। सूच्यंगुलके वर्ग को **प्रतरांगुल** और घनको **घनांगुल** कहते हैं। अद्धापल्यके असंख्यातवे भागप्रमाण, अथवा मतान्तरसे अद्धापल्यके जितने अर्धच्छेद हो उसके असंख्यातवे भागप्रमाण, घनांगुलोंके परस्पर गुणा करनेपर **जगश्रेणीका** प्रमाण आता है। जगश्रेणीके सातवें भाग प्रमाण **रज्जु** होता है, जो तिर्यक् लोकके मध्य विस्तार प्रमाण है। जगश्रेणीके वर्गको **जगप्रतर** तथा जगश्रेणीके घनको **लोक** कहते हैं।

ये सब अर्थात् पल्य, सागर, सूच्यंगुल प्रतरांगुल, घनांगुल, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक उपमा मान हैं, जिनका उपयोग यथावसर द्रव्य, क्षेत्र और काल, इन तीनों अपेक्षाओंसे बतलाये गये प्रमाणोंमें किया गया है। उनका तात्पर्य द्रव्यप्रमाणमे उतनी संख्यासे, कालप्रमाणमें उतने समयोंसे तथा क्षेत्रप्रमाणमे उतने ही आकाशप्रदेशोंसे समझना चाहिये।

१ एक राशि जितनी बार उत्तरोत्तर आधी आधी की जा सके, उतने उस राशिके अर्धच्छेद कहे जाते हैं।

४. भावप्रमाण—पूर्वोक्त तीना प्रकारके प्रमाणोके ज्ञानको ही भावप्रमाण कहा है। (देखो सूत्र ५)। इसका अभिप्राय यह है कि जहा जिस गुणस्थान व मार्गणास्थानका द्रव्य, काल व क्षेत्रकी अपेक्षासे प्रमाण बतलाया गया है वहा उस प्रमाणके ज्ञानको ही भावप्रमाण समझ लेना चाहिये।

३ जीवराशिका गुणस्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण

सर्व जीवराशि अनन्तानन्त है। उसका बहुभाग मिथ्यादृष्टिगुणस्थानवर्ती है, तथा शेष एक भाग अन्य तेरह गुणस्थानों और सिद्धोंमें विभाजित है। इनमें भी मिथ्यादृष्टि और सिद्ध क्रम-हानिरूपसे अनन्तानन्त हैं। सासादनादि चार गुणस्थानोंके जीव प्रत्येक राशिमें असंख्यात हैं,[1] तथा शेष प्रमत्तादि नौ गुणस्थानोंके जीव संख्यात हैं जिनकी कुल संख्या तीन कम नौ करोड़ निश्चित है। यद्यपि अनन्तको संख्यामें उतारना भ्रामक हो सकता है, तथापि धवलाकारने उक्त राशियोंके क्रमिक प्रमाणका बोध करानेके लिये सर्व जीवराशिको १६ और इनमेसे मिथ्यादृष्टिराशिको १३, तथा सासादनादि तेरह गुणस्थानोके जीवों और सिद्धोंका संयुक्त प्रमाण ३ अंकोंके द्वारा सूचित किया है। अब हम यदि इसी अकसंदृष्टिके आधारसे सभी गुणस्थानों व सिद्धोंका अलग अलग प्रमाण कल्पित करना चाहें, तो स्थूलतः इसप्रकार किया जा सकता है—

चौदह गुणस्थानोंमें जीवराशियोंके प्रमाणकी संदृष्टि

गुणस्थान	प्रमाण		अंकसंदृष्टि	
१. मिथ्यादृष्टि	अनन्त		१३	
२. सासादन	असंख्य		७/६४	१५/१६
३. मिश्र	"		१६/६४	
४. अविरतसम्यग्दृष्टि	"		३२/६४	
५. संयतासंयत	"		५/६४	
६. प्रमत्तविरत	५९३९८२०६	८९९९९९९७	१/१६	
७. अप्रमत्तविरत	२९६९९१०३			
८. अपूर्वकरण	८९७			
९. अनिवृत्तिकरण	८९७			
१०. सूक्ष्मसाम्पराय	८९७			
११. उपशान्तमोह	२९९			
१२. क्षीणमोह	५९८			
१३. सयोगिकेवली	८९८५०२			
१४. अयोगिकेवली	५९८			
सिद्ध	अनन्त		२	
सर्वजीवराशि	अनन्त		१६	

१ सासादनसे संयतासयत तक चारों गुणस्थानोंके जीव समुच्चय व पृथक् पृथक् रूपसे भी पल्योपमके

चौदहों गुणस्थानोंकी जीवराशियोंके प्रमाण-प्ररूपणके पश्चात् उनका भागाभाग और फिर उनका अल्पबहुत्व बतलाया गया है। भागाभागमें सामान्य राशिको लेकर विभाग करते हुए सबसे अल्प राशि तक आये हैं। अल्पबहुत्वमें सबसे छोटी राशिमें प्रारंभ करके गुणा और योग (सातिरेक) करते हुए सबसे बड़ी राशि तक पहुंचे हैं। इस अल्पबहुत्वका तीन प्रकारसे प्ररूपण किया गया है, स्वस्थान, परस्थान और सर्वपरस्थान। स्वस्थानमें केवल अवहारकाल और विवक्षित राशिका अल्पबहुत्व बतलाया गया है। परस्थानमें अवहारकाल, भाज्य तथा अन्य जो राशियां उनके प्रमाणके बीचमें आ पड़ती हैं उनका और विवक्षित राशिका अल्पबहुत्व दिखाया गया है। तथा सर्वपरस्थानमें उक्त राशियोंके अतिरिक्त अन्य राशियोंसे भी अल्पबहुत्व दिखाया गया है। (पृ. १०१-१२१)

४ जीवराशिका मार्गणास्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण

गुणस्थानोंमें जीवप्रमाण-प्ररूपणके पश्चात् गति आदि चौदह मार्गणाओं व उनके भेद-प्रभेदोंमें जीवराशिका प्रमाण दिखलाया गया है और यहां प्रत्येक राशिका प्रमाण, भागाभाग और अल्पबहुत्व यथाक्रमसे समझाया गया है। जिसप्रकार गुणस्थानोंमें प्रथम मिथ्यादृष्टिके प्रमाण समझानेमें आचार्यने गणितकी अनेक प्रक्रियाओंका उपयोग करके दिखाया है, उसी प्रकार मार्गणास्थानोंमें प्रथम नरकगतिके प्रमाणप्ररूपणमें भी गणितविस्तार पाया जाता है। (देखो पृ. १२१-२०५)

उक्त प्रमाण-विवेचन बड़ी सूक्ष्मता और गहराईके साथ किया गया है, किन्तु आचार्यने अंकसंदृष्टि कायम नहीं रखी, जिससे सामान्य पाठकोंको विषयका बोध होना सुगम नहीं है। अतएव हम यहांपर उन सब मार्गणाओंकी पृथक् पृथक् प्रमाण-प्ररूपक अंकसंदृष्टियां आचार्यद्वारा कल्पित अंकोंके आधारसे बनानेका प्रयत्न करते हैं, जिसका मुख्य उद्देश्य अनन्त, असंख्यात व संख्यातके भीतर राशियोंके अल्पबहुत्वका कुछ स्थूल बोध कराना मात्र है। प्रत्येक मार्गणाके भीतर संपूर्ण जीवराशिका समुच्चय प्रमाण १६ ही रखा गया है। किन्तु सूक्ष्म दृष्टिसे परीक्षण करनेपर एक दूसरी मार्गणाओंकी अंकसंदृष्टियोंमें परस्पर वैषम्य दृष्टिगोचर हो सकता है। यह सर्वजीवराशिके लिये केवल १६ जैसी अल्प संख्या लेकर समस्त मार्गणाओंके प्रभेदोंको उदाहृत करनेमें प्रायः अनिवार्य ही है। एक राशि दूसरी राशिसे जितनी विशेष व जितनी गुणित अधिक है उसका अनुमान इन अंकोंमें कदापि नहीं करना चाहिये। यहां तो सिर्फ एक मार्गणाके भीतर राशियोंकी परस्पर अधिकता या अल्पताका ही क्रम जाना जा सकता है। यद्यपि गणितके सूक्ष्म विचारसे यह वैषम्य भी संभवतः दूर किया जा सकता था, किन्तु उससे फिर संदृष्टियां सुगम होने की अपेक्षा दुर्गम सी हो जातीं, जिससे हमारा अभिप्राय पूर्ण नहीं होता। चूंकि यहां प्रत्येक मार्गणाके भीतर जीवराशियोंका प्रमाणक्रम निर्दिष्ट करना अभीष्ट है, अतएव राशियां बहुत्वसे अल्पत्वकी ओर क्रमसे रखी गई हैं, उनके रूढक्रमसे नहीं। हां, सिद्ध सर्वत्र अन्त-

---

असंख्यातवें भाग हैं। इनमें भी असंयतसम्यग्दृष्टि सबसे अधिक, इनके असंख्यातवें भाग मिश्रगुणस्थानीय, इनके संख्यातवें भाग सासादनगुणस्थानीय तथा इनके असंख्यातवें भाग संयतासंयत जीव हैं।

की ओर ही गये हैं। कहीं कहीं राशिके जो अंक दिये गये हैं उनसे कुछ अधिक प्रमाण विवक्षित है, क्योंकि, उसमें कोई अन्य अल्प राशि भी प्रविष्ट होती है। ऐसे स्थानोंपर अंकके आगे धनका चिन्ह + बना दिया गया है, और अंक देकर टिप्पणीमें उस विवक्षित राशिका उल्लेख कर दिया गया है। इस दिशामें यह प्रयत्न, जहां तक हमें ज्ञान है, प्रथम ही है, अतः सावधानी रखने पर भी कुछ त्रुटियां हो सकती हैं। यदि पाठकोंके ध्यानमें आवें, तो हमें अवश्य सूचित करें।

चौदह मार्गणास्थानोंमें जीवराशियोंके प्रमाणकी संदृष्टियां

(मार्गणा शीर्षकके आगे दी गई पृष्ठसंख्या उस मार्गणाके भागाभागकी सूचक है।)

१ गति मार्गणा (पृ. २०७)

तिर्यंच	देव	नारक	मनुष्य	सिद्ध	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
२०० / १६	१२ / १६	८ / १६	४ / १६	३२ / १६	१६

२ इन्द्रिय मार्गणा (पृ. ३१९)

१ इंद्रिय	२ इंद्रिय	३ इंद्रिय	४ इंद्रिय	५ इंद्रिय	अतींद्रिय	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१८२ / १६	१४ / १६	१२ / १६	१० / १६	६ / १६	३२ / १६	१६

३ काय मार्गणा (पृ. ३४१)

वनस्पति	वायु	जल	पृथिवी	तेज	त्रस	अकाय	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१७६ / १६	१६ / १६	१२ / १६	१० / १६	६ / १६	४ / १६	३२ / १६	१६

४ योग मार्गणा (पृ. ४१२)

काय.	वचन.	मन.	अयोगी	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१८४ / १६	२४ / १६	१६ / १६	३२ / १६ +[१]	१६

१ यहां यह सिद्धोंका प्रमाण अयोगिकेवलियोंसे सातिरेक समझना चाहिये।

५ वेद मार्गणा (पृ. ४२१)

नपुंसक	स्त्री	पुरुष	अवेद	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
२००/१६	२०/१६	४/१६	३२/१६ + [२]	१६

६ कषाय मार्गणा (पृ. ४३१)

लोभ	माया.	क्रोध.	मान	अकषायी.	सर्व जीव
अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त
८२/१६	५०/१६	४८/१६	४४/१६	३२/१६ + [३]	१६

७ ज्ञान मार्गणा (पृ. ४४२)

कुमति. कुश्रुत.	विभंग.	मति. श्रुत.	अवधि.	मनःपर्यय.	केवल.	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	संख्यात	अनन्त	अनन्त
८३२/६४	३९/६४	२०/६४	४/६४	१/६४	१२८/६४ + [४]	१६

८ संयम मार्गणा (पृ. ४५१)

असंयमी	देशसं.	सामा छेदो.	यथाख्या	परि. वि.	सू. सां.	सिद्ध	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	संख्यात	संख्यात	संख्यात	संख्यात	अनन्त	अनन्त
८३२/६४ + [५]	३०/६४	२०/६४	१०/६४	३/६४	१/६४	१२८/६४	१६

९ दर्शन मार्गणा (पृ. ४५७)

अचक्षु.	चक्षु.	अवधि.	केवल.	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
८३२/६४	६०/६४	४/६४	१२८/६४ + [६]	१६

२ यहां सिद्धोंका प्रमाण ९ वें गुणस्थानके अवेद भागसे ऊपरके समस्त गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

३ यहां सिद्धोंका प्रमाण ११ वें और ऊपरके समस्त गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

४ यहां सिद्धोंका प्रमाण १३ वें और १४ वें गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

५ यहां मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण २ रे, ३ रे और ४ थे गुणस्थानोंकी राशियोंसे साधिक है।

६ यहां सिद्धोंका प्रमाण १३ वें और १४ वें गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

१० लेश्या मार्गणा (पृ. ४६६)

कृष्ण.	नील.	कापोत.	पीत.	पद्म	शुक्ल.	अलेश्य	सर्व जीव
अनन्त	अनन्त	अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
७६/१६	६७/१६	६५/१६	८/१६	६/१६	२/१६	३२/१६ + [7]	१६

११ भव्य मार्गणा (पृ. ४७३)

भव्य	अभव्य	सिद्ध	सर्व जीव
अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त
१९६/१६	२८/१६	३२/१६	१६

१२ सम्यक्त्व मार्गणा (पृ. ४७८)

मिथ्यादृ.	क्षायोप.	क्षायिक.	औपश.	मिश्र	सासा.	सिद्ध	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
२०८/१६	६/१६	४/१६	३/१६	२/१६	१/१६	३२/१६	१६

१३ संज्ञा मार्गणा (पृ ४८३)

असंज्ञी	संज्ञी	अनुभय	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१९९/१६	२५/१६	३२/१६ + [8]	१६

१४ आहार मार्गणा (पृ. ४८५)

आहारक	अनाहारक		सर्व जीव
	वक्र	अवक्र	
अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त
११	३	२	१६

७ यहां सिद्धोंका प्रमाण १४ वें गुणस्थान राशिसे सातिरेक है।

८ यहां सिद्धोंका प्रमाण १३ वें और १४ वें गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक समझना चाहिये।

मार्गणास्थानोंके भीतर बतलाई गई राशियोंका बहुत्वसे अल्पत्वकी ओर क्रम जहांतक हमारे विचारमें आया है, निम्न प्रकार है—

अनन्त	असंख्यात	संख्यात
१ असंयमी	२४ वायुकायिक	५६ सामायिकसंयत
२ अचक्षुदर्शनी	२५ जल ,,	५७ छेदोपस्थापना ,,
३ कुमति	२६ पृथिवी ,,	५८ यथाख्यात ,,
४ कुश्रुत	२७ तेज ,,	५९ केवलज्ञानी
५ मिथ्यादृष्टि	२८ त्रस ,,	६० केवलदर्शनी
६ नपुंसकवेदी	२९ वचनयोगी	६१ परिहारसंयत
७ तिर्यंच	३० द्वीन्द्रिय	६२ मनःपर्ययज्ञानी
८ असंज्ञी	३१ त्रीन्द्रिय	६३ सूक्ष्मसांपरायसंयत
९ काययोगी	३२ चतुरिन्द्रिय	
१० एकेन्द्रिय	३३ चक्षुदर्शनी	
११ वनस्पतिकायिक	३४ पंचेन्द्रिय	
१२ भव्य	३५ संज्ञी	
१३ आहारक	३६ मनोयोगी	
१४ अनाहारक	३७ विभंगज्ञानी	
१५ कृष्ण लेश्या	३८ देवगति	
१६ नील ,,	३९ स्त्रीवेदी	
१७ कापोत ,,	४० नारक	
१८ लोभ कषायी	४१ पुरुषवेदी	
१९ माया ,,	४२ मनुष्य	
२० क्रोध ,,	४३ पीतलेश्या	
२१ मान ,,	४४ पद्म ,,	
२२ सिद्ध	४५ मतिज्ञानी	
२३ अभव्य	४६ श्रुत ,,	
	४७ अवधि ,,	
	४८ अवधिदर्शनी	
	४९ शुक्ललेश्या	
	५० क्षायोपशमिकसम्यक्त्वी	
	५१ क्षायिक ,,	
	५२ औपशमिक ,,	
	५३ मिश्र	
	५४ सासादन	
	५५ देशसंयत	

अनन्त राशियां २३, असंख्यात राशिया २४-५५=३२, संख्यात ५६-६३=८; कुल ६३.

इस प्रमाण-प्ररूपणमे स्वभावतः पाठकोको मनुष्योंके प्रमाणके सम्बधमें विशेष कौतुक हो सकता है। इस आगमानुसार सर्व मनुष्योकी संख्या असख्यात है। उनमे गुणस्थानोंकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे असख्यात, कालप्रमाणसे असख्यातासख्यात कल्पकाल (अवसर्पिणियों-उत्सर्पिणियो) के समय प्रमाण, तथा क्षेत्रप्रमाणसे जगश्रेणीके असख्यातवे भाग अर्थात् असख्यात करोड़ योजन क्षेत्रप्रदेश प्रमाण है। द्वितीयादि गुणस्थानवर्ती जीव सख्यात है, जो इस प्रकार है—

२ सासादन गुणस्थानवर्ती मनुष्य ५२ करोड (व मतान्तरसे ५० करोड)
३ मिश्र „ „ १०४ करोड (पूर्वोक्तसे दुगुने)
४ असयतसम्यग्दृष्टि „ „ ७०० करोड़
५ सयतासयत „ „ १३ करोड

छठवेंसे चौदहवें गुणस्थानतकके मनुष्योंकी संख्या वही है जो ऊपर गुणस्थान प्रमाण-प्ररूपणमें दिखा आये हैं, क्योकि, ये गुणस्थान केवल मनुष्योंके ही होते है, देवादिकोके नहीं। अतः जिनका प्रमाण सख्यात है, ऐसे द्वितीय गुणस्थानसे चौदहवें गुणस्थान तकके कुल मनुष्योका प्रमाण ५२+१०४+७००+१३+तीन कम ९ करोड, अर्थात् कुल तीन कम आठसौ अठहत्तर करोड होता है। आजकी ससारभरकी मनुष्यगणनासे यही प्रमाण चौगुनेसे भी अधिक हो जाता है। मिथ्यादृष्टियोको मिलाकर तो उसकी अधिकता बहुत ही बढ जाती है। जैन सिद्धान्तानुसार यह गणना ढाई द्वीपवर्ती विदेह आदि समस्त क्षेत्रोंकी है जिसमे पर्याप्तकोके अतिरिक्त निवृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्य भी सम्मिलित हैं।

नाना क्षेत्रोमे मनुष्य गणनाका अल्पबहुत्व इस प्रकार बतलाया गया है—अन्तर्द्वीपोके मनुष्य सबसे थोडे हैं। उनसे सख्यातगुणे उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य हैं। इसीप्रकार हरि और रम्यक, हैमवत और हैरण्यवत, भरत और ऐरावत, तथा विदेह इन क्षेत्रोंका मनुष्यप्रमाण पूर्व पूर्वसे क्रमशः सख्यातगुणा है। (देखो पृ ९९)

एक बात और उल्लेखनीय है कि वर्तमान हुडावसर्पिणीमे पद्मप्रभ तीर्थंकरका ही शिष्य-परिवार सबसे अधिक हुआ है, जिसकी सख्या तीन लाख तीस हजार ३,३०,००० थी।

उपर्युक्त चौदह गुणस्थानों और मार्गणा-स्थानोंमे जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान भगवान् भूतबलि आचार्यने १९२ सूत्रोंमें कराया है, जिनका विषयक्रम इस प्रकार है—

प्रथम सूत्रमें द्रव्यप्रमाणानुगमके ओघ और आदेश द्वारा निर्देश करनेकी सूचना देकर दूसरे, तीसरे, चौथे और पाचवें सूत्रोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके जीवोंका प्रमाण क्रमशः द्रव्य, काल, क्षेत्र और भावकी अपेक्षा बतलाया है। छठवें सूत्रमें द्वितीयसे पाचवें गुणस्थान तकके जीवोंका तथा आगेके सातवें और आठवें सूत्रमें क्रमशः छठे और सातवें गुणस्थानोंका द्रव्य-प्रमाण बतलाया है। उसी प्रकार ९ वें और १० वें सूत्रमें उपशामक तथा ११ वें व १२ वें में क्षपकों और अयोग-केवली जीवोंका तथा १३ वें व १४ वें सूत्रमें सयोगिकेवलियोंका प्रवेश और संचय-कालकी

अपेक्षासे प्रमाण कहा गया है। सूत्र न. १५ से मार्गणास्थानोंमें प्रमाणका निर्देश प्रारंभ होता है, जिसके प्ररूपणकी सूत्र-संख्या निम्न प्रकार है--

	सूत्रसे		सूत्रतक	कुल सूत्र
नरकगति	१५	-	२३	= ९
तिर्यंचगति	२४	-	३९	= १६
मनुष्यगति	४०	-	५२	= १३
देवगति	५३	-	७३	= २१
इंद्रिय मार्गणा	७४	-	८६	= १३
काय ,,	८७	-	१०२	= १६
योग ,,	१०३	-	१२३	= २१
वेद ,,	१२४	-	१३४	= ११
कषाय ,,	१३५	-	१४०	= ६

	सूत्रसे		सूत्रतक	कुल सूत्र
ज्ञान मार्गणा	१४१	-	१४७	= ७
संयम ,,	१४८	-	१५४	= ७
दर्शन ,,	१५५	-	१६१	= ७
लेश्या ,,	१६२	-	१७१	= १०
भव्य ,,	१७२	-	१७३	= २
सम्यक्त्व ,,	१७४	-	१८४	= ११
संज्ञी ,,	१८५	-	१८९	= ५
आहार ,,	१९०	-	१९२	= ३

५ मतान्तर और उनका खंडन

धवलाकारने अपने समयकी उपलब्ध सैद्धान्तिक सम्पत्तिका जितना भरपूर उपयोग किया है वह ग्रंथके अवलोकनसे ही पूर्णतः ज्ञात हो सकता है। सूत्रों, व्याख्यानों और उपदेशोंका जो साहित्य उनके सन्मुख उपस्थित था, उसका सिंहावलोकन प्रथम भागकी भूमिकामें कराया जा चुका है। प्रस्तुत ग्रंथभागमें भी जहां प्रकृत विषयके विशेष प्रतिपादनके लिये धवलाकारको सूत्र, सूत्रयुक्ति व व्याख्यानका आधार नहीं मिला, वहां उन्होंने 'आचार्य परंपरागत जिनोपदेश' 'परम गुरूपदेश,' 'गुरूपदेश,' व 'आचार्य-वचन' के आश्रयसे प्रमाणप्ररूपण किया है[1]। किन्तु विशेष ध्यान देने योग्य कुछ ऐसे स्थल हैं, जहां आचार्यने भिन्न भिन्न मतोंका स्पष्ट उल्लेख करके एकका खंडन और दूसरेका मंडन किया है। यहां हम इसीप्रकारके मत-मतान्तरोंका कुछ परिचय कराते हैं—

(१) सूत्रकारने प्रमाणप्ररूपणामें प्रथम द्रव्यप्रमाण, फिर कालप्रमाण, और तत्पश्चात् क्षेत्र-प्रमाणका निर्देश किया है। सामान्य क्रमानुसार क्षेत्र पहले और काल पश्चात् उल्लिखित किया जाता है, फिर यहां कालका क्षेत्रसे पूर्व निर्देश क्यों किया गया ? इसका समाधान धवलाकार करते हैं कि कालकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाण सूक्ष्म होता है, अतएव 'जो स्थूल और अल्प वर्णनीय हो, उसका पहले व्याख्यान करना चाहिये।' इस नियमके अनुसार कालप्रमाण पूर्व और क्षेत्रप्रमाण उसके अनन्तर कहा गया है। इस स्थलपर उन्होंने सूक्ष्मत्वके संबधमें कुछ आचार्योंकी एक भिन्न मान्यताका उल्लेख किया

१ परमगुरूवदेसादो जाणिज्जदे।...इदमेत्तिय होदि त्ति कध णव्वदे? आइरियपरपरागदजिणोवदेसादो।... अप्पमत्तसंजदाणं पमाणं गुरूवदेसादो वुच्चदे। (पृ. ८९) और भी देखिये पृ १११, ३५१, ४०६, ४७१.

है कि जो बहुप्रदेशोंसे उपचित हो वही सूक्ष्म होता है, और इस मतकी पुष्टिमें एक गाथा भी उद्धृत की है जिसका अर्थ है कि काल सूक्ष्म है, किन्तु क्षेत्र उससे भी सूक्ष्मतर है, क्योंकि, अंगुलके असंख्यातवें भागमें असंख्यात कल्प होते हैं। धवलाकारने इस मतका निरसन इसप्रकार किया है कि यदि सूक्ष्मत्वकी यही परिभाषा मान ली जाय तब तो द्रव्यप्रमाणका भी क्षेत्रप्रमाणके पश्चात् प्ररूपण करना चाहिये, क्योंकि, एक गाथानुसार, एक द्रव्यांगुलमें अनन्त क्षेत्रांगुल होनेसे क्षेत्र सूक्ष्म और द्रव्य उनसे सूक्ष्मतर होता है। (पृष्ठ २७–२८)

(२) तिर्यक् लोकके विस्तार और उसी सबंधसे रज्जूके प्रमाणके संबंधमें भी दो मतोंका उल्लेख और विवेचन किया गया है। ये दो भिन्न भिन्न मत त्रिलोकप्रज्ञप्ति और परिकर्मके भिन्न भिन्न सूत्रोंके आधारसे उत्पन्न हुए ज्ञान होते हैं। रज्जूका प्रमाण लानेकी प्रक्रियामें जम्बूद्वीपके अर्धच्छेदोंको रूपाधिक करनेका विधान परिकर्मसूत्रमें किया गया है जिसका 'एक रूप' अर्थ करनेसे कुछ व्याख्यानकारोंने यह अर्थ निकाला है कि तिर्यक्लोकका विस्तार स्वयंभूरमण समुद्र की बाहिरी वेदिकापर समाप्त हो जाता है। किन्तु त्रिलोकप्रज्ञप्तिके आधारसे धवलाकारका यह मत है कि स्वयभूरमण समुद्रसे बाहर असख्यात द्वीपसागरोंके विस्तार परिमाण योजन जाकर तिर्यक्लोक समाप्त होता है, अतः जम्बूद्वीपके अर्धच्छेदोंमें एक नहीं, किन्तु सख्यातरूप अधिक बढाना चाहिये। इस मतका परिकर्मसूत्रसे विरोध भी उन्होंने इसप्रकार दूर कर दिया है कि उस सूत्रमें 'रूपाधिक' का अर्थ 'एकरूप अधिक' नहीं, किन्तु 'अनेक रूप अधिक' करना चाहिये। एक रूपवाले व्याख्यानको उन्होंने सच्चा व्याख्यान नहीं, किन्तु व्याख्यानाभास कहा है। अपने मतकी पुष्टिमें धवलाकारने यहां जो अनेक युक्तियां और सूत्रप्रमाण दिये हैं उनसे उनकी संग्राहक और समालोचनात्मक योग्यताका अच्छा परिचय मिलता है। इस विवेचनके अन्तमें उन्होंने कहा है–

'एसो अत्थो जइवि पुव्वाइरियसंपदायविरुद्धो, तो वि तंतजुत्तिबलेण अम्हेहि परूविदो। तदो इदमित्थं वेत्ति णेहासग्गहो कायव्वो, अइंदियत्थविसए छदुमत्थवियप्पिदजुत्तीणं णिण्णयहेउत्ताणुववत्तीदो। तम्हा उवएसं लद्धूण विसेसणिण्णयो एत्थ कायव्वो'।

अर्थात् हमारा किया हुआ अर्थ यद्यपि पूर्वाचार्य-सम्प्रदायके विरुद्ध पडता है, तो भी तंत्र-युक्तिके बलसे हमने उसका प्ररूपण किया। अत: 'यह इसीप्रकार है' ऐसा दुराग्रह नहीं करना चाहिये, क्योंकि, अतीन्द्रिय पदार्थोंके विषयमें अल्पज्ञों द्वारा विकल्पित युक्तियोंके एक निश्चयरूप निर्णयके लिये हेतु नहीं पाया जाता। अतः उपदेशको प्राप्त कर विशेष निर्णय करनेका प्रयत्न करना चाहिये। यहां ग्रंथकारकी कैसी निष्पक्ष, निर्मल, शोधक बुद्धि और जिज्ञासा प्रकट हुई है? (पृ ३४ से ३८)

(३) एक मुहूर्तमें कितने उच्छ्वास होते हैं, यह भी एक मतभेदका विषय हुआ है। एक मत है कि एक मुहूर्तमें केवल ७२० प्राण अर्थात् श्वासोच्छ्वास होते हैं। किन्तु धवलाकार कहते हैं कि यह मत न तो एक स्वस्थ पुरुषके श्वासोच्छ्वासोंकी गणना करनेसे सिद्ध होता है,

और न केवली द्वारा भाषित प्रमाणभूत अन्य सूत्रसे इसका सामञ्जस्य बैठता है। उन्होंने एक प्राचीन गाथा उद्धृत करके बतलाया है कि एक मुहूर्तके उच्छ्वासोंका ठीक प्रमाण ३७७३ है, और इसी प्रमाण द्वारा सूत्रोक्त एक दिवसमें १,१३,१९० प्राणोंका प्रमाण सिद्ध होता है। पूर्वोक्त मतसे तो एक दिनमें केवल २१,६०० प्राण होंगे, जो किसी प्रकार भी सिद्ध नहीं। (पृ ६६ ६७)

(४) उपशामक जीवोंकी सख्याके विषयमें उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति, ऐसी दो भिन्न मान्यताएं दी हैं। प्रथम मतानुसार उक्त जीवोंकी सख्या ३०४, तथा द्वितीय मतानुसार उनसे ५ कम अर्थात् २९९ है। इस मतभेदकी प्ररूपक दो गाथाएं भी उद्धृत की गई हैं। उनमेंसे एकमें एक तीसरा मत और स्फुटित होता है, जिसके अनुसार उपशामकोंकी सख्या पूरे ३०० है। इन मत-भेदोपर धवलाकारने कोई ऊहापोह नहीं किया, उन्होंने केवलमात्र उनका उल्लेख ही किया है।

(५) इन्हीं उत्तर और दक्षिण प्रतिपत्तियोका मतभेद प्रमत्तसयत राशिके प्रमाण-प्ररूपणमें भी पाया जाता है। उत्तरप्रतिपत्तिके अनुसार प्रमत्तोका प्रमाण ४,६६,६६,६६४ है, किन्तु दक्षिणप्रतिपत्त्यनुसार यह प्रमाण ५,९३,९८,२०६ आता है। इन मतभेदोंके बीच निर्णय करनेका भी धवलाकारने यहा कोई प्रयत्न नहीं किया। किन्तु दक्षिणप्रतिपत्तिके प्रमाणमे जो कुछ आचार्योंने यह शका उठाई है कि सब तीर्थंकरोंमें सबसे बडा शिष्यपरिवार पद्मप्रभस्वामीका ही था, किन्तु वह परिवार भी मात्र ३,३०,००० ही था। तब फिर जो सर्व सयतोकी पूरी संख्या ८९९९९९९७ एक प्राचीन गाथामे बतलाई है, वह कैसे सिद्ध हो सकती है? इसका परिहार धवलाकारने यह किया है कि इस हुंडावसर्पिणी कालवर्ती तीर्थंकरोके साथ भले ही सयतोंका उक्त प्रमाण पूर्ण न होता हो, किन्तु अन्य उत्सर्पिणी-अवसर्पिणियोमे तो तीर्थंकरोका शिष्य-परिवार बडा पाया जाता है। दूसरे, भरत और ऐरावत क्षेत्रोंकी अपेक्षा मनुष्योंका प्रमाण विदेह क्षेत्रमे सख्यातगुणा पाया जाता है, अतः वहा उक्त प्रमाण पूरा हो सकता है। इसलिये उक्त प्रमाणमे कोई दूषण नहीं है। (पृ. ९८-९९)

(६) पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोका अवहारकाल देवोके अवहारकालके आश्रयसे बतलाया गया है। किन्तु धवलाकारका मत है कि कितने ही आचार्योंका उक्त व्याख्यान घटित नहीं होता है, क्योकि, वानव्यन्तर देवोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके अगुलोंका वर्गमात्र बतलाया गया है। यहां कोई यह शका कर सकता है कि पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि संबधी अवहारकाल ही गलत है और वानव्यन्तर देवोका अवहारकाल ठीक है, यह कैसे जाना जाता है? यहा धवलाकार कहते हैं कि हमारा कोई एकान्त आग्रह नहीं है, किन्तु जब दो बातोंमे विरोध है तो उनमेसे कोई एक तो असत्य होना ही चाहिये। किन्तु इतना समाधानपूर्वक कह चुकने पर धवलाकारको अपनी निर्णायक बुद्धिकी प्रेरणा हुई और वे कह उठे—'अहवा दोण्णि वि वक्खाणाणि असच्चाणि, एसा अम्हाणं पइज्जा।' अर्थात् उक्त दोनो ही व्याख्यान असत्य हैं, यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं। इसके आगे धवलाकारने खुद्दाबंध सूत्रके आधारसे उक्त दोनो अवहारकालोको असिद्ध करके उनमें यथोचित प्रमाण-प्रवेश करनेका उपदेश दिया है। (पृ २३१-२३२)

(७) सासादनसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण एक प्राचीन गाथामें ५२ करोड़ और दूसरी गाथामें ५० करोड़ पाया जाता है। धवलाकारने प्रथम मत ही ग्रहण करनेका आदेश किया है, क्योंकि, वह प्रमाण आचार्य-परपरागत है। (पृ २५२)

(८) सूत्र ४५ में मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण बतलाया है 'कोडाकोड़ाकोड़ीसे ऊपर और कोडाकोड़ाकोडाकोडीसे नीचे' अर्थात् छठवे वर्गके ऊपर और सातवें वर्गके नीचे। किन्तु एक दूसरा मत है कि मनुष्य-पर्याप्तराशि बादाल वर्गके (४२९४९६७२९६) अर्थात् द्विरूप वर्गधाराके पाचवें वर्गस्थानके घनप्रमाण है। धवलाकारने इस दूसरे मतका परिहार किया है और उसके दो कारण दिये है। एक तो बादालका घन २९ अंक प्रमाण होकर भी कोड़ाकोड़ा-कोडाकोड़ीके ऊपर निकल जाता है, जिससे सूत्रोक्त अंक-सीमाओंका सर्वथा उल्लघन हो जाता है। दूसरे यदि ढाई द्वीपके उस भागका क्षेत्रफल निकाला जाय जहा मनुष्य विशेषतासे पाये जाते हैं, तो उसका क्षेत्रफल केवल २५ अंक प्रमाण प्रतरागुलोंमें आता है, जिससे उस २९ अक प्रमाण मनुष्यराशिका वहा निवास असंभव सिद्ध होता है। यही नहीं, सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण मनुष्य पर्याप्तराशिसे सख्यातगुणा कहा गया है जबकि सर्वार्थसिद्धि विमानका प्रमाण केवल जम्बूद्वीपके बराबर है। अतएव उक्त प्रमाणसे इन देवोंकी अवगाहना भी उनकी निश्चित निवास-भूमिमें असंभव हो जायगी। अतः उक्त राशिका प्रमाण सूत्रोक्त अर्थात् कोडाकोड़ाकोड़ा-कोडीसे नीचे ही मानना उचित है। (पृ. २५३-२५८)

(९) आहारमिश्रकाययोगियोंका प्रमाण आचार्य-परम्परागत उपदेशसे २७ माना गया है, किन्तु सूत्र नं. १२० में उनका प्रमाण 'संख्यात' शब्दके द्वारा सूचित किया गया है। इसपरसे धवलाकारका मत है कि उक्त राशिका प्रमाण निश्चित २७ नहीं मानना चाहिये, किन्तु मध्यम संख्यातकी अन्य कोई सख्या होना चाहिये, जिसे जिनेन्द्र भगवान् ही जानते हैं। यद्यपि २७ भी मध्यम सख्यातका ही एक भेद है और इसलिये उसके भी उक्त प्रमाणप्ररूपणमें ग्रहण करनेकी सभावना हो सकती है, किन्तु इसके विरुद्ध धवलाकारने दो हेतु दिये हैं। एक तो सूत्र में केवल 'सख्यात' शब्द द्वारा ही वह प्रमाण प्रकट किया गया है, किसी निश्चित संख्या द्वारा नहीं। दूसरे मिश्रकाययोगियोंसे आहारकाययोगी सख्यातगुणे कहे गये है। दोनों विकल्पोंमें यहां सामंजस्य बन नहीं सकता, क्योंकि, सर्व अपर्याप्तकालसे जघन्य पर्याप्तकाल भी संख्यात-गुणा माना गया है। (पृ ४०२)

६ गणितकी विशेषता

धवलाकारने अपने इस ग्रंथभागके आदिमें ही मगलाचरण गाथामे कहा है कि—'णमिऊण जिणं भणिमो दव्वणिओगं गणियसार' अर्थात् जिनेन्द्रदेवको नमस्कार करके हम द्रव्यप्रमाणानुयोगका कथन करते हैं, जिसका सार भाग गणितशास्त्रसे सम्बध रखता है, या जो गणित-शास्त्र-प्रधान है। यह प्रतिज्ञा इस ग्रथमे पूर्णरूपसे निवाही गई हैं। धवलाकारने इस ग्रथभागमें गणितज्ञानका खूब उप-

(अ) श्रेणीके पाठभेद भाग १ मे ६२, भाग २ मे २५ और भाग ३ में ६२, इस प्रकार कुल १४९ पाये गये है। भेद प्रायः बहुत थोडा है, और अर्थकी दृष्टिसे तो अत्यन्त अल्प। यह इस बातसे और भी स्पष्ट हो जाता है कि इन पाठभेदोंके कारण अनुवादमे किंचित भी परिवर्तन करनेकी आवश्यकता केवल भाग १ मे १९, भाग २ मे १० और भाग ३ मे ३२, इस प्रकार कुल ६१ स्थलोपर पडी है। शेष ८८ स्थलोका पाठपरिवर्तन वाछनीय होनेपर भी उससे हमारे किये हुए भाषानुवादमे कोई परिवर्तन आवश्यक प्रतीत नहीं हुआ।

(ब) श्रेणीके पाठभेद भाग १ मे ३०, भाग २ मे कोई नहीं, और भाग ३ मे ३२, इस-प्रकार कुल ६२ पाये गये, और इसमे भी किंचित् अनुवाद-परिवर्तन केवल प्रथम भागमें १७ स्थलोंपर आवश्यक समझा गया है।

(स) श्रेणीके पाठभेद भाग १ मे ६०, भाग २ मे ३० और भाग ३ मे ६७, इस-प्रकार कुल १५७ पाये गये है। इनसे अर्थमे कोई भेदकी तो संभावना ही नहीं है। इनमेंके अधिकाश पाठ तो ऐसे है जो उपलब्ध प्रतियोमे भी पाये जाते थे, किन्तु हमने प्राकृत व्याकरणके नियमोंको ध्यानमे रखकर परिवर्तित किये है। (देखिये 'पाठ संशोधनके नियम,' षट्ख. भाग १, प्रस्तावना पृ. १० १३)

(ड) श्रेणीके पाठभेद भाग १ मे ३८, भाग २ मे १५, भाग ३ मे ६७, इस प्रकार कुल १२० पाये गये। इनमेंके अधिकाश तो स्पष्टतः अशुद्ध हैं, और जहा उनके शुद्ध होनेकी सभावना हो सकती है, वहा टिप्पणी देकर स्पष्ट कर दिया गया है कि वे पाठ प्रकृतमें क्यों नहीं ग्राह्य हो सकते।

इस प्रकार कुल पाठभेद १४९+६२+१५७+१२०=४८८ आये हैं। संक्षेपमे यह परि-स्थिति इस प्रकार है—

भाग	मूल पाठमें भेद					अनुवाद परिवर्तन		
	अ	ब	स	ड	कुल	अ	ब	कुल
१	६२	३०	६०	३८	१९०	१९	१७	३६
२	२५	×	३०	१५	७०	१०	×	१०
३	६२	३२	६७	६७	२२८	३२	×	३२
कुल	१४९	६२	१५७	१२०	४८८	६१	१७	७८

मूलपाठके संशोधनमे अर्थ और शैलीकी दृष्टिसे कुछ स्थानोंपर हमें पाठ स्खलित प्रतीत हुए थे। प्रतियोंका आधार न होनेसे हमने वे पाठ कोष्टकोंके भीतर रखे हैं, जिससे पाठक सुलभतासे हमारे जोडे हुए पाठको अलग पहिचान सकें। गत द्वितीय भागमे भी इसीप्रकार पाठ कहीं कहीं जोड़ना पड़े थे। किन्तु वह आलाप प्रकरण होनेसे स्खलन शीघ्र दृष्टिमें आजाते हैं। पर इस

भागका विषय बहुत कुछ सूक्ष्म है, अतएव यहांके स्खलन बडे ही गंभीर विचारके पश्चात् ध्यानमें आसके और उनका पाठ धवलाकारकी शैलीमे ही बडे विचारके साथ रखना पडा। ऐसे पाठ प्रस्तुत भाग में १९ हैं। हमें यह प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि मूडबिद्रीके मिलानसे इन पाठोंमे के १२ पाठ जैसे हमने रखे है वैसे ही शब्दशः ताड़पत्रीय प्रतियोंमे पाये गये[1]। एक पाठमें हमारे रखे हुए 'खवगा' के स्थानपर 'बंधगा' पाठ आया है, किन्तु विचार करनेपर यह अशुद्ध प्रतीत होता है, वहां 'खवगा' ही चाहिये[2]। शेष ६ पाठ मूडबिद्रीकी प्रतिमें नहीं पाये गये। किन्तु वे पाठ अशुद्ध फिर भी नहीं हैं। यथार्थत. वहां अर्थकी दृष्टिसे वही अभिप्राय पूर्वापर प्रसंगसे लेना पड़ता है। धवलाकारकी अन्यत्र शैलीपरसे ही ये पाठ निहित किये गये हैं[3]।

१ देखो पृष्ठ २६४, २५४, ३८३, ३८४, ३९२ ४१२, ४२४, ४३५, ४४४, ४५१.
२ देखो पृष्ठ ४८६.
३ देखो पृष्ठ ६१, २४८, ३४८, ३५३, ४४०.

द्रव्यप्रमाणानुगम-विषयसूची

२

आदेशसे द्रव्यप्रमाणनिर्देश १२१-४८७

१ गतिमार्गणा १२१-३०५

(नरकगति)

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	४ योगमार्गणा	**३८६-४१३**
२४८	पांचों मनोयोगी तथा सत्य, उभय और असत्य इन तीन वचनयोगी जीवोंका प्रमाण	३८६
२४९	उक्त आठ राशियां देवोंके संख्यातवें भाग क्यों हैं? इसका समर्थन	३८६
२५०	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयततक उक्त आठों राशियोंका प्रमाण तथा उसका ओघप्ररूपणाके समान कथन करनेमें हेतु	३८७
२५१	प्रमत्तसंयतसे लेकर सयोगिकेवली तक उक्त आठों राशियोंका प्रमाण	३८७
२५२	प्रमत्तसंयतादि गुणस्थानोंमें आठ राशियोंका प्रमाण ओघसमान न कहनेका कारण	३८८
२५३	वचनयोगी और अनुभयवचनयोगी मिथ्यादृष्टिजीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३८८
२५४	सासादनादि गुणस्थानवर्ती उक्त राशियोंका प्रमाण	३९०
२५५	स्व-भेद-युक्त मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगी जीवोंके अवहारकाल और जीवराशियां	३९०
२५६	काययोगी और औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	३९५
२५७	सासादनगुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली तक काययोगी और औदारिककाययोगियोंका प्रमाण, ध्रुवराशि तथा अवहारकाल	३९५
२५८	औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण और ध्रुवराशि	३९६
२५९	औदारिककाययोगराशिके संख्यातवें भाग औदारिकमिश्रकाययोगराशिके होनेमें हेतु	३९६
२६०	औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण और अवहारकाल	३९७
२६१	औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	३९७
२६२	वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवहारकाल	३९८
२६३	वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण व अवहारकाल	३९९
२६४	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	४००
२६५	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४०१
२६६	आहारककाययोगी प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण	४०१
२६७	आहारकमिश्रकाययोगी प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण व मतान्तर परिहार	४०२
२६८	कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टिजीवोंका प्रमाण व ध्रुवराशि	४०२
२६९	कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४०३
२७०	कार्मणकाययोगी सयोगिजिनोंका प्रमाण	४०४
२७१	योगमार्गणा सम्बन्धी भागाभाग	४०४
२७२	योगमार्गणा सम्बन्धी अल्पबहुत्व	४०८
	५ वेदमार्गणा	**४१३-४२४**
२७३	स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण, देवियोंके प्रमाणकी खुद्दाबंधसे सिद्धि और स्त्रीवेदियोंका अवहारकाल	४१३
२७४	सासादन सम्यग्दृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें स्त्रीवेदियोंका	

१० अर्थसंबंधी विशेष सूचना

१. पृष्ठ ४७ की गाथा नं. २८ का प्रतियोंमें उपलब्ध पाठको रखते हुए अर्थ

दो हारोंके अन्तरसे एक हारमें भाग देने पर जो लब्ध आता है उससे भाजित पूर्व लब्धका, तथा दोनों हारोंसे अलग अलग भाजित भाज्यके भजनफलोंका अन्तर हानिवृद्धिरूप होता है। (अर्थात् उपर्युक्त दोनों प्रक्रियाओंका फल बराबर ही होता है और समानरूपसे घटता बढ़ता है।)

उदाहरण (बीजगणितसे)—

भाज्य = अ; हार (भाजक) = ब और स, पूर्वलब्ध $\frac{\text{अ}}{\text{ब}} = \text{क}$

(१) यदि स से ब छोटा है तो— $\frac{\text{अ}}{\text{ब}} - \frac{\text{अ}}{\text{स}} = \text{क} - \frac{\text{स}}{\text{स} - \text{ब}}$

(२) यदि स से ब बड़ा है तो— $\frac{\text{अ}}{\text{स}} - \frac{\text{अ}}{\text{ब}} = \text{क} \div \frac{\text{स}}{\text{ब} - \text{स}}$

(अंकगणितसे)—

भाज्य = ३६; हार (भाजक) = ६ और ९;

पूर्वलब्ध $= \frac{३६}{६} = ६$; दूसरा लब्ध $\frac{३६}{९} = ४$; हारान्तर ९ − ६ = ३.

$\frac{९}{३} = ३$; $\frac{६}{३} = २$; ६ − ४ = २.

२. पृष्ठ ५०-५१ परके पश्चिम विकल्पका स्पष्टीकरण

पृ. ५०–५१ पर मूलमें जो पश्चिमविकल्प बतलाया गया है, उसके सम्बन्धमें हमारे सन्मुख दो आपत्तियां उपस्थित हुईं, कि एक तो वह धवलाकार द्वारा स्वीकृत अंकसंदृष्टिसे घटित नहीं होता, और दूसरे प्रकृतमें उसका कोई फल नहीं दिखाई देता। इन्ही आपत्तियोंको दूर करनेके लिये मूलमें प्राप्त पाठ रखकर भी अनुवादमें हमने उस पाठका संशोधन सुझाया है। तथापि एक तरहसे बीजगणित द्वारा मूलमें दिया हुआ गणित सिद्ध भी हो सकता है। जैसे—

मानलो, जीवराशि = क; मिथ्यादृष्टिराशि = अ; सिद्धतेरसराशि = ब; अ = क − ब.

अब चूंकि क अनन्तराशि है, अतएव— क + १ = क; क − १ = क.

अब मूल पाठानुसार—

$$\frac{\text{क}^{२}}{\text{क} + \frac{\text{अ}}{\text{व}}} = \frac{\text{क}^{२}}{\text{क} + \frac{\text{क} - \text{व}}{\text{व}}} = \frac{\text{क}^{२}}{(\text{क} - १) + \frac{\text{क}}{\text{व}}} = \frac{\text{क}^{२}}{\text{क} + \frac{\text{क}}{\text{व}}}$$

$$= \text{क} - \frac{\text{क}}{\text{व} + १} = \text{क} - \frac{\text{क}}{\text{व}}$$

किन्तु यह उदाहरण बनता तभी है, जब यह मान लिया जाय कि अनन्तमें एक घटाने व एक बढानेसे अनन्त ही रहता है। अतएव यह उदाहरण अंकसंदृष्टिसे नहीं बतलाया जा सकता।

---

११ पाठसंबंधी विशेष सूचना

पृ. २८८ की पंक्ति ९ में 'एवं जोइसिय........ .....' आदिसे लगाकर पृ. २९० पंक्ति २ के 'एगपदत्तादो' तकका पाठ प्रतियोंमें व मूडबिद्रीकी प्रतिमें निम्न प्रकार है, जो धवलाकारकी अन्यत्र पाठ-व्यवस्थासे कुछ भिन्न है। हमने उसे मुद्रणमें अन्यत्रकी व्यवस्थानुसार कुछ हेरफेरसे रख दिया है और उसका कारण भी वहीं दे दिया है। किन्तु पाठकोंकी सूचनाके लिये वह पूरा पाठ प्रतियोंके अनुसार यहां दिया जाता है—

परत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमो त्ति। तदो उवरि मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सगअवहारकालस्स असखेज्जदिभागो। को पडिभागो? पलिदोवमो। अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअगुलाणि। केत्तियमेत्ताणि? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। को पडिभागो? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो। उवरि सत्थाणभंगो। एवं जोइसियवाणवेंतराण पि णेयव्वं। भवणवासियाणं सत्थाणे सव्वत्थोवा मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई। अवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? विक्खभसूई। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? विक्खंभसूचिवग्गो। अहवा घणंगुलं। सेढी असखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगविक्खभसूई। दव्वमसखेज्जगुणं। को गुणगारो? विक्खंभसूई। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अवहारकालो। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढी। सासणादीणं मूलोघभंगो। भवणवासियाण सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो। एव णेयव्व जाव पलिदोवमो त्ति। तदो उवरि भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? पलिदोवमो। अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असखेज्जाणि सूचिअगुलाणि। केत्तियमेत्ताणि? सूचिअगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। को पडिभागो? पलिदोवमो। उवरि सगसत्थाणभगो। सोहम्मादि जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति सत्थाणप्पाबहुग जाणिय णेयव्व। उवरि परत्थाणं णत्थि, तत्थ सेसगुणट्ठाणाणमभावादो। सव्वट्ठे सत्थाणं पि णत्थि एकपदत्तादो।

शुद्धिपत्र



(पुस्तक १)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६७	१६	नानाप्रकारकी उज्वल और निर्मल विनयसे	धवल, निर्मल और नानाप्रकारकी विनयसे
१८८	४	उपदेशग्रन्थम्	उपदेष्टृग्रन्थम्
२०५	२५	शंका—	×
,,	२९	इसलिये	शंका— तो फिर
२५१	१	तत्प्रतिघातः	तद्प्रतिघात·
३४५	८	-सन्तापान्यूनतया	-सन्तापान्न्यूनतया
,,	२६	संतापसे न्यून नहीं है,	सन्तापरूप है,

(पुस्तक २)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४३३	२८	आहार, भय और मैथुन	भय, मैथुन और परिग्रह
५३७	४	दव्वेण छल्लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ;	दव्व-भावेहिं छल्लेस्साओ,
,,	१५	द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं;	द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

(पुस्तक ३)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९	२	अवशेषः	अविशेषः
,,	१२	अवशेष	अविशेष
१५	२	कडय-रुजगदीव	कडय-रुजग-दीव
,,	१४	कटक, रूचकवरद्वीप	कटक (कंकण), रुचक (तावीज) व द्वीप
१५	३-४	चेत्तद्वतिरिक्त	चेत्तदृव्यतिरिक्त
,,	१२	नोआगमद्रव्यान्त	नोआगमद्रव्यानन्त
१६	१४	अप्रेदशानन्त	अप्रदेशानन्त
१८	६	तस्स	तत्थ तस्स
२६	२८	दुक्खेवा	पक्खेवा
२७	३०	असंखेभ्जा	असंखेज्जा
२८	७	रासम्हि	रासिम्हि
,,	८	अवाहिरज्जादि	अवाहिरिज्जादि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	१३	व्यख्यान	व्याख्यान
३०	२६	शतप्रयक्त्व	शतपृथक्त्व
३२	१०	कोद्दवेण	कोडवेण
,,	३०	कोंदोके समान	या कुडव (कुड़े) से
३३	२९	घणयमाणो	घणपमाणो
३४	३	छिण्णाविसिट्ठं	छिण्णावसिट्ठं
३५	३०	वेगद्	वेसद्
३८	२	णेहासंगहो	णेहासग्गहो
,,	१६	भी हो........चाहिये,	ही है, ऐसा असत् आग्रह नहीं करना चाहिये,
३९	५	साहिय	मुहिय
४५	५	असंखेल्ज	असंखेज्ज
५१	१४	क–व (मिथ्यादृष्टि)	क–अ (मिथ्यादृष्टि)
८८	६	विरदाण णु कमेण	विरदाणणुकमेण
८९	३	पमत्तसंजदा णं	पमत्तसंजदाणं
११२	६	दसगुणट्ठारासिणा	दसगुणट्ठाणरासिणा
१२६	३	ज	च
१३५	७	असंसेज्जादि	असंखेज्जादि
१५७	२७	जिनविम्ब	जिन और जिनविम्ब
१७६	१६	जणश्रेणी	जगश्रेणी
१७६	२२	$\frac{१०४८५७६}{१२३}$	$\frac{१०४८५७६}{१९३}$
१९०		सव्वहीणरूवाणि	सव्वहाणिरूवाणि
२०७	६	त्तिअवहारकाला	त्ति अवहारकाला
२१७	६	पंचिंद्रिय	पंचिंदिय
१७१	२	ताए	तीए
२२१	११	गुणियं	गुणिय
२५७	२२-२४	यहां धवलाके... स्पष्ट है	×
२६०	१०	मणुसणीणं	मणुसिणीणं
२६२	४	असंखेज्जस-	असखेज्जस्स
२६३	८	पक्खित्तपाहि	पक्खित्तपाहि
,,	,,	पादेसु	पादेसु
२६४	९	के	को
२८१	१	सासणदीणं	सासणादीणं
२८७	५	असंदसम्माइट्ठिणो	असंजदसम्माइट्ठिणो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९०	२	पदत्थादो	पदत्तादो
"	१०	पदार्थ	पदत्व
"	२४	सर्वासिद्धि	सर्वार्थसिद्धि
२९१	१४	सम्यग्दष्टियोंका	सम्यग्दष्टियोंका
२९२	५	असंखेज्जादिभाण	असंखेज्जदिभाग
२९६	२६	जार	चार
३०२	१	ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर	बह्म-बह्मोत्तर
३०६	१०	णादरेदव्वामिदि	णाढवेदव्वामिदि
"	११	णादरेदव्वं	णाढवेदव्वं
"	२६	ग्रहण	प्रारंभ
"	२८	"	"
३०७	४	सराग-	सपग-
"	६	जं तेण	जंतेण
"	१६	सरागस्वरूपसे	एकस्वरूपसे
"	१९	उस अतीत	जाते हुए
३१२	८	-वत्तादो	-वत्तीदो
३१८	९	सखेज्ज-	संखेज्ज
३३०	४	-कम्मत-	-कम्मंत-
३५९	११	पुवुत्त	पुव्वुत्त
३६६	५	वादरवप्फइ	बादरवणप्फइ
३६७	२	तेसिमपज्जत्ता।	तेसिमपज्जत्ता
३६९	६	वाउणं	बाऊणं
३८१	२	पजत्ता	पज्जत्ता
४४०	१०	आवलिपाए	आवलियाए
४४७	९	पुविल्ल	पुव्विल्ल
४८०	१०	सव्वसम्मत्तेसुप्पायण-	सव्वसम्मत्तेसु पाएण

दव्वपमाणाणुगमो

मंगलाचरणम्

पंच-परमेट्ठि-वंदणं

(धवलान्तर्गतम्)

सिद्धा दड्ढट्ठमला विसुद्ध-बुद्धी य लद्ध-सव्वत्था ।
तिहुवण-सिर-सेहरया पसियंतु भडारया सव्वे ॥ १ ॥

तिहुवण-भवणप्पसरिय-पच्चक्खवबोह-किरण-परिवेढो ।
उइओ वि अणत्थवणो अरहंत-दिवायरो जयऊ ॥ २ ॥

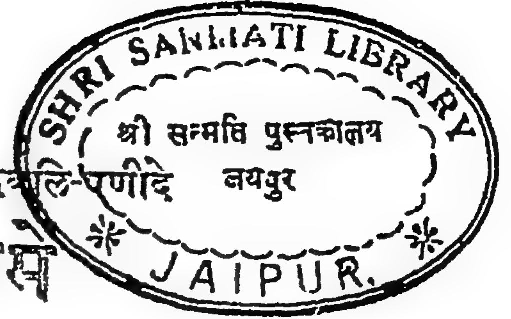
ति-रयण-खग्ग-णिहाएणुत्तारिय-मोह-सेण्ण-सिर-णिवहो ।
आइरिय-राउ पसियउ परिवालिय-भविय-जिय-लोओ ॥ ३ ॥

अण्णाणयंधयारे अणोरपारे भमंत-भवियाणं ।
उज्जोओ जेहि कओ पसियंतु सया उवज्झाया ॥ ४ ॥

संधारिय-सीलहरा उत्तारिय-चिरपमाद-दुस्सीलभरा ।
साहू जयंतु सव्वे सिव-सुह-पह-संठिया हु णिग्गलिय-भया ॥ ५ ॥

जयउ धरसेण-णाहो जेण महाकम्म-पयडि-पाहुड-सेलो ।
बुद्धिसिरेणुद्धरिओ समप्पिओ पुप्फयंतस्स ॥ ६ ॥





सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

जीवट्ठाणं

तस्स

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइया टीका

धवला

केवलणाणुज्जोइयछद्दव्वमणिज्जियं पवाईहि ।
णमिऊण जिणं भणिमो दव्वणिओगं गणियसारं ॥१॥

संपहि चोद्दसण्हं जीवसमासाणमत्थित्तमवगदाणं सिस्साणं तेसिं चेव परिमाण-पडिबोहणट्ठं भूदबलियाइरियो सुत्तमाह—

दव्वपमाणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य ॥१॥

जिन्होंने केवलज्ञानके द्वारा छह द्रव्योंको प्रकाशित किया है और जो प्रवादियोंके द्वारा नहीं जीते जा सके ऐसे जिनेन्द्रदेवको मैं (वीरसेन आचार्य) नमस्कार करके गणितकी जिसमें मुख्यता है ऐसे द्रव्यानुयोगका प्रतिपादन करता हूं ॥ १ ॥

विशेषार्थ—द्रव्यानुयोगका दूसरा नाम द्रव्यप्रमाणानुगम या संख्याप्ररूपणा है। यद्यपि द्रव्य छह हैं फिर भी इस अधिकारमें गुणस्थानों और मार्गणास्थानोंका आश्रय लेकर केवल जीवद्रव्यकी संख्याका ही प्ररूपण किया गया है।

जिन्होंने चौदहों गुणस्थानोंके अस्तित्वको जान लिया है ऐसे शिष्योंको अब उन्हीं चौदहों गुणस्थानोंके अर्थात् चौदहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके परिमाण (संख्या) के ज्ञान करानेके लिये भूतबलि आचार्य आगेका सूत्र कहते हैं—

द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, ओघनिर्देश और आदेश-निर्देश ॥ १ ॥

द्रवति द्रोष्यति अदुद्रवत्पर्यायानिति द्रव्यम् । अथवा द्रूयते द्रोष्यते अद्रावि पर्याय इति द्रव्यम् । तं च दव्वं दुविहं, जीवदव्वं अजीवदव्वं चेदि । तत्थ जीवदव्वस्स लक्खणं वुच्चदे । तं जहा, ववगदपंचवण्णो ववगदपंचरसो ववगददुगंधो ववगदअट्ठफासो सुहुमो अमुत्ती अगुरुगलहुओ असंखेज्जपदेसिओ अणिदिट्ठसंठाणो त्ति एदं जीवस्स साहारणलक्खणं । उड्ढगई भोत्ता सपरप्पगासओ त्ति जीवदव्वस्स असाहारणलक्खणं । उत्तं च—

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं ।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं[1] ॥ १ ॥

जं तं अजीवदव्वं तं दुविहं, रूवि-अजीवदव्वं अरूवि-अजीवदव्वं चेदि । तत्थ जं तं रूवि-अजीवदव्वं तस्स लक्खणं वुच्चदे– रूपरसगन्धस्पर्शवन्तः पुद्गलाः[2] रूपि अजीवद्रव्यं

जो पर्यायोंको प्राप्त होता है, प्राप्त होगा और प्राप्त हुआ है उसे द्रव्य कहते हैं। अथवा, जिसके द्वारा पर्याय प्राप्त की जाती है, प्राप्त की जायगी और प्राप्त की गई थी उसे द्रव्य कहते हैं। वह द्रव्य दो प्रकारका है, जीवद्रव्य और अजीवद्रव्य। उनमेंसे जीवद्रव्यका लक्षण कहते हैं। वह इसप्रकार है, जो पांच प्रकारके वर्णसे रहित है, पांच प्रकारके रससे रहित है, दो प्रकारके गन्धसे रहित है, आठ प्रकारके स्पर्शसे रहित है, सूक्ष्म है, अमूर्ति है, अगुरूलघु है, असंख्यातप्रदेशी है और जिसका कोई संस्थान अर्थात् आकार निर्दिष्ट नहीं है वह जीव है। यह जीवका साधारण लक्षण है। अर्थात् यह लक्षण जीवको छोड़कर दूसरे धर्मादि अमूर्त द्रव्योंमें भी पाया जाता है, इसलिये इसे जीवका साधारण लक्षण कहा है। परंतु ऊर्ध्वगतिस्वभावत्व, भोक्तृत्व और स्वपरप्रकाशकत्व यह जीवका असाधारण लक्षण है। अर्थात् यह लक्षण जीवद्रव्यको छोड़कर दूसरे किसी भी द्रव्यमें नहीं पाया जाता है, इसलिये इसे जीवद्रव्यका असाधारण लक्षण कहा है। कहा भी है—

जो रसरहित है, रूपरहित है, गन्धरहित है, अव्यक्त अर्थात् स्पर्शगुणकी व्यक्तिसे रहित है, चेतनागुणयुक्त है, शब्दपर्यायसे रहित है, जिसका लिंगके द्वारा ग्रहण नहीं होता है और जिसका संस्थान अनिर्दिष्ट है अर्थात् सब संस्थानोंसे रहित जिसका स्वभाव है उसे जीवद्रव्य जानो ॥ १ ॥

अजीवद्रव्य दो प्रकारका है, रूपी अजीवद्रव्य और अरूपी अजीवद्रव्य। उनमें जो रूपी अजीवद्रव्य है उसका लक्षण कहते हैं। रूप, रस, गन्ध और स्पर्शसे युक्त पुद्गल रूपी

१ प्रवच. २, ८०, पञ्चा. १३४.

२ 'स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः' तत्त्वार्थसू. ५, २३.

सद्दादि। तं च रूवि-अजीवदव्वं छव्विहं, पुढवि-जल-छाया चउरिंदियविसय-कम्म-क्खंध-परमाणू चेदि। वुत्तं च—

पुढवी जलं च छाया चउरिंदियविसय-कम्म-परमाणू।
छव्विहभेयं भणिय पोग्गलदव्वं जिणवरेहिं ॥ २ ॥

जं तं अरूवि-अजीवदव्वं तं चउव्विहं, धम्मदव्वं अधम्मदव्वं आगासदव्वं कालदव्वं चेदि। तत्थ धम्मदव्वस्स लक्खणं वुच्चदे-ववगदपंचवण्णं ववगदपंचरसं ववगद-दुगंधं ववगदअट्ठपासं जीव-पोग्गलाणं गमणागमणकारणं असंखेज्जपदेसियं लोगपमाणं धम्मदव्वं। एवं चेव अधम्मदव्वं पि, णवरि जीव-पोग्गलाणं एदं ट्ठिदिहेदू। एव-मागासदव्वं पि, णवरि आगासदव्वमणंतपदेसियं सव्वगयं ओगाहणलक्खणं। एवं चेव कालदव्वं पि, णवरि स-परपरिणामहेऊ अपदेसियं लोगपदेसपरिमाणं[2]। एदाणि छ

अजीवद्रव्य है, जैसे शब्दादि। वह रूपी अजीवद्रव्य छह प्रकारका है, पृथिवी, जल, छाया, नेत्रको छोड़कर शेष चार इन्द्रियोंके विषय, कर्मस्कन्ध और परमाणु। कहा भी है—

जिनेन्द्रदेवने पृथिवी, जल, छाया, नेत्र इन्द्रियके अतिरिक्त शेष चार इन्द्रियोंके विषय, कर्म और परमाणु, इसप्रकार पुद्गलद्रव्य छह प्रकारका कहा है ॥ २ ॥

विशेषार्थ—ऊपर जो पुद्गलके छह भेद बतलाये हैं वे उपलक्षणमात्र हैं, इसलिये उपलक्षणसे उस उस जातिके पुद्गलोंका उस उस भेदमें ग्रहण हो जाता है। ग्रन्थान्तरोंमें जो पुद्गलके स्थूल-स्थूल, स्थूल, स्थूल-सूक्ष्म, सूक्ष्म-स्थूल, सूक्ष्म और सूक्ष्म-सूक्ष्म, ये छह भेद गिनाये हैं और उनका दृष्टान्तोंद्वारा स्पष्टीकरण करनेके लिये उपर्युक्त पृथिवी आदि छह प्रकार बतलाये हैं, इससे भी यही सिद्ध होता है कि ये पृथिवी आदि नाम उपलक्षणरूपसे लिये गये हैं।

अरूपी अजीवद्रव्य चार प्रकारका है, धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य और कालद्रव्य। उनमेंसे धर्मद्रव्यका लक्षण कहते हैं। जो पांच प्रकारके वर्णसे रहित है, पांच प्रकारके रससे रहित है, दो प्रकारके गन्धसे रहित है, आठ प्रकारके स्पर्शसे रहित है, जीव और पुद्गलोंके गमन और आगमनमें साधारण कारण है, असंख्यातप्रदेशी है और लोकाकाशके बराबर है वह धर्मद्रव्य है। इसीप्रकार अधर्मद्रव्य भी है, परंतु इतनी विशेषता है कि यह जीव और पुद्गलोंकी स्थितिमें साधारण कारण है। इसीप्रकार आकाशद्रव्य भी है, पर इतनी विशेषता है कि आकाशद्रव्य अनन्तप्रदेशी, सर्वगत और अवगाहनलक्षणवाला है। इसीप्रकार

१ गो. जी. ६०१. पुढवी जलं च छाया चउरिंदियविसयकम्मपाओग्गा। कम्मातीदा एवं छब्भेया पोग्गला होंति ॥ पञ्चा. ८३.

२ लोगागासपदेसे एक्केक्के जे ट्ठिया हु एक्केक्का। रयणाणं रासी इव ते कालाणू असंखदव्वाणि ॥ द्रव्य स. २२; गो. जी. ५८९.

दव्वाणि । एदेसु छसु दव्वेसु केण दव्वेण पगदं ? जस्स संताणिओगद्दारे चोद्दसमग्गणट्ठाणेहि चोद्दसजीवसमासाणमत्थित्तं परूविदं जीवदव्वस्स तेण पगदं । तं कधं णव्वदि त्ति भणिदे 'मिच्छादिट्ठी केवडिया' इदि सेसदव्वाणं परिमाणमुज्झिदूण जीवदव्वपरिमाणपरूवयसुत्तादो जाणिज्जदि जीवदव्वेणेक्केण चेव पगदं, ण अण्णदव्वेहिं ति । प्रमीयन्ते अनेन अर्था इति प्रमाणम् । दव्वस्स पमाणं दव्वपमाणं । एवं तप्पुरिससमासे कीरमाणे दव्वादो पमाणस्स भेदो ढुक्कदि, जहा देवदत्तस्स कंबलो त्ति । एत्थ देवदत्तादो कंबलस्सेव भेदो ण, अभेदे वि उप्पलगंधो इच्चेवमादिसु तप्पुरिससमासदंसणादो । अधवा दव्वादो पमाणं केण वि सरूवेण भिण्णं चेव, अण्णहा विसेसिय विसेसणभावाणुववत्तीदो ।

कालद्रव्य भी है, पर इतनी विशेषता है कि कालद्रव्य अपने और दूसरे द्रव्योंके परिणमनमें साधारण कारण है, अप्रदेशी अर्थात् एकप्रदेशी है और लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतने ही कालाणु हैं । इसप्रकार ये छह द्रव्य हैं ।

शंका—इन छह द्रव्योंमेंसे यहां प्रकृतमें किस द्रव्यसे प्रयोजन है, अर्थात् किस द्रव्यके द्वारा प्रकृत विषय कहा जायगा ?

समाधान—सत्प्ररूपणानुयोगद्वारमें चौदहों मार्गणास्थानोंके द्वारा जिस जीवद्रव्यके चौदहों जीवसमासोंके अस्तित्वका निरूपण कर आये हैं, प्रकृतमें उसी जीवद्रव्यसे प्रयोजन है ।

शंका—यह कैसे जाना ?

समाधान—'मिथ्यादृष्टि जीव कितने हैं' इसप्रकार शेष पांच द्रव्योंके परिमाणको छोड़कर एक जीवद्रव्यके परिमाणके निरूपण करनेवाले सूत्रसे यह जाना जाता है कि प्रकृतमें एक जीवद्रव्यसे ही प्रयोजन है, अन्य द्रव्योंसे नहीं ।

जिसके द्वारा पदार्थ मापे जाते हैं या जाने जाते हैं उसे प्रमाण कहते हैं और द्रव्यके प्रमाणको द्रव्यप्रमाण कहते हैं ।

शंका—इसप्रकार 'द्रव्य प्रमाण' इन दोनों पदोंमें तत्पुरुष समास करने पर द्रव्यसे प्रमाणका भेद प्राप्त होता है, जैसे 'देवदत्तका कम्बल' ?

समाधान—देवदत्तसे कम्बलका जिसप्रकार भेद है, प्रकृतमें उसप्रकारका भेद नहीं है, क्योंकि, अभेदके रहने पर भी 'उत्पलगन्ध' इत्यादि पदोंमें तत्पुरुष समास देखा जाता है । इसका यह तात्पर्य है कि 'उत्पलगन्ध' इत्यादि पदोंमें 'उत्पलस्य गन्धः उत्पलगन्धः' इत्यादि रूपसे तत्पुरुष समासके रहने पर भी जिसप्रकार उत्पलसे गन्धका भेद नहीं होता है, उसी प्रकार यहां पर भी द्रव्यसे प्रमाणका सर्वथा भेद नहीं समझना चाहिये ।

अथवा, द्रव्यसे प्रमाण किसी अपेक्षासे भिन्न ही है । यदि द्रव्यसे प्रमाणका कथंचित् भेद न माना जाय तो द्रव्य और प्रमाणमें विशेष्य-विशेषणभाव नहीं बन सकता है । अथवा,

त्तीदो । अथवा कम्मधारयसमासो कादव्वो दव्वमेव पमाणं दव्वपमाणमिदि । एत्थ वि ण दव्वपमाणाणमेयंतेण एगत्तं, एकत्थ समासाभावादो । अथवा दुंदसमासो कादव्वो । तं जधा, दव्वं च पमाणं च दव्वपमाणमिदि । दुंदसमासो अवयवपहाणो त्ति दव्व-पमाणाणं पुध पुध परूवणं पावेदि । ण च सुत्ते पुध पुध दव्व-पमाणाणं परूवणा कदा । जदि वि समुदयपहाणो दुंदसमासो आसइज्जदि तो वि अवयववदिरित्तसमुदायाभावादो अवयवाणं चेव परूवणा पावेदि । ण च सुत्ते अवयवाण समूहस्स वा परूवणा कदा । तदो ण दुंदसमासो कीरदि त्ति ? ण एस दोसो, दव्वस्स पमाणे परूविदे दव्वं पि परूविदमेव । कुदो ? दव्ववदिरित्तपमाणाभावादो । तिकालगोयराणंतपज्जयाणमण्णोण्णा-जहवुत्ती दव्वं । वुत्तं च—

नयोपनयैकान्तानां त्रिकालानां समुच्चयः ।
अविभ्राड्भावसम्बन्धो द्रव्यमेकमनेकधा[1] ॥ ३ ॥

संखाणं दव्वस्सेको पज्जाओ, तदो ण दोण्हमेगत्तमिदि । वुत्तं च—

द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें 'दव्वमेव पमाणं दव्वपमाणं' अर्थात् द्रव्य ही प्रमाण द्रव्यप्रमाण है, इसप्रकार कर्मधारय समास करना चाहिए । यहां पर भी द्रव्य और प्रमाण इन दोनोंमें एकान्तसे एकत्व अर्थात् अभेद नहीं है, क्योंकि, सर्वथा एकार्थमें अर्थात् अभेदमें समास ही नहीं हो सकता है । अथवा, द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें द्वन्द्वसमास करना चाहिये । वह इसप्रकार है, द्रव्य और प्रमाण द्रव्यप्रमाण ।

शंका—द्वन्द्वसमास अवयवप्रधान होता है, इसलिये द्रव्य और प्रमाणका पृथक् पृथक् प्ररूपण प्राप्त हो जाता है । परंतु सूत्रमें द्रव्य और प्रमाणका पृथक् पृथक् कथन नहीं किया है । यद्यपि समुदायप्रधान भी द्वन्द्वसमास हो सकता है, तो भी अवयवोंको छोड़कर समुदाय पाया नहीं जाता है, इसलिये समुदायप्रधान द्वन्द्वसमासके करने पर भी अवयवोंकी ही प्ररूपणा प्राप्त होती है । परंतु सूत्रमें अवयवोंकी अथवा समूहकी प्ररूपणा नहीं की गई है । इसलिये द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें द्वन्द्वसमास नहीं किया जा सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यके प्रमाणके प्ररूपण कर देने पर द्रव्यका भी प्ररूपण हो ही जाता है, क्योंकि, द्रव्यको छोड़कर उसका प्रमाण नहीं पाया जाता है ।

त्रिकालगोचर अनन्त पर्यायोंकी परस्पर अपृथग्वृत्ति द्रव्य है । कहा भी है—

जो नैगमादि नय और उनकी शाखा उपशाखारूप उपनयोंके विषयभूत त्रिकालवर्ती पर्यायोंका अभिन्न संबन्धरूप समुदाय है उसे द्रव्य कहते हैं । वह द्रव्य कथंचित् एकरूप और कथंचित् अनेकरूप है ॥ ३ ॥

द्रव्यकी एक पर्याय संख्यान है, इसलिये द्रव्य और प्रमाणमें एकत्व अर्थात् सर्वथा अभेद नहीं है । कहा भी है—

१ आ. मी. १०७.

एयदवियम्मि जे अत्थपज्जया वयणपज्जया चावि ।
तीदाणागदभूदा तावदियं तं हवदि दव्वं ॥ ४ ॥

एवं ताणं भेदो भवदु णाम, किंतु दव्वगुणपरूवणादारेणेव दव्वस्स परूवणा भवदि, अण्णहा दव्वपरूवणोवायाभावादो । उत्तं च—

नानात्मतामप्रजहत्तदेकमेकात्मतामप्रजहच्च नाना ।
अंगांगिभावात्तव वस्तु यत्तत् क्रमेण वाग्वाच्यमनन्तरूपम् ॥ ५ ॥

तदो दव्वगुणे पमाणे परूविदे दव्वं परूविदं चेव । एवं वुत्ते दव्वपमाणाणं परूवणा अत्थि त्ति दुंदसमासो वि ण विरुज्झदे । सेससमासाणमेत्थ संभवो णत्थि । ते सव्वे वि समासा केत्तिया ? छच्चेव भवंति । उत्तं च—

बहुव्रीह्यव्ययीभावो द्वन्द्वस्तत्पुरुषो द्विगुः ।
कर्मधारय इत्येते समासाः षट् प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥

किमिदि इदरेसिं संभवो णत्थि ? एत्थ तदत्थाभावादो । को तदत्थो ?

एक द्रव्यमें अतीत, अनागत और 'अपि' शब्दसे वर्तमान पर्यायरूप जितने अर्थपर्याय और व्यंजनपर्याय हैं तत्प्रमाण वह द्रव्य होता है ॥ ४ ॥

यद्यपि इसप्रकार द्रव्य और प्रमाणमें भेद रहा आवे, फिर भी द्रव्यके गुणोंकी प्ररूपणाके द्वारा ही द्रव्यकी प्ररूपणा हो सकती है, क्योंकि, द्रव्यके गुणोंकी प्ररूपणाके विना द्रव्यप्ररूपणाका कोई उपाय नहीं है । कहा भी है—

अपने गुणों और पर्यायोंकी अपेक्षा नानास्वरूपताको न छोड़ता हुआ वह द्रव्य एक है और अन्वयरूपसे एकपनेको नहीं छोड़ता हुआ वह अपने गुणों और पर्यायोंकी अपेक्षा नाना है । इसप्रकार अनन्तरूप जो वस्तु है वही, हे जिन, आपके मतमें क्रमशः अंगांगीभावसे वचनोंद्वारा कही जाती है ॥ ५ ॥

अतः द्रव्यके गुणरूप प्रमाणके प्ररूपण कर देने पर द्रव्यका कथन हो ही जाता है । इसप्रकार सूत्रमें द्रव्य और प्रमाणकी प्ररूपणा है ही, अतएव द्वन्द्वसमास भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है । इसप्रकार तत्पुरुष, कर्मधारय और द्वन्द्व समासको छोड़कर शेष समासोंकी यहां संभावना नहीं है ।

शंका—वे संपूर्ण समास कितने हैं ?

समाधान—वे समास छह ही हैं । कहा भी है—

बहुव्रीहि, अव्ययीभाव, द्वन्द्व, तत्पुरुष, द्विगु और कर्मधारय, इसप्रकार ये छह समास कहे गये हैं ॥ ६ ॥

शंका—यहां द्रव्यप्रमाण इस पदमें उपर्युक्त तीन समासोंको छोड़कर दूसरे समासोंकी संभावना क्यों नहीं है ?

---

१ गो. जी. ५८२. स. त. १. ३२. २ युक्त्यनु. ५०

बहिरर्थो बहुव्रीहिः परं तत्पुरुषस्य च ।
पूर्वमव्ययीभावस्य द्वन्द्वस्य तु पदे पदे ॥ ७ ॥

संख्यापूर्वकस्तत्पुरुषो द्विगुः समासः, यथा पञ्चनदमित्यादि । एकाधिकरणः तत्पुरुषः कर्मधारय इति । एत्थ चोदगो भणदि– संखा एक्का चेव, एगवदिरित्तदुवादीणमभावादो । सा च एक्कसंखा सव्वपदत्थाणमत्थि त्ति जाणिज्जदि, अण्णहा तेसिमत्थित्ताणुववत्तीदो । तदो किं तीए संखापरूवणाए इदि । एत्थ परिहारो वुच्चदे– सयलपयत्थाणं जदि एक्का चेव संखा णियमेण भवदि तो सव्वपदत्थाणं एक्कादो अव्वदिरित्ताणं एगत्तं पसज्जेज्ज । तहा च एगट्ठदंसणे सयलट्ठदंसणं, एगट्ठविणासे सयलट्ठविणासो, एयट्ठुप्पत्तीए सयलट्ठुप्पत्ती जाएज्ज । ण च एवं, तहा अदंसणादो । तम्हा पदत्थभेदो इच्छिदव्वो । संते तब्भेदे तत्थ ट्ठियसंखाए भेदो भवदि चेव, भिण्णट्ठट्ठियसंखाणाणमेगत्तविरोधादो । होदु एक्कसंखा चेव बहुवा, ण तदो अण्णा संखा चे ण,

समाधान—क्योंकि यहां पर उनका अर्थ घटित नहीं होता है, इसलिये अन्य समासोंका ग्रहण नहीं किया।

शंका—उन छहों समासोंका क्या अर्थ है ?

समाधान—अन्य अर्थप्रधान बहुव्रीहि समास है। उत्तर पदार्थप्रधान तत्पुरुष समास है। अव्ययीभाव समासमें पूर्व पदार्थप्रधान है। द्वन्द्व समासकी प्रत्येक पदमें प्रधानता रहती है ॥ ७ ॥

संख्यापूर्वक तत्पुरुषको द्विगु समास कहते हैं, जैसे पंचनद इत्यादि। जहां पर दो पदार्थोंका एक आधार दिखाया जाता है ऐसे तत्पुरुषको कर्मधारय समास कहते हैं।

शंका—यहां पर शंकाकार कहता है कि संख्या एकरूप ही है, क्योंकि, एकको छोड़कर दो आदिक संख्याएं नहीं पाई जाती हैं। और वह एकरूप संख्या संपूर्ण पदार्थोंमें रहती है ऐसा जाना जाता है। यदि ऐसा न माना जाय तो उन संपूर्ण पदार्थोंका अस्तित्व ही नहीं बन सकता है, इसलिये यहां पर उस संख्याकी प्ररूपणासे क्या प्रयोजन है ?

समाधान—आगे उपर्युक्त शंकाका परिहार करते हैं। संपूर्ण पदार्थोंके नियमसे एक ही संख्या होती है, यदि ऐसा मान लिया जाय तो वे संपूर्ण पदार्थ एकरूप संख्यासे अभिन्न हो जाते हैं, इसलिये उन सबको एकत्वका प्रसंग आ जाता है। और ऐसा मान लेने पर एक पदार्थका ज्ञान होने पर संपूर्ण पदार्थोंका ज्ञान, एक पदार्थके विनाश होने पर संपूर्ण पदार्थोंका विनाश और एक पदार्थकी उत्पत्ति होने पर संपूर्ण पदार्थोंकी उत्पत्ति होने लगेगी। परंतु ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा देखा नहीं जाता है, इसलिये पदार्थोंमें भेद मान लेना चाहिये। इसप्रकार पदार्थोंमें भेदके सिद्ध हो जाने पर उनमें रहनेवाली संख्यामें भेद सिद्ध हो ही जाता है, क्योंकि, अनेक पदार्थोंमें रहनेवाली संख्याओंमें एकत्व अर्थात् अभेद माननेमें विरोध आता है।

शंका—एक यह संख्या ही अनेक रूप हो जाओ, परंतु उससे भिन्न संख्या नहीं

एक्किस्से बहुत्त-विरोधादो । एगत्तं पडि समाणत्तणेण एगत्तमावण्णाए दव्व-खेत्त-काल-भावभेदेण णाणत्तमुवगदाए एक्कसंखाए ण बहुत्तं विरुज्झदे चेज्जदि एवं तो एगसंखादो कथंचि भेदा दुवादिसंखाए भेदो किमिदि ण इच्छिज्जदे । कहं भेदो चे, दव्वादिभेदं पडुच्च; तदो चेव दुब्भावो समाणत्तदंसणादो । दोण्हमेगत्तं दव्वट्ठियणयविवक्खादो । पज्जवट्ठियणये विवक्खिदे एक्कसंखादो सेसेक्कसंखा वदिरित्तेत्ति णाणत्तं । णेगमणए विवक्खिदे दुवादिभावो । एत्थ पुण णेगमणयविवक्खादो संखाभेदो गहेदव्वो । यथावस्त्ववबोधः अनुगमः, केवलि-श्रुतकेवलिभिरनुगतानुरूपेणावगमो वा । द्रव्यप्रमाणस्य द्रव्य-प्रमाणयोर्वा अनुगमः द्रव्यप्रमाणानुगमः, तेन द्रव्यप्रमाणानुगमेनेति निमित्ते तृतीया । दुविहो णिद्देसो, सोदाराणं जहा णिच्छयो होदि तहा देसो णिद्देसो । कुतीर्थपाखण्डिनः

पाई जाती है ?

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि, एक संख्याको बहुतरूप माननेमें विरोध आता है ।

शंका—एक यह संख्या एकत्वके प्रति समान होनेसे एकरूप है, और द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भावके भेदसे नानारूप है, इसलिये एक संख्यामें बहुत्व विरोधको प्राप्त नहीं होता है ?

प्रतिशंका—यदि ऐसा है तो एक संख्यासे कथंचित् भिन्न होनेके कारण दो आदि संख्याओंका उससे भेद क्यों नहीं मान लेते हो ?

शंका—एक संख्यासे दो आदि संख्याओंका भेद कैसे है ?

समाधान—द्रव्य, क्षेत्र आदि भेदोंकी अपेक्षासे दो आदि संख्याओंका भेद है और इसीलिये संख्याओंमें दो आदि रूपता बन जाती है, क्योंकि, द्रव्य आदि भेदोंके साथ दो आदि संख्यारूप भेदोंकी समानता देखी जाती है ।

द्रव्यार्थिकनयकी विवक्षासे एक और नाना इन दोनोंमें एकत्व है । पर्यायार्थिक-नयकी विवक्षा होने पर विवक्षित एक संख्यासे शेष एक संख्याएं भिन्न हैं, इसलिये उनमें नानात्व है । तथा नैगमनयकी विवक्षा होने पर द्वित्व आदि भाव बन जाता है । इसप्रकार (संख्याके कथंचित् एकरूप और कथंचित् नानारूप सिद्ध हो जाने पर उनमेंसे) यहां प्रकृतमें तो नैगमनयकी विवक्षासे संख्याभेद ही ग्रहण करना चाहिये ।

वस्तुके अनुरूप ज्ञानको अनुगम कहते हैं । अथवा, केवली और श्रुतकेवलियोंके द्वारा परंपरासे आये हुए अनुरूप ज्ञानको अनुगम कहते हैं । द्रव्यगत प्रमाणके अथवा द्रव्य और प्रमाणके अनुगमको द्रव्यप्रमाणानुगम कहते हैं । उससे अर्थात् द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा, इसप्रकार द्रव्यप्रमाणानुगम पदके साथ सूत्रमें जो तृतीया विभक्ति जोड़ी है वह निमित्तरूप अर्थमें जानना चाहिये ।

निर्देश दो प्रकारका है । जिस प्रकारके कथन करनेसे श्रोताओंको पदार्थके विषयमें

अतिशय्य कथनं वा निर्देशः। स द्विविधः द्विप्रकारः शरीरस्वभावरूपप्रकृतिशीलधर्माणां निर्देश इव। ओघेण, ओघं वृन्दं समूहः संपातः समुदयः पिण्डः अवशेषः अभिन्नः सामान्यमिति पर्यायशब्दाः। गत्यादिमार्गणस्थानैरविशेपितानां चतुर्दशगुणस्थानानां प्रमाणप्ररूपणमोघनिर्देशः। चतुर्दशगुणस्थानविशिष्टसकलजीवराशिप्ररूपणादादेशः किन्न स्यादिति चेन्न, सर्वजीवराशिनिरूपणं प्रति प्रतिज्ञाभावात्। क्व प्रतिज्ञास्याचार्यस्येति चेत्, जीवसमासप्रमाणनिरूपणे प्रतिज्ञा। सा कुतोऽवसीयत इति चेत्, 'एत्तो इमेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं' इत्यादिसूत्रादवसीयते। सर्वजीवराशिव्यतिरिक्तचतुर्दशगुणस्थानानामभावात्तथापि सर्वजीवराशिरेव निरूपितस्स्यादिति चेन्न, जीवसमुदायस्या-

निश्चय होता है उस प्रकारके कथन करनेको निर्देश कहते हैं। अथवा, कुतीर्थ अर्थात् सर्वथा एकान्तवादके प्रस्थापक पाखण्डियोंको उल्लंघन करके अतिशयरूप कथन करनेको निर्देश कहते हैं। वह निर्देश शरीरके स्वभाव, रूप, प्रकृति, शील और धर्मके निर्देशके समान दो प्रकारका है। उनमेंसे एक ओघनिर्देश है। ओघ, वृन्द, समूह, संपात, समुदय, पिण्ड, अवशेष, अभिन्न और सामान्य ये सब पर्यायवाची शब्द हैं। इस ओघनिर्देशका प्रकृतमें स्पष्टीकरण इसप्रकार हुआ कि गत्यादि मार्गणास्थानोंसे विशेषताको नहीं प्राप्त हुए केवल चौदहों गुणस्थानोंके अर्थात् चौदहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण करना ओघनिर्देश है।

शंका—वह ओघनिर्देश चौदहों गुणस्थानविशिष्ट संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करनेवाला होनेसे आदेशनिर्देश क्यों नहीं कहलाता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ओघनिर्देशमें संपूर्ण जीवराशिके निरूपणकी प्रतिज्ञा नहीं की गई है।

शंका—तो फिर आचार्यने ओघनिर्देशकी किस विषयमें प्रतिज्ञा की है?

समाधान—आचार्यने ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके (गुणस्थानोंके) प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है।

शंका—आचार्यने ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—'एत्तो इमेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं' इत्यादि सूत्रसे जाना जाता है कि ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके विषयमें आचार्यकी प्रतिज्ञा है।

शंका—संपूर्ण जीवराशिको छोड़कर चौदह गुणस्थान पाये नहीं जाते हैं, इसलिये चौदह गुणस्थानोंके निरूपण करने पर भी तो संपूर्ण जीवराशिका ही निरूपण हो जाता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ओघनिर्देशके निरूपणमें समस्त जीवसमुदाय अविवक्षित है।

विशेषार्थ—यद्यपि गुणस्थानोंमें संपूर्ण जीवराशिका अन्तर्भाव हो जाता है, फिर भी एक जीवके भी एक पर्यायमें संपूर्ण गुणस्थान संभव हैं, इसलिये यह कहा गया है कि ओघनिर्देशमें

विवक्षितत्वात्। आदेसेण, आदेशः पृथग्भावः पृथक्करणं विभजनं विभक्तीकरणमित्यादयः पर्यायशब्दाः। गत्यादिविभिन्नचतुर्दशजीवसमासप्ररूपणमादेशः। 'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' इदि कट्टु आदेसं थप्पं काऊण ओघपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

ओघेण मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता ॥ २ ॥

ओघसद्दुच्चारणाभावे ओघादेसपरूवणासु कदमेसा परूवणेत्ति सोदारस्स चित्तं मा घुलिस्सदि त्ति तच्चित्तस्स थिरत्तुप्पायणट्ठं ओघेणेत्ति भणिदं। मिच्छादिट्ठिग्गहणाभावे कदमस्स जीवसमासस्स इमा परूवणा इदि सोदारस्स संदेहो होज्ज, तस्स संदेहुप्पत्ति-णिवारणट्ठं मिच्छादिट्ठिग्गहणं कदं। दव्वपमाणेणेत्ति अभणिय केवडिया इदि सामण्णेण पुच्छिदे इमा पुच्छा किं दव्वविसया, किं खेत्तविसया, किं कालविसया, किं वा भाव-विसया, इदि संदेहो होज्ज; तण्णिवारणट्ठं दव्वपमाणग्गहणं कदं। केवडिया इदि पुच्छा।

संपूर्ण जीवराशिके कथन करनेकी विवक्षा नहीं की गई है।

आदेशसे कथन करनेको आदेशनिर्देश कहते हैं। आदेश, पृथग्भाव, पृथक्करण, विभजन, विभक्तीकरण इत्यादिक पर्यायवाची शब्द हैं। आदेशनिर्देशका प्रकृतमें स्पष्टीकरण इसप्रकार है कि गति आदि मार्गणाओंके भेदोंसे भेदको प्राप्त हुए चौदह गुणस्थानोंका प्ररूपण करना आदेशनिर्देश है।

'उद्देशके अनुसार निर्देश करना चाहिये' ऐसा समझकर आदेशको स्थगित करके पहले ओघनिर्देशका प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

ओघसे मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं, अनन्त हैं ॥ २ ॥

ओघ शब्दके उच्चारण नहीं करने पर ओघ और आदेश प्ररूपणाओंमेंसे 'यह कौनसी प्ररूपणा है' इसप्रकार श्रोताका चित्त मत डुले, इसलिये उसके चित्तकी स्थिरता उत्पन्न करनेके लिये सूत्रमें 'ओघसे' यह पद कहा है। सूत्रमें मिथ्यादृष्टि पदके ग्रहण नहीं करने पर कौनसे जीवसमासकी यह प्ररूपणा है इसप्रकार श्रोताको संदेह हो सकता है, इसलिये उसकी सन्देहोत्पत्तिके निवारण करनेके लिये सूत्रमें मिथ्यादृष्टि पदका ग्रहण किया है। सूत्रमें 'द्रव्यप्रमाणसे' इस पदको न कहकर 'कितने हैं' इसप्रकार सामान्यसे पूछने पर यह पृच्छा क्या द्रव्यविषयक है, क्या क्षेत्रविषयक है, क्या कालविषयक है, अथवा क्या भावविषयक है, इसप्रकारका सन्देह हो सकता है, अतः उस सन्देहके निवारणार्थ सूत्रमें 'द्रव्यप्रमाण' पदको ग्रहण किया है। 'कितने हैं' यह पद प्रश्नरूप है।

१ सामान्येन तावत् जीवा मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः। स. सि. ८. मिच्छाइट्ठी पावाणंताणंता ॥ गो. जी. ६२३. मिच्छाणंता। पञ्चसं. २, ९.

पुच्छामंतरेण ' ओघेण मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण अणंता ' इदि किण्ण वुच्चदे ? न, अस्य स्वकर्तृत्वनिराकरणद्वारेणाप्तकर्तृत्वप्रतिपादनफलत्वात् । तदपि किं फलमिति चेन्न, ' वक्तृप्रामाण्याद्वचनप्रामाण्यम् ' इति न्यायात् वचनस्यास्य प्रामाण्यप्रदर्शनफलम् । भूतबल्यादीनामाचार्याणां क्व व्यापार इति चेन्न, तेषां व्याख्यातृत्वाभ्युपगमात् । अणंता इदि पमाणं वुत्तं, एवं वुत्ते संखेज्जासंखेज्जाणं पडिणियत्ती । तं च अणंतमणेयविधं । तं जहा--

णामं ठवणा दवियं सस्सद गणणापदेसियमणंतं ।
एगो उभयादेसो वित्थारो सव्व भावो य ॥ ८ ॥

तत्थ णामाणंतं जीवाजीवमिस्सदव्वस्स कारणणिरवेक्खा सण्णा अणंता इदि । जं तं ट्ठवणाणंतं णाम तं कट्ठकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेण-

शंका—' कितने हैं ' इसप्रकारके प्रश्नके विना ही ' ओघनिर्देशसे मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अनन्त हैं ' इसप्रकारका सूत्र क्यों नहीं कहा ?

समाधान--नहीं, क्योंकि, अपने कर्तृत्वका निराकरण करके आप्तके कर्तृत्वका प्रतिपादन करना ' कितने हैं ' इस पदके सूत्रमें देनेका फल है।

शंका--अपने कर्तृत्वका निराकरण करके आप्तकर्तृत्वके प्रतिपादन करनेका भी क्या फल है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ' वक्ताकी प्रमाणतासे वचनोंमें प्रमाणता आती है ' इस न्यायके अनुसार ' अनन्त हैं ' इस वचनकी प्रमाणता दिखाना इसका फल है।

शंका--जब कि ' ओघेण मिच्छाइट्ठी ' इत्यादि वचनके कर्ता आप्त सिद्ध हो जाते हैं तो फिर भूतबलि आदि आचार्योंका व्यापार कहां पर होता है ?

समाधान--नहीं, क्योंकि, उनको आप्तके वचनोंका व्याख्याता स्वीकार किया है, इसलिये आप्तके वचनोंके व्याख्यान करनेमें उनका व्यापार होता है।

सूत्रमें दिये गये ' अणंता ' इस पदके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कहा गया है। मिथ्यादृष्टि जीव अनन्त हैं, इसप्रकार कथन करने पर संख्यात और असंख्यातकी निवृत्ति हो जाती है। वह अनन्त अनेक प्रकारका है, जो इसप्रकार है—

नामानन्त, स्थापनानन्त, द्रव्यानन्त, शाश्वतानन्त, गणनानन्त, अप्रदेशिकानन्त, एकानन्त, उभयानन्त, विस्तारानन्त, सर्वानन्त और भावानन्त, इसप्रकार अनन्तके ग्यारह भेद हैं ॥ ८ ॥

उनमेंसे कारणके विना ही जीव, अजीव और मिश्र द्रव्यकी अनन्त ऐसी संज्ञा करना नाम अनन्त है।

काष्ठकर्म, चित्रकर्म, पुस्तकर्म, लेप्यकर्म, लेनकर्म, शैलकर्म, भित्तिकर्म, गृहकर्म,

१ सोवणिखइरसोगकट्ठादिसु ×× जहासरूवेण पडियट्ठवणा ×× चित्तारेहिंतो वण्णविसेसेहिं णिप्फण्णाणि

कम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा अक्खो वा वराडयो वा जे च अण्णे ट्ठवणाए ट्ठविदा अणंतमिदि तं सव्वं ट्ठवणाणंतं णाम। जं तं दव्वाणंतं त दुविहं आगमदो णोआगमदो य। आगमो गंथो सुदणाणं सिद्धंतो पवयणमिदि एगट्ठो। अत्रोपयोगिनः श्लोकाः—

पूर्वापरविरुद्धादेर्व्यपेतो दोपसंहतेः।
द्योतकः सर्वभावानामाप्तव्याहृतिरागमः॥ ९॥
आगमो ह्याप्तवचनमाप्तं दोपक्षयं विदुः।
त्यक्तदोपोऽनृतं वाक्य न ब्रूयाद्धेत्वसंभवात्[१]॥ १०॥
रागाद्वा द्वेपाद्वा मोहाद्वा वाक्यमुच्यते ह्यनृतम्।
यस्य तु नैते दोपास्तस्यानृतकारणं नास्ति॥ ११॥

तत्थ आगमदो दव्वाणंत अणंतपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो। अनवगम्य विस्मृता-

भेंडकर्म अथवा दन्तकर्ममें अथवा अक्ष (पासा) हो या कौड़ी हो, अथवा दूसरी कोई वस्तु हो उसमें, यह अनन्त है, इसप्रकारकी स्थापना करना यह सब स्थापनानन्त है।

द्रव्यानन्त आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है। आगम, ग्रन्थ, श्रुतज्ञान, सिद्धान्त और प्रवचन ये एकार्थवाची शब्द हैं। इस विषयमें उपयोगी श्लोक हैं—

पूर्वापर विरुद्धादि दोषोंके समूहसे रहित और संपूर्ण पदार्थोंके द्योतक आप्तवचनको आगम कहते हैं॥ ९॥

आप्तके वचनको आगम जानना चाहिये और जिसने जन्म, जरा आदि अठारह दोषोंका नाश कर दिया है उसे आप्त जानना चाहिये। इसप्रकार जो त्यक्तदोष होता है वह असत्यवचन नहीं बोलता है, क्योंकि, उसके असत्यवचन बोलनेका कोई कारण ही संभव नहीं है॥ १०॥

रागसे, द्वेषसे अथवा मोहसे असत्य वचन बोला जाता है, परंतु जिसके ये रागादि दोष नहीं रहते हैं उसके असत्य वचन बोलनेका कोई कारण भी नहीं पाया जाता है॥ ११॥

अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवाले परंतु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीवको

चित्तकम्माणि णाम। वत्थेसु पाणसालियकसदादीहिं जाणिदूण किरियाए णिप्पाइदाणि रूवाणि छिंपएहि वा कदाणि पोत्तकम्माणि णाम। लेप्पयारेहि लेविऊण जाणि णिप्पाइदाणि रूवाणि ताणि लेप्पकम्माणि णाम। एत्थ रट्टएहि जाणि पव्वदेसु घडिदाणि रूवाणि ताणि लेणकम्माणि णाम। वड्ढइपिंडेण पासादेसु घडिदरूवाणि गिहकम्माणि णाम। तेण चेव कुड्डेसु घडिदरूवाणि भित्तिकम्माणि णाम। दंतिदंतादिसु घडिदरूवाणि दंतकम्माणि णाम। भिंडेहि घडिदरूवाणि भिंडकम्माणि णाम। धवला १२०९.

१ अनु. पत्र १६४, टीका.

वगमानां अवगमिष्यतां वा किमिति द्रव्यागमव्यपदेशो न स्यादिति चेन्न, शक्तिरूपोपयोगस्य श्रुतावरणक्षयोपशमलक्षणस्य साम्प्रतं तत्रासत्त्वात्। आगमादण्णो णोआगमो। जं तं णोआगमदो दव्वाणंतं तं तिविहं, जाणुगसरीरदव्वाणंतं भवियदव्वाणंतं तव्वदिरित्तदव्वाणंतं चेदि। तत्थ जाणुगसरीरदव्वाणंतं अणंतपाहुडजाणुगसरीरं तिकालजादं। कधं अणंतपाहुडादो आधारत्तणेण वदिरित्तस्स सरीरस्स अणंतववएसो ? ण, असिसदं धावदि परसुसदं धावदि इच्चेवमादिसु तदो वदिरित्तस्स वि आधारपुरुसस्स आधेयववदेसदंसणादो। भवदु वट्टमाणम्हि आधारस्स आधेयोवयारो णादीदाणागदकालेसु त्ति ? ण एस दोसो, णट्ठ-भविस्सरज्जम्हि वि पुरिसे राया आगच्छदि त्ति ववहारदंसणादो। पज्जयपज्जइणो

आगमद्रव्यानन्त कहते हैं।

शंका—जिनको पहले ज्ञान था किंतु पश्चात् विस्मृत हो गया है, अर्थात् छूट गया है अथवा जो भविष्यकालमें जानेंगे उन्हें भी द्रव्यागम यह संज्ञा क्यों न दी जाय ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, श्रुतज्ञानावरण कर्मका क्षयोपशम है लक्षण जिसका ऐसा शक्तिरूप उपयोग वर्तमानमें उन जीवोंके नहीं पाया जाता है, इसलिये उन्हें द्रव्यागम यह संज्ञा नहीं प्राप्त हो सकती है।

आगमसे अन्यको नोआगम कहते हैं। वह नोआगम द्रव्यानन्त तीन प्रकारका है, ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यानन्त, भव्य नोआगमद्रव्यानन्त और तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त। उनमेंसे, अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवालेके तीनों कालोंमें होनेवाले शरीरको ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं।

शंका—अनन्तविषयक शास्त्र अर्थात् अनन्तविषयक शास्त्रका ज्ञाता आधेय है और उसका शरीर आधार है, अतएव अनन्तविषयक शास्त्रके ज्ञातासे आधारतया शरीर भिन्न है, इसलिये उस शरीरको अनन्त यह संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सौ तरवारें (सौ तरवारवाले) दौड़ती हैं, सौ फरसा (सौ फरसावाले) दौड़ते हैं इत्यादि प्रयोगोंमें तरवार और फरसासे भिन्न परंतु उनके आधारभूत पुरुषोंमें भी जिसप्रकार आधेयरूप तरवार और फरसा यह संज्ञा देखी जाती है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी आधारभूत शरीरमें आधेयका व्यवहार जान लेना चाहिये।

शंका—वर्तमान कालमें आधारभूत शरीरमें आधेयका उपचार भले ही हो जाओ, परंतु अतीत और अनागतकालीन शरीरोंमें यह व्यवहार नहीं हो सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जिसकी राजारूप पर्याय नष्ट हो गई है, अथवा जिसे भविष्यमें राजारूप पर्याय प्राप्त होगी, ऐसे पुरुषमें भी जिसप्रकार 'राजा आता है' यह व्यवहार देखा जाता है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये।

शंका—पर्याय और पर्यायीमें भेद न होनेके कारण वहां पर आधार-आधेयभाव नहीं

भेदाभावादो ण तत्थ आधाराधेयभावो। अह जइ एत्थ वि आधाराधेयभावो होज्ज, जाणुगसरीरभवियाणं पुणरुत्तदा ढुकेज्जेत्ति। जदि एवं, तो एदं परिहरिय धणुसदं भुंजदीदि एदं गहेयव्वं। न धनुर्धृतायामेवायं व्यवहारः, धनूंष्यपसार्य भुंजानेष्वपि धनुःशतं भुंक्त इति व्यवहारदर्शनात्। न घृतकुम्भदृष्टान्तो घटते, घटस्य घृतव्यपदेशानुपलम्भतो दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकयोः साधर्म्याभावात्। जं तं भवियाणंतं तं अणंत-

पाया जाता है। फिर भी यदि यहां भी आधार-आधेयभाव माना जावे, तो ज्ञायकशरीर और भावी इन दोनोंके कथनमें पुनरुक्तता प्राप्त हो जायगी?

समाधान— यदि ऐसा है तो इस दृष्टान्तको छोड़कर 'सौ धनुष (सौ धनुषवाले) भोजन करते हैं' प्रकृतमें इस दृष्टान्तको लेना चाहिये। धनुषोंके धारण करनेरूप अवस्थामें ही सौ धनुष भोजन करते हैं यह व्यवहार नहीं होता है किंतु धनुषोंको दूर करके भोजन करनेवालोंमें भी 'सौ धनुष भोजन करते हैं' इसप्रकार व्यवहार देखा जाता है। किन्तु यहां पर घृतकुम्भका दृष्टान्त लागू नहीं होता है, क्योंकि, घटके घृत इसप्रकारका व्यवहार नहीं पाया जानेके कारण दृष्टान्त और दार्ष्टान्तमें साधर्म्य नहीं है।

विशेषार्थ— नोआगमद्रव्यनिक्षेपके तीन भेद किये हैं, ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्त। इनमेंसे ज्ञायकशरीरमें ज्ञाताका त्रिकालभावी शरीर लिया जाता है और भावीमें जो वर्तमानमें ज्ञाता नहीं है किंतु आगे होगा उसका ग्रहण किया जाता है। अब यदि जो पर्याय पहले हो चुकी है या आगे होगी उसे ही ज्ञायकशरीरका अतीत और भावी मान लें तो ज्ञायकशरीरभावी नोआगमद्रव्यमें और भावी नोआगमद्रव्यमें कोई अन्तर नहीं रह जायगा। इसलिये ज्ञायकशरीरमें संबन्धप्राप्त भिन्न आधारमें आधेयका उपचार किया जाता है और भावीमें वही वस्तु आगे होनेवाली पर्यायरूपसे कही जाती है ऐसा समझना चाहिये। यद्यपि ऊपर आधारमें आधेयका उपचार दिखानेके लिये 'असिसदं धावदि' इत्यादि दृष्टान्त दे आये हैं जिससे यह समझमें आ जाता है कि जिसप्रकार तरवारधारी सौ पुरुषोंके दौड़नेपर सौ तरवारें दौड़ती हैं इत्यादि रूपसे व्यवहार होता है उसीप्रकार अनन्त आदि विषयक शास्त्रके ज्ञाताके शरीरको भी नोआगमद्रव्यानन्त आदि कह सकते हैं। परंतु जो शरीर अभी प्राप्त नहीं हुआ है या प्राप्त होगा उसे कैसे नोआगमद्रव्यानन्त आदि कह सकते हैं, क्योंकि, उपचार संबद्ध पदार्थमें होता है। इसका समाधान यह है कि जिसप्रकार धनुषोंको दूर रखकर भोजन करने पर भी 'धणुसदं भुंजदि' यह व्यवहार बन जाता है, उसीप्रकार अतीत और अनागत शरीरकी अपेक्षा भी उपचारसे आधार-आधेयभाव मान कर नोआगमद्रव्यानन्त आदि संज्ञा बन जाती है। प्रकृतमें घृतकुम्भका दृष्टान्त इसलिये लागू नहीं होता है कि घटमें घी इसप्रकारका व्यवहार नहीं होनेसे वहां आधार-आधेयभावकी संभावना ही नहीं है।

पाहुडजाणुगभावी जीवो। जं तं तव्वदिरित्तदव्वाणंतं तं दुविहं, कम्माणंतं णोकम्माणंतमिदि। जं त कम्माणंत तं कम्मस्स पदेसा। जं तं णोकम्माणंतं तं कडय-रुजगदीव-समुद्दादि एयपदेसादि पोग्गलदव्वं वा। आगममधिगम्य विस्मृतः क्वान्तर्भवतीति चेत्तद्व्यतिरिक्तद्रव्यानन्ते। जं तं सस्सदाणंतं तं धम्मादिदव्वगयं। कुदो? सासयत्तेण दव्वाणं विणासाभावादो। जं तं गणणाणंतं तं बहुवण्णणीयं सुगमं च। जं तं अपदेसियाणंतं तं परमाणू। नोकर्मद्रव्यानन्ते द्रव्यत्वं प्रत्यविशिष्टयोः शाश्वताप्रदेशानन्तयोरन्तर्भावः किमिति न स्यादिति चेत्? उच्यते– न तावच्छाश्वतानन्तं नोकर्मद्रव्यानन्तेऽन्तर्भवति, तयोर्भेदात्। अन्तो विनाशः, न विद्यते अन्तो विनाशो यस्य तदनन्तम्। द्रव्यं शाश्वतमनन्तं शाश्वतानन्तम्। नोकर्म च द्रव्यगतानन्त्यापेक्षया कटकादीनां वास्तवान्ताभावापेक्षया च अनन्तम्, ततो नानयोरेकत्वमिति। एकप्रदेशे परमाणौ तद्व्यतिरिक्तापरो द्वितीयः

जो जीव भविष्यकालमें अनन्तविषयक शास्त्रको जानेगा उसे भावी-नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यान्त दो प्रकारका है, कर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त और नोकर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त। ज्ञानावरणादि आठ कर्मोंके प्रदेशोंको कर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं। कटक, रुचकवरद्वीप और समुद्रादि अथवा एक प्रदेशादि पुद्गलद्रव्य ये सब नोकर्मतद्व्यतिरिक्त-नोआगमद्रव्यानन्त हैं।

शंका—जो आगमका अध्ययन करके भूल गया है उसका द्रव्यनिक्षेपके किस भेदमें अन्तर्भाव होता है?

समाधान—ऐसे जीवका तद्व्यतिरिक्त नोकर्मद्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव होता है।

शाश्वतानन्त धर्मादि द्रव्योंमें रहता है, क्योंकि, धर्मादि द्रव्य शाश्वतिक होनेसे उनका कभी भी विनाश नहीं होता है।

जो गणनानन्त है वह बहुवर्णनीय और सुगम है। एक परमाणुको अप्रदेशिकानन्त कहते हैं।

शंका—द्रव्यत्वके प्रति अविशिष्ट ऐसे शाश्वतानन्त और अप्रदेशानन्तका नोकर्मद्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव क्यों नहीं हो जाता है?

समाधान—शाश्वतानन्तका नोकर्मद्रव्यानन्तमें तो अन्तर्भाव होता नहीं है, क्योंकि, इन दोनोंमें परस्पर भेद है। आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं। अन्त विनाशको कहते हैं, जिसका अन्त अर्थात् विनाश नहीं होता है उसे अनन्त कहते हैं। जो धर्मादिक द्रव्य शाश्वत अनन्त है उसे शाश्वतानन्त कहते हैं। और नोकर्म द्रव्यगत अनन्तताकी अपेक्षा और कटकादिकेे वस्तुतः अन्तके अभावकी अपेक्षा अनन्त है, इसलिये इन दोनोंमें एकत्व नहीं हो सकता है। एकप्रदेशी परमाणुमें उस एक प्रदेशको छोड़कर अन्त इस संज्ञाको प्राप्त होनेवाला दूसरा प्रदेश नहीं पाया जाता है, इसलिये परमाणु अप्रदेशानन्त है। ऐसी स्थितिमें

प्रदेशोऽन्तव्यपदेशभाक् नास्तीति परमाणुरप्रदेशानन्तः। तथा च कथमयं नोकर्मद्रव्यानन्ते द्रव्यगतानन्तसंख्यापेक्षया अनन्तव्यपदेशभाज्यन्तर्भवेत्। द्रव्यं प्रत्येकत्वं तत्रास्ति इति चेत्? अस्तु तथैकत्वं न पुनरन्येनान्येन प्रकारेणायातानन्त्यं प्रति। जं तं एयाणंतं तं लोगमज्झादो एगसेढिं पेक्खमाणे अंताभावादो एयाणंतं। ण दव्वाणंते दव्वभेदमस्सि-ऊणाट्ठिदे एदमणंतं पददि, एगदव्वस्सागासस्स पज्जवसाणदंसणाभावमस्सिदूण ट्ठिदत्तादो। जहा अपारो सागरो, अथाहं जलमिदि। जं तं उभयाणंतं तं तधा चेव उभयदिसाए पेक्खमाणे अंताभावादो उभयादेसाणंतं। ज तं वित्थाराणंतं तं पदरागारेण आगासं पेक्खमाणे अंताभावादो भवदि। जं तं सव्वाणंतं तं घणागारेण आगासं पेक्खमाणे अंता-भावादो सव्वाणंतं भवदि। जं तं भावाणंत तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य। आगमदो भावाणंतं अणंतपाहुडजाणगो उवजुत्तो। जं तं णोआगमदो भावाणंतं तं तिकालजादं अणंतपज्जयपरिणदजीवादिदव्वं।

एदेसु अणंतेसु केण अणतेण पयदं? गणणाणंतेण पयदं। त कध जाणिज्जदि?

द्रव्यगत अनन्त संख्याकी अपेक्षा अनन्त संज्ञाको प्राप्त होनेवाले नोकर्मद्रव्यानन्तमें वह अप्रदेशानन्त कैसे अन्तर्भूत हो सकता है, अर्थात् नहीं हो सकता है, इसलिये अप्रदेशानन्त भी स्वतन्त्र है।

शंका—द्रव्यके प्रति एकत्व तो उनमें पाया ही जाता है?

समाधान—इन अनन्तोंमें यदि द्रव्यके प्रति एकत्व पाया जाता है तो रहा आवे, परंतु इतने मात्रसे इन अनन्तोंमें अन्य अन्य प्रकारसे आये हुए आनन्त्यके प्रति एकत्व नहीं हो सकता है।

लोकके मध्यसे आकाश-प्रदेशोंकी एक श्रेणीको देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे एकानन्त कहते हैं। द्रव्यभेदका आश्रय लेकर स्थित द्रव्यानन्तमें यह एकानन्त अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, यह एकानन्त एक आकाशद्रव्यका अन्त नहीं दिखाई देनेके कारण उसका आश्रय लेकर स्थित है, जैसे अपार समुद्र, अथाह जल इत्यादि। लोकके मध्यसे आकाश प्रदेशपंक्तिको दो दिशाओंमें देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे उभयानन्त कहते हैं। आकाशको प्रतररूपसे देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे विस्तारानन्त कहते हैं। आकाशको घनरूपसे देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे सर्वानन्त कहते हैं। आगम और नोआगमकी अपेक्षा भावानन्त दो प्रकारका है। अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवाले और वर्तमानमें उसके उपयोगसे उपयुक्त जीवको आगमभावानन्त कहते हैं। त्रिकालजात अनन्त पर्यायोंसे परिणत जीवादि द्रव्य नोआगमभावानन्त है।

शंका—इन ग्यारह प्रकारके अनन्तोंमेंसे प्रकृतमें किस अनन्तसे प्रयोजन है?

समाधान—प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है।

'मिच्छादिट्ठी केवडिया' इदि सिस्सेण पुच्छिदे 'अणंता' इदि पमाणपरूवणादो जाणिज्जदि। ण च सेस-अणंताणि पमाणपरूवयाणि तत्थ तधादंसणादो। जदि गणणाणंतेण पयदं सेस-दसविध-अणंतपरूवणं किमट्ठं कीरदे? वुच्चदे—

अवगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च।
ससयविणासणट्ठं तच्चत्थवधारणट्ठं च[1] ॥ १२ ॥

उत्तं च पुव्वाइरिएहि—

जत्थ बहू जाणेज्जो अपरिमिदं तत्थ णिक्खिवे सूरी।
जत्थ बहू अ ण जाणइ चउत्थवो तत्थ णिक्खेवो[2] ॥ १३ ॥

अथवा णिक्खेवविसिट्ठमेदं वण्णिज्जमाणं वत्तारस्सुप्पथोत्थाणं कुज्जा इदि णिक्खेवो कीरदे। तथा चोक्तम्—

प्रमाण-नयनिक्षेपैर्योऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते।
युक्तं चायुक्तवद् भाति तस्यायुक्तं च युक्तवत् ॥ १४ ॥

शंका—यह कैसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है?

समाधान—'मिथ्यादृष्टि जीव कितने हैं' इसप्रकार शिष्यके द्वारा पूछने पर 'अनन्त हैं' इत्यादि रूपसे प्रमाणका प्ररूपण करनेसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है। इस गणनानन्तको छोड़कर शेष अनन्त प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले नहीं हैं, क्योंकि, शेष अनन्तोंमें गणनारूपसे कथन नहीं देखा जाता है।

शंका—यदि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है तो गणनानन्तको छोड़कर शेष दश प्रकारके अनन्तोंका प्ररूपण यहां पर किसलिये किया है?

समाधान—अप्रकृत विषयके निवारण करनेके लिये, प्रकृत विषयके प्ररूपण करनेके लिये, संशयका विनाश करनेके लिये, और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये यहां पर सभी अनन्तोंका कथन किया है ॥ १२ ॥

पूर्वाचार्योंने भी कहा है—

जहां जीवादि पदार्थोंके विषयमें बहुत जानना चाहे, वहां पर आचार्य सभीका निक्षेप करे। तथा जहां पर बहुत न जाने, तो वहां पर चार निक्षेप अवश्य करना चाहिये ॥ १३ ॥

अथवा निक्षेपके विना वर्णन किया गया यह विषय कदाचित् वक्ताको उन्मार्गमें ले जावे, इसलिये यहां पर सभी अनन्तोंका निक्षेप किया है। कहा भी है—

प्रमाण, नय और निक्षेपोंके द्वारा जिस पदार्थकी समीक्षा नहीं की जाती है उसका अर्थ युक्त होते हुए भी अयुक्तसा प्रतीत होता है और कभी अयुक्त होते हुए भी युक्तसा

१ स. प. गा. १५, २ स. प. गा. १४ (देखो पाठ भेद)

ज्ञानं प्रमाणमित्याहुरुपायो न्यास उच्यते ।
नयो ज्ञातुरभिप्रायो युक्तितोऽर्थपरिग्रहः[१] ॥ १५ ॥

जं तं गणणाणंतं तं पि तिविहं, परित्ताणंतं जुत्ताणंतं अणंताणंतमिदि । अणंता इदि सामण्णेण वुत्ते एदम्हि चेवाणंते मिच्छाइट्ठि-जीवा होंति इदरेसु अणंतेसु ण होंति त्ति ण जाणिज्जदे, अणंता इदि बहुवयणणिद्देसादो । जत्थ तिण्णि वि अणंताणि अत्थि तस्स चेव अणंताणंतस्स गहणं होदि इदि चे ण, मिच्छाइट्ठीणं बहुत्तमवेक्खिय बहुवयणुप्पत्तीदो । अहवा तिण्णि वि अणंताणि सभेदे अस्सिऊण अणंतवियप्पाणि । तत्थ एदस्स बहुत्तविवक्खाए बहुवयणं अण्णभेदस्स[२] णेदि ण जाणिज्जदे ? एत्थ परिहारो वुच्चदे– 'अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण' त्ति ज्ञापकादवसीयते यथा अनन्तानन्ता मिथ्यादृष्टय इति, व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिरिति

प्रतीत होता है ॥ १४ ॥

विद्वान् पुरुष सम्यग्ज्ञानको प्रमाण कहते हैं, नामादिकके द्वारा वस्तुमें भेद करनेके उपायको न्यास या निक्षेप कहते हैं और ज्ञाताके अभिप्रायको नय कहते हैं । इसप्रकार युक्तिसे अर्थात् प्रमाण, नय और निक्षेपके द्वारा पदार्थका ग्रहण अथवा निर्णय करना चाहिये ॥ १५ ॥

गणनानन्त तीन प्रकारका है, परीतानन्त, युक्तानन्त और अनन्तानन्त ।

शंका— सूत्रमें 'अणंता' इसप्रकार मिथ्यादृष्टियोंका परिमाण सामान्यरूपसे कहा गया है, पर इतने कथन करनेमात्रसे अनन्तके तीन भेदोंमेंसे इसी अनन्तमें मिथ्यादृष्टि जीव अर्थात् मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण पाया जाता है दूसरे अनन्तोंमें नहीं, यह बात नहीं जानी जाती है, क्योंकि, सूत्रमें अनन्तके किसी भी भेदका उल्लेख न करके केवल उसका बहुवचनरूपसे निर्देश किया है । जहां पर तीनों अनन्त पाये जाते हैं वहां उसी अनन्तानन्तका ग्रहण होता है, सो भी नहीं है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवोंके बहुत्वकी अपेक्षा करके अनन्त शब्दका बहुवचन प्रयोग बन सकता है । अथवा तीनों अनन्त अपने अपने भेदोंका आश्रय करके अनन्त विकल्परूप हैं । उनके इसी भेदकी विवक्षासे बहुवचन दिया है अन्य भेदकी अपेक्षासे नहीं, यह भी नहीं जाना जाता है ?

समाधान— आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं— 'मिथ्यादृष्टि जीव कालकी अपेक्षा अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं' इस ज्ञापक सूत्रसे जाना जाता है कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हैं । अथवा, 'व्याख्यानसे

१ प्रतिषु 'प्रमाण नय युक्तत्र् । ज्ञानं प्रमाण परिग्रह '। इति एतेनैव पाठेनोक्तकारिकाद्वयस्य सूचना प्राप्यते । टे. (स प. गा. १०-११)

२ प्रतिषु 'उप्पण्णभेदस्स ' इति पाठः ।

न्यायाद्वा ।

जं तं अणंताणंतं तं पि तिविहं, जहण्णमुक्कस्सं मज्झिममिदि । तत्थ इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदि जहण्णमणंताणंतं ण भवदि उक्कस्समणंताणंतं च भवदि ? 'जम्हि जम्हि अणंताणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्स-अणंताणंतस्सेव गहणं'[1] इदि परियम्मवयणादो जाणिज्जदि अजहण्णमणुक्कस्स-अणताणंतस्सेव गहणं होदि त्ति । तं पि अणंताणंतवियप्पमत्थि त्ति इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदि ? जहण्णअणंताणंतादो अणंताणि वग्गणट्ठाणाणि उवरि अब्भुस्सरिऊण उक्कस्स-अणंताणंतादो अणंताणि वग्गणट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण अंतरे जिणदिट्ठभावो रासी घेत्तव्वो । अहवा तिण्णिवारवग्गिद-संवग्गिदरासीदो अणंतगुणो छद्दव्वपक्खित्तरासीदो अणंतगुणहीणो मिच्छाइट्ठिरासी होदि । को तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी ? उच्चदे— जहण्णमणंताणंतं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स

विशेषकी प्रतिपत्ति होती है ' ऐसा न्याय है जिससे भी जाना जाता है कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हैं ।

ऊपर जो अनन्तानन्त कह आये हैं वह भी तीन प्रकारका है, जघन्य अनन्तानन्त, उत्कृष्ट अनन्तानन्त और मध्यम अनन्तानन्त ।

शंका — उन तीनों अनन्तानन्तोंमेंसे यहां पर जघन्य अनन्तानन्त नहीं होता है और उत्कृष्ट अनन्तानन्त होता है, ऐसा कुछ भी नहीं जाना जाता है ?

समाधान — 'जहां जहां अनन्तानन्त देखा जाता है वहां वहां अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तका ही ग्रहण होता है ' इस परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तका ही ग्रहण है ।

शंका— वह मध्यम अनन्तानन्त भी अनन्तानन्त विकल्परूप है, इसलिये उनमेंसे यहां कौनसा विकल्प लिया है, इस बातका केवल मध्यम अनन्तानन्तके कथन करनेसे ज्ञान नहीं होता है ?

समाधान — जघन्य अनन्तानन्तसे अनन्त वर्गस्थान ऊपर जाकर और उत्कृष्ट अनन्तानन्तसे अनन्त वर्गस्थान नीचे आकर मध्यमें जिनेन्द्रदेवके द्वारा यथादृष्ट राशि यहां पर अनन्तानन्त पदसे ग्रहण करनी चाहिये । अथवा, जघन्य अनन्तानन्तके तीनवार वर्गित-संवर्गित करने पर जो राशि उत्पन्न होती है उससे अनन्तगुणी और छह द्रव्योंके प्रक्षिप्त करने पर जो राशि उत्पन्न होती है उससे अनन्तगुणी हीन मध्यम अनन्तानन्तप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशि है ।

शंका—तीन वार वर्गितसंवर्गित राशि कौनसी है ?

१ ति. प. पत्र ५३. यत्रानन्तानन्त मार्गणं तत्राजघन्योत्कृष्टानन्तानन्तं ग्राह्यम् । त. रा. वा. ३. ३८,

जहण्णमणंताणंतं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊणुप्पण्णमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिं विरलेऊण अवरं महारासिपमाणं रूवं पडि दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊण पुणो उट्ठिदमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिपमाणं विरलेऊण अवरमहारासिं विरलणरासिरूवं पडि दाऊण अण्णोण्णब्भासे कदे तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी[1] णाम ।

समाधान—जघन्य अनन्तानन्तका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जघन्य अनन्तानन्तको देयरूपसे देकर उनके परस्पर वर्गितसंवर्गित करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी दो पंक्ति करनी चाहिये, अर्थात् तत्प्रमाण राशिको दो स्थानों-पर स्थापित करना चाहिये। उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर और उनके परस्पर वर्गितसंवर्गित करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पंक्ति करनी चाहिये। उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर उनके परस्पर गुणा करने पर जो महाराशि उत्पन्न होती है उसे तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि कहते हैं।

उदाहरण (बीजगणितसे) – जघन्य अनन्तान.त=क

एकवार वर्गितसंवर्गित राशि = $क^{क}$

दोवार ,, ,, = $\left(क^{क}\right)^{क^{क}} = क^{क \times क^{क}} = क^{क^{क+१}}$

तीनवार ,, ,, = $\left(क^{क^{क+१}}\right)^{क^{क^{क+१}}} = क^{\left(क^{क+१} \times क^{क^{क+१}}\right)}$

$= क^{क^{क+१+क^{क+१}}}$

(अंकगणितसे)— जघन्य अनन्तानन्त=२

एकवार $२^{२} = ४$; दोवार $४^{४} = २५६$; तीनवार $२५६^{२५६}$

१ अवराणताणंत तिप्पडिरासिं करिदु विरलादिं। तिसलाग च समाणिय लद्धेदे पविखवेदव्वा ॥ त्रि. सा. ४८

एसो सव्वजीवरासीदो किंचूणमिच्छादिट्ठिरासीदो य अणंतगुणहीणो त्ति कधं जाणिज्जदि? वुच्चदे– जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाणमुवरि तस्सेव वग्गसलागाओ रूवाहियाओ पक्खित्ते जहण्ण-अणंताणंतस्स वग्गसलागा भवंति[1]। जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाहि दुगुणिदाहि जहण्णपरित्ताणंते गुणिदे जहण्णमणंताणंतस्स अद्धछेदणयसलागा हवंति[2]। एदाओ च जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो असंखेज्ज-गुणहीणाओ। एदाणमुवरि जहण्ण-अणंताणंतस्स वग्गसलागाओ जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाहिंतो विसेसाहियाओ पक्खित्ते पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा भवंति। जहण्ण-अणंताणंतस्स अद्धछेदणाओ जहण्ण-अणंताणंतेण गुणिदे पढमवार-वग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागा भवंति[2]। एदाओ जहण्ण-अणंताणंतादो

(यदि हम २५६ को २५६ से इतने ही वार गुणा करें तो जो संख्या उत्पन्न होगी वह ६१७ अंकवाली होगी। इसप्रकार इकाईरूप छोटीसी २ संख्याको तीनवार वर्गितसंवर्गित करने पर ६१७ अंकवाली महासंख्या उत्पन्न होती है। इस परसे किसी भी मूलराशिसे उत्पन्न हुई त्रिवार वर्गितसंवर्गित राशिके विस्तारका अनुमान लगाया जा सकता है।)

शंका— तीनवार वर्गितसंवर्गित करनेसे उत्पन्न हुई यह महाराशि सपूर्ण जीवराशिसे और संपूर्णजीवराशिसे कुछ कम (द्वितीयादि शेष तेरह गुणस्थानसंबन्धी राशि और सिद्ध-राशि प्रमाण कम) मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे अनन्तगुणी हीन है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी अर्थात् जघन्य परीतानन्तकी एक अधिक वर्गशलाकाएं मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होती हैं। तथा जघन्य परीतानन्तके द्विगुणित अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतानन्तके गुणित करने पर जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं। ये जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशला-काएं जघन्य परीतानन्तसे असंख्यातगुणी हैं और उसीके अर्थात् जघन्य परीतानन्तके उपरिम वर्गसे असंख्यातगुणी हीन हैं। इन जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें, जो जघन्य परीतानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाओंसे अधिक हैं, ऐसी जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाएं होती हैं। जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेदोंको जघन्य अनन्तानन्तसे गुणित करने पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं

तव्वग्गे पुण जायइ णताणत लहु त च तिक्खुत्तो। वग्गसु तह न त होइ णतखेवे खिवसु छ इमे॥ क. ग्र. ५, ८४.

१ वग्गिदवारा वग्गसलागा रासिस्स अद्धछेदस्स। अद्धिदवारा वा खलु दलवारा होंति अद्धछिदी॥ त्रि. सा. ७६.

२ विरलिज्जमाणरासिं दिण्णस्सद्धच्छिदीहिं संगुणिदे। अद्धच्छेदा होंति दु सव्वत्थुप्पण्णरासिस्स॥ त्रि. सा. १०७.

अणंतगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो अणंतगुणहीणाओ। एदाणमुवरि पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागाओ पक्खित्ते विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा हवंति[1]। पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धच्छेदणाहि पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिं गुणिदे विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धछेदणयसलागाओ भवंति। एदाओ पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो अणंतगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गणादो अणंतगुणहीणाओ। एदाणमुवरि विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागाओ पक्खित्ते तदियवारवग्गि-

होती हैं। ये प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं जघन्य अनन्तानन्तसे अनन्तगुणी हैं और उसीके अर्थात् जघन्य अनन्तानन्तके उपरिम वर्गसे अनन्तगुणी हीन हैं। इन प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंमें प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं होती हैं। तथा प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके द्वारा प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिको गुणित करने पर दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं। ये दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिसे अनन्तगुणी हैं, और उसीके, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिके उपरिम वर्गसे अनन्तगुणी हीन हैं। इन दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंमें दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं होती हैं।

विशेषार्थ—जो राशि विरलन देयक्रमसे उत्पन्न होती है उसके अर्धच्छेद विरलितराशिको देयराशिके अर्धच्छेदोंसे गुणा करने पर आते हैं। तथा उसकी वर्गशलाकाएं विरलितराशिके अर्धच्छेदोंमें देयराशिके अर्धच्छेदोंके अर्धच्छेद या वर्गशलाकाएं मिला देने पर होती हैं। गणितके इस नियमके अनुसार जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतानन्तको गुणा कर देने पर जघन्य युक्तानन्तके अर्धच्छेद और जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर जघन्य युक्तानन्तकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होंगी। फिर भी प्रकृतमें जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेद लाना है। परंतु जघन्य अनन्तानन्त जघन्य युक्तानन्तके उपरिम वर्गरूप है, और वर्गसे उपरिम वर्गकी वर्गशलाकाओं और अर्धच्छेदोंको लानेके लिये यह नियम है कि विवक्षित वर्गके अर्धच्छेदोंसे उपरिम वर्गके अर्धच्छेद दूने और विवक्षित वर्गकी वर्गशलाकाओंसे उपरिम वर्गकी वर्गशलाकाएं एक अधिक होती हैं। इसलिये जघन्य युक्तानन्तके अर्धच्छेदोंको दूना कर देने पर जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेद और जघन्य युक्तानन्तकी वर्गशलाकाओंमें एक और मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं

१ विरलिदरासिच्छेदा दिण्णद्धच्छेदछेदसम्मिलिदा। वग्गसलागपमाणं होंति समुप्पण्णरासिस्स॥ त्रि. सा. १०८.

होंगी। इस संपूर्ण व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर यह कहा गया है कि जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी एक अधिक वर्गशलाकाएं मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं और जघन्य परीतानन्तकी द्विगुणित अर्धच्छेदशलाकाओंसे जघन्य परीतानन्तको गुणित कर देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं। इसीप्रकार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेद लानेकी पद्धतिके अनुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिके अर्धच्छेद और वर्गशलाकाओंके संबन्धमें भी समझ लेना चाहिये।

उदाहरण (बीजगणितसे)—

जघन्य परीतानन्तको वर्गितसंवर्गित करनेसे जघन्य युक्तानन्त उत्पन्न होता है। तथा जघन्य युक्तानन्तके वर्गप्रमाण जघन्य अनन्तानन्त है।

मान लो जघन्य परीतानन्तका मान $२^{२^{\text{अ}}}$

परीतानन्तकी वर्गितसंवर्गित राशिके उपरिम वर्ग प्रमाण जघन्य अनन्तानन्त $= २^{२^{२^{\text{अ}} + \text{अ} + १}} = २^{२^{\text{क}}}$ (मान लो)

अनन्तानन्त प्रथमवार वर्गितसंवर्गित $= २^{२^{२^{\text{क}} + \text{क}}} = २^{२^{\text{ख}}}$ (मान लो)

द्वितीयवार वर्गितसंवर्गित $= २^{२^{२^{\text{ख}} + \text{ख}}} = २^{२^{\text{ग}}}$ (मान लो)

तृतीयवार वर्गितसंवर्गित $= २^{२^{२^{\text{ग}} + \text{ग}}}$

२ संख्यासे लेकर जितनीवार वर्ग करनेसे विवक्षित राशि उत्पन्न होती है उतनी उस वर्गराशिकी वर्गशलाकाएं होती हैं। जैसे ४ की वर्गशलाका १ और १६ की २ होती हैं, क्योंकि, २ का एकवार वर्ग करनेसे ४ और २ वार वर्ग करनेसे १६ उत्पन्न होते हैं। तथा विवक्षित राशिको जितनीवार आधा आधा करते हुए एक शेष रहे उतने उस राशिके अर्धच्छेद होते हैं; जैसे १६ के अर्धच्छेद ४ होते हैं। बीजगणितसे $२^{२^{\text{अ}}}$ राशिके अर्धच्छेद $२^{\text{अ}}$ होंगे और वर्गशलाका अ होगी।

दसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा भवंति । एसो वग्गसलागरासी पढमवारवग्गिदसंवग्गिद-रासीदो उवरि एगमवि वग्गट्ठाणं ण च वड्ढिदो, तेणेदेसिं दोण्हं रासीणं वग्गसलागाओ सरिसाओ । एदाणं च वग्गसलागाओ जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जगुणाओ । जदि एसो रासी सव्वजीववग्गसलागरासिणा सरिसो हवदि तो तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासिणा सव्वजीवरासी वि सरिसो होज्ज; ण च एवं । तं कधं ? ' जहण्ण-अणंताणंतं वग्गिज्जमाणे जहण्ण-अणंताणंतस्स हेट्ठिमवग्गणट्ठाणेहिंतो उवरि अणंतगुणवग्गट्ठाणाणि गंतूण सव्व-जीवरासिवग्गसलागा उप्पज्जदि ' त्ति परियम्मे वुत्तं । गुणगारो पि जम्हि जम्हि अणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्ण-अणुक्कस्साणंताणंतयं घेत्तव्वं । ण च तदियवारवग्गिद-

अब आगे इन सब राशियोंकी वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेद लिखे जाते हैं—

	ज. प. अ.	ज. अ. अ.	प्र. व. सं.	द्वि. व. सं.	तृ. व. सं.
प्रमाण	$२^{२^{\text{अ}}}$	$२^{२^{२^{\text{अ}}+\text{अ}+१}}$	$२^{२^{२^{\text{क}}+\text{क}}}$	$२^{२^{२^{\text{ख}}+\text{ख}}}$	$२^{२^{२^{\text{ग}}+\text{ग}}}$
वर्ग श.	अ	$२^{\text{अ}}+\text{अ}+१$	$२^{\text{क}}+\text{क}$	$२^{\text{ख}}+\text{ख}$	$२^{\text{ग}}+\text{ग}$
अर्धच्छेद	$२^{\text{अ}}$	$२^{२^{\text{अ}}+\text{अ}+१}$	$२^{२^{\text{क}}+\text{क}}$	$२^{२^{\text{ख}}+\text{ख}}$	$२^{२^{\text{ग}}+\text{ग}}$

यह तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाराशि प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिसे ऊपर एक भी वर्गस्थानसे वृद्धिको प्राप्त नहीं हुई है, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिके उपरिम वर्गके भीतर ही तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाराशि आती है, इसलिये इन दोनों राशियोंकी, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं और तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाएं समान हैं, जो वर्गशलाकाएं जघन्य परीतानन्तसे असंख्यातगुणी हैं। यदि यह तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाका-राशि संपूर्ण जीवोंकी वर्गशलाकाराशिके समान होती है, ऐसा मान लिया जावे, तो तीनवार वर्गितसंवर्गितराशिके समान संपूर्ण जीवराशि भी हो जावे । परंतु ऐसा है नहीं ।

शंका—यह कैसे ?

समाधान—' जघन्य अनन्तानन्तके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंसे ऊपर अनन्तगुणे वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होती हैं, ' इसप्रकार परिकर्ममें कहा है । गुणकार भी जहां जहां अनन्तरूप देखनेमें आता है वहां वहां अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तरूप गुणकारका ग्रहण करना

संवग्गिदरासिवग्गसलागाओ हेट्ठिमवग्गणट्ठाणेहिंतो उवरि परियम्म-उत्त-अणंतगुणवग्गणट्ठाणाणि गंतूणुप्पण्णाओ, किंतु हेट्ठिमवग्गट्ठाणादो उवरि सादिरेयजहण्ण-परित्ताणंतगुणमद्धाणं गंतूणुप्पण्णाओ। केण कारणेण ? जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाहिंतो विसेसाहियाहि जहण्ण-अणंताणंतस्स वग्गसलागाहि तदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिवग्गसलागाणं वग्गसलागाओ हेट्ठिमअद्धाणेणूणाओ अवहिरिज्जमाणे सादिरेयजहण्णपरित्ताणतमागच्छदि त्ति। ण च जहण्ण-अणंताणंतादो हेट्ठिम-अद्धाणं पडुच्च सादिरेयजहण्णपरित्ताणंतगुणं गंतूण सव्वजीवरासिवग्गसलागाओ उप्पण्णाओ, किंतु अणंताणंतगुणं गंतूण सव्वजीवरासिवग्गसलागाओ[1]। कुदो ? 'अणंताणंतविसए अजहण्णमणुक्कस्स-अणंताणंतेणेव गुणगारेण भागहारेण वि होदव्वं' इदि परियम्मवयणादो। ण च एदस्स जहण्णपरित्ताणंतादो विसेसाहियस्स असंखेज्जत्तमसिद्धं, संते वए णट्ठंतस्स[2] अणंतत्तविरोहादो। ण

चाहिये। परंतु तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानसे ऊपर परिकर्मसूत्रमें कहे गये अनन्तगुणे वर्गस्थान जाकर नहीं उत्पन्न होती हैं, किंतु जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंसे ऊपर कुछ अधिक जघन्यपरीतानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर उत्पन्न होती हैं। इससे प्रतीत होता है कि संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाओंसे तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं अनन्तगुणी न्यून हैं।

शंका — ऐसा किस कारणसे है ?

समाधान—जो कि जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे अधिक हैं ऐसी जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाओंके द्वारा जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानसे न्यून तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाएं अपहृत करने पर कुछ अधिक जघन्य परीतानन्त आता है। परंतु जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंकी अपेक्षा जघन्य अनन्तानन्तसे कुछ अधिक जघन्य परीतानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी-वर्गशलाकाएं नहीं उत्पन्न होती हैं, किंतु जघन्य अनतानन्तसे अनन्तानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होती हैं। क्योंकि, 'अनन्तानन्तके विषयमें गुणकार और भागहार अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तरूप ही होना चाहिये' इसप्रकार परिकर्मसूत्रका वचन है। ऊपर जो जघन्य परीतानन्तसे विशेषाधिक कह आये हैं वह विशेषाधिक असंख्यातरूप है यह बात असिद्ध नहीं है, क्योंकि, व्यय होने पर समाप्त होनेवाली राशिको अनन्तरूप माननेमें विरोध आता है। इसप्रकार कथन करनेसे अर्धपुद्गल

१ तस्मिन्नेकवार वर्गिते द्विकवारानन्तस्य जघन्यमुत्पद्यते। ततोऽनन्तस्थानानि गत्वा वर्गशलाका। त्रि. सा गा. ६९ टीका। तस्मिन्नेकवार वर्गिते जघन्यद्विकवारानतमुत्पद्यते। तत अनंतानतवर्गस्थानानि गत्वा जीवराशेर्वर्गशलाकाराशि। गो जी जी प्र. टी. (पर्याप्तिप्ररूपणा)।

२ प्रतिषु 'णिट्ठतस्स' इति पाठः।

च अद्धपोग्गलपरियट्टेण वियहिचारो, उवयारेण तस्स आणंतियादो। को वा छद्दव्व-पक्खित्तरासी? वुच्चदे- तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासिम्हि—

सिद्धा णिगोदजीवा वणप्फदी कालो य पोग्गला चेय।
सव्वमलोगागास छप्पेदे णतपक्खेवा[1] ॥ १६ ॥

एदे छप्पक्खेवपक्खित्ते छद्दव्वपक्खित्तरासी होदि। एदस्स अजहण्णमणुक्कस्स-अणंताणंतयस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तो[2] मिच्छाइट्ठिरासी। एदं कधं णव्वदि त्ति भणिदे अणंता इदि वयणादो। एदं वयणमसच्चत्तणं किं ण अल्लियदि त्ति भणिदे असच्चकारणुम्मुक्कजिणवयणकमलविणिग्गयत्तादो। ण च पमाणपडिग्गहिओ पयत्थो पमाणंतरेण परिक्खिज्जदि, अवट्ठाणादो।

परिवर्तनके साथ व्यभिचार हो जायगा सो भी बात नहीं है, क्योंकि, अर्धपुद्गलपरिवर्तन कालको उपचारसे अनन्तरूप माना है।

शंका—जिसमें छह द्रव्य प्रक्षिप्त किये गये हैं वह राशि कौनसी है?

समाधान—तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिमें- सिद्ध, निगोदजीव, वनस्पतिकायिक, पुद्गल, कालके समय और अलोकाकाश ये छहो अनन्त राशियां मिला देना चाहिये ॥ १६ ॥

प्रक्षिप्त करने योग्य इन छह राशियोंके मिला देने पर छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि होती है। इसप्रकार तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिसे अनन्तगुणे और छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशिसे अनन्तगुणे हीन इस मध्यम अनन्तानन्तकी जितनी संख्या होती है तन्मात्र मिथ्यादृष्टि-जीवराशि है।

शंका—मिथ्यादृष्टिराशि इतनी है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—सूत्रमें 'अणंता' ऐसा बहुवचनान्त पद दिया है, जिससे जाना जाता है कि मिथ्यादृष्टिराशि मध्यम अनन्तानन्तप्रमाण होती है।

शंका—यह वचन असत्यपनेको क्यों नहीं प्राप्त हो जाता है?

समाधान—असत्य बोलनेके कारणोंसे रहित जिनेन्द्रदेवके मुखकमलसे निकले हुए ये वचन हैं, इसलिये इन्हें अप्रमाण नहीं माना जा सकता। जो पदार्थ प्रमाणप्रसिद्ध है उसकी दूसरे प्रमाणोंके द्वारा परीक्षा नहीं की जाती है, क्योंकि, वह पदार्थ प्रमाणसे अवस्थित है।

१ ति प पत्र ५३ सिद्धा णिगोदसाहियवणप्फदिपोग्गलपमा अणतगुणा। काल अलोगागास छच्चेदेणत-दुक्खेवा ॥ त्रि. सा ४९ सिद्धा निगोअजीवा वणस्सई काल पुग्गला चेव। सव्वमलोगनह पुण तिवग्गिउं केवल-पगमि ॥ क. ग्र. ४, ८५. २ प्रतिपु 'तत्तियाणिमेत्तो' इति पाठः।

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ ३ ॥

किमट्ठं खेत्तपमाणमइक्कम्म कालपमाणं वुच्चदे ? ' जं थूलं अप्पवण्णणीयं तं पुव्वमेव भाणियव्वं ' इदि णायादो । कधं कालपमाणादो खेत्तपमाणं बहुवण्णणिज्जं ? वुच्चदे– खेत्तपमाणे लोगो परूवेदव्वो । सो वि सेढिपरूवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति सेढी परूवेदव्वा । सा वि रज्जुपरूवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जू परूवेदव्वा । रज्जू वि सगच्छेदणाहि विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जुच्छेदणा परूवेदव्वा । ताओ वि दीव-सागरपरूवणाए विणा ण जाणिज्जंति त्ति दीवसागरा परूवेदव्वा त्ति । ण च कालपमाणे एवं महंती परूवणा अत्थि, तदो कालादो खेत्तं सुहुममिदि जाणिज्जदे । के वि आइरिया एवं भणंति बहुवेहि पदेसेहि उवचिदं सुहुममिदि । उत्तं च—

सुहुमो य हवदि कालो तत्तो य सुहुमदर हवदि खेत्त ।
अंगुल-असंखभागे हवंति कप्पा असंखेज्जा[1] ॥ १७ ॥ इदि ॥

कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं ॥ ३ ॥

शंका—क्षेत्रप्रमाणको उल्लंघन करके कालप्रमाणका कथन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—' जो स्थूल और अल्पवर्णनीय होता है उसका पहले ही कथन करना चाहिये ' इस न्यायके अनुसार पहले कालप्रमाणका कथन किया जा रहा है ।

शंका—कालप्रमाणकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाण बहुवर्णनीय कैसे है ?

समाधान—क्षेत्रप्रमाणमें लोक प्ररूपण करने योग्य है । उसका भी जगच्छ्रेणीके प्ररूपणके विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये जगच्छ्रेणीका प्ररूपण करना चाहिये । जगच्छ्रेणीका भी रज्जुके प्ररूपण किये विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये रज्जुका प्ररूपण करना चाहिये । रज्जुका भी उसके अर्धच्छेदोंका कथन किये विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये रज्जुके छेदोंका प्ररूपण करना चाहिये । रज्जुके छेदोंका भी द्वीपों और सागरोंके प्ररूपणके विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये द्वीपों और सागरोंका प्ररूपण करना चाहिये । परंतु कालप्रमाणमें इसप्रकार बड़ी प्ररूपणा नहीं है, इसलिये कालप्रमाणकी प्ररूपणाकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाणकी प्ररूपणा अतिसूक्ष्मरूपसे वर्णित है, यह बात जानी जाती है ।

कितने ही आचार्य ऐसा कथन करते हैं कि जो बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है । कहा भी है—

कालप्रमाण सूक्ष्म है, और क्षेत्रप्रमाण उससे भी सूक्ष्म है, क्योंकि, अंगुलके असंख्या-

१ सुहुमो य होइ कालो तत्तो सुहुमयर हवइ खेत्त । अगुलसेढीमेत्ते ओसप्पिणीओ असखेज्जा ॥ वि. भा. पृ. २४, गा. २१८.

एदं वक्खाणं ण घडदे । कुदो ? खेत्तादो दव्वस्स परूवणपसंगादो । तं कधं ? एक्कम्हि दव्वंगुले अणंतपरमाणुपदेसेहि णिप्फण्णे एगं खेत्तंगुलमोगाहे, गणणं पडुच्च अणंताणि खेत्तंगुलाणि होंति त्ति ।

सुहुम तु हवदि खेत्तं तत्तो य सुहुमदरं हवदि दव्व ।
खेत्तंगुला अणंता एगे दव्वंगुले होंति ॥ १८ ॥ इदि ॥

कधं कालेण मिणिज्जंते मिच्छाइट्ठी जीवा ? अणंताणंताणं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणं समए ठवेदूण मिच्छाइट्ठिरासिं च ठवेऊण कालम्हि एगो समयो मिच्छाइट्ठिरासम्हि एगो जीवो अवहिरिज्जदि । एवमवहिरिज्जमाणे अवहिरिज्जमाणे सव्वे समया अवहिरिज्जंति, मिच्छाइट्ठिरासी ण अवहिरिज्जदि । एत्थ चोदगो भणदि- मिच्छाइट्ठिरासी अवहिरिज्जदु, सव्वे समया ण अवहिरिज्जंति त्ति । केण कारणेण ? कालमाहप्पपरूवयसुत्तदंसणादो । किं तं सुत्तं ? उच्चदे-

तवें भागमें असंख्यात कल्प होते हैं ॥ १७ ॥

परंतु उनका इसप्रकारका व्याख्यान करना घटित नहीं होता है, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर क्षेत्रप्ररूपणाके अनन्तर द्रव्यप्ररूपणाका प्रसंग प्राप्त हो जायगा ।

शंका—यह कैसे ?

समाधान—क्योंकि, अनन्त परमाणुरूप प्रदेशोंसे निष्पन्न एक द्रव्यांगुलमें अवगाहनाकी अपेक्षा एक क्षेत्रांगुल ही है, किंतु गणनाकी अपेक्षा अनन्त क्षेत्रांगुल होते हैं, इसलिये 'जो बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है' यह कहना ठीक नहीं है ।

क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्मतर द्रव्य होता है, क्योंकि, एक द्रव्यांगुलमें अनन्त क्षेत्रांगुल होते हैं ॥ १८ ॥

शंका—कालप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कैसे निकाला जाता है ?

समाधान—एक ओर अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके समयोंको स्थापित करके और दूसरी ओर मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशिको स्थापित करके कालके समयोंमेंसे एक एक समय और उसीके साथ मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणमेंसे एक एक जीव कम करते जाना चाहिये । इसप्रकार उत्तरोत्तर कालके समय और जीवराशिके प्रमाणको कम करते हुए चले जाने पर अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके सब समय समाप्त हो जाते हैं, परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण समाप्त नहीं होता है ।

शंका—यहां पर शंकाकारका कहना है कि मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण भले ही समाप्त हो जाओ परंतु कालके संपूर्ण समय समाप्त नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणकी अपेक्षा कालके समयोंका प्रमाण बहुत अधिक है । इसप्रकारसे प्ररूपण करनेवाला सूत्र भी देखनेमें आता है । वह सूत्र कौनसा है इसप्रकार पूछने पर शंकाकार कहता है—

धम्माधम्मागासा तिण्णि वि तुल्लाणि होंति थोवाणि ।
वड्ढीदु जीवपोग्गलकालागासा अणंतगुणा ॥ १९ ॥

ण एस दोसो, अदीदकालगहणादो । जहा सव्वे लोए[1] पत्थो तिहा विहत्तो, अणागदो वट्टमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अणिप्फण्णो अणागदो णाम । घडिज्जमाणो वट्टमाणो । णिप्फण्णो ववहारजोग्गो अदीदो णाम । तत्थ अदीदेण पत्थेण मिणिज्जंते सव्वबीजाणि । एत्थुवसंहारगाहा—

पत्थो तिहा विहत्तो अणागदो वट्टमाणतीदो य ।
एदेसु अदीदेण दु मिणिज्जदे सव्वबीज तु ॥ २० ॥

तधा कालो वि तिविहो, अणागदो वट्टमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अदीदेण मिणिज्जंते सव्वे जीवा । एत्थुवसंहारगाहा—

कालो तिहा विहत्तो अणागदो वट्टमाणतीदो य ।
एदेसु अदीदेण दु मिणिज्जदे जीवरासी दु ॥ २१ ॥

धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य और लोकाकाश, ये तीनों ही समान होते हुए स्तोक हैं । तथा जीवद्रव्य, पुद्गलद्रव्य, कालके समय और आकाशके प्रदेश, ये उत्तरोत्तर वृद्धिकी अपेक्षा अनन्तगुणे हैं ॥ १९ ॥

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालनेमें अतीत कालका ही ग्रहण किया है ।

जिसप्रकार, सब लोकमें प्रस्थ तीन प्रकारसे विभक्त है, अनागत, वर्तमान और अतीत । उनमेंसे जो निष्पन्न नहीं हुआ है वह अनागत प्रस्थ है, जो बनाया जा रहा है वह वर्तमान प्रस्थ है, और जो निष्पन्न हो चुका है तथा व्यवहारके योग्य है वह अतीत प्रस्थ है । उनमेंसे अतीत प्रस्थके द्वारा संपूर्ण बीज मापे जाते हैं । यहां पर इस विषयकी उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

प्रस्थ तीन प्रकारका है, अनागत, वर्तमान और अतीत । इनमेंसे अतीत प्रस्थके द्वारा संपूर्ण बीज मापे जाते हैं ॥ २० ॥

उसीप्रकार, काल भी तीन प्रकारका है, अनागत, वर्तमान और अतीत । उनमेंसे अतीत कालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण जाना जाता है । यहां पर उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

काल तीन प्रकारका है, अनागतकाल, वर्तमानकाल और अतीतकाल । इनमेंसे अतीतकालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण जाना जाता है ॥ २१ ॥

१ प्रतिषु ' जहा लोए तहा सव्वे लोए ' इति पाठः ।

तेण कारणेण मिच्छाइट्ठिरासी ण अवहिरिज्जदि, सव्वे समया अवहिरिज्जंति। अदीदकालो थोवो मिच्छाइट्ठिरासी बहुगो त्ति कधं णव्वदे? सोलस-पडिय-अप्पाबहुगादो। कधं सोलसपडिय-अप्पाबहुगं? सव्वत्थोवा वट्टमाणद्धा, अभवसिद्धिया अणंतगुणा। को गुणगारो? जहण्णजुत्ताणंतं। सिद्धकालो अणंतगुणो। को गुणगारो? छम्मासट्ठमभागेण रूवाहिएण छिण्ण-अदीदकालस्स अणंतिमभागो। अणाइस्स अदीदकालस्स कधं पमाणं ठविज्जदि? ण, अण्णहा तस्साभावपसंगादो। ण च अणादि त्ति जाणिदे सादित्तं पावेदि, विरोहा। सिद्धा संखेज्जगुणा। को गुणगारो? रूवसद[१]पुधत्तं। असिद्धकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जावलियाओ। अदीदकालो विसेसाहिओ। केत्तियमेत्तेण? सिद्धकालमेत्तेण। भवसिद्धिया मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा। को

इसलिये मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण समाप्त नहीं होता है, परंतु अतीतकालके संपूर्ण समय समाप्त हो जाते हैं।

शंका—अतीतकाल स्तोक है और मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण उससे अधिक है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—सोलह राशिगत अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है कि अतीतकालसे मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण अधिक है।

शंका—सोलह राशिगत अल्पबहुत्व किसप्रकार है?

समाधान—वर्तमानकाल सबसे स्तोक है। अभव्य जीवोंका प्रमाण उससे अनन्तगुणा है। यहां पर गुणकार क्या है? जघन्य युक्तानन्त यहां पर गुणकाररूपसे अभीष्ट है। अभव्यराशिसे सिद्धकाल अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? छह महीनोके अष्टम भागमें एक मिला देने पर जो समयसंख्या आवे उससे भक्त अतीतकालका अनन्तवां भाग गुणकार है।

शंका—अतीतकाल अनादि है, इसलिये उसका प्रमाण कैसे स्थापित किया जा सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यदि उसका प्रमाण नहीं माना जाय तो उसके अभावका प्रसंग आ जायगा। परंतु उसके अनादित्वका ज्ञान हो जाता है, इसलिये उसे सादित्वकी प्राप्ति हो जायगी, सो बात भी नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है।

सिद्धकालसे सिद्ध संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? यहां पर शतप्रथक्त्वरूप गुणकार लेना चाहिये। सिद्ध जीवोंसे असिद्धकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? यहां पर संख्यात आवलिकाएं गुणकार हैं। असिद्धकालसे अतीतकाल विशेष अधिक है। कितना विशेष अधिक है? सिद्धकालका जितना प्रमाण है, उतने विशेषसे अधिक है। अर्थात्

१ क. आ. प्रत्यो. 'दस' इति पाठः।

गुणगारो ? भवसिद्धियमिच्छाइट्ठीणमणंतिमभागो। भवसिद्धिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? तेरसगुणट्ठाणमेत्तेण। मिच्छाइट्ठी विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? तेरसगुणट्ठाणमेत्तेण पमाणेणूण-अभवसिद्धियमेत्तेण। संसारत्था विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? तेरसगुणट्ठाणमेत्तेण। सव्वे जीवा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? सिद्धजीवमेत्तेण। पोग्गलदव्वमणंतगुणं। को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। एसद्धा अणंतगुणा। को गुणगारो ? सव्वपोग्गलदव्वादो अणंतगुणो। सव्वद्धा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? वट्टमाणातीदकालमेत्तेण। अलोगागासमणंतगुणं। को गुणगारो ? सव्वकालादो अणंतगुणो। सव्वागासं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण ? लोगागासपदेसमेत्तेण। जेण अदीदकालादो मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा तेण सव्वे समया अवहिरिज्जंति मिच्छाइट्ठिरासी ण अवहिरिज्जदि

असिद्धकालमें सिद्धकालका प्रमाण मिला देने पर अतीतकालका प्रमाण हो जाता है। अतीतकालसे भव्य मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? भव्य मिथ्यादृष्टियोंका अनन्तवां भाग गुणकार है। भव्य मिथ्यादृष्टियोंसे भव्य जीव विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं ? सासादन गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक जीवोंका जितना प्रमाण है उतने विशेषरूप अधिक हैं। अर्थात् भव्य मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणके मिला देने पर समस्त भव्य जीवोंका प्रमाण होता है। भव्य जीवोंसे सामान्य मिथ्यादृष्टि जीव विशेष अधिक हैं। कितने विशेषरूप अधिक हैं ? अभव्य राशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको कम कर देने पर जो राशि अवशिष्ट रहे उतने विशेषसे अधिक हैं। अर्थात् भव्यराशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवालोंका प्रमाण कम करके अभव्यराशिको मिला देने पर सामान्य मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है। सामान्य मिथ्यादृष्टियोंसे संसारी जीव विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं ? सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका जितना प्रमाण है उतने विशेषसे अधिक हैं। संसारी जीवोंसे संपूर्ण जीव विशेष अधिक हैं ? कितने अधिक हैं ? सिद्ध जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं। संपूर्ण जीवराशिसे पुद्गलद्रव्य अनन्तगुणा है। यहां पर गुणकार क्या है ? यहां पर संपूर्ण जीवराशिसे अनन्तगुणा गुणकार है। पुद्गलद्रव्यसे अनागतकाल अनन्तगुणा है। यहां पर गुणकार क्या है ? यहां पर संपूर्ण पुद्गलद्रव्यसे अनन्तगुणा गुणकार है। अनागतकालसे संपूर्ण काल विशेष अधिक है। कितना अधिक है ? वर्तमान और अतीतकालमात्र विशेषसे अधिक है। सपूर्ण कालसे अलोकाकाश अनन्तगुणा है। यहां पर गुणकार क्या है ? संपूर्ण कालसे अनन्तगुणा यहां पर गुणकार है। अलोकाकाशसे संपूर्ण आकाश विशेष अधिक है। कितना अधिक है ? लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतना विशेषरूप अधिक है। इसप्रकार इस अल्पबहुत्वसे यह प्रतीत हो जाता है कि अतीतकालसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं, अतः अतीतकालके संपूर्ण समय अपहृत हो जाते हैं, परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशि अपहृत नहीं होती है, यह बात सिद्ध हो जाती है।

त्ति सिद्धं । किमट्ठं कालपमाणं वुच्चदे ? मिच्छाइट्ठिरासिस्स मोक्खं गच्छमाणजीवे पडुच्च संते वि वए ण वोच्छेदो होदि त्ति जाणावणट्ठं ।

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ ४ ॥

खेत्तपमाणमुल्लंघिय अप्पवण्णणिज्जं भावपमाणं किमिदि ण परूविज्जदि ? खेत्त-परूवणादो भावपरूवणं महदरमिदि ण परूविज्जदे। तं जहा, भावपमाणं णाम णाणं। तं पि पंचविहं । तत्थ वि एक्केक्कमणेयवियप्पं। तत्थ वि अणेगाओ विप्पडिवत्तीओ त्ति । खेत्तेण कधं मिच्छाइट्ठिरासी मिणिज्जदे ? वुच्चदे– जधा पत्थेण जव गोधूमादिरासी मिणिज्जदि तधा लोएण मिच्छाइट्ठिरासी मिणिज्जदि । एवं मिणिज्जमाणे मिच्छाइट्ठिरासी अणंत-लोगमेत्तो होदि त्ति । एत्थुवउज्जंती गाहा—

पत्थेण कोदवेण व जह कोइ मिणेज्ज सव्वबीजाइं ।
एवं मिणिज्जमाणे हवंति लोगा अणंता दु ॥ २२ ॥

शंका— यहां पर कालकी अपेक्षा प्रमाण किसलिये कहा गया है ?

समाधान—मोक्षको जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा संसारी जीवराशिका व्यय होने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशिका सर्वथा विच्छेद नहीं होता है, इस बातका ज्ञान करानेके लिये यहां पर कालकी अपेक्षा प्रमाण कहा है ।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है ॥ ४ ॥

शंका—यहां पर क्षेत्रप्रमाणका उल्लंघन करके अल्पवर्णनीय भावप्रमाणका प्ररूपण क्यों नहीं किया गया है ?

समाधान—क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपण करनेकी अपेक्षा भावप्रमाणका प्ररूपण अतिविस्तृत है, इसलिये भावप्रमाणका प्ररूपण पहले नहीं किया गया है। भावप्रमाणका प्ररूपण अतिविस्तृत है आगे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं। ज्ञानको भावप्रमाण कहते हैं। वह भी पांच प्रकारका है। उन पांच भेदोंमें भी प्रत्येक अनेक भेदरूप है। उसमें भी अनेक विवाद हैं। इससे सिद्ध होता है कि भावप्रमाणका प्ररूपण क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपणकी अपेक्षा अतिविस्तृत है ।

शंका— क्षेत्रप्रमाणके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशि कैसे मापी, अर्थात् जानी, जाती है ?

समाधान—जिसप्रकार प्रस्थसे जौ, गेहूं आदिकी राशिका माप किया जाता है, उसीप्रकार लोक प्रमाणके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशि मापी अर्थात् जानी जाती है। इसप्रकार लोकके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका माप करने पर वह अनन्त लोकमात्र है। यहां पर इस विषयकी उपयोगी गाथा दी जाती है—

जिसप्रकार कोई प्रस्थसे कोदोंके समान संपूर्ण बीजोंका माप करता है उसीप्रकार मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी लोकसे अर्थात् लोकके प्रदेशोंसे तुलना करने पर मिथ्यादृष्टि जीव-

पत्थेण ताव पत्थबाहिरत्थो पुरिसो पत्थबाहिरत्थाणि बीयाणि मिणेदि। कधं लोएण लोयत्थो पुरिसो लोयत्थं मिच्छाइट्ठिरासिं मिणेदि त्ति? जदो लोगेण पण्णाए मिणिज्जंते मिच्छाइट्ठिजीवा तदो ण एस दोसो। कधं पण्णाए मिणिज्जंते मिच्छाइट्ठिजीवा? वुच्चदे- एक्केक्कम्हि लोगागासपदेसे एक्केक्कं मिच्छाइट्ठिजीवं णिक्खेविऊण एक्को लोगो इदि मणेण संकप्पेयव्वो। एवं पुणो पुणो मिणिज्जमाणे मिच्छाइट्ठिरासी अणंतलोगमेत्तो होदि। एत्थुवसंहारगाहा—

लोगागासपदेसे एक्केक्के णिक्खिवेवि तह दिट्ठं।
एवं गणिज्जमाणे हवंति लोगा अणंता दु ॥ २३ ॥

को लोगो[1] णाम? सेढिघणो। का सेढी[2]? सत्तरज्जुमेत्तायामो। का रज्जू

राशिका प्रमाण लानेके लिये अनन्त लोक होते हैं, अर्थात् अनन्तलोकप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि है ॥ २२ ॥

शंका—प्रस्थसे बहिर्भूत पुरुष प्रस्थसे बहिर्भूत बीजोंको प्रस्थके द्वारा मापता है, यह तो युक्त है, परंतु लोकके भीतर रहनेवाला पुरुष लोकके भीतर रहनेवाली मिथ्यादृष्टि जीवराशिको लोकके द्वारा कैसे माप सकता है?

समाधान—जिसलिये बुद्धिसे संपूर्ण मिथ्यादृष्टि जीव लोकके द्वारा मापे जाते हैं, इसलिये उपर्युक्त दोष नहीं आता है।

शंका—बुद्धिसे मिथ्यादृष्टि जीव कैसे मापे जाते हैं?

समाधान—लोकाकाशके एक एक प्रदेश पर एक एक मिथ्यादृष्टि जीवको निक्षिप्त करके एक लोक हो गया इसप्रकार मनसे संकल्प करना चाहिये। इसप्रकार पुनः पुनः माप करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि अनन्तलोकप्रमाण होती है। इसप्रकार बुद्धिसे मिथ्यादृष्टि जीवराशि मापी जाती है। इस विषयकी यहां पर उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

लोकाकाशके एक एक प्रदेश पर एक एक मिथ्यादृष्टि जीवको निक्षिप्त करने पर जैसा जिनेन्द्रदेवने देखा है उसीप्रकार पूर्वोक्त लोकप्रमाणके क्रमसे गणना करते जाने पर अनन्त लोक हो जाते हैं ॥ २३ ॥

शंका—लोक किसे कहते हैं?

समाधान—जगछ्रेणीके घनको लोक कहते हैं।

शंका—जगछ्रेणी किसे कहते हैं?

समाधान—सात रज्जुप्रमाण आकाश प्रदेशोंकी लंबाईको जगछ्रेणी कहते हैं।

१ जगसेढिघणपमाणो लोयायासो। ति. प. पत्र ४. पयर सेढीए गुणिय लोगो। अनु. सू. पृ. १५९.

२ सेढी त्ति पढ्डच्छेदाण। होदि असखेज्जदिमप्पमाणविंदगुलाण हृदी॥ त्रि. सा. ७. असखेज्जाओ जोयण-कोडाकोडीओ सेढी। अनु. पृ. १५९.

णाम? तिरियलोगस्स मज्झिमवित्थारो। कधं तिरियलोगस्स रुंदत्तणमाणिज्जदे? जत्तियाणि दीवसागररूवाणि जंबूदीवच्छेदणाओ च रूवाहियाओ केसिं च आइरियाणमुवएसेण संखेज्जरूवाहियाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा छिण्णावसिट्ठं गुणिदे रज्जू णिप्पज्जदि। एसो एति सेढीए सत्तमभागो[1]। कम्हि तिरियलोगस्स पज्जवसाणं?

शंका—रज्जु किसे कहते हैं?

समाधान—तिर्यग्लोकके मध्यम विस्तारको रज्जु कहते हैं।

शंका—तिर्यग्लोककी चौड़ाई कैसे निकाली जाती है?

समाधान—जितना द्वीपों और सागरोंका प्रमाण है उनको तथा एक अधिक जम्बूद्वीपके छेदोंको विरलित करके तथा उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे, अर्धच्छेद करनेके पश्चात् अवशिष्ट राशिको गुणित कर देने पर रज्जुका प्रमाण उत्पन्न होता है। अथवा, कितने ही आचार्योंके उपदेशसे जितना द्वीपों और सागरोंका प्रमाण है उसको और संख्यात अधिक जम्बूद्वीपके छेदोंको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे, छेद करनेके पश्चात् अवशिष्ट राशिको गुणा कर देने पर रज्जुका प्रमाण उत्पन्न होता है। यह जगच्छ्रेणीका सातवां भाग आता है।

विशेषार्थ—रज्जुके विषयमें दो मत पाये जाते हैं। कितने ही आचार्योंका ऐसा मत है कि स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिका पर जाकर रज्जु समाप्त होती है। तथा कितने ही आचार्योंका ऐसा मत है कि असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंकी चौड़ाईसे रुके हुए क्षेत्रसे संख्यात गुणे योजन जाकर रज्जुकी समाप्ति होती है। स्वयं वीरसेन स्वामीने इस दूसरे मतको अधिक महत्व दिया है। उनका कहना है कि ज्योतिषियोंके प्रमाणको लानेके लिये २५६ अंगुलके वर्ग प्रमाण जो भागहार बतलाया है उससे यही पता चलता है कि स्वयंभूरमण समुद्रसे संख्यातगुणे योजन जाकर ही मध्यलोककी समाप्ति होती है। इन दोनों मतोंके अनुसार रज्जुका प्रमाण निकालनेके लिये रज्जुके जितने अर्धच्छेद हों उतने स्थानपर २ रखकर परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका अर्धच्छेद करनेके अनन्तर जो भाग अवशिष्ट रहे उससे गुणा कर देना चाहिये। इसप्रकार करनेसे रज्जुका प्रमाण आ जाता है। जितने द्वीप और समुद्र हैं उनमें एक अधिक या संख्यात अधिक जम्बूद्वीपके अर्धच्छेद मिला देने पर रज्जुके अर्धच्छेद हो जाते हैं। इनके निकालनेकी प्रक्रिया इसप्रकार है—

मध्यसे रज्जुके दो भाग करना चाहिये, यह प्रथम अर्धच्छेद है। अनन्तर आधा आधा

१ जगसेढीए सत्तमभागो रज्जू य भासते। ति. प. पत्र ६. जगसेढिसत्तमागो रज्जू। त्रि सा. ७. उद्धारसागराणं अड्ढाइज्जाण जत्तिया समया। दुगुणादुगुणपवित्थर-दीवोदहि रज्ज एवइया॥ बृ क्षे १, ३.

तिण्हं वादवलयाणं वाहिरभागे। तं कधं जाणिज्जदि? 'लोगो वादपदिट्ठिदो' त्ति वियाह-पण्णत्तीवयणादो। सयंभुरमणसमुद्दवाहिरवेदियाए परदो केत्तियमद्धाणं गंतूण तिरियलोग-समत्ती होदि त्ति भणिदे असंखेज्जदीवसमुद्दरुंदरुद्धजोयणेहिंतो संखेज्जगुणाणि गंतूण होदि। एदं कुदो णव्वदे? जोइसियाणं वेछप्पण्णंगुलसदवग्गमेत्तभागहारपरूवयसुत्तादो[1],

करनेसे (पहले मतके अनुसार) दूसरा अर्धच्छेद स्वयंभूरमण समुद्रमें, तीसरा अर्धच्छेद स्वयंभूरमण द्वीपमें, इसप्रकार एक एक अर्धच्छेद उत्तरोत्तर एक एक द्वीप और एक एक समुद्रमें पड़ता है। किन्तु लवण समुद्रमें दो अर्धच्छेद पड़ेंगे। उनमेंसे पहला डेढ़लाख योजन भीतर जाकर और दूसरा पचास हजार योजन भीतर जाकर पड़ता है। इनमेंसे दूसरा अर्ध-च्छेद जम्बूद्वीपत्र। मान लेने पर जितने द्वीप और समुद्र हैं उतने अर्धच्छेदोंका प्रमाण आ जाता है। अन्तमें पचास हजार योजन लवण समुद्रके और इतने ही योजन जम्बूद्वीपके अव-शिष्ट रहते हैं। इनको मिला देने पर एक लाख योजन होता है। इस एक लाख योजनके १७ अर्धच्छेद करने पर एक योजन अवशिष्ट रहता है, जिसके १९ अर्धच्छेद करनेके बाद एक सूच्यंगुल शेष रहता है। पल्यके अर्धच्छेदोंके वर्ग प्रमाण एक सूच्यंगुलके अर्धच्छेद होते हैं। इसप्रकार पहले मतके अनुसार जितने द्वीप और समुद्र हैं उनकी संख्यामें १+१७+१९=३७ अर्धच्छेद अधिक पल्यके अर्धच्छेदोंके वर्ग प्रमाण अर्धच्छेद मिला देने पर रज्जुके कुल अर्धच्छेद होते हैं। तथा दूसरे मतके अनुसार इस संख्यामें संख्यात और मिला देने पर रज्जुके संपूर्ण अर्धच्छेद होते हैं, क्योंकि, इस मतके अनुसार संख्यात अर्धच्छेद हो जानेके बाद स्वयंभूरमण समुद्रमें अर्धच्छेद प्राप्त होता है।

शंका—तिर्यग्लोकका अन्त कहां पर होता है?

समाधान—तीनों वातवलयोंके बाह्य भागमें तिर्यग्लोकका अन्त होता है।

शंका—यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—'लोक वातवलयोंसे प्रतिष्ठित है' इस व्याख्याप्रज्ञप्तिके वचनसे जाना जाता है कि तीनों वातवलयोंके बाह्य भागमें लोकका अन्त होता है।

स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकासे उस ओर कितना स्थान जाकर तिर्यग्लोककी समाप्ति होती है ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंके व्याससे जितने योजन रुके हुए हैं उनसे संख्यात् गुणा जाकर तिर्यग्लोककी समाप्ति होती है।

शंका—यह किससे जाना जाता है?

समाधान—ज्योतिषी देवोंके दोसौ छप्पन अंगुलोंके वर्गमात्र भागहारके प्ररूपक

१ भजिदम्मि सेढिवग्गे वेसयछप्पणअंगुलकदीए। जं लद्धं सो रासी जोदिसियसुराणं सव्वाणं। ति. प. पत्र २०१ तिण्णिसयजोयणाणं वेसदछप्पणअंगुलाणं च। कदिहिदपदरं वेंतरजोइसियाणं च परिमाणं॥ गो. जी. १६०. वेछप्पण्णंगुलसयवग्गपलिभागो पयरस्स। अनु. सू. १४२. पृ. १९२.

'दुगुणदुगुणो दुवग्गो णिरंतरो तिरियलोगे' त्ति तिलोयपण्णत्तिसुत्तादो य णव्वदे। ण च एदं वक्खाणं जत्तियाणि दीवसागररूवाणि जंबूदीवछेदणाणि च रूवाहियाणि त्ति परियम्म-सुत्तेण सह विरुज्झइ, रूवेहि अहियाणि रूवाहियाणि त्ति गहणादो। अण्णाइरिय-वक्खाणेण सह विरुज्झदि त्ति ण, एदस्स वक्खाणस्स जं भदत्तं तेण वक्खाणाभासेण विरुद्धदाए एदस्स समवट्ठाणादो। तं वक्खाणाभासमिदि कुदो णव्वदे? जोइसियभाग-हारसुत्तादो चंदाइच्चबिंबपमाणपरूवयतिलोयपण्णत्तिसुत्तादो[1] च। ण च सुत्तविरुद्धं वक्खाणं होइ, अइप्पसंगादो। किं च ण तं वक्खाणं घडदे, तम्हि वक्खाणे अवलंबिज्जमाणे सेढीए सत्तमभागम्हि अट्ठसुण्णदंसणादो। ण च सेढीए सत्तमभागम्हि अट्ठसुण्णओ अत्थि, तदत्थित्तविहाययसुत्ताणुवलंभादो। तदो तत्थ अट्ठसुण्णविणासणट्ठं केत्तिएण वि रासिणा

सूत्रसे और 'तिर्यग्लोकमें दोके वर्गसे लेकर उत्तरोत्तर दूना दूना है' इस त्रिलोकप्रज्ञप्तिके सूत्रसे जाना जाता है कि असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंके व्याससे रुके हुए क्षेत्रसे संख्यातगुणा जाकर तिर्यग्लोककी समाप्ति होती है। और यह व्याख्यान 'जितने द्वीपों और सागरोंकी संख्या है और जम्बूद्वीपके रूपाधिक जितने छेद हैं उतने राजुके अर्धच्छेद हैं' परिकर्म सूत्रके इस व्याख्यानके साथ भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, वहां पर रूपसे अधिक अर्थात् एकसे अधिक ऐसा ग्रहण न करके रूपसे अधिक अर्थात् बहुत प्रमाणसे अधिक ऐसा ग्रहण किया है।

शंका — यह व्याख्यान अन्य आचार्योंके व्याख्यानके साथ तो विरोधको प्राप्त होता है?

समाधान - नहीं, क्योंकि, यह व्याख्यान जिसलिये संगत है इसलिये दूसरे व्याख्यानाभासोंसे इसके विरुद्ध पड़ने पर भी यह व्याख्यान प्रमाणरूपसे अवस्थित ही रहता है।

शंका—अन्य आचार्योंका व्याख्यान व्याख्यानाभास है यह कैसे जाना जाता है?

समाधान — ज्योतिषियोंके भागहारके प्ररूपक सूत्रसे और चन्द्र तथा सूर्यके बिम्बोंके प्रमाणके प्ररूपक त्रिलोकप्रज्ञप्तिके सूत्रसे जाना जाता है कि पूर्वोक्त व्याख्यानके विरुद्ध जो अन्य आचार्योंका व्याख्यान पाया जाता है वह व्याख्यानाभास है। और सूत्रविरुद्ध व्याख्यान ठीक नहीं कहा जा सकता है, अन्यथा अतिप्रसंग दोष आ जायगा। तथा वह अन्य आचार्योंका व्याख्यान घटित भी तो नहीं होता है, क्योंकि, उस व्याख्यानके अवलम्बन करने पर जगच्छ्रेणीके सप्तम भागका जो प्रमाण बतलाया है उसके अन्तमें आठ शून्य दिखाई देते हैं। परंतु जगच्छ्रेणीके सप्तम भागरूप प्रमाणमें अन्तके आठ शून्य नहीं पाये जाते हैं, क्योंकि, अन्तमें आठ शून्योंके अस्तित्वका विधायक कोई सूत्र नहीं पाया जाता है। इसलिये

१ अट्ठचउदुतितिसत्तचासत्त य ठाणेसु णव सुण्णाणि। छत्तीससत्तदुणवअट्ठा तिचउक्का होंति अंककमा॥ एदेहि गुणिदसंखेज्जरूवपदरंगुलेहिं भजिदाए। सेढिकदीए लद्धं माण चंदाण जोइसिंदाण॥ तेत्तियमेत्ताणि रविणो हवंति॥ १२, १३, १४॥ ति. प. पत्र २०१.

अहिएण होदव्वं। होंतो वि असंखेज्जभागब्भहिओ संखेज्जभागब्भहिओ वा ण होदि, तदणुग्गहकारिसुत्ताणुवलंभादो। तदो दीवसमुद्दरुद्धखेत्तायामादो संखेज्जगुणेण बाहिर-खेत्तेण होदव्वमण्णहा पुव्वुत्तसुत्तेहि सह विरोहप्पसंगादो¹। 'जो मच्छो जोयणसहस्सिओ सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तडे वेयणसमुग्घाएण समुहदो काउलेस्सियाए लग्गो'² त्ति एदेण वेयणासुत्तेण सह विरोहो किण्ण होदि त्ति भणिदे ण, सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिर-वेदियादो परभागट्ठिदपुढवीए बाहिरिल्लतडत्तणेण गहणादो। तो वि काउलेस्सियाए महामच्छो ण लग्गदि त्ति णासंकणिज्जं, पुढविट्ठिदपदेसम्हि चेव हेट्ठा वादवलयाणम-

रज्जुके प्रमाणके अन्तमें बतलाये हुए आठ शून्योंके नष्ट करनेके लिये जो कुछ भी राशि हो वह अधिक ही होना चाहिये। अधिक होती हुई भी वह राशि असंख्यातवांभाग अधिक अथवा संख्यातवांभाग अधिक तो हो नहीं सकती है, क्योंकि, इसप्रकारके कथनकी पुष्टि करनेवाला कोई सूत्र नहीं पाया जाता है। इसलिये जितने क्षेत्र-विस्तारको द्वीपों और समुद्रोंने रोक रक्खा है उससे संख्यातगुणा बाहिरी अर्थात् अन्तके समुद्रसे उस ओरका क्षेत्र होना चाहिये, अन्यथा पहले कहे गये सूत्रोंके साथ विरोधका प्रसंग आ जायगा।

'जो एक हजार योजनका महामत्स्य है वह वेदनासमुद्घातसे पीड़ित हुआ स्वयंभूरमण समुद्रके बाह्य तट पर कापोतलेश्या अर्थात् तनुवातवलयसे लगता है, इस वेदनाखंडके सूत्रके साथ पूर्वोक्त व्याख्यान विरोधको क्यों नहीं प्राप्त होता है ऐसा किसीके पूछने पर आचार्य कहते हैं कि फिर भी इस कथनका पूर्वोक्त कथनके साथ विरोध नहीं आता है, क्योंकि, यहां पर 'बाह्य तट' इस पदसे स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकाके परभागमें स्थित पृथिवीका ग्रहण किया गया है।

शंका—यदि ऐसा है तो महामत्स्य कापोतलेश्यासे संसक्त नहीं हो सकता है?

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, पृथिवीस्थित प्रदेशोंमें अध-स्तन वातवलयका अवस्थान रहता ही है।

विशेषार्थ—यहां ऐसा अभिप्राय जानना चाहिये कि समुद्रकी वेदिका और

१ रूवाहियदीवसागररूवाणि विरलिय विग करिय अण्णोण्णब्भत्थ काढूण तत्थ तिण्णि रूवाणि अवणिय जोयणलक्खेण गुणिदे दीवसमुद्दरुद्धतिरियलोगखेत्तायामुप्पत्तीदो। ण च एत्तियो चेव तिरियलोगविक्खंभो जगसेढीए सत्तमभागम्मि पचसुण्णाणुवलमादो। ण च एदम्हादो रज्जुविक्खमो ऊणो होदि रज्जुअब्भतरभूदस्स चउव्वीसजोयणमेत्त-वादरुद्धक्खेत्तस्स वज्झाणुवलमादो। ण च तेत्तियमेत्त पक्खित्ते पंचसुण्णओ फिट्टंति तहाणुवलमादो। तम्हा सयलदीव-सायरविक्खादो बाहिं केत्तिएण वि खेत्तेण होदव्व। धवला. ८८१. ति. प. प २२५.

२ जो मच्छो जोयणसहस्सओ सयभुरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तड आच्छिदो॥ ८॥ वेयणसमुग्धादेण समुहदो॥ ८॥ काउलेस्सियाए लग्गो, काउलेस्सिया णाम तदियो वादवलओ॥ ९॥ सू. धवला. पत्र ८८१-८८२

वट्टाणादो[1]। एसो अत्थो जइवि पुव्वाइरियसंपदायविरुद्धो तो वि तंतजुत्तिबलेण अम्हेहिं परूविदो। तदो इदमित्थं वेत्ति णेहासंगहो कायव्वो, अइंदियत्थविसए छदुमत्थवियप्पिदजुत्तीणं णिण्णयहेउत्ताणुववत्तीदो। तम्हा उवएसं लद्धूण विसेसणिण्णयो एत्थ कायव्वो त्ति। खेत्तपमाणपरूवणं किमट्ठं कीरदे? असंखेज्जपदेसे लोगागासे अणंतलोगमेत्तो वि जीवरासी सम्माइ त्ति जाणावणट्ठं। अट्ठसु माणेसु लोगपमाणेण मिणिज्जमाणे एत्तियलोगा होंति त्ति जाणावणट्ठं वा। तो वि ते केत्तिया होंति त्ति भणिदे एगलोगेण मिच्छाइट्ठिरासिम्हि भागे हिदे लद्धरूवमेत्ता लोगा होंति।

तिण्हं पि अधिगमो भावपमाणं ॥ ५ ॥

वातवलयके मध्यभागमें जो पृथिवी है वहां वातवलयकी संभावना है। और इसलिये महामत्स्य वेदनासमुद्घातके समय उससे स्पर्श कर सकता है। इसलिये स्वयंभूरमणकी बाह्य वेदिकाके उस ओर असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंके व्याससे संख्यातगुणी पृथिवीके सिद्ध हो जाने पर भी 'वेदनासमुद्घातसे पीड़ित हुआ महामत्स्य वातवलयसे संलग्न होता है' वेदनाखंडके इस वचनके साथ उक्त कथनका कोई विरोध नहीं आता है।

यद्यपि यह अर्थ पूर्वाचार्योंके संप्रदायके विरुद्ध है, तो भी आगमके आधारपर युक्तिके बलसे हमने (वीरसेन आचार्यने) इस अर्थका प्रतिपादन किया है। इसलिये यह अर्थ इसप्रकार भी हो सकता है, इस विकल्पका संग्रह यहां पर छोड़ना नहीं चाहिये, क्योंकि, अतीन्द्रिय पदार्थोंके विषयमें छद्मस्थ जीवोंके द्वारा कल्पित युक्तियोंके विकल्प रहित निर्णयके लिये हेतुता नहीं पाई जाती है। इसलिये उपदेशको प्राप्त करके इस विषयमें विशेष निर्णय करना चाहिये।

शंका—यहां पर क्षेत्रप्रमाणका प्ररूपण किसलिये किया है?

समाधान—असंख्यात प्रदेशी लोकाकाशमें अनन्तलोकप्रमाण जीवराशि समा जाती है इस बातके ज्ञान करानेके लिये यहां पर क्षेत्रप्रमाणका प्ररूपण किया है। अथवा, आठ प्रकारके प्रमाणोंमेंसे लोकप्रमाणके द्वारा जीवोंकी गणना करने पर इतने लोक हो जाते हैं इस बातके ज्ञान करानेके लिये यहां पर क्षेत्रप्रमाणका प्ररूपण किया है। तो भी वे लोक कितने होते हैं ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि एक लोकका अर्थात् एक लोकके जितने प्रदेश हैं उनका मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें भाग देने पर जितनी संख्या लब्ध आवे तत्प्रमाण लोक होते हैं।

उपर्युक्त तीनों प्रमाणोंका ज्ञान ही भावप्रमाण है॥ ५॥

---

१ मायत्थो पुव्ववेरियदेवेण महामच्छो सयमुरमणबाहिरवेइयाए बाहिरे भागे लोगणालीए सामीवे पुचीदो। तत्थ तिव्ववेयणावसेण वेयणसमुग्घादेण समुग्घादो जाव लोगणालीए बाहिरपेरतो लग्गो त्ति इत्त होदि। धवला. पत्र. ८८२.

अधिगमो णाणपमाणमिदि एगट्ठो। सो वि अधिगमो पंचविधो मदि-सुद-ओहि-मणपज्जव-केवलणाणभेदेण। एक्केक्कं तिविहं दव्व-खेत्त-कालभेएण। दव्वत्थिविसयणाणं दव्वभावपमाणं। खेत्तविसिट्ठदव्वस्स णाणं खेत्तभावपमाणं। तहा कालस्स वि वत्तव्वं। सुत्ते भावपमाणं ण वुत्तं ? ण, तस्स अणुत्तसिद्धीदो। ण च भावपमाणमंतरेण तिण्हं पमाणाणं सिद्धी भवदि, सहियपमाणाभावे गउणपमाणस्सासंभवादो, भावपमाणं बहु-वण्णणीयमिदि वा हेदुवादाहेदुवादाणं अवधारणसिस्साणमभावादो वा। अधवा एयं भावपमाणं वत्तव्वं। तं जहा– मिच्छाइट्ठिरासिणा सव्वपज्जए भागे हिदे जं भागलद्धं तं भागहारमिदि कट्टु सव्वपज्जयस्सुवरि खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि वत्तव्वाणि। तं जहा– सव्वपज्जए भागहारमेत्ते खंडे कदे तत्थ एगखंडपमाणं मिच्छाइट्ठिरासी होदि। खंडिदं गदं। तेणेव भागहारेण सव्वपज्जए भागे हिदे भागलद्धपमाणं मिच्छा-इट्ठिरासी होदि। भाजिदं गदं। तं चेव भागहारं विरलेदूण सव्वपज्जयं समखंडं कादूण

अधिगम और ज्ञानप्रमाण ये दोनों एकार्थवाची शब्द हैं। वह ज्ञानप्रमाण भी मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञानके भेदसे पांच प्रकारका है। तथा उन पांचोंमेंसे प्रत्येक ज्ञानप्रमाण द्रव्य, क्षेत्र और कालके भेदसे तीन तीन प्रकारका है। उन तीनोंमेंसे द्रव्योंके अस्तित्व विषयक ज्ञानको द्रव्यभावप्रमाण कहते हैं। क्षेत्रविशिष्ट द्रव्यके ज्ञानको क्षेत्रभावप्रमाण कहते हैं। इसीप्रकार कालभावप्रमाणके विषयमें भी जानना चाहिये।

शंका— सूत्रमें भावप्रमाणका स्वतंत्र कथन नहीं किया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उसकी विना कहे ही सिद्धि हो जाती है। दूसरे भाव-प्रमाणके विना शेष तीन प्रमाणोंकी सिद्धि भी नहीं हो सकती है, क्योंकि, योग्य अर्थात् मुख्य प्रमाणके अभावमें गौणप्रमाणका होना असंभव है। अथवा, भावप्रमाण बहुवर्णनीय है, अथवा, हेतुवाद और अहेतुवादके अवधारण करनेवाले शिष्योंका अभाव होनेसे सूत्रमें स्वतन्त्ररूपसे भावप्रमाणका कथन नहीं किया है।

अथवा, इस भावप्रमाणका कथन करना चाहिये। वह इस प्रकार है, मिथ्यादृष्टि जीवराशिका संपूर्ण पर्यायोंमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसे भागहाररूपसे स्थापित करके संपूर्ण पर्यायोंके ऊपर खंडित, भाजित, विरलित और अपहृत इनका कथन करना चाहिये। आगे उन्हीं चारोंका स्पष्टीकरण करते हैं—

संपूर्ण पर्यायोंके भागहारप्रमाण खंड करने पर जितने खंड आवें, उनमेंसे एक खण्डका जितना प्रमाण हो तन्मात्र मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। इसप्रकार खण्डितका वर्णन समाप्त हुआ।

पूर्वोक्त भागहारका ही संपूर्ण पर्यायोंमें भाग देने पर जो भजनफल लब्ध आवे तत्प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ।

पूर्वोक्त भागहारको ही विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर

दिण्णे तत्थ बहुखंडाणि छोड्डिय एगखंडगहिदे मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि । विरलिदं गदं । तं चेव भागहारं सलागभूदं ठवेदूण मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं सव्वपज्जए अवहिरिज्जदि, सलागादो एगरूवं अवणिज्जदि । पुणो मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं सव्वपज्जयम्मि अवहिरिज्जदि, सलागादो एगं रूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो कीरमाणे सव्वपज्जओ व सलागाओ च जुगवं णिट्ठिदाओ । तत्थ एगवारमवहारिदपमाणं मिच्छाइट्ठिरासी होदि । अवहिदं गदं । मिच्छाइट्ठिरासिस्स पमाणविसए सोदाराणं णिच्छयुप्पायणट्ठं मिच्छाइट्ठिरासिस्स पमाणपरूवणं वग्गट्ठाणे खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि वत्तइस्सामो । सुत्ताभावे कधमेदं वुच्चदे ? सुत्तेण सूचिदत्तादो । तं जहा—

सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणं मिच्छाइट्ठिरासिभाजिदसिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणवग्गं च

संपूर्ण पर्यायोंके समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर उनमेंसे बहुत खण्डोंको छोड़कर और एक खण्डके ग्रहण करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है। इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ।

उसी भागहारको शलाकारूपसे स्थापित करके संपूर्ण पर्यायोंमेंसे मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणको कम करना चाहिये, एकवार कम किया इसलिये शलाकाराशिमेंसे एक घटा देना चाहिये। दूसरीवार मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणको शेष संपूर्ण पर्यायोंमेंसे घटा देना चाहिये। दूसरीवार मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणको कम किया इसलिये शलाका राशिमेंसे एक और कम कर देना चाहिये। इसप्रकार पुन पुनः करने पर संपूर्ण पर्यायें और उसीप्रकार शलाकाराशि युगपत् समाप्त हो जाती हैं। यहां पर संपूर्ण पर्यायोंमेंसे जितना प्रमाण एकवार घटाया गया है तत्प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। इसप्रकार अपहृतका कथन समाप्त हुआ।

अब आगे मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशिके विषयमें श्रोताओंको निश्चय उत्पन्न करानेके लिये वर्गस्थानमें खण्डित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्पके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण बतलाते हैं।

शंका—वर्गस्थानमें खण्डित आदिकके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपक सूत्र नहीं होने पर इसका कथन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—सूत्रसे सूचित होनेके कारण इसका कथन किया है, जो इसप्रकार है—

सिद्ध और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिको तथा सिद्ध और तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके वर्गमें मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणका भाग देने पर

सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खिविय तस्स धुवरासि त्ति णामं कादूण ठवेदव्वो $\frac{२५६}{१३}$। सव्व-जीवरासिउवरिमवग्गे २५६ धुवरासिपमाणमेत्तखंडे कदे तत्थ एगखंडं १३ मिच्छाइट्ठि-रासिपमाणं होदि। खंडिदं गदं। धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तं मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि। भाजिदं गदं। धुवरासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे समखंडं कादूण दिण्णे एगखंडपमाणं मिच्छाइट्ठिरासी

जो लब्ध आवे उसको संपूर्ण जीवराशिमें मिला देने पर जितना प्रमाण हो उसकी ध्रुवराशि $\frac{२५६}{१३}$ ऐसी संज्ञा करके स्थापित कर देना चाहिये।

उदाहरण (वीजगणितसे)—

जीवराशि = अ + ब; सिद्धतेरहगुणस्थानवर्ती राशि = अ, मिथ्यादृष्टि जीवराशि = ब.

इन संकेतोंसे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार ध्रुवराशि निम्न आती है—

$$अ + \frac{अ^२}{ब} + (अ + ब) = \frac{अ^२ + २अब + ब^२}{ब} = \frac{(अ + ब)^२}{ब} \text{ ध्रुवराशि}$$

$$\text{(अकगणितसे)} - ३ + \frac{९}{१३} + १६ = \frac{३९ + ९ + २०८}{१३} = \frac{२५६}{१३} \text{ ध्रुवराशि}$$

इसप्रकार ध्रुवराशिका जितना प्रमाण है ($\frac{२५६}{१३}$) उतने संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्ग २५६ के खण्ड करने पर उनमेंसे एक खण्ड १३ मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है। इसप्रकार खण्डितका कथन समाप्त हुआ।

संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें ध्रुवराशिका भाग देने पर जितना भजनफल आवे उतना मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है। इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण (भाजित)— $२५६ - \frac{२५६}{१३} = \frac{२५६}{१} \times \frac{१३}{२५६} = १३$ मिथ्यादृष्टि राशि।

ध्रुवराशिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एक पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर उनमेंसे एक खण्डप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण (विरलित)— ध्रुवराशि $\frac{२५६}{१३} = १९\frac{९}{१३}$

ध्रुवराशिका विरलन और जीवराशिके उपरिम वर्गके समान खंड करके स्थापित करना

१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	९
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	$\frac{९}{१३}$

होदि। विरलिदं गदं। तं चेव धुवरासिं सलागभूदं ठवेऊण मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं सव्वजीवरासिउवरिमवग्गम्हि अवणीय धुवरासीदो एगरूवमवणिज्जदि। पुणो वि मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गम्हि अवणीय धुवरासीदो एगं रूवमवणिज्जदि। एवं पुणो पुणो कीरमाणे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो च धुवरासी च जुगवं णिट्ठिदा। तत्थ एगवारमवणिदपमाणं मिच्छाइट्ठिरासी होदि। अवहिदं गदं। तस्स पमाणं केत्तियं ? सव्वजीवरासिस्स अणंता भागा अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि त्ति। तं जहा—

सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सव्वजीवरासिं समखंडं

अतः एक खंड १३ प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि हुई।

पूर्वोक्त ध्रुवराशिको शलाकारूपसे स्थापित करके और मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणको संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रमाणमेंसे निकालकर शलाकाभूत ध्रुवराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। फिर भी मिथ्यादृष्टि राशिके प्रमाणको शेष संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रमाणमेंसे न्यून करके ध्रुवराशिमें एक और कम कर देना चाहिये। इसप्रकार पुनः पुनः करने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग और ध्रुवराशि युगपत् समाप्त हो जाती है। इनमें एकवार निकाली हुई राशिका जितना प्रमाण हो उतनी मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। इसप्रकार अपहृतका वर्णन समाप्त हुआ।

उदहारण (अपहृत)—

शलाकारूप ध्रुवराशि	१९ ९/१३	जीवराशिका उपरिम वर्ग	२५६
	−१		−१३
	१८ ९/१३		२४३
	−१		−१३
	१७ ९/१३		२३०

इस क्रमसे उपरिम वर्गमेंसे मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण और ध्रुवराशिमेंसे एक एक घटाते जाने पर शलाकाराशि और उपरिम वर्गराशि एक साथ समाप्त होंगे। इनमें एकवार घटाई जानेवाली संख्या १३ प्रमाण मिथ्यादृष्टि हैं।

शंका—उस मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण कितना है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके अनन्त बहुभागप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है, जो प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलोंके बराबर होता है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक

काऊण दिण्णे रूवं पडि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलपमाणं पावदि । पुणो सिद्धतेरसगुणट्ठाणेहि भजिदसव्वजीवरासिपढमवग्गमूलं पुव्वविरलणाए हेट्ठा विरलिय उवरिमविरलणाए एगपढमवग्गमूलं घेत्तूण समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणं पावेदि । तत्थुवरिमविरलणयरूवूणमेत्तसव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तसिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणाणि च घेत्तूण मिच्छाइट्ठिरासी होदि । पमाणं गदं । केण कारणेण ? सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? सव्व-

एकके ऊपर जीवराशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति संपूर्ण जीवराशिका प्रथम वर्गमूल प्राप्त होता है। अनन्तर सिद्धराशि और सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे पहले विरलनके नीचे विरलित करके उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलको ग्रहण करके और उसके समान खण्ड करके अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर देयरूपसे स्थापित करने पर प्रत्येक एकके प्रति सिद्धराशि और सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर उपरिम विरलनमें प्ररूपण किये गये संपूर्ण जीवराशिके एक कम प्रथम वर्गमूलोंको और एक कम अधस्तन विरलनमात्र सिद्ध और सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको मिला देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है। इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण (प्रमाण)— जीवराशि = १६; प्रथम वर्गमूल=४; सिद्धतेरस=३

(१ विरलन वर्गमूल) $\begin{matrix} ४ & ४ & ४ & ४ \\ १ & १ & १ & १. \end{matrix}$ $\frac{४}{३} = १\frac{१}{३}$ सिद्धतेरसका प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर लब्ध

(२ विरलन) $\begin{matrix} ३ & १ \\ १ & \frac{१}{३} \end{matrix}$

(अतः मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण प्रथम विरलनकी शेष तीन राशियां ४+४+४=१२ और दूसरे विरलनमें प्रथम राशि (सिद्धतेरस) को छोड़कर दूसरी राशि १ मिला देने पर मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण १२+१=१३ आ जाता है।)

किस कारणसे ?

शंका— संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान— संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशि ही आती है।

उदाहरण (बीजगणितसे)— जीवराशि = क; $\frac{क^२}{क} = क$

जीवरासी चेव आगच्छदि। दुभागब्भहियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? तिभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि। केण कारणेण ? सव्वजीवरासिवग्गक्खेत्तं पुव्वावरायामेण तिण्णि खंडाणि करिय तत्थेगखंडं घेत्तूण खंडं करिय संधिदे सव्वजीवरासिदुभागवित्थार वेंति। भागायामखेत्तं होदि। एदं अहिय-विरलणाए दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स तिभागहीणसव्वजीवरासी पावेदि। तिभागब्भहिय-सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? चउब्भागहीण-

(अङ्कगणितसे)—२५६ – १६ = १६

शंका—दूसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—तीसरा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है।

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{क}{क + \frac{क}{२}} = \frac{२}{३} क = क - \frac{क}{३}$

(अंकगणितसे)— १६ का दूसरा भाग ८ है; अतः द्वितीय भाग ८ अधिक १६ = २४ का २५६ में भाग देने पर $१०\frac{२}{३}$ आता है, जो जीवराशि १६ का तीसरा भाग हीन है।

शंका—दूसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीसरा भाग हीन जीवराशि किस कारणसे आती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके वर्गरूप क्षेत्रके पूर्व और पश्चिमके विस्तारसे तीन खंड करके और उनमेंसे एक खंड ग्रहण करके उसके भी दो खंड करके संधित अर्थात् प्रसारित कर देने पर संपूर्ण जीवराशिका दूसरा भागरूप विस्तार जाना जाता है। यही भागायाम क्षेत्र है। इसको अधिक विरलन राशिके प्रत्येक एकके ऊपर देयरूपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति तीसरा भागहीन संपूर्ण जीवराशि प्राप्त होती है।

शंका—तीसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान—चौथा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है। यहां पर भी कारणका पहलेके समान कथन करना चाहिये। अर्थात् संपूर्ण जीवराशिके वर्गरूप क्षेत्रके पूर्व और पश्चिम विस्तारसे चार खण्ड करके और उनमेंसे एक खण्डके तीन खण्ड करके प्रसारित कर देने पर संपूर्ण जीवराशिका तीसरा भागरूप विस्तार जाना जाता है। अनन्तर इन खण्डोंको

सव्वजीवरासी आगच्छदि। एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। एवं संखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि? संखेज्जभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि। उक्कस्ससंखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि? जहण्णपरित्तासंखेज्जभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि। असंखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि? असंखेज्जभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि। उक्कस्स-असंखेज्जासंखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि? जहण्णपरित्ताणंतभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि।

अधिक विरलन राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दे देने पर चौथा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आ जाती है।

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{क^२}{क + \frac{क}{३}} = \frac{३}{४} क = क - \frac{क}{४}$

(अंकगणितसे)—(१६ का तीसरा भाग $५\frac{१}{३}$ है, अतः तृतीय भाग $५\frac{१}{३}$+१६=$२१\frac{१}{३}$ का २५६ में भाग देने पर १२ आते हैं, जो जीवराशि १६ का चौथा भाग हीन है।)

शंका— इसीप्रकार संख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है?

समाधान – संख्यातवां भागहीन संपूर्ण जीवराशि आती है।

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{क^२}{क + \frac{क}{न}} = \frac{न}{न + १} क = क - \frac{क}{न + १}$ (संख्यात = न)

शंका— उत्कृष्ट संख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है?

समाधान जघन्य परीतासंख्यातवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है।

शंका— असंख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है?

समाधान— असंख्यातवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है।

शंका-- उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है?

समाधान—जघन्य परीतानन्तवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है।

अणंतभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? अणंतभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । सव्वत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एत्थ उवउज्जंतीओ गाहाओ—

अवहारवड्ढिरूवाणवहारादो हु लद्धअवहारो ।
रूवहिओ हाणीए होदि हु वड्ढीए विवरीदो ॥ २४ ॥

अवहारविसेसेण य छिण्णवहारादु लद्धरूवा जे ।
रूवाहियऊणा वि य अवहारो हाणिवड्ढीण ॥ २५ ॥

लद्धविसेसच्छिण्ण लद्धं रूवाहिऊणय चावि ।
अवहारहाणिवड्ढीणवहारो सो मुणेयव्वो ॥ २६ ॥

शंका— अनन्तवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—अनन्तवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है । सर्वत्र कारणका कथन पहलेके समान करना चाहिये । अब यहां पर उपयुक्त गाथाएं दी जाती हैं—

भागहारमें उसीके वृद्धिरूप अंशके रहने पर भाग देनेसे जो लब्ध भागहार (हर) आता है वह हानिमें रूपाधिक और वृद्धिमें इससे विपरीत अर्थात् एक कम होता है ॥ २४ ॥

उदाहरण (वीजगणितसे)—

$$(१)\quad \frac{क^२}{क+\frac{क}{न}} = क - \frac{क}{न+१}, \qquad (२)\ \frac{क^२}{क-\frac{क}{न}} = क + \frac{क}{न-१}$$

(अंकगणितसे)— $(१)\ \frac{१}{१+\frac{१}{२}} = \frac{२}{३} = १ - \frac{१}{३}$ $(२)\ \frac{१}{१-\frac{१}{३}} = \frac{३}{२} = १ + \frac{१}{२}$

भागहार विशेषसे भागहारके छिन्न अर्थात् भाजित करने पर जो संख्या आती है उसे रूपाधिक अथवा रूपन्यून कर देने पर वह क्रमसे हानि और वृद्धिमें भागहार होता है ॥ २५ ॥

लब्ध विशेषसे लब्धको छिन्न अर्थात् भाजित करने पर जो संख्या उत्पन्न हो उसे एक अधिक अथवा एक कम कर देने पर वह क्रमसे भागहारकी हानि और वृद्धिका भागहार होता है ॥ २६ ॥

उदाहरण गाथा २५-२६ के (वीजगणितसे)— $\frac{क}{ब} = प;$ $\frac{क}{स} = म;$

लद्धंतरसंगुणिदे अवहारे भज्जमाणरासिम्हि ।
पक्खित्ते उप्पज्जइ लद्धस्सहियस्स जो रासी ॥ २७ ॥

हारान्तरहृतहाराल्लब्धेन हतस्य[1] पूर्वलब्धस्य ।
हारहृतभाज्यशेषः से[2] चान्तरं हानिवृद्धी स्तः ॥ २८ ॥

$$\text{वृद्धिका—}\ \frac{क}{प+म} = \frac{क}{प\left(१+\frac{म}{प}\right)} = \frac{\frac{क}{प}}{१+\frac{ब}{स}} = \frac{ब}{१+\frac{ब}{स}}.$$

$$\text{हानिका—}\ \frac{क}{प-म} = \frac{क}{म\left(\frac{प}{म}-१\right)} = \frac{\frac{क}{म}}{\frac{प}{म}-१} = \frac{स}{\frac{स}{ब}-१}$$

(अंकगणितसे) —

वृद्धिका– $\frac{३६}{९}$ = ४; $\frac{३६}{६}$ = ६; $\frac{९}{६}$ छिन्न अवहार + १ = $\frac{३}{२}$ + १ = $\frac{५}{२}$,
९–$\frac{५}{२}$ = $\frac{१८}{५}$ हानिरूप अवहार। ३६–$\frac{१८}{५}$ = १० वृद्धिरूप लब्ध.

हानिका- $\frac{३}{२}$ – १ = $\frac{१}{२}$, ९–$\frac{१}{२}$ = १८; $\frac{३६}{१८}$ = २ = ६ – ४ हानिरूप लब्ध.

(भागहारके स्थानमें लब्ध लेकर प्रक्रिया करनेसे पहलेके समान ही भागहार आ जाता है।)

दो लब्ध राशियोंके अन्तरसे भागहारको गुणित करके और इससे जो उत्पन्न हो उसे भज्यमान राशिमें मिला देनेपर अधिक लब्धकी जो भज्यमाम राशि होगी वह उत्पन्न होती है ॥ २७ ॥

उदाहरण (वीजगणितसे) — $\frac{अ}{व}$ = स, $\frac{क}{व}$ = ड, व (स – ड) + क = व स = अ

(अकगणितसे)––भज्यमान राशि ४० और ३६; भाजक ४; ४०–४=१०, ३६–४=९, १०-९=१ लब्धान्तर ४×१=४+३६=४० अधिक लब्धकी भज्यमान राशि।

हारान्तरसे अर्थात् हारके एक खंडसे हारको अपहृत करके जो लब्ध आवे उससे पूर्व लब्धको गुणित करने पर उत्पन्न हुई राशिका (और नये लब्धका) भागहारसे भाजित भाज्य-शेष ही अन्तर है जो हानि और वृद्धिरूप होता है ॥ २८ ॥

१ प्रतिषु ' हृतस्य ' इति पाठ ।

२ प्रतिषु ' शेषस्य चा-' इति पाठ. । किन्तु अजमेरस्थप्रतौ अत्र स्वीकृत पाठः उपलभ्यते ।

अवणयणरासिगुणिदो अवणयणेणूणएण लद्धेण ।
भजिदो हु भागहारो पक्खेवो होदि अवहारो ॥ २९ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे) —

भज्यमान राशि— न, भाजक—स = अ × व;

(१) लब्ध—क, शेष—र (वृद्धिरूप).

(२) लब्ध—(क + १), शेष—र' (हानिरूप).

$न = (अ \times व) क + र$ —(१)

और $न = (अ \times व) (क + १) - र'$ —(२)

(१) से $\frac{न}{अ} = व \times क + \frac{र}{अ}$ —वृद्धिरूप.

(२) से $\frac{न}{अ} = व (क + १) - \frac{र'}{अ}$ —हानिरूप.

(अंकगणितसे)—

भज्यमान राशि—२६३, हार—७२, हारांतर—९;

(१) $\frac{२६३}{७२} = ३\frac{४७}{७२}$ पूर्व लब्ध—३
भाज्य शेष—४७

$\frac{२६३}{९} = ८ \times ३ + \frac{४७}{९}$ (हारांतरहृतहार—८)

$= २९ + \frac{२}{९}$ —(वृद्धिरूप).

(२) $\frac{२६३}{७२} = ४ - \frac{२५}{७२}$,

$\frac{२६३}{९} = ८ \times ४ - \frac{२५}{९} = ३० - \frac{७}{९}$ (हानिरूप).

भागहारको अपनयन राशिसे गुणा कर देने पर और अपनयनराशिको लब्धराशिमेंसे घटाकर जो शेष रहे उसका भाग दे देने पर जो लब्ध आता है वह भागहारमें प्रक्षेपराशि होती है ॥ २९ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{ब} = क$, इष्ट ख, अपनयन राशि क − ख

$$ब + \frac{ब (क - ख)}{ख} = \frac{ब क}{ख}$$ प्रक्षेप अवहार

(अंकगणितसे)—भज्यमान ३६, भाजक ४; इष्ट ६, ३६−४=९, ९ − ६=३ अपनयन राशि, $\frac{४ \times ३}{६} = २$ प्रक्षेप भागहार

पक्खेवरासिगुणिदो पक्खेवेणाहिएण लद्धेण ।
भजिओ हु भागहारो अवणेज्जो होइ अवहारे ॥ ३० ॥

जे अहिया अवहारे रूवा तेहिं गुणित्तु पुव्वफलं ।
अहियवहारेण हिए लद्धं पुव्वफलं ऊणं ॥ ३१ ॥

जे ऊणा अवहारे रूवा तेहिं गुणित्तु पुव्वफलं ।
ऊणवहारेण हिए लद्धं पुव्वफलं अहियं[1] ॥ ३२ ॥

भागहारको प्रक्षेपराशिसे गुणा कर देने पर और प्रक्षेपसे अधिक लब्धराशिका भाग देने पर जो लब्ध आता है वह भागहारमें अपनेय राशि होती है ॥ ३० ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)—— $\frac{अ}{ब}$ = क, इष्ट ख, प्रक्षिप्त राशि (ख–क),

$$\text{अपनेय भागहार } ब - \frac{ब\,(क - ख)}{ख} = \frac{ब\,क}{ख}$$

(अंकगणितसे)—— $\frac{३६}{४}$=९; इष्ट १२; प्रक्षेप ३; अपनेय भागहार ४- $\frac{३\times ४}{१२}$=४-१=३

भागाहारमें जितनी अधिक संख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा अधिक अवहारसे हृत अर्थात् भाजित करने पर जो आवे उसे पूर्वफलमेंसे घटा देने पर नया लब्ध आता है ॥ ३१ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)—— $\frac{अ}{ब}$ = स; नया भागहार—ब + ड

$$\text{नया लब्ध} = \frac{अ}{ब + ड} = \frac{ब\,स}{ब + ड} = स - \frac{स\,ड}{ब + ड}$$

अर्थात् $\frac{स\,ड}{ब + ड}$ इसे पुराने भजनफल स में से घटा देने पर नया भजनफल आ जाता है ।

(अंकगणितसे)—— $\frac{३६}{९}$ = ४; १२ नया भागहार; भागाहारमें अधिक ३;

$\frac{४ \times ३}{१२}$ = १; ४ – १ = ३ नया भजनफल.

भागहारमें जितनी न्यून संख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा न्यून-भागहारसे हृत करने पर जो आवे उसे पूर्वफलमें जोड़ देने पर नया लब्ध आता है ॥ ३२ ॥

1 ल. क्ष. ४७०.

एदाहि गाहाहि पडिबोहियस्स सिस्सस्स पच्छिमवियप्पो वत्तव्वो। तं जहा, सिद्ध-तेरसगुणट्ठाणोवट्टिदमिच्छाइट्ठिभागब्भहियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? सिद्धतेरसगुणट्ठाणभजिदसव्वजीवरासिभागहीणसव्वजीवरासी आग-

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{ब} = स$; ब − ड नया भागहार;

नया लब्ध $= \frac{अ}{ब - ड} = \frac{ब\,स}{ब - ड} = स + \frac{स\,ड}{ब - ड}$,

$\frac{स\,ड}{ब - ड}$ इसे पुराने भजनफल स में जोड़नेसे नया भजन-फल आ जाता है।

(अंकगणितसे) — $\frac{३६}{१२} = ३$; ९ नया भागहार,

$\frac{३ \times ३}{९} = १$; ३ + १ = ४ नया भजनफल.

इन गाथाओंके द्वारा जो शिष्य प्रतिबोधित किया जा चुका है उसको पश्चिम विकल्प बतलाया जाता है। वह इसप्रकार है—

शंका— सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका संपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो प्रमाण लब्ध आवे उतनी कम संपूर्ण जीवराशि आती है, इसमें कुछ भी संदेह नहीं है। इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ।

विशेषार्थ—यहां पर जो अन्तिम विकल्प बतलाया गया है उसका गणित पूर्व निश्चित संकेतोंके अनुसार निम्न प्रकार बैठता है—

उदाहरण (बीजगणितसे)—

$$\frac{क^2}{क + \frac{ब}{अ}} = क - \frac{क}{अ}$$

(अंकगणितसे)—

$$\frac{१६^2}{१६ + \frac{१३}{२}} = १६ - \frac{१६}{२}$$

किन्तु एक तो गणितसे ये राशियां समान नहीं सिद्ध होतीं, और दूसरे उनका जो फल निकलता है वह मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण न होनेसे प्रकृतमें उसका कोई उपयोग दिखाई नहीं देता। बहुत कुछ सोच विचार करने पर भी हम इस विषयमें ठीक निर्णय पर नहीं पहुंच सके। तथापि विषयके पूर्वापर प्रसंगको देखते हुए यहां अन्तिम विकल्पमें वही बात आना चाहिये जिससे यह प्रकरण प्रारंभ हुआ है, और जिसका कि

च्छदि त्ति ण संदेहो (?)। कारणं गदं। तस्स का णिरुत्ती ? सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणेण सव्वजीवरासिं भागे हिदे जं भागलद्धं तं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणं पावदि। तत्थ बहुखंडा मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि। एयं खंडं सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणं हवदि। णिरुत्ती गदा।

यहां कारण बतलाया जा रहा है, अर्थात् सर्वजीवराशि व सिद्धतेरस गुणस्थानवर्ती राशिकी अपेक्षा ध्रुवराशिके द्वारा मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण निश्चित करना। तदनुसार पाठ कुछ निम्न प्रकार होना चाहिये था—

सिद्धतेरसगुणट्ठाणेण मिच्छाइट्ठिभजिदसिद्धतेरसगुणट्ठाणवग्गेण च अब्भहियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? सिद्धतेरसगुणट्ठाणहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि त्ति ण संदेहो।

अर्थात् सिद्धतेरस गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक और मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित सिद्धतेरसगुणस्थानवर्गसे अधिक सर्व जीवराशिका सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ? सिद्धतेरसगुणस्थान राशिसे हीन सर्वजीवराशि आती है, इसमें संदेह नहीं।

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{क^2}{अ + \frac{अ^2}{व} + क} = व = क - व$ (मिथ्यादृष्टि)

(अंकगणितसे)— $\frac{१६^2}{३ + \frac{९}{१३} + १६} = १३ = १६ - ३$ (मिथ्यादृष्टि)

शंका — इसकी अर्थात् मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणके निकालनेकी निरुक्ति क्या है ?

समाधान — सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका संपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर संपूर्ण जीवराशिको समान खण्ड करके देयरूपसे स्थापित कर देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सिद्ध और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है। उसमें अर्थात् विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त खण्डोंमें एक भाग कम बहुभागरूप मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है और एक भाग सिद्ध और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण है। इसप्रकार निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण सर्वजीवराशि १६, सिद्धतेरस ३, $\frac{१६}{३} = ५\frac{१}{३}$;

३ ३ ३ ३ ३ १
१ १ १ १ १ $\frac{१}{३}$

इसप्रकार एक खण्ड ३ सिद्ध और सासादनादि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण और शेष बहुभाग १३ मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण हुआ।

जो सो वियप्पो सो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । तं जहा, वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि । कारणं सव्वजीवरासीदो धुवरासी अब्भहिओ जादो त्ति । अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण सव्वजीवरासिघणे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? जदि सव्वजीवरासिणा तस्स घणो अवहिरिज्जदि तो सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि ? एवं मिच्छाइट्ठिरासिमागमणं मणेणावहारिय गुणेऊण भागग्गहणं कदं । एत्थ दुगुणादिकरणं वत्तइस्सामो । तं जहा, सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । दुगुणिदसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स तिभागो आगच्छदि । अणेण

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प । इन दोनोंमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

द्विरूपवर्गधारामें (प्रकृतमें) अधस्तनविकल्प संभव नहीं है, क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिसे ध्रुवराशिका प्रमाण अधिक है । अब अष्टरूप अर्थात् घनधारामें अधस्तनविकल्प बतलाते हैं । ध्रुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका संपूर्ण जीवराशिके घनमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, यदि संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिका घन अपहृत किया जाता है तो संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका प्रमाण आता है । और फिर ध्रुवराशिके प्रमाणका संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणके उपरिमवर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । इसप्रकार मिथ्यादृष्टिराशि आती है इस बातको मनमें निश्चित करके पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया है ।

उदाहरण—जीवराशि १६, ध्रुवराशि १९ $\frac{९}{१३}$; १६ × १९ $\frac{९}{१३}$ = $\frac{४०९६}{१३}$;

जीवराशि १६ का घन ४०९६ – $\frac{४०९६}{१३}$ = १३ मिथ्यादृष्टि

अब यहां पर द्विगुणादिकरणविधिको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गका प्रमाण आता है (४०९६ – १६ = २५६) । द्विगुणित संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गका दूसरा भाग आता है (४०९६ – ३२ = १२८) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गके प्रमाणका तीसरा भाग आता है (४०९६–४८=८५ $\frac{१}{३}$) । इसप्रकार इसी विधिसे अबतक ध्रुवराशिका प्रमाण

विहाणेण गुणगारो वड्ढावेदव्वो जाव धुवरासिपमाणं पत्तो त्ति । पुणो धुवरासिगुणिद-सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स धुवरासिभागो आगच्छदि सो चेव मिच्छाइट्ठिरासी । एदेण कारणेण धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति ।

घणाघणे वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण तेण घणपढमवग्गमूलं गुणेऊण घणाघणपढमवग्गमूले ओवट्टिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपढमवग्गमूलेण घणाघणपढमवग्गमूले ओवट्टिदे सव्वजीवरासिस्स घणो आगच्छदि । पुणो वि सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । एत्थ दुगुणादिकरणे कदे हेट्ठिमवियप्पो समप्पदि ।

$१९\frac{९}{१३}$ प्राप्त नहीं हो जाता है तबतक गुणकारको बढ़ाते जाना चाहिये । पुनः ध्रुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करने पर जो लब्ध आवे उससे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर, संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गमें ध्रुवराशिका भाग देने पर जो लब्ध आवे, तत्प्रमाण भाग आता है, और वही मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है । इसी कारणसे यह कहा कि ध्रुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे संपूर्ण जीव-राशिके घनके अपवर्तित करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $\frac{१६}{१} \times \frac{२५६}{१३} = \frac{४०९६}{१३}$, $\frac{४०९६}{१} \div \frac{४०९६}{१३} = \frac{४०९६}{१} \times \frac{१३}{४०९६} = १३$ मि.

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । ध्रुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करके जो गुणनफल आवे उससे जीवराशिके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो गुणनफल आवे उसके द्वारा घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उद्वर्तित करने पर मिथ्यादृष्टि जीव-राशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनके प्रथम वर्गमूलसे घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उद्वर्तित करने पर सपूर्ण जीवराशिका घन आता है । अनन्तर संपूर्ण जीवराशिसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । अनन्तर ध्रुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनाघनधारामें इसप्रकार जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझ कर पहले गुणा करके, अनन्तर, भागका ग्रहण किया है । यहां पर द्विगुणादिकरणके कर लेने पर अधस्तन विकल्प समाप्त हो जाता है ।

उदाहरण—१६ के घनका प्रथम वर्गमूल ६४, घनाघनका प्रथम वर्गमूल २६२१४४;

$$१९\frac{९}{१३} \times १६ \times ६४ = \frac{२६२१४४}{१३}, \quad \frac{२६२१४४}{१} - \frac{२६२१४४}{१३} = १३ \text{ मि.}$$

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि। तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो। धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि? मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारं रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे मिच्छाइट्ठिरासी चेव अवचिट्ठदे। केण कारणेण? धुवरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागा जदि सव्वजीवरासिअद्धच्छेदणयसलागाहि सरिसा त्ति घेप्पंति तो धुवरासिं अद्धद्धेण छिंदिऊणुव्वराविदरासिपमाणं सव्वजीवरासिं मिच्छाइट्ठिरासिणा खंडिदपमाणं होदि। एवं होदि त्ति काऊण सव्वजीवरासिअद्धच्छेदणयं सलागभूदं ठवेऊण सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे अद्धच्छेदेण छिण्णे सव्वजीवरासी आगच्छदि। पुणो मिच्छाइट्ठिरासिणोवट्टिदसव्वजीवरासिणा उवरिम-

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार। उनमेंसे पहले गृहीत उपरिम विकल्पको दिखलाते हैं—

शंका — ध्रुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है?

समाधान—मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है (२५६ − $\frac{२५६}{१३}$ = १३)।

ध्रुवराशिप्रमाण भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार जीवराशिके उपरिमवर्गरूप राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आ जाती है।

उदाहरण—ध्रुवराशि १९ $\frac{९}{१३}$ है। इसमेंसे १६ के अर्धच्छेद ४ होते हैं। शेष ३ $\frac{९}{१३}$ के चौथे अर्धच्छेद पर $\frac{३}{१३}$ अधिक रहता है, इसलिये १९ $\frac{९}{१३}$ के $\frac{३}{१३}$ अधिक ४ अर्धच्छेद हुए। अतएव जीवराशि १६ के वर्ग २५६ के इतनीवार अर्थात् ४ + $\frac{३}{१३}$ वार अर्धच्छेद करने पर १३ आ जाते हैं।

शंका—भागहारराशिके अर्धच्छेदप्रमाण जीवराशिके उपरिम वर्गके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि किस कारणसे आती है?

ध्रुवराशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं संपूर्ण जीवराशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके बराबर होती हैं, यदि ऐसा ग्रहण कर लिया जाता है तो ध्रुवराशिको अर्धार्धरूपसे छिन्न करके शेष रही हुई राशिका प्रमाण, संपूर्ण जीवराशिको मिथ्यादृष्टि राशिसे खण्डित करने पर जो लब्ध आता है, उतना होता है (१६ − १३ = १ $\frac{३}{१३}$)। इसप्रकार होता है, इसलिये संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंको शलाकारूपसे स्थापित करके संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको अर्धच्छेदोंके बराबर छिन्न करने पर संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण आ जाता है। अनन्तर मिथ्यादृष्टि जीवराशिके द्वारा उद्वर्तित संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे ऊपर उत्पन्न की हुई संपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—जीवराशि १६ के अर्धच्छेद ४ के बराबर जीवराशि के वर्ग २५६ के अर्धच्छेद करने पर १६ लब्ध आते हैं। अनन्तर मिथ्यादृष्टिके प्रमाणसे भाजित जीवराशिके प्रमाण

सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । अधवा धुवरासिअद्धच्छेदणया जदि सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अद्धच्छेदणयसरिसा हवंति तो अद्धद्धेण छिण्णावसिट्ठ-रासिपमाणं मिच्छाइट्ठिरासिणा एगरूवं खंडिदेगखंडपमाणं होदि । पुणो धुवरासिअद्ध-च्छेदणए सलागा काऊण सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे अद्धद्धेण छिण्णे एगरूवमागच्छदि । पुणो तमेगरूवं मिच्छाइट्ठिरासिभजिदेगरूवेण भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति । अधवा धुवरासिणा सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छा-इट्ठिरासी आगच्छदि त्ति । केण कारणेण? सव्वजीवरासिउवरिमवग्गेण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे सव्वजीवरासिस्स उवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स

$\frac{१६}{१३}$ का जीवराशिके प्रमाण १६ में भाग देने पर १३ मिथ्यादृष्टिका प्रमाण लब्ध आता है।

अथवा, ध्रुवराशिके अर्धच्छेद यदि संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके अर्धच्छेदोंके समान होते हैं तो उत्तरोत्तर अर्धार्धरूपसे छिन्न करनेके अनन्तर अवशिष्ट रही राशिका प्रमाण, मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे एक रूपको खंडित करके जो एक भाग आता है, उतना होता है। अनन्तर ध्रुवराशिके अर्धच्छेदोंको शलाकारूपसे स्थापित करके संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको अर्धार्धरूपसे छिन्न करने पर एक आता है। अनन्तर उस एकको मिथ्यादृष्टि जीव-राशिके प्रमाणसे भक्त एकके द्वारा भाजित करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है।

उदाहरण—१६ के उपरिम वर्ग २५६ के अर्धच्छेद ८ के बराबर ध्रुवराशि १९ $\frac{९}{१३}$ के अर्धच्छेद करने पर आठवां अर्धच्छेद $\frac{१}{१३}$ होता है जो १ में मिथ्यादृष्टिके प्रमाण १३ के भाग देने पर जो लब्ध आता है उतनेके बराबर है। पुनः इन ८ अर्धच्छेदोंको शलाका करके २५६ के इतनी बार अर्धच्छेद करने पर १ आता है। पुनः इस १ में $\frac{१}{१३}$ का भाग देने पर १३ लब्ध आते हैं, यही मिथ्यादृष्टिराशि है।

अथवा, ध्रुवराशिके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसके उपरिम वर्गमें (जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें) भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है, क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है। पुन ध्रुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—सर्व जीवराशिका उपरिम वर्ग २५६, सर्व जीवराशिके उपरिम वर्ग २५६ का उपरिम वर्ग ६५५३६;

$$\frac{२५६}{१३} \times \frac{२५६}{१} = \frac{६५५३६}{१३}, \quad \frac{६५५३६}{१} \div \frac{६५५३६}{१३} = १३ \text{ मि.}$$

उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि

अद्धच्छेदणए कदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एदस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया? सव्वजीवरासीदो उवरि दोण्णि वग्गट्ठाणाणि चाडिदाणि त्ति दो रूवे विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिरूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिअद्धच्छेदणयमेत्ता होऊण अंतिमभागहारेण अधिया भवंति। एवं भागहारस्स तिगच्छेदणए सलागा काऊण तीहि तीहि सरूवेहि रासिम्मि भागे हिदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एवं चउक्कादि-छेदणयसलागाहि वि रासिम्हि छिज्जमाणे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति परूवेदव्वं। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु वग्गट्ठाणेसु उवरि वत्तव्वं। णवरि भागहारच्छेदणाओ संकलिज्जमाणे एवं संकलेदव्वाओ। तं जहा, सव्वजीवरासीदो चडिदद्धाणमेत्तवग्गसलागाओ विरलिय विगं करियण्णोण्णब्भत्थरासिरूवूणेण सव्वजीवरासिच्छेदणए गुणिदे भागहार-

- -

जीवराशि आती है।

शंका—इस भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी हैं?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके ऊपर दो वर्गस्थान जाकर वह भागहार उत्पन्न हुआ है, इसलिये दोका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो संख्या उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके अवशिष्ट राशिके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो प्रमाण आवे उसे अन्तिम भागहारसे अधिक करने पर अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं।

उदाहरण—$\underset{१}{२} \times \underset{१}{२} = ४ - १ = ३ \times ४ = १२$ पूर्ण, और $\frac{३}{१३}$ अधिक उक्त भागाहारके कुल अर्धच्छेद होते हैं।

इसीप्रकार भागहारके त्रिकच्छेदोंको शलाका करके तीन तीनका राशिमें भाग देने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है। इसीप्रकार चतुर्थ आदि छेद शलाकाओंके द्वारा भी राशिके छिन्न करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, ऐसा कथन करना चाहिये।

उदाहरण—$\frac{२५६}{१३}$ के $६\frac{२२}{३९}$, $२\frac{२२}{११७}$ इसप्रकार २ त्रिकछेद हैं, अतः इतनीवार २५६ में ३ का भाग देने पर १३ लब्ध आ जाते हैं।

इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंके ऊपर भी कथन करना चाहिये। इतनी विशेषता है कि भागहारके अर्धच्छेदोंका संकलन करते समय इसप्रकार संकलन करना चाहिये। आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं—

संपूर्ण जीवराशिसे जितने वर्गस्थान ऊपर गये हों उतनी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके शेष राशिसे संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करने

छेदणया भवंति । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं पि वत्तव्वं । तदो वेरूवधारापरूवणा समत्ता भवदि ।

अट्ठरूवधाराए गहिदं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणउवरिमवग्गे भागे हिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव अवचिट्ठदे । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणया केत्तिया ? एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिगुण[1]-

पर भागहार राशिके अर्धच्छेद होते हैं। सर्वत्र द्विगुणादिकरणका भी कथन करना चाहिये। तब जाकर द्विरूप वर्गधाराका प्ररूपण समाप्त होता है।

अब अष्टरूपधारा अर्थात् घनधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— ध्रुवराशिके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका जीवराशिके घनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है, क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका जीवराशिके घनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । अनन्तर ध्रुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है। घनधारामें इसप्रकार मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया है।

उदाहरण— $\frac{१६^२}{१} \times \frac{१६^२}{१} \times \frac{२५६}{१३} = \frac{१६७७७२१६}{१३}$;

$$\frac{१६७७७२१६}{१} \div \frac{१६७७७२१६}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आ जाती है।

शंका — उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं ?

समाधान — एकका विरलन करके और उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उसे त्रिगुणित करके और उसमेंसे एक कम करके जो राशि रहे उससे संपूर्ण

1 प्रतिषु '-रासिणा गुण-' इति पाठ ।

रूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिच्छेदणयमेत्ता हवंति। उवरि सव्वत्थ दोरूवादीणमण्णोण्ण-ब्भत्थरासिणा तिगुणरूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिच्छेदणयमेत्ता हवंति। एवं संखेज्जा-संखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। सव्वत्थ दुगुणादिकरणं कायव्वं। एवं कदे अट्ठपरूवणा समत्ता भवदि।

घणाघणे गहिदं वत्तइस्सामो। धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणाघणउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। केण कारणेण? घणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणाघण-उवरिमवग्गे भागे हिदे घणउवरिमवग्गो आगच्छदि। पुणो वि सव्वजीवरासिउवरिम-वग्गस्सुवरिमवग्गेण घणउवरिमवग्गे भागे हिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि। पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्त

जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करने पर जो संख्या आवे उतने उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं।

उदाहरण—$\frac{२}{१}$ = २ × ३ = ६ − १ = ५ × ४ = २० अर्धच्छेद; पर अन्तिम [illegible] होगा।

ऊपर सर्वत्र दो संख्या आदिका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे त्रिगुणित करके और उस त्रिगुणित राशिमेंसे एक कम करके शेष राशिसे संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करने पर अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है। इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये। सर्वत्र द्विगुणादिकरण भी करना चाहिये। इस-प्रकार करने पर घनधारा समाप्त होती है।

अब घनाघनधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—ध्रुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जीवराशिके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनाघनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनका उपरिम वर्ग आता है। फिर संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है। फिर ध्रुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है। घनाघनधारामें इसप्रकार मिथ्यादृष्टि जीव राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया है।

उदाहरण—$१६^{३} \times १६^{३} \times १६^{२}$ = ६८७१९४७६७३६,

$$\frac{६८७१९४७६७३६^{२}}{६५५३६ \times \frac{२५६}{१३} \times १६७७७२१६^{२}} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणया केत्तिया? एगरूवं विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा णवगुणरूवूणेण सव्वजीवरासिच्छेदणए गुणिदमेत्ता। उवरि सव्वत्थ चडिदद्धाणसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा णवगुणरूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिच्छेदणयमेत्ता भवंति। एवं सखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। सव्वत्थ दुगुणादिकरणं पि कायव्वं। एवं कदे घणाघणपरूवणा समत्ता भवदि।

गहिदगहिदं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अणंतिमभागेण मिच्छाइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ६८ अर्धच्छेद होंगे, पर अन्तिम अर्धच्छेद $१\frac{३}{१३}$ होगा। अतः इतनीवार उक्त भाज्य राशिके छेद करने पर लब्ध १३ मिथ्यादृष्टि राशि आती है।

शंका—उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं?

समाधान—एकका विरलन करके और उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे नौ से गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके जो राशि शेष रहे उसे संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंसे गुणित कर देने पर जो राशि आवे उतने उक्त भागहारके अर्धच्छेद हैं।

उदाहरण—$\underset{१}{२} = २ \times ९ = १८ - १ = १७ \times ४ = ६८.$

आगे सर्वत्र जितने स्थान ऊपर जावें तत्प्रमाण शलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे नौसे गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके शेष राशिको संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंसे गुणित कर दे। ऐसा करने पर घनाघनधारामें विवक्षित भागहारके अर्धच्छेद आ जावेंगे। इसीप्रकार घनाघनधाराके संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये। सर्वत्र द्विगुणादिकरण भी कर लेना चाहिये। इसप्रकार करने पर घनाघनधाराकी प्ररूपणा समाप्त होती है।

अब गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके अनन्तिम भागरूप मिथ्यादृष्टि जीवराशिका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—उपरिम वर्ग २५६ का इच्छित वर्ग ६५५३६;

$$\frac{६५५३६}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{६५५३६}{१३}, \quad \frac{६५५३६}{१} \div \frac{६५५३६}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव अवचिट्ठदे। तस्सद्धच्छेदणया केत्तिया? मिच्छाइट्ठिरासि-अद्धच्छेदणएणूणतब्भजिदरासिअद्धच्छेदणयमेत्ता। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। वेरूवपरूवणा गदा। अट्ठरूवं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिघणस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। एवमट्ठरूवपरूवणा गदा। घणाघणे वत्तइस्सामो। घणाघणपढमवग्गमूलस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके १२ अर्धच्छेद होंगे, पर अन्तिम अर्धच्छेद १ $\frac{३}{१३}$ होगा। अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है।

शंका—उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं?

समाधान—जिस राशिमें मिथ्यादृष्टि राशिका भाग दिया गया है उसके अर्धच्छेदोंमेंसे मिथ्यादृष्टि राशिके अर्धच्छेद कम कर देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये। इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें द्विरूपवर्गधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई। अब गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें अष्टरूप अर्थात् घनधाराको बतलाते हैं—

संपूर्ण जीवराशिके घनके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—घनराशि ४०९६ का इच्छित वर्ग १६७७७२१६;

$$\frac{१६७७७२१६}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{१६७७७२१६}{१३} \cdot \frac{१६७७७२१६}{१} \div \frac{१६७७७२१६}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके २० अर्धच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्धच्छेद १ $\frac{३}{१३}$ होगा। अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है।

इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये। इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें घनधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई। अब घनाघनधारामें गृहीत-गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनाघनके प्रथम वर्गमूलके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो

भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव आगच्छदि। (एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं)। एवं घणाघणपरूवणा गदा। गहिद गहिदं गदं।

गहिदगुणगारं वत्तइस्सामो। वेरूवे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव अवचिट्ठदे। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं।

भाग लब्ध आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—घनाघनका प्रथम वर्गमूल २६२१४४,

$$\frac{\text{२६२१४४}^{2}}{\text{१}} \div \frac{\text{१३}}{\text{१}} = \frac{\text{२६२१४४}^{2}}{\text{१३}};\quad \frac{\text{२६२१४४}^{2}}{\text{१}} \div \frac{\text{२६२१४४}^{2}}{\text{१३}} = \text{१३ मिथ्यादृष्टि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि राशि ही आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ३२ अर्धच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्धच्छेद $\text{१}\frac{\text{३}}{\text{१३}}$ होता है। अत इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है।

(इसीप्रकार संख्येय, असंख्येय और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये)। इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें घनाघनकी प्ररूपणा समाप्त हुई। इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पका कथन समाप्त हुआ।

अब गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—द्विरूप वर्गधारामें संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके अनन्तवें भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उक्त वर्गराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—उपरिम वर्ग २५६ का इच्छित वर्ग ६५५३६,

$$\frac{\text{६५५३६}}{\text{१}} \div \frac{\text{१३}}{\text{१}} = \frac{\text{६५५३६}}{\text{१३}};\quad \frac{\text{६५५३६}}{\text{१३}} \times \frac{\text{६५५३६}}{\text{१}} = \frac{\text{६५५३६}^{2}}{\text{१३}};$$

$$\frac{\text{६५५३६}^{2}}{\text{१}} \div \frac{\text{६५५३६}^{2}}{\text{१३}} = \text{१३ मिथ्यादृष्टि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके २८ अर्धच्छेद होते हैं। अन्तिम अर्धच्छेद $\text{१}\frac{\text{३}}{\text{१३}}$ होता है। अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है।

इसप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये। इसप्रकार

वेरूवपरूवणा गदा। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। घणस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहाररस अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव आगच्छदि। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। अट्ठपरूवणा गदा। घणाघणे वत्तइस्सामो। घणाघणपढमवग्गमूलस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी

गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पमें द्विरूप वर्गधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई। अब अष्टरूप धारामें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके लब्ध राशिका उक्त वर्गराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—घनराशि ४०९६ का इच्छित वर्ग १६७७७२१६;

$$\frac{१६७७७२१६}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{१६७७७२१६}{१३}, \quad \frac{१६७७७२१६}{१३} \times \frac{१६७७७२१६}{१}$$

$$= \frac{१६७७७२१६^२}{१३}, \quad \frac{१६७७७२१६^२}{१} - \frac{१६७७७२१६^२}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ४४ अर्धच्छेद प्रमाण उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ लब्ध आती है।

इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये। इसप्रकार गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पमें अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई। अब घनाघनधारामें उसीको बतलाते हैं—

घनाघनके प्रथम वर्गमूलके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके जो लब्ध आये उसका उक्त वर्ग राशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—घनाघनके प्रथम वर्गमूल २६२१४४ का इच्छित वर्ग ६८७१९४७६७३६;

$$\frac{६८७१९४७६७३६}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{६८७१९४७६७३६}{१३},$$

$$\frac{६८७१९४७६७३६}{१} \times \frac{६८७१९४७६७३६}{१३} = \frac{६८७१९४७६७३६^२}{१३},$$

$$\frac{६८७१९४७६७३६^२}{१} - \frac{६८७१९४७६७३६^२}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । घणाघणपरूवणा गदा ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केवडिया? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एदेहि पलिदोवममवहिरिज्जदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ६ ॥

एत्थ ताव सासणसम्माइट्ठिरासिस्स पमाणपरूवणं वत्तइस्सामो । सासणसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । खेत्तकालपमाणेहि किमिदि

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ६८ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है ।

इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पमें घनाघनप्ररूपणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र हैं । इन चार गुणस्थानोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ ६ ॥

उनमेंसे पहले यहां सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण बतलाते हैं—

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी है ? पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र है ।

विशेषार्थ—आगे अंकसंदृष्टिसे सासादनसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण लानेके लिये पल्योपमका प्रमाण ६५५३६ और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण लानेके लिये अवहारकालका प्रमाण ३२ कल्पित किया है । इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकाल ३२ का ६५५३६ प्रमाण पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८ आता है जो कि पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र है । अर्थप्ररूपणा भी इसीप्रकार जान लेना चाहिये ।

शंका—यहां क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणकी अपेक्षासे भी सासादनसम्यग्दृष्टि

१ सासादनसम्यग्दृष्टय. सम्यङ्मिथ्यादृष्टयोऽसंयतसम्यग्दृष्टय संयतासंयताश्च पल्योपमासंख्येयभागप्रमिता । स. सि., १, ८. मिच्छा सावयसासणमिस्साविरदा दुवारणंता य। पल्लासंखेज्जदिममसंखगुण संखसंखगुण ॥ गो जी. ६२४. पल्यासंख्यातभागास्तु परे गुणचतुष्टये । प. स ५९. सासायणाइचउरो होंति असंखा ॥ पञ्चसं. २, २२.

सासणसम्माइट्ठिपरूवणा ण परूविदा ? ण, एत्थ मिच्छाइट्ठिरासिव्व तेहि परूवेदव्वस्स कारणाभावा। किं तत्थ कारणं ? वुच्चदे— असंखेज्जपएसिए लोए कधमणंतो जीवरासी सम्मादि त्ति जादसंदेहणिराकरणट्ठं खेत्तपमाणं वुच्चदे। आयविरहिदस्स सिज्झंतजीवे अवेक्खिय सव्वयस्स सव्वजीवरासिस्स किं वोच्छेदो होदि, ण होदि त्ति जादसंदेह-णिराकरणट्ठं कालपमाणं परूविज्जदि। ण च एदेसु कारणेसु एक्कं पि कारणमेत्थ संभवइ, अणुवलंभादो। तम्हा खेत्तकालपरूवणा सासणादीणं गंथे ण परूविदा। एत्थ

जीवराशिका प्ररूपण क्यों नहीं किया ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जिसप्रकार मिथ्यादृष्टि जीवराशिका क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणकी अपेक्षासे प्ररूपण करनेका कारण था, उसप्रकार यहां पर उक्त दोनों प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्ररूपण करनेका कोई कारण नहीं है। अतएव उक्त प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्ररूपण नहीं किया।

शंका— वहां पर उक्त दोनों प्रमाणोंके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्ररूपण करनेका क्या कारण है ?

समाधान— असंख्यात प्रदेशी लोकमें अनन्तप्रमाण जीवराशि कैसे समा जाती है, इसप्रकारसे उत्पन्न हुए संदेहके दूर करनेके लिये क्षेत्रप्रमाणका कथन किया जाता है। तथा आयरहित और सिद्धयमान जीवोंकी अपेक्षा व्ययसहित संपूर्ण जीवराशिका विच्छेद होता है या नहीं, इसप्रकार उत्पन्न हुए संदेहके दूर करनेके लिये कालप्रमाणका प्ररूपण किया जाता है। परंतु इन कारणोंमेंसे यहां पर एक भी कारण संभव नहीं है, क्योंकि, यहां पर कोई भी कारण नहीं पाया जाता है। अतः क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्ररूपण ग्रन्थमें नहीं किया।

विशेषार्थ— शंकाकारका कहना है कि जिसप्रकार पहले मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करते समय ' अणंताणंताहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ' इस सूत्रके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका कालकी अपेक्षा प्रमाण कहा है, और ' खेत्तेण अणंताणंता लोगा ' इस सूत्रके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण क्षेत्र और कालप्रमाणकी अपेक्षासे कहना चाहिये। शंकाकारकी इस शंकाका समाधान इसप्रकार समझना चाहिये कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हैं, अतएव उनका असंख्यातप्रदेशी लोकाकाशमें रहना असंभव है ऐसी शंका किसीको हो सकती है। अतः इसके परिहारके लिये मिथ्यादृष्टि जीव-राशिका क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा प्ररूपण किया। दूसरे, मोक्षको जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका व्यय तो निरंतर चालू है पर उनकी वृद्धि कभी भी नहीं होती इसलिये उनका अभाव हो जायगा, ऐसी शंका भी किसीको हो सकती है, अतएव इसके परिहार करनेके लिये कालप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्ररूपण किया कि अनन्तानन्त

भागहारपमाणमंतोमुहुत्तमिदि सासणसम्माइट्ठिआदिरासिपमाणविसयणिण्णयुप्पायणट्ठं परूविदं। तं च अंतोमुहुत्तमणेयवियप्पं, तदो एत्तियमिदि ण जाणिज्जदि। तत्थ णिच्छयजणणणिमित्तं किंचि अद्धापरूवणं कस्सामो। तं कधं? असंखेज्जे समए घेत्तूण एया आवलिया हवदि। तप्पाओग्गसंखेज्जावलियाओ घेत्तूण एगो उस्सासो हवदि। सत्त उस्सासे घेत्तूण एगो थोवो हवदि। सत्त थोवे घेत्तूण एगो लवो हवदि। अठतीस लवे अद्धलवं च घेत्तूण एगा णालिया हवदि। उत्तं च—

आवलि असंखसमया सखेज्जावलिसमूह उस्सासो।
सत्तुस्सासो थोवो सत्तत्थोवा लवो एक्को[1] ॥ ३३ ॥

उत्सर्पिणियों और अवसर्पिणियोंके हो जाने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि समाप्त नहीं हो सकती है। परंतु सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके संबन्धमें इन दोनों प्रश्नोंमेंसे कोई प्रश्न उपस्थित नहीं होता है, क्योंकि, वे केवल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। अतः उनकी लोकाकाशमें अवस्थिति कैसे होगी, यह बात नही कही जा सकती है। और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव, यद्यपि मिथ्यात्व गुणस्थानको प्राप्त होते रहते हैं इसलिये उनका व्यय होता है, फिर भी उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमेंसे उसी अनुपातसे सासादन गुणस्थानको भी प्राप्त होते रहते हैं, अतएव व्ययके समान आय भी निरंतर चालू है। इसलिये उनका अभाव हो जायगा, यह भी नहीं कहा जा सकता है। इसप्रकार क्षेत्र और कालप्रमाणकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण कहनेके लिये कोई कारण नही होनेसे उक्त प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका कथन नहीं किया।

सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवराशिका प्रमाण कहते समय भागहारका प्रमाण जो अन्तर्मुहूर्त कहा है वह सासादनसम्यग्दृष्टि आदि राशियोंके प्रमाण विषयक निर्णयके उत्पन्न करनेके लिये कहा है। परंतु वह अन्तर्मुहूर्त अनेक प्रकारका है, इसलिये प्रकृतमें इतना अन्तर्मुहूर्त विवक्षित है, यह नहीं जाना जाता है। इसलिये विवक्षित अन्तर्मुहूर्तके विषयमें निश्चय उत्पन्न करनेके लिये थोड़ेमें कालका प्ररूपण करते हैं।

शंका—वह कालप्ररूपणा किसप्रकार है?

समाधान—असंख्यात समयकी एक आवली होती है। ऐसी तद्योग्य संख्यात आवलियोंका एक उच्छ्वास होता है। सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है। सात स्तोकोंका एक लव होता है, और साढे अड़तीस लवोंकी एक नाली होती है। कहा भी है—

असंख्यात समयोंकी एक आवली होती है। संख्यात आवलियोंके समूहको एक उच्छ्वास कहते हैं। सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है और सात स्तोकोंका एक लव होता है॥ ३३॥

१ गो. जी. ५७४.

अट्टत्तीसद्धलवा णाली वे णालिया मुहुत्तो दु ।
एगसमएण हीणो भिण्णमुहुत्तो भवे सेसं[1] ॥ ३४ ॥
अड्ढस्स अणलसस्स य णिरुवहदस्स य जिणेहि जंतुस्स ।
उस्सासो णिस्सासो एगो पाणो त्ति आहिदो एसो[2] ॥ ३५ ॥
तिण्णि सहस्सा सत्त य सयाणि तेहत्तरिं च उस्सासा ।
एगो होदि मुहुत्तो सव्वेसिं चेव मणुयाणं[3] ॥ ३६ ॥

सत्तसएहि वीसुत्तरेहि पाणेहि एगो मुहुत्तो होदि त्ति केवि भणंति, पाइयपुरिसुस्सासे दट्ठूण तण्ण घडदे । कुदो ? केवलिभासिदत्थादो पमाणभूदेण अण्णेण सुत्तेण सह विरोहादो । कधं विरोहो ? जेणेद चउहि गुणिय सत्तूण-णवसदं पक्खित्ते सुत्तुत्तुस्सा-

साढ़े अड़तीस लवोंकी एक नाली होती है, और दो नालियोंका एक मुहूर्त होता है । तथा मुहूर्तमेंसे एक समय कम करने पर भिन्नमुहूर्त होता है, और शेष अर्थात् दो, तीन आदि समय कम करने पर अन्तर्मुहूर्त होते हैं ॥ ३४ ॥

जो सुखी है, आलस्यरहित है और रोगादिककी चिन्तासे मुक्त है, ऐसे प्राणीके श्वासोच्छ्वासको एक प्राण कहते हैं, ऐसा जिनेन्द्रदेवने कहा है ॥ ३५ ॥

सभी मनुष्योंके तीन हजार सातसौ तेहत्तर उच्छ्वासोंका एक मुहूर्त होता है ॥ ३६ ॥

कितने ही आचार्य सातसौ वीस प्राणोंका एक मुहूर्त होता है, ऐसा कहते हैं; परंतु प्राकृत अर्थात् रोगादिसे रहित स्वस्थ मनुष्यके उच्छ्वासोंको देखते हुए उन आचार्योंका इस-प्रकार कथन करना घटित नहीं होता है, क्योंकि, जो केवली भाषित अर्थ होनेके कारण प्रमाण है, ऐसे अन्य सूत्रके कथनके साथ उक्त कथनका विरोध आता है ।

शंका—सूत्रके कथनसे उक्त कथनमें कैसे विरोध आता है ?

समाधान—क्योंकि ऊपर कहे गये सातसौ वीस प्राणोंको चारसे गुणा करके जो

१ गो जी. ५७५. होंति हु असखसमया आवलिणामो तहेव उस्सासो । संखेज्जावलिणिवहो सो चेव पाणो त्ति विक्खादो ॥ सत्तुस्सासो थोव सत्त थवा लव त्ति णादव्वो । सत्तत्तरिदलिदलवा णाली वे णालिया मुहुत्त च ॥ ति. प. पत्र ५०. ग सा. १, ३२-३४. असखिज्जाण समयाण समुदयसमितिसमागमेण सा एगा आवलिअत्ति वुच्चइ, संखेज्जाओ आवलिओ ऊसासो, संखिज्जाओ आवलिआओ नीसासो, सत्त पाणूणि से थोवे, सत्त थोवाणि से लवे । लवाण सत्तहत्तरीए एस मुहुत्ते विआहिए । अनु. पृ १६४. व्या. प्र पृ ५००.

२ गो जी. ५७४. टी हट्ठस्स अणवगल्लस्स निरुवकिट्ठस्स जतुणो । एगे ऊसासनीसासे एस पाणु त्ति वुच्चइ । अनु पृ १६४. व्या प्र पृ ५००.

३ आढ्यानलसानुपहतमनुजोच्छ्वासैस्त्रिसप्तसप्तत्रिमितैः । आहुर्मुहूर्तम्...॥ गो जी., जी. प्र. टी., १२५. तिण्णि सहस्सा सत्त य सयाइ तेहुत्तरिं च ऊसासा । एस मुहुत्तो भणिओ सव्वेहिं अणतनाणीहिं । अनु. पृ. १६४. व्या. प्र. पृ. ५००.

सपमाणं पावदि। एक्कवीससहस्स-छस्सयमेत्तपाणेहि संवच्छरियाण दिवसो होदि। एत्थ पुण एगलक्ख-तेरहसहस्स-णउदि-सयपाणेहि दिवसो होदि। पाणेहि विप्पडिवण्णाणं संवच्छरियाणं कालववहारो कधं घडदे? ण, केवलिभासिददिवसमुहुत्तेहि समाणदिवस-मुहुत्तब्भुवगमादो। एवं परूविदमुहुत्तुस्सासे ठवेऊण तत्थ एगो उस्सासो घेत्तव्वो। संखेज्जावलियाहि एगो उस्सासो णिप्फज्जदि त्ति सो उस्सासो संखेज्जावलियाओ कयाओ। तत्थ एगमावलियं घेत्तूण असंखेज्जेहि समएहि एगावलिया होदि त्ति असंखेज्जा समया कायव्वा। तत्थ एगसमए अवणिदे सेसकालपमाणं भिण्णमुहुत्तो उच्चदि। पुणो वि अवरेगे समए अवणिदे सेसकालपमाणमंतोमुहुत्तं होदि। एवं पुणो पुणो समया अवणेयव्वा जाव उस्सासो णिट्ठिदो त्ति। तो वि सेसकालपमाणमंतोमुहुत्तं चेव होइ। एवं सेसुस्सासे वि अवणेयव्वा जावेगावलिया सेसा त्ति। सा आवलिया वि

गुणनफल आवे उसमें सात कम नौ सौ अर्थात् आठसौ तेरानवे और मिलाने पर सूत्रमें कहे गये मुहूर्तके उच्छ्वासोंका प्रमाण होता है, इसलिये प्रतीत होता है कि उपर्युक्त मुहूर्तके उच्छ्वासोंका प्रमाण सूत्रविरुद्ध है। यदि सातसौ वीस प्राणोंका एक मुहूर्त होता है, इस कथनको मान लिया जाय तो केवल इक्कीस हजार छह सौ प्राणोंके द्वारा ही ज्योतिषियोंके द्वारा माने हुए दिन अर्थात् अहोरात्रका प्रमाण होता है। किन्तु यहां आगमानुकूल कथनके अनुसार तो एक लाख तेरह हजार और एक सौ नव्वे उच्छ्वासोंके द्वारा एक दिन अर्थात् अहोरात्र होता है।

शंका—इसप्रकार प्राणोंके द्वारा दिवसके विषयमें विवादको प्राप्त हुए ज्योतिषियोंके कालव्यवहार कैसे बन सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, केवलीके द्वारा कथित दिन और मुहूर्तके समान ही ज्योतिषियोंके दिन और मुहूर्त माने गये हैं, इसलिये उपर्युक्त कोई दोष नहीं है।

इसप्रकार केवलीके द्वारा प्रतिपादित एक मुहूर्तके उच्छ्वासोंको स्थापित करके उनमेंसे एक उच्छ्वास ग्रहण करना चाहिये। संख्यात आवलियोंसे एक उच्छ्वास निष्पन्न होता है, इसलिये उस एक उच्छ्वासकी संख्यात आवलियां बना लेना चाहिये। उन आवलियोंमेंसे एक आवलीको ग्रहण करके, असंख्यात समयोंसे एक आवली होती है, इसलिये उस आवलीके असंख्यात समय कर लेना चाहिये।

यहां मुहूर्तमेंसे एक समय निकाल लेने पर शेष कालके प्रमाणको भिन्नमुहूर्त कहते हैं। उस भिन्नमुहूर्तमेंसे एक समय और निकाल लेने पर शेष कालका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त होता है। इसप्रकार उत्तरोत्तर एक एक समय कम करते हुए उच्छ्वासके उत्पन्न होने तक एक एक समय निकालते जाना चाहिये। वह सब एक एक समय कम किया हुआ काल भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण ही होता है। इसीप्रकार जब तक आवली उत्पन्न नहीं होती है तब तक शेष रहे हुए एक उच्छ्वासमेंसे भी एक एक समय कम करते जाना चाहिये। ऐसा करते हुए जो आवली उत्पन्न होती है उसे भी अन्तर्मुहूर्त कहते हैं।

अंतोमुहुत्तमिदि भण्णदि। तदो अवरेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण तम्हि आवलियम्हि भागे हिदे जं भागलद्धं तं असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। एसो वि कालो अंतोमुहुत्तमेव। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालमवरेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे हि संजदासंजदअवहारकालो होदि। ओघसासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजदाणं अवहारकालो असंखेज्जदिभागो ण होदि, असंखेज्जावलियाहि होदव्वं। तं कुदो णव्वदे? 'उवसमसम्माइट्ठी थोवा। खइयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा। वेदयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा'[1] त्ति अप्पाबहुगसुत्तादो णव्वदे। तं जहा, खइयसम्माइट्ठीणमवहारकालेण ताव संखेज्जावलियमेत्तेण आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्तेण वा होदव्वं, अण्णहा मणुस्सेसु असंखे-

तदनन्तर दूसरी आवलीके असंख्यातवें भागका उस आवलीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उतना असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके प्रमाणके निकालनेके विषयमें अवहारकालका प्रमाण होता है। यह काल भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण ही है। असंयतसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकालको दूसरी आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टिविषयक अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर संयतासंयतविषयक अवहारकाल होता है। इसप्रकार जो पूर्वोक्त चार गुणस्थानवाले जीवोंका अवहारकाल बतलाया है उसमें सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयतविषयक सामान्य अवहारकाल आवलीके असंख्यातवें भाग नहीं होता, किन्तु उसे असंख्यात आवलीप्रमाण होना चाहिये।

शंका—यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—'उपशमसम्यग्दृष्टि जीव थोड़े होते हैं, क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव उनसे असंख्यातगुणे होते हैं और वेदकसम्यग्दृष्टि जीव उनसे असंख्यातगुणे होते हैं' इस अल्पबहुत्वके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे उक्त बात जानी जाती है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यात आवली अथवा आवलीके संख्यातवें भागप्रमाण होना चाहिये। यदि ऐसा न माना जावे तो मनुष्योंमें असंख्यात क्षायिकसम्यग्दृष्टि-

१ असजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी। खइयसम्मादिट्ठी असखेज्जगुणा। वेदगसम्मादिट्ठी असखेज्जगुणा॥ जी द्वा. अ. व १५-१७ सू. तदनन्तर (औपशमिकानन्तरम्) क्षायिकग्रहण तस्य प्रतियोगित्वात्ससार्यपेक्षया द्रव्यतस्ततोऽसख्येयगुणत्वाच्च। तत उत्तर मिश्रग्रहण तदुभयात्मकत्वात्ततोऽसख्येयगुणत्वाच्च। स. सि. २, १.

ज्जखइयसम्माइट्ठीणं संभवप्पसंगादो। संखेज्जावलियभागहारुप्पायणविहाणं वुच्चदे। तं जहा, वासपुधत्तमंतरिय जइ सोहम्मदेवेसु संखेज्जाणं खइयसम्माइट्ठीणमुप्पत्ती लब्भइ तो संखेज्जपलिदोवमेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए संखेज्जावलियाहि पलिदोवमे खंडिय तत्थेगखंडमेत्ता खइयसम्माइट्ठी होंति। उवसमसम्माइट्ठीणमवहारकालो पुण असंखेज्जावलियमेत्तो, खइयसम्माइट्ठी-हिंतो तेसिं असंखेज्जगुणहीणत्तण्णहाणुववत्तीदो। सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छा-इट्ठीणं पि अवहारकालो असंखेज्जावलियमेत्तो, उवसमसम्माइट्ठीहिंतो तेसिमसंखेज्ज-गुणहीणत्तण्णहाणुववत्तीदो। 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेण' इत्ति सुत्तेण सह विरोहो वि ण होदि, सामीप्यार्थे वर्तमानान्तःशब्दग्रहणात्[1]। मुहूर्तस्यान्तः

योंकी उत्पत्तिका प्रसंग आ जायगा। अब आगे संख्यात आवलीरूप भागहारके उत्पन्न करनेकी विधि कहते हैं। वह इसप्रकार है—

एक वर्षपृथक्त्वके अनन्तर यदि सौधर्म देवोंमें संख्यात क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंकी उत्पत्ति प्राप्त होती है तो संख्यात पल्योपमकी स्थितिवाले देवोंमें कितने क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक विधिके अनुसार फलराशि संख्यातको इच्छाराशि संख्यात पल्योपमसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि वर्षपृथक्त्वका भाग देने पर अर्थात् संख्यात आवलियोंसे पल्योपमके खंडित करने पर जो भाग लब्ध आवे उतने एक खण्ड प्रमाण क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। उपशमसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तो असंख्यात आवलीप्रमाण है, अन्यथा उपशमसम्यग्दृष्टि जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे असंख्यातगुणे हीन बन नहीं सकते हैं। उसीप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका भी अवहारकाल असंख्यात आवलीप्रमाण है, अन्यथा उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे उक्त दोनों गुणस्थानवाले जीव असंख्यातगुणे हीन बन नहीं सकते हैं। 'इन गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तप्रमाण कालसे पल्योपम अपहृत होता है' इस पूर्वोक्त सूत्रके साथ उक्त कथनका विरोध भी नहीं आता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तमें जो अन्तर् शब्द आया है उसका सामीप्य अर्थमें ग्रहण किया गया है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि जो मुहूर्तके समीप हो उसे अन्तर्मुहूर्त कहते हैं।

विशेषार्थ—अन्तर्मुहूर्तका पल्योपममें भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना सासादन आदि चार गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानवाले जीवोंका प्रमाण है, यह पूर्वोक्त सूत्रका अभिप्राय है। पर टीकाकार वीरसेनस्वामीने यह सिद्ध किया है कि सासादन, मिश्र और देशविरतके अवहारकालका प्रमाण असंख्यात आवलियां है। अब यहां यह प्रश्न उत्पन्न होता

१ एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेणेत्ति सुत्तेण वि ण विरोहो, तस्स उवयारणिबंधणत्तादो। धवला, अल्पब.

अन्तर्मुहूर्तः। कुतः पूर्वनिपातः ? राजदन्तादित्वात्[1]। कुतः ओत्वम्? 'एए छच्च समाणा' इत्येतस्मात्। एदेण सणक्कुमारादिगुणपडिवण्णाणमवहारकालाणं पि असंखेज्जावलियत्तं पसाहियं। एत्थ चोदगो भणदि। एदाओ रासीओ अवट्ठिदाओ ण होंति, हाणिवड्ढिसंजुदत्तादो। ण च हाणिवड्ढीओ णत्थि त्ति वोत्तुं सक्किज्जदे, आयव्वयाभावे मोक्खाभावादो अणादिअपज्जवसिदसासणादिगुणकालाणुवलद्धीदो च। जदि एदाओ रासीओ अवट्ठिदाओ तो एदे भागहारा घडंति, अण्णहा पुण ण घडंति। अणवट्ठिदरासिभागहारेणावि अणवट्ठिदसरूवेणेव अवट्ठाणा होंति। एत्थ परिहारो वुच्चदे– सासणसम्माइट्ठिरासीणमुक्कस्ससंचयं

है कि उक्त तीनों गुणस्थानोंकी संख्या लानेके लिये यदि अवहारकालका प्रमाण असंख्यात आवलियां मान लिया जाता है तो सूत्रमें आये हुए अन्तर्मुहूर्त प्रमाण भागहारके साथ उक्त असंख्यात आवलिप्रमाण भागहारका विरोध आता है, क्योंकि, उत्कृष्ट एक अन्तर्मुहूर्तमें संख्यात आवलियां ही होती हैं, असंख्यात नहीं। इस पर वीरसेनस्वामीने यह समाधान किया है कि यहां पर अन्तर्मुहूर्तमें आये हुए अन्तर् शब्दसे मुहूर्तके समीपवर्ती कालका ग्रहण करना चाहिये जिससे अन्तर्मुहूर्तका अभिप्राय मुहूर्तसे अधिक भी हो सकता है।

शंका — यहां पर अन्तर् शब्दका पूर्व निपात कैसे हो गया है ?

समाधान — क्योंकि, अन्तर् शब्दका राजदन्तादि गणमें पाठ होनेसे पूर्वनिपात हो गया है।

शंका — अन्तर् शब्दमें अर्के स्थानमें ओत्व कैसे हो गया है ?

समाधान — 'एए छच्च समाणा' इस नियामक वचनके अनुसार यहां पर ओत्व हो गया है।

इस उपर्युक्त कथनसे गुणस्थानप्रतिपन्न सानत्कुमार आदि कल्पवासी देवोंसंबन्धी अवहारकाल असंख्यात आवलीप्रमाण सिद्ध कर दिया गया।

शंका — यहां पर शंकाकार कहता है कि ये उपर्युक्त जीवराशियां अवस्थित नहीं होती हैं, क्योंकि, इन राशियोंकी हानि और वृद्धि होती रहती है। यदि कहा जाय कि इन राशियोंकी हानि और वृद्धि नहीं होती है, सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, यदि इन राशियोंका आय और व्यय नहीं माना जाय तो मोक्षका भी अभाव हो जायगा। तथा अनादि अपर्यवसितरूपसे सासादन आदि गुणस्थानोंका काल भी नहीं पाया जाता है, इसलिये भी इन राशियोंकी हानि और वृद्धि मान लेना चाहिये। यदि इन उपर्युक्त राशियोंको अवस्थित माना जावे तो ये भागहार बन सकते हैं, अन्यथा नहीं, क्योंकि, अनवस्थित राशियोंके भागहारोंका भी अनवस्थितरूपसे ही सद्भाव माना जा सकता है ?

समाधान — आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार किया जाता है। क्योंकि सासादन-

१ राजदन्तादिषु परम्। २।२।३१। पाणिनि।

तिकालगोयरमस्सिऊण जम्हा पमाणपरूवणं कदं तम्हा वड्ढिहाणीओ णत्थि त्ति भागहार-परूवणं घडदि त्ति । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा-इट्ठिरासी आगच्छदि । सासणसम्माइट्ठीणं पमाणपरूवणं वग्गट्ठाणे खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि वत्तइस्सामो । तं जहा—

पलिदोवमे असंखेज्जावलियमेत्तखंडे कए तत्थ एगखंडं सासणसम्माइट्ठिरासि-पमाणं होदि । खंडिदं गदं । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे जं भागलद्धं तं सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि । भाजिदं गदं । असंखेज्जावलियाओ विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडपमाणं सासणसम्मा-इट्ठिरासी होदि । विरलिदं गदं । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालं सलागभूदं ठवेऊण

सम्यग्दृष्टि आदि राशियोंके त्रिकालविषयक उत्कृष्ट संचयका आश्रय लेकर प्रमाण कहा गया है, इसलिये उस अपेक्षासे वृद्धि और हानि नहीं है। अत पूर्वोक्त भागहारोंका कथन करना बन जाता है।

सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकालका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्य-ग्दृष्टि जीवराशि आ जाती है।

अब वर्गस्थानमें खण्डित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्पके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण कहते हैं। वह इसप्रकार है—

असंख्यात आवलीके समयोंका जितना प्रमाण हो उतने पल्योपमके खण्ड करने पर उनमेंसे एक खण्डके बराबर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है। इसप्रकार खण्डितका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—पल्योपमप्रमाण ६५५३६ के सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकाल ३२ प्रमाण खण्ड करने पर २०४८ आते हैं। यही सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उतना सासा-दनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है। इसप्रकार भाजितका कथन समाप्त हुआ।

उदाहरण—६५५३६ ÷ ३२ = २०४८ सासादनसम्यग्दृष्टि.

असंख्यात आवलियोंको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति पल्यो-पमको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर उनमेंसे एक खण्ड प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है। इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—$\frac{२०४८}{१}$ $\frac{२०४८}{१}$ $\frac{२०४८}{१}$ इसप्रकार ३२ वार विरलित करके ६५५३६ को उक्त विरलित राशिके प्रत्येक एक पर समानरूपसे दे देने पर २०४८ सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आ जाती है।

सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकालको शलाकारूपसे स्थापित करके पल्योपममेंसे

पलिदोवमम्हि सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं अवणिज्जदि, अवहारकालादो एगरूवमवणिज्जदि; पुणो वि सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं पलिदोवमम्हि अवणिज्जदि, अवहारकालादो एगरूवमवणिज्जदि। एवं पुणो पुणो कीरमाणे पलिदोवमो अवहारकालो च जुगवं णिट्ठिदो। तत्थ एगवारमवहिदपमाणं सासणसम्माइट्ठिरासी होदि। अवहिदं गदं। तस्स पमाणं पलिदोपमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि त्ति। पमाणं गदं। केण कारणेण? पलिदोवमपढमवग्गमूलेण पलिदोवमे भागे हिदे पलिदोवमपढमवग्गमूलमागच्छदि। तस्सेव विदियवग्गमूलादो पलिदोवमे भागे हिदे विदियवग्गमूलस्स

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणको घटा देना चाहिये। पल्योपममेंसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिको एकवार कम किया, इसलिये अवहारकालरूप शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। फिर भी पल्योपममेंसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणको घटा देना चाहिये। दूसरीवार यह क्रिया हुई, इसलिये अवहारकालरूप शलाकाराशिमेंसे एक और कम कर देना चाहिये। इसप्रकार पुनः पुनः करने पर पल्योपम और अवहारकाल एक साथ समाप्त हो जाते हैं। इस क्रियामें एकवार जितनी राशि घटाई जावे उतना सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है। इसप्रकार अपहृतका कथन समाप्त हुआ।

उदाहरण—शलाका राशि ३२ पल्योपम ६५५३६ इस क्रमसे पल्योपममेंसे २०४८ और शलाकारूप भागहारमेंसे एक एक कम करते जाने पर दोनों राशियां एक साथ समाप्त होती हैं। इनमेंसे एकवार घटाई जानेवाली संख्या २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि हैं।

शलाका राशि	पल्योपम
३२	६५५३६
१	२०४८
३१	६३४८८
१	२०४८
३०	६१४४०

उस सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—पल्योपम ६५५३६ का प्रथम वर्गमूल २५६ है और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८ है। २५६ का २०४८ में भाग देने पर ८ आते हैं। इस ८ संख्याको असंख्यातरूप मान लेने पर यह सिद्ध हो जाता है कि पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है।

शंका—किस कारणसे पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है?

समाधान—पल्योपमके प्रथम वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर पल्योपमका प्रथम वर्गमूल आता है। उसीके दूसरे वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर, दूसरे वर्गमूलका जितना

जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । तदियवग्गमूलेण पलिदोवमे भागे हिदे विदियतदियवग्गमूलाणि अण्णोण्णब्भत्थे कए तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्ति-याणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण ट्ठिदअसंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे असंखेज्जाणि पलिदोवम-पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति त्ति ण संदेहो । कारणं गदं । तस्स का णिरुत्ती ? असंखे-ज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि । अधवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमविदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण विदियवग्गमूलं गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पलिदोवम-पढमवग्गमूलाणि । अधवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमतदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा विदियवग्गमूलं गुणेऊण तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण असंखेज्जावलियाहि पदरावलियाए भागे हिदाए जं

प्रमाण हो उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते है । पल्योपमके तीसरे वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर दूसरे और तीसरे वर्गमूलके प्रमाणका परस्पर गुणा करनेसे जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं । इस क्रमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर जो असंख्यात आवलियां स्थित हैं उनका पल्योपममें भाग देने पर असंख्यात प्रथम वर्गमूल आते हैं । इसमें संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पल्यके प्रथम वर्गमूल २५६ का ६५५३६ में भाग देने पर २५६ लब्ध आते हैं । दूसरे वर्गमूल १६ का ६५५३६ में भाग देने पर दूसरे वर्गमूल १६ वार २५६ अर्थात् ४०९६ लब्ध आते हैं । तीसरे वर्गमूल ४ का ६५५३६ में भाग देने पर, दूसरे वर्गमूल १६ और तीसरे वर्गमूल ४ को परस्पर गुणा करनेसे जो ६४ लब्ध आते हैं, उतने अर्थात् ६४ वार प्रथम वर्गमूल २५६ अर्थात् १६३८४ लब्ध आते हैं । इसीप्रकार उत्तरोत्तर नीचे जाने पर असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आवेंगे इसमें कोई संदेह नहीं ।

शंका—असंख्यात प्रथम वर्गमूल आते हैं, इसकी निरुक्ति क्या है ?

समाधान—असंख्यात आवलियोंका पल्योपमके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं । अथवा, असंख्यात आवलियोंका पल्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उससे द्वितीय वर्गमूलको गुणित कर देने पर जितना प्रमाण आवे उतने पल्योपमके प्रथम वर्गमूल होते हैं । अथवा, असंख्यात आवलियोंका पल्योपमके तीसरे वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे तीसरे वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे दूसरे वर्गमूलको गुणित करके वहां जितना प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं । इसी क्रमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर असंख्यात आवलियोंका प्रतरावलीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे प्रतरावलीको गुणित करके, उस गुणित राशिसे प्रतरा-

भागलद्धं तेण पदरावलियं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा तदुवरिमवग्गं गुणेऊण एवमुवरि-मुवरिमवग्गट्ठाणाणि विदियवग्गमूलंताणि णिरंतरं सव्वाणि गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि हवंति त्ति। णिरुत्ती गदा।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि। तत्थ वेरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो। असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण पलिदोवमपढमवग्गमूले गुणिदे सासणसम्माइट्ठिरासी होदि। अथवा अवहारकालेण पलि-दोवमविदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण विदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिद-रासिणा पढमवग्गमूले गुणिदे सासणसम्माइट्ठिरासी होदि। अथवा अवहारकालेण पलिदोवमतदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिद-रासिणा विदियवग्गमूलं गुणेऊण पुणो वि तेण गुणिदरासिणा पढमवग्गमूलं गुणिदे

वलीके उपरिम वर्गको गुणित करके, इसप्रकार द्वितीय वर्गमूलपर्यंत सर्व उपरिम उपरिम वर्ग-स्थानोंको निरंतर गुणित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं। इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ।

उदाहरण—असंख्यात आवलीप्रमाण ३२ का भाग पल्यके प्रथम वर्गमूल २५६ में देने पर ८ लब्ध आते हैं। इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि २०४८ में ८ ही प्रथम वर्गमूल होते हैं। द्वितीय वर्गमूल १६ में ३२ का भाग देने पर ½ लब्ध आता है। इसका द्वितीय वर्ग-मूलसे गुणा करने पर ८ लब्ध आते हैं। तृतीय वर्गमूल ४ में ३२ का भाग देने पर ⅛ लब्ध आता है। इसका, दूसरे १६ और तीसरे ४ वर्गमूलके परस्पर गुणनफल ६४ से, गुणा कर देने पर ८ लब्ध आते हैं। इसप्रकार सर्वत्र समझ लेना चाहिये।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प। उन दोनोंमेंसे पहले द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—

असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करने पर सासादन-सम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है।

उदाहरण—पल्योपम ६५५३६ का प्र. वर्गमूल २५६, असंख्यात आवलियां ८.

२५६ × ८ = २०४८ सा.

अथवा, अवहारकालका पल्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है।

उदाहरण—६५५३६ का द्वितीय वर्गमूल १६; अवहारकाल ३२;

१६ – ३२ = $\frac{१}{२}$, १६ × $\frac{१}{२}$ = ८, २५६ × ८ = २०४८ सा.

अथवा, अवहारकालका पल्योपमके तृतीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके फिर भी उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि

सासणसम्माइट्ठिरासी होदि। एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण असंखेज्जावलियाहि पदरावलियाए भागे हिदाए जं भागलद्धं तेण पदरावलियं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा तदुवरिमवग्गं गुणेऊण एवमुवरिमवग्गट्ठाणाणि पढमवग्गमूलंताणि सव्वाणि णिरंतरं गुणिदे सासणसम्माइट्ठिरासी होदि। जदि वि णिरुत्तिं भण्णमाणे एसो अत्थो पुव्वं परूविदो तो वि ण पुणरुत्तो होदि, तिण्णि वि वग्गधाराओ अस्सिऊण ट्ठिदहेट्ठिमवियप्पसंबंधत्तादो। वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो गदो।

अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो। असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणपल्लपढमवग्गमूले भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी होदि। केण कारणेण? पलिदोवमपढमवग्गमूलेण घणपल्लपढमवग्गमूले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि। पुणो असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। एवमाग-

जीवराशि होती है।

उदाहरण—६५५३६ का तृतीय वर्गमूल ४;

$$४ - ३२ = \frac{१}{८},\ ४ \times \frac{१}{८} = \frac{१}{२},\ १६ \times \frac{१}{२} = ८;\ २५६ \times ८ = २०४८ \text{ सा.}$$

इसी क्रमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर असंख्यात आवलियोंका प्रतरावलीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे प्रतरावलीको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गको गुणित करके इसीप्रकार प्रथम वर्गमूलपर्यन्त उपरिम उपरिम संपूर्ण वर्गस्थानोंको निरन्तर गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है।

उदाहरण—प्रतरावलि = २,

$$२ - ३२ = \frac{१}{१६},\ २ \times \frac{१}{१६} = \frac{१}{८},\ ४ \times \frac{१}{८} = \frac{१}{२},$$

$$१६ \times \frac{१}{२} = ८;\ २५६ \times ८ = २०४८ \text{ सा.}$$

यद्यपि निरुक्तिका कथन करते समय यह विषय पहले वहां पर कह आये हैं, तो भी इस विषयके यहां पर पुनः कथन करनेसे पुनरुक्त दोष नहीं होता है, क्योंकि, यहां पर तीनों ही वर्गधाराओंका आश्रय लेकर स्थित अधस्तन विकल्पका संबन्ध है। इसप्रकार द्विरूप वर्गधारामें अधस्तन विकल्पका कथन समाप्त हुआ।

अब घनधारामें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं। असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनपल्यके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है, क्योंकि, पल्योपमके प्रथम वर्गमूलसे घनपल्यके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर पल्योपमका प्रमाण आता है। अनन्तर असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमके भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है। घनपल्यमें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है, ऐसा समझ कर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण—पल्योपमका प्रथम वर्गमूल २५६, घनपल्यका प्रथम वर्गमूल १६७७७२१६;

$$२५६ \times ३२ = ८१९२;\ १६७७७२१६ - ८१९२ = २०४८ \text{ सा.}$$

च्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पो भवदु णाम, वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो ण घडदे । केण कारणेण ? अवहारकालेण पलिदोवमादो हेट्ठिमवग्गट्ठाणाणि भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी ण उप्पज्जदि त्ति । ण एस दोसो, पलिदोवमादो हेट्ठिमवग्गट्ठाणाणि अवहारकालेणोवट्टिय तप्पाओग्गवग्गट्ठाणाणि गुणिदे केवलमोवट्टिदे च जत्थ रासी आगच्छदि सो हेट्ठिमवियप्पो त्ति अब्भुवगमादो । मिच्छाइट्ठिरासिपरूवणाए वि एदम्हि णए अवलंबिज्जमाणे वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो अत्थि त्ति वत्तव्वो ? एसा परूवणा जेण अवहारकालपहाणा तेण पलिदोपमादो हेट्ठिमवग्गट्ठाणाणि अवहारेणोवट्टिय जदि सासणसम्माइट्ठिरासी उप्पाइदुं सक्किज्जदे तो हेट्ठिमवियप्पस्स वि संभवो होज्ज । ण च एवं वेरूवधाराए संभवइ । एदं णयमस्सिऊण मिच्छाइट्ठिरासिपरूवणाए हेट्ठिमवियप्पो णत्थि त्ति भणिदं । एसो णओ एत्थ पहाणो । एवमट्ठरूवपरूवणा गदा ।

शंका—घनधारामें अधस्तन विकल्प रहा आवे, परंतु द्विरूप वर्गधारामें अधस्तन विकल्प घटित नहीं होता है, क्योंकि, अवहारकालका पल्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंमें भाग दिया जाता है तो सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि उत्पन्न नहीं होती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पल्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंको अवहारकालसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे उसके योग्य वर्गस्थानोंके गुणित करने पर अथवा, केवल अपवर्तित करने पर, अर्थात् पल्योपमको अवहारकालसे भाजित करने पर, जहां पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है वह अधस्तन विकल्प यहां पर स्वीकार किया गया है।

उदाहरण—पल्योपमका अधस्तन वर्गस्थान = २५६; २५६ − ३२ = ८, २५६ × ८ = २०४८ सा. अथवा. ६५५३६ − ३२ = २०४८ सा.

शंका—मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणामें भी इस नयके अवलम्बन करने पर द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्प बन जाता है, इसलिये वहां पर उसका कथन करना चाहिये था ?

समाधान—क्योंकि यह प्ररूपणा अवहारकालप्रधान है, इसलिये पल्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंको अवहारकालसे भाजित करके यदि सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि उत्पन्न करना शक्य है तो यहां पर अधस्तन विकल्प भी संभव है। परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालते समय द्विरूपवर्गधारामें इसप्रकार अधस्तन विकल्प संभव नहीं है । इसी नयका आश्रय करके मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणामे अधस्तन विकल्प नहीं होता, ऐसा कहा है । यह नय यहां पर प्रधान है । इसप्रकार घनधारा समाप्त हुई ।

विशेषार्थ—सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालनेके लिये असंख्यात आवली-

घणाघणे वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणपल्लविदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणाघणपल्लविदियवग्गमूले भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। केण कारणेण ? घणपल्लविदियवग्गमूलेण घणाघणपल्लविदियवग्गमूले भागे हिदे घणपल्लपढमवग्गमूलमागच्छदि। पुणो वि पलिदोवमपढमवग्गमूलेण घणपल्लपढमवग्गमूले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । एत्थ दुगुणादिकरणे कदे हेट्ठिमवियप्पो समप्पदि ।

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ वेरूवधाराए गहिदं वत्तइस्सामो। असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा-

प्रमाण जो भागहार है वह पल्योपमके प्रथम वर्गमूलसे छोटा है, इसलिये यहां पर अधस्तन विकल्प बन जाता है। परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालनेके लिये जो भागहार कह आये हैं वह जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रथम वर्गमूलरूप जीवराशिसे बड़ा है, अतएव वहां पर द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्प किसी प्रकार भी संभव नहीं है।

अब घनाघनधारामें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनपल्यके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनपल्यके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनपल्यके द्वितीय वर्गमूलका घनाघन पल्यके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर घनपल्यका प्रथम वर्गमूल आता है। अनन्तर पल्योपमके प्रथम वर्गमूलका घनपल्यके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर पल्योपम आता है। अनन्तर असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है। घनाघनधारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण—पल्योपमका प्रथम वर्गमूल २५६; घनपल्यका द्वितीय वर्गमूल ४०९६; घनाघन पल्यका द्वितीय वर्गमूल ६८७१९४७६७३६;

$$\frac{६८७१९४७६७३६}{३२ \times २५६ \times ४०९६} = २०४८ \text{ सा.}$$

यहां पर द्विगुणादिकरणके कर लेने पर अधस्तन विकल्प समाप्त हो जाता है।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार। उनमेंसे पहले द्विरूप वर्गधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है।

उदाहरण—६५५३६ ÷ ३२ = २०४८ सा.

इट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए[1] कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवं तिय-चउक्क-पंचादिछेदणाणि वि अवलंबिय सासणसम्माइट्ठिरासी उप्पाएदव्वो । अथवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवम गुणेऊण पदरपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? पलिदोवमेण पदरपल्ले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे सासणसम्माइट्ठि-

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार पल्योपम राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—३२ भागहारके ५ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार ६५५३६ के अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार त्रिकछेद, चतुष्कछेद और पंचछेद आदिका अवलंबन करके भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये ।

उदाहरण—३२ के त्रिकछेद २ $\frac{३२}{३}$ $\frac{३२}{९}$ $\frac{३२}{२७}$ (१, २, ३)

६५५३६ के त्रिकछेद $\frac{६५५३६}{३}$ $\frac{६५५३६}{९}$ $\frac{६५५३६}{२७}$,

$\frac{६५५३६}{२७} - \frac{३२}{२७} =$ २०४८ सा.

इसीप्रकार चतुष्कछेद आदि के भी उदाहरण बना लेना चाहिये ।

अथवा, असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरपल्यमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । इसका कारण यह है कि पल्योपमका प्रतरपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है, और फिर असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है । द्विरूपवर्गधारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, अतएव पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण—$\frac{६५५३६^२}{६५५३६ \times ३२} =$ २०४८ सासादनसम्यग्दृष्टि.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—३२ × ६५५३६ रूप भागहारके २१ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये इतनीवार ६५५३६ × ६५५३६ के अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

१ प्रतिषु '-मेत्ते सरिसव्व छेदणए' इति पाठः ।

रासी आगच्छदि । तस्स अद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? असंखेज्जावलियद्धच्छेदण-याहियपलिदोवमद्धच्छेदणयमेत्ता । अधवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा पदरपल्लं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आग-च्छदि । केण कारणेण ? पदरपल्लेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पलिदोवमेण पदरपल्ले भागे हिदे पल्लो आगच्छदि । पुणो असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? पलिदोवमादो उवरि चडिदद्धाणसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासि-रूवूणेण पलिदोवमस्स अद्धच्छेदणाओ गुणिय असंखेज्जावलियाणं छेदणापक्खित्तमेत्ता ।

शंका — उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाएं कितनी हैं ?

समाधान — असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेदोंको पल्योपमके अर्धच्छेदोंमें मिला देने पर जितना प्रमाण आवे उतनी उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाएं हैं ।

उदाहरण—३२ के अर्धच्छेद ५ और ६५५३६ के अर्धच्छेद १६ इन दोनोंका जोड़ २१ होता है । यही ३२ × ६५५३६ के अर्धच्छेद जानना चाहिये ।

अथवा, असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमको गुणित करके जो गुणा की हुई राशि लब्ध आवे उससे प्रतरपल्यको गुणित करके जो राशि लब्ध आवे उसका प्रतरपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, प्रतरपल्यका प्रतरपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर प्रतरपल्य आता है । पुनः पल्योपमका प्रतरपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है । पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । द्विरूप वर्गधारामें इसप्रकार भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, इसलिये पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण—$\frac{६५५३६^२ \times ६५५३६^२}{३२ \times ६५५३६ \times ६५५३६^२} = २०४८$ सा.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों, उतनीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—३२ × ६५५३६ × ६५५३६^२ रूप भागहारके ५३ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये इतनीवार ६५५३६^२ × ६५५३६^२ प्रमाण भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ आते हैं।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी हैं ?

समाधान—पल्योपमसे ऊपर दो स्थान आये हैं, इसलिये दोका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न होवे उसमेंसे एक कमा कर जो शेष रहे उससे पल्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेदोंके मिला देने पर उक्त भागहारकी अर्धच्छेद

एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । वेरूवपरूवणा गदा ।

अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण घणपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊग भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स अद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? दुगुणिदपलिदोवमद्धच्छेदणएसु असंखेज्जावलियाणं अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । अधवा असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणपल्लं गुणेऊण घणपल्लउवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी

शलाकाएं आ जाती हैं ।

उदाहरण—$\frac{2}{1}\ \frac{2}{1} = 4 - 1 = 3 \times 16 = 48 + 5 = 53.$

इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्तराशिमें भी ले जाना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपप्ररूपणा समाप्त हो गई ।

अब घनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं— असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनपल्यमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है, क्योंकि, प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है । पुन असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनधारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण— $\frac{६५५३६^3}{३२ \times ६५५३६^2}$ = २०४८ सासादनसम्यग्दृष्टि.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमानराशि घनपल्यके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है ।

उदाहरण—उक्त भागहार ३२×६५५३६^2 के अर्धच्छेद ३७ होते हैं; इसलिये ३७ वार उक्त भज्यमान राशि ३६५३६^3 के अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ आते हैं ।

शंका— उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी हैं ?

समाधान—द्विगुणित पल्योपमके अर्धच्छेदोंमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाएं होती हैं ।

उदाहरण—१६ × २ = ३२ + ५ = ३७.

अथवा, असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो गुणितराशि लब्ध आवे उससे घनपल्यको गुणित करके लब्ध राशिका घनपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर

आगच्छदि। केण कारणेण? घणपल्लेणुवरिमवग्गे भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि। पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि। पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्सद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया? एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासितिगुणरूवूणेण पलिदोवमस्स अद्धच्छेदणाओ गुणिय असंखेज्जावलियाणं अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता। एवमुवरि वि अद्धच्छेदणयाणं संकलण-विहाणं वत्तव्वं। एत्थ दुगुणादिकरणं कायव्वं। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। अट्ठरूवपरूवणा गदा।

घणाघणे वत्तइस्सामो। असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण घणपल्लउव-

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है, क्योंकि, घनपल्यका घनपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनपल्य आता है। पुनः प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है। पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है। घनधारामें इसप्रकार भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण—$\frac{६५५३६^३ \times ६५५३६^३}{३२ \times ६५५३६^२ \times ६५५३६^३}$ = २०४८ सा.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८५ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये ८५ वार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी होती हैं?

समाधान—एकका विरलन करके और उसे दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिको तीनसे गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके शेषसे पल्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो संख्या आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं।

उदाहरण—$\overset{२}{१}$ = २ × ३ = ६ − १ = ५ × १६ = ८० + ५ = ८५.

इसीप्रकार ऊपर भी अर्धच्छेदोंके संकलन करनेके विधानका कथन करना चाहिये। यहां पर द्विगुणादिकरणविधि करना चाहिये। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त-स्थानोंमें भी ले जाना चाहिये। इसप्रकार घनधारा प्ररूपणा समाप्त हुई।

अब घनाघनधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनपल्यके उपरिम

रिमवग्गं गुणेऊण तेण घणाघणपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लउवरिमवग्गेण घणाघणपल्ले भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स अद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? रूवूणणवहि रूवेहि पलिदोवमस्स अद्धच्छेदणए गुणिय असंखेज्जावलियद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । अधवा असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण घणपल्लुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण पुणो घणाघणपल्लं¹ गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणाघणेण उवरिमवग्गे भागे हिदे घणाघणो आगच्छदि । पुणो वि

वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनपल्यमें भाग देने पर सासादन-सम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनपल्यके उपरिम वर्गका घनाघनपल्यमें भाग देने पर घनपल्य आता है। पुनः प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है। पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है। घनाघनधारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण—$\frac{६५५३६^{३} \times ६५५३६^{३} \times ६५५३६^{३}}{३२ \times ६५५३६^{२} \times ६५५३६^{२} \times ६५५३६}$ = २०४८ सा.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है।

उदाहरण—उक्त भागहारके अर्धच्छेद १३३ होते हैं, इसलिये उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि २०४८ आती है।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी हैं?

समाधान—नौमेंसे एक कम करके जो शेष रहते हैं उनसे पल्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं।

उदाहरण—९ – १ = ८ × १६ = १२८ + ५ = १३३.

अथवा, असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनपल्यके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनपल्यको गुणित करके आये हुए लब्धका घनाघनपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनाघनपल्यका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनाघनपल्य

---

¹ प्रतिषु 'घणपल्लं' इति पाठ ।

घणपल्लुवरिमवग्गेण घणाघणे भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि। पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि। पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्सद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया? एगघणाघणवग्गसलागं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थकदणवगुणरूवूणरासिणा पलिदोवमद्धच्छेदणए गुणिय असंखेज्जावलियाणं अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता। एवं दोण्णि-चत्तारि-आदि-वग्गट्ठाणाणि विरलिय विगुणिदण्णोण्णब्भत्थणवगुणरूवूणरासिणा पलिदोवमद्धच्छेदणा गुणिय सादिरेगा

आता है। पुनः घनपल्यके उपरिम वर्गका घनाघनपल्यमें भाग देने पर घनपल्य आता है। पुनः प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है। पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है। घनाघनधारामें इसप्रकार भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, इसलिये पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण—$\frac{\text{६५५३६}^{८} \times \text{६५५३६}^{४}}{\text{३२} \times \text{६५५३६}^{४} \times \text{६५५३६}^{४} \times \text{६५५३६}^{२} \times \text{६५५३६}} = \text{२०४८ सा.}$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है।

उदाहरण—उक्त भागहारके २७७ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी होती हैं?

समाधान—घनाघनरूप एक वर्गशलाकाका विरलन करके और उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुए दोको नौसे गुणा करने पर जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे पल्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेदोंके मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण आ जाता है।

उदाहरण—$\text{२}^{\text{१}}$ = २ × ९ = १८ − १ = १७ × १६ = २७२ + ५ = २७७.

इसीप्रकार दो वर्गस्थान या चार वर्गस्थान आदि ऊपर गये हों तो दो या चार आदिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उसे नौसे गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करे, जो शेष रहे उसे पल्योपमके अर्धच्छेदोंसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला कर सर्वत्र भागहारके अर्धच्छेद उत्पन्न कर लेना चाहिये। सर्वत्र द्विगुणादि-

करिय भागहारद्धच्छेदणया उप्पाएदव्वा । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं कादव्वं । गहिद-परूवणा गदा ।

गहिदगहिदं वत्तइस्सामो । तं जहा, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण वेरूव-धाराए उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमुवरि सव्वत्थ कायव्वं । वेरूवपरूवणा गदा । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । घणपल्लपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते

करण कर लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीत उपरिमविकल्प प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— पल्योपमके असंख्यातवें भाग (सासादनसम्यग्दृष्टिराशि) का द्विरूपवर्गधारामें ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी इच्छित वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—६५५३६ का इच्छित वर्ग $६५५३६^{२}$

$$\frac{६५५३६^{२}}{२०४८} = ६५५३६ \times ३२, \quad \frac{६५५३६^{२}}{६५५३६ \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २१ अर्धच्छेद हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार ऊपरके वर्गस्थानोंमें भी सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपवर्गधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई । अब घनधारामें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनपल्यके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी इच्छित वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—घन $६५५३६^{३}$ का प्रथम वर्गमूल $२५६^{३}$

$$\frac{२५६^{३}}{२५६ \times ३२} = २०४८; \quad \frac{६५५३६^{३} \times ६५५३६^{३}}{२०४८} = ६५५३६^{५} \times ३२,$$

$$\frac{६५५३६^{६}}{६५५३६^{५} \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवं सव्वत्थ परूवेदव्वं । अट्ठरूवपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघणपल्लविदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । गहिदगहिदो गदो ।

गहिदगुणगारं वत्तइस्सामो । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिम-

उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८५ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टिराशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र प्ररूपण करना चाहिये । इसप्रकार घनधारा समाप्त हुई । अब घनाघनधारामें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं—

घनाघनपल्यके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणका घनाघनपल्यके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—घनाघन $६५५३६^{८}$ का द्वितीय वर्गमूल $१६^{८}$; $१६^{८}$ का असंख्यातवां भाग २×१६^{५},

$$\frac{१६^{८}}{२ \times १६^{५}} = २०४८; \quad \frac{६५५३६^{८} \times ६५५३६^{८}}{२०४८} = ६५५३६^{१५} \times ३२;$$

$$\frac{६५५३६^{८} \times ६५५३६^{८}}{६५५३६^{१५} \times ३२} = २०४८.$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २७७ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प समाप्त हुआ ।

अब गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—पल्योपमके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणका पल्योपमके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिका इच्छित वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी अवचिट्ठदे । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं । वेरूवपरूवणा गदा । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । घणपल्लपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी अवचिट्ठदे । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं । अट्ठरूवपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघण-

उदाहरण—$\frac{६५५३६^{२}}{२०४८} = ६५५३६ \times ३२$; $६५५३६^{२} \times ६५५३६ \times ३२ = ६५५३६^{३} \times ३२$;

$$\frac{६५५३६^{२} \times ६५५३६^{२}}{६५५३५ \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ५३ अर्धच्छेद होते हैं, अतएव इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०३८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपप्ररूपणा समाप्त हुई । अब अष्टरूपमें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनपल्यके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि राशिका घनपल्यके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिका इच्छित वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—$६५५३६^{३}$ का प्रथम वर्गमूल $२५६^{३}$;

$$\frac{२५६^{२}}{३२ \times २५६} = २०४८; \quad \frac{६५५३६^{३} \times ६५५३६^{३}}{२०४८} = ६५५३६^{६} \times ३२;$$

$$६५५६६^{५} \times ६५५३६ \times ३२ = ६५५३६^{११} \times ३२;$$

$$\frac{६५५३६^{६} \times ६५५३६^{६}}{६५५३६^{११} \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उक्त भागहारके १८१ अर्धच्छेद होते हैं, अतएव इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र कहना चाहिये । इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई । अब

विदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी अवचिट्ठदे। एवं सव्वत्थ घणाघणधाराए वत्तव्वं। गहिदगुणगारो गदो। एवं सासणसम्माइट्ठिपरूवणा समत्ता। एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं च वत्तव्वं। णवरि विसेसो अप्पप्पणो अवहारकालेहि खंडिदादओ वत्तव्वा। एत्थ एदेसिं संदिट्ठिं वत्तइस्सामो—

> बत्तीस सोलस चत्तारि जाण सदसहिदमट्ठवीसं च।
> एदे अवहारत्था हवंति संदिट्ठिणा दिट्ठा ॥ ३७ ॥

....

घनाघनधारामें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनाघनके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका घनाघनपल्यके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसी इच्छित वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है।

उदाहरण—$\frac{१६^{९}}{२ \times १६^{६}} = २०४८$; $\frac{६५५३६^{९} \times ६५५३६^{९}}{२०४८} = ६५५३६^{१७} \times ३२$;

$$६५५३६^{१८} \times ६५५३६^{१७} \times ३२ = ६५५३६^{३५} \times ३२;$$

$$\frac{६५५३६^{३६}}{६५५६६^{३५} \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ५६५ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है।

सर्वत्र घनाघनधारामें आगे भी इसीप्रकार कहना चाहिये। इसप्रकार गृहीतगुणकार उपरिम विकल्प समाप्त हुआ।

इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि प्ररूपणा समाप्त हुई।

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीवराशिके प्रमाणका खण्डित, भाजित आदिके द्वारा कथन करना चाहिये। इतनी विशेषता है कि अपने अपने अवहारकालके द्वारा ही खण्डित, भाजित आदिका कथन करना चाहिये। आगे इन सबकी अंकसंदृष्टि बतलाते हैं—

सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण ३२, सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण १६, असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण ४, और संयता-

पण्णट्ठी च सहस्सा पंचसया खलु छउत्तरा तीसं ।
पलिदोवमं तु एवं वियाण संदिट्ठिणा दिट्ठं ॥ ३८ ॥
त्रिसहस्सं अडयालं छण्णउदी चेय चदुसहस्साणि ।
सोलसहस्साणि पुणो तिण्णिसया चउरसीदीया ॥ ३९ ॥
पचसय बारसुत्तरमुद्दिट्ठाइं तु लद्धदव्वाइं ।
सासण-मिस्सासंजद-विरदाविरदाण णु कमेण ॥ ४० ॥

सासणसम्माइट्ठी ३२; सम्मामिच्छाइट्ठी १६; असंजदसम्माइट्ठी ४; संजदासंजद १२८; एदे अवहारकाला । सासणसम्माइट्ठिदव्वपमाणं २०४८ सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं ४०९६ असंजदसम्माइट्ठिदव्वपमाणं १६३८४ संजदासंजददव्वपमाणं ५१२ । पलिदोवमपमाणं ६५५३६[1] ।

पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, कोडिपुधत्तं[2] ॥ ७ ॥

पमत्तसंजदग्गहणं सेसगुणट्ठाणाणं पडिसेहट्ठं । कोडिपुधत्तग्गहणं सेससंखाणिरा-

संयतसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण १२८ जानना चाहिये। सम्यग्ज्ञानियोंके द्वारा देखे गये ये अवहारार्थ हैं ॥ ३७ ॥

पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीसको पल्योपम जानना चाहिये ऐसा सम्यग्ज्ञानियोंने अवलोकन किया है ॥ ३८ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८, सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण ४०९६, असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण १६३८४ और संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण ५१२ आता है ॥ ३९-४० ॥

सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी भागहार ३२, सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी भागहार १६, असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी भागहार ४ और संयतासंयतसंबन्धी भागहार १२८ है। सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८, सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण ४०९६, असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण १६३८४ और संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण ५१२ है। तथा पल्योपमका प्रमाण ६५५३६ समझना चाहिये।

प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? कोटिपृथक्त्वप्रमाण हैं ॥ ७ ॥

शेष गुणस्थानोंका प्रतिषेध करनेके लिये प्रमत्तसंयतपदका ग्रहण किया है। शेष संख्याओंका निराकरण करनेके लिये कोटिपृथक्त्व पदका ग्रहण किया है।

१ प स. पृ ८.

२ प्रमत्तसयता कोटीपृथक्त्वसख्याः । पृथक्त्वमित्यागमसक्षा तिसृणां कोटीनामुपरि नवानामधः । स. सि. १, ८. पचेव य तेणउदी णवट्ठविसयच्छउत्तर पमदे । गो. जी. ६२४.

करणट्ठं । पुधत्तमिदि तिण्हं कोडीणमुवरि णवण्हं कोडीणं हेट्ठदो जा संखा सा घेत्तव्वा । सा अणेगवियप्पादो इमा होदि त्ति ण जाणिज्जदे ? ण, परमगुरूवदेसादो जाणिज्जदे । तत्थ पमत्तसंजदा णं पंच कोडीओ तेणउदिलक्खा अट्ठाणउदिसहस्सा छउत्तरं विसदं च ५९३९८२०६ । एदमेत्तियं होदि त्ति कधं णव्वदे? आइरियपरंपरागदजिणोवदेसादो ।

अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥८॥

जदि वि एदं संखेज्जा इदि वयणं सव्वसंखेज्जवियप्पाणं साहारणं हवदि तो वि कोडिपुधत्तं ण पूरेदि त्ति णव्वदे । तं कधं ? पुध सुत्तारंभण्णहाणुववत्तीदो, 'पमत्तद्धादो अप्पमत्तद्धा संखेज्जगुणहीणो' त्ति सुत्तादो वा । अप्पमत्तसंजदाणं पमाणं गुरूवदेसादो वुच्चदे । दो कोडीओ छण्णउदिलक्खा णवणउदिसहस्सा तिरहियसयं च । अंकदो वि एत्तिया हवंति २९६९९१०३ । वुत्तं च–

शंका—पृथक्त्व इस पदसे तीन कोटिके ऊपर और नौ कोटिके नीचे जितनी संख्या है, वह लेना चाहिये। परंतु वह मध्यकी संख्या अनेक विकल्परूप होनेसे यही संख्या यहां ली गई है यह नहीं जाना जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है। उसमें प्रमत्त-संयत जीवोंका प्रमाण पांच करोड़ तेरानवे लाख अट्ठानवे हजार दोसौ छह ५९३९८२०६ है।

शंका—यह संख्या इतनी है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—आचार्यपरंपरासे आये हुए जिनेन्द्रदेवके उपदेशसे यह जाना जाता है कि यह संख्या इतनी ही है।

अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ८ ॥

यद्यपि सूत्रमें आया हुआ 'संखेज्जा' यह वचन, संख्यात संख्याके जितने भी विकल्प हैं, उनमें समानरूपसे पाया जाता है तो भी वह कोटिपृथक्त्वको पूरा नहीं करता है, अर्थात् यहां पर कोटिपृथक्त्वसे नीचेकी संख्या इष्ट है, यह जाना जाता है।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यहां पर पूर्वोक्त अर्थ इष्ट न होकर यदि कोटिपृथक्त्वरूप अर्थ ही इष्ट होता तो अलगसे सूत्र बनानेकी कोई आवश्यकता नहीं थी। अथवा, 'प्रमत्तसंयतके कालसे अप्रमत्तसंयतका काल संख्यातगुणा हीन है' इस सूत्रसे भी जाना जाता है कि यहां पर कोटिपृथक्त्वरूप अर्थ इष्ट नहीं है।

अब गुरूपदेशसे अप्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण कहते हैं—

अप्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण दो करोड़ छ्यानवे लाख निन्यानवे हजार एकसौ तीन

१ अप्रमत्तसंयताः सख्येयाः । स. सि. १, ८. तिरधियसयणवणउदी छण्णउदी अप्पमत्त बे कोडी । गो जी. ६२५. कोडीसहस्सपुहुत्तं पमत्तइयरे उ थोवयरा । पञ्चसं. २. २२.

तिगहिय-सद णवणउदी छण्णउदी अप्पमत्त बे कोडी ।
पंचेव य तेणउदी णवट्ठ विसया छउत्तरा चेय[1] ॥ ४१ ॥

अप्पमत्तदव्वादो पमत्तदव्वं केण कारणेण दुगुणं ? अपमत्तद्धादो पमत्तद्धाए दुगुणत्तादो ।

चदुण्हमुवसामगा दव्वपमाणेण केवडिया; पवेसेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण चउवण्णं[2] ॥ ९ ॥

एगेगगुणट्ठाणम्हि एगसमयम्हि चारित्तमोहणीयमुवसामेंतो जहण्णेण एगो जीवो पविसइ, उक्कस्सेण चउवण्ण जीवा पविसंति । एदं सामण्णदो भवदि । विसेसदो पुण अट्ठ-समयाहिय-वासपुधत्तब्भंतरे उवसमसेढिपाओग्गा अट्ठ समया हवंति । तत्थ पढमसमए एगजीवमाइं कादूण जा उक्कस्सेण सोलस जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति । विदियसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण चउवीस जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति । तदियसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण तीस जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति । चउत्थसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण छत्तीस जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति ।

है । अंकोंसे भी अप्रमत्तसंयत २९६९९१०३ इतने ही हैं । कहा भी है—

प्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण पांच करोड़ तेरानवे लाख अट्ठानवे हजार दोसौ छह है और अप्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण दो करोड़ छ्यानवे लाख निन्यानवे हजार एकसौ तीन है ॥४१॥

शंका—अप्रमत्तसंयतके द्रव्यसे प्रमत्तसंयतका द्रव्य किस कारणसे दूना है ?

समाधान—क्योंकि, अप्रमत्तसंयतके कालसे प्रमत्तसंयतका काल दुगुणा है ।

चारों गुणस्थानोंके उपशामक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? प्रवेशकी अपेक्षा एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे चौवन होते हैं ॥ ९ ॥

उपशमश्रेणीके प्रत्येक गुणस्थानमें एक समयमें चारित्रमोहनीयका उपशम करता हुआ जघन्यसे एक जीव प्रवेश करता है और उत्कृष्टरूपसे चौवन जीव प्रवेश करते हैं । यह कथन सामान्यसे है । विशेषकी अपेक्षा तो आठ समय अधिक वर्षपृथक्त्वके भीतर उपशमश्रेणीके योग्य (लगातार) आठ समय होते हैं । उनमेंसे प्रथम समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे सोलह जीवतक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । दूसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे चौवीस जीवतक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । तीसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे तीस जीवतक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । चौथे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे

---

१ गो. जी. ६२५ पर तत्र 'पचव य तेणउदी णवट्ठविसयच्छउत्तर पमदे' इति पाठ । प स. ६२, ६३.

२ चत्वार उपशामका प्रवेशेन एको वा द्वौ वा त्रयो वा । उत्कर्षेण चतुःपंचाशत् । स. सि. १, ८. एगाइ चउपण्णा समग उवसामगा य उवसंता । पञ्चस. २, २३.

पंचमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण बायाल जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति। छट्ठसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण अडदाल जीवा त्ति उवसमसेढिमारुहंति। सत्तमट्ठमदोसु समएसु एकजीवमाइं काऊण जावुक्कस्सेण चउवण्ण जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति। उत्तं च—

सोलसयं चउवीसं तीसं छत्तीस तह य बायालं।
अडयालं चउवण्णं चउवण्णं होइ अंतिमए[1] ॥ ४२ ॥

अद्धं पडुच्च संखेज्जा[2] ॥ १० ॥

पुव्वुत्तेसु अट्ठसु समएसु एगेगगुणट्ठाणम्हि उक्कस्सेण संचिदसव्वजीवे एगट्ठं कदे चउरुत्तरतिसयमेत्ता हवंति। तेसिं संखेवेण मेलावणविहाणं वुच्चदे। अट्ठं गच्छं ठविय सत्तारसमाइं काऊण छउत्तरं करिय संकलणसुत्तेण[3] मेलाविदे एगेगगुणट्ठाणम्मि संचिद-

छत्तीस जीव तक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं। पांचवें समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे ब्यालीस जीव तक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं। छठे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे अड़तालीस जीव तक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं। सातवें और आठवें इन दोनों समयोंमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे चौवन चौवन जीव तक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं। कहा भी है—

निरन्तर आठ समयपर्यन्त उपशमश्रेणी पर चढ़नेवाले जीवोंमें अधिकसे अधिक प्रथम समयमें सोलह, दूसरे समयमें चौवीस, तीसरे समयमें तीस, चौथे समयमें छत्तीस, पांचवें समयमें ब्यालीस, छठे समयमें अड़तालीस, सातवें समयमें चौवन और अन्तिम अर्थात् आठवें समयमें भी चौवन जीव उपशमश्रेणीपर चढ़ते हैं ॥ ४२ ॥

कालकी अपेक्षा उपशमश्रेणीमें संचित हुए सभी जीव संख्यात होते हैं ॥ १० ॥

पूर्वोक्त आठ समयोंमें एक एक गुणस्थानमें उत्कृष्टरूपसे संचित हुए संपूर्ण जीवोंको एकत्रित करने पर तीनसौ चार होते हैं। आगे संक्षेपसे उन्हींके जोड़ करनेकी विधि कहते हैं—

आठको गच्छरूपसे स्थापित करके, सत्रहको आदि अर्थात् मुख करके और छहको उत्तर अर्थात् चय करके 'पदमेगेण विहीणं' इत्यादि संकलन सूत्रके नियमानुसार जोड़ करने पर प्रत्येक गुणस्थानमें उपशमक जीवोंकी संचित राशिका प्रमाण तीनसौ चार आ जाता है।

उदाहरण—$८ - १ = ७ \div २ = ३\frac{१}{२} \times ६ = २१ + १७ = ३८ \times ८ = ३०४.$

१ गो. जी. ६२७. प. स. ६५, ६७.

२ स्वकालेन समुदिताः सख्येयाः। स. सि. १, ८ अद्धं पडुच्च सेढीए होंति सव्वे वि सखेज्जा। पञ्चम. २, २३.

३ पदमेगेण विहीणं दुभाजिद उत्तरेण संगुणिदं। पभवजुद पदगुणिद पदगणिद त विजाणाहि। त्रि. सा. १६४. एकहीन पदं वृद्धया ताडित भाजित द्विभिः। आदियुक्त पराभ्यस्तमीप्सित गणित मतम् ॥ प. स. ७७.

उवसामगाणं पमाणं हवदि। सउक्कस्सपमाणजीवसहिदा सव्वे समया जुगवं ण लहंति त्ति के वि पुव्वुत्तपमाणं पंचूणं करेंति[1]। एदं पंचूणं वक्खाणं पवाइज्जमाणं दक्खिण-माइरियपरंपरागयमिदि जं वुत्तं होइ। पुव्वुत्तवक्खाणमपवाइज्जमाणं वाउं आइरियपरं-परा-अणागदमिदि णायव्वं।

चउण्हं खवा अजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया; पवेसेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अट्ठोत्तरसदं[2] ॥ ११ ॥

अट्ठसमयाहिय-छ-मासब्भंतरे खवगसेढिपाओग्गा अट्ठ समया हवंति। तेसिं समयाणं विसेसविवक्खमकाऊण सामण्णपरूवणं कीरमाणे जहण्णेण एगो जीवो खवग-गुणट्ठाणं पडिवज्जदि। उक्कस्सेण अट्ठोत्तरसयमेत्तजीवा खवगगुणट्ठाणं पडिवज्जंति। विसेसमस्सिदूण परूविज्जमाणे पढमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण बत्तीस जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति। विदियसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण अडदालीस जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति। तदियसमए वि एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण सट्ठि जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति। चउत्थसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण बाहत्तरि जीवा त्ति

अपने इस उत्कृष्ट प्रमाणवाले जीवोंसे युक्त संपूर्ण समय एकसाथ नहीं प्राप्त होते हैं, इसलिये कितने ही आचार्य पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पांच कम करते हैं। पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पांच कमका यह व्याख्यान प्रवाहरूपसे आ रहा है, दक्षिण है और आचार्य परंपरागत है, यह इस कथनका तात्पर्य है। तथा पूर्वोक्त ३०४ का व्याख्यान प्रवाहरूपसे नहीं आ रहा है, वाम है, आचार्य-परंपरासे अनागत है, ऐसा जानना चाहिये।

चारों गुणस्थानोंके क्षपक और अयोगिकेवली जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? प्रवेशकी अपेक्षा एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ हैं ॥ ११ ॥

आठ समय अधिक छह महीनाके भीतर क्षपकश्रेणीके योग्य आठ समय होते हैं। उन समयोंके विशेष कथनकी विवक्षा न करके सामान्यरूपसे प्ररूपण करने पर जघन्यसे एक जीव क्षपक गुणस्थानको प्राप्त होता है। तथा उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ जीव क्षपक गुणस्थानको प्राप्त होते हैं। विशेषका आश्रय लेकर प्ररूपण करने पर प्रथम समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे बत्तीस जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं। दूसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे अड़तालीस जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं। तीसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे साठ जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं। चौथे समयमें एक जीवको

१ सर्वोत्कृष्टप्रमाश्लिष्टा लभ्यन्ते न यतः क्षणाः। आचार्यैरपरैरुक्ताः पंचमी रहितास्ततः ॥ पं. सं. ६८.

२ चत्वारः क्षपका अयोगिकेवलिनश्च प्रवेशेन एको वा द्वौ वा त्रयो वा। उत्कर्षेणाष्टोत्तरशतसंख्याः। स. सि. १, ८. खवगा खीणाजोगी एगाइ जाव होंति अट्ठसयं। पञ्चसं. २, २४.

खवगसेढिं चडंति । पंचमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण चउरासीदि जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति । छट्ठमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण छण्णउदि जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति । सत्तमसमए अट्ठमसमए च एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण अट्ठुत्तरसयजीवा त्ति खवगसेढिं चडंति । उत्तं च—

बत्तीसमट्ठदालं सट्ठी बाहत्तरी य चुलसीई ।
छण्णउदी अट्ठुत्तरसदमट्ठुत्तरसयं च वेदव्वं[1] ॥ ४३ ॥

अद्धं पडुच्च संखेज्जा[2] ॥ १२ ॥

अट्ठसमयसंचिदसव्वजीवे उक्कस्सेण[3] एगट्ठे कदे अट्ठुत्तरछस्सयमेत्तजीवा हवंति । तिस्से मेलावणविहाणं वुच्चदे । तं जहा-अट्ठं गच्छं दुविय चोत्तीसमाइं काऊण बारसुत्तरं करिय संकलणसुत्तेण मेलाविदे खवगरासी मिलदि । एत्थ करणगाहा—

आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे बहत्तर जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । पांचवें समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे चौरासी जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं। छठे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे छ्यानवे जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । सातवें और आठवें समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे प्रत्येक समयमें एकसौ आठ जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । कहा भी है—

निरन्तर आठ समयपर्यन्त क्षपकश्रेणी पर चढ़नेवाले जीवोंमें पहले समयमें बत्तीस, दूसरे समयमे अड़तालीस, तीसरे समयमें साठ, चौथे समयमें बहत्तर, पांचवें समयमें चौरासी, छठे समयमें छ्यानवें, सातवें समयमें एकसौ आठ और आठवें समयमें एकसौ आठ जीव क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं, ऐसा जानना चाहिये ॥ ४३ ॥

कालकी अपेक्षा संचित हुए क्षपक जीव संख्यात होते हैं ॥ १२ ॥

पूर्वोक्त आठ समयोंमें संचित हुए संपूर्ण जीवोंको एकत्रित करने पर संपूर्ण जीव छहसौ आठ होते हैं । आगे उसी संख्याके जोड़ करनेकी विधि कहते हैं—आठको गच्छरूपसे स्थापित करके चौंतीसको आदि अर्थात् मुख करके और बारहको उत्तर अर्थात् चय करके 'पदमेगेण विहीणं' इत्यादि संकलनसूत्रके नियमानुसार जोड़ देने पर क्षपक जीवोंकी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण—८ − १ = ७, ७ − २ = ३½, ३½ × १२ = ४२, ४२ + ३४ = ७६, ७६ × ८ = ६०८.

अब यहां इसी विषयमें करणगाथा दी जाती है—

१ गो जी. ६२८ पं. स. ७९-८०.
२ स्वकालेन समुदिताः संख्येयाः । स. सि. १, ८ अद्धाए सयपुहुत्तं । पञ्चस. २, २४.
३ प्रतिषु 'जीवे ण' इति पाठः ।

उत्तरदलहयगच्छे पचयदलूणे सगादिवेत्त पुणो ।
पक्खिविय गच्छगुणिदे उवसम-खवगाण परिमाणं ॥ ४४ ॥

एसा उत्तरपडिवत्ती । एत्थ दस अवणिदे दक्खिणपडिवत्ती हवदि । एसा उव-सम-खवगपरूवणगाहा–

तिसदिं वदंति केई चउरुत्तरमत्थपंचयं केई
उवसामगेसु एद खवगाणं जाण तद्दुगुणं[1] ॥ ४५ ॥
चउरुत्तरतिण्णिसयं पमाणमुवसामगाण केई तु ।
तं चेव य पंचूणं भणंति केई तु परिमाणं ॥ ४६ ॥

एगेगगुणट्ठाणम्हि उवसामग-खवगाणं पमाणपरूवणगाहा–

उत्तर अर्थात् प्रचयको आधा करके और उसे गच्छसे गुणित करने पर जो लब्ध आवे उसमेंसे प्रचयका आधा घटा देने पर और फिर स्वकीय आदि प्रमाणको जोड़ देने पर उत्पन्न राशिके पुनः गच्छसे गुणित करने पर उपशमक और क्षपकोंका प्रमाण आता है ॥ ४४ ॥

उदाहरण—क्षपकोंकी अपेक्षा आदि ३४, प्रचय १२, गच्छ ८; उपशमकोंकी अपेक्षा आदि १७, प्रचय ६, गच्छ ८,

१२ ÷ २ = ६; ६ × ८ = ४८; ४८ – ६ = ४२, ४२ + ३४ = ७६; ७६ × ८ = ६०८ एक गुणस्थानमें क्षपकोंका प्रमाण ।

६ ÷ २ = ३; ३ × ८ = २४, २४ – ३ = २१; २१ + १७ = ३८; ३८ × ८ = ३०४ एक गुणस्थानमें उपशमकोंका प्रमाण ।

विशेषार्थ—यद्यपि यह करणगाथा यहां पर उपशमकों और क्षपकोंका प्रमाण लानेके लिये उद्धृत की गई है और उसमें उपशमकों और क्षपकोंके प्रमाण लानेकी प्रतिज्ञा भी की गई है, परंतु जहां समान हानि या समान वृद्धि पाई जाती है ऐसी अनेक संख्याओंका जोड़ भी इसी नियमसे आ जाता है ।

यह उत्तरमान्यता है । ६०८ मेंसे १० निकाल देने पर दक्षिणमान्यता होती है । अब आगे उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाली गाथा देते हैं—

कितने ही आचार्य उपशमक जीवोंका प्रमाण तीनसौ कहते है । कितने ही आचार्य तीनसौ चार कहते हैं और कितने ही आचार्य तीनसौ चारमेंसे पांच कम अर्थात् दोसो निन्यानवे कहते हैं । इसप्रकार यह उपशमक जीवोंका प्रमाण है । क्षपकोंका इससे दूना जानो ॥ ४५ ॥

कितने ही आचार्य उपशमक जीवोंका प्रमाण तीनसौ चार कहते है और कितने ही आचार्य पांच कम तीनसौ चार अर्थात् दोसौ निन्यानवे कहते हैं ॥ ४६ ॥

आगे एक एक गुणस्थानमें उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करने-वाली गाथा देते हैं—

---

१ गो. जी. ६२६. सं पं. ६९

एक्केक्कगुणट्ठाणे अट्ठसु समएसु संचिदाणं तु ।
अट्ठसय सत्तणउदी उवसम-खवगाण परिमाणं ॥ ४७ ॥

सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया? पवेसणेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अट्ठुत्तरसयं[1] ॥ १३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं व परूवेदव्वो ।

अद्धं पडुच्च सदसहस्सपुधत्तं[2] ॥ १४ ॥

अद्धमस्सिऊण सदसहस्सपुधत्ताणयणविहाणं वुच्चदे- अट्ठसमयाहियछम्मासाणमब्भंतरे जदि अट्ठ सिद्धसमया लब्भंति तो चालीससहस्स-अट्ठसय-एक्केतालीसमेत्त-अट्ठसमयाहियछमासाब्भंतरे केत्तिया सिद्धसमया लब्भंति त्ति तेरासिए कदे तिण्णिलक्ख-छव्वीससहस्स-सत्तसय-अट्ठावीसमेत्त-सिद्धसमया लब्भंति[3] । पुणो एदम्हि सिद्धकालम्हि संचिदसजोगिजीवाणं पमाणाणयणं वुच्चदे । तं जहा- छसु सिद्धसमएसु तिण्णि तिण्णि

एक एक गुणस्थानमें आठ समयमें संचित हुए उपशमक और क्षपक जीवोंका परिमाण आठसौ सत्तानवे है ॥ ४७ ॥

सयोगिकेवली जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? प्रवेशसे एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ होते हैं ॥ १३ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहलेके समान कहना चाहिये ।

कालकी अपेक्षा संपूर्ण सयोगी जिन लक्षपृथक्त्व होते हैं ॥ १४ ॥

सयोगी जिन कालका आश्रय करके लक्षपृथक्त्व कहे हैं, आगे उसी लक्षपृथक्त्वके लानेकी विधि कहते हैं—

आठ समय अधिक छह माहके भीतर यदि आठ सिद्ध समय प्राप्त होते हैं तो चालीस हजार आठसौ इकतालीस मात्र अर्थात् इतनीवार आठ समय अधिक छह माहके भीतर कितने सिद्ध समय प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर तीन लाख छब्बीस हजार सातसौ अट्ठाईस सिद्ध समय आते हैं। अब आगे इस सिद्ध कालमें संचित हुए सयोगी जीवोंका प्रमाण लानेकी विधि कहते हैं। वह इसप्रकार है—

१ सयोगकेवलिन प्रवेशेन एको वा द्वौ वा त्रयो वा । उत्कर्षेणाष्टोत्तरशतसंख्या । स. सि. १, ८.

२ स्वकालेन समुदिताः शतसहस्रपृथक्त्वसंख्या । स. सि. १, ८. कोडिपुहुत्तं सजोगिओ। पञ्चसं २, २४.

३ सक्षणाष्टकषण्मास्यामेकत्राष्ट क्षणा यदि । इयतीनां तदा तासां सिद्धियोग्याः कति क्षणाः ॥ चत्वारिंशत्सहस्राणि षण्मास्योऽष्टक्षणाधिकाः । भवन्त्यष्टशतान्येकचत्वारिंशानि सिद्ध्यताम् ॥ आद्यन्तयोः प्रमाणेच्छे विधायान्तस्तयोः फलम् । अन्तेन गुणितं कृत्वा भजनीयं तदादिना ॥ समयानां त्रयोलक्षाः षड्विंशतिसहस्रकाः । अष्टाविंशं विबोद्धव्यमपरे शतसप्तकम् ॥ प. सं. ८६-८९.

जीवा केवलणाणं उप्पाएंति, दोसु समएसु दो दो जीवा जदि केवलणाणं उप्पाएंति, तो अट्ठसमयसंचिदसजोगिजिणा बावीस भवंति। अट्ठसु सिद्धसमएसु जदि बावीस सजोगिजिणा लब्भंति तो तिण्णिलक्ख-छव्वीससहस्स-सत्तसय-अट्ठावीसमेत्त-सिद्धसमएसु केत्तिया सजोगिजिणा लब्भंति त्ति तेरासिए कए अट्ठलक्ख-अट्ठाणउदिसहस्स-दुरहिय-पंचसदमेत्ता सजोगिजिणा लद्धा हवंति। वुत्तं च—

अट्ठेव सयसहस्सा अट्ठाणउदी तहा सहस्साइं।
संखा जोगिजिणाणं पंचसद विउत्तरं जाणं[1] ॥ ४८ ॥

एदीए दिसाए बहुएहि पयारेहि सजोइरासिस्स पमाणमाणेयव्वं। तं जहा— जम्हि पुव्विल्लसिद्धकालस्स अद्धमेत्तो सिद्धकालो लब्भइ तम्हि तेरासियमेवमाणेयव्वं। तं जहा— अट्ठसु सिद्धसमएसु जदि चउत्तालीसमेत्ता सजोगिजिणा लब्भंति तो एक्क-लक्ख-तिसट्ठिसहस्स-तिण्णिसय-चउसट्ठिमेत्त-सिद्धसमयाणं केत्तिया सजोगिजिणा लब्भंति त्ति तइरासिए कदे पुव्विल्लो चेव सजोगिरासी उप्पज्जदि। जम्हि आउव्वे पुव्विल्ल-सिद्धकालस्स चउब्भागमेत्तो सिद्धकालो लब्भइ तम्हि एवं तइरासिअं कायव्वं। अट्ठसु सिद्धसमएसु जदि अट्ठासीदि सजोगिजिणा लब्भंति तो एगासीदिसहस्स-छस्सय-बासीदि-

छह सिद्ध समयोंमें तीन तीन जीव, और दो समयोंमें दो दो जीव यदि केवलज्ञान उत्पन्न करते हैं, तो आठ समयोंमें संचित हुए सयोगी जिन बावीस होते हैं। इसप्रकार यदि आठ सिद्ध समयोंमें बावीस सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो तीन लाख छव्वीस हजार सातसौ अट्ठाईस सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर आठ लाख अट्ठानवे हजार पांचसौ दो सयोगी जिन प्राप्त हो जाते हैं। कहा भी है—

सयोगी जीवोंकी संख्या आठ लाख अट्ठानवे हजार पांचसौ दो जानो ॥ ४८ ॥

इसी दिशासे अनेक प्रकारसे सयोगी जीवोंकी राशि लाना चाहिये। आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं—

जहां पर पहलेके सिद्धकालका अर्धमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है वहां पर इसप्रकार त्रैराशिक लाना चाहिये। वह इसप्रकार है—आठ सिद्ध समयोंमें यदि चवालीस सयोगी जिन प्राप्त होते हैं, तो एक लाख त्रेसठ हजार तीनसौ चौसठ सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी जिन प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर पूर्वोक्त ८९८५०२ सयोगी जीवोंकी ही राशि आ जाती है। अथवा, जिसमें पहलेके सिद्धकालका चौथा भागमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है वहां पर इस-प्रकार त्रैराशिक करना चाहिये। आठ सिद्ध समयोंमें यदि अठासी सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो इक्यासी हजार छहसौ ब्यासीमात्र सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी जिन प्राप्त होंगे इस-

१ गो. जी. ६२९.

मेत्तसिद्धसमयाणं केत्तिया सजोगिजिणा लब्भंति त्ति तेरासिए कए सो चेव रासी लब्भदि[1]। एवमण्णत्थ वि जाणिऊण वत्तव्वं। जहाक्खादसंजदाणं पमाणवण्णणा गाहा—

अट्ठेव सयसहस्सा णवणउदिसहस्स चेव णवयसया।
सत्ताणउदी य तहा जहक्खादा होंति ओघेण ॥ ४९ ॥

एवं परूविदसव्वं संजदरासिमेगट्ठे कदे अट्ठकोडीओ णवणउदिलक्खा णवणउदिसहस्सा णवसद सत्ताणउदिमेत्तो होदि ८९९९९९९७। एदम्हादो रासीदो उवसामग-खवगपमाणमवणेयव्वं। तेसिं पमाणपरूवणगाहा—

णव चेव सयसहस्सा छव्वीससया य होंति अडसीया।
परिमाणं णायव्वं उवसम-खवगाणमेदं तु ॥ ५० ॥

एदमवणिय तीहि भागो हायव्वो। लद्धमप्पमत्तरासी हवदि। दुगुणिदे पमत्तरासी

प्रकार त्रैराशिक करने पर वही पूर्वोक्त ८९८५०२ सयोगी जीवराशि ही आ जाती है। इसी प्रकार अन्यत्र भी जानकर कथन करना चाहिये।

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	लब्ध प्रमाण
८ समय	२२ केवली	समय ३२६७२८	८९८५०२
८ समय	४४ केवली	१६३३६४	८९८५०२
८ समय	८८ केवली	८१६८२	८९८५०२

अब यथाख्यात संयतोंकी संख्याका वर्णन करनेवाली गाथा देते हैं—

सामान्यसे यथाख्यातसंयमी जीव आठ लाख निन्यानवे हजार नौसौ सत्तानवे होते हैं ॥ ४९ ॥

इसप्रकार प्ररूपण की गई संपूर्ण संयत जीवोंकी राशिको एकत्रित करने पर कुल संख्या आठ करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौसौ सत्तानवे ८९९९९९९७ होती है। इस राशिमेंसे उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणको निकाल देना चाहिये। उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाली गाथा इसप्रकार है—

उपशमक और क्षपक जीवोंका परिमाण नौ लाख दो हजार छह सौ अठासी जानना चाहिये ॥ ५० ॥

संयतोंकी संपूर्ण राशिमेंसे इस उपशमक और क्षपक जीवराशिको निकालकर तीनका भाग देना चाहिये। जो तीसरा भाग लब्ध आया उतना अप्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण

१ गो. जी., जी. प्र., टी. ६२९.

हवदि । वुत्तं च—

सत्तादी अट्ठंता छण्णवमज्झा य संजदा सव्वे ।
तिगभजिदा विगगुणिदापमत्तरासी पमत्ता दु[1] ॥ ५१ ॥

एसा दक्खिणपडिवत्ती । एसा गाहा ण भद्दिया त्ति के वि आइरिया जुत्तिवलेण भणंति । का जुत्ती ? वुच्चदे— सव्वतित्थयरेहिंतो पउमप्पहभडारओ बहुसीसपरिवारो तीससहस्साहिय-तिण्णिलक्खमेत्तमुणिगणपरिवुदत्तादो । तेसु सत्तर-सएण गुणिदेसु एक्कसट्ठिलक्खाहियपंचकोडिमेत्ता संजदा होंति । एदे च पुव्विल्लगाहाए वुत्तसंजदाणं पमाणं ण पावेंति । तदो गाहा ण भद्दिएत्ति । एत्थ परिहारो वुच्चदे— सव्वोसप्पिणी-हिंतो अहमा हुंडोसप्पिणी । तत्थतणातित्थयरसिस्सपरिवारं जुगमाहप्पेण ओहट्टिय डहर-भावमापण्णं घेत्तूण ण गाहासुत्तं दूसिदुं सक्किज्जदि, सेसोसप्पिणीतित्थयरेसु बहुसीस-परिवारुवलंभादो । ण च भरहेरावयवासेसु मणुसाण बहुत्तमत्थि, जेणेत्थतणेक्कतित्थयर-

है । इसे दूना करने पर प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण होता है । कहा भी है—

जिस संख्याके आदिमें सात हैं, अन्तमें आठ हैं और मध्यमें छहवार नौ हैं, उतने अर्थात् आठ करोड निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ सत्तानवे सर्व संयत हैं । (इनमेंसे उपशमक और क्षपकोंका प्रमाण ९०२६८८ निकालकर जो राशि शेप रहे उसमें) तीनका भाग देने पर २९६९९१०३ अप्रमत्तसंयत होते हैं । और अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणको दोसे गुणा कर देने पर ५९३९८२०६ प्रमत्तसंयत होते हैं ॥ ५१ ॥

यह दक्षिण मान्यता है । यह पूर्वोक्त गाथा ठीक नहीं है ऐसा कितने ही आचार्य युक्तिके बलसे कहते हैं ।

शंका— वह कौनसी युक्ति है ? आगे शंकाकार उसी युक्तिका समर्थन करता है कि संपूर्ण तीर्थंकरोंकी अपेक्षा पद्मप्रभ भट्टारकका शिष्य-परिवार अधिक था, क्योंकि, वे तीन लाख तीस हजार मुनिगणोंसे वेष्टित थे । इस संख्याको एकसौ सत्तरसे गुणा करने पर पांच करोड़ इकसठ लाख संयत होते हैं । परंतु यह संख्या पूर्व गाथामें कहे गये संयतोंके प्रमाणको नहीं प्राप्त होती है, इसलिये पूर्व गाथा ठीक नहीं है ?

समाधान— आगे पूर्व शंकाका परिहार करते हैं कि संपूर्ण अवसर्पिणियोंकी अपेक्षा यह हुंडावसर्पिणी है, इसलिये युगके माहात्म्यसे घटकर ह्रस्वभावको प्राप्त हुए हुंडावसर्पिणी कालसंबन्धी तीर्थंकरोंके शिष्य-परिवारको ग्रहण करके गाथासूत्रको दूषित करना शक्य नहीं है, क्योंकि, शेष अवसर्पिणियोंके तीर्थंकरोंके बड़ा शिष्य-परिवार पाया जाता है । दूसरे भरत और ऐरावत क्षेत्रमें मनुष्योंकी अधिक संख्या नहीं पाई जाती है जिससे उन दोनों क्षेत्रसंबन्धी एक तीर्थंकरके संघके प्रमाणसे विदेहसंबन्धी एक तीर्थंकरका संघ समान

१ सत्तादी अट्ठंता छण्णवमज्झा य संजदा सव्वे । अंजलिमौलियहत्थो तियरणसुद्धे णमंसामि । गो. जी. ६३२.

गणपमाणेण विदेहेक्कतित्थयरगणो सरिसो होज्ज। किं तु एत्थतणमणुवेहिंतो विदेह-मणुस्सा संखेज्जगुणा। तं जहा– सव्वत्थोवा अंतरदीवमणुस्सा। उत्तरकुरुदेवकुरुमणुवा संखेज्जगुणा। हरिरम्मयवासेसु मणुआ संखेज्जगुणा। हेमवदहेरण्णवदमणुआ संखेज्जगुणा। भरहेरावदमणुआ संखेज्जगुणा। विदेहे मणुआ संखेज्जगुणा[1] त्ति। बहुवमणुस्सेसु जेण संजदा बहुआ चेव तेणेत्थतणसंजदाणं पमाणं पहाणं कादूण जं दूसणं भणिदं तण्ण दूसणं, बुद्धिविहूणाइरियमुहविणिग्गयत्तादो।

एत्तो उत्तरपडिवत्तिं वत्तइस्सामो। एत्थ पमत्तसंजदपमाणं चत्तारि कोडीओ छासट्ठिलक्खा छासट्ठिसहस्सा छसद चउसट्ठिमेत्तं भवदि। वुत्तं च—

चउसट्ठी छच्च सया छासट्ठिसहस्स[2] चेव परिमाणं।
छासट्ठिसयसहस्सा कोडिचउक्कं पमत्ताणं ॥ ५२ ॥

४६६६६६६४। बे कोडीओ सत्तावीसलक्खा णवणउदिसहस्सा चत्तारिसद अट्ठाणउदिमेत्ता अप्पमत्तसंजदा हवंति। उत्तं च—

माना जाय। किन्तु भरत और ऐरावत क्षेत्रके मनुष्योंसे विदेह क्षेत्रके मनुष्य संख्यातगुणे हैं। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

अन्तरद्वीपोंके मनुष्य सबसे थोड़े हैं। उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य उनसे संख्यात-गुणे हैं। हरि और रम्यक क्षेत्रोंके मनुष्य उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। हैमवत और हैरण्यवत क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। भरत और ऐरावत क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। विदेह क्षेत्रके मनुष्य भरत और ऐरावतके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। बहुत मनुष्योंमें क्योंकि संयत बहुत ही होंगे इसलिये इस क्षेत्रसंबन्धी संयतोंके प्रमाणको प्रधान करके जो दूषण कहा गया है वह दूषण नहीं हो सकता, क्योंकि, वह बुद्धिरहित आचार्योंके मुखसे निकला हुआ है। अब आगे उत्तर मान्यताको बतलाते हैं—

उत्तर मान्यताके अनुसार संयतोंमें प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण केवल चार करोड़ छ्यासठ लाख छ्यासठ हजार छहसौ चौसठ है। कहा भी है—

प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण चार करोड़ छ्यासठ लाख छ्यासठ हजार छहसौ चौसठ ४६६६६६६४ है ॥ ५२ ॥

दो करोड़ सत्ताईस लाख निन्यानवे हजार चारसौ अट्ठानवे अप्रमत्तसंयत जीव हैं। कहा भी है—

१ अंतरदीवमणुस्सा थोवा ते कुरुसु दससु संखेज्जा। तत्तो संखेज्जगुणा हवंति हरिरम्मगेसु वसेसु। वरिसे संखेज्जगुणा हेरण्णवदम्मि हेमवदवरिसे। भरहेरावदवंसे सखेज्जगुणा विदेहे य ॥ ति प. पत्र १६०.

२ प्रतिषु ' छावत्तरिसहस्स ' इति पाठ ।

वे कोडि सत्तवीसा होंति सहस्सा तहेव णवणउदी ।
चउसद अट्ठाणउदी परिसखा होदि विदियगुणा ॥ ५३ ॥

अंकदो वि २२७९९४९८ । उवसामग खवगपमाणपरूवणा पुव्वं व भाणिदव्वा । णवरि 'सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जा' एदस्स परूवणा अण्णहा हवदि । तं जहा– अट्ठसमयाहियछमासाणं जदि अट्ठसमयमेत्तो सिद्धकालो लब्भदि तो चत्तारि-सहस्स-सत्तसद-एगूणतीसमेत्त-अट्ठसमयाहिय-छम्मासाणं केत्तियो सिद्धकालो लब्भदि त्ति तेरासिए कदे सत्ततीससहस्स-अट्ठसद-बत्तीसमेत्तसिद्धसमया लब्भंति । एदम्हि कालम्हि संचिदसजोगिजिणपमाणमाणिज्जदे । तं जहा– अट्ठसु समएसु चोद्दस चोद्दस सजोगिजिणा होंति त्ति कट्टु जदि अट्ठण्हं समयाणं बारहोत्तरसयमेत्ता सजोगिजिणा लब्भंति तो सत्ततीससहस्स-अट्ठसद-बत्तीसमेत्तसिद्धसमयाणं केत्तिया लब्भंति त्ति तेरासिए कए पंचलक्ख-एगूणतीससहस्स-छस्सय-अट्ठेदालीसमेत्ता सजोगिजिणा हवंति । वुत्तं च—

पंचेव सयसहस्सा होंति सहस्सा तहेव उणतीसा ।
छच्च सया अडयाला जोगिजिणाणं हवदि संखा ॥ ५४ ॥

द्वितीय गुणस्थान अर्थात् अप्रमत्तसंयत जीवोंकी संख्या दो करोड़ सत्ताईस लाख निन्यानवे हजार चारसौ अट्ठानवे है ॥ ५३ ॥

अंकोंसे भी २२७९९४९८ अप्रमत्तसंयत जीव हैं। उपशामक और क्षपक जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण पहलेके समान कहना चाहिये। इतनी विशेषता है कि सयोगिकेवली जीव कालकी अपेक्षा संचित हुए संख्यात होते हैं। यहां पर केवलियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा दूसरे प्रकारसे होती है। वह इसप्रकार है– आठ समय अधिक छह महीनेका यदि आठ समयमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है तो चार हजार सातसौ उनतीसमात्र आठ समय अधिक छह महीनोंके कितने सिद्धकाल प्राप्त होंगे; इसप्रकार त्रैराशिक करने पर सैंतीस हजार आठसौ बत्तीसमात्र सिद्ध समय प्राप्त होते हैं। अब इस कालमें संचित हुए सयोगी जिनोंका प्रमाण लाते हैं। वह इसप्रकार है— आठ समयोंमेंसे प्रत्येक समयमें चौदह चौदह सयोगी जिन होते हैं, ऐसा समझकर यदि आठ समयोंके एकसौ बारह सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो सैंतीस हजार आठसौ बत्तीस सिद्ध समयोंके कितने सयोगी जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर पांच लाख उनतीस हजार छहसौ अड़तालीस सयोगी जीव प्राप्त होते हैं। कहा भी है—

सयोगी जिन जीवोंकी संख्या पांच लाख उनतीस हजार छहसौ अड़तालीस है ॥ ५४ ॥

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	लब्ध
६ माह ८ समय	८ समय	४७२९	३७८३२ समय
८ समय	११२ केवली	३७८३२ समय	५२९६४८ केवलि

५२९६४८। एदेण अत्थपदेण अणेगेहि पयारेहि सजोगिरासी आणेयव्वो। उवसामग-खवगपमाणपरूवणगाहा—

पच्चेव सयसहस्सा होंति सहस्सा तहेव तेत्तीसा।
अट्ठसया चोत्तीसा उवसम-खवगाण केवलिणो ॥ ५५ ॥

एदे सव्वसंजदे एयट्ठे कदे सत्तर-सदकम्मभूमिगदसव्वरिसओ भवंति। तेसिं पमाणं छक्कोडीओ णवणउइलक्खा णवणउदिसहस्सा णवसय-छण्णउदिमेत्तं हवदि। एदस्स वेतिभागा पमत्तसंजदा हवंति। तिभागो अप्पमत्तादिसेससंजदा हवंति। वुत्तं च—

छक्कादी छक्कंता छण्णवमज्झा य संजदा सव्वे।
तिगभजिदा विगगुणिदापमत्तरासी पमत्ता दु ॥ ५६ ॥

६९९९९९९६। दव्वपमाणेण अवगदचोद्दसगुणट्ठाणाणं अप्पणो इच्छिद-इच्छिद-रासिस्स एत्तियो एत्तियो भागो होदि त्ति तेसिं भागाभागपरूवणा कीरदे। तं जहा— भागादो भागो भागाभागो। तं भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिं सिद्धतेरसगुणट्ठाणभाजिदसव्व-

इस पद्धतिके अनुसार दूसरे प्रकारसे भी सयोगी जीवोंकी राशि ले आना चाहिये। अब उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाली गाथा कहते हैं—

चारों उपशमक, पांचों क्षपक और केवली ये तीनों राशियां मिलकर कुल पांच लाख तेतीस हजार आठसौ चौतीस हैं ॥ ५५ ॥

विशेषार्थ—ऊपर सयोगिकेवलियोंकी संख्या ५२९६४८ बतला आये हैं। उसमें चारों उपशमकोंकी संख्या ११९६ और पांचों क्षपकोंकी संख्या २९९० और मिला देने पर तीनोंकी संख्या ५३३८३४ हो जाती है।

इन सब संयतोंको एकत्रित करने पर एकसौ सत्तर कर्मभूमिगत संपूर्ण ऋषि होते हैं। उन सबका प्रमाण छह करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौसौ छ्यानवे है। इसका दो बटे तीन भाग अर्थात् ४६६६६६६६४ जीव प्रमत्तसंयत हैं, और तीसरा भाग अर्थात् २३३३३३३३२ जीव अप्रमत्तसंयत आदि शेष संयत हैं। कहा भी है—

जिस संख्याके आदिमें छह, अन्तमें छह और मध्यमें छहवार नौ हैं, उतने अर्थात् छह करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ छ्यानवे ६९९९९९९६ जीव संपूर्ण संयत हैं। इसमें तीनका भाग देने पर लब्ध आवे उतने अर्थात् २३३३३३३३२ जीव अप्रमत्त आदि संपूर्ण संयत हैं और इसे दोसे गुणा करने पर जितनी राशि उत्पन्न हो उतने अर्थात् ४६६६६६६६४ जीव प्रमत्तसंयत हैं ॥ ५६ ॥

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा जाने हुए चौदहों गुणस्थानोंका प्रमाण अपनी इच्छित राशिके प्रमाणका इतनावां इतनावां भाग होता है, इसका ज्ञान करानेके लिये उनकी भागाभाग प्ररूपणा करते हैं। वह इसप्रकार है— भागसे होनेवाला भाग भागाभाग है। आगे उसी भागाभागको बतलाते हैं—

जीवरासिमेत्ते भागे कदे तत्थ बहुभागो मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि । सेसं तेरसगुण-ट्ठाणोवट्टिदसिद्धरासिणा रूवाहिएण खंडिदे बहुखंडा सिद्धा हवंति । सेसाणं भागभाग-परूवणट्ठं सेसरासीओ एगभागहारेणाणिज्जंते । तं जहा– संजदासंजददव्वं तप्पमाणेण कीरमाणे एगं भवदि । सासणसम्माइट्ठिदव्वं पि संजदासंजददव्वपमाणेण कीरमाणे सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिदसंजदासंजद-अवहारकालमेत्तं हवदि । सम्मामिच्छा-इट्ठिदव्वं संजदासंजददव्वपमाणेण कीरमाणे सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिदसंजदा-संजद-अवहारकालमेत्तं भवदि । असंजदसम्माइट्ठिदव्वं पि संजदासंजददव्वपमाणेण कीरमाणे असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिदसंजदासंजद-अवहारकालमेत्तं भवदि ।

सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके प्रमाणका संपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो प्रमाण आवे उतने संपूर्ण जीवराशिके भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है। जो एक भाग शेष रहता है उसे, सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके प्रमाणसे भाजित सिद्धराशिमें रूपाधिक करके जो जोड़ हो उससे खण्डित करने पर जो बहुभाग आवे उतने सिद्ध होते हैं।

उदाहरण—सर्व जीवराशि १६; सिद्ध २; सासादन आदि १;

१६ – ३ = ५$\frac{१}{३}$,　　३ ३ ३ ३ ३ १　बहुभाग १३ मिथ्यादृष्टि
　　　　　　　　　१ १ १ १ १ $\frac{१}{३}$　और ३ सिद्धतेरस.

२ – १ = २ + १ = ३, ३ – ३ = १; ३ – १ = २ सिद्ध; १ सासादन आदि.

अब शेष राशियोंके भागाभागके प्ररूपण करनेके लिये शेष राशियां एक भागहारसे लाई जाती हैं। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

संयतासंयत जीवराशिके द्रव्यको उसी प्रमाणसे (शलाकारूप) करने पर एक होता है (५१२ = १ पिंडरूप)। सासादनसम्यग्दृष्टिका द्रव्य भी संयतासंयतके द्रव्यप्रमाणसे करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालका संयतासंयत अवहारकालमें भाग देने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण होता है।

उदाहरण—१२८ – ३२ = ४ × ५१२ = २०४८ सासा.

सम्यग्मिथ्यादृष्टिका द्रव्य संयतासंयतके द्रव्यप्रमाणरूपसे करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालका संयतासंयत अवहारकालमें भाग देने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण होता है।

उदाहरण—१२८ – १६ = ८ × ५१२ = ४०९६ सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्य.

असंयतसम्यग्दृष्टिका द्रव्य भी संयतासंयतके द्रव्यके प्रमाणरूपसे करने पर असंयत-सम्यग्दृष्टि अवहारकालका संयतासंयत अवहारकालमें भाग देने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण

१ प्रतिषु ' सुसब्वो ' इति पाठः ।

णवसंजददव्वं संजदासंजददव्वपमाणेण कीरमाणे एगरूवस्स असंखेज्जदिभागं भवदि। एवमुप्पाइयसव्वसलागाओ एयट्ठं काऊण संजदासंजद-अवहारकालमोवट्टिय लद्धेण पलिदोवमे भागे हिदे तेरसगुणट्ठाणदव्वमागच्छदि। एवं जेसिं जेसिं गुणट्ठाणाणं दव्वाण मेगभागहारेणागमणमिच्छदि तेसिं तेसिं सलागाहि संजदासंजद-अवहारकालमोवट्टिय पलिदोवमे भागे हिदे ते ते रासीओ आगच्छंति।

अथवा सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालेण संजदासंजद अवहारकालमोवट्टिय लद्धेण सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालं गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगारेण रूवाहिएण तं चेवोवट्टिदे

होता है।

उदाहरण—१२८ – ४ = ३२ × ५१२ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य.

छठेसे लेकर चौदहवें गुणस्थानतक नौ संयतोंका द्रव्य संयतासंयतके द्रव्यके प्रमाण-रूपसे करने पर एकरूप जो संयतासंयतका द्रव्य कह आये हैं उसका असंख्यातवां भाग होता है।

उदाहरण—२ – ५१२ = $\frac{१}{२५६}$ × ५१२ = २ नवसंयत द्रव्य.

इसप्रकार पहले उत्पन्न की हुई संपूर्ण शलाकाओंको एकत्रित करके और उनसे संयतासंयतसंबन्धी अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे पल्योपमके भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण आ जाता है।

उदाहरण—१ + ४ + ८ + ३२ + $\frac{१}{२५६}$ = ४५$\frac{१}{२५६}$;

$$१२८ - ४५\frac{१}{२५६} = \frac{३२७६८}{११५२१}; \quad ६५५३६ - \frac{३२७६८}{११५२१} = २३०४२.$$

इसीप्रकार जिन जिन गुणस्थानोंके द्रव्यका प्रमाण एक भागहारसे लानेकी इच्छा हो उन उन गुणस्थानोंकी शलाकाओंसे संयतासंयतसंबन्धी अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका पल्योपममें भाग देने पर उन उन गुणस्थानोंकी राशियां आ जाती हैं।

उदाहरण—असंयतसम्यग्दृष्टि शलाकाराशि ३२;

१२८ – ३२ = ४, ६५५३६ – ४ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य.

अथवा, सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतके अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे एक अधिक उसी गुणाकारसे अपवर्तित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत इन दोनोंका अवहारकाल आ जाता है।

उदाहरण—१२८ – ३२ = ४; ३२ × ४ = १२८; ४ + १ = ५; १२८ – ५ = २५$\frac{३}{५}$ सासादन और संयतासंयतका अवहारकाल। इसका भाग पल्योपम ६५५३६ में देने पर सासादन और संयतासंयत इन दोनों गुणस्थानोंका द्रव्य २०४८ + ५१२ = २५६० आ जाता है। इसीप्रकार आगे भी जानना चाहिये।

सासण संजदासंजदाणं अवहारकालो होदि । पुणो तं दो-गुणट्ठाण-अवहारकालं सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिय लद्धेण सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालं गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगारेण रूवाहिएण पुव्वं गुणिद-अवहारकालमोवट्टिदे तिण्हं गुणट्ठाणाणमवहारकालो हवदि । पुणो तमवहारकालं असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिय लद्धेण असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालं गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगाररासिणा रूवाहिएण पुव्विल्ल-गुणिद-अवहारकालमोवट्टिदे चउण्हं गुणट्ठाणाणमवहारकालो हवदि । पुणो णव-संजद-दव्वेण चउण्हं गुणट्ठाणाणं दव्वमोवट्टिय लद्धेण चउण्हं गुणट्ठाणाणमवहारकालं गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगारेण रूवाहिएण तं चेव गुणिद-अवहारकालमोवट्टिदे तेरसण्हं गुणट्ठाणाणमवहारकालो होदि ।

अनन्तर उन दोनों गुणस्थानोंके अवहारकालको सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके अवहारकालसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे गुणित करके अनन्तर एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे पहले गुणित किये हुए अवहारकालके अपवर्तित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयत इन तीनों गुणस्थानोंका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—$\frac{१२८}{५} \div १६ = \frac{१२८}{८०}$; $\frac{१२८}{८०} \times १६ = \frac{१२८}{५}$; $\frac{१२८}{८०} + १ = \frac{२०८}{८०}$;

$\frac{१२८}{५} \div \frac{२०८}{८०} = ९\frac{११}{१३}$ सा सम्यमि. और संयतासंयतका अवहारकाल ।

अनन्तर इन तीनों गुणस्थानोंसंबन्धी अवहारकालको असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे भाजित करके जो लब्ध आवे उससे असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको गुणित करके पुनः एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे पहले गुणित किये हुए अवहारकालके अपवर्तित करने पर द्वितीयादि चार गुणस्थानोंका भागहार आ जाता है ।

उदाहरण—$९\frac{११}{१३} \div ४ = \frac{१२८}{५२}$; $\frac{१२८}{५२} \times ४ = \frac{१२८}{१३}$; $\frac{१२८}{५२} + १ = \frac{१८०}{५२}$,

$\frac{१२८}{१३} \div \frac{१८०}{५२} = २\frac{३८}{४५}$ सासादनादि ४ गुणस्थानोंका अवहारकाल ।

अनन्तर प्रमत्तसंयत आदि नौ संयतोंके द्रव्यसे सासादन आदि चार गुणस्थानोंके द्रव्यको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उक्त चार गुणस्थानोंके अवहारकालको गुणित करके अनन्तर एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे उसी गुणित अवहारकालको अपवर्तित करने पर सासादनादि तेरह गुणस्थानोंका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—नवसंयतराशि २; सासादनादि चार गुणस्थानराशि २३०४०; सासादनादि चार गुणस्थानोंका अवहारकाल $\frac{१२८}{४५}$; $\frac{२३०४०}{२} = \frac{११५२०}{१}$,

$\frac{१२८}{४५} \times \frac{११५२०}{१} = \frac{२९४९१२}{९}$, $\frac{११५२०}{१} + \frac{१}{१} = \frac{११५२१}{१}$;

अथवा संजदासंजद-अवहारकालं विरलेऊण पुणो पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि संजदासंजददव्वपमाणं पावदि । तमेगरूवस्सुवरि ट्ठिद-संजदासंजददव्वं णवसंजदरासिणोवट्टिय लद्धं विरलेऊण उवरिमविरलणाए पढमरूवधरिदसंजदासंजददव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि णवसंजदरासिपमाणं पावेदि । पुणो तं घेत्तूण उवरिम-विरलणाए विदियादि-रूवाणमुवरि ट्ठिदसंजदासंजददव्वाणमुवरि पक्खिविदव्वं जाव हेट्ठिम-विरलणोवरि ट्ठिद-णवसंजदरासी सरिसच्छेदं काऊण पविट्ठो त्ति । जदि हेट्ठिम-विरलणादो उवरिमविरलणा रूवाहिया हवदि तो एगरूवपरिहाणी हवदि । अध वेरूवाहिय[1]दुगुणमेत्ता हवदि तो दोण्हं रूवाणं परिहाणी हवदि । अध तिरूवाहियतिउणमेत्ता हवदि तो तिण्हं रूवाणं परिहाणी हवदि । एत्थ पुण उवरिमविरलणादो हेट्ठिमविरलणा असंखेज्जगुणा त्ति एगरूव-असंखेज्जदिभागस्स परिहाणी हवदि । तं जहा, हेट्ठिमविरलण-रूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडिय-

$\frac{२९४९१२}{९} - \frac{११५२१}{१} = \frac{२९४९१२}{१०३६८९} = २\frac{२७१७८}{३४५६३}$ सासादन आदि १३ गुण-स्थान राशिका अवहारकाल.

अथवा, संयतासंयतके अवहारकालको विरलित करके अनन्तर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति संयतासंयत द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर विरलित राशिके एकके ऊपर स्थित उस संयतासंयतके द्रव्यको प्रमत्तादि नौ संयतराशिसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उसके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनमें पहले एकके ऊपर रक्खे हुए संयतासंयतके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति प्रमत्तादि नौ संयत राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त उस नौ संयत द्रव्यको ग्रहण करके उपरिम विरलनके द्वितीयादि रूपोंके ऊपर स्थित संयतासंयतके द्रव्योंमें तबतक मिलाते जाना चाहिये जबतक अधस्तन विरलनके ऊपर स्थित नौ संयतराशि समान छेद करके प्रविष्ट हो सके। यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन एक अधिक होवे तो एककी हानि होती है। यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन दो अधिक दुगुने होवें तो दोकी हानि होती है। यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन तीन अधिक तिगुना होवे तो तीनकी हानि होती है। यहां प्रकृतमें तो उपरिम विरलनसे अधस्तन विरलन असंख्यातगुणा है, इसलिये एकके असंख्यातवें भागकी हानि होती है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो

१ प्रतिषु 'अध वा रूवाहिय' इति पाठः।

रूवपरिहाणिं लभामो त्ति तेरासिए कदे एगरूवस्स असखेज्जदिभागो आगच्छदि। तमुवरिमविरलणाए अवणिदे णवसंजदसहियसंजदासंजदाणमवहारकालो होदि।

पुणो सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सासणसम्माइट्ठिदव्वपमाणं पावदि। पुणो उवरिमविरलणपढमरूवधरिद-सासणसम्माइट्ठिदव्वं णवसंजदसहिदसंजदासंजददव्वेणोवट्टिय तत्थ लद्धमावलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण उवरिमविरलणाए पढमरूवस्सुवरि ट्ठिदसासणसम्माइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासीओ पावेंति। एत्थ एगरूवधरिददस-गुणट्ठाणरासिपमाणं घेत्तूण उवरिमविरलणम्हि सुण्णं मोत्तूण तदणंतररूवस्सुवरि ट्ठिद-सासणदव्वम्हि पक्खित्ते एक्कारसगुणट्ठाणरासीओ सव्वे मिलिदा हवंति। एवं हेट्ठिम-

उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर एकका असंख्यातवां भाग आता है। उसे उपरिम विरलनमेंसे घटा देने पर नौ संयतसहित संयतासंयत राशिका अवहारकाल होता है।

उदाहरण—नौ संयतराशि २, संयतासंयत अवहारकाल १२८; संयतासंयत द्रव्य ५१२;

$\frac{५१२}{१}$ $\frac{५१२}{१}$ $\frac{५१२}{१}$ $\frac{५१२}{१}$ १२८ वार;

५१२ – २ = २५६;

$\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ २५६ वार,

अधस्तन विरलन २५६ में १ अधिक अर्थात् २५७ स्थान जाकर यदि १ की हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलन मात्र १२८ स्थान जाकर कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिकसे $\frac{१२८}{२५७}$ की हानि प्राप्त हो जाती है। इसे उपरिम विरलन राशि १२८ मेंसे घटा देने पर १२७$\frac{१२९}{२५७}$ आते हैं। यही संयत सहित संयतासंयतके द्रव्यका अवहारकाल है।

अनन्तर सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एक पर पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर उपरिम विरलनके पहले अंकपर रक्खे हुए सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यको प्रमत्तादि नौ संयतोंके द्रव्यसहित संयता-संयतके द्रव्यसे भाजित करके वहां जो आवलीका असंख्यातवां भाग लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले अंकपर स्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति संयतासंयत आदि दश गुणस्थानवर्ती जीवोंकी संख्या प्राप्त होती है। यहां अधस्तन विरलनके एक अंकपर रक्खे हुए दश गुणस्थानकी राशिके प्रमाणको ग्रहण करके उपरिम विरलनमें शून्य स्थानको (जिस पहले अंकके ऊपर रक्खी हुई संख्यामें दश गुणस्थानोंके द्रव्यका भाग दिया है उसे) छोड़कर उसके अनन्तर अंकपर स्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यमें मिला देने पर सब मिल कर सासादन और संयतासंयत आदि अयोगिकेवलीपर्यंत ग्यारह गुणस्थानवर्ती

विरलणमेत्तदसगुणट्ठाणदव्वं उवरिमविरलणाए छिदसासणदव्वम्हि णिरंतरं दिण्णे हेट्ठिम-विरलणमेत्तदसगुणट्ठाणरासी समप्पदि। एत्थ एगरूवस्स परिहाणी लब्भदि। पुणो उवरिमविरलणाए तदणंतररूवोवरि छिदसासणदव्वं हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि। एदं पि घेत्तूण पुव्वं व समकरणे कदे पुणो वि उवरि एगरूवपरिहाणी लब्भदि। एवं पुणो पुणो कादव्वं जा उवरिमविरलणा सव्वा एक्कारसगुणट्ठाणअवहारकालमेत्तं पत्ता त्ति। एवं समकरणं करिय परिहीणरूवाणं पमाण-माणिज्जदे। तं जहा, हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणमुवरिमविरलणाए गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तसव्वरूवेसु केवडियरूवपरिहाणिं लभामो त्ति तेरासियं करिय रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए उवरिमविरलणमोवट्टिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि अवणिज्जमाणरूवाणि लब्भंति। ताणि उवरिमविरलणाए सरिस-च्छेदं काऊण अवणिदे एक्कारसगुणट्ठाणाणमवहारकालो होदि। तेण अवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे एक्कारसगुणट्ठाणदव्वमागच्छदि।

जीवराशि होती है। इसप्रकार अधस्तन विरलनमात्र दश गुणस्थानोंके द्रव्यको उपरिम विरलनमें स्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यमें मिला देने पर अधस्तन विरलनमात्र दश गुणस्थानोंकी जीवराशि समाप्त हो जाती है और यहां एककी हानि प्राप्त होती है। अनन्तर उपरिम विरलनमें, जहां तक दश गुणस्थानराशि मिलाई हो उसके, अनन्तरके विरलित अंकपर स्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यको अधस्तन विरलनके ऊपर समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति संयतासंयत आदि दश गुणस्थानोंकी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। इस राशिको भी लेकर पहलेके समान समीकरण करने पर, अर्थात् उपरिम विरलनके शून्यस्थानको छोड़कर आगेके स्थानोंमें अधस्तन विरलनमात्र दश गुणस्थानराशिके मिला देने पर, फिर भी ऊपर एककी हानि प्राप्त होती है। इसप्रकार जबतक संपूर्ण उपरिम विरलन सासादन और संयतासंयतादि दश इसप्रकार ग्यारह गुणस्थानवर्ती राशिके अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक यही विधि पुनः पुनः करते जाना चाहिये। इसप्रकार समीकरण करके हानिको प्राप्त हुए अंकोंका प्रमाण लाते हैं। वह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान उपरिम विरलनमें जाकर यदि एक अंककी हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमात्र संपूर्ण स्थानोंमें कितने अंकोंकी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलनके भाजित करने पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र अपनेयमान अंक प्राप्त होते हैं। उनको उपरिम विरलनमेंसे समच्छेद विधान करके घटा देने पर सासादन और संयतासंयत आदि दश इसप्रकार ग्यारह गुणस्थानवर्ती राशिका अवहारकाल प्राप्त होता है। इस अवहारकालसे पल्योपमके भाजित करने पर उपर्युक्त ग्यारह गुणस्थानवर्ती जीवराशि आती है।

उदाहरण—सासादन-अव. ३२; द्रव्य २०४८; संयतासंयतादि १० गुणस्थान द्रव्य ५१४;

पुणो सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सम्मामिच्छाइट्ठिरासिपमाणं पावेदि। पुणो एक्कारसगुणट्ठाणरासिणा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिदव्वमोवट्टिय तत्थ लद्धसंखेज्जरूवाणि विरलेऊण उवरिमविरलणपढमरूवधरिदसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एक्कारसगुणट्ठाणदव्वपमाणं पावेदि। तं घेत्तूण उवरिमविरलणाए उवरि ट्ठिदसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वस्सुवरि परिवाडीए दिण्णे रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण हेट्ठिमविरलणमेत्तरासी समप्पदि, उवरिमविरलणाए एगरूवपरिहाणी च हवदि। तत्थेगरूवं पडि बारसगुणट्ठाणमेत्तरासी च हवदि। पुणो उवरिमतदणंतरएगरूवधरिदसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं हेट्ठिमविरलणाए

$\frac{२०४८}{१}\ \frac{२०४८}{१}\ \frac{२०४८}{१}$ ३२ वार,

$२०४८ - ५१४ = ३\frac{२५३}{२५७}$,

$\frac{५१४}{१}\ \frac{५१४}{१}\ \frac{५१४}{१}\ \frac{५०६\ \frac{२५३}{२५७}}{}$,

$६५५३६ - २५\frac{७४३}{१२८१} = २५६२$.

अधस्तन विरलन $३\frac{२५३}{२५७}$ में १ और मिला देने पर जो जोड़ हो उतने स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें १ अंककी हानि होती है तो उपरिम विरलनमात्र ३२ स्थान जाकर कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $६\frac{७३८}{१२८१}$ लब्ध आते हैं। इसे उपरिम विरलन ३२ मेंसे घटा देने पर $२५\frac{७४३}{१२८१}$ रहते हैं। यही उक्त ११ गुणस्थानवर्ती राशिके लानेके लिये अवहारकाल है।

अनन्तर सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर पूर्वोक्त ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्यको भाजित करके वहां जो संख्यात अंक लब्ध आवें उन्हें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले अंकके ऊपर रक्खे हुए सम्यग्मिथ्यादृष्टिके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि दश) गुणस्थानवर्ती द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। उसको लेकर उपरिम विरलनके ऊपर स्थित सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर परिपाटीसे देने पर उपरिम विरलनके एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर अधस्तन विरलनमात्र राशि समाप्त हो जाती है और उपरिम विरलनमें एक अंककी हानि होती है। तथा उपरिम विरलनमें जहां तक अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त राशि दी गई है वहां तक प्रत्येक एकके प्रति बारह (सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयतादि दश) गुणस्थानवर्ती जीवराशि होती है। अनन्तर उपरिम विरलनमें, जिस स्थान तक ग्यारह गुणस्थानोंकी जीवराशि मिलाई हो उसके, अनन्तरके विरलित एक अंकपर स्थित सम्यग्मिथ्यादृष्टिके

समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एक्कारसगुणट्ठाणमेत्तरासी पावदि । तमेक्कारसगुणट्ठाणरासिं सुण्णट्ठाणं मोत्तूण उवरि णिरंतरं दिण्णे रूवं पडि बारसगुणट्ठाणरासी हवदि । हेट्ठिमविरलणाए रूवाहियं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च हवदि । एवं पुणो पुणो ताव कायव्वं जाव खयपरिसुद्धा उवरिमविरलणा बारसगुणट्ठाणदव्वस्स अवहारकालं पत्ता त्ति । एत्थ परिहीणरूवाणं पमाणमाणिज्जदे । तं जहा, रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सव्विस्से उवरिमविरलणाए केवडियरूवपरिहाणिं लभामो त्ति तेरासियं काऊण रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे बारसगुणट्ठाणाणं दव्वस्स अवहारकालो हवदि । पुणो तेण अवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे बारसगुणट्ठाणदव्वमागच्छदि ।

द्रव्यको अधस्तन विरलनमें समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशि प्राप्त होती है। उस ग्यारह गुणस्थानसंबन्धी राशिको शून्यस्थानको (जिस अंकके ऊपरकी राशिको अधस्तन विरलनमें समान खण्ड करके दी है उस स्थानको) छोड़कर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर निरन्तर देयरूपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति बारह (सासादन, मिश्र और संयतासंयतादि दश) गुणस्थानसंबन्धी राशि प्राप्त होती है। तथा उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि होती है। इसप्रकार जबतक उपरिम विरलनका प्रमाण हानिरूप स्थानोंसे रहित होकर उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यके अवहारकालको प्राप्त होवे तबतक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये। अब यहां पर हानिको प्राप्त हुए स्थानोंका प्रमाण लाते हैं। वह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एककी हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यका अवहारकाल होता है। पुनः इस अवहारकालसे पल्योपमके भाजित करने पर उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यका प्रमाण आता है।

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६, द्रव्य ४०९६;

$\frac{४०९६}{१}$ $\frac{४०९६}{१}$ $\frac{४०९६}{१}$ १६ बार,

$४०९६ \div २५६२ = १\frac{१५३४}{२५६२}$,

$\frac{२५६२}{१}$ $\frac{१५३४}{\frac{१५३४}{२५६२}}$,

$६५५३६ \div ९\frac{२८०७}{३३२९} = ६६५८.$

अधस्तन विरलन $१\frac{१५३४}{२५६२}$ में एक और मिलाकर जो हो उतने स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें १की हानि होती है तो उपरिम विरलनमात्र १६ स्थान जाकर कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $\frac{३२७६८}{३३२९}$ लब्ध आते

पुणो असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि असंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं पावदि। पुणो बारसगुणट्ठाणरासिणा असंजदसम्माइट्ठिदव्वमोवट्टिय लद्धमावलियाए असंखेज्जदिभागं हेट्ठा विरलेऊण असंजदसम्माइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि। पुणो उवरिमसुण्णट्ठाणं मोत्तूण सेसुवरिमरूवधरिद असंजदसम्माइट्ठिदव्वस्सुवरि हेट्ठिमविरलणाए रूवं पडि ट्ठिदबारसगुणट्ठाणरासिं पक्खित्ते रूवं पडि तेरसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि, हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवपरिहाणी च लब्भदि। पुणो वि तदणंतर-एगरूवधरिद-असंजदसम्माइट्ठिदव्वं हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे बारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि। पुणो तं घेत्तूण उवरिमविरलणाए उवरि ट्ठिद-असंजदसम्माइट्ठिदव्वस्सुवरि सुण्णट्ठाणं वोलिय पक्खित्ते रूवं पडि तेरसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि

हैं। इसे उपरिम विरलन १६ मेंसे घटा देने पर ९ २८०७/३३२९ आते हैं। यही उक्त १२ गुणस्थानोंका अवहारकाल है। इस अवहारकालका भाग पल्योपम ६५५३६ में देने पर उक्त बारह गुणस्थानोंके द्रव्यका प्रमाण ६६५८ आता है।

अनन्तर असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर पूर्वोक्त बारह (सासादन, मिश्र और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणको भाजित करके जो आवलीका असंख्यातवां भाग लब्ध आवे उसे पूर्व विरलनके नीचे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर उपरिम विरलनके प्रथम शून्यस्थानको छोड़कर शेष उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यप्रमाणमें अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यको मिला देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तेरह गुणस्थानसंबन्धी (सासादनादि १३) जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। और एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि प्राप्त होती है। पुनः जिस स्थानतक अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त राशि मिलाई हो उसके आगेके एक विरलनके प्रति प्राप्त असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणको अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बारह गुणस्थानसंबन्धी राशिको ग्रहण करके उपरिम विरलनमें शून्यस्थानको, अर्थात् जिस स्थानकी असंयत सम्यग्दृष्टि जीवराशि अधस्तन विरलनमें दी है उसे, छोड़कर शेष विरलनोंपर स्थित

एगरूवपरिहाणी च लब्भदि । एवं पुणो पुणो कायव्वं जा उवरिमविरलणा खयपरिसुद्धा तेरसगुणट्ठाण-अवहारकालमेत्तं पत्ता त्ति । पुणो एत्थ अवणयणरूवपमाणमाणिज्जदे । तं जहा, रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सव्विस्से उवरिमविरलणाए केवडियाणि परिहाणिरूवाणि लभामो त्ति तेरासियं करिय रूवाहिय-हेट्ठिमविरलणाए असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकाले ओवट्टिदे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्ताणि परिहाणिरूवाणि लब्भंति । कुदो णव्वदे ? सव्वगुणट्ठाणेसु पविट्ठसव्वगुणगार-संवग्गादो असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो त्ति एदम्हादो परमगुरूवदेसादो ।

असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिमें मिला देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त तेरह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है और एककी हानि होती है। इसप्रकार जबतक उपरिम विरलनका प्रमाण, क्षयको प्राप्त हुए स्थानोंसे रहित होकर, उपर्युक्त तेरह गुणस्थानसंबन्धी अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये। अब यहां हानिको प्राप्त हुए स्थानोंका प्रमाण लाते हैं। वह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एक स्थानकी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितने हानिरूप अंक प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनके प्रमाणसे असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको भाजित करने पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं।

उदाहरण—असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ४; द्रव्य १६३८४,

$\frac{१६३८४}{१}$ $\frac{१६३८४}{१}$ $\frac{१६३८४}{१}$ $\frac{१६३८४}{१}$

$१६३८४ - ६६५८ = २\frac{१५३४}{३३२९}$

$\frac{६६५८}{१}$ $\frac{६६५८}{१}$ $\frac{३०६८}{१५३४}$ $\frac{}{३३२९}$

अधस्तन विरलन $२\frac{१५३४}{३३२९}$ में १ और मिलाकर जो हो उतने स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें १ स्थानकी हानि होती है तो उपरिम विरलन-मात्र ४ स्थान जाकर कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $१\frac{१७९५}{११५२१}$ हानिरूप स्थानांक आते हैं। इसे उपरिम विरलन ४ मेंसे घटा देने पर $२\frac{९७२६}{११५२१}$ आते हैं। यही उक्त तेरह गुणस्थानोंका अवहारकाल है। इस अवहारकालका भाग पल्योपम ६५५३६ में देने पर सासादनादि १३ गुणस्थानराशिका प्रमाण २३०४२ होता है।

शंका—आवलीके असंख्यातवें भाग हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं, यह कैसे जाना जाता है।

समाधान—'संपूर्ण गुणस्थानोंमें प्राप्त संपूर्ण गुणकारोंके संवर्गसे असंयत-सम्यग्दृष्टिका अवहारकाल असंख्यातगुणा है' इस परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है कि

पुणो सम्मामिच्छाइट्ठिपमुहरासिणा असंजदसम्माइट्ठिरासिमोवट्टिय रूवाहियकद-रासिस्स असंजदसम्माइट्ठिपमुहरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बारसगुण-ट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा असंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो एक्कारस-गुणट्ठाणरासिणा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिमोवट्टिय लद्धं रूवाहियं विरलेऊण बारसगुणट्ठाण-रासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एक्कारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो दसगुणट्ठारासिणा सासणसम्माइट्ठि-

यहां आवलीके असंख्यातवें भाग हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं।

पुनः सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमें एक मिला देने पर जो राशि हो उसके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। उसमें बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—१६३८४ – ६६५८ = $२\frac{१५३४}{३३२९}$ + १ = $३\frac{१५३४}{३३२९}$;

६६५८	६६५८	६६५८	३०६८
१	१	१	१५३४/३३२९;

इसमें बहुभाग १६३८४ प्रमाण असंयतसम्यग्दृष्टि राशि है।

अनन्तर ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादिक १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थान-संबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। वहां बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—४०९६ – २५६२ = $१\frac{१५३४}{२५६२}$ + १ = $२\frac{१५३४}{२५६२}$,

२५६२	२५६२	१५३४
१	१	१५३४/२५६२;

इसमें बहुभाग ४०९६ प्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशि है।

अनन्तर दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर कुल राशिका विरलन

दव्वमोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण एक्कारसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि। तत्थ बहुभागा सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो णवगुणट्ठाणरासिणा संजदासंजदरासिमोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण दसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविरलणरूवं पडि णवगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा संजदासंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुभागा अप्पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा सजोगिरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पंच-खवगपमाणं होदि। सेसेगभागो चउण्हमुवसामगाणं होदि। एवं भागभागो समत्तो।

करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—$२०४८ - ५१४ = ३\frac{२५३}{२५७} + १ = ४\frac{२५३}{२५७}$;

५१४	५१४	५१४	५१४	५०६	यहां पर बहुभाग २०४८ प्रमाण
१	१	१	१	$\frac{२५३}{२५७}$	सासादनसम्यग्दृष्टि राशि है।

अनन्तर नौ (प्रमत्तसंयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संयतासंयत राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे रूपाधिक करके और उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र विरलनके प्रति नौ (संयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर बहुभाग संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—$५१२ - २ = २५६ + १ = २५७$;

२	२	२	२	२		यहां पर बहुभाग ५१२ संयता-
१	१	१	१	१	२५७ वार	संयत राशि है।

शेष राशिके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है। शेष राशिके संख्यात खण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है। शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिकेवली जीवराशिका प्रमाण है। शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग पांचों क्षपकोंका प्रमाण है। शेष एक भाग चारों उपशमकोंका प्रमाण है। इसप्रकार भागभाग समाप्त हुआ।

संपहि अवगदसव्वपमाणस्स सिस्सस्स एत्थेव रासीणमप्पवहुत्तं भणिस्सामो—

अट्ठमे अणियोगद्दारे एदं सुत्तगारो भणिस्सदि त्ति पुणरुत्तदोसो भवदि त्ति णासंकणिज्जं, तस्स पडिवुद्धसिस्सविसयत्तादो। अप्पडिवुद्धसिस्से आस्सिऊण सदवार-परूवणं पि ण दोसकारणं भवदि। तत्थ अप्पावहुगं दुविहं, सत्थाणप्पावहुगं सव्वपर-त्थाणप्पावहुगं चेदि। एत्थ मिच्छाइट्ठिस्स सत्थाणप्पावहुगं णत्थि। किं कारणं? जेण मिच्छाइट्ठिरासीदो धुवरासी अब्भहिओ जादो। तत्थ ताव सासणसम्माइट्ठिस्स सत्थाण-प्पावहुअं वत्तइस्सामो। तं जहा, सव्वत्थोवो अवहारकालो तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सग-अवहारकालो। अथवा गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्ग-मूलाणि। को पडिभागो? सगअवहारकालवग्गो। एत्थ पडिभागणिमित्तं दुगुणादिकरणं

अब जिसने संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणको जान लिया है ऐसे शिष्यके लिये यहीं पर जीवराशिका अल्पबहुत्व बतलाते हैं—

शंका—सूत्रकार आठवें अनुयोगद्वारमें इसका कथन करेंगे ही, इसलिये यहां पर उसका कथन करनेसे पुनरुक्त दोष होता है?

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, वह पुनरुक्तिदोषविचार प्रतिबुद्ध शिष्यका ही विषय है। किन्तु जो शिष्य अप्रतिबुद्ध है उसकी अपेक्षा सौवार प्ररूपण करना भी दोषका कारण नहीं है।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व।

ओघप्ररूपणामें मिथ्यादृष्टि जीवराशिका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है।

शंका—इसका क्या कारण है?

समाधान—क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे ध्रुवराशि बड़ी है। अब पहले सासादन-सम्यग्दृष्टि राशिका स्वस्थान अल्पबहुत्व बतलाते हैं। वह इसप्रकार है– सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल सबसे स्तोक है। उसीका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने (सासादनसंबन्धी) द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना (सासादनसंबन्धी) अवहारकाल प्रतिभाग है। अर्थात् अवहारकालका सासादन-सम्यग्दृष्टिसंबन्धी द्रव्यमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसको अवहारकालसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है। अथवा, गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है।

उदाहरण—सासादन द्रव्य २०४८, अवहारकाल ३२; २०४८ ÷ ३२ = ६४ गुणकार, प्रतिभाग ३२, पल्योपम ६५५३६, अवहारकालका वर्ग ३२ × ३२ = १०२४ प्रतिभाग, ६५५३६ ÷ १०२४ = ६४ गुणकार

कादव्वं। तं जहा, वत्तइस्सामो– सगअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। विगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स दुभागो आगच्छदि। तिगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स तिभागो आगच्छदि। एवं ताव दुगुणादिकरणं कादव्वं जाव सासणसम्माइट्ठिअवहारकालस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारा गदा त्ति। तत्थ अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो। सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालस्स अद्धच्छेदणए विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णब्भासे कदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स अवहारकालो होदि। तेण अवहारकालेण सासणसम्माइट्ठिरासिस्स अवहारकाले गुणिदे गुणगारपडिभागो होदि। सासणसम्माइट्ठिदव्वादो पलिदोवममसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? सग-अवहारकालो। एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं च अप्पाबहुगं वत्तव्वं। पमत्तसंजदादीणं सत्थाणप्पाबहुगं णत्थि, तेसिमवहारकालाभावादो।

यहां पर प्रतिभागका प्रमाण निकालनेके लिये द्विगुणादिकरण विधि करना चाहिये। वह जिसप्रकार है आगे उसीको बतलाते हैं— अपने अवहारकालसे पल्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है (६५५३६ – ३२ = २०४८ सा.) द्विगुणित अवहारकालसे पल्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका दूसरा भाग आता है (६५५३६ – ६४ = १०२४)। त्रिगुणित अवहारकालसे पल्योपमके भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका तीसरा भाग आता है (६५५३६ – ९६ = ६८२$\frac{२}{३}$)। इसप्रकार जबतक सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनेवार द्विगुणादिकरण विधि हो जावे तबतक यह विधि करते जाना चाहिये। वहां अब अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं— सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकालके अर्धच्छेदोंको विरलित करके और उसको दो रूप करके परस्पर गुणा करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके अवहारकालका प्रमाण होता है। इस अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके अवहारकालको गुणित करने पर गुणकारप्रतिभागका प्रमाण आता है।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२; अर्धच्छेद ५,

२ २ २ २ २ = ३२, ३२ × ३२ = १०२४ गुणकार प्रतिभाग.
१ १ १ १ १

सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? अपना अर्थात् सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल गुणकार है (२०४८ × ३२ = ६५५३६ पल्योपम)।

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। प्रमत्तसंयत आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, उनका अवहारकाल नहीं है।

सव्वपरत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। तं जहा– सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। पंच खवगा संखेज्जगुणा। को गुणगारो? अड्ढाइज्जरूवाणि। सजोगिकेवलिदव्वं संखेज्जगुणं। को गुणगारो? संखेज्जसमया वा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जसमया वा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्ज-समया वा। सव्वत्थ हेट्ठिमरासिणोवरिमरासिम्हि भागे हिदे जो भागलद्धो सो गुणगारो। पमत्तसंजददव्वादो असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सग-अवहारकालस्स संखेज्जदिभागो। को पडिभागो? पमत्तसंजददव्वं। सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सग-अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो। सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो संखेज्ज-

अब सर्वपरस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है– चारों उपशामक (उपशम श्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती जीव) सबसे स्तोक हैं। पांचों क्षपक (क्षपक श्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती और अयोगिकेवली जीव) उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। यहां गुणकार क्या है? ढाई अंक गुणकार है।

उदाहरण—चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक १२१६, $१२१६ \times \frac{५}{२} = २०४०$ पांचों क्षपक।

सयोगिकेवलियोंका द्रव्यप्रमाण पांचों क्षपकोंसे संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। अप्रमत्तसंयत सयोगिकेवलियोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। प्रमत्तसंयत अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। यहां सर्वत्र नीचेकी राशिसे उपरिम राशिके भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे वह वहां गुणकार होता है।

उदाहरण—सयोगिकेवली ८९८५०२, अप्रमत्त २९६९९१०३, प्रमत्त ५९३९८२०६;

$२९६९९१०३ \div ८९८५०२ = ३३\frac{४८५३७}{८९८५०२}$ इससे सयोगी राशिको गुणित करने पर अप्रमत्त राशि आती है।

$५९३९८२०६ \div २९६९९१०३ = २$ इस गुणकारसे अप्रमत्त राशिको गुणित करने पर प्रमत्तसंयत राशि आती है।

प्रमत्तसंयतके द्रव्यसे असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने अवहारकालका संख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? प्रमत्तसंयतका द्रव्यप्रमाण प्रतिभाग है।

उदाहरण—प्रमत्तसंयत ५९३९८२०६ = २, असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ४;
$४ \div २ = २$ गुणकार, $२ \times २ = ४$ अवहारकाल।

असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? असंयतसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है।

गुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया वा। को पडिभागो? सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहार-कालो। संजदासंजद-अवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सग-अवहारस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो। तदो संजदासंजद-दव्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सग-अवहारकालो। अहवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढ-मवग्गमूलाणि। को पडिभागो? सग अवहारकालवग्गो। संजदासंजददव्वस्सुवरि सासण-सम्माइट्ठिदव्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? संजदासंजददव्वमवहारकालो। अहवा सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालेण

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६; १६ – ४ = ४ गुणकार, ४ × ४ = १६ सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय। प्रतिभाग क्या है? सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२, ३२ – १६ = २ गुणकार; १६ × २ = ३२ सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल।

सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है।

उदाहरण—संयतासंयत अवहारकाल १२८; १२८ ÷ ३२ = ४ गुणकार; ३२ × ४ = १२८ संयतासंयत अवहारकाल।

संयतासंयतके अवहारकालसे संयतासंयत द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना (संयता-संयतका) अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपने (संयतासंयतके) अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है।

उदाहरण—संयतासंयत द्रव्य ५१२; ५१२ – १२८ = ४ गुणकार; १२८ × ४ = ५१२ संयतासंयत द्रव्य। अथवा, १२८ × १२८ = १६३८४; ६५५३६ ÷ १६३८४ = ४ गुणकार।

संयतासंयतके प्रमाणके ऊपर सासादनसम्यग्दृष्टिका द्रव्यप्रमाण संयतासंयतके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने (सासादनके) द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? संयतासंयतके द्रव्यप्रमाणका अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतके अवहारकालको भाजित करने पर

संजदासंजद-अवहारकाले भागे हिदे गुणगारो रासी आगच्छदि । अहवा उवरिमरासि-अवहारकालेण हेट्ठिमरासिं गुणेऊण पलिदोवमे भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि । एत्थ विगुणादिकरणं कादव्वं । तं जहा– संजदासंजदरासिपमाणेण पलिदोवमे भागे हिदे संजदासंजद-अवहारकालो आगच्छदि । विउणिदसंजदासंजददव्वपमाणेण पलिदोवमे भागे हिदे संजदासंजद-अवहारकालस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदसंजदासंजदरासिणा पलिदोवमे भागे हिदे तस्सेव अवहारकालस्स तिभागो आगच्छदि । एदेण कमेण णेदव्वं जाव संजदासंजदरासिस्स गुणगारो सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालमेत्तं पत्तो त्ति । तदा सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो[1] संजदासंजद-अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । एदेण पुव्वुत्तगुणगारो साहेयव्वो । संजदासंजदगुणस्स उक्कस्सकालो संखेज्जाणि वस्साणि । सासणसम्माइट्ठिगुणस्स उक्कस्सकालो छ आवलियाओ । एदेसिमुवक्कमण-कालादी अप्पप्पणो गुणकालपडिरूवा हवंति त्ति सासणसम्माइट्ठिदव्वादो संजदासंजद-दव्वेण संखेज्जगुणेण होदव्वमिदि ? ण एस दोसो, जदि वि सासणसम्माइट्ठि-उक्कस्स-

गुणकार राशिका प्रमाण आता है । अथवा, उपरिम राशिके अवहारकालसे अधस्तन राशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे पल्योपमके भाजित करने पर गुणकार राशि आती है ।

उदाहरण—सासादन द्रव्य २०४८, २०४८ – १२८ = १६ गुणकार; १२८ × १६ = २०४८ सासादन द्रव्यप्रमाण । अथवा, १२८ – ३२ = ४ गुणकार; ५१२ × ४ = २०४८ सा. । अथवा, ५१२ × ३२ = १६३८४, ६५५३६ – १६३८४ = ४ गुणकार, ५१२ × ४ = २०४८ सा. ।

यहां पर द्विगुणादिकरण विधि करना चाहिये । वह इसप्रकार है— संयतासंयत राशिके प्रमाणसे पल्योपमके भाजित करने पर संयतासंयतका अवहारकाल आता है (६५५३६ – ५१२ = १२८) । द्विगुणित संयतासंयत द्रव्यके प्रमाणसे पल्योपमके भाजित करने पर संयतासंयतके अवहारकालका दूसरा भाग आता है (६५५३६ – १०२४ = ६४) । त्रिगुणित संयतासंयत राशिसे पल्योपमके भाजित करने पर संयतासंयतके अवहारकालका तीसरा भाग आता है (६५५३६ – १५३६ = ४२$\frac{५१२}{१५३६}$) । इसी क्रमसे तबतक ले जाना चाहिये जबतक संयतासंयत राशिका गुणकार सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त हो जावे । उस समय सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल संयतासंयतके अवहारकालका असंख्यातवां भाग आता है । इससे पूर्वोक्त गुणकार साध लेना चाहिये (१२८ – ३२ = ४ गुणकार) ।

शंका—संयतासंयत गुणस्थानका उत्कृष्टकाल संख्यात वर्ष है और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानका उत्कृष्टकाल छह आवली है । अतः इनके उपक्रमणकाल आदिक अपने अपने गुणस्थानके कालके अनुसार होते हैं, इसलिये सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यप्रमाणसे संयतासंयत द्रव्यप्रमाण संख्यातगुणा होना चाहिये ?

१ प्रतिषु '-कालमेच ' इति पाठः ।

मणकालादो संजदासंजद-उवक्कमणकालो संखेज्जगुणो हवदि तो वि संजदासंजद-दव्वादो सासणसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणमेव। कुदो? सम्मत्त-चारित्तविरोहिसासण-गुणपरिणामेहिंतो समयं पडि असंखेज्जगुणाए सेढीए कम्मणिज्जरणहेउभूदसंजमासंजम-परिणामो अइदुल्लहो त्ति काऊण समयं पडि संजमासंजमं पडिवज्जमाणरासीदो समयं पडि सासणगुणं पडिवज्जमाणरासी असंखेज्जगुणो हवदि त्ति। सासणसम्माइट्ठिरासीदो सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं, सासणसम्मादिट्ठि-छ-आवलि-अब्भंतर-उवक्कमणकालादो अंतोमुहुत्तमेत्त-सम्मामिच्छाइट्ठि-उवक्कमणकालस्स संखेज्जगुणत्तादो। को गुणगारो? संखेज्जसमया वा। एत्थ वि रासिणा रासिं भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि। अवहारकालेण अवहारकाले भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि। उवरिमरासि-अवहारकालेण हेट्ठिमरासिं गुणेऊण पलिदोवमे भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि। सम्मामिच्छाइट्ठि-दव्वस्सुवरि असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। कुदो? सम्मामिच्छाइट्ठि-उवक्कमण-

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यद्यपि सासादनसम्यग्दृष्टिके उपक्रमण कालसे संयतासंयतका उपक्रमणकाल संख्यातगुणा है, तो भी संयतासंयत द्रव्यप्रमाणसे सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा ही है, क्योंकि, सम्यक्त्व और चारित्रके विरोधी सासादनगुणस्थानसंबन्धी परिणामोंसे प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणी श्रेणीरूपसे कर्मनिर्जराके कारणभूत संयमासंयमरूप परिणाम अत्यन्त दुर्लभ हैं, इसलिये प्रत्येक समयमें संयमासंयमको प्राप्त होनेवाली जीवराशिकी अपेक्षा प्रत्येक समयमें सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको प्राप्त होनेवाली जीवराशि असंख्यातगुणी है।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण संख्यातगुणा है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टिके छह आवलीके भीतर होनेवाले उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानका अन्तर्मुहूर्तप्रमाण उपक्रमण काल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। यहां भी एक राशिका दूसरी राशिमें भाग देने पर गुणकार राशि आ जाती है। अथवा, अवहारकालसे अवहारकालके भाजित करने पर गुणकार राशि आ जाती है। अथवा, उपरिम राशिके अवहारकालसे अधस्तन राशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका पल्योपममें भाग देने पर गुणकार राशि आ जाती है।

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्य ४०९६; ४०९६ − ३२ = १२८ गुणकार, ३२ × १२८ = ४०९६ सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्य। अथवा, ४०९६ − २०४८ = २ गुणकार; २०४८ × २ = ४०९६ सम्य. द्रव्य। अथवा, ३२ − १६ = २ गुणकार; २०४८ × २ = ४०९६। अथवा, २०४८ × १६ = ३२७६८; ६५५३६ − ३२७६८ = २ गुणकार; २०४८ × २ = ४०९६।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिके द्रव्यके ऊपर असंयतसम्यग्दृष्टिका द्रव्य उससे असंख्यातगुणा है, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उपक्रमण कालसे असंख्यात आवलियोंके भीतर होनेवाला असंयत-

कालादो असंखेज्जावलियब्भंतर-असंजदसम्माइट्ठि-उवक्कमणकालस्स असंखेज्जगुणत्तादो। अहवा दोण्हं पि गुणट्ठाणाणमुवक्कमणकालमणवेक्खिय असंखेज्जगुणत्तस्स कारणमण्णहा वुच्चदे। तं जहा, समयं पडि सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासीदो वेदगसम्मत्तं पडिवज्जमाणरासी असंखेज्जगुणो। जेण वेदगसम्माइट्ठीणमसंखेज्जदिभागो मिच्छत्तं गच्छदि। तस्स वि असंखेज्जदिभागो सम्मामिच्छत्तं गच्छदि। 'सव्वकालमवट्ठिदरासीणं वयाणुसारिणा आएण होदव्वं' इदि णायादो असंजदसम्माइट्ठिरासीदो णिप्फिडिदमेत्ता चेव अट्ठवीससंतकम्मिया मिच्छाइट्ठिणो वेदगसम्मत्तं पडिवज्जंति। तम्हा सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वादो असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणमिदि सिद्धं। एदं वक्खाणमेत्थ पधाणमिदि गेण्हिदव्वं। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। एत्थ वि तीहि पयारेहि गुणगारो साहेयव्वो। पलिदोवममसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सग-अवहार-

सम्यग्दृष्टिका उपक्रमण काल असंख्यातगुणा है। अथवा, पूर्वोक्त दोनों ही गुणस्थानोंके उपक्रमण कालकी अपेक्षा न करके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणे हैं, इसका कारण दूसरे प्रकारसे कहते हैं। वह इसप्रकार है— प्रत्येक समयमें सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाली राशिसे वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाली राशि असंख्यातगुणी है। तथा जिस कारणसे वेदकसम्यग्दृष्टियोंका असंख्यातवां भाग मिथ्यात्वको प्राप्त होता है और उसका भी असंख्यातवां भाग सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होता है। तथा 'सर्वदा अवस्थित राशियोंके व्ययके अनुसार ही आय होना चाहिये' इस न्यायके अनुसार मोहनीयके अट्ठावीस कर्मोंकी सत्ता रखनेवाले जितने जीव असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिमेंसे निकलकर मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं उतने ही मिथ्यादृष्टि वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होते हैं, इसलिये सम्यग्मिथ्यादृष्टिके द्रव्यसे असंयतसम्यग्दृष्टिका द्रव्य असंख्यातगुणा है, यह सिद्ध हो जाता है। यह व्याख्यान यहां पर प्रधान है ऐसा समझना चाहिये। गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। यहां पर भी पूर्वोक्त तीनों प्रकारोंसे गुणकार साध लेना चाहिये।

उदाहरण—असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य १६३८४; १६३८४ ÷ १६ = १०२४ गुणकार; १६ × १०२४ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य। अथवा, १६३८४ ÷ ४०९६ = ४ गुणकार; ४०९६ × ४ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य। अथवा, १६ ÷ ४ = ४ गुणकार; ४०९६ × ४ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य। अथवा, ४०९६ × ४ = १६३८४; ६५५३६ ÷ १६३८४ = ४ गुणकार; ४०९६ × ४ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य।

असंयतसम्यग्दृष्टिके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपना (असंयतसम्यग्दृष्टिका) अवहारकाल गुणकार है।

उदाहरण—१६३८४ × ४ = ६५५३६ पल्योपम।

कालो। तस्सुवरि सिद्धाणंतगुणा। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहिं अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो। मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि वि अणंतगुणो सिद्धेहि वि अणंतगुणो भवसिद्धियाणमणंताभागस्स अणंतिमभागो।

एवमोघे चोद्दसगुणट्ठाणपरूवणा समत्ता।

दव्वट्ठियमवलंबिय ट्ठिदसिस्साणमणुग्गहणट्ठं सामण्णेण चोद्दसगुणट्ठाणपमाणपरूवणं करिय पज्जवट्ठियणयमवलंबिय ट्ठियसिस्साणमणुग्गहणट्ठमाह—

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगईए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[1] ॥ १५ ॥

आदेसेण पज्जवणयावलंबणेण गुणट्ठाणाणं पमाणपरूवणं कीरदे। एत्थ इत्थंभावलक्खणो तदियाणिद्देसो त्ति दट्ठव्वो[2]। गदियाणुवादेण। सा च भेदपरूवणा चोद्दसमग्गणट्ठाणाणि अस्सिऊण ट्ठिदा। तेहि अक्कमेण परूवणा ण संभवदीदि अपगदमग्गणट्ठाणाणि अवणिय पयदमग्गणट्ठाणजाणावणट्ठं गदिग्गहणं। आदेसमस्सिऊण जा गुणट्ठाणाणं पमाण-

पल्योपमके ऊपर सिद्ध उससे अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा या सिद्धोंके असंख्यातवां भाग गुणकार है। सिद्धोंसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अभव्योंसे भी अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा और भव्यसिद्धोंके अनन्त बहुभागोंका अनन्तवां भाग गुणकार है।

इसप्रकार ओघमें चौदह गुणस्थान प्ररूपणा समाप्त हुई।

द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करके स्थित हुए शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये सामान्यसे चौदहों गुणस्थानोंके द्रव्यप्रमाणका प्ररूपण करके अब पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करके स्थित शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिगत नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ १५ ॥

आदेशसे अर्थात् पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा गुणस्थानोंके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं। यहां 'आदेसेण' इस पदमें तृतीया विभक्तिका निर्देश इत्थंभावलक्षण है, ऐसा समझना चाहिये। अब 'गदियाणुवादेण' इस पदका स्पष्टीकरण करते हैं। ऊपर जो भेदप्ररूपणाकी प्रतिज्ञा की है वह भेदप्ररूपणा चौदहों मार्गणाओंका आश्रय लेकर स्थित है। परंतु उनके द्वारा अक्रमसे अर्थात् युगपत् प्ररूपणा नहीं हो सकती है, इसलिये अविवक्षित मार्गणास्थानोंको छोड़कर प्रकृत मार्गणास्थानके ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें गति पदका ग्रहण किया है। आदेशका आश्रय करके जो गुणस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा की जाती है वह आचार्य परंपराके द्वारा

१ असखेज्जा णेरइया। अनु सूत्र १४१, पृ. १७९.

२ इत्थंभूतलक्षणे (तृतीया)। पाणिनि, २, ३, २०.

परूवणा सा आइरियपरंपराए अणाइणिहणत्तणेण आगदा त्ति जाणावणहं अणुवादग्गहणं। सेसगदिणिवारणट्ठं णिरयगदिग्गहणं कदं। सेसगदीओ मोत्तूण पुव्वं णिरयगदी चेव किमट्ठं वुच्चदे ? ण, णेरइयदंसणेण समुप्पण्णसज्झसस्स भवियस्स दसलक्खणे धम्मे णिच्चल-सरूवेण बुद्धी चिट्ठदि त्ति काऊण पुव्वं तप्परूवणादो। णेरइएसु त्ति किमट्ठं ? ण, तत्थ-तणखेत्तकालपडिसेहफलत्तादो। मिच्छाइट्ठिग्गहणं किमट्ठं ? सेसगुणट्ठाणणियत्तणट्ठं। दव्वपमाणेणेत्ति किमट्ठं ? खेत्तकालणिवारणट्ठं। केवडिया इदि पुच्छा किंफला ? जिणाण-मत्थकत्तारत्तपदुप्पायणमुहेण अप्पणो कत्तारत्तपडिसेहफला। एवं गोदमसामिणा पुच्छिदे महावीरभयवंतेण केवलणाणेणावगदतिकालगोयरासेसपयत्थेण असंखेज्जा इदि तेसिं पमाणं परूविदं। एवमुत्ते संखेज्जाणंताणं पडिणियत्ती। तं पुण असंखेज्जमणेयवियप्पं। तं जहा—

अनादिनिधनरूपसे आई हुई है, इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें अनुवाद पदका ग्रहण किया है। शेष गतियोंका निराकरण करनेके लिये सूत्रमें नरकगति पदका ग्रहण किया है।

शंका— शेष गतियोंके कथनको छोड़कर पहले नरकगतिका ही वर्णन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नारकियोंके स्वरूपका ज्ञान हो जानेसे जिसे भय उत्पन्न हो गया है ऐसे भव्य जीवकी दशलक्षण धर्ममें निश्चलरूपसे बुद्धि स्थिर हो जाती है, ऐसा समझकर पहले नरकगतिका वर्णन किया।

शंका— सूत्रमें 'णेरइएसु' यह पद किसलिये दिया गया है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नरकगतिसंबन्धी क्षेत्र और कालका प्रतिषेध करना उक्त पदका फल है।

शंका— सूत्रमें 'मिच्छाइट्ठी' इस पदका ग्रहण किसलिये किया है ?

समाधान— शेष गुणस्थानोंके निवारणके लिये मिथ्यादृष्टि पदका ग्रहण किया है।

शंका— सूत्रमें 'द्रव्यप्रमाणसे' ऐसा पद क्यों दिया है ?

समाधान— क्षेत्र और कालका प्रतिषेध करनेके लिये 'द्रव्यप्रमाणसे' पदका ग्रहण किया है।

शंका— 'कितने हैं' इस पृच्छाका क्या फल है ?

समाधान— जिनेन्द्रदेव ही अर्थकर्ता हैं, इस बातके प्रतिपादन द्वारा अपने (भूतबलिके) कर्तापनका निषेध करना उक्त पृच्छाका फल है। नरकगतिमें मिथ्यादृष्टि नारकी कितने हैं, इसप्रकार गौतमस्वामीके द्वारा पूछने पर जिन्होंने केवलज्ञानके द्वारा त्रिकालके विषयभूत समस्त पदार्थोंको जान लिया है, ऐसे भगवान् महावीरने 'असंख्यात हैं' इसप्रकार नारकियोंके प्रमाणका प्ररूपण किया।

'नरकमें मिथ्यादृष्टि नारकी असंख्यात हैं' इसप्रकार कथन करने पर संख्यात और अनन्तकी निवृत्ति हो जाती है। वह असंख्यात अनेक प्रकारका है। आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं—

णामं ठवणा दवियं सस्सद गणणापदेसियमसंखं ।
एयं उभयादेसो वित्थारो सव्व-भावा य ॥ ५७ ॥

तत्थ णामासंखेज्जयं णाम जीवाजीवमिस्ससरूवेण ट्ठिदअट्ठभंगासंखेज्जाणं कारण-णिरवेक्खा सण्णा । जं तं ट्ठवणासंखेज्जयं तं कट्ठकम्मादिसु सब्भावासब्भावट्ठवणाए ठविदं असंखेज्जमिदि । जं तं दव्वासंखेज्जयं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य । आगमो गंथो सिद्धंतो सुदणाणं पवयणमिदि एयट्ठो ।

पूर्वापरविरुद्धादेर्व्यपेतो दोषसंहतेः ।
द्योतकः सर्वभावानामाप्तव्याहृतिरागमः ॥ ५८ ॥

आगमादण्णो णोआगमो । तत्थ असंखेज्जपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदो दव्वासंखेज्जयं । किं कारणं ? खवोवसमविसिट्ठजीवदव्वस्स कथंचि खवोवसमादो अव्व-दिरित्तस्स आगमववदेसाविरोहादो । जं तं णोआगमदो दव्वासंखेज्जयं तं तिविहं, जाणु-गसरीरदव्वासंखेज्जयं भवियदव्वासंखेज्जयं जाणुगसरीरभवियवदिरित्तदव्वासंखेज्जयं चेदि । तत्थ जं तं जाणुगसरीरदव्वासंखेज्जयं तं असंखेज्जपाहुडजाणुगस्स सरीरं भवियवट्टमाण-समुज्झादत्तणेण तिभेदमावण्णं । कधमणागमस्स सरीरस्स असंखेज्जववएसो ? ण एस दोसो,

नाम, स्थापना, द्रव्य, शाश्वत, गणना, अप्रदेशिक, एक, उभय, विस्तार, सर्व और भाव इसप्रकार असंख्यात ग्यारह प्रकारका है ॥ ५७ ॥

उनमेंसे जीव, अजीव और मिश्ररूपसे स्थित असंख्यात पदार्थोंके भेदोंकी कारणके विना असंख्यात ऐसी संज्ञा रखना नाम असंख्यात है । काष्ठकर्मादिकमें साकार और निराकार-रूपसे यह असंख्यात है, इसप्रकारकी स्थापना करना स्थापना असंख्यात है । द्रव्य असंख्यात आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है। आगम, ग्रन्थ, सिद्धान्त, श्रुतज्ञान और प्रवचन, ये एकार्थवाची नाम हैं ।

पूर्वापर विरुद्धादि दोषोंके समूहसे रहित और संपूर्ण पदार्थोंके द्योतक आप्तवचनको आगम कहते हैं ॥ ५८ ॥

आगमसे अन्यको नोआगम कहते हैं । जो असंख्यातविषयक प्राभृतका ज्ञाता है परंतु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित है, उसे आगमद्रव्यासंख्यात कहते हैं, क्योंकि, क्षयोपशम-युक्त जीवद्रव्य क्षयोपशमसे कथंचित् अभिन्न है, इसलिये उसे आगम यह संज्ञा देनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

नोआगमद्रव्यासंख्यात तीन प्रकारका है, ज्ञायकशरीरद्रव्यासंख्यात, भव्यद्रव्या-संख्यात, और ज्ञायकशरीर तथा भव्य इन दोनोंसे भिन्न तद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात। असंख्यात-विषयक शास्त्रको जाननेवालेके भावी, वर्तमान और अतीतरूपसे तीन भेदको प्राप्त हुए शरीरको ज्ञायकशरीरद्रव्यासंख्यात कहते हैं ।

शंका—आगमसे भिन्न शरीरको असंख्यात, यह संज्ञा कैसे दी जा सकती है ?

आधारे आधेयोवयारदंसणादो। जहा असिसदं धावदि इदि। एत्थ ण घदकुंभदिट्ठंतो जुज्जदे, कुंभस्स घदववएसादंसणादो। घदमिदं चिट्ठदि त्ति वट्टमाणकाले घदववएसो कुंभस्स उवलब्भदे ? चे ण, अदीदाणागदकालेसु कुंभस्स घदववएसदंसणादो। जं तं भवियासंखेज्जयं तं भविस्सकाले असंखेज्जपाहुडजाणुगजीवो। ण च एस आगमदो दव्वासंखेज्जयम्हि णिवददि, संपहि एत्थ खवोवसमलक्खणदव्वोव-ओगाभावादो। जं तं तव्वदिरित्तदव्वासंखेज्जयं तं दुविहं, कम्मासंखेज्जयं णोकम्मा-संखेज्जयं चेदि। तत्थ अट्ठ कम्माणि ट्ठिदिं पडुच्च कम्मासंखेज्जयं। दीवसमुद्दादि णोकम्मासंखेज्जयं। धम्मत्थियं अधम्मत्थियं दव्वपदेसगणणं पडुच्च एगसरूवेण अवट्ठिदमिदि कट्टु सस्सदासंखेज्जयं। जं तं गणणासंखेज्जय तं परियम्मे वुत्तं। जं तं अपदेसासंखेज्जयं तं जोगविभागे पलिच्छेदे पडुच्च एगो जीवपदेसो। अधवा सुण्णोयं भंगो, असंखेज्ज-

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आधारमें आधेयका उपचार देखा जाता है। जैसे, सौ तरवारें (सौ तरवारवाले) दौड़ती हैं। तात्पर्य यह है कि सौ तरवारोंके आधारभूत पुरुषोंमें आधेयभूत तरवारोंका उपचार करके जैसे सौ तरवारें दौड़ती हैं यह कहा गया है उसीप्रकार प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये।

प्रकृतमें घृतकुम्भका दृष्टान्त लागू नहीं होता है, क्योंकि, कुम्भकी घृत संज्ञा व्यवहारमें नहीं देखी जाती है।

शंका—यह घृत रक्खा है, इसप्रकार वर्तमानकालमें कुम्भकी घृत संज्ञा पायी जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अतीत और अनागत कालमें कुम्भकी घृत यह संज्ञा देखी जाती है।

जो जीव भविष्यकालमें असंख्यातविषयक प्राभृतका जाननेवाला होगा उसे भावि-द्रव्यासंख्यात कहते हैं। इसका आगमद्रव्यासंख्यातमें अन्तर्भाव नहीं हो सकता है, क्योंकि, वर्तमानमें इसमें (भाविद्रव्यासंख्यातमें) क्षयोपशमलक्षण द्रव्य उपयोगका अभाव है।

तद्व्यतिरिक्त द्रव्यासंख्यात दो प्रकारका है, कर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात और नोकर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात। उनमें आठों कर्म स्थितिकी अपेक्षा कर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्या-संख्यात हैं। अर्थात् आठों कर्मोंकी जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति असंख्यात समय पड़ती है, इसलिये वे स्थितिकी अपेक्षा असंख्यातरूप हैं। द्वीप और समुद्रादि नोकर्मतद्व्यतिरिक्त-द्रव्यासंख्यात हैं।

धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय द्रव्यरूप प्रदेशोंकी गणनाके प्रति सर्वदा एकरूपसे अवस्थित हैं, इसलिये वे दोनों द्रव्य शाश्वतासंख्यात हैं। गणनासंख्यातका स्वरूप परिकर्ममें कहा गया है। योगविभागमें जो अविभागप्रतिच्छेद बतलाये हैं, उनकी अपेक्षा जीवका एक प्रदेश अप्रदेशासंख्यात है। अथवा, असंख्यातमें उसका यह भेद शून्यरूप है, क्योंकि, असंख्यात पर्यायोंके आधारभूत अप्रदेशी एक द्रव्यका अभाव है। कुछ आत्माका एक प्रदेश

पज्जायाणमाहारभूद-अप्पएसएगदव्वाभावादो। ण च एगो जीवपदेसो दव्वं, तस्स जीवदव्वावयवत्तादो। पज्जवणए पुण अवलंबिज्जमाणे जीवस्स एगपदेसो वि दव्वं तत्तो वदिरित्तसमुदायाभावादो। जं तं एयासंखेज्जयं तं लोयायासस्स एगदिसा। कुदो? सेढि-आगारेण लोयस्स एगदिसं पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखातीदादो। जं तं उभया-संखेज्जयं तं लोयायासस्स उभयदिसाओ, ताओ पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखा-भावादो। जं तं सव्वासंखेज्जयं तं घणलोगो। कुदो? घणागारेण लोगं पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखाभावादो। जं तं वित्थारासंखेज्जयं तं लोगागासपदरं, लोग-पदरागारपदेसगणणं पडुच्च संखाभावादो। जं तं भावासंखेज्जयं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य। आगमदो भावासंखेज्जयं असंखेज्जपाहुडजाणगो उवजुत्तो। णोआगमदो भावासंखेज्जयं ओहिणाणपरिणदो जीवो। एदेसु असंखेज्जेसु गणणासंखेज्जेण पयदं। जदि गणणासंखेज्जेण पयदं तो सेसदसविह-असंखेज्जपरूवणं किमट्ठं कीरदे? अपगदमवणिय पयदपरूवणट्ठं। वुत्तं च—

द्रव्य तो हो नहीं सकता है, क्योंकि, एक प्रदेश जीवद्रव्यका अवयव है। पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर जीवका एक प्रदेश भी द्रव्य है, क्योंकि, अवयवोंसे भिन्न समुदाय नहीं पाया जाता है।

लोकाकाशकी एक दिशा अर्थात् एक दिशास्थित प्रदेशपंक्ति एकासंख्यात है, क्योंकि, आकाश प्रदेशोंकी श्रेणीरूपसे लोकाकाशकी एक दिशा देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा उसकी गणना नहीं हो सकती है। लोकाकाशकी उभय दिशाएं अर्थात् दो दिशाओंमें स्थित प्रदेशपंक्ति उभयासंख्यात है, क्योंकि, लोकाकाशके दो ओर देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संख्यातीत हैं। घनलोक सर्वासंख्यात है, क्योंकि, घनरूपसे लोकके देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संख्यातीत हैं। प्रतररूप लोकाकाश विस्तारासंख्यात है, क्योंकि, प्रतररूप लोकाकाशके प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संख्यातीत हैं।

भावासंख्यात आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है। असंख्यातविषयक प्राभृतको जाननेवाले और वर्तमानमें उसके उपयोगसे युक्त जीवको आगमभावासंख्यात कहते हैं। अवधिज्ञानसे परिणत जीवको नोआगमभावासंख्यात कहते हैं। इन ग्यारह प्रकारके असंख्यातोंमेंसे प्रकृतमें गणनासंख्यातसे प्रयोजन है।

शंका — यदि प्रकृतमें गणनासंख्यातसे ही प्रयोजन है तो शेष दश प्रकारके असंख्या-तोंका वर्णन क्यों किया गया?

समाधान—अप्रकृत विषयका निवारण करके प्रकृत विषयका प्ररूपण करनेके लिये, यहां सभी असंख्यातोंका वर्णन किया है। कहा भी है—

अपगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च ।

ससयविणासणट्ठं तच्चट्ठवहारणट्ठं च ॥ ५९ ॥

वुत्तं च पुव्वाइरिएहि—

जत्थ जहा जाणेज्जो अवरिमिदं तत्थ णिक्खिवे णियमा ।

जत्थ बहुवं ण जाणदि चउट्ठवो तत्थ णिक्खेवो ॥ ६० ॥ इदि ।

अधवा णिक्खेवविसिट्ठमेदं भणिज्जमाणं वत्तारस्सुप्पत्थोत्थाणं कुज्जा इदि णिक्खेवो कीरदे । तथा चोक्तम्—

प्रमाणनयनिक्षेपैर्योऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते ।

युक्तं चायुक्तवद्भाति तस्यायुक्तं च युक्तवत् ॥ ६१ ॥

जं तं गणणासंखेज्जयं तं तिविहं, परित्तासंखेज्जयं जुत्तासंखेज्जयं असंखेज्जासंखेज्जयं चेदि वियप्पदो एक्केक्कं तिविहं[१] । तत्थ इमं होदि त्ति णिच्छओ उप्पाइज्जदे ।

अप्रकृत विषयका निवारण करनेके लिये, प्रकृत विषयका प्ररूपण करनेके लिये, संशयका विनाश करनेके लिये और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये यहां सभी असंख्यातोंका कथन किया है ॥ ५९ ॥

पूर्वाचार्योंने भी कहा है—

जहां पदार्थोंके विषयमें यथावस्थित जाने वहां पर नियमसे अपरिमित निक्षेप करना चाहिये । पर जहां पर बहुत न जाने वहां पर चार निक्षेप अवश्य करना चाहिये ॥ ६० ॥

अथवा, निक्षेपके विना वर्ण्यमान विषय कदाचित् वक्ताको उत्पथमें ले जाये, इसलिये सभीका निक्षेप किया है । उसीप्रकार कहा भी है—

प्रमाण, नय और निक्षेपके द्वारा जिसका सूक्ष्म विचार नहीं किया जाता है वह युक्त होते हुए भी कभी अयुक्तसा प्रतीत होता है और अयुक्त होते हुए भी कभी युक्तसा प्रतीत होता है ॥ ६१ ॥

गणनासंख्यात तीन प्रकारका है, परीतासंख्यात, युक्तासंख्यात और असंख्याता-संख्यात । ये तीनों भी प्रत्येक उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्यके भेदसे तीन तीन प्रकारके हैं । उक्त तीनों असंख्यातोंमेंसे प्रकृतमें यह असंख्यात लिया है, आगे इसीका निश्चय कराते हैं—

१ जं तं असंखेज्जयं तं तिविधं, परित्तासंखेज्जयं जुत्तासंखेज्जयमसंखासंखेज्जयं चेदि । जं तं परित्तासंखेज्जयं तं तिविधं, जहण्णपरित्तासंखेज्जयं अजहण्णमणुक्कस्सपरित्तासंखेज्जयं उक्कस्सपरित्तासंखेज्जयं चेदि । जं तं जुत्तासंखेज्जयं तं तिविधं, जहण्णजुत्तासंखेज्जयं अजहण्णमणुक्कस्सजुत्तासंखेज्जयं उक्कस्सजुत्तासंखेज्जयं चेदि । जं तं असंखेज्जासंखेज्जयं तं तिविधं जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जयं अजहण्णमणुक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जयं उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जयं चेदि । ति. प. पत्र. ५२ संखेज्जमसंखणंतमिदि तिविहं । सख तिल्लट्ठ तिविहं परित्तजुत्तं ति दुगवारं ॥ त्रि. सा. १३. सखिज्जेगमसंखं परित्तजुत्तनियपयजुयं तिविह । क. ग्रं. ४, ७१.

परित्तासंखेज्जयं ण भवदि, जुत्तासंखेज्जयं पि ण भवदि, असंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं, असंखेज्जा इदि बहुवयणणिद्देसादो। पाइए दोसु वि बहुवयणोवलंभादो वत्तिमुहेण सव्वेसु असंखेज्जबहुत्तविरोहाभावादो वा अणेयंतिओ हेदुरिदि चेत्तारिहि 'असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण' इत्ति पुरदो भण्णमाणसुत्तादो असंखेज्जासंखेज्जस्स उवलद्धी हवदि। तं पि तिविहं जहण्णमुक्कस्सं अजहण्णमुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जयं चेदि। तत्थ वि जहण्णमसंखेज्जासंखेज्जयं ण भवदि उक्कस्समसंखेज्जासंखेज्जयं पि ण भवदि अजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं। कुदो? 'जम्हि जम्हि असंखेज्जासंखेज्जयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्स-असंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं भवदि' इदि परियम्मवयणादो।

तं पि अजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जयमसंखेज्जवियप्पमिदि इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदे? जहण्ण-असंखेज्जासंखेज्जादो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि

प्रकृतमें परीतासंख्यात विवक्षित नहीं है और युक्तासंख्यात भी नहीं लिया गया है, अतः यहां असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, सूत्रमें 'असंखेज्जा' इसप्रकार बहुवचनरूप निर्देश किया है।

शंका—प्राकृतमें द्विवचनके स्थानमें भी बहुवचन पाया जाता है; अथवा, वृत्तिमुखसे सभी असंख्यातोंमें असंख्यातके बहुत्वके स्वीकार कर लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है, इसलिये प्रकृतमें असंख्यातासंख्यातके ग्रहण करनेके लिये जो 'असंखेज्जा' यह बहुवचनरूप हेतु दिया है वह अनैकान्तिक है।

समाधान—यदि ऐसा है तो 'असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण' इसप्रकार आगे कहे जानेवाले सूत्रसे असंख्यातासंख्यातका ग्रहण हो जाता है।

वह असंख्यातासंख्यात भी तीन प्रकारका है, जघन्य, उत्कृष्ट और अजघन्योत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात। इन तीनोंमें भी प्रकृतमें जघन्य असंख्यातासंख्यात नहीं है और उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात भी नहीं है, किंतु प्रकृतमें अजघन्यानुत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण है, क्योंकि, 'जहां जहां असंख्यातासंख्यात देखा जाता है वहां वहां अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण होता है,' ऐसा परिकर्मका वचन है।

शंका—वह मध्यम असंख्यातासंख्यात भी असंख्यात विकल्परूप है, इसलिये यहां यह भेद लिया है, यह नहीं जाना जाता है?

समाधान—जघन्य असंख्यातासंख्यातसे पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र वर्गस्थान ऊपर जाकर और जघन्य परीतानन्तसे असंख्यात लोकमात्र वर्गस्थान नीचे आकर दोनोंके

१ ति. प. पत्र ५२

वग्गट्ठाणाणि उवरि अब्भुस्सरिदूण जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जलोगमेत्तवग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण दोण्हमंतरे जिणदिट्ठभावरासी घेत्तव्वो। अधवा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो असंखेज्जगुणो छदव्वपक्खित्तरासीदो असंखेज्जगुणहीणो। को तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी को वा छदव्वपक्खित्तरासि त्ति वुत्ते वुच्चदे– जहण्णमसंखेज्जासंखेज्जं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स जहण्णमसंखेज्जासंखेज्जयं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय पुणो उप्पण्णरासिं दुप्पडिरासिं करिय एगरासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थं करिय पुणो उप्पण्णरासिं दुप्पडिरासिं करिय एगरासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थे कदे तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी हवदि[1]। एसा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो ? जेणेदस्स वग्गसलागाणं वग्गसलागाओ जहण्णपरित्तासंखेज्जस्स उवरिमवग्गमपावेऊणुप्पण्णाओ पलिदोवमवग्गसलागाणं पुण वग्ग-

मध्यमें जिनेन्द्रदेवने जो राशि देखी है उसका यहां ग्रहण करना चाहिये। अथवा, तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिसे असंख्यातगुणी और छह द्रव्यप्रक्षिप्त राशिसे असंख्यातगुणी हीन राशि प्रकृतमें लेना चाहिये।

शंका — तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि कौनसी है और छह द्रव्यप्रक्षिप्त राशि कौनसी है ? इसप्रकार पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं—

समाधान – जघन्य असंख्यातासंख्यातका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जघन्य असंख्यातासंख्यातको देयरूपसे दे कर उनका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पंक्तियां करनी चाहिये। उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थित महाराशिको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करनेसे जो महाराशि उत्पन्न हो, उसकी फिरसे दो पंक्तिया करनी चाहिये। उनमेंसे एकका विरलन करके और उस विरलित राशिके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थित उत्पन्न हुई महाराशिको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करने पर तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि उत्पन्न होती है। (पृष्ठ २३ पर तीनवार वर्गितसंवर्गितराशिका बीजगणितसे उदाहरण दिया है उसीप्रकार यहां समझना चाहिये।)

यह तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि पल्योपमके असंख्यातवें भाग है, क्योंकि, इसकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाएं जघन्य परीतासंख्यातके उपरिम वर्गको नहीं प्राप्त होकर,

१ ति. प. पत्र ५२. त्रि सा ३८-४१. बितिचउपचमगुणणे कमा सगासख पढमचउसत्ता। णंता ते रूवजुआ मज्झा रूवूण गुरु पच्छा ॥ इअ सुत्तुत्त अन्ने वग्गिअमिक्कसि चउत्थयमसंख। होइ असखासख लहु रूवजुअ तु त मज्झं ॥ रूवूणमाइम गुरु तिवग्गिउ तत्थिमे दसक्खेवे ॥ क. ग्र. ४, ७९-८१.

सलागाओ पदरावलियादो उवरि गंतूणुप्पण्णाओ, तम्हा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो णेरइयमिच्छाइट्ठिरासी असंखेज्जगुणो । को छदव्वपक्खित्तरासी ?

धम्माधम्मा लोयायासा पत्तेयसरीर-एगजीवपदेसा ।
बादरपदिट्ठिदा वि य छप्पेदेऽसंखपक्खेवा[1] ॥ ६२ ॥

एदाणि छ दव्वाणि पुव्वुत्तरासिम्हि पक्खित्ते छदव्वपक्खित्तरासी होदि । एवं विहाणेण भणिदअजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जयस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तो णेरइयमिच्छाइट्ठिरासी होदि । एवं दव्वपमाणं समत्तं ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण[2] ॥ १६ ॥

किमट्ठं मिच्छाइट्ठिरासी कालेण परूविज्जदे ? ण, असंखेज्जरासी सव्वा णिट्ठदि

अर्थात् जघन्य परीतासंख्यातके ऊपर और उसके उपरिम वर्गके नीचे उत्पन्न हुई हैं और पल्योपमकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाएं प्रतरावलीके ऊपर जाकर उत्पन्न हुई हैं । इससे प्रतीत होता है कि तीनवार वर्गितसंवर्गित असंख्यातासंख्यात राशिसे नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि असंख्यातगुणी है ।

शंका—छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि कौनसी है ?

समाधान—धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, लोकाकाश, अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति, एक जीवके प्रदेश और बादर प्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति ये छह असंख्यात राशियां तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिमें मिला देना चाहिये ॥ ६२ ॥

इन छह राशियोंको पूर्वोक्त राशिमें प्रक्षिप्त करने पर छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि होती है ।

इस विधिसे कहे गये मध्यम असंख्यातासंख्यातका जितना प्रमाण हो उतनी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि है ।

इसप्रकार द्रव्यप्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

कालकी अपेक्षा नारक मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत हो जाते हैं ॥ १६ ॥

शंका—नारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका कालकी अपेक्षा किसलिये प्ररूपण किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, संपूर्ण असंख्यात जीवराशि समाप्त हो जाती है, इस

---

१ धम्माधम्मा लोगागासा एगजीवपदेसा चत्तारि वि लोगागासमेत्ता पत्तेगसरीरबादरपदिट्ठिय एदे । ति. प. ५२. धम्माधम्मिगिजीवगलोगागासप्पदेसपत्तेया । तत्तो असखगुणिदा पदिट्ठिदा छप्पि रासीओ ॥ त्रि सा. ४२.

२ असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ । अनु. सू. १४२. पृ. १८४.

त्ति पण्णवणट्ठत्तादो। किमट्ठं खेत्तपमाणमइक्कम्म कालपमाणं वुच्चदे? ण एस दोसो, 'जदप्पवण्णणीयं तं पुव्वमेव भाणियव्वं' इदि वयणादो। कधं कालादो खेत्तं बहुवण्णणिज्जं? ण, तम्हि सेढि-जगपदर-विक्खंभसूचिपरूवणाणमत्थित्तादो। के वि आइरिया जं बहुवं तं सुहुममिदि भणंति—

सुहुमो य हवदि कालो तत्तो सुहुमं खु जायदे खेत्तं।
अंगुल-असंखभागे हवंति कप्पा असंखेज्जा ॥ ६३ ॥

एदं ण घडदे। कुदो? दव्वादो थूलं खेत्तं छंडिय दव्वस्स परूवणाण्णहाणुववत्तीदो। कधं दव्वादो खेत्तं थूलं? वुच्चदे—

सुहुमं तु हवदि खेत्तं तत्तो सुहुमं खु जायदे दव्वं।
दव्वंगुलम्हि एक्के हवंति खेत्तंगुलाणंता ॥ ६४ ॥

दव्व-खेत्तंगुले परमाणुपदेसा आगासपदेसा च सरिसा त्ति णेदं घडदे? चे ण,

वातका ज्ञान कराना कालकी अपेक्षा प्ररूपण करनेका प्रयोजन है।

शंका—क्षेत्रप्रमाणका उल्लंघन करके पहले कालप्रमाणका प्ररूपण किसलिये किया जा रहा है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, 'जो अल्पवर्णनीय होता है उसका पहले वर्णन करना चाहिये' इस वचनके अनुसार पहले कालप्रमाणका प्ररूपण किया है।

शंका—कालसे क्षेत्र बहुवर्णनीय कैसे है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, क्षेत्रमें जगश्रेणी, जगप्रतर और विष्कम्भसूचीकी प्ररूपणा पाई जाती है, इसलिये कालसे क्षेत्र बहुवर्णनीय है।

कितने ही आचार्य ऐसा कहते हैं कि जो बहुत अर्थात् बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है। यथा—

काल सूक्ष्म होता है और क्षेत्र उससे भी सूक्ष्म होता है, क्योंकि, एक अंगुलके असंख्यातवें भागमें असंख्यात कल्पकाल आ जाते हैं। अर्थात् एक अंगुलके असंख्यातवें भागके जितने प्रदेश होते हैं असंख्यात कल्पकालके उतने समय होते हैं ॥ ६३ ॥

परंतु उन आचार्योंका यह व्याख्यान घटित नहीं होता है, क्योंकि, द्रव्यसे क्षेत्र स्थूल है, इस बातको छोड़कर ही पहले द्रव्यप्रमाणकी प्ररूपणा बन सकती है, अन्यथा क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपणके पहले द्रव्यप्रमाणकी प्ररूपणा नहीं बन सकती है।

शंका—द्रव्यसे क्षेत्र स्थूल कैसे है?

समाधान—क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्म द्रव्य होता है, क्योंकि, एक द्रव्यांगुलमें (गणनाकी अपेक्षा) अनन्त क्षेत्रांगुल पाये जाते हैं ॥ ६४ ॥

शंका—एक द्रव्यांगुल और एक क्षेत्रांगुलमें परमाणुप्रदेश और आकाश-प्रदेश समान होते हैं, इसलिये पूर्वोक्त व्याख्यान घटित नहीं होता है?

एकम्हि खेत्तंगुले ओगाहे अणंतदव्वंगुलदंसणादो। असंखेज्जासंखेज्जाणं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणं समए सलागभूदे ठवेऊण णेरइयमिच्छाइट्ठिरासी च ठवेऊण सलागादो एगो समओ अवहिरिज्जदि, णेरइयमिच्छाइट्ठिरासीदो एगो जीवो अवहिरिज्जदि। एवं पुणो पुणो अवहिरिज्जमाणे सलागरासी णेरइयमिच्छाइट्ठी च जुगवं णिट्ठंति। अधवा ओस-प्पिणि-उस्सप्पिणीओ दो वि मिलिदाओ कप्पो हवदि, तेण कप्पेण णेरइयमिच्छाइट्ठि-रासिम्हि भागे हिदे जं भागलद्धं तत्तियमेत्ता कप्पा हवंति। एवं कालपमाणं समत्तं।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेढीओ जगपदरस्स असंखेज्जदिभाग-मेत्ताओ। तासिं सेढीणं विक्खंभसूची[1] अंगुलवग्गमूलं विदियवग्ग-मूलगुणिदेण[2] ॥ १७ ॥

समाधान— नहीं, क्योंकि, एक क्षेत्रांगुलमें अवगाहनाकी अपेक्षा अनन्त द्रव्यांगुल देखे जाते हैं।

असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके समय शलाकारूपसे एक ओर स्थापित करके और दूसरी ओर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिको स्थापित करके शलाका राशिमेंसे एक समय कम करना चाहिये और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमेंसे एक जीव कम करना चाहिये। इसप्रकार शलाकाराशि और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमेंसे पुनः पुनः एक एक कम करने पर शलाकाराशि और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि युगपत् समाप्त हो जाती हैं।

अथवा, अपसर्पिणी और उत्सर्पिणी ये दोनो मिलकर एक कल्पकाल होता है। उस कल्पका नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उतने कल्पकाल नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी गणनामें पाये जाते हैं।

इसप्रकार कालप्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। उन जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको उसीके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करने पर जितना लब्ध आवे, उतनी है ॥ १७ ॥

विशेषार्थ— खुद्दाबन्धमें सामान्य नारकियोंके प्रमाण लानेके लिये विष्कंभसूचीका

१ सूचि. एकप्रदेशिका पंक्तिः। पञ्चस. २, १४ स्वो. टी.

२ सामण्णा णेरइया घणअगुलविदियमूलगुणसेढी। गो, जी. १४२. खेत्तओ असखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखिज्जइभागो तासि णं सेढीण विक्खमसूई अगुलपढमवग्गमूल बिइअवग्गमूलपडुप्पण्ण। अहव ण अंगुलबिइअवग्ग-मूलघणपमाणमेत्ताओ सेढीओ। अनु. सू. १४२. पृ. १८४. एत्थ (खुद्दाबधे) सामण्णणेरइयाण वुत्तविक्खमसूची

संखेज्जाणंताणं णिवारणट्ठमसंखेज्जवयणं। असंखेज्जाओ सेढीओ इदि सामण्ण-वयणेण सव्वागाससेढीए गहणं किण्ण पावदे ? ण, तस्स–

पल्लो सायर-सूई पदरो य घणगुलो य जगसेढी।
लोगपदरो य लोगो अट्ठ दु माणा मुणेयव्वा ॥ ६५ ॥

इदि पमाणट्ठगब्भंतरे अप्पिदत्तादो। ण च पमाणे परूविज्जमाणे अप्पमाणस्स पवेसो अत्थि, अइप्पसंगादो। अथवा 'मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण असंखेज्जा' इदि पुव्विल्लवयणादो जाणिज्जदे जहा अणंताए सव्वागाससेढीए गहणं णत्थि त्ति। जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो इदि किमट्ठं ? ण, जगपदरस्स संखेज्जदिभागप्पहुडि उवरिमसव्वसंखा-

प्रमाण पूर्वोक्त ही बतलाया है। अब यदि सामान्य नारकियोंकी और मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूची एक मान ली जाती है तो नरकमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका अभाव प्राप्त हो जाता है जो संगत नहीं है। अतएव यहां पर मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी जो विष्कंभसूची बतलाई है, वह सामान्य कथन है। विशेषरूपसे विचार करने पर सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा कर देने पर जो नारक सामान्य विष्कंभसूची आवे उसे किंचित् न्यून कर देने पर मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूची होती है।

संख्यात और अनन्तके निवारण करनेके लिये सूत्रमें 'असंख्यात' यह वचन दिया है।

शंका—सूत्रमें 'असंख्यात जगश्रेणियां' ऐसा सामान्य वचन दिया है, इसलिये उससे संपूर्ण आकाश-श्रेणियोंका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त होता जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वह श्रेणीप्रमाण—

पल्य, सागर, सूच्यंगुल, प्रतरांगुल, घनांगुल, जगश्रेणी, लोकप्रतर और लोक, इसप्रकार ये आठ उपमाप्रमाण जानना चाहिये ॥ ६५ ॥

इसप्रकार इन आठ प्रमाणोंके भीतर आ जाता है। और जिसका प्रमाणके भीतर प्ररूपण किया गया है उसमें अप्रमाणका प्रवेश नहीं हो सकता है, अन्यथा अतिप्रसंग दोष आ जायगा।

अथवा, 'नारक मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात हैं' इस पूर्वोक्त वचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें संपूर्ण आकाशकी अनन्त जगश्रेणियोंका ग्रहण नहीं है।

शंका—सूत्रमें 'जगप्रतरका असंख्यातवें भागप्रमाण' यह वचन किसलिये दिया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जगप्रतरके संख्यातवें भागको आदि लेकर उपरिम

चेव णेरइयमिच्छाइट्ठीण जीवट्ठाणे परूविदा, कध तेणेदं ण विरुज्झदे ? आलावभेदाभावादो। अत्थदो पुण भेदो अत्थि चेव, सामण्णविसेसविक्खंभसूचीण समाणत्तविरोहादो। ×× तम्हा एत्थतणविक्खंभसूची पुण किंचूणघणगुल-विदियवग्गमूलमेत्ता त्ति घेत्तव्वं। धवला (खुद्दाबंध) पत्र ५१८., अ.

१ प्रतिषु 'दुवूणा' इति पाठः।

२ पल्लो सायर सूई पदरो य घणगुलो य जगसेढी। लोयपदरो य लोगो उवमपमा एवमट्ठविहा ॥ त्रि. सा. ९२.

पडिसेहफलत्तादो। किमट्ठं विक्खंभसूई परूविज्जदे ? ण, पदरस्स असंखेज्जदिभागो इदि सामण्णेण वुत्ते तस्स पमाणं किं संखेज्जा सेढीओ भवदि, किमसंखेज्जा सेढीओ भवदि इदि जादसंदेहस्स सिस्सस्स णिच्छयजणणट्ठं सेढीणं विक्खंभसूईए पमाणं वुत्तं।

दव्व-खेत्त-कालपमाणाणं सव्वेसिं विक्खंभसूईदो चेव णिच्छओ होदि त्ति काऊण ताव विक्खंभसूईपमाणपरूवणं कस्सामो। अंगुलवग्गमूले विक्खंभसूई हवदि। तं किं भूदमिदि वुत्ते विदियवग्गमूलगुणणेण उवलक्खियं। तं कधं जाणिज्जदे ? इत्थंभावलक्खणतइयाणिद्देसादो[1]। जहा जो जडाहि सो भुंजदि[2] त्ति। अंगुलवग्गमूलमिदि वुत्ते

संपूर्ण संख्याका प्रतिषेध करना सूत्रमें दिये गये उक्त वचनका फल है।

शंका — यहां पर विष्कंभसूचीका प्ररूपण किसलिये किया गया है?

समाधान — नहीं, क्योंकि, 'प्रतरका असंख्यातवां भाग' ऐसा सामान्यरूपसे कहने पर उसका प्रमाण क्या संख्यात जगश्रेणियां है, अथवा असंख्यात जगश्रेणियां है, इसप्रकार जिस शिष्यको संदेह हो गया है उसको निश्चय करानेके लिये जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूचीका प्रमाण कहा है।

विष्कंभसूचीके कथनसे ही द्रव्यप्रमाण, क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाण, इन सबका निश्चय हो जाता है, ऐसा समझकर पहले विष्कंभसूचीके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं—

सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलमें, अर्थात् सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका आश्रय लेकर, विष्कंभसूची होती है। वह सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल किसरूप है, ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलके गुणासे उपलक्षित है। अर्थात् सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको उसीके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित कर देने पर सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची होती है।

उदाहरण—सूच्यंगुल $२ \times २^{\frac{१}{३}}$; विष्कंभसूची २, सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल $२^{\frac{२}{३}}$; सूच्यंगुलका द्वितीय वर्गमूल $२^{\frac{१}{३}}$; $२^{\frac{२}{३}} \times २^{\frac{१}{३}} = २$ विष्कंभसूची।

शंका—यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—'विदियवग्गमूलगुणिदेण' सूत्रके इस पदमें आये हुए इत्थंभावलक्षण तृतीया विभक्तिके निर्देशसे यह जाना जाता है कि यहां पर सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे

१ गुणिदेणेत्ति णेद तदियाए एगवयण किं तु सत्तमीए एगवयणेण पढमाए वयणेण वा होदव्वमण्णहा सुत्तट्ठमवधाभावादो। धवला (खुद्दाबंध) पत्र ५१८. अ.

२ इत्थंभूतलक्षणे। २।३।२१ पाणिनि। कंचित्प्रकार प्राप्तस्य लक्षणे तृतीया स्यात्। जटाभिस्तापसः। जटाज्ञाप्यतापसत्वविशिष्ट इत्यर्थ। वृत्ति.।

पदरंगुलस्स घणंगुलस्स वा वग्गमूलस्स गहणं कधं ण पावदे ? ण, 'अट्ठरूवं वग्गिज्जमाणे वग्गिज्जमाणे असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि गंतूण सोहम्मीसाणविक्खंभसूई उप्पज्जदि। सा सई वग्गिदा णेरइयविक्खंभसूई हवदि। सा सई वग्गिदा भवणवासियविक्खंभसूई हवदि। सा सई वग्गिदा घणंगुलो हवदि' त्ति परियम्मवयणादो णव्वदे घण-पदरंगुलाणं वग्गमूलस्स गहणं ण हवदि किंतु सूचिअंगुलवग्गमूलस्सेव गहणं होदि त्ति, अण्णहा घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अणुप्पत्तीदो। संपहि सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं भागहारं

गुणित प्रथम वर्गमूल लिया है। जैसे, 'जो जटाओंसे युक्त है वह तपस्वी भोजन करता है।' यहां पर इत्थंभावलक्षण तृतीया निर्देश होनेसे जटाओंवाला यह अर्थ निकल आता है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये।

शंका—'अंगुलका वर्गमूल' ऐसा सामान्य कथन करने पर उससे प्रतरांगुलके वर्गमूल अथवा घनांगुलके वर्गमूलका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'आठका उत्तरोत्तर वर्ग करते हुए असंख्यात वर्गस्थान जाकर सौधर्म और ऐशानसंबन्धी विष्कंभसूची प्राप्त होती है। उसका (सौधर्मद्विकसंबन्धी विष्कंभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर नारक सामान्यसंबन्धी विष्कंभसूची प्राप्त होती है। उसका (नारकसंबन्धी विष्कंभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर भवनवासी देवोंसंबन्धी विष्कंभसूची प्राप्त होती है। उसका (भवनवासिविष्कंभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर घनांगुल प्राप्त होता है'। इस परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें घनांगुल और प्रतरांगुलके वर्गमूलका ग्रहण नहीं किया है, किन्तु सूच्यंगुलके वर्गमूलका ही ग्रहण किया है। यदि ऐसा न माना जाय तो सामान्य नारक विष्कंभसूचीको जो घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण कहा है वह नहीं बन सकता है।

विशेषार्थ—ऊपर जो परिकर्मका उद्धरण दिया है उससे स्पष्ट पता लग जाता है कि सामान्य नारकविष्कंभसूची घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण है। अब यदि सूत्रमें अंगुल सामान्यका उल्लेख होनेसे उससे हम सूच्यंगुलका ग्रहण न करके प्रतरांगुल या घनांगुलका ग्रहण करें तो पूर्वोक्त सूत्रके अभिप्रायका परिकर्मके वचनके साथ विरोध आ जाता है, क्योंकि, उक्त सूत्रका अर्थ करते हुए, यदि हम घनांगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर सामान्य नारक विष्कंभसूचीका प्रमाण होता है, ऐसा अर्थ करते हैं तो परिकर्मके उक्त वचनके साथ विरोध है ही। अंगुलका अर्थ प्रतरांगुल करने पर भी यही आपत्ति आती है। हां, अंगुलका अर्थ सूच्यंगुल ले लिया जाता है तो कोई विरोध नहीं आता है, क्योंकि, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो प्रमाण आता है वह घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण ही होता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि सूत्रमें अंगुलसे सूच्यंगुलका ही ग्रहण करना चाहिये।

अब सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको भागहार करके और सूच्यंगुलको भाजक करके

काऊण सूचिअंगुलं विहज्जमाणमिदि कट्टु विक्खंभसूचिपरूवणं वग्गट्ठाणे खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि वत्तइस्सामो । तत्थ खंडिदादिचउक्कं सुगमं । तस्स पमाणं केत्तियं ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुल-पढमवग्गमूलाणि । केण कारणेण ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे सूचि-अंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि । सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स दुभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे दोण्णि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । पुणो पढमवग्गमूलस्स तिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे तिण्णि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एवं पढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभाग-भूदसूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण सूचिअंगुले भागे हिदे

वर्गस्थानमें खंडित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति, और विकल्पके द्वारा विष्कंभसूचीका प्रतिपादन करते हैं । उनमें प्रारंभके खण्डित आदि चारका कथन सुगम है । (इन चारोंका सामान्य मिथ्यादृष्टि राशिके सम्बंधमें उदाहरण सहित कथन पृष्ठ ४१ और ४२ में किया है, उसीप्रकार यहां भी समझना चाहिये ।)

शंका — विष्कंभसूचीका प्रमाण कितना है ?

समाधान — सूच्यंगुलके असंख्यातवां भाग विष्कंभसूचीका प्रमाण है जो सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है ।

शंका — किस कारणसे सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण विष्कंभसूची होती है ?

समाधान — सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका सूच्यंगुलमें भाग देने पर सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल आता है $\left(\frac{२ \times २^{\frac{१}{२}}}{२^{\frac{१}{२}}} = २^{\frac{१}{२}}\right)$ । सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके द्वितीय भागका सूच्यंगुलमें भाग देने पर सूच्यंगुलके दो प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं $\left(\frac{२ \times २^{\frac{१}{२}}}{\frac{२^{\frac{१}{२}}}{२}} = २ \times २^{\frac{१}{२}}\right)$ । पुनः सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके तीसरे भागका सूच्यंगुलमें भाग देने पर सूच्यंगुलके तीन प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं $\left(\frac{२ \times २^{\frac{१}{२}}}{\frac{२^{\frac{१}{२}}}{३}} = ३ \times २^{\frac{१}{२}}\right)$ । इसीप्रकार सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके असं-ख्यातवें भागरूप सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जो लब्ध

असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति त्ति ण संदेहो। कारणं गदं। णिरुत्तिं वत्तइस्सामो। अंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे भागलद्धम्हि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि घेत्तूण विक्खंभसूई हवदि। अधवा विदियवग्गमूलस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तिएहि पढमवग्गमूलेहि विक्खंभसूची होदि त्ति वत्तव्वं। णिरुत्ती गदा।

वियप्पो दुविहो हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि। तत्थ वेरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो। सूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण सूचिअंगुलपढमवग्गमूलमोवट्टिय लद्धेण पढमवग्गमूले गुणिदे विक्खंभसूई हवदि। अधवा विदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले गुणिदे

आवे उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं, इसमें संदेह नहीं है। इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण— $\frac{२^{\frac{२}{३}}}{२^{\frac{१}{३}}} = २^{\frac{१}{३}}$; $\frac{२ \times २^{\frac{१}{३}}}{२^{\frac{१}{३}}} = २$ सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण विष्कंभसूची।

अब निरुक्तिका कथन करते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर भागमें जितनी संख्या लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल ग्रहण करके विष्कंभसूची उत्पन्न होती है। अथवा, द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण है उतने प्रथम वर्गमूलोंसे (द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलोंको जोड़ देने पर) विष्कंभसूची होती है। इसप्रकार निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण— $२^{\frac{२}{३}} \times २^{\frac{१}{३}} = २$ द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलोंका जोड़, द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणाकर देने पर जितना होता है, उतना ही आता है।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प। उनमें पहले द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण होता है। अथवा, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण होता है।

उदाहरण— $\frac{२^{\frac{२}{३}}}{२^{\frac{१}{३}}} = २^{\frac{१}{३}}$; $२^{\frac{२}{३}} \times २^{\frac{१}{३}} = २$ वि. अथवा, $२^{\frac{२}{३}} \times २^{\frac{१}{३}} = २$ वि.

विक्खंभसूई हवदि । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । अंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? अंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । पुणो तमंगुलविदियवग्गमूलेण भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एत्थ विउणादिकरणं वत्तइस्सामो । अंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । विगुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदपढमवग्गमूलेण घणगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलस्स तिभागो आगच्छदि ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका प्रमाण आता है । पुनः उसे सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे भाजित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सूच्यंगुलका घन $\left(२^{\frac{४}{३}}\right)^{३} = २^{४}$, घनांगुलका प्रथम वर्गमूल $२^{२}$ ।

$$\frac{२^{२}}{२^{\frac{२}{३}} \times २^{\frac{१}{३}}} = २ \text{ विष्कंभसूची.}$$

अब यहां द्विगुणादिकरण विधिको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है $\left(\frac{२^{२}}{२^{\frac{२}{३}}} = २ \times २^{\frac{१}{३}}\right)$ । द्विगुणित सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका दूसरा भाग आता है $\left(\frac{२^{२}}{२ \times २^{\frac{२}{३}}} = \frac{२ \times २^{\frac{१}{३}}}{२}\right)$ । त्रिगुणित सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका तीसरा भाग आता है । $\left(\frac{२^{२}}{२^{\frac{२}{३}} \times ३} = \frac{२ \times २^{\frac{१}{३}}}{३}\right)$ ।

एदेण कमेण णेदव्वं जाव सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स गुणगारो विदियवग्गमूलमेत्तं पत्तो त्ति। पुणो तेण सूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण गुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे विदियवग्गमूलोवट्टियसूचिअंगुलो आगच्छदि। सो चेव विक्खंभसूची। घणाघणे वत्तइस्सामो। अंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणंगुलविदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणाघणविदियवग्गमूले भागे हिदे विक्खंभसूई आगच्छदि। केण कारणेण ? घणंगुलविदियवग्गमूलेण घणाघणंगुलविदियवग्गमूले भागे हिदे घणंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि। पुणो वि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि। पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। एवं हेट्ठिमवियप्पो समत्तो।

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि। तत्थ

इसप्रकार जबतक सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका गुणकार द्वितीय वर्गमूलके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये। पुनः उस सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे भाजित सूच्यंगुल आता है, और वही विष्कंभसूची है।

उदाहरण— $\frac{२^{२}}{२^{\frac{१}{२}} \times २^{\frac{२}{२}}} = \frac{२ \times २^{\frac{१}{२}}}{२^{\frac{१}{२}}} = २$ विष्कंभसूची.

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर घनांगुलका प्रथम वर्गमूल आता है। पुनः सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका घनांगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर सूच्यंगुल आता है। पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलका सूच्यंगुलमें भाग देने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है। इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया। इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ।

उदाहरण—सूच्यंगुलका घनाघन $(२^{४})^{३} = २^{१२}$, सूच्यंगुलके घनाघनका द्वितीय वर्गमूल $२^{\frac{१२}{४}} = २^{३}$; $\frac{२^{३}}{२^{\frac{२}{२}} \times २^{\frac{१}{२}} \times २} = २$ विष्कंभसूची.

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार। उनमें

गहिदं वत्तइस्सामो। विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विक्खंभसूची आगच्छदि। अथवा विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुलं गुणेऊण पदरंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि। केण कारणेण ? सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि। पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे विक्खंभसूची आगच्छदि। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेदव्वं। एत्थ

पहले गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलका सूच्यंगुलमें भाग देने पर विष्कंभसूची आती है।

उदाहरण—$\frac{२ \times २^{\frac{१}{३}}}{२^{\frac{१}{३}}} = २$ विष्कंभसूची.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कंभसूची आती है।

उदाहरण—$२^{क}$ के क अर्धच्छेद होते हैं। $२^{ख}$ के क अर्धच्छेद किये जायं तो अंतिम राशि $२^{ख-क}$ होगी। सूच्यंगुलके द्वितीय वगमूलमें क = $\frac{१}{३}$ है, और सूच्यंगुलमें ख = $\frac{४}{३}$ है, इसलिये $२ \times २^{\frac{१}{३}} = २^{\frac{४}{३}}$ के अर्धच्छेद $२^{\frac{१}{३}}$ के अर्धच्छेदोंके बराबर करने पर $२^{\frac{४}{३} - \frac{१}{३}} = २^{१}$ अर्थात् २ आ जाता है जो विष्कंभसूचीका प्रमाण है।

अथवा, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलमें भाग देने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, सूच्यंगुलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है। पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूची आती है। इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण—$\frac{\left(२ \times २^{\frac{१}{३}}\right)^{१}}{२ \times २^{\frac{१}{३}} \times २^{\frac{१}{३}}} = \frac{२^{\frac{८}{३}}}{२^{\frac{५}{३}}} = २$ विष्कंभसूची.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले

अद्धच्छेदणयमेत्तमेलावणविहाणं जाणिऊण वत्तव्वं। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। विदियवग्ग-मूलेण पदरंगुलं गुणेऊण तेण घणंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि। केण कारणेण? पदरंगुलेण घणंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि। पुणो वि विदियवग्ग-मूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विक्खंभसूची आगच्छदि। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। घणाघणे वत्तइस्सामो। विदियवग्गमूलेण पदरंगुलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणंगुल-उवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणाघणे भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि। केण

जाना चाहिये। यहां पर समस्त अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिको जानकर कथन करना चाहिये।

उदाहरण—$२^{\frac{५}{३}}$ के अर्धच्छेद $\frac{५}{३}$ होते हैं, अतः इतनीवार $२^{\frac{६}{३}}$ के अर्धच्छेद करने पर $२^{\frac{६}{३}-\frac{५}{३}} = २^१ = २$ प्रमाण विष्कंभसूची आ जाती है।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, प्रतरांगुलसे घनांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है। पुन सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है। इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण—$\frac{२^{(\frac{४}{३})^३}}{२^{\frac{८}{३}} \times २^{\frac{१}{३}}} = \frac{२^४}{२^३} = २$ विष्कंभसूची.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कंभसूचीका प्रमाण आ जाता है। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले जाना चाहिये।

उदाहरण—$२^३$ के अर्धच्छेद ३ होते हैं, अतः इतनीवार $२^४$ के अर्धच्छेद करने पर $२^{४-३} = २^१ = २$ प्रमाण विष्कंभसूची आ जाती है।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो गुणित राशि लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनांगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूचीका

कारणेण ? घण-उवरिमवग्गेण घणाघणे भागे हिदे घणंगुलो आगच्छदि। पुणो वि पदरंगुलेण घणंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि। पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विक्खंभसूची आगच्छदि। गहिदो गदो। सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण घणंगुल-पढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण [1]घणाघणविदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण च विक्खंभसूचिपमाणेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च पुव्वं व वत्तव्वो।

संपहि णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिस्स भागहारुप्पायणविहिं वत्तइस्सामो। सुत्ते अवुत्तो भागहारो कधमुप्पाइज्जदे? ण, सुत्तवुत्तविक्खंभसूईदो तदुप्पत्तिसिद्धीदो। तं जहा—

प्रमाण आता है, क्योंकि, घनांगुलके उपरिम वर्गसे घनाघनांगुलके भाजित करने पर घनांगुल आता है। पुनः प्रतरांगुलसे घनांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है। पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूची आती है। इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण— $\dfrac{(२^{४})^{३}}{२^{\frac{८}{३}} \times २^{\frac{१}{३}} \times २^{८}} = \dfrac{२^{१२}}{२^{१} \times २^{८}} = \dfrac{२^{१२}}{२^{११}} = २$ विष्कंभसूची.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है। इसप्रकार गृहीत उपरिम विकल्पका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण— $२^{११}$ के अर्धच्छेद ११ होते हैं; अत इतनीवार $२^{१२}$ के अर्धच्छेद करने पर $२^{१२-११} = २^{१} = २$ प्रमाण विष्कंभसूची आ जाती है।

सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण विष्कभसूचीसे, घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण विष्कंभसूचीसे और घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण विष्कंभसूचीसे गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन पहलेके समान करना चाहिये।

अब नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिके भागहारके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं—

शंका—भागहारका कथन सूत्रमें नहीं किया है, फिर यहां वह कैसे उत्पन्न किया जा रहा है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सूत्रोक्त विष्कंभसूचीसे उक्त भागहारकी उत्पत्ति बन जाती है। वह इसप्रकार है—

[1] प्रतिषु 'पुणो घण-' इति पाठः।

जगसेढीए जगपदरे भागे हिदे एगसेढी आगच्छदि। जगसेढीदुभागेण जगपदरे भागे हिदे दोण्णि सेढीओ आगच्छंति। जगसेढितिभागेण जगपदरे भागे हिदे तिण्णि सेढीओ आगच्छंति। एवमेगादि-एगुत्तरक्कमेण सेढीए भागहारो वड्ढावेयव्वो जाव णेरइयविक्खंभसूचिमेत्तं पत्तो त्ति। पुणो ताए विक्खंभसूचीए सेढिमोवट्टिय लद्धेण जगपदरे भागे हिदे विक्खंभसूचीमेत्तसेढीओ आगच्छंति। एवमण्णत्थ वि विक्खंभसूईदो अवहारकालो साधेयव्वो। एदेण भागहारेण सेढीए उवरि खंडिदादिवियप्पा वत्तव्वा। तत्थ ताव वग्गट्ठाणे पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि अवहारकालं वत्तइस्सामो। तस्स पमाणं केत्तियं? सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। पमाणं गदं। केण कारणेण? सेढिपढमवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे सेढिपढमवग्गमूलो आग-

जगश्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर एक जगश्रेणीका प्रमाण आता है (४२९४९६७२९६ ÷ ६५५३६ = ६५५३६)। जगश्रेणीके द्वितीय भागका जगप्रतरमें भाग देने पर दो जगश्रेणियां लब्ध आती हैं (४२९४९६७२९६ ÷ ३२७६८ = १३१०७२)। जगश्रेणीके तृतीय भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर तीन जगश्रेणियां आती हैं (४२९४९६७२९६ ÷ २१८४५$\frac{1}{3}$ = १९६६०८)। इसप्रकार भागहार बढ़ाते हुए जबतक वह नारक विष्कंभसूचीके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक उसे बढ़ाते जाना चाहिये। अनन्तर उस विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे जगप्रतरके भाजित करने पर जितना विष्कंभसूचीका प्रमाण है उतनी जगश्रेणियां लब्ध आती हैं। इसीप्रकार अन्यत्र भी विष्कंभसूचीसे अवहारकाल साध लेना चाहिये।

उदाहरण—जगश्रेणी ६५५३६, जगप्रतर ४२९४९६७२९६, ६५५३६ ÷ २ = ३२७६८;
४२९४९६७२९६ ÷ ३२७६८ = १३१०७२. नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि.

अब इस भागहारका आश्रय करके जगश्रेणीके ऊपर खण्डित आदि विकल्पका कथन करना चाहिये। उनमेंसे पहले वर्गस्थानमें प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्पके द्वारा अवहारकालका प्रमाण बतलाते हैं—

शंका—सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिके लानेके लिये जो भागहार कहा है उसका प्रमाण कितना है?

समाधान—उक्त भागहारका प्रमाण जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग है, जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—अवहारकाल ३२७६८; जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल २५६, ३२७६८ ÷ २५६ = १२८ (यहां १२८ को असंख्यात मान कर उतनेवार प्रथम वर्गमूल २५६ का जोड़ ३२७६८ होता है)

शंका—जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण अवहारकाल किस कारणसे है?

समाधान—क्योंकि, जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर

च्छदि। सेढिविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे विदियवग्गमूलस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। सेढितदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे सेढिविदिय-तदियवग्गमूलाणं अण्णोण्णभागे कदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। अणेण विहाणेण पलिदोवमवग्गसलागाणं असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति त्ति ण संदेहं कायव्वं। कारणं गदं। णिरुत्तिं वत्तइस्सामो। घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि। अधवा तेणेव भागहारेण सेढिविदियवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदेण तम्हि चेव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। अधवा तेणेव भागहारेण सेढितदियवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदेण तं चेव गुणेऊण तदो तेण विदियवग्गमूले गुणिदे तत्थ जत्तियाणि

जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल आता है (६५५३६ ÷ २५६ = २५६)। जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण होता है उतने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं (६५५३६ ÷ १६ = ४०९६ = १६ × २५६)। जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर, श्रेणीके द्वितीय और तृतीय वर्गमूलके परस्पर गुणा करने पर वहां जितनी संख्या उत्पन्न हो उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं (६५५३६ ÷ ४ = १६३८४ = १६ × ४ × २५६)। इसी विधिसे पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके असंख्यातवें भागमात्र वर्गस्थान नीचे जाकर घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं, इसमें संदेह नहीं करना चाहिये। इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल २; ६५५३६ ÷ २ = ३२७६८ अव.

अब निरुक्तिका कथन करते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं।

उदाहरण—२५६ ÷ २ = १२८ (इतने प्रथम वर्गमूल अवहारकालमें होते हैं)।

अथवा, उसी घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलरूप भागहारसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उससे उसी द्वितीय वर्गमूलके गुणित कर देने पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उतने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवहारकालमें लब्ध आते हैं।

उदाहरण—१६ ÷ २ = ८; १६ × ८ = १२८.

अथवा, उसी घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलरूप भागहारसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके

रूवाणि तत्तियाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । अणेण विहाणेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण घणंगुलविदियवग्गमूलेण तस्सुवरिमवग्गमवहारिय लद्धेण घणंगुलपढम-वग्गमूलं गुणिय तेण च गुणियरासिणा घणंगुलो गुणेयव्वो । एदेण कमेण उवरि उवरि अवट्ठिदवग्गट्ठाणाणि सेढिविदियवग्गमूलंताणि सव्वाणि गुणेयव्वाणि । तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि हवंति । एवं णिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, जगसेढिसमाणवेरूववग्गस्स पढमवग्गमूलं केण वि भागहारेण अवहिरिज्जंते अवहारकालस्स अणुप्पत्तीदो । ण च जगसेढिसमाणवेरूववग्गं अस्सिऊण अवहार-कालुप्पत्ती वोत्तुं सक्किज्जदे, हेट्ठिम-उवरिमवियप्पेसु णिरुद्धेसु मज्झिमवियप्पस्स असंभ-वादो । अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, विहज्जमाणसेढिपढमवग्गमूलादो अवहारकालस्स

तदनन्तर उस लब्धसे द्वितीय वर्गमूलके गुणित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उतने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवहारकालमें लब्ध आते हैं।

उदाहरण—४ ÷ २ = २; ४ × २ = ८; १६ × ८ = १२८.

इसी विधिसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे उसके उपरिम वर्गको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो गुणित राशि लब्ध आवे उससे घनांगुलको गुणित करना चाहिये। इसी क्रमसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूल पर्यन्त ऊपर ऊपर अवस्थित संपूर्ण वर्गस्थानोंको गुणित करना चाहिये। इसप्रकार गुणा करनेसे वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल सामान्य मिथ्या-दृष्टि नारक अवहारकालमें होते हैं। इसप्रकार निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—४ ÷ २ = २, ४ × २ = ८, १६ × ८ = १२८.

विशेषार्थ—यहां दृष्टांतके स्पष्ट करनेके लिये जो अंकसंदृष्टि ली है उसमें जगश्रेणीका द्वितीय वर्गमूल और घनांगुलका प्रमाण एक पड़ जाता है जो १६ है। अतः निरुक्तिका कथन करते हुए जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलतक ऊपर ऊपर वर्गस्थानोंका उत्तरोत्तर गुणा करते जाना चाहिये। इस कथनके अनुसार अंकसंदृष्टिमें वहीं तक (१६ तक) गुणा बढ़ानेसे वह संख्या लब्ध आ जाती है जितने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य मिथ्यादृष्टि नारक अवहार-कालमें पाये जाते हैं।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प। उनमेंसे यहां प्रकृतमें द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प संभव नहीं है, क्योंकि, जगश्रेणीके समान द्विरूप वर्गके प्रथम वर्गमूलको किसी भी भागहारसे अपहृत करने पर अवहारकाल नहीं उत्पन्न हो सकता है। यदि जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गका आश्रय करके अवहारकालकी उत्पत्ति कही जावे सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, विकल्पके अधस्तन और उपरिम विकल्पसे निरुद्ध हो जाने पर मध्यम विकल्प नहीं बन सकता है। यहां अष्टरूपमें भी अधस्तन विकल्प नहीं पाया जाता है,

बहुत्तुवलंभादो । अहवा अवहारकालागमणणिमित्तभागहारेण णिरुद्धरासीदो हेट्ठा जं वा तं वा वग्गमूलमोवट्टिय णिरुद्धरासिस्स हेट्ठिमवग्गमूलाणि एक्कवारं गुणिदे जत्थ इच्छिदरासी उप्पज्जदि तत्थ वि हेट्ठिमवियप्पो अत्थि त्ति भणंताणमभिप्पाएण अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदलद्धेण सेढिपढमवग्गमूले गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा तेणेव भागहारेण सेढिविदियवग्गमूलमवहारिय तत्थागदेण लद्धेण तं चेव विदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण पढमवग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढितदियवग्गमूलमवहरिय तत्थ लद्धेण तं चेव तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण विदियवग्गमूलं गुणिय तेण सेढिपढमवग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि । अणेण विहाणेण पलिदोवमवग्गसलागाणमसंखेज्जदिभागमेत्तवग्गट्ठाणाणं पुध णिरुंभणं करिय अवहारगुणणकिरियं काऊण अवहारकालो

क्योंकि, विभज्यमान राशि जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे अवहारकालका प्रमाण बहुत अधिक पाया जाता है । अथवा, अवहारकालके लानेके लिये निमित्तभूत भागहारसे निरुद्धराशि जगश्रेणीसे नीचे किसी भी वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे निरुद्धराशिके अधस्तन वर्गमूलोंको एकवार गुणित करने पर जहां पर इच्छित राशि उत्पन्न होती है वहां पर भी अधस्तन विकल्प पाया जाता है, इसप्रकार प्रतिपादन करनेवाले आचार्योंके अभिप्रायसे अष्टरूपमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—

घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके गुणित कर देने पर अवहारकालका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—२५६ ÷ २ = १२८; २५६ × १२८ = ३२७६८ अव.

अथवा, उसी भागहारसे अर्थात् घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करके वहां जो लब्ध आवे उससे उसी जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—१६ ÷ २ = ८, १६ × ८ = १२८, २५६ × १२८ = ३२७६८ अव.

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलको भाजित करके वहां जो लब्ध आवे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—४ ÷ २ = २, ४ × २ = ८; १६ × ८ = १२८; २५६ × १२८ = ३२७६८ अव.

इसी विधिसे पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके असंख्यातवें भागमात्र वर्गस्थानोंको पृथक्-रूपसे रोककर और घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण भागहारसे अंतिम आदि स्थानोंको

साधेयव्वो । तत्थ अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण घणंगुल-पढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदेण तं चेव घणंगुलपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणंगुलं गुणेऊण एवमुवरि उवरि अवट्ठिदाणि वग्गट्ठाणाणि सेढिपढमवग्गमूलपच्छिमाणि णिरंतरं गुणेयव्वाणि । एवं गुणिदे णेरइयमिच्छाइट्ठि-अवहारकालो होदि । एस अत्थो जदि वि पुव्वं परूविदो तो वि हेट्ठिमवियप्पसंबंधेण मंदबुद्धिसिस्साणुग्गहट्ठं पुणरवि परूविदो ।

घणाघणे वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिपढमवग्गमूलं गुणेऊण घणलोगपढमवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं कथं ? सेढिपढमवग्ग-मूलेण घणलोगपढमवग्गमूले भागे हिदे सेढी आगच्छदि । पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिं भागे हिदे अवहारकालो होदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अहवा एत्थ दुगुणादिकमेण अवहारकालो साहेयव्वो । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणलोगविदियवग्गमूलमवहारिय तं चेव गुणिदे अवहार-

---

भाजित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत गुणनक्रिया करके अवहारकाल साध लेना चाहिये । उनमेंसे अंतिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर वहां आये हुए लब्धसे उसी घनांगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो गुणित राशि आवे उससे घनांगुलको गुणित करके पुनः जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत ऊपर ऊपर स्थित वर्गस्थानोंको निरन्तर गुणित करना चाहिये। इसप्रकार पूर्व पूर्व गुणित राशिसे उत्तरोत्तर वर्गस्थानके गुणित करते जाने पर नारक मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण आता है। इस अर्थका प्ररूपण यद्यपि पहले कर आये हैं तो भी मन्दबुद्धि शिष्योंके अनुग्रहके लिये अधस्तन विकल्पके संबन्धसे इसका फिरसे प्ररूपण किया है।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जग-श्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे घन-लोकके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है। इसप्रकार अवहार-कालका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण—घनलोकका प्रथम वर्गमूल $२५६^३$, $२५६ \times २ = ५१२$; $\frac{२५६^३}{५१२} = ३२७६८$ अव.

अथवा, यहां पर द्विगुणादि क्रमसे अवहारकाल साध लेना चाहिये। अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके द्वितीय वर्गमूलको अपहृत करके जो लब्ध आवे उससे उसी घनलोकके द्वितीय

कालो होदि । एवं हेट्ठा वि जाणिऊण वत्तव्वं । हेट्ठिमवियप्पो गदो ।

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । घणंगुलबिदियवग्गमूलेण सेढिसमाणवेरूववग्गं गुणेऊण तेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं कथं ? सेढिसमाणवेरूववग्गेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे सेढी आगच्छदि । पुणो वि घणंगुलबिदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो होदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अहवा अवहारकालो विगुणादिकमेण वड्ढावेयव्वो । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे अवहारकालो आगच्छदि । तस्सद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? घणंगुलबिदियवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणयसहियसेढिसमाणवेरूववग्गस्स अद्धच्छेदणयमेत्ता ।

वर्गमूलको गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है। इसीप्रकार नीचेके स्थानोंमें भी जानकर कथन करना चाहिये। इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ।

उदाहरण—घनलोकका द्वितीय वर्गमूल $१६^३$; २५६ × २ = ५१२; $१६^३$ ÷ ५१२ = ८; $१६^२$ × ८ = ३२७६८ अव.

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार। उनमेंसे पहले गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसी जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गके वर्गमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गका उसीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है। अवहारकालका प्रमाण इसप्रकार आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया। अथवा, द्विगुणादिकरण विधिसे अवहारकाल बढ़ा लेना चाहिये।

उदाहरण—६५५३६ × २ = १३१०७२; $६५५३६^२$ ÷ १३१०७२ = ३२७६८ अव.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है।

उदाहरण—उक्त भागहारके १६ + १ = १७ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाएं कितनी होती हैं ?

समाधान—जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलकी अर्धच्छेद शलाकाएं मिला देने पर उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाओंका प्रमाण होता है।

उदाहरण—जगश्रेणी समान द्विरूपवर्ग ६५५३६ के अर्धच्छेद १६; घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल २ के अर्धच्छेद १; १६ + १ = १७ अ.।

उवरि सव्वत्थ चडिदट्ठाणवग्गसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिरूवूणेण सेढिसमाणवेरूववग्गस्स अद्धच्छेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता भवंति। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु वग्गट्ठाणेसु णेयव्वं। वेरूवपरूवणा गदा। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि। अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिं गुणेऊण जगपदरे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। केण कारणेण? जगसेढीए जगपदरे भागे हिदे सेढी आगच्छदि। पुणो वि घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। अहवा अवहारकालो विउणादिकरणेण वड्ढावेयव्वो। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स

ऊपर सर्वत्र जितने वर्गस्थान ऊपर जावें उनकी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे तीन कम करके शेष रही हुई राशिसे जगश्रेणीके समान द्विरूप वर्गकी अर्धच्छेद शलाकाओंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद मिला देने पर जो जोड़ हो उतने विवक्षित भागहारके अर्धच्छेद होते हैं। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें ले जाना चाहिये। इसप्रकार द्विरूप प्ररूपणा समाप्त हुई।

अब अष्टरूपमें बतलाते है— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है।

उदाहरण—६५५३६ ÷ २ = ३२७६८ अव

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है।

उदाहरण—उक्त भागहारका १ अर्धच्छेद है, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी ३२७६८ प्रमाण अवहारकाल आता है।

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका जगप्रतरमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगश्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है। इसप्रकार अवहारकालका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया। अथवा द्विगुणादिकरण विधिसे अवहारकाल बढ़ा लेना चाहिये।

उदाहरण—६५५३६ × २ = १३१०७२, ४२९४९६७२९६ ÷ १३१०७२ = ३२७६८ अव.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है।

अद्धच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि। एत्थ चडिदद्धाणसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा रूवूणेण जगसेढिअद्धच्छेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणए पक्खित्ते भागहारस्स अद्धच्छेदणया हवंति। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु वग्गट्ठाणेसु णेयव्वं। अट्ठरूवपरूवणा गदा। घणाघणे वत्तइस्सामो। घणंगुलविदियवग्गमूलेण जगपदरं गुणेऊण घणलोगे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। केण कारणेण ? जगपदरेण घणलोगे भागे हिदे सेढी आगच्छदि। पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण जगपदरं गुणेऊण तेण घणलोगं गुणेऊण घणलोगउवरिमवग्गे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। केण कारणेण ? घणलोगेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे घणलोगो आगच्छदि। पुणो वि जगपदरेण घणलोगे भागे हिदे सेढी आगच्छदि। पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि

उदाहरण—उक्त भागहारके १६ + १ = १७ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर ३२७६८ प्रमाण अवहारकालराशि आती है।

यहां पर जितने स्थान ऊपर गये हों उतनी शलाकाओंका विरलन करके और उस राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके शेष राशिसे जगश्रेणीके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेदोंको मिला देने पर विवक्षित भागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें ले जाना चाहिये। इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगप्रतरसे घनलोकके भाजित करने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है। इसप्रकार अवहारकाल आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण—६५५३६^{२} × २ = ८५८९९३४५९२; ६५५३६^{३} ÷ ८५८९९३४५४२ = ३२७६८ अव.

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनलोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनलोकका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनलोक आता है, पुनः जगप्रतरका घनलोकमें भाग देने पर जगश्रेणी आती है, पुन घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है। इसप्रकार

भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि । एत्थ भागहारस्स अद्धच्छेदणयसलागाणमाणयणविही वुच्चदे– चडिदद्धाणवग्गसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिगुणरूवूणेण सेढिअद्धच्छेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणए पक्खित्ते भागहारस्स अद्धच्छेदणया हवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । गहिदपरूवणा गदा । सेढिसमाणवेरूववग्गवग्गस्स असंखेज्जदिभागेण सेढीए असंखेज्जदिभागेण घणलोगपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण अवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । एवमवहारकालपरूवणा समत्ता।

एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे णेरइयमिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि ।

अवहारकालका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण— $\frac{६५५३६^{२}}{६५५३६^{३} \times ६५५३६^{१} \times २}$ = ३२७६८ अव.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८१ अर्धच्छेद होते हैं अत इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी ३२७६८ प्रमाण अवहारकालका प्रमाण आता है।

अब यहां भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाओंके लानेकी विधि कहते हैं— जितने स्थान ऊपर गये हों उतनी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे तीनसे गुणा करके लब्ध राशिमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उसे जगश्रेणीके अर्धच्छेदोंसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद मिला देने पर विवक्षित अवहारकालके अर्धच्छेद होते हैं। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें लगा लेना चाहिये। इसप्रकार गृहीतप्ररूपणा समाप्त हुई।

उदाहरण—एक स्थान ऊपर गये इसलिये $\underset{१}{२}$ = २ × ३ = ६ − १ = ५ × १६ = ८० + १ = ८१ अर्ध.।

जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गका जो उपरिम वर्ग हो उसके असंख्यातवें भागरूप, जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप और घनलोकके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये। इसप्रकार अवहारकाल प्ररूपणा समाप्त हुई।

इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है (४२९४९६७२९६ ÷ ३२७६८ = १३१०७२)। यहां पर खण्डित, भाजित,

एत्थ खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदपरूवणाओ पुव्वं व परूवेदव्वाओ। तत्थ पमाणं वत्तइस्सामो। तं जधा– जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ सेढीओ। पमाणं गदं। केण कारणेण ? सेढीए जगपदरे भागे हिदे सेढी आगच्छदि। सेढिदुभागेण जगपदरे भागे हिदे दोण्णि सेढीओ आगच्छंति। सेढितिभागेण जगपदरे भागे हिदे तिण्णि सेढीओ आगच्छंति। एवं गंतूण विक्खंभसूचीभजिदसेढीए जगपदरे भागे हिदे असंखेज्जाओ सेढीओ आगच्छंति त्ति वुत्तं। कारणं गदं। णिरुत्तिं वत्तइस्सामो। सेढीए असंखेज्जदिभागेण सेढिम्हि भागे हिदे तत्थागदाणि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ सेढीओ। अहवा विक्खंभसूईरूवमेत्ताओ। णिरुत्ती गदा।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि। तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो। वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि। कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं

विरलित और अपहृतकी प्ररूपणा पहलेके समान करना चाहिये (देखो पृष्ठ ४१, ४२)। अब नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण जगप्रतरके असंख्यातवें भाग है जो असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण है। इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—४२९४९६७२९६ – ३२७६८ = १३१०७२ = असंख्यातरूप २ जगश्रेणियोंके।

शंका—नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण जो जगप्रतरके असंख्यातवें भाग कहा है वह असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण किस कारणसे है ?

समाधान—जगश्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर जगश्रेणी आती है (४२९४९६७२९६ – ६५५३६ = ६५५३६) जगश्रेणीके द्वितीय भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर दो जगश्रेणियां आती हैं (४२९४९६७२९६ – ३२७६८ = १३१०७२)। जगश्रेणीके तीसरे भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर तीन जगश्रेणियां आती हैं (४२९४९६७२९६ – २१८४५$\frac{1}{3}$ = १९६६०८)। इसप्रकार उत्तरोत्तर जाकर विष्कंभसूचीसे भाजित जगश्रेणीका जगप्रतरमें भाग देने पर असंख्यात जगश्रेणियां लब्ध आती हैं, ऐसा कहा है। इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—६५५३६ – २ = ३२७६८, ४२९४९६७२९६ – ३२७६८ = १३१०७२ बराबर असंख्यात जगश्रेणियोंके।

अब निरुक्तिका कथन करते हैं— जगश्रेणीके असंख्यातवें भागसे जगश्रेणीके भाजित करने पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उतनी जगश्रेणियां जगप्रतरके असंख्यातवें भागमें ली हैं। अथवा, विष्कंभसूचीका जितना प्रमाण है उतनी जगश्रेणियां जगप्रतरके असंख्यातवें भागमें ली हैं। इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ।

उदाहरण—जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग ३२७६८, ६५५३६ – ३२७६८ = २ जगश्रेणियां। अथवा, विष्कंभसूची २, अतएव विष्कंभसूची २ प्रमाण जगश्रेणियां।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प। उनमेंसे पहले

वत्तइस्सामो। सेढीए असंखेज्जदिभागभूदअवहारकालेण सेढिम्हि भागे हिदे तत्थागदेण सेढिम्हि गुणिदे मिच्छाइट्ठिरासी होदि। अधवा विक्खंभसूचीरूवेहि सेढिम्हि गुणिदे मिच्छाइट्ठिरासी होदि। अहवा अवहारकालेण सेढिविदियवग्गमूलमवहरिय लद्धेण तं चेव गुणिदे तेण सेढिपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण सेढिम्हि गुणिदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। अहवा अवहारकालेण सेढितदियवग्गमूलमवहरिय लद्धेण तं चेव गुणिय तेण सेढिविदियवग्गमूलं गुणिय तेण पढमवग्गमूलं गुणिय तेण गुणिदरासिणा सेढिम्हि गुणिदे मिच्छाइट्ठिरासी होदि। एवं हेट्ठा वि जाणिऊण वत्तव्वं। घणाघणे वत्तइस्सामो।

अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं— प्रकृतमें द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प संभव नहीं है। यहां कारणका कथन पहलेके समान कहना चाहिये।

विशेषार्थ—यदि जगश्रेणीके किसी भी वर्गमूलमें अवहारकालका भाग दिया जाता है तो नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि उत्पन्न नहीं हो सकती है, इसलिये यहां द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प संभव नहीं है यह कहा।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— जगश्रेणीके असंख्यातवें भागभूत अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उससे जगश्रेणीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—६५५३६ ÷ ३२७६८ = २; ६५५३६ × २ = १३१०७२।

अथवा, विष्कंभसूचीके प्रमाणसे जगश्रेणीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—६५५३६ × २ = १३१०७२।

अथवा, अवहारकालके प्रमाणसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उसी द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके गुणित करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—$१६ ÷ ३२७६८ = \frac{१}{२०४८}$; $१६ \times \frac{१}{२०४८} = \frac{१}{१२८}$; $२५६ \times \frac{१}{१२८} = २$;
६५५३६ × २ = १३१०७२।

अथवा, अवहारकालके प्रमाणसे जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है। इसप्रकार नीचे भी जानकर कथन करना चाहिये।

उदाहरण—$४ ÷ ३२७६८ = \frac{१}{८१९२}$, $४ \times \frac{१}{८१९२} = \frac{१}{२०४८}$, $१६ \times \frac{१}{२०४८} = \frac{१}{१२८}$,

सेढीए असंखेज्जदिभागेण अवहारकालेण सेढिं गुणेऊण तेण घणलोगे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । तं कधं ? सेढिणा घणलोगे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि भागहारेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । अहवा अवहारकालेण सेढिं गुणेऊण घणलोगपढमवग्गमूलमवहरिय तेण तं चेव गुणिदे मिच्छाइट्ठिरासी होदि । एवं हेट्ठा जाणिऊण वत्तव्वं । हेट्ठिमवियप्पो गदो ।

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिअवहारकालेण जगपदरसमाणवेरूववग्गं गुणेऊण तेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । तं कधं ? जगपदरसमाणवेरूववग्गेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे

$$२५६ \times \frac{१}{१२८} = २.\ ६५५३६ \times २ = १३१०७२ \text{ सा. ना. मि.}$$

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप अवहारकालसे जगश्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, जगश्रेणीसे घनलोकके भाजित करने पर जगप्रतर आता है । पुनः भागहारसे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण— $\frac{६५५३६^{३}}{६५५३६ \times ३२७६८} = १३१०७२$ सा. ना. मि.

अथवा, अवहारकालसे जगश्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके प्रथम वर्गमूलको अपहृत करके जो प्रमाण आवे उससे उसी घनलोकके प्रथम वर्गमूलको गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । इसीप्रकार नीचेके स्थानोंमें जानकर कथन करना चाहिये । इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $\frac{२५६^{३}}{६५५३६ \times ३२७६८} = १२८;\ २५६^{३} \times १२८ = १३१०७२$ सा. ना. मि.

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे पहले गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकालसे जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे उस द्विरूपवर्गके वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गका उसके वर्गमें भाग देने पर जगप्रतरका प्रमाण आता है, पुनः अवहारकालका जगप्रतरमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण— $\frac{४२९४९६७२९६^{२}}{४२९४९६७२९६ \times ३२७६८} = १३१०७२$ सा. ना. मि.

भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एदस्स अद्धच्छेदणया केत्तिया? अवहारद्धच्छेदणयसहिदजगपदरसमाणवेरूववग्गच्छेदणयमेत्ता। उवरि अद्धच्छेदणयमेला-वणविहाणं जाणिऊण वत्तव्वं। वेरूवपरूवणा गदा। अट्ठरूवं वत्तइस्सामो। अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। घणंगुलविदियवग्गमूलद्धच्छेदणएहि ऊणसेढिअद्धच्छेदणयमेत्ते जगपदरस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। अहवा अवहारकालेण जगपदरं गुणेऊण तेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तं जहा– जगपदरेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि। पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एदस्स भागहारस्स

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ४७ अर्धच्छेद हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

शंका— उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं?

समाधान— जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गके जितने अर्धच्छेद हों उनमें अवहारकालके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है।

उदाहरण—जगप्रतरसमान द्विरूपवर्ग ४२९४९६७२९६ के अर्धच्छेद ३२, ३२७६८ के १५; अतएव ३२ + १५ = ४७ अ.।

ऊपरके स्थानोंमें भी अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधि जानकर कहना चाहिये। इसप्रकार द्विरूपप्ररूपणा समाप्त हुई।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—४२९४९६७२९६ ÷ ३२७६८ = १३१०७२ सा. ना मि

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेदोंको जगश्रेणीके अर्धच्छेदोंमेंसे कम करके जो प्रमाण शेष रहे उतनीवार जगप्रतरके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—६५५३६ प्रमाण जगश्रेणीके अर्धच्छेद १६ मेंसे घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल २ के अर्धच्छेद १ कम करने पर १५ शेष रहते हैं, अतः १५ वार ४२९४९६७२९६ प्रमाण जगप्रतरके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

अथवा, अवहारकालसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका जगप्रतरके उपरिम वर्गमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— जगप्रतरका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जगप्रतर आता है। पुन

अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एत्थ अद्धच्छेदणयमेलावणविहाणं पुव्वं व वत्तव्वं। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। अट्ठरूवपरूवणा गदा। घणाघणे वत्तइस्सामो। अवहारकालगुणिदजगपदरउवरिमवग्गेण घणलोगउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। केण कारणेण? जगपदरउवरिमवग्गेण घणलोगुवरिमवग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि। पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एत्थ अद्धच्छेदणयमेलावणविहाणं पुव्वं व वत्तव्वं। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। गहिदपरूवणा गदा।

अवहारकालका जगप्रतरमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण— $\frac{४२९४९६७२९६^२}{४२९४९६७२९६ \times ३२७६८}$ = १३१०७२ सा. ना. मि.

इस भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ३२ + १५ = ४७ अर्धच्छेद हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

यहां पर अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिका पहलेके समान कथन करना चाहिये। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले जाना चाहिये। इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्प बतलाते है— जगप्रतरके उपरिम वर्गको अवहारकालसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनलोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, जगप्रतरके उपरिम वर्गका घनलोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जगप्रतरका प्रमाण आता है। पुनः अवहारकालका जगप्रतरमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण— $\frac{६५५३६^३}{४२९४९६७२९६^२ \times ३२७६८}$ = १३१०७२ सा. ना. मि.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ७९ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

यहां पर अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिका पहलेके समान कथन करना चाहिये। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्तस्थानोंमें भी ले जाना चाहिये। इसप्रकार गृहीत उपरिम विकल्प प्ररूपणा समाप्त हुई।

जगपदरसमाणवेरूववग्गवग्गस्स असंखेज्जदिभागेण जगपदरस्स असंखेज्जदिभागेण घणलोगस्स असंखेज्जदिभागेण च णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । मिच्छाइट्ठिरासिपरूवणा समत्ता ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं[1] ॥ १८ ॥

ओघम्मि वुत्ततिण्णिगुणट्ठाणरासी सव्वा वि णेरइयाणं तिण्णिगुणट्ठाणरासिमेत्ता चेव होदि त्ति वुत्ते सेसगदीसु तिण्हं गुणट्ठाणाणमभावो पसज्जदे ? ण एस दोसो, णेरइयाणं तिण्हं गुणट्ठाणाणं पमाणस्स ओघतिगुणट्ठाणपमाणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तं पडि विसेसाभावादो एयत्ताविरोहा । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे भेदो दोण्हमत्थि चेव, सेसतिगदितिण्हं गुणट्ठाणाण पमाणपरूवणाणमुवरि उच्चमाणसुत्ताणं

जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गका जितना उपरिम वर्ग हो उसके असंख्यातवें भागरूप, जगप्रतरके असंख्यातवें भागरूप और घनलोकके असंख्यातवें भागरूप नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार मिथ्यादृष्टिराशिकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें नारकी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? गुणस्थान प्ररूपणाके समान हैं ॥ १८ ॥

शंका—गुणस्थानोंमें कही गई तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशि संपूर्ण नारकियोंके तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिके बराबर ही होती है, ऐसा कहने पर शेष तीन गतियोंमें तीनों गुणस्थानोंका अभाव प्राप्त होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, नारकियोंके तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिके प्रमाणकी सामान्यसे कही गई तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिके प्रमाणके साथ पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वके प्रति कोई विशेषता नहीं है, इसलिये इन दोनोंको समान मान लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलंबन करने पर दोनोंमें भेद है ही। यदि ऐसा न माना जाय तो शेषकी तीन गतिसंबन्धी सासादनादि तीन गुणस्थानोंकी जीवराशिके प्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये कहे गये सूत्रोंकी सफलता नहीं बन सकती है । अब

१ सर्वासु पृथिवीषु सासादनसम्यग्दृष्टयः सम्यग्मिथ्यादृष्टयोऽसंयतसम्यग्दृष्टयश्च पल्योपमासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि १, ८.

सफलत्तण्णहाणुववत्तीदो। तस्स भेदस्स परूवणट्ठं सासणसम्माइट्ठिआदिगुणपडिवण्णाणं अवहारकाले वत्तइस्सामो। तं जहा–

ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स असंजदसम्माइट्ठिदव्वपमाणं पावेदि। देवगइं मोत्तूण सेसतिगदि-असंजदसम्माइट्ठिरासी सामण्णअसंजदसम्माइट्ठिरासिस्स असंखेज्जदिभागो। तस्स को पडिभागो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। ओघअसंजदसम्माइट्ठिरासिस्स असंखेज्जा भागा देवाणमसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। कुदो? देवेसु बहूणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाण-मुवलंभादो। देवाणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाणि काणि चे? जिणबिंबिद्धिमहिमादंसण-जाइ-स्सरण-महिद्धिंदादिदंसण-जिणपायमूलधम्मसवणादीणि[1]। तिरिक्खणेरइया पुण गरुवपाव-

उक्त भेदके प्ररूपण करनेके लिये सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण लानेके लिये अवहारकालोंको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

सामान्यसे कहे गये असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पल्योपमको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है।

उदाहरण— $\frac{१६३८४}{१}$ $\frac{१६३८४}{१}$ $\frac{१६३८४}{१}$ $\frac{१६३८४}{१}$ एक विरलनके प्रति प्राप्त असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि।

इसमें देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको छोड़कर शेष तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण है।

शंका— शेष तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भागरूप लानेके लिये प्रतिभागका प्रमाण क्या है?

समाधान—आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभागका प्रमाण है।

सामान्यसे कही गई असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका असंख्यात बहुभागप्रमाण देवोंसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है, क्योंकि, देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके बहुतसे कारण पाये जाते हैं।

शंका— देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके कारण कौनसे हैं?

समाधान— जिनबिम्बसंबन्धी अतिशयके माहात्म्यका दर्शन, जातिस्मरणका होना, महर्द्धिक इन्द्रादिकका दर्शन और जिनदेवके पादमूलमें धर्मका श्रवण आदि देवोंमें सम्क्त्वोत्पत्तिके कारण हैं। परंतु तिर्यंच और नारकी गुरुतर पापोंके भारसे नये और बंधे होनेसे, अतिशय

१ देवानां केषांचिज्जातिस्मरणं, केषांचिद्धर्मश्रवणं, केषांचिज्जिनमहिमदर्शनं, केषांचिद्देवर्धिदर्शनम्। स. सि. १, ७.

भारेण णत्थणद्धत्तादो संकिलिट्ठयरत्तादो[1] मंदबुद्धित्तादो बहूणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाणमभावादो च सम्माइट्ठिणो थोवा हवंति। तदो तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासिणा उवरिमेगरूवधरिदं ओघासंजदसम्माइट्ठिदव्वमवहरिय तत्थागदमावलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण ओघासंजदसम्माइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे हेट्ठिमविरलणरूवं पडि सेसतिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं पावदि। तप्पमाणं उवरिमविरलणाए उवरिमरूवं पडि ट्ठिदओघासंजदसम्माइट्ठिदव्वम्हि अवणेयव्वं। एवमवणिदे उवरिमविरलणमेत्ता चेव देवअसंजदसम्माइट्ठिरासीओ तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासीओ च भवंति। पुणो उवरिमविरलणमेत्ततिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासिं देवअसंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणेण कस्सामो। तं जहा —

रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तेसु तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वेसु उवरिमविरलणम्हि ट्ठिदेसु समुदिदेसु एगं देवअसंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं लब्भदि, अवहारकालम्हि एगा

संक्लिष्ट परिणामी होनेसे, मन्दबुद्धि होनेसे और उनमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके बहुतसे कारणोंका अभाव होनेसे सम्यग्दृष्टि थोड़े होते हैं।

तदनन्तर उपरिम विरलनके एकके प्रति रक्खी हुई सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे भाजित करके वहां जो आवलीका असंख्यातवां भाग लब्ध आवे उसका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। इस प्रमाणको उपरिम विरलनके उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यमेंसे निकाल देना चाहिये। इसप्रकार निकाल देने पर उपरिम विरलनमात्र देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशियां और तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशियां होती हैं।

उदाहरण—तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि ४०९६;

१६३८४ – ४०९६ = ४; $\frac{४०९६}{१}$ $\frac{४०९६}{१}$ $\frac{४०९६}{१}$ $\frac{४०९६}{१}$;

इस ४०९६ को उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त १६३८४ में घटा देने पर १२२८८ आते हैं। यही देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है, और ४०९६ तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है।

अब आगे उपरिम विरलनमात्र अर्थात् उपरिम विरलनगुणित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको देव असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणसे करके बतलाते हैं। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

एक कम अधस्तन विरलनमात्र अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनगुणित उपरिम विरलनमें स्थित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समुदित कर देने पर एक देव

१ प्रतिषु ' णत्थद्धत्तादो सकिलिट्ठदरत्तादो ' इति पाठः।

चेव पक्खेवसलागा। पुणो वि एत्तियमेत्तेसु चेव उवरिमविरलणम्हि तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वेसु समुदिदेसु देवअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं लब्भदि, अवहारकालम्हि विदिया च पक्खे-सलागा। एवं पुणो पुणो कीरमाणे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति, हेट्ठिमविरलणादो उवरिमविरलणाए असंखेज्जगुणत्ता। एदासिमवहारकालपक्खेवसलागाणमेगवारेण आगमणविहिं वत्तइस्सामो। हेट्ठिमविरलणरूवूणमेत्ततिगदिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वेसु जदि एगा अवहारकालपक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तेसु तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वेसु केत्तियाओ पक्खेवसलागाओ लभामो त्ति रूवूणहेट्ठिमविरलणाए उवरि विरलिदओघअसंजदसम्माइट्ठिस्स अवहारकाले भागे हिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति। ताओ ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालम्हि पक्खित्ते देवअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे देवसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि, असंजदसम्माइट्ठिउवक्कमणकालादो सम्मामिच्छाइट्ठिउवक्कमणकालस्स असंखेज्जगुणहीणत्ता। तं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे देवसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो

असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है। फिर भी एक कम अधस्तन विरलनमात्र उपरिम विरलनमें स्थित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यके समुदित कर देने पर देव असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें दूसरी प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है। इसीप्रकार पुनः पुनः करने पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होती हैं, क्योंकि, अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन असंख्यातगुणा है। अब इन अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंके एकवारमें लानेकी विधिको बतलाते हैं— एक कम अधस्तन विरलनमात्र तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यमें यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमात्र अर्थात् उपरिम विरलनगुणित तीनगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्योंमें कितनी प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार (त्रैराशिक करके) एक कम अधस्तन विरलनका ऊपर विरलित ओघ असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालमें भाग देने पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होती हैं। उन प्रक्षेपशलाकाओंको ओघ असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालमें मिला देने पर देव असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है।

उदाहरण—एक कम अधस्तन विरलन ३; उपरिम विरलन ४, $४ \div ३ = \frac{४}{३}$;

$४ + \frac{४}{३} = \frac{१६}{३}$, $६५५३६ \div \frac{१६}{३} = १२२८८$ देव असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य।

$१६३८४ - १२२८८ = ४०९६$ तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य।

देव असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर देव सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकाल होता है, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टिके उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिका उपक्रमणकाल असंख्यातगुणा हीन है। देव

होदि,[1] तदो संखेज्जगुणहीण-उवक्कमणकालत्तादो । सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्ता उवसमसम्माइट्ठिणो सासणगुणं पडिवज्जंति त्ति वा । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे तिरिक्खसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसंजदासंजदअवहारकालो होदि, अपच्चक्खाणावरणाणमुदयाभावस्स अइदुल्लहत्तादो । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे णेरइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे णेरइयसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे णेरइयसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे अप्पप्पणो दव्वमागच्छदि ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर देव सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकाल प्राप्त होता है, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उपक्रमणकालसे सासादनसम्यग्दृष्टिका उपक्रमणकाल संख्यातगुणा हीन है । अथवा, सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानको प्राप्त होनेवाली जीवराशिके संख्यातवें भागमात्र उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको प्राप्त होते हैं, इसलिये भी देव सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे देव सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल संख्यातगुणा है । देव सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच संयतासंयतसंबन्धी अवहारकाल होता है, क्योंकि, अप्रत्याख्यानावरण कषायका उदयाभाव अत्यंत दुर्लभ है । तिर्यंच संयतासंयतसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नारक असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । नारक असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर नारक सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । इन उपर्युक्त अवहारकालोंसे पल्योपमके भाजित करने पर अपना अपना द्रव्यका प्रमाण आता है ।

१ ओघासजदमिस्सयसासणसम्माण भागहारा जे । रूवूणावलियासखेज्जेणिह भाजिय तत्थ णिक्खित्ते ॥ देवाण अवहारा होंति ×× । गो. जी. ६३४, ६३५.

एवं पढमाए पुढवीए णेरइया[1] ॥ १९ ॥

णं पुव्वं सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिआदिरासिस्स पमाणपरूवणा परूविदा, पढम-विदियपुढविआदिविसेसाभावादो । पुणो जदि पुव्वपरूविदसव्वरासी पढमाए पुढवीए भवदि तो विदियादिपुढवीसु जीवाभावो पसज्जदे । ण च एवं, 'विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया'' इच्चादिसुत्तेहि सह विरोहादो, तम्हा सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई पढमपुढविमिच्छाइट्ठीणं विक्खंभसूई ण हवदि । तदो सामण्णपरूविदअवहारकालो वि पढमपुढविणेरइयाणं ण भवदि । एवं सेसगुणपडिवण्णाणं पि अवहारकालवड्ढी वत्तव्वा । तम्हा एवं पढमाए पुढवीए णेयव्वमिदि णेदं घडदे ? ण एस दोसो, असंखेज्जसेढित्तणेण पदरस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण विदियवग्गमूलगुणिद-अंगुलवग्गमूलमेत्तविक्खंभसूचित्तणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण च पढमपुढवि-

सामान्य नारकियोंके द्रव्यप्रमाणके समान पहली पृथिवीमें नारक जीव-राशि है ॥ १९ ॥

शंका — पहले सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि आदि जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण किया, क्योंकि, सामान्य प्ररूपणमें पहली पृथिवी, दूसरी पृथिवी आदिके विशेषप्ररूपणका अभाव है। फिर यदि पहले प्ररूपण की हुई संपूर्ण जीवराशि पहली पृथिवीमें ही होती है तो द्वितीयादि पृथिवियोंमें जीवोंका अभाव प्राप्त होता है। परंतु ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर 'दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक मिथ्यादृष्टि नारकी द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं' इत्यादि सूत्रोंके साथ पूर्वोक्त कथनका विरोध प्राप्त होता है। इसलिये सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची नहीं हो सकती है। और इसीलिये सामान्यसे कहा गया अवहारकाल भी प्रथम पृथिवीके नारकियोंका अवहारकाल नहीं हो सकता है। इसीप्रकार प्रथम पृथिवीके शेष गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंको भी अवहारकालकी वृद्धिका कथन करना चाहिये। इसलिये इसीप्रकार पहली पृथिवीमें ले जाना चाहिये यह सूत्रार्थ घटित नहीं होता है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, असंख्यात जगश्रेणियोंकी अपेक्षा, जगप्रतरके असंख्यातवें भागकी अपेक्षा सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित प्रथम वर्गमूल-प्रमाण विष्कंभसूचीकी अपेक्षा और पल्योपमके असंख्यातवें भागकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीसंबन्धी

१ नरकगतौ प्रथमायां पृथिव्यां नारका मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि १, ८. हेट्ठिमछप्पुढवीण रासिविहीणो दु सव्वरासी दु । पढमावणिम्हि रासी णेरइयाण तु णिद्दिट्ठो । गो जी १५४. सेढीएक्केक्कपएसरइयसूईणमंगुलप्पमियं । घम्माए XX । पञ्चसं. २, १७. अहवंगुलप्पएसा समूलगुणिया उ नेरइय-सूई । पञ्चस २, १९. भवणवासीणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा । पञ्चस. २, १६ स्वो. टी. (महादण्डक).

परूवणाए सामण्णणेरइयपरूवणादो विसेसाभावादो । पुणो पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे विसेसो अत्थि चेव, अण्णहा विदियादिपुढवीसु जीवाभावप्पसंगादो । तं विसेसं वत्तइस्सामो । तं जहा– पढमपुढविणेरइयाणं दव्व-कालपमाणेसु भण्णमाणेसु ओघदव्व-कालपमाणाणि चेव असंखेज्जदिभागहीणाणि हवंति । तहा खेत्तपमाणं पि ओघखेत्तपमाणादो असंखेज्जदिभागूणं भवदि । तं कधं जाणिज्जदे ? 'विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइया खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो' इदि पुरदो वुच्चमाणसुत्तादो णव्वदे जहा ओघणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वादो पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं सेढीए असंखेज्जदिभागेण हीणमिदि । एदं सुत्तमवलंबिय पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठीणं विक्खंभसूई उप्पाइस्सामो । तं जहा– ओघणेरइयमिच्छाइट्ठिरासीदो एगसेढिअवणयणं पडि जदि विक्खंभसूचिम्हि एगसलागाए अवणयणं लब्भदि तो किंचूणबारसवग्गमूलभजिदसेढिम्हि किं लभामो त्ति सेढीए फलगुणिदिच्छामोवट्टिदे किंचूणबारसवग्गमूलभजिदेगरूपमागच्छदि । एदं

प्ररूपणामें सामान्य नारकियोंकी प्ररूपणासे कोई विशेषता नहीं है । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर सामान्य प्ररूपणासे प्रथम पृथिवीसंबन्धी प्ररूपणामें विशेषता है ही । यदि ऐसा न माना जाय तो द्वितीयादि पृथिवियोंमें जीवोंके अभावका प्रसंग आ जायगा । आगे उसी विशेषताको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

पहली पृथिवीके नारकियोंके द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाणका कथन करने पर सामान्यसे कहे गये द्रव्यप्रमाण और कालप्रमाणको असंख्यातवें भाग न्यून कर देने पर पहली पृथिवीके नारकियोंका द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाण होता है । उसीप्रकार पहली पृथिवीके नारकियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण भी सामान्यसे कहे गये क्षेत्रप्रमाणसे असंख्यातवां भाग न्यून है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक नारकी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग हैं' इसप्रकार आगे कहे जानेवाले सूत्रसे जाना जाता है कि नारक सामान्य मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यप्रमाणसे पहली पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्यप्रमाण जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग हीन है ।

अब आगे इस द्वितीयादि पृथिवियोंके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले सूत्रका अवलंबन लेकर पहली पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची उत्पन्न करते हैं । वह इसप्रकार है— जब कि सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमेंसे एक जगश्रेणी कम करने पर विष्कंभसूचीमें एक शलाका कम होती है, तो कुछ कम अपने बारहवें वर्गमूलसे भाजित जगश्रेणीमें कितना प्रमाण प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके इच्छराशि अपने कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे भाजित जगश्रेणीको फलराशि एकसे गुणित करके जगश्रेणीसे अपवर्तित करने पर, एकमें जगश्रेणीके कुछ कम बारहवें वर्गमूलका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उतना आता है ।

सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूचिम्हि अवणिदे पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिस्स विक्खंभसूई होदि[१]। एदीए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे पढमपुढविणेरइय-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि।

उदाहरण—बारहवां वर्गमूल ४; किंचित् ऊन वारहवां वर्गमूल $\frac{१२८}{६३}$;

$$६५५३६ - \frac{१२८}{६३} = ३२२५६;\quad ३२२५६ \times १ = ३२२५६,$$

$$३२२५६ - ६५५३६ = \frac{६३}{१२८} = १ - \frac{१२८}{६३},$$

इस किंचित् ऊन वारहवें वर्गमूलभाजित एकरूपको सामान्य नारक मिथ्यादृष्टिसंबन्धी विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि राशिकी विष्कंभसूची होती है। इस विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके भाजित करने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

उदाहरण—$२ - \frac{६३}{१२८} = \frac{१९३}{१२८}$ $\frac{६५५३६}{१} - \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८६०८}{१९३}$, प्र. पृ. मि. अव.।

विशेषार्थ—जगश्रेणीके वारहवें, दशवें, आठवें, छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर क्रमसे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका द्रव्य आता है। और इन छहों नरकोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका जितना प्रमाण हो उसे सामान्य मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है। पहले सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंका प्रमाण बतलाते समय उनकी विष्कंभसूची घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण बतलाई है, अर्थात् घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतनी जगश्रेणियोंको एकत्रित करने पर उनके प्रदेशप्रमाण सामान्य मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। अब यदि प्रथम नरकके नारकियोंके प्रमाण लानेके लिये विष्कंभसूची लाना हो तो द्वितीयादि नरकके मिथ्यादृष्टि नारकियोंके प्रमाणमें जगश्रेणीका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे सामान्य विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नरककी विष्कंभसूची आ जाती है। उदाहरणार्थ— दूसरे नरकका १६३८४, तीसरेका ८१९२, चौथेका ४०९६, पांचवेंका २०४८, छठेका १०२४ और सातवेंका ५१२ द्रव्य मान लेने पर इनमें जगश्रेणी ६५५३६ का भाग देने पर क्रमसे $\frac{१}{४}$, $\frac{१}{८}$, $\frac{१}{१६}$, $\frac{१}{३२}$, $\frac{१}{६४}$ और $\frac{१}{१२८}$ आता है, जिनका जोड़ $\frac{६३}{१२८}$ होता है। इसे सामान्य विष्कंभसूची २ मेंसे घटा देने पर $\frac{१९३}{१२८}$ प्रमाण प्रथम पृथिवीकी विष्कंभसूची होती है। इसी व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर ऊपर यह कहा गया है कि किंचित् ऊन वारहवें वर्गमूल भाजित एकरूपको सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नरकके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका प्रमाण

१ तम्हा पुव्विल्लविक्खंभसूची (सामण्णणेरइयविक्खंभसूची) एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणूणा पढम-पुढविणेरइयाण विक्खंभसूची होदि। धवला, पत्र. ५१८ अ.

अहवा अवरेण पयारेण अवहारकालो उप्पाइज्जदे । तं जहा– सामण्णअवहारकालं विरलेऊण रूवं पडि जगपदरं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स सामण्णणेरइय-मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं पावेदि । पुणो तत्थ एगरूवधरिदसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि छपुढविमिच्छाइट्ठिरासिणा भागे हिदे किंचूणबारसवग्गमूलगुणिदसामण्णणेरइयमिच्छा-इट्ठिविक्खंभसूची आगच्छदि । एदं पुव्वविरलणाए हेट्ठा विरलिय उवरि एगरूवधरिद-सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छप्पुढविमिच्छाइट्ठिरासि-पमाणं पावेदि । तं उवरिमविरलणाए ट्ठिदसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि पुध पुध अवणिदे उवरिमविरलणमेत्ता पढमपुढविमिच्छाइट्ठिरासीओ भवंति । छप्पुढविमिच्छाइट्ठि-रासीओ वि तावदिया चेव ।

लानेके लिये विष्कंभसूची होती है । यहां किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूलसे द्वितीयादि नरकोंके मिथ्यादृष्टि राशिका सम्मिलित अवहारकाल अभिप्रेत है।

अथवा, दूसरे प्रकारसे प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उत्पन्न करते हैं । वह इसप्रकार है— सामान्य अवहारकालका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगप्रतरको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः उस विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका भाग देने पर कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे गुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी विष्कंभसूची आती है । इसे पूर्व विरलनके नीचे विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति द्वितीयादि छह पृथिवीसंबन्धी नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आ जाता है । उसे उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमेंसे पृथक् पृथक् निकाल देने पर उपरिम विरलनका जितना प्रमाण है उतनी प्रथम पृथिवीगत नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशियां होती हैं । द्वितीयादि छह पृथिवीगत नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशियां भी उतनी ही होती हैं ।

उदाहरण—छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि राशि ३२२५६,

$\frac{१३१०७२}{१}$ $\frac{१३१०७२}{१}$ ३२७६८ वार;

$१३१०७२ - ३२२५६ = \frac{२५६}{६३} = २ \times \frac{१२८}{६३}$,

$\frac{३२२५६}{१}$ $\frac{३२२५६}{१}$ $\frac{३२२५६}{१}$ $\frac{३२२५६}{१}$ $\frac{२०४८}{\frac{४}{६३}}$ इस ३२२५६ को उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त १३१०७२ मेंसे घटा देने पर ९८८१६ प्रमाण प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्य राशियां होती हैं और शेष ३२२५६ प्रमाण द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि द्रव्य राशियां होती हैं ।

पुणो उवरिमविरलणमेत्तछप्पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणेण कस्सामो। तं जहा– रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तछप्पुढविदव्वेसु उवरिमविरलणम्हि समुदिदेसु पढमपुढविमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि। तत्थ एगा अवहारकालसलागा लब्भइ। पुणो वि उवरिमविरलणम्हि तत्तिएसु चेव छप्पुढविदव्वेसु समुदिदेसु अवरेगं पढमपुढविमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि, विदिया च अवहारकालपक्खेवसलागा लब्भइ। एवं पुणो पुणो कीरमाणे रूवूणहेट्ठिमविरलणादो उवरिमविरलणा असंखेज्जगुणा त्ति कट्टु सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति। तासिमेगवारेणाणयणविही वुच्चदे। तं जहा– रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तछप्पुढविदव्वस्स जदि एगा अवहारकालपक्खेवसलागा लब्भदि, तो सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालमेत्तछप्पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स केत्तियाओ लभामो त्ति सरिसमवणिय रूवूणहेट्ठिमविरलणाए सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे अवहारकालपक्खेवसलागाओ आगच्छंति। ताओ सरिसच्छेदं काऊण सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालम्हि [1]पक्खित्ते पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहार-

अब उपरिम विरलनमात्र छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यको प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणरूप करते हैं। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक कम अधस्तन विरलनमात्र छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित करने पर प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और वहां एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है। पुनः उपरिम विरलनमें उतने ही अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनमात्र छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित करने पर दूसरीवार प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और दूसरी अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है। इसीप्रकार पुनः पुनः करने पर एक कम अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन असंख्यातगुणा है, इसलिये जगश्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होती हैं। आगे उन अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंकी एकवार लानेकी विधिको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

एक कम अधस्तन विरलनमात्र अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनगुणित छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो सामान्य नारक मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य नारक अवहारकालगुणित छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति कितनी अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होंगी. इसप्रकार त्रैराशिकमें सदृशका अपनयन करके एक कम अधस्तन विरलनसे सामान्य अवहारकालको भाजित करने पर अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं आ जाती हैं। इनको समान छेद करके सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर प्रथम पृथिवीसंबन्धी नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

१ प्रतिषु 'भागे हिदे पक्खित्ते' इति पाठः।

कालो होदि। एदाओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहार-कालमेत्तछप्पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमस्सिऊण उप्पण्णाओ।

पुणो एदाओ चेव अवहारकालपक्खेवसलागाओ विक्खंभसूचिम्हि अवणयणरूव-पमाणं च पुढविं पुढविं पडि एत्तियं एत्तियं होदि त्ति परूविज्जदे। तत्थ ताव विक्खंभ-सूचिम्हि अवणिज्जमाणरूवाणं पमाणं वुच्चदे। तं जहा- एगसेढिअवणयणं पडि जदि सामण्णणेरइयविक्खंभसूचिम्हि एगरूवस्स अवणयणं लब्भदि तो विदियपुढविदव्वस्स अवणयणं पडि किं लभामो त्ति सरिसमवणिय सेढिवारसवग्गमूलेण एगरूवं खंडिदे विदियपुढविमस्सिऊण विक्खंभसूचिम्हि अवणयणपमाणमागच्छदि। तं च एदं $\frac{१}{७}$। एवं सेसपुढवीणं पि तेरासियकमेण विक्खंभसूचिम्हि अवणिज्जमाणरूवपमाणमाणेयव्वं। तेसिं

होता है। ये अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालगुणित छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका आश्रय लेकर उत्पन्न हुई हैं।

उदाहरण—उपरिम विरलन ३२७६८, अधस्तन विरलन $\frac{२५६}{६३}$;

$$\frac{२५६}{६३} - १ = \frac{१९३}{६३}, \quad ३२७६८ - \frac{१९३}{६३} = \frac{२०६४३८४}{१९३}$$ अव. प्रक्षेपशलाकाएं।

$$३२७६८ + \frac{२०६४३८४}{१९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३}$$ पृ. पृ. अव.।

अब प्रत्येक पृथिवीके प्रति अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंका प्रमाण और विष्कंभसूचीमें अपनयनरूप संख्याका प्रमाण इतना इतना होता है, इसका प्ररूपण करते हैं। उसमें भी पहले विष्कंभसूचीमें अपनीयमान संख्याका प्रमाण कहते हैं। वह इसप्रकार है— एक जगश्रेणीके अपनयनके प्रति यदि सामान्य नारक विष्कंभसूचीमें एक संख्या कम होती है तो द्वितीय पृथिवीके द्रव्यके घटानेके प्रति कितनी संख्या प्राप्त होगी, इसप्रकार सदृशका अपनयन करके (अर्थात् दूसरी पृथिवीके द्रव्यको जगश्रेणीसे अपनयन करके अर्थात् भाजित करके) जग-श्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे एकको खंडित करने पर दूसरी पृथिवीका आश्रय करके विष्कंभसूचीमें अपनयनरूप संख्याका प्रमाण आ जाता है। वह यह $\frac{१}{७}$ है।

उदाहरण—$१ \times १६३८४ = १६३८४; \quad १६३८४ - ६५५३६ = \frac{१}{४}$ अपनयनरूप।

अथवा, $१ \div ४ = \frac{१}{४}; \left(२ - \frac{१}{४} = \frac{७}{४}\right)$

इसीप्रकार शेष पृथिवियोंका भी त्रैराशिक क्रमसे विष्कंभसूचीमें अपनीयमान संख्याका प्रमाण ले आना चाहिये। प्रत्येक पृथिवीके प्रति उन अपनीयमान संख्याओंका

पमाणं सेढिदसम-अट्ठ-छट्ठ-तदिय-विदियवग्गमूलेहि पुध पुध एगरूवं खंडिदे तत्थ एगभागं होदि। विदियादिपुढवीणं एदे अवहारकाला होंति त्ति कधं णव्वदे ?

वारस दस अट्ठेव य मूला छत्तिय दुगं च[1] णिरएसु।
एक्कारस णव सत्त य पण य चउक्कं च देवेसु[2] ॥ ६६ ॥

एदम्हादो आरिसादो णव्वदे। तेसिमंकट्ठवणा एसा $\frac{1}{12}$ $\frac{1}{10}$ $\frac{1}{8}$ $\frac{1}{6}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{2}$। सेढिवारस-

प्रमाण क्रमसे जगश्रेणीके दशवें, आठवें, छठवें, तीसरे और दूसरे वर्गमूलोंसे पृथक् पृथक् एक संख्याको खंडित करने पर वहां जो एक भाग लब्ध आवे उतना होता है।

उदाहरण—दशवां वर्गमूल ८, आठवां वर्गमूल १६, छठा वर्गमूल ३२, तीसरा वर्गमूल ६४; दूसरा वर्गमूल १२८, $१ - ८ = \frac{१}{८}$ तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा। $१ - १६ = \frac{१}{१६}$ चौथी पृथिवीकी अपेक्षा। $१ - ३२ = \frac{१}{३२}$ पांचवीं पृथिवीकी अपेक्षा। $१ - ६४ = \frac{१}{६४}$ छठी पृथिवीकी अपेक्षा। $१ - १२८ = \frac{१}{१२८}$ सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा अपनीयमान संख्याका प्रमाण।

शंका—जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल, दशवां वर्गमूल आदि ये सब द्वितीयादि पृथिवियोंके अवहारकाल होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—नरकमें द्वितीयादि पृथिवीसंबन्धी द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका बारहवां, दशवां, आठवां, छठा, तीसरा और दूसरा वर्गमूल क्रमसे अवहारकाल होता है। तथा देवोंमें (सानत्कुमार आदि पांच कल्पयुगलोंका प्रमाण लानेके लिये) जगश्रेणीका ग्यारहवां, नौवां, सातवां, पांचवां और चौथा वर्गमूल क्रमसे अवहारकाल होता है ॥ ६६ ॥

इस आर्ष वचनसे जाना जाता है कि उपर्युक्त वर्गमूल द्वितीयादि पृथिवियोंके द्रव्य लानेके लिये अवहारकाल होते हैं।

उन अपनीयमान अंकोंकी स्थापना क्रमसे $\frac{1}{12}$, $\frac{1}{10}$, $\frac{1}{8}$, $\frac{1}{6}$, $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{2}$ इसप्रकार है।

विशेषार्थ—यहां पर जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूल आदिका ज्ञान करानेके लिये हरके

१ प्रतिपु ' दुपच ' इति पाठः।

२ सणक्कुमार जाव सदरसहस्सारकप्पवासियदेवा सत्तमपुढवीभंगो। कुदो ? सेढीए असंखेज्जभागत्तणेण एदेसिं तत्तो भेदाभावादो। विसेसदो पुण भेदो अत्थि, सेढीए एक्कारस-णवम-सत्तम पंचम-चउत्थवग्गमूलाणि जहाकमेण सेढीभागहाराणमेत्थुवलंभादो। धवला. पत्र ५२२. अ। सौधर्मद्वये किंचिदूना घनांगुलतृतीयमूलजगश्रेणि। सनत्कुमार-द्वयादिपंचयुग्मेषु किंचिदूनाः क्रमशो निजैकादशम नवम-सप्तम पंचम चतुर्थमूलभक्तजगश्रेणिः। ऊनता चात्र हाराधिक्ता ज्ञेया। गो. जी., जी. प्र., टी ६४१.

स्थानमें अंकरूपसे १२, १० आदि संख्याओंका ग्रहण किया है। तथा अंशके स्थानमें १ अंक ग्रहण करके यह बतलाया है कि १ में बारहवें आदि वर्गमूलोंका भाग देनेसे सामान्य विष्कंभ-सूचीमें अपनीयमान संख्या आ जाती है। पर इससे यहां बारहवें वर्गमूलका प्रमाण १२ और दशवें वर्गमूलका प्रमाण १० आदि नहीं लेना चाहिये। ये १२, १० आदि अंक तो केवल अनुरूप संख्यांकोंके द्वारा उक्त वर्गमूलोंका ज्ञान करानेके लिये संकेतमात्र हैं। इसीप्रकार इसी प्रकरणमें प्रकृत विषयके स्पष्ट करनेके लिये अंकसंदृष्टिकी अपेक्षा जगश्रेणीका प्रमाण ६५५३६ लिया है, उसके भी ये १२, १० आदि अंक बारहवें और दशवें आदि वर्गमूल नहीं हैं, जो द्वितीयादि पृथिवियोंके अंकसंदृष्टिकी अपेक्षा दिये गये अवहारकालोंसे स्पष्ट समझमें आ जाता है। यद्यपि ६५५३६ के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्गमूलको छोड़कर शेष सभी वर्गमूल करणीगत होते हैं, फिर भी वीरसेनस्वामीने वर्गमूलोंके परस्परके तारतम्यको ग्रहण न करके द्वितीयादि नरकोंमें नारक जीवोंकी उत्तरोत्तर हीन संख्याका परिज्ञान करानेके लिये बारहवें वर्गमूलके स्थानमें ४, दशवेंके स्थानमें ८, आठवेंके स्थानमें १६, छठवेंके स्थानमें ३२, तीसरेके स्थानमें ६४ और दूसरेके स्थानमें १२८ लिया है। इस प्रकरणमें उदाहरण देकर जीवराशि आदिकी जो संख्या निकाली है वह पूर्वोक्त आधार पर ही निकाली गई है। इससे बारहवें वर्गमूल आदिमें परस्पर जितना तारतम्य है वह उक्त संकेतरूप संख्यांकोंमें नहीं रहता है, और इसलिये कहीं कहीं दृष्टान्त और दार्ष्टांतमें अन्तर प्रतीत होता है। जैसे, आगे चलकर छठी और सातवी पृथिवीका मिला हुआ जो भागहार निकाला है उस प्रकरणमें उपरिम विरलन भी जगश्रेणीका तृतीय वर्गमूलप्रमाण है और अधस्तन विरलन भी उतना ही है। पर वर्गमूलोंके उक्त संख्यांकोंके अनुसार वहां उपरिम विरलन ६४ प्रमाण और अधस्तन विरलन २ संख्याप्रमाण ही आता है, क्योंकि, अंकोंके द्वारा मानी हुई सातवीं पृथिवीकी जीवराशि ५१२ रूप प्रमाणका छठी पृथिवीके द्रव्य १०२४ में भाग देने पर २ ही लब्ध आते हैं। वर्गमूलोंमें परस्पर जो तारतम्य है वह इन संकेतोंमें नहीं रहनेसे ही यहां दृष्टान्त और दार्ष्टान्तमें इसप्रकारका वैषम्य दिखाई देता है। पर यदि हम वर्गमूलोंके तारतम्यको लेकर अंकसंदृष्टि जमावें तो मुख्यार्थसे दृष्टान्तमें कोई अन्तर नहीं पड़ सकता है। फिर भी दृष्टान्त एकदेश होता है इसी न्यायके अनुसार ही यहां अंकसंदृष्टिसे दार्ष्टान्तको समझना चाहिये। इससे जहां कहीं दृष्टान्तसे दार्ष्टान्तका साम्य नहीं मिलता होगा वहां दृष्टान्तमें ग्रहण किये गये अंकोंमें अपेक्षित तारतम्यका अभाव ही कारण है, दार्ष्टान्तमें कोई दोष नहीं। यह बात निम्नकोष्ठकसे अतिशीघ्र समझमें आ जायगी—

६५५३६ के वर्गमूल	बारहवां	दशवां	आठवां	छठा	तीसरा	दूसरा	विष्कंभसूची
धवलाकार द्वारा माने गये संकेतांक	१२८	६४	३२	१६	८	४	२
६५५३६ = $२^{१६}$ के निश्चित वर्गमूल	$२^{\frac{१}{२५६}}$	$२^{\frac{१}{६४}}$	$२^{\frac{१}{१६}}$	$२^{\frac{१}{४}}$	$२^{२}$	$२^{४}$	बारहवें वर्गमूलसे नीचे जाकर

वग्गमूलभजिदएगरूवं विक्खंभसूचिम्हि अवणिय सेढिं गुणिदे विदियपुढविदव्वेण विणा सेसछप्पुढविदव्वमागच्छदि। पुणो ताए चेव ऊणविक्खंभसूचीए जगसेढिम्हि भागे हिदे विदियपुढविवदिरित्तछपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि। पुणो तम्हि चेव छप्पुढविविक्खंभसूचिम्हि एगरूवं सेढिदसमवग्गमूलेण खंडिय तत्थ एगखंडमवणीए विदिय-तदियपुढविवदिरित्तसेसपंचपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूची होदि। पुणो ताए चेव विक्खंभसूचीए जगसेढिम्हि भागे हिदे पंचपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि। पुणो तम्हि चेव पंचपुढविविक्खंभसूचिम्हि एगरूवं सेढिअट्ठमवग्गमूलेण खंडिय एगखंडमवणिदे विदिय-तदिय-चउत्थपुढविवदिरित्तचत्तारिपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूई होदि। पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे चउण्हं पुढवीणं मिच्छा-

जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे एक संख्याको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे विष्कंभसूचीमेंसे घटाकर शेष प्रमाणसे जगश्रेणीके गुणित करने पर द्वितीय पृथिवीगत द्रव्यके विना शेष छह पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है। तथा उसी ऊन विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीको भाजित करने पर दूसरी पृथिवीके अवहारकालके विना शेष छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है।

उदाहरण—$१ - ४ = \frac{१}{४}$; $२ - \frac{१}{४} = \frac{७}{४}$, $६५५३६ \times \frac{७}{४} = ११४६८८$ दूसरी पृथिवीके द्रव्यके विना शेष छह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य। $६५५३६ - \frac{७}{४} = \frac{२६२१४४}{७}$ दूसरी पृथिवीके अवहारकालके विना शेष छह पृथिवियोंका अवहारकाल।

अनन्तर जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके जो एक खण्ड लब्ध आवे उसे पूर्वोक्त उसी छह पृथिवीसंबन्धी विष्कभसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी और तीसरी पृथिवीके विना शेष पांच पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची होती है। पुनः उसी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके भाजित करने पर (दूसरी और तीसरीके विना) पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है।

उदाहरण—$१ - ८ = \frac{१}{८}$; $\frac{७}{४} - \frac{१}{८} = \frac{१३}{८}$ दूसरी और तीसरीके विना शेष पांच पृथिवियोंकी विष्कंभसूची। $६५५३६ - \frac{१३}{८} = \frac{५२४२८८}{१३}$ दूसरी और तीसरीके विना शेष पांच पृथिवियोका अवहारकाल।

अनन्तर जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके जो एक खण्ड लब्ध आवे उसे पूर्वोक्त उसी पांच पृथिवीसंबन्धी विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी, तीसरी और चौथी पृथिवीको छोड़कर शेष चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची होती

इट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो तम्हि चेव चउपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूचिम्हि एगरूवं सेढिछट्ठवग्गमूलेण खंडिऊण तत्थ एगखंडमवणिदे विदिय-तदिय-चउत्थ-पंचम-पुढविवदिरित्तसेसतिपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूई होदि । पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे तिपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो सेढि-तदियवग्गमूलेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगं खंडं तिण्हं पुढवीणं विक्खंभसूचिम्हि अवणिदे पढम-सत्तमपुढवीणं मिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूई आगच्छदि । पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे पढम-सत्तमपुढवीणं मिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो आगच्छदि ।

है । अनन्तर उस विष्कंभसूचीका जगश्रेणीमें भाग देने पर पूर्वोक्त चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—$१ \div १६ = \frac{१}{१६}$; $\frac{१३}{८} - \frac{१}{१६} = \frac{२५}{१६}$ दूसरी, तीसरी और चौथी पृथिवीके विना शेष चार पृथिवियोंकी विष्कंभसूची । $६५५३६ \div \frac{२५}{१६} = \frac{१०४८५७६}{२५}$ पूर्वोक्त चार पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके छठे वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके वहां जो एक खंड लब्ध आवे उसे उन्हीं पूर्वोक्त चार पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवी पृथिवीको छोड़कर शेष तीन पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची होती है । अनन्तर उस विष्कंभसूचीका जगश्रेणीमें भाग देने पर पूर्वोक्त तीन पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—$१ \div ३२ = \frac{१}{३२}$; $\frac{२५}{१६} - \frac{१}{३२} = \frac{४९}{३२}$ पहली, छठी और सातवीं पृथिवी-संबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची । $६५५३६ \div \frac{४९}{३२} = \frac{२०९७१५२}{४९}$ पूर्वोक्त तीन पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलसे एकरूपको खंडित करके वहां जो एक खंड लब्ध आवे उसे पूर्वोक्त तीन पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर पहली और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची आती है । अनन्तर उस विष्कंभसूचीका जगश्रेणीमें भाग देने पर पहली और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण—$१ \div ६४ = \frac{१}{६४}$, $\frac{४९}{३२} - \frac{१}{६४} = \frac{९७}{६४}$ पहली और सातवीं पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची । $६५५३६ \div \frac{९७}{६४} = \frac{४१९४३०४}{९७}$ पहली और सातवीं

पुणो दोपुढविविक्खंभसूचिम्हि सेढिविदियवग्गमूलेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगखंड-मवणिदे पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूची होदि। पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे वि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो आगच्छदि।

पुणो संपहि सामण्णअवहारकालमेत्तछप्पुढविदव्वमस्सिऊण पुढविं पडि अवहार-कालपक्खेवसलागाओ आणिज्जंति। तत्थ ताव विदियपुढविमस्सिऊण उप्पण्णअवहार-कालपक्खेवसलागाओ भणिस्सामो। तं जहा– विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वेण पढमपुढवि-मिच्छाइट्ठिदव्वमवहरिय लद्धमेत्तेसु विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वेसु सामण्णअवहारकालमेत्त-विदियपुढविदव्वम्मि समुदिदेसु एगं पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं लब्भइ, एगा अवहारकालपक्खेवसलागा। पुणो वि एत्तियमेत्तेसु विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वेसु समु-दिदेसु पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं लब्भइ, विदिया अवहारकालपक्खेवसलागा च। एवं पुणो पुणो कीरमाणे सेढीए असंखेज्जभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ

पृथिवीका अवहारकाल।

अनन्तर जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलसे एकरूपको खंडित करके वहां जो एक खंड लब्ध आवे उसे पूर्वोक्त दो पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर पहली पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची होती है। अनन्तर उस विष्कंभसूचीका जग-श्रेणीमें भाग देने पर पहली पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है।

उदाहरण—$१ - १२८ = \frac{१}{१२८}$; $\frac{९७}{६४} - \frac{१}{१२८} = \frac{१९३}{१२८}$ पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची। $६५५३६ - \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८६०८}{१९३}$ पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल।

अब सामान्य अवहारकालका जितना प्रमाण है उतनीवार छह पृथिवियोंके द्रव्यका आश्रय लेकर प्रत्येक पृथिवीके प्रति प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं लाते हैं। उनमें पहले दूसरी पृथिवीका आश्रय लेकर उत्पन्न हुई अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है—दूसरी पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पहली पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यको अपहृत करके जो लब्ध आवे तन्मात्र स्थानों पर स्थापित दूसरी पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यको सामान्य अवहारकालमात्र (सामान्य अवहारकालका जितना प्रमाण है उतनी वार स्थापित) दूसरी पृथिवीसंबन्धी द्रव्यमेंसे समुदित करने पर पहलीवार प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है, और अवहारकालमें एक प्रक्षेपशलाका उत्पन्न होती है। फिर भी इतनेमात्र दूसरी पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित कर देने पर दूसरीवार प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है, और अवहार-कालमें दूसरी प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है। इसीप्रकार पुनः पुनः करने पर जगश्रेणीके

लब्भंति । तं जहा– सेढिवारसवग्गमूलगुणिदपढमपुढविविक्खंभसूचिमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगा अवहारकालपक्खेवसलागा लब्भदि तो सामण्णअवहारकालम्हि केत्तियाओ लभामो त्ति पढमपुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेढिवारसवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे विदियपुढविदव्वमस्सिऊणुप्पण्णपक्खेवसलागाओ सव्वाओ आगच्छंति । एदाओ पुध सामण्णअवहारकालस्स पक्खे विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तविदियपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं होऊण पावदि । एवं चेय सामण्णअवहारकालमेत्ततदियादिपंचपुढविदव्वाणि अस्सिऊण ताणि ताणि पुढवीणं

असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होती हैं । जैसे— जगश्रेणीके वारहवें वर्गमूलसे प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीको गुणित करके जो लब्ध आवे तन्मात्र स्थान जाकर यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो सामान्य अवहारकालमें कितनी प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके प्रथम पृथिवी-संबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे गुणित जगश्रेणीके वारहवें वर्गमूलका सामान्य अवहार-कालमें भाग देने पर दूसरी पृथिवीका आश्रय करके उत्पन्न हुई संपूर्ण प्रक्षेप शलाकाएं आ जाती हैं ।

उदाहरण—$४ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{३२}$, $\frac{३२७६८}{१} \div \frac{१९३}{३२} = \frac{१०४८५७६}{१९३}$ दूसरी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं ।

इन अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंको पृथक्रूपसे सामान्य अवहारकालके पासमें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् जितना सामान्य अवहारकालका प्रमाण हो उतनीवार स्थापित दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण—ऊपर जो ५४३३$\frac{७}{१९३}$ प्रक्षेप अवहारकाल आया है उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित द्वितीय पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यको देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्य प्राप्त होता है, जो सामान्य अवहारकालगुणित द्वितीय पृथिवीके द्रव्यमें उक्त प्रक्षेप अवहारकालका भाग देने पर भी आ जाता है । यथा—

$३२७६८ \times १६३८४ = ५३६८७०९१२$; $५३६८७०९१२ \div \frac{१०४८५७६}{१९३}$ $= ९८८१६$ प्र. पृ. मि. द्रव्य

इसीप्रकार सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् जितना सामान्य अवहारकालका प्रमाण हो उतनीवार तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका आश्रय लेकर उन उन

पक्खेवअवहारकालसलागाओ आणेयव्वाओ। णवरि विसेसो सेढिदसमवग्गमूलगुणिद-पढमपुढविविक्खंभसूईए सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे तदियपुढविअवहारकाल-पक्खेवसलागाओ आगच्छंति। एदाओ पुव्विल्लदोण्हं विरलणाणं पस्से विरलिय सामण्ण-अवहारकालमेत्ततदियपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविदव्वपमाणं पावदि। पढमपुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेढिअट्ठमवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे चउत्थपुढविअवहारकालपक्खेवसलागाओ आगच्छंति। ताओ वि पुव्विल्लतिण्हं विरलणाणं पस्से विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तचउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं

पृथिवियोंकी अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं ले आना चाहिये। केवल इतनी विशेषता है कि जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलसे प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर तीसरी पृथिवीका आश्रय करके अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं आ जाती हैं।

उदाहरण—$८ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{१६}$, $३२७६८ - \frac{१९३}{१६} = \frac{५२४२८८}{१९३}$ तीसरी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्र. अ. श.।

इन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त दोनों विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अव-हारकाल गुणित तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

उदाहरण—$३२७६८ \times ८१९२ = २६८४३५४५६$;

$२६८४३५४५६ - \frac{५२४२८८}{१९३} = ९८८१६$ प्र. पृ. मि. द्रव्य

प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके अष्टम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं आ जाती हैं।

उदाहरण—$१६ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{८}$, $३२७६८ - \frac{१९३}{८} = \frac{२६२१४४}{१९३}$ चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं।

चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई उन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त तीन विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके

करिय दिण्णे रूवं पडि एदं पढमपुढविदव्वपमाणं होदि। पुणो पढमपुढविविक्खंभसूचि-गुणिदसेढिछट्ठमवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे पंचमपुढविपक्खेवअवहार-कालो आगच्छदि। तं पुव्विल्लचउण्हं विरलणाणं पस्से विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तपंचम-पुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावदि। पुणो पढम-पुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेढितदियवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे छट्ठपुढवि-पक्खेवअवहारकालो आगच्छदि। एदं पि पुव्विल्लपंचण्हं विरलणाणं पासे विरलिय सामण्णअव-

मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है।

उदाहरण—३२७६८ × ४०९६ = १३४२१७७२८;

$$१३४२१७७२८ - \frac{२६२१४४}{१९३} = ९८८१६ \text{ प्र. पृ. मि. द्रव्य.}$$

अनन्तर प्रथम पृथिवीकी विष्कभसूचीसे जगश्रेणीके छठे वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर पांचवी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं आती हैं।

उदाहरण—$३२ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{४}$, $३२७६८ - \frac{१९३}{४} = \frac{१३१०७२}{१९३}$ पांचवी पृथिवीका आश्रय करके उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारशलाकाएं।

पांचवी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई उन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त चारों विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित पांचवी पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

उदाहरण—३२७६८ × २०४८ = ६७१०८८६४,

$$६७१०८८६४ - \frac{१३१०७२}{१९३} = ९८८१६ \text{ प्र. पृ. मि. द्रव्य.}$$

अनन्तर प्रथम पृथिवीकी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर छठी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं आती हैं।

उदाहरण—$६४ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{२}$, $३२७६८ \div \frac{१९३}{२} = \frac{६५५३६}{१९३}$ छठी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शकालाएं।

छठी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुईं इन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त पांच विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकाल गुणित छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको

हारकालमेत्तछट्ठपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एदं पि पढमपुढविमिच्छाइट्ठि-दव्वपमाणेण पावदि। पुणो पढमपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूचिगुणिदसेढिविदियवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालो आगच्छदि। तं पुव्विल्लछण्हं विरलणाणं पासे विरालिय सामण्णअवहारकालमेत्तसत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणेण पावदि। एदाओ सत्त वि विरलणाओ घेत्तूण पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि।

तेसिं सत्तण्हं पि अवहारकालाणं मेलावणविहाणं वुच्चदे। तं जहा– सत्तमपुढवि-पक्खेवअवहारकालो सगपमाणेण एक्को हवदि। सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण छट्ठपुढविपक्खेवअवहारकालो सेढितदियवग्गमूलमेत्तो हवदि। पंचमपुढविपक्खेवअवहार-

समान खंड करके देयरूपसे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

उदाहरण—३२७६८ × १०२४ = ३३५५४४३२;

$$३३५५४४३२ \div \frac{६५५३६}{१९३} = ९८८१६ \text{ प्र. पृ. मि. द्र}$$

अनन्तर प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके दूसरे वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर सातवी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं आती हैं।

$$\text{उदाहरण—}१२८ \times \frac{१९३}{१२८} = १९३;\ ३२७६८ - १९३ = \frac{३२७६८}{१९३} \text{ सातवीं पृथिवीके}$$

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं।

सातवी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई इन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त छहों विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकाल गुणित सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

उदाहरण—३२७६८ × ५१२ = १६७७७२१६;

$$१६७७७२१६ - \frac{३२७६८}{१९३} = ९८८१६ \text{ प्र. पृ. मि. द्र.}$$

इन सातों विरलनोंको ग्रहण करके भी प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहार-काल होता है। आगे उन्हीं सातों अवहारकालोंके मिलानेकी विधिका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है—

सातवीं पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुआ प्रक्षेप अवहारकाल अपने प्रमाणसे एक है ($\frac{३२७६८}{३२७६८}$ = १ पिंडरूप) सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा छठी पृथिवीका

कालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण सेढितदियवग्गमूलमादिं काऊण जाव छट्ठमवग्गमूलो त्ति चउण्हं वग्गाणं अण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिमेत्तो हवदि । चउत्थ-पुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारपमाणेण सेढितदियवग्गमूलमादिं काऊण जाव अट्ठमवग्गमूलो त्ति ताव छण्णं वग्गाणं अण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिमेत्तो हवदि । तदियपुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारपमाणेण सेढितदिय-वग्गमूलमादिं काऊण जाव दसमवग्गमूलो त्ति ताव अट्ठण्हं वग्गाणं अण्णोण्णब्भासेणु-प्पण्णरासिमेत्तो हवदि । विदियपुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहार-पमाणेण सेढितदियवग्गमूलप्पहुडि दसण्हं वग्गाणमण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिमेत्तो हवदि । सामण्णअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण पढमपुढविविक्खंभसूचि-गुणिदसेढिविदियवग्गमूलमेत्तो हवदि । पुणो एदाओ सव्वसलागाओ एगट्ठं कण्यि सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालं गुणिदे पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि ।

अवहारकाल जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलमात्र होता है (६५५३६/१९३ = २) पांचवीं पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर छठे वर्गमूलपर्यन्त चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है (१३१०७२/१९३ = ४) चौथी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहार-कालकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर आठवें वर्गमूलपर्यंत छह वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है (२६२१४४/१९३ = ८)। तीसरी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर दशवें वर्गमूलपर्यन्त आठ वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है (५२४२८८/१९३ = १६)। दूसरी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर दश वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है (१०४८५७६/१९३ = ३२)। सामान्य अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालके प्रमाणकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उतना है (१२८ × १९३/१२८ = १९३)।

अनन्तर इन सर्व शलाकाओंको एकत्रित करके उससे सातवीं पृथिवीके प्रक्षेप अवहार-कालके गुणित करने पर पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

उदाहरण—१ + २ + ४ + ८ + १६ + ३२ + १९३ = २५६,

$$\frac{३२७६८}{१९३} \times २५६ = \frac{८३८८६०८}{१९३}$$ प्र. पृ. मि. अव.

अहवा ताहि चेव सलागाहि समुदिदाहि पढमपुढविसामण्णविक्खंभसूचीहि अण्णोण्णब्भत्थाहि गुणिदसेढिविदियवग्गमूलमोवट्टिय सेढिम्हि भागे हिदे पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। अहवा छण्हं पुढवीणं सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण कयसव्वसलागाहि सेढिविदियवग्गमूलमोवट्टिय अण्णोण्णब्भत्थपढमपुढविसामण्णणेरइयविक्खंभसूईहि गुणिय जगसेढिम्हि भागे हिदे सव्वत्थुप्पण्णपक्खेवअवहारकालो आगच्छदि। तेण सव्वत्थुप्पण्णअवहारकालेण सामण्णणेरइयअवहारकालम्हि भागे हिदे जं भागलद्धं तेण सामण्णणेरइयविक्खंभसूइं गुणिदे पुणो तं रासिं तेणेव गुणगारेण, रूवाहिएणोवट्टिय जगसेढिम्हि भागे हिदे पढमपुढविअवहारकालो आगच्छदि।

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची और सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची इन दोनोंके परस्पर गुणा करनेसे जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे एकत्रित की हुई पूर्वोक्त शलाकाओंसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकाल आता है।

उदाहरण— $\frac{\text{१९३}}{\text{१२८}} \times \text{२} = \frac{\text{१९३}}{\text{६४}}$; $\text{१२८} \times \frac{\text{१९३}}{\text{६४}} = \text{३८६}$; $\text{३८६} - \text{२५६} = \frac{\text{१९३}}{\text{१२८}}$;

$\text{६५५३६} - \frac{\text{१९३}}{\text{१२८}} = \frac{\text{८३८८६०८}}{\text{१९३}}$ प्र. पृ. मि. अ.

अथवा, सातवीं पृथिवीके प्रक्षेप अवहारकालके प्रमाणकी अपेक्षा छह पृथिवियोंके आश्रयसे उत्पन्न हुए प्रक्षेप अवहारकालकी जो सर्व शलाकाएं की गईं उनसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसको प्रथम पृथिवी और सामान्य नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचियोंके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर सर्वत्र उत्पन्न हुए प्रक्षेप अवहारकालका प्रमाण आता है। सर्वत्र उत्पन्न हुए उस प्रक्षेप अवहारसे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंके अवहारकालके भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे उससे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूचीके गुणित करने पर अनन्तर उस गुणित राशिको एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल आता है।

उदाहरण— $\text{१२८} - \text{६३} = \frac{\text{१२८}}{\text{६३}}$; $\text{२} \times \frac{\text{१९३}}{\text{१२८}} = \frac{\text{३८६}}{\text{१२८}}$; $\frac{\text{१२८}}{\text{६३}} \times \frac{\text{३८६}}{\text{१२८}} = \frac{\text{३८६}}{\text{६३}}$

$\frac{\text{६५५३६}}{\text{१}} - \frac{\text{३८६}}{\text{६३}} = \frac{\text{२०६४३८४}}{\text{१९३}}$ प्रक्षेप अवहारकाल।

$\text{३२७६८} - \frac{\text{२०६४३८४}}{\text{१९३}} = \frac{\text{१९३}}{\text{६३}}$; $\text{२} \times \frac{\text{१९३}}{\text{६३}} = \frac{\text{३८६}}{\text{६३}}$, $\text{१} + \frac{\text{१९३}}{\text{६३}} = \frac{\text{२५६}}{\text{६३}}$;

अहवा पढमपुढविविक्खंभसूईए सामण्णणेरइयविक्खंभसूइमोवट्टिदे एगरूवमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि। तस्स एगरूवासंखेज्जदिभागस्स को पडिभागो? किंचूणसेढिवारसवग्गमूलगुणिदपढमपुढविविक्खंभसूची पडिभागो। पुणो एदाओ दो रासीओ पुध मज्झे ठविय तेरासियं कायव्वं। तं जहा– सामण्णणेरइयरासिम्हि जदि एगरूवं एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो च पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो लब्भदि तो सामण्णणेरइयअवहारकालमेत्तसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि किं लभामो त्ति सरिसमवणिय सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण एगरूवमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागं गुणिदे पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि।

$\frac{३८६}{६३} - \frac{२५६}{६३} = \frac{३८६}{२५६}$; ६५५३६ − $\frac{३८६}{२५६} = \frac{८३८८६०८}{१९३}$ प्र. पृ. मि अव.

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके अपवर्तित करने पर एक और एकका असंख्यातवां भाग लब्ध आता है।

उदाहरण—२ − $\frac{१९३}{१२८} = \frac{२५६}{१९३} = १\frac{६३}{१९३}$.

शंका—उस एकके असंख्यातवें भागके लानेके लिये प्रतिभाग क्या है?

समाधान—जगश्रेणीके कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे गुणित प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची एकके असंख्यातवें भागके लानेके प्रतिभाग है।

उदाहरण—$\frac{१९३}{१२८} \times \frac{१२८}{६३} = \frac{१९३}{६३}$ प्रतिभाग।

अनन्तर इन दो राशियोंको पृथक्रूपसे मध्यमें स्थापित करके त्रैराशिक करना चाहिये। वह इसप्रकार है— सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि जीवोंका अवहारकाल यदि एक और एकका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है तो सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालगुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार सदृश राशि अंश और हररूप सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अपनयन करके सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे एक और एकके असंख्यातवें भागको गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अवहारकाल आता है।

उदाहरण—यहां १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि राशि प्रमाणराशि है, $\frac{२५६}{१९३}$ फलराशि है और सामान्य अवहारकाल ३२७६८ गुणित सामान्य नारक राशि १३१०७२ इच्छाराशि है। इसलिये इच्छाराशि और फलराशिका गुणा करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाण राशिका भाग देने पर प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आ जाता है। यथा—

$$\frac{३२७६८ \times १३१०७२ \times २५६}{१३१०७२ \times १९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३}$$ प्र. पृ. मि. अ.

अहवा पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो अण्णेण पयारेण आणिज्जदे। तं जहा- छट्ठमपुढविअवहारकालं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छट्ठमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावदि। पुणो तत्थ एगरूवधरिदछट्ठपुढविदव्वं सत्तम-पुढविदव्वेण भागे हिदे सेढितदियवग्गमूलमागच्छदि। तं विरलेऊण छट्ठपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सत्तमपुढविदव्वं पावदि। तं कमेण उवरिमविरलण-छट्ठमपुढविदव्वस्सुवरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण दिण्णे रूवं पडि छट्ठ-सत्तमपुढविदव्वपमाणं पावदि हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च लब्भदि। पुणो उवरिमअणंतरछट्ठपुढविदव्वं हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सत्तम-पुढविदव्वपमाणं पावदि। तं घेत्तूण उवरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण छट्ठमपुढविदव्वस्सुवरि दिण्णे हेट्ठिमविरलणमेत्तरूवं पडि छट्ठ-सत्तमपुढविदव्वपमाणं होदि हेट्ठिमविरलणरूवाहिय-

हर और अंशरूप सदृशका अपनयन करने पर उक्त उदाहरणका निम्नरूप होता है—

$$\frac{२५६}{१९३} \times ३२७६८ = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र. पृ. मि अ.}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल दूसरे प्रकारसे लाते हैं। वह इसप्रकार है- छठवीं पृथिवीके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति छठवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर वहां एक विरलनके प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यको सातवी पृथिवीके द्रव्यसे भाजित करने पर जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल लब्ध आता है। आगे उस लब्ध राशिका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति छठवीं पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीका द्रव्य प्राप्त होता है। उस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त सातवीं पृथिवीके द्रव्यको उपरिम विरलनमें छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर शून्य स्थानको (उपरिम विरलनके जिस स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे) छोड़कर क्रमसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठवीं और सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि प्राप्त होती है। पुनः उपरिम विरलनके अनन्तर स्थान (जहां तक सातवी पृथिवीका द्रव्य दिया है उसके आगेके स्थान) के प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यको अधस्तन विरलनमें समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। उसे लेकर उपरिम विरलनमें शून्यस्थानको (जिस स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे) छोड़कर छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर देने पर उपरिम विरलनके अधस्तन विरलनमात्र स्थानोंके प्रति छठवीं और सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और उपरिम विरलनमें एक अधिक

मेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च लब्भदि । एवं पुणो पुणो कायव्वं जाव उवरिम-विरलणा परिसमत्तेत्ति । एत्थ पुण हेट्ठिम-उवरिमविरलणाओ सरिसाओ त्ति एगमवि रूवं ण परिहायदि । पुणो एत्थ एत्तियं परिहायदि त्ति वुच्चदे । तं जहा- हेट्ठिमविरलण रूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि किं परिहाणिं लभामो त्ति रूवाहियसेढितदियवग्गमूलेण सेढितदियवग्गमूले भागे हिदे एग-रूवस्स असंखेज्जभागा आगच्छंति त्ति किंचूणेगरूवं सरिसच्छेदं काऊण तदियवग्ग-मूलम्हि अवणिदे सेढिविदियवग्गमूलं रूवाहियसेढितदियवग्गमूलेण भजिदएगभागो[1] छट्ठ-सत्तमपुढवीमिच्छाइट्ठिदव्वाणं भागहारो होदि । तेण जगसेढिम्हि भागे हिदे छट्ठ-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि ।

पुणो सेढिछट्ठमवग्गमूलं विरलिय जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि

अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि होती है । इसप्रकार जब तक उपरिम विरलन समाप्त होवे तब तक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये । परंतु यहां अधस्तन और उपरिम विरलन समान हैं, इसलिये एक भी विरलनांककी हानि नहीं होती है । फिर भी यहां इतनी हानि होती है आगे उसीको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है- उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके जगश्रेणीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलके भाजित करने पर एकके असंख्यात बहुभाग प्राप्त होते हैं, इसलिये कुछ कम एकको समान छेद करके तृतीय वर्गमूलमेंसे घटा देने पर जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको जगश्रेणीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे भाजित करके जो एक भाग लब्ध आवे वह छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका भागहार होता है । उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है ।

उदाहरण— $\frac{१०२४}{१}$ $\frac{१०२४}{१}$ ६४ वार.

$१०२४ - ५१२ = २$

$\frac{५१२}{१}$ $\frac{५१२}{१}$

$६५५३६ \div \frac{१२८}{३} = १५३६.$

यदि १ अधिक अधस्तन विरलनमात्र अर्थात् ३ स्थान जाकर उपरिम विरलनमें एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनोंमें कितने विरलनोंकी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर २१$\frac{१}{३}$ की हानि प्राप्त होती है । इसे उपरिम विरलन ६४ मेंसे घटा देने पर ४२$\frac{२}{३}$ आते हैं । इसका जग-श्रेणीमें भाग देने पर १०२४÷५१२=१५३६ प्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है ।

अनन्तर जगश्रेणीके छठे वर्गमूलको विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक

१ प्रतिषु ' गुण ' इति पाठ ।

२ प्रतिषु ' जगभागो ' इति पाठः ।

पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं पावेदि । पुणो छट्ठ-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वेहि पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि भागे हिदे सेढितदियवग्गमूलादीणं हेट्ठा चउण्हं वग्गाणं अण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिं रूवाहियसेढितदियवग्गमूलेण खंडिदेयखंडमागच्छदि । पुणो वि तं विरलेऊण उवरिमविरलणेगरूवधरिदपंचमपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छट्ठ-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं पावेदि । पुणो तमुवरिमविरलणम्हि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्सुवरि परिवाडीए पक्खित्ते हेट्ठिमविरलणमेत्तउवरिमविरलणरूवेसु पंचम छट्ठ-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं पावेदि एगरूवपरिहाणी च लब्भदि । पुणो तदणंतरउवरिमरूवोवरिट्ठिदपंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छट्ठ-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि । पुणो तमुवरिमविरलणाए सुण्णट्ठाणं मोत्तूण हेट्ठिमविरलणमेत्तपंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि पक्खित्ते रूवं पडि पंचम-छट्ठ-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि विदियरूवपरिहाणी च लब्भदि । एवं पुणो पुणो कायव्वं जाव उवरिमविरलणा परिसमत्तेत्ति । एत्थ परिहीणरूवपमाण-

एकके ऊपर जगश्रेणीको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति पांचवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे पांचवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें भाग देने पर, जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर नीचेके चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे जगश्रेणीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे खंडित करने पर एक खंड आता है। पुनः उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त पांचवी पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर उपरिम विरलनमें उस शून्यस्थानको (जिसके द्रव्यको अधस्तन विरलनमें बांटा है उसे) छोड़कर पांचवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर क्रमसे प्रक्षिप्त करने पर अधस्तन विरलनप्रमाण उपरिम विरलनके अंकों पर पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एककी हानि प्राप्त होती है। पुनः तदनन्तर उपरिम विरलनके एक अंक पर स्थित पांचवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर उपरिम विरलनमें उस शून्यस्थानको (जिसके द्रव्यको अधस्तन विरलनमें बांटा है उसे) छोड़कर अधस्तन विरलनप्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यको पांचवी पृथिवीके द्रव्यमें मिला देने पर प्रत्येक एकके प्रति पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और दूसरे अंककी हानि भी प्राप्त होती है। इसप्रकार जबतक उपरिम विरलन समाप्त होवे तबतक पुनः पुनः करना चाहिये। अब यहां पर हानिरूप विरलनोंका प्रमाण लाते हैं। वह इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन

माणिज्जदे। तं जहा– हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडियरूवपरिहाणिं लभामो त्ति रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए जगसेढिछट्ठवग्गमूलमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे सेढिविदियवग्गमूलं तदियादिचउण्हं वग्गाणमण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिम्हि रूवाहियसेढितादियवग्गमूलं पक्खिविय अवहिद-एगभागो तिण्हं पुढवीणं अवहारकालो होदि। तेण जगसेढिम्हि भागे हिदे पंचमादि-तिण्हं हेट्ठिमपुढवीणं मिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि।

पुणो जगसेढिम्हि अट्ठमवग्गमूलं विरलेऊण जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि। पुणो चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पंचमादि-हेट्ठिमतिपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वेहि ओवट्टिय लद्धं हेट्ठा विरलिय चउत्थपुढविदव्वं उवरिम-विरलणाए पढमरूवोवरि ट्ठिदं समखंडं करिय दिण्णे पंचमादिहेट्ठिमतिपुढविमिच्छाइट्ठि-

विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनोंमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे जग-श्रेणीके छठे वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे उसी जगश्रेणीके छठे वर्गमूलमेंसे घटा देने पर जो आता है वह जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूल आदि चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमें एक अधिक तृतीय वर्गमूलको मिलाकर जो जोड़ आवे उससे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करने पर जो एक भाग लब्ध आवे उतना होता है और यही पूर्वोक्त तीन पृथिवियोंका अवहारकाल है। उक्त अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर पांचवी आदि तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है।

उदाहरण—२०४८ २०४८
१ १ ३२ वार,

$२०४८ - १५३६ = \frac{४}{३}$;

१५३६ ५१२
१ $\frac{१}{३}$

$६५५३६ - \frac{१२८}{७} = ३५८४$

अधस्तन विरलन $१\frac{१}{३}$ में १ जोड़कर $२\frac{१}{३}$ होते हैं। यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $\frac{९६}{७}$ हानिरूप अंक आते हैं। इसे उपरिम विरलन ३२ मेंसे घटा देने पर $\frac{१२८}{७}$ आते हैं। इसका जगश्रेणीमें भाग पर ३५८४ प्रमाण पांचवी आदि तीन पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है।

अनन्तर जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको पांचवी आदि नीचेके तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे नीचे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके प्रथम एक पर स्थित चौथी पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर

दव्वं पावेदि । एत्थ पुव्वं व समकरणं कादव्वं । एत्थ परिहीणरूवाणं पमाणमाणिज्जदे । तं जहा- हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि उवरिमविरलणम्हि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडियरूवपरिहाणिं लभामो त्ति रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए जगसेढिअट्ठमवग्गमूलमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तमपुढवीणं सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिसलागाहि जगसेढिविदियवग्गमूलमोवट्टिय चउत्थपुढविआदिहेट्ठिम-मिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि । तेण जगसेढिम्हि भागे हिदे चउण्हं पुढवीणं मिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि ।

पुणो जगसेढिदसमवग्गमूलं विरलेऊण जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि

प्रत्येक एक पर पांचवीं आदि नीचेकी तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर समीकरण पहलेके समान कर लेना चाहिये। अब यहां पर हानिरूप अंकोंका प्रमाण लाते हैं। वह इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे जग-श्रेणीके आठवें वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे उसी जगश्रेणीके आठवें वर्गमूल-मेंसे घटा देने पर जो आता है वह चौथी, पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीकी सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गईं मिथ्यादृष्टि शलाकाओंसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आता है उतना होता है। और यही चौथी आदि नीचेकी चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल है। उक्त अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है।

उदाहरण—४०९६ ४०९६
    १   १ १६ वार

$४०९६ \div ३५८४ = \frac{८}{७}$;

३५८४ ५१२
  १   $\frac{१}{७}$

$६५५३६ - \frac{१२८}{१५} = ७६८०$,

अधस्तन विरलन $१\frac{१}{७}$ में १ जोड़ने पर $२\frac{१}{७}$ होते हैं। यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलन १६ में कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $\frac{११२}{१५}$ हानिरूप अंक आते हैं। इसे उपरिम विरलन १६ मेंसे घटा देने पर $\frac{१२८}{१५}$ होता है जो सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गईं चौथी आदि चार पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि शलाकाओं १ + २ + ४ + ८ = १५ से जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूल १२८ को अपवर्तित करने पर जितना आता है उतनेके बराबर होता है। इससे ६५५३६ प्रमाण जगश्रेणीके भाजित करने पर ७६८० प्रमाण चौथी आदि चार पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है।

अनन्तर जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जगश्रेणीको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति

तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं पावेदि। पुणो तं तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं हेट्ठिमचउत्थ-पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वेण ओवट्टिय लद्धं विरलेऊण तदियपुढविदव्वमुवरिमविरलणपढम-रूवोवरि ट्ठिदं घेत्तूण समखंडं करिय दिण्णे चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं रूवं पडि पावेदि। पुणो एदं उवरिमविरलणट्ठिदतदियपुढविदव्वम्हि दाऊण पुव्वं व समकरणं करिय परि-हाणिरूवाणि आणेयव्वाणि। तं जहा– हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एग-रूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडियरूवपरिहाणिं पेच्छामो त्ति रूवाहिय-हेट्ठिमविरलणाए सेढिदसमवग्गमूलमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव सरिसच्छेदं काऊण अवणिदे तदियादिपंचपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तस्स पमाणं केत्तियं? तदियादि-पंचपुढवीणं सत्तमपुढविदव्वस्स सलागाहि सेढिविदियवग्गमूलम्हि ओवट्टिदे जं लद्धं

तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः उस तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको नीचेकी चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका विरलन करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके प्रथम अंकके ऊपर स्थित तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको ग्रहण करके और समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति चौथी आदि चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः इस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यको उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त तीसरी पृथिवीके द्रव्यके ऊपर देकर पहलेके समान समीकरण करके हानिरूप विरलन अंक ले आना चाहिये। जैसे– उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलन-मात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे समान छेद करके जगश्रेणीके उसी दशवें वर्गमूलमेंसे अपनयन करने पर तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहार-काल होता है।

उदाहरण— $\frac{८१९२}{१}$ $\frac{८१९२}{१}$ ८ वार,

$८१९२ \div ७६८० = \frac{१६}{१५}$,

$\frac{७६८०}{१}$ $\frac{५१२}{\frac{१}{१५}}$

अधस्तन विरलन $१\frac{१}{१५}$ में १ मिला देने पर $२\frac{१}{१५}$ होते हैं। यदि इतने स्थान जाकर उप-रिम विरलनमें १ की हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमात्र ८ स्थान जाने पर कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $\frac{१२०}{३१}$ की हानि आ जाती है। इसे उपरिम विरलन ८ मेंसे घटा देने पर $\frac{१२८}{३१}$ शेष रहते हैं।

शंका— तृतीयादि पांच पृथिवियोंके उक्त भागहारका प्रमाण कितना है?

समाधान— तृतीयादि पांच पृथिवियोंकी सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा की गई शलाकाओंसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलके अपवर्तित करने पर जितना लब्ध आवे

तत्तियमेत्तं । तेण जगसेढिम्हि भागे हिदे पंचपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि । पुणो सेढिबारसवग्गमूलं विरलेऊण जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि । हेट्ठिमपंचपुढविदव्वेण तमोवट्टिय लद्धं विरलिय उवरिमविरलणपढमरूवोवरि ट्ठिदविदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तदियादिपंचपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि । तमुवरिमविरलणोवरि ट्ठिदविदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्सुवरि पक्खिविय समकरणं करिय परिहाणिरूवाणि आणेयव्वाणि । तेसिं पमाणमेगवारेणाणिज्जदे । तं जहा– रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडियरूवपरिहाणिं पेच्छामो त्ति रूवाहियहेट्ठिम विरलणाए सेडिबारसवग्गमूलमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव सरिसच्छेदं काऊण अवणिदे

तन्मात्र उक्त भागहारका प्रमाण है। उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर तृतीयादि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है।

उदाहरण—१६ + ८ + ४ + २ + १ = ३१; $१२८ \div ३१ = \frac{१२८}{३१}$,

$६५५३६ \div \frac{१२८}{३१} = १५८७२$ तृतीयादि पांच पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य।

अनन्तर जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर उस दूसरी पृथिवीके द्रव्यको नीचेकी तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपरिम विरलनके प्रथम अंक पर स्थित दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खण्ड करके दे देने पर अधस्तन विरलनराशिके प्रत्येक एकके प्रति तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः इस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यको उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर प्रक्षिप्त करके पहलेके समान समीकरण करके हानिरूप अंक ले आना चाहिये। आगे उन्हीं हानिरूप अंकोंका एकवारमें प्रमाण लाते हैं। जैसे—

उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनके प्रमाणसे जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे समान छेद करके उसी जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलमेंसे घटा देने पर द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल प्राप्त होता है।

बिदियादिछप्पुढविअवहारकालो होदि। तस्स पमाणं केत्तियं? बिदियादिछप्पुढवीणं सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिसलागाहि जगसेढिबिदियवग्गमूलमवहिदएगभागो हवदि। तेण जगसेढिम्हि भागे हिदे छप्पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि। तं जगसेढिणा खंडेऊणेगखंडं सामण्णणेरइयविक्खंभसूचिम्हि अवणिय सेसेण जगसेढिम्हि भागे हिदे पढमपुढविअवहारकालो आगच्छदि। अहवा पुव्वमाणिदछप्पुढविदव्वेण सामण्णणेरइयअवहारकालं गुणेऊण तम्हि

उदाहरण—$\frac{१६३८४}{१}$ $\frac{१६३८४}{१}$ ४ वार

१६३८४ ÷ १५८७२ = $\frac{३२}{३१}$

$\frac{१५८७२}{१}$ $\frac{५१२}{\frac{१}{३१}}$

अधस्तन विरलन १$\frac{१}{३१}$ में १ मिला देने पर २$\frac{१}{३१}$ होता है। यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती है तो उपरिम विरलनमात्र ४ स्थान जाकर कितनी हानि प्राप्त होगी? इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $\frac{१२५}{६३}$ हानिरूप अंक आ जाते हैं। इसे उपरिम विरलन ४ मेंसे घटा देने पर $\frac{१२८}{६३}$ प्रमाण द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल होता है।

शंका—द्वितीयादि छह पृथिवियोंके उक्त भागहारका प्रमाण कितना है?

समाधान—सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा की गई द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि शलाकाओंसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर जो एक भाग लब्ध आता है उतना द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल है। उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है।

उदाहरण—३२ + १६ + ८ + ४ + २ + १ = ६३, १२८ ÷ ६३ = $\frac{१२८}{६३}$ द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल।

६५५३६ ÷ $\frac{१२८}{६३}$ = ३२२५६ द्वितीयादि छह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य।

उक्त छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको जगश्रेणीसे खण्डित करके जो एक खण्ड लब्ध आवे उसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा कर जो शेष रहे उससे जगश्रेणीको भाजित करने पर पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है।

उदाहरण—३२२५६ ÷ ६५५३६ = $\frac{६३}{१२८}$; २ − $\frac{६३}{१२८}$ = $\frac{१९३}{१२८}$;

६५५३६ ÷ $\frac{१९३}{१२८}$ = $\frac{८३८८६०८}{१९३}$ प्र. पृ. मि. अव.

अथवा, पहले लाये हुए छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणसे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंके अवहारकालको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें पहली पृथिवीके

पढमपुढविदव्वेण भागे हिदे सव्वत्थुप्पण्णपक्खेवअवहारकालो आगच्छदि। तं सरिसच्छेदं काऊण सामण्णअवहारकालम्हि पक्खित्ते पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि।

एत्थ परिहाणिपक्खेवाणं सुहावगमणट्ठं संदिट्ठिं वत्तइस्सामो। तं जहा– सोलस रूवाणि विरलिय वेसदछप्पण्णं रूवं पडि समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स सोलस सोलस रूवाणि पावेंति। एत्थ तिण्हं रूवाणं वड्डिमिच्छामो त्ति वड्डिरूवेहि एगरूवधरिद-मोवट्टिदे पंचरूवाणि सतिभागाणि आगच्छंति। ताणि हेट्ठा विरलिय एगरूवधरिद-सोलसरूवाणि समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तिण्णि तिण्णि रूवाणि पावेंति। एग-रूवतिभागस्स एगरूवं पावेदि। तं कधं? सकलेगरूवस्स जदि तिण्णि रूवाणि लब्भंति तो एगरूवतिभागस्स किं लभामो त्ति फलेण इच्छं गुणिय पमाणेण भागे हिदे एगमेव

मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणका भाग देने पर सब जगह उत्पन्न हुआ प्रक्षेप अवहारकाल आता है। उस प्रक्षेप अवहारकालको समान छेद करके सामान्य अवहारकालमें मिला देने पर पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है।

उदाहरण— $\frac{३२७६८ \times ३२२५६}{९८८१६} = \frac{२०६४३८४}{१९३}$ प्र. अव.

$३२७६८ + \frac{२०६४३८४}{१९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३}$ प्र. पृ. मि. अव.

अब यहां पर हानिरूप और प्रक्षेपरूप अंकोंके सरलतासे ज्ञान करानेके लिये संदृष्टि बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

सोलह अंकोंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दोसौ छप्पन अंकोंको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सोलह सोलह संख्या प्राप्त होती है। यहां पर हम तीन संख्याकी वृद्धि करना चाहते हैं, इस-लिये वृद्धिरूप संख्या तीनसे एक विरलनके प्रति प्राप्त सोलहको अपवर्तित करने पर एक तृतीय भाग सहित पांच पूर्णांक लब्ध आते हैं। इसे पूर्व विरलनके नीचे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति एक विरलनके प्रति प्राप्त सोलहको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलनराशिके प्रत्येक एकके प्रति तीन संख्या प्राप्त होती है। तथा एक तृतीयांशके प्रति एक संख्या प्राप्त होती है, क्योंकि, पूर्णांकरूप एक विरलनके प्रति यदि तीन संख्या प्राप्त होती है तो एक तृतीयांशके प्रति क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके फल राशि तीनसे इच्छाराशि एक तृतीयांशको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि एकका भाग देने पर एक संख्या ही प्राप्त होती है।

उदाहरण—विरलन १६, देय २५६, वृद्धिरूप अंक ३,

१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१

रूवं लब्भदि त्ति। पुणो ताणि तिण्णि रूवाणि घेत्तूण उवरिमविरलणपंचरूवोवरि ट्ठिद-पंचसु सोलसेसु परिवाडीए पक्खित्ते रूवं पडि एक्कूणवीसरूवाणि हवंति। पुणो सत्तम-रूवं तिण्णि भागे करिय तेसिं तिभागाणं सोलसरूवाणि समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स तिभागस्स सतिभागपंचरूवाणि पावेंति। पुणो एगरूवतिभागधरिदसतिभागं पंचरूवं तत्थेव ट्ठविय सेस-वे-तिभागे अप्पणो धरिदरासिसहिदं पुध ट्ठविय पुणो सट्ठाणट्ठिद-एगरूवतिभागेण धरिदसतिभागपंचरूवेसु हेट्ठिमविरलणाए तिभागरूवोवरि ट्ठिद-एगरूवं पक्खित्ते तत्थ सतिभाग छ-रूवाणि[1] हवंति, एत्थ एगरूवपरिहाणी लद्धा। पुणो तदणंतररूवधरिद-सोलसरूवाणि हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे पुव्वं व रूवं पडि तिण्णि तिण्णि रूवाणि पावेंति। पुणो तत्थ सकलपंचरूवोवरि ट्ठिद-तिण्णि रूवाणि घेत्तूण सुण्णट्ठाणं वंचिय उवरिमविरलण-पंचरूवोवरि ट्ठिद-पंचसु सोलसेसु परिवाडीए पक्खित्तेसु रूवं पडि एगूणवीसरूवाणि हवंति। पुणो पुव्वमाणेऊण पुध ट्ठविद-वे-

$$१६ \div ३ = ५\frac{१}{३}, \quad \frac{३}{१} \quad \frac{३}{१} \quad \frac{३}{१} \quad \frac{३}{१} \quad \frac{३}{१} \quad \frac{१}{\frac{१}{३}}$$

पुनः नीचेके विरलनके प्रति प्राप्त उन तीन तीन अंकोंको लेकर उपरिम विरलनके (द्वितीयादि) पांच विरलन अंकों पर स्थित पांच सोलह अंकोंके ऊपर परिपाटी क्रमसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त होते हैं। पुनः सप्तम विरलनरूप एक अंकके तीन भाग करके उन तीन भागोंके ऊपर सोलहको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एक त्रिभागके प्रति एक त्रिभागसहित पांच अंक प्राप्त होते हैं। अनन्तर एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एक त्रिभागसहित पांच अंकोंको वहीं पर रखकर और शेष दो त्रिभागोंको अपने ऊपर रखी हुई राशिके साथ अलग स्थापित करके अनन्तर अपने स्थान पर स्थित एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एक त्रिभागसहित पांच अंकोंमें अधस्तन विरलनके एक त्रिभागके ऊपर स्थित एकको मिला देने पर वहां एक त्रिभागसहित छह अंक आ जाते हैं। इसप्रकार यहां एक विरलन अंककी हानि प्राप्त हुई। पुन उसके अर्थात् सातवें विरलनके अनन्तर एक विरलन अंक पर स्थित सोलहको अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर पहलेके समान अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तीन तीन अंक प्राप्त होते हैं। अनन्तर वहां पूर्णांक पांच विरलनरूप अंकोंके ऊपर स्थित तीन संख्याको ग्रहण करके शून्यस्थानको (जिस आठवे स्थानके १६ को अधस्तन विरलनमें बांटा है उसे) छोड़कर उपरिम विरलनके पांच विरलन अंकोंके ऊपर स्थित पांच सोलह अंकोंके ऊपर क्रमसे प्रक्षिप्त कर देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त होते हैं। अनन्तर पहले लाकर अलग स्थापित दो त्रिभागोंमेंसे एक त्रिभागके ऊपर रक्खे हुए

१ प्रतिषु ' सरूवाणि ' इति पाठः।

तिभागेसु एगतिभागधरिदसतिभागपंचरूवमाणेऊण तदणंतरखेत्तं ठविय[1] एगरूवति-भागधरिदएगरूवं तत्थ पक्खित्ते एत्थ वि सतिभाग-छ-रूवाणि हवंति, विदियरूव-परिहाणी च लब्भदि। पुणो तदणंतररूवोवरि ट्ठिद-सोलसरूवाणि घेत्तूण हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तिण्णि तिण्णि रूवाणि पावेंति। तत्थ वेरूवधरिद-तिण्णि रूवाणि घेत्तूण तदणंतरवेरूवधरिदसोलसरूवेसु पक्खित्तेसु एगूणवीसरूवाणि हवंति। ताणं दोण्हं रूवाणमंते पुव्वमवणिदएगरूवतिभागधरिदसतिभागपंचरूवमाणेऊण ठविय तत्थ हेट्ठिमविरलणाए एगरूवतिभागोवरिट्ठिदएगरूवं पक्खित्ते सतिभाग-छ-रूवाणि हवंति। सेसाणि तिण्णिरूवधरिदणवरूवाणि तहा चेव अवचिट्ठंते। तेसिं विरलणरूवमुप्पा-

एक त्रिभागसहित पांच अंकोंको लाकर पहले रक्खे हुए एक त्रिभागसहित छह के अनन्तर स्थापित करके और उसमें अधस्तन विरलनके एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एकको मिला देने पर यहां भी एक त्रिभागसहित छह अंक हो जाते हैं और दूसरे विरलन अंककी हानि प्राप्त होती है। पुनः उसके (जहांतक उपरिम विरलनमें तीन अंक दिये गये हैं उसके) अनन्तरके विरलन अंकके ऊपर स्थित सोलह संख्याको ग्रहण करके और अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति समान खंड करके दे देने पर अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तीन तीन अंक प्राप्त होते हैं। उनमेंसे दो विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन अंकोंको ग्रहण करके उन्हें उपरिम विरलनमें पहले जहांतक तीन अंक दिये जा चुके हैं उसके अनन्तरके दो उपरिम विरलनोंके प्रति प्राप्त सोलह संख्यामें मिला देने पर प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस संख्या प्राप्त होती है। तथा पहले निकाले हुए एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एक त्रिभागसहित पांच संख्याको उन दो अंकोंके अन्तमें लाकर स्थापित करके उसमें अधस्तन विरलनके एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एक संख्याको मिला देने पर एक त्रिभागसहित छह होते हैं। अधस्तन विरलनके शेष तीन अंकोंके प्रति प्राप्त नौ अंक उसीप्रकार स्थित रहते हैं।

उदाहरण—

	३	३	३	३	३			३	३	३	३	३		३	३
×	१६	१६	१६	१६	१६	*	×	१६	१६	१६	१६	१६	×	१६	१६
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१

५$\frac{१}{३}$ + १ = ६$\frac{१}{३}$ ५$\frac{१}{३}$ + १ = ६$\frac{१}{३}$ ५$\frac{१}{३}$ + १ = ६$\frac{१}{३}$=१९

$\frac{१}{३}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{३}$

यहां सातवें विरलनके तीन भाग किये और उस पर १६ को वांटा तव ५$\frac{१}{३}$ प्राप्त हुआ। अनन्तर अधस्तन विरलनके $\frac{१}{३}$ के प्रति प्राप्त एक जोड़ा तव ६$\frac{१}{३}$ हुआ।

				३	३	३ = ९ शेष रहे।
तीसरीवार अधस्तन विरलन	$\frac{१}{३}$	१	१	१	१	१

(जिन अंकों पर × ऐसा चिन्ह है उनका द्रव्य अधस्तन विरलनमें वांटा गया है। तथा जिस पर * ऐसा चिन्ह है उसके तीन भाग करके उसका द्रव्य उन तीनों भागोंमें वांटा है।)

१ अ-आ प्रत्यो 'तक्कणंतरखेत्तविय' इति पाठः।

इज्जदे। तं जहा– एगूणवीसरूवाणं जदि एगं विरलणरूवं लब्भदे तो णवण्हं रूवाणं किं लभामो त्ति एगूणवीसेहि फलगुणिदिच्छाए भागे हिदे एगरूवं[1] एगूणवीस खंडाणि काऊण तत्थ णव खंडाणि आगच्छंति। अवणिदसेसाणि रूवाणि एगट्ठे कदे तेरहरूवाणि एगरूवं एगूणवीसखंडाणि कदे णव खंडाणि च हवंति। संपहि परिहाणिरूवाणि आणिज्जंते। तं जहा– हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सतिभागतिण्हं रूवाण किं लभामो त्ति फलगुणिदइच्छम्हि पमाणेण भागे हिदे एगरूवं एगूणवीसखंडाणि कदे तत्थ दस खंडाणि लब्भंति। पुव्वलद्ध-दो-रूवाणि तत्थ पक्खित्ते परिहाणिरूवाणि हवंति। अहवा सव्वहीणरूवाणि एगवारेणाणिज्जंते। तं जहा– हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिम-

अब उन अवशिष्ट नौ अंकोंका विरलन कितना होगा यह उत्पन्न करके बतलाते हैं। वह इसप्रकार है— उन्नीस अंकोंके प्रति यदि एक विरलन प्राप्त होता है तो नौ अंकोंके प्रति कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि नौको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि उन्नीसका भाग देने पर एकके उन्नीस खंड करके उनमेंसे ९ खंड लब्ध आते हैं। इसप्रकार उपरिम विरनलमेंसे जितनी संख्या घट जाती है उससे शेष रहे हुए सभी अंकोंको एकत्रित करने पर पूर्णांक तेरह और एक अंकके उन्नीस खंड करके उनमेंसे नौ खंड होते हैं।

उदाहरण—प्रमाणराशि १९; फलराशि १, इच्छाराशि ९;

$९ \times १ = ९;\ ९ - १९ = \frac{९}{१९}$ नौके प्रति विरलनरूपका प्रमाण।

$१६ - २\frac{१०}{१९} = १३\frac{९}{१९}$ कुल विरलनरूप अंकोंका प्रमाण।

अब हानिरूप अंक लाते हैं। जैसे- एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो एक त्रिभागसहित तीन विरलनस्थानोंके प्रति क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि एक त्रिभागसहित तीन विरलनको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि एक अधिक अधस्तन विरलनका भाग देने पर एकके उन्नीस खंड करने पर उनमें दश खंड लब्ध आते हैं। पुनः पहले लब्ध आये हुए दोको उसमें मिला देने पर संपूर्ण हानिरूप अंक हो जाते हैं।

उदाहरण—प्रमाणराशि $\frac{१९}{३}$, फलराशि १; इच्छाराशि $\frac{१०}{३}$;

$\frac{१०}{३} \times १ = \frac{१०}{३};\quad \frac{१०}{३} - \frac{१९}{३} = \frac{१०}{१९};\quad \frac{१०}{१९} + २ = २\frac{१०}{१९}$ हानि अंक।

अथवा, संपूर्ण हानिरूप विरलनस्थान एकवारमें लाते हैं। जैसे— एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें

१ अ. प्रतौ 'एवरूवं', आ. का. प्रत्यो 'णवरूव' इति पाठ.।

विरलणम्हि किं लभामो त्ति रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए फलगुणिदिच्छाए भागे हिदाए सव्वपरिहीणरूवाणि आगच्छंति। ताणि उवरिमविरलणरूवेसु अवणिदे अवहारकालो होदि। एवं सव्वत्थ समकरणविहाणं जाणिऊण वत्तव्वं।

संपहि रासिपरिहाणिविहाणं वत्तइस्सामो। तं जहा– तत्थ ताव तिण्हं रूवाणं परिहाणिं उच्चदे– उवरिमविरलणरूवधरिदसोलसरूवेसु हेट्ठिमविरलणाए सगलेगरूवधरिद-तिण्णि रूवाणि रूवं पडि अवणिय पुध ट्ठवेयव्वाणि। संपहि उवरिमविरलणमेत्ततिण्णि रूवाणि अवणिदसेसपमाणेण कस्सामो। तं जहा– उवरिमविरलणचउरूवधरिदतिण्णि तिण्णि रूवाणि एगट्ठं करिय पुणो पंचमरूवधरिदतिण्हं रूवाणं तिभागं घेत्तूण तत्थ पक्खित्ते अवणिदसेसपमाणं[1] होदि। हेट्ठिमविरलणाए अंते एगरूवं विरलिय अणंतरुप्पण्ण

कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि सोलहको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र इच्छाराशिका भाग देने पर संपूर्ण हानिरूप विरलनस्थान आ जाते हैं। इन्हें उपरिम विरलनकी संख्यामेंसे घटा देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है। इसीप्रकार सर्वत्र समीकरण विधानको जानकर कथन करना चाहिये।

उदाहरण—प्रमाणराशि $६\frac{१}{३}$, फलराशि १; इच्छाराशि १६.

$$१६ \times १ = १६ \quad १६ \div \frac{१९}{३} = २\frac{१०}{१९} \text{ हानिरूप अंक।}$$

$$१६ - २\frac{१०}{१९} = १३\frac{९}{१९} \text{ अवहारकाल।}$$

अब राशिके हानिरूप विधानको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है–उस विषयमें तीन अंकोंकी हानिका कथन किया जाता है– उपरिम विरलनके प्रत्येक विरलनके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे अधस्तन विरलनके सकल एक विरलनके प्रति प्राप्त तीन संख्याको घटा कर पृथक् स्थापित कर देना चाहिये। अब उपरिम विरलनमात्र अर्थात् सोलहवार स्थापित तीन तीन अंकोंको, उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे तीन घटा देने पर जो शेष रहता है, उसके प्रमाणसे करते हैं। जैसे—उपरिम विरलनके चार विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन तीन अंकोंको एकत्रित करके पुनः पांचवें विरलनके ऊपर रखे हुए तीनके त्रिभागको ग्रहण करके मिला देने पर सोलहमेंसे तीनको घटा कर जो शेष रहता है उसका प्रमाण होता है। इस अभी उत्पन्न हुए तीनको घटा कर शेष रहे हुए प्रमाणको अधस्तन विरलनके अन्तमें एकका विरलन करके उसके ऊपर दे देना चाहिये। पुन उपरिम विरलनके चार विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन तीन संख्याको

१ प्रतिषु 'अवणिदे सेसरूवाण' इति पाठः।

अवणिदसेसरूवपमाणं दादव्वं। पुणो उवरिमविरलणम्हि चउरूवधरिदतिण्णि तिण्णि रूवाणि एगट्ठं करिय पुव्वट्ठविदवेतिभागम्हि[2] एगं तिभागं घेत्तूण पक्खित्ते एदमवि अवणिदसेसपमाणं होदि। एदस्स कारणेण पुव्वविरलिदएगरूवस्स पासे अवरमेगरूवं विरलिय तस्सुवरि सो संपहि वुप्पण्णअवणिदसेसरासी दादव्वो। पुणो वि उवरिम-विरलणचउरूवधरिदतिण्णि तिण्णि रूवाणि मेलाविय पुध ट्ठविय तिभागं तत्थ पक्खित्ते एदमवि अवणिदसेसपमाणं होदि। एदस्स कारणेण पुव्वविरलिददोण्हं रूवाणं पासे अण्णेगं रूवं विरलिय तस्सुवरि सो रासी ठवेयव्वो। पुणो अवसेसाणि तिरूवधरिदतिण्णि तिण्णि रूवाणि णव भवंति। एदाणं विरलणरूवाणं पमाणमुप्पाइज्जदे। रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्त-द्धाणं गंतूण जदि एगअवहारपक्खेवरूवं लब्भदि तो तिण्हं रूवाणं किं लभामो त्ति रूवूण-

एकत्रित करके पहले अलग स्थापित हुए तीनके दो त्रिभागोंमेंसे एक त्रिभागको ग्रहण करके मिला देने पर यह भी तीनको घटाकर जो शेष रहे उसका प्रमाण होता है। इसलिये पहले विरलन किये हुए एक विरलनके पासमें दूसरे एकको विरलित करके उसके ऊपर यह अभी उत्पन्न हुए तीनको घटाकर शेष रही राशि दे देना चाहिये। फिर भी उपरिम विरलनके चार विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन तीन संख्याको मिला कर अलग स्थापित करके तीनका त्रिभाग उसमें मिला देने पर यह भी तीन घटा कर शेष रही राशिका प्रमाण होता है। इसलिये पहले विरलन किये हुए दो विरलनोंके पासमें और एकका विरलन करके उसके ऊपर यह राशि स्थापित कर देना चाहिये। पुनः उपरिम विरलनके अवशिष्ट तीन विरलनोंके प्रति प्राप्त अवशेष तीन तीन अंक मिल कर नौ होते हैं।

उदाहरण—उपरिम विरलनके प्रत्येक १६ मेंसे ३ निकाल देने पर १३ रहते हैं। यथा–

१३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३
१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

अब १६ जगह जो ३ हैं उनको १३ रूप करनेके लिये इसप्रकार जोड़ो—

३+३+३+३+१=१३, ३+३+३+३+१=१३, ३+३+३+३+१=१३,
३+३+३=९

इसप्रकार उपरिम विरलनके १६ स्थानोंमें ये ३ और मिला देने पर कुल १९ स्थान होते हैं जिनमें प्रत्येक पर १३ प्राप्त हैं। बाकी ९ रहते हैं जिसके लिये $\frac{९}{१३}$ विरलन प्राप्त होगा। इसप्रकार १९$\frac{९}{१३}$ कुल विरलन अंक आते हैं। २५६ में भाग देकर १३ लब्ध लानेके लिये यही १९$\frac{९}{१३}$ भागहार है।

अब इन तीन विरलनके प्रति प्राप्त नौ अंकोंका विरलन प्रमाण उत्पन्न करते हैं— एक कम अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एक अवहारप्रक्षेपशलाका उत्पन्न होती है तो तीनके

२ प्रतिषु 'जेत्तियाभागम्हि' इति पाठः।

हेट्ठिमविरलणाए तिण्णि रूवाणि ओवट्टिदे एगरूवं तेरहखंडाणि कदे तत्थ णव खंडाणि हवंति। एदं पुव्विल्लतिण्हं रूवाणं पासे विरलिय एदस्सुवरि णव रूवाणि दादव्वाणि। अहवा सव्वपक्खेवरूवाणि एगवारेण आणिज्जंते। तं जहा– रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगा अवहारपक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केत्तियाओ अवहारपक्खेवसलागाओ लभामो त्ति पमाणेण इच्छाए ओवट्टिदाए सव्वाओ पक्खेव-सलागाओ लब्भंति। एदाओ उवरिमविरलणम्हि पक्खित्ते इच्छिदअवहारकालो होदि। एवं सव्वत्थ रासिपरिहाणिम्हि जाणिऊण समकरणं कायव्वं।

अहवा सामण्णअवहारकालं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स जगपदरं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि। तत्थ एगरूवधरिदसामण्णणेरइय-

प्रति क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक कम अधस्तन विरलनसे तीनको अपवर्तित करने पर एकके तेरह खंड करने पर उनमेंसे नौ खण्ड लब्ध आते हैं। इसे पूर्वोक्त तीन विरलन अंकोंके पासमें विरलित करके इसके ऊपर नौ अंक दे देना चाहिये।

उदाहरण—$५\frac{१}{३} - १ = ४\frac{१}{३}$ प्रमाणराशि; १ फलराशि; ३ इच्छाराशि।

$३ \times १ = ३ \div \frac{१३}{३} = \frac{९}{१३}$ तीन विरलनोंके प्रति तीन तीन रूपसे दिये हुए ९ अंकोंका अवहारकाल।

अथवा, संपूर्ण प्रक्षेपरूप अवहारकालको एकवारमें लाते हैं। जैसे— एक कम अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें कितनी प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि उपरिम विरलनको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें एक कम अधस्तन विरलन-मात्र प्रमाणराशिका भाग देने पर संपूर्ण अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं आ जाती हैं। इनको उपरिम विरलनमें मिला देने पर इच्छित अवहारकाल होता है। इसीप्रकार सर्वत्र राशिकी हानिमें जानकर समीकरण करना चाहिये।

उदाहरण—प्रमाणराशि $४\frac{१}{३}$, फलराशि १; इच्छाराशि १६,

$$१६ \times १ = १६;\ १६ \div \frac{१३}{३} = \frac{४८}{१३} \text{ प्रक्षेप अवहारकाल।}$$

$$१६ + \frac{४८}{१३} = १९\frac{९}{१३} \text{ इच्छित अवहारकाल।}$$

अथवा, सामान्य अवहारकालका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगप्रतरको समान खंड करके देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि प्राप्त होती है।

मिच्छाइट्ठिदव्वं सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणेण कस्सामो । तं जहा-सेढिविदियवग्गमूलभजिदजगसेढीए जदि एक्कं सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं लब्भदि तो सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि केत्तियं लभामो त्ति फलेण इच्छं गुणिय पमाणेण भागे हिदे विक्खंभसूचिगुणिदसेढिविदियवग्गमूलमेत्ताणि सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वखंडाणि आगच्छंति । एवं सामण्णणेरइयअवहारकालरूवाणमुवरि ट्ठिदसामण्णणेरइयरासी पत्तेयं पत्तेयं सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणेण कायव्वो । पुणो तत्थ एगरूवधरिदखंडेसु सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं[1] एगखंडपमाणं होदि । छट्ठपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं सेढितदियवग्गमूलमेत्तखंडाणि घेत्तूण भवदि । पुणो पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं सेढितदियवग्गमूलादिचउवग्गमूलाणि गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि घेत्तूण हवदि ।

उदाहरण— $\frac{१३१०७२}{१}$ $\frac{१३१०७२}{१}$ सा. ना. मि. रा. ३२७६८ वार.

अब एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यको सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणरूपसे करके बतलाते हैं । जैसे— जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर यदि एकवार सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है तो सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशिसे इच्छाराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशिका भाग देने पर जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको विष्कंभसूचीसे गुणित करके जो लब्ध आवे उतने सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके खंड होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि $\frac{६५५३६}{१२८}$; फलराशि १; इच्छाराशि १३१०७२;

$$१३१०७२ \times १ = १३१०७२, \; १३१०७२ - \frac{६५५३६}{१२८} = २५६ = १२८ \times २ \text{ खंड.}$$

इसीप्रकार सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालकी संख्याके ऊपर स्थित प्रत्येक सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिको सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणरूपसे कर लेना चाहिये । परंतु वहां पर एक विरलनके प्रति प्राप्त खंडोंमें सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण एक खंड प्रमाण होता है । छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलमात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-खंडोंको लेकर होता है । पुनः पांचवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर चार वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर वहां जितना प्रमाण आवे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-खंडोंको लेकर होता है ।

---

१ प्रतिषु '-पमाणाण ' इति पाठ ।

चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं सेढितदियवग्गमूलादिछव्वग्गमूलाणि गुणिदे तत्थ जत्ति-याणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि घेत्तूण हवदि। तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं सेढितदिय-वग्गमूलादिअट्ठवग्गमूलाणि अण्णोण्णं गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि घेत्तूण पावदि। विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं तदियवग्गमूलादिदसवग्गमूलाणि अण्णोण्ण-ब्भत्थाणि कदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि घेत्तूण हवदि। पुणो एदाओ छपुढविमिच्छाइट्ठिखंडसलागाओ विक्खंभसूचीगुणिदसेढिविदियवग्गमूलादो सोधिदे[1] पढमपुढविमिच्छाइट्ठिखंडपमाणसलागा हवंति। एवं सामण्णअवहारकालमेत्तसामण्ण-णेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि खंडसलागाओ पुध पुध करिय दरिसेदव्वाओ। पुणो एवं ठविय पढमपुढविअवहारकालो उप्पाइज्जदे। तं जहा– पढमपुढविमिच्छाइट्ठिखंडसलागा-

चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर छह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर वहां जितना प्रमाण उत्पन्न होवे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-खंडोंको लेकर होता है। तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर आठ वर्ग-मूलोंके परस्पर गुणा करने पर वहां जितना प्रमाण आवे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-खंडोंको लेकर प्राप्त होता है। दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर दश वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर वहां जितना प्रमाण आवे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-खंडोंको लेकर होता है।

उदाहरण—सामान्य अवहारकालके एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य राशि १३१०७२ के सातवीं पृथिवीके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा खंड करने पर २५६ खंड हुए। उनमेंसे एक खंड प्रमाण सातवीं पृथिवीका द्रव्य है। दो खण्ड प्रमाण छठीका, चार खण्ड प्रमाण पांचवीका, आठ खण्ड प्रमाण चौथीका, १६ खण्ड प्रमाण तीसरीका और बत्तीस खण्ड प्रमाण दूसरीका द्रव्य है। इसप्रकार ये खण्डशलाकाएं ६३ होती हैं। यदि वर्गमूलोंके अपेक्षित तारतम्यसे खण्डशलाकाएं की जायं तो जो मूलमें कहा है तदनुसार खण्डशलाकाएं आवेंगी।

पुनः इन छह पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि खण्डशलाकाओंको विष्कंभसूची गुणित जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यके खंडोंका जितना प्रमाण हो उतनी खंड शलाकाएं लब्ध आती हैं।

उदाहरण—$१२८ \times २ = २५६$; $२५६ - ६३ = १९३$,

इसीप्रकार सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें खण्डशलाकाएं पृथक् पृथक् निकाल करके दिखलाना चाहिये। पुनः इसप्रकार खण्डशलाकाएं स्थापित करके प्रथम पृथिवीका अवहारकाल उत्पन्न करते हैं। वह इसप्रकार है— प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंसे यदि एक अवहारकालशलाका

१ अ. आ. प्रत्योः 'सोविदे' इति पाठः।

हिंतो जदि एगा अवहारकालसलागा लब्भदि तो सामण्णअवहारकालमेत्तसामण्णणेरइय-खंडसलागाणं किं लभामो त्ति पमाणेण इच्छाए ओवट्टिदाए पढमपुढविमिच्छाइट्ठि-अवहारकालो होदि। अहवा पढमपुढविमिच्छाइट्ठिखंडसलागाहि सामण्णअवहारकाल-मोवट्टिय लद्धेण छपुढविखंडसलागा गुणिदे पक्खेवअवहारकालो होदि। अहवा लद्धं छप्पाडिरासिं काऊण छण्हं पुढवीणं सग-सगखंडसलागाहि गुणिदे सग-सगपक्खेवअव-

प्राप्त होती है तो सामान्य अवहारकालमात्र नारक मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंकी कितनी खंडशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके प्रमाणराशि प्रथम पृथिवीसंबन्धी खण्ड-शलाकाओंसे इच्छाराशि सामान्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालगुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि खण्डशलाकाओंको अपवर्तित करने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है।

उदाहरण—प्रमाणराशि १९३; फलराशि १; इच्छाराशि ३२७६८ × २५६;

$$\frac{३२७६८ \times २५६}{१९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र. पृ. मि. अ.}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि खंड-शलाकाओंके गुणित करने पर प्रक्षेप अवहारकाल होता है।

उदाहरण—$३२७६८ - १९३ = \frac{३२७६८}{१९३}$; $\frac{३२७६८}{१९३} \times ६३ = \frac{२०६४३८४}{१९३}$ प्र. अ. का.

अथवा, प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आया उसकी छह प्रतिराशियां करके छह पृथिवियोंकी अपनी अपनी शलाकाओंसे गुणित करने पर अपना अपना प्रक्षेप अवहारकाल होता है।

उदाहरण—$\frac{३२७६८}{१९३} \times १ = \frac{३२७६८}{१९३}$ सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा,

$\frac{३२७६८}{१९३} \times २ = \frac{६५५३६}{१९३}$ छठी पृथिवीकी अपेक्षा,

$\frac{३२७६८}{१९३} \times ४ = \frac{१३१०७२}{१९३}$ पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा,

$\frac{३२७६८}{१९३} \times ८ = \frac{२६२१४४}{१९३}$ चौथी पृथिवीकी अपेक्षा,

$\frac{३२७६८}{१९३} \times १६ = \frac{५२४२८८}{१९३}$ तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा,

$\frac{३२७६८}{१९३} \times ३२ = \frac{१०४८५७६}{१९३}$ दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा प्र. अवहारकाल.

हारकालो होदि। एवं विहाणेणुप्पण्णपक्खेवअवहारकालं सामण्णअवहारकालम्हि पक्खित्ते पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एदमत्थपदमवहारिय अण्णत्थ वि डहररासिपमाणेण महल्लरासीओ काऊण पक्खेवअवहारकालो साधेयव्वो। एत्थ णिरयगईए संदिट्ठी– ६५५३६ एदं जगसेढिपमाणं। एदं पि जगपदरपमाणं ४२९४९६७२९६। सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई 'एसा २[1]। सामण्णअवहारकालो ३२७६८। दव्वं १३१०७२। पक्खेवअवहारकालो $\frac{२०६४३८४}{१९३}$। पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो $\frac{८३८८६०८}{१९३}$। लद्धपमाणं ९८८१६। विदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो ४, दव्वं १६३८४। तदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो (८, दव्वं ८१९२। चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो)[2] १६, दव्वं ४०९६। पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो ३२, दव्वं २०४८। छट्ठमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो ६४, दव्वं १०२४। सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो

इस विधिसे जो प्रक्षेप अवहारकाल उत्पन्न हो उसे सामान्य अवहारकालमें मिला देने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

उदाहरण— $$\frac{३२७६८}{१९३}+\frac{६५५३६}{१९३}+\frac{१३१०७२}{१९३}+\frac{२६२१४४}{१९३}+\frac{५२४२८८}{१९३}+\frac{१०४८५७६}{१९३}$$
$$=\frac{२०६४३८४}{१९३} \text{ प्र. अ. का.}$$

$$३२७६८+\frac{२०६४३८४}{१९३}=\frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र. पृ. का. अव.}$$

इसप्रकार इस अर्थपदका अवधारण करके अन्यत्र भी बड़ी राशिको छोटी राशिके प्रमाणसे करके प्रक्षेप अवहारकाल साध लेना चाहिये। अब यहां नरकगतिकी संदृष्टि दी जाती है—

६५५३६ जगश्रेणीका प्रमाण है। ४२९४९६७२९६ यह जगप्रतरका प्रमाण है। सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीका प्रमाण २ है। सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण ३२७६८ है। सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्य १३१०७२ है। प्रक्षेप अवहारकाल $\frac{२०६४३८४}{१९३}$ है। प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्यसंबन्धी अवहारकाल $\frac{८३८८६०८}{१९३}$ है। प्रथम पृथिवीमें लब्धराशि मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण ९८८१६ है। दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ४ और द्रव्य १६३८४ है। तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ८ और द्रव्य ८१९२ है। चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६ और द्रव्य ४०९६ है। पांचवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ३२ और द्रव्य २०४८ है। छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ६४ और द्रव्य १०२४ है। सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १२८ और

१ प्रतिषु 'एसा १२।' इति पाठः। २ कोष्ठकान्तर्गतपाठः प्रतिषु नास्ति।

१२८, दव्वं ५१२[1]। विदियादिछप्पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वसमूहो ३२२५६।

विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ २० ॥

एदस्स सुत्तस्स आदेसोघदव्वपरूवयसुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ २१ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स आदेसोघकालपमाणपरूवयसुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं। एदाओ दव्वकालपरूवणाओ थूलाओ। कुदो? सोदाराणं णिण्णयाणुप्पायणादो। दव्वपरूवणादो कालपरूवणा सुहुमा, असंखेज्जासंखेज्जसंखाविसेसिददव्वणिरूवणादो। इदाणिं दव्वकालपरूवणाहिंतो सुहुमखेत्तपरूवणट्ठं सुत्तमाह—

द्रव्य ५१२ है। दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका समूह ३२२५६ है।

दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीमें नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ २० ॥

आदेशसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये।

कालप्रमाणकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ २१ ॥

आदेशसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान इस सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये। यहां यह जो द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा और कालप्रमाणकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणा की है वह स्थूल है, क्योंकि, श्रोताओंको इस प्ररूपणासे निर्णय नहीं हो सकता है। फिर भी द्रव्य प्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म है, क्योंकि, कालप्ररूपणाके द्वारा असंख्यातासंख्यात संख्या विशिष्ट द्रव्यका प्ररूपण किया गया है। अब द्रव्य और काल इन दोनों ही प्ररूपणाओंसे सूक्ष्म क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

१ प्रतिषु '५०२' इति पाठः।

[1]खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो। तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ पढमादियाणं सेढिवग्गमूलाणं संखेज्जाणं अण्णोण्णब्भासेण[2] ॥ २२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा– दव्वकालपमाणसुत्तेहि विदियादि-छप्पुढविमिच्छाइट्ठिजीवाणं पमाणं परूविदमसंखेज्जमिदि। तं च असंखेज्जं पल्ल-सायरंगुल-जगसेढि-पदर-लोगादिभेदेण अणेयवियप्पमिदि इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदे, तदो सेढि-जगपदरादिउवरिमसंखाणियत्तावणट्ठमिदमाह 'सेढीए असंखेज्जदिभागो' त्ति। सेढीए असंखेज्जदिभागो वि पल्ल-सायर-कप्पंगुलादिभेएण अणेयवियप्पो त्ति सूइअंगुलादि-हेट्ठिमवियप्पपडिसेहट्ठं 'तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ' त्ति वुत्तं। सेढीए असंखेज्जदिभागो त्ति पुरिसलिंगणिद्देसो तिस्से त्ति इत्थीलिंगणिद्देसो, तदो दोण्हं

क्षेत्रकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि जीव जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। उस जगश्रेणीके असंख्यातवें भागकी जो श्रेणी है उसका आयाम असंख्यात कोटि योजन है, जिस असंख्यात कोटि योजनका प्रमाण, जगश्रेणीके संख्यात प्रथमादि वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जितना प्रमाण उत्पन्न हो, उतना है ॥ २२ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इसप्रकार है– द्रव्यप्रमाण और कालप्रमाणके प्ररूपण करनेवाले सूत्रोंद्वारा द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण 'असंख्यात है' ऐसा कह आये हैं। परंतु वह असंख्यात पल्य, सागर, अंगुल, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है, इसलिये इनमेंसे यहां यह असंख्यात लिया गया है, यह कुछ नहीं जाना जाता है। अतः जगश्रेणी और जगप्रतर आदि उपरिम संख्याका नियंत्रण अर्थात् निवारण करनेके लिये 'द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकी जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग हैं' यह कहा। जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग भी पल्य, सागर, कल्प और अंगुल आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है, इसलिये सूच्यंगुल आदि अधस्तन विकल्पोंका निषेध करनेके लिये 'उस श्रेणीका आयाम असंख्यात कोटि योजन है' यह कहा।

शंका— 'सेढीए असंखेज्जदिभागो' इसमें पुल्लिंग निर्देश है और 'तिस्से' यह

१ द्वितीयादिष्वा सप्तम्या मिथ्यादृष्टयः श्रेण्यसंख्येयभागप्रमिताः। स चासंख्येयभागः असंख्येया योजनकोट्यः। स. सि. १, ८. विदियादिवारदमअडछच्चिदुणिजपदहिदा सेढी। गो. जी. १५३. सेढिअसंखेज्जसो सेसासु जहोत्तरं तह य। पञ्चसं. २, १३

२ प्रतिषु 'अब्मासो' इति पाठः। किंतु पुरत. टीकायां 'अब्भासेणेत्ति' लभ्यते।

समाणमहियरणं णत्थि त्ति सुत्तमिदमसंबद्धमिदि ? ण एस दोसो, तिस्से सेढीए असंखेज्जदिभागस्स सेढीए वा आयामो त्ति णेवं वत्तव्वं, भिण्णाहियरणत्ता विसेसणस्स फलाभावादो च। किंतु सेढीए असंखेज्जदिभागस्स जा सेढी पंती तिस्से सेढीए आयामो त्ति वत्तव्वमिदि। असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ वि पदरंगुल-घणंगुलादिभेदेण असंखेज्जवियप्पाओ त्ति सेढिपढमवग्गमूलादिहेट्ठिमसंखापडिसेहट्ठं 'पढमादियाणं सेढिवग्गमूलाणं संखेज्जाणं अण्णोण्णब्भासेण' त्ति वुत्तं। तत्थ सेढिपढमवग्गमूलमादिं काऊण हेट्ठा बारसण्हं वग्गमूलाणं अण्णोण्णब्भासो विदियपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं होदि। तं चेव आदिं करिय हेट्ठा दसण्हं वग्गमूलाणं अण्णोण्णब्भासे कदे तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं हवदि। तं चेव आदिं करिय अट्ठण्हं वग्गमूलाणं संवग्गो चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं हवदि। छण्हं सेढिवग्गमूलाणं संवग्गो पंचमपुढविदव्वं होदि। तिण्हं संवग्गो छट्ठमपुढविदव्वं होदि। दोण्हं संवग्गो सत्तमपुढविदव्वं होदि। एत्तियाणं वग्गमूलाणं

स्त्रीलिंग निर्देश है। अतः इन दोनों पदोंका समान अधिकरण नहीं है, इसलिये यह पूर्वोक्त सूत्र असंबद्ध है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यहां पर 'तिस्से सेढीए' इस पदका श्रेणीके असंख्यातवें भागका आयाम अथवा जगश्रेणीका आयाम ऐसा अर्थ नहीं करना चाहिये, क्योंकि, इससे भिन्नाधिकरणत्व प्राप्त हो जाता है और विशेषणकी कोई सार्थकता नहीं रहती है। किंतु प्रकृतमें 'जगश्रेणीके असंख्यातवें भागकी जो श्रेणी अर्थात् पंक्ति है उस श्रेणीका आयाम' ऐसा अर्थ करना चाहिये। असंख्यात कोटि योजन भी प्रतरांगुल और घनांगुल आदिके भेदसे असंख्यात प्रकारका है, इसलिये जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल, द्वितीय वर्गमूल आदि नीचेकी संख्याका प्रतिषेध करनेके लिये सूत्रमें 'जगश्रेणीके प्रथमादि संख्यात वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे' इतना पद कहा है। उनमेंसे यहां जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे लेकर नीचेके बारह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जितनी संख्या उत्पन्न हो उतना दूसरी पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण है। तथा जगश्रेणीके उसी पहले वर्गमूलसे लेकर दश वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर तीसरी पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है। तथा जगश्रेणीके उसी प्रथम वर्गमूलसे लेकर आठ वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर जो राशि आवे उतना चौथी पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है। तथा जगश्रेणीके प्रथमादि छह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है। तथा जगश्रेणीके प्रथमादि तीन वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है। तथा पहले और दूसरे वर्गमूलके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है।

शंका—इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्या-

संवग्गं कदे विदियादिपुढविमिच्छाइट्ठीणं दव्वपमाणं होदि त्ति कधं जाणिज्जदे ? आइरियपरंपरागय-अविरुद्धोवदेसादो जाणिज्जदि ।

वारस दस अट्ठेव य मूला छत्तिय दुगं च[1] णिरएसु ।
[2]एक्कारस णव सत्त य पण य चउक्कं च देवेसु ॥ ६७ ॥

एदासिं अवहारकालपरूवयगाहासुत्तादो वा परियम्मपमाणादो वा जाणिज्जदे ।

एदासिं पुढवीणं दव्वमाहप्पजाणावणट्ठं किंचि अत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा– विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वादो ताव उप्पाइज्जदे । वारस-

दृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— आचार्य परंपरासे आये हुए अविरुद्ध उपदेशसे जाना जाता है कि इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है। अथवा—

नारकियोंमें द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका वारहवां, दशवां, आठवां, छठा, तीसरा और दूसरा वर्गमूल अवहारकाल है और देवोंमें सानत्कुमार आदि पांच कल्पयुगलोंका द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका ग्यारहवां, नौवां, सातवां, पांचवां और चौथा वर्गमूल अवहारकाल है ॥ ६७ ॥

इन अवहारकालोंके प्ररूपण करनेवाले इस गाथा सूत्रसे जाना जाता है। अथवा, परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि जगश्रेणीके प्रथमादि इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य आता है।

विशेषार्थ— एक वर्गात्मक राशिके प्रथम आदि जितने वर्गमूल होंगे उनमेंसे जिस वर्गमूलका उक्त वर्गात्मक राशिमें भाग देनेसे जो लब्ध आयगा वह, जिस वर्गमूलका भाग दिया उस वर्गमूलतक प्रथमादि वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न होगी, उतना ही होगा। उदाहरणार्थ ६५५३६ में उसके चौथे वर्गमूल २ का भाग देनेसे ३२७६८ लब्ध आते हैं। अब यदि प्रथमादि चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा किया तो भी ३२७६८ प्रमाण ही राशि उत्पन्न होगी। ६५५३६ का पहला वर्गमूल २५६, दूसरा १६, तीसरा ४ और चौथा २ है। अब इनके परस्पर गुणा करनेसे २५६ × १६ × ४ × २ = ३२७६८ ही आते हैं। पर नरकोंमें जो अंकसंदृष्टिकी अपेक्षा राशियां बतलाई हैं उनके निकालनेमें कल्पित वर्गमूल लिये गये हैं, इसलिये ही वहां यह नियम नहीं घटाया जा सकता है।

अब इन पृथिवियोंके द्रव्यके महत्त्वका ज्ञान करानेके लिये किंचित् अर्थप्ररूपणा करते हैं। वह इसप्रकार है— उसमें भी पहले दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको तीसरी पृथिवीके

१ प्रतिषु 'दु पच' इति पाठः। इय गाथा पूर्वमपि ६६ क्रमाङ्केनागता।

२ तत्तो (देवेषु) एगार-णव-सग-पण-चउणियमूलभाजिदा सेढी। गो. जी. १६२.

वग्गमूलेण एक्कारसवग्गमूलं गुणिय तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि गुणिदे विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । तस्स गुणगारस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारं तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं दुगुणिदे[1] विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । अहवा गुणगारद्धच्छेदणयसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि गुणिदे विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । जहा तीहि पयारेहि तदियपुढविदव्वादो विदियपुढविदव्वमुप्पाइदं तहा सेसचउपुढविदव्वेहिंतो तीहि तीहि पयारेहि विदियपुढविदव्वमुप्पादेदव्वं । एवमुप्पादिदे पण्णारस भंगा लद्धा भवंति ।

मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे उत्पन्न करते हैं— जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है। अथवा, उक्त गुणकारके (बारहवें वर्गमूलसे ग्यारहवें वर्गमूलको गुणा करनेसे जो लब्ध आया उसके) जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके द्विगुणित करने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है। अथवा, उक्त गुणकारकी अर्धच्छेद शलाकाओंका विरलन करके और उनको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित कर देने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है। यहां जिसप्रकार उक्त तीन प्रकारसे तीसरी पृथिवीके द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न किया है, उसीप्रकार चौथी आदि शेष चार पृथिवियोंके द्रव्यसे उक्त तीन तीन प्रकारसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न कर लेना चाहिये। इसप्रकार उत्पन्न करने पर पंद्रह भंग प्राप्त होते हैं।

विशेषार्थ—चौथी पृथिवीकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय जगश्रेणीके नौवें वर्गमूलसे बारहवें वर्गमूलतक चार वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे चौथी पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। पांचवीं पृथिवीकी अपेक्षा जगश्रेणीके सातवें वर्गमूलसे लेकर बारहवें वर्गमूलतक छह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पांचवी पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। छठी पृथिवीकी अपेक्षा जगश्रेणीके चौथे वर्गमूलसे लेकर बारहवें वर्गमूलतक नौ वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे छठी पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर बारहवें वर्गमूलतक दश वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे सातवीं पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। गुणकार राशिके अर्धच्छेदोंका विरलनादि करते समय

1 क प्रतौ 'गुणिदे' इति पाठः ।

संपहि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वादो विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स उप्पादण-विहाणं वुच्चदे– पढमपुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेढिवारसवग्गमूलेण पढमपुढविमिच्छाइट्ठि-दव्वम्हि भागे हिदे विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदण-यमेत्ते पढमपुढविदव्वस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि। सेढिवारसवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणाओ पढमपुढविविक्खंभसूचीअद्धच्छेदणयसहिदाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि भागे हिदे विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि। एदे तिण्णि भंगा पुव्विल्लपण्णारसभंगेसु पक्खित्ते विदियपुढवीए अट्ठारस भंगा हवंति। एवं सव्वासिं पुढवीणं पत्तेगं पत्तेगं अट्ठारस भंगा उप्पाएदव्वा। सव्वभंगसमासो सदं छव्वीसुत्तरं[1]।

भी जहां जितने वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो राशि लाई गई हो उसी राशिके अर्धच्छेदोंका विरलन करके और उस विरलित राशिको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो लब्ध आवे उससे उस उस पृथिवीके द्रव्यको गुणित करना चाहिये। अथवा, इसी क्रमसे अर्धच्छेद लाकर उतनीवार उस उस पृथिवीके द्रव्यको द्विगुणित करना चाहिये। इसप्रकार करनेसे दूसरी पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण आता है।

अब पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके उत्पन्न करनेकी विधि बतलाते हैं– पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके भाजित करने पर दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है।

उदाहरण—$४ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{३२}$; $९८८१६ \div \frac{१९३}{३२} = १६३८४$ द्वि. पृ. मि. द्र.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार भज्यमान राशि प्रथम पृथिवीके द्रव्यके अर्धच्छेद करने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है।

अथवा, जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलके अर्धच्छेदोंमें पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके अर्धच्छेद मिला देने पर जितना योग हो उतनी राशिका विरलन करके और उसे दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके भाजित करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है। इन तीन भंगोंको पूर्वोक्त पन्द्रह भंगोंमें मिला देने पर दूसरी पृथिवीके अठारह भंग होते हैं। इसीप्रकार सभी पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके अठारह अठारह भंग उत्पन्न कर लेना चाहिये। इन सब भंगोंका जोड़ एकसौ छव्वीस होता है।

विशेषार्थ—प्रथमादि पृथिवियोंके द्रव्यकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीका द्रव्य किसप्रकार

१ प्रतिषु 'सेदं छव्वीसुत्तरां' इति पाठः।

आता है, इसका थोडासा विवेचन मूलमें ही किया है। और वहां यह भी कहा है कि इसीप्रकार तृतीयादि पृथिवियोंके द्रव्यके उत्पन्न करनेसे कुल १२६ भंग होते हैं। उनमेंसे जिन १८ भंगोंसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है उन १८ भंगोंको १२६ मेंसे कम कर देने पर शेष १०८ भंग रहते हैं। इसलिये आगे उन्हीं १०८ भंगोंका स्पष्टीकरण किया जाता है। द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा बारहवें वर्गमूलसे, तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा दशवें वर्गमूलसे, चौथी पृथिवीकी अपेक्षा आठवें वर्गमूलसे, पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठे वर्गमूलसे, छठी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरे वर्गमूलसे और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा दूसरे वर्गमूलसे पहले नरककी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके गुणित करने पर जो लब्ध आवे उससे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके पृथक् पृथक् गुणित करने पर क्रमशः द्वितीयादि पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य आता है। पहली पृथिवीके द्रव्यकी अपेक्षा तीसरी, चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे पृथक् पृथक् दशवें, आठवें, छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूलको गुणित करके जो जो लब्ध आवे उस उससे पहली पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर पहली पृथिवीकी अपेक्षा क्रमशः तीसरी, चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य होता है। दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य लाते समय ग्यारहवें और बारहवें वर्गमूलका, चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय नौवेंसे लेकर बारहवें तक चार वर्गमूलोंका, पांचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवेंसे लेकर बारहवें तक छह वर्गमूलोंका, छठी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर बारहवें तक नौ वर्गमूलोंका, सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर बारहवें तक दश वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि आवे उस उसका भाग दूसरी पृथिवीके द्रव्यमें देने पर क्रमशः दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी, चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है। तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय नौवें और दशवें वर्गमूलका, पांचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवेंसे लेकर दशवें तक चार वर्गमूलोंका, छठीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर दशवें तक सात वर्गमूलोंका और सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर दशवें तक आठ वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे तीसरी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर क्रमशः चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा पांचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवें और आठवें वर्गमूलका, छठी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर आठवें तक पांच वर्गमूलोंका, सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर आठवें तक छह वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके भाजित करने पर क्रमशः पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य उत्पन्न होता है। पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य लाते समय चौथे, पांचवे और छठे वर्गमूलका तथा सातवीं

पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर छठे तक चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे पांचवी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी पृथिवीकी अपेक्षा सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरे वर्गमूलसे छठी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है। चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथीकी अपेक्षा नौवें और दशवें वर्गमूलका, पांचवीकी अपेक्षा सातवेंसे लेकर दशवें तक चार वर्गमूलोंका, छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर दशवेंतक सात वर्गमूलोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर दशवेंतक आठ वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी, पांचवी, छठी और सातवींके द्रव्यके गुणित कर देने पर क्रमशः चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय पांचवीकी अपेक्षा सातवें और आठवें वर्गमूलोंका, छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर आठवें तक पांच वर्गमूलोंका, सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर आठवेंतक छह वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि आवे उस उससे पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पांचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर छठेतक तीन वर्गमूलोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर छठेतक चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि आवे उस उससे छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पांचवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। तथा सातवी पृथिवीके द्रव्यको तीसरे वर्गमूलसे गुणित करने पर सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। पहले जहां ऊपरकी पृथिवियोंसे नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य उत्पन्न करते समय जो जो भागहार कह आये हैं उस उसके अर्धच्छेद करके तत्प्रमाण भाज्य राशिके आधे आधे करने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। अथवा, अर्धच्छेदप्रमाण दो रखकर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उसका भाज्य राशिमें भाग देने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। उसीप्रकार नीचेकी पृथिवियोंसे ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य लाते समय जहां जो गुणकार हो उसके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनीवार गुण्य राशिके दूने दूने करने पर ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आता है। अथवा उक्त अर्धच्छेदप्रमाण दो रखकर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि हो उससे गुण्य राशिके गुणित कर देने पर भी ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। इसप्रकार ये कुल भंग १०८ हुए इनमें दूसरी पृथिवीके १८ भंग मिला देने पर सातों पृथिवियोंके द्रव्य निकालनेके १२६ भंग होते हैं।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ओघं ॥ २३ ॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तं पडि विसेसाभावादो विदियादिपुढविगुणपडिवण्णाणं परूवणा ओघमिदि वुत्ता दव्वट्ठियसिस्साणुग्गहट्ठं। पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे विसेसो अत्थि चेव, अण्णहा एगपुढविगुणपडिवण्णाणं सत्तपमाणाणवत्था च दुप्पडिसेज्झा पसज्जदे। तं गुणपडिवण्णजीवविसेसं पुव्वाइरियाणमविरुद्धोवएसेण आइरियपरंपरागदेण वत्तइस्सामो। तं जहा— पुव्वमुप्पाइयसामण्णणेरइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पढम-

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें द्वितीयादि छह पृथिवियोंमेंसे प्रत्येक पृथिवीके नारकी जीव सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ २३ ॥

विशेषार्थ— इस सूत्रमें 'दव्वपमाणेण केवडिया' अर्थात् द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं? ऐसा पृच्छावाक्य नहीं पाया जाता जिससे सूत्रसंख्या २ की टीकामें जो उक्त पृच्छावाक्यका फल स्वकर्तृत्वनिराकरणपूर्वक आप्तकर्तृत्वप्रतिपादन बतलाया है उसकी यहां आकांक्षा रह जाती है। तथापि सूत्र सदैव संक्षेपार्थ हुआ करते हैं और उनमें यह सार्वत्रिक नियम है कि 'सूत्रेऽग्दष्टं पदं सूत्रान्तरादनुवर्तनीयं सर्वत्र' अर्थात् जो अपेक्षित पद प्रस्तुत सूत्रमें न पाया जाय उसकी अन्य सूत्रोंसे अनुवृत्ति सदैव कर लेना चाहिये। इसप्रकार प्रस्तुत सूत्रमें भी उक्त पृच्छापदकी अनुवृत्ति हो जाती है। आगे भी जहां कहीं उक्त पद न पाया जाय वहां इसी नियमका अधिकार समझ लेना चाहिये।

द्वितीयादि गुणस्थानोंकी सामान्य संख्या और द्वितीयादि पृथिवियोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी संख्या, ये राशियां पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वके प्रति समान हैं, इसलिये द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा रखनेवाले शिष्योंके अनुग्रहके लिये द्वितीयादि पृथिवियोंके गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी संख्या सामान्य प्ररूपणाके समान है, ऐसा कहा। पर्यायार्थिक नयका अवलंबन करने पर तो गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य नारकी जीवोंकी संख्या और द्वितीयादि पृथिवियोंके गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी संख्या, इन दोनोंमें विशेष है ही। यदि ऐसा नहीं माना जाय तो एक पृथिवीके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या और सातों पृथिवियोंके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या एकसी हो जायगी जिसके निषेधके दुष्कर होनेका प्रसंग आ जाता है। अब गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंके उस विशेषको आचार्य-परंपरासे आये हुए पूर्वाचार्योंके अविरुद्ध उपदेशके अनुसार बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

सामान्य नारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल जो पहले उत्पन्न करके बतला आये हैं, उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी नारक सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें ही मिला देने पर प्रथम पृथिवीके असंयत-

पुढविअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे पढमपुढविसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहिं गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे विदियाए असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे[1] सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्तिअवहारकाला परिवाडीए उप्पाएदव्वा। एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमस्सुवरि खंडिदादीणं ओघभंगो।

भागाभागं दव्वपमाणविसयणिण्णयजणणट्ठं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिस्स अणंतेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा तिरिक्खा होंति। सेसस्स अणंतेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा सिद्धा होंति। सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा देवा होंति। सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा णेरइया होंति। सेसेगभागो मणुसा हवंति। पुणो णेरइयरासिस्स असंखेज्जेसु खंडेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमपुढवि-

सम्यग्दृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है। उस पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है। उस पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर प्रथम नरकका सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है। पहले नरकके सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है। दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है। उस दूसरी पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक अवहारकाल परिपाटी-क्रमसे उत्पन्न कर लेना चाहिये। इन अवहारकालोंके द्वारा पल्योपमके ऊपर खंडित आदिकका कथन सामान्य प्ररूपणाके समान है।

अब द्रव्यप्रमाणविषयक निर्णयका ज्ञान करानेके लिये भागाभागको बतलाते हैं— संपूर्ण जीवराशिके अनन्त भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग तिर्यंच होते हैं। शेष एक भागके अनन्त भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सिद्ध होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण देव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण नारकी होते हैं। शेष एक भागप्रमाण मनुष्य होते हैं। पुनः नारक जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीव

१ प्रतिषु 'गुणिदे तम्हि चेव सम्मा–' इति पाठः।

मिच्छाइट्ठी होंति। सेसस्स असंखेज्जेसु खंडेसु कदेसु तत्थ बहुभागा विदियपुढविमिच्छाइट्ठी होंति। एवं तदिय-चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तमपुढवीणं अव्वामोहेण भागभागो कायव्वो। पुणो सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमाए पुढवीए असंजदसम्माइट्ठिणो हवंति। सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमपुढविसम्मामिच्छाइट्ठिणो हवंति। सेसस्स संखेज्जेसु[1] भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमपुढविसासणसम्माइट्ठिणो हवंति। सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा विदियपुढविअसंजदसम्माइट्ठिणो हवंति। सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुखंडा तत्थतणसम्मामिच्छाइट्ठिणो हवंति। सेसस्स संखेज्जेसु[2] भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा तत्थतणसासणसम्माइट्ठिणो हवंति। एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति गुणपडिवण्णाणं भागाभागो कायव्वो। एवं भागाभागो समत्तो।

अप्पाबहुगं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि। तत्थ सत्थाणप्पाबहुगं वुच्चदे। सव्वत्थोवा सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूची। अवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सगविक्खंभ-

होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। इसीप्रकार तीसरी, चौथी, पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीकी जीवराशिका सावधानीसे भागाभाग कर लेना चाहिये। पुनः सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका भागाभाग करना चाहिये।

इसप्रकार भागाभाग समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व। उनमेंसे पहले स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं— सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची सबसे स्तोक है। सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणा है। गुणकार

१ प्रतिषु 'सखेज्जेसु' इति पाठः।　　२ प्रतिषु 'असखेज्जेसु' इति पाठः।

सूची। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? सगविक्खंभसूचीवग्गो घणंगुलपढमवग्गमूलं वा। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगविक्खंभसूई। दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? विक्खंभसूई। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अवहारकालो। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढी। सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीणमोघसत्थाणभंगो। एवं चेव पढमाए पुढवीए। विदियाए पुढवीए सव्वत्थोवो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सगअवहारकालो। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? सगअवहारकालवग्गो सेढिएक्कारसवग्गमूलं वा। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सेढिबारसवग्गमूलं। पदरो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढी। लोगो

क्या है? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग है। प्रतिभाग क्या है? अपनी विष्कंभसूची प्रतिभाग है। अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपनी विष्कंभसूचीका वर्ग प्रतिभाग है। अथवा, घनांगुलका प्रथम वर्गमूल प्रतिभाग है। सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है। जगश्रेणीसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है। सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाल गुणकार है। जगप्रतरसे घनलोक असंख्यातगुणा है? गुणकार क्या है? जगश्रेणी गुणकार है। सामान्य नारक सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये। इसीप्रकार पहली पृथिवीमें स्वस्थान अल्पबहुत्व है। दूसरी पृथिवीमें मिथ्यादृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोक है। दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपने अवहारकालका (बारहवें वर्गमूलका) वर्ग अथवा जगश्रेणीका ग्यारहवां वर्गमूल प्रतिभाग है। दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल गुणकार है। जगश्रेणीसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणी गुणकार है। जगप्रतरसे घनलोक असंख्यातगुणा है। गुणकार

१ प्रतिषु 'पदम०' (अ), 'पढम' (आ.), 'प्रढम' (क.) इति पाठ ।

असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीणमोघसत्थाणभंगो । तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति एवं चेव सत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं । णवरि अप्पप्पणो अवहारकाले जाणिऊण भाणिदव्वं ।

परत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं जाव पलिदोवमो त्ति णेदव्वं । पलिदोवमादो उवरि सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमं । अहवा सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? पलिदोवमगुणिदसूइअंगुलविदियवग्गमूलं । उवरि सत्थाणभंगो । एवं चेव पढमाए पुढवीए । विदियाए पुढवीए सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं जाव पलिदोवमो त्ति णेदव्वो । तदो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमं । उवरि सत्थाणभंगो । एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति परत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं । णवरि

क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । दूसरी पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन इसीप्रकार करना चाहिये । विशेष यह है कि प्रत्येक पृथिवीका स्वस्थान अल्पबहुत्व कहते समय अपने अपने अवहारकालको जानकर उसका कथन करना चाहिये ।

अब परस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोक है । उससे सम्यग्मिथ्यादृष्टिका, उससे सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल, इसप्रकार अल्पबहुत्व कहते हुए पल्योपम तक ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपमसे सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलके गुणित करने पर जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है । इस विष्कंभसूचीके ऊपर परस्थान अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार पहली पृथिवीमें परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

दूसरी पृथिवीमें असंयतसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल सबसे स्तोक है । इसीप्रकार उत्तरोत्तर अल्पबहुत्व कहते हुए पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । इसके ऊपर अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवी पृथिवीतक परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । इतना

अप्पप्पणो अवहारकाले जाणिऊण वत्तव्वं ।

सव्वपरत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। सव्वत्थोवो पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । तदो विदियपुढविअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं जाव सत्तमाए पुढवीए सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो त्ति णेयव्वो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्ज-गुणं । असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एवं पडिलोमेण णेदव्वं जाव पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं पत्तमिदि । तदो पलिदोवममसंखेज्जगुणं । तदो पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया । तदो विदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहार-

विशेष है कि अपना अपना अवहारकाल जानकर ही कथन करना चाहिये ।

अब सर्व परस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं—पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उससे पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे वहींके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे वहींके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसीप्रकार सातवीं पृथिवीतक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालतक ले जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे उन्हींका द्रव्य असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे वहींके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे वहींके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इसीप्रकार उत्तरोत्तर प्रतिलोम पद्धतिसे जब पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य प्राप्त होवे तब तक ले जाना चाहिये । पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है । पल्योपमसे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । उक्त विष्कंभसूचीसे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूचीसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा

कालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि । तस्स को पडिभागो ? घणंगुलविदियवग्गमूलं । तदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि एक्कारसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सेढिवारसवग्गमूलं । चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि णवमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? दसमवग्गमूलं । पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? छट्ठवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सत्तमवग्गमूलाणि । तस्स को पडिभागो ? अट्ठमवग्गमूलं । छट्ठपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि चउत्थवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? छट्ठवग्गमूलं । सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलं । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेढिपढमवग्गमूलं । छट्ठपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं

है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके वारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है ? गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात ग्यारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका वारहवां वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात नौवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? दशवां वर्गमूल प्रतिभाग है । चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके छठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग है जो असंख्यात सातवें वर्गमूलप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका आठवा वर्गमूल प्रतिभाग है । पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । जो जगश्रेणीके असंख्यात चौथे वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका छठा वर्गमूल प्रतिभाग है । छठवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल गुणकार है । सातवीं पृथिवीके अवहारकालसे उसीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल गुणकार है । सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे छठवीं पृथिवीका

असंखेज्जगुणं। को गुणगारो? तदियवग्गमूलं। पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो? चउत्थ-पंचम छट्ठवग्गाणि अण्णोण्णगुणिदाणि। अहवा सेढितदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिचउत्थवग्गमूलाणि। को पडिभागो? छट्ठमवग्गमूलं। चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अण्णोण्णगुणिदसेढिसत्तम-अट्ठमे-वग्गमूलाणि। अहवा छट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सत्तमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? अट्ठमवग्गमूलं। तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अण्णोण्णगुणिदसेढिणवम-दसमवग्गमूलाणि। अहवा अट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि णवमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? दसमवग्गमूलं। विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अण्णोण्णब्भत्थेक्कारस-बारसवग्गमूलाणि। अहवा दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि एक्कारसवग्गमूलाणि। को पडिभागो? बारसवग्गमूलं। सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को

मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल गुणकार है। छठवींके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पांचवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके चौथे, पांचवे और छठवे वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है। अथवा, जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात चौथे वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? जगश्रेणीका छठा वर्गमूल प्रतिभाग है। पांचवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके सातवें और आठवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है। अथवा, जगश्रेणीके छठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात सप्तम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? जगश्रेणीका आठवां वर्गमूल प्रतिभाग है। दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके नौवें और दशवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है। अथवा, जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात नौवें वर्गमूल प्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? जगश्रेणीका दशवां वर्गमूल प्रतिभाग है। तीसरीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके ग्यारहवें और बारहवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तत्प्रमाण गुणकार है। अथवा, जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात ग्यारहवें वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल प्रतिभाग है। दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे सामान्य नारकियोंका मिथ्यादृष्टि

१ प्रतिषु 'अट्ठ' इति पाठः।

गुणगारो ? बारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? घणंगुलबिदियवग्गमूलं । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? सामण्णअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागभूदपक्खेवअवहारकालमेत्तेण । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो[1] ? पढमपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं[2] । को गुणगारो ? पढमपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई । सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जभागभूदबिदियादिछपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । एवं णिरयगई समत्ता ।

अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल प्रतिभाग है । सामान्य नारकियोंके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे पहली पृथिवीके नारकियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? सामान्य अवहारकालके असंख्यातवें भागरूप प्रक्षेप अवहारकालरूप विशेषसे अधिक है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । जगश्रेणीसे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यके असंख्यातवें भागरूप दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टियोंका जितना प्रमाण है तन्मात्रसे विशेष अधिक है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यात गुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है ।

विशेषार्थ—सर्व परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते समय ऊपर गुणस्थानप्रतिपन्न असंयतसम्यग्दृष्टि आदि सामान्य नारकियोंका अल्पबहुत्व नहीं कहा गया है । यदि इनके

१ प्रतिषु 'सेढी असखेज्जगुणगारो' इति पाठ ।

२ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा अहे सत्तमापुढवीनेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेण, दाहिणेण असखेज्जगुणा । दाहिणेहिंतो अहे सत्तमापुढवीनेरइएहिंतो छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेण दाहिणेण असखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो तमाए पुढवीनेरइएहिंतो पचमाए धूमप्पमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेण असखेज्जगुणा दाहिणेण असखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो धूमप्पमापुढवीनेरइएहिंतो चउत्थीए पकप्पमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेण असखेज्जगुणा, दाहिणेण असखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो पकप्पमापुढवीनेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेण असखेज्जगुणा, दाहिणेण असखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो

तिरिक्खगईए तिरिक्खेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं[1] ॥ २४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो उच्चदे। तं जहा– अणंतत्तणेण तिरिक्खगदिमिच्छाइट्ठीणं ओघमिच्छाइट्ठिजीवेहिंतो विसेसाभावादो तिरिक्खगइमिच्छाइट्ठीणं दव्व-खेत्त-काले अस्सिऊण जा ओघमिच्छाइट्ठिपरूवणा सा सव्वा संभवदि। गुणपडिवण्णाणं पि असंखेज्जत्तणेण ओघपडिवण्णेहि समाणाणं जा ओघपडिवण्णपरूवणा सा सव्वा संभवदि। तम्हा दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे तिरिक्खोघस्स परूवणा ओघववदेसं लब्भदे। पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे पुण ओघपरूवणा ण भवदि, तिरिक्खगइवदिरित्ततिगदीणमत्थित्तस्स-

अल्पबहुत्वको मिलाकर कथन किया जाता तो प्रारंभमें जो प्रथम नरकके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक कहा है उसके स्थानमें 'नारक सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है और इससे विशेष अधिक प्रथम पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल है, इत्यादि कहा जाता। पर यहां पर इस सब कथनको टीकाकारने क्यों छोड़ दिया है, यह बतलाना कठिन है।

इसप्रकार नरकगतिका वर्णन समाप्त हुआ।

तिर्यंच गतिका आश्रय करके तिर्यंचोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती तिर्यंच सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ २४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इसप्रकार है—तिर्यंचगतिके मिथ्यादृष्टियोंमें ओघ मिथ्यादृष्टि जीवोंसे अनन्तत्वकी अपेक्षा कोई विशेषता नहीं है, इसलिये द्रव्य, क्षेत्र और कालप्रमाणका आश्रय करके जो ओघ मिथ्यादृष्टियोंकी प्ररूपणा है वह संपूर्ण तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके संभव है। उसीप्रकार गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यंच भी असंख्यातत्वकी अपेक्षा सामान्य गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके समान हैं, इसलिये गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य जीवोंकी जो प्ररूपणा है वह संपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यंचोंके संभव है। अतएव द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर सामान्य तिर्यंचोंकी प्ररूपणा ओघ व्यपदेशको प्राप्त होती है। परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर सामान्य प्ररूपणा तिर्यंचोंके नहीं पाई जाती है, क्योंकि, यदि ऐसा नहीं माना जाय तो तिर्यंच गतिके अतिरिक्त शेष तीन गतियोंका अस्तित्व ही नहीं

वालुयप्पमापुढवीनेरइएहिंतो दोच्चाए सक्करप्पमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेण असखेज्जगुणा, दाहिणेणं असखेज्जगुणा। दाहिणिल्लेहिंतो सक्करप्पमापुढवीनेरइएहिंतो इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेण असखेज्जगुणा, दाहिणेणं असखेज्जगुणा। प्र, सू ३, १ पृ. ३४८-३५०.

1 तिर्यग्गतौ तिरश्चां मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः। सासादनसम्यग्दृष्टय सयतासयतान्ता. पल्योपमासख्येय-भागप्रमिता.। स. सि, १, ८. ससारी ×× तिगदिहीणया ×× सामण्णा ×× तेरिक्खा। गो. जी. १५५.

ण्णहाणुववत्तीदो। तदो पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे ओघपरूवणादो तिरिक्खगदिपरूवणाए णाणत्तं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिस्सुवरि सगुणपडिवण्णसिद्धतिगदिरासिं पक्खिविय पुणो तेसिं चेव वग्गं तिरिक्खमिच्छाइट्ठिरासिभजिदं च पक्खित्ते तिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं धुवरासी होदि। एसो मिच्छाइट्ठिपरूवणम्हि विसेसो। गुणपडिवण्णपरूवणाए विसेसं वत्तइस्सामो। तं जहा– देवसासणसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। सो आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। सो संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। सो आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसंजदासंजदअवहारकालो होदि। एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे तिरिक्खगदिगुणपडिवण्णाणं रासीओ हवंति[1]। एसो गुणपडिवण्णपरूवणाए विसेसो, णत्थि अण्णम्हि कम्हि वि।

बन सकता है। अतः पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर ओघ प्ररूपणासे तिर्यंच गतिकी प्ररूपणामें भेद है। आगे इसी बातको बतलाते हैं–

संपूर्ण जीवराशिमें गुणस्थानप्रतिपन्न तीन गतिसंबन्धी जीवराशि और सिद्धराशिको मिलाकर पुनः गुणस्थानप्रतिपन्न तीन गतिसंबन्धी जीवराशि और सिद्धराशिके वर्गको तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे भी पूर्वोक्त राशिमें मिला देने पर तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशि होती है। तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी प्ररूपणामें इतना विशेष है।

विशेषार्थ—यहां पर ध्रुवराशिरूपसे जो तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवराशिके उत्पन्न करनेके लिये भागहार उत्पन्न करके बतलाया है, इसका भाग संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें देनेसे तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है।

अब आगे गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी प्ररूपणामें विशेषताको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है– देव सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है। तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इन अवहारकालोंसे पल्योपमके भाजित करने पर गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यंचोंकी राशियां होती हैं। यही गुणस्थानप्रतिपन्न प्ररूपणाकी विशेषता है। अन्य कथनमें कहीं भी कोई विशेषता नहीं है।

१ प्रतिषु 'हवदि' इति पाठः।

संपहि अणंतरासीसु दव्वपरूवणादो कालपरूवणा सुहुमा भवदु णाम, तत्थ अणंताणंतस्स पुव्वमणुवलद्धस्स उवलद्धीदो अदीदकालादो अणंतगुणत्तुवलंभादो च । ण कालपरूवणादो खेत्तपरूवणा सुहुमा, अधिगोवलद्धीए अणिमित्तत्तादो । तदो परूवण-परिवाडी ण घडदे इदि ? ण, अणंतलोगमेत्ताणं एगलोगम्मि अवगासो अत्थि त्ति विसेसुवलंभादो कालादो खेत्तस्स सुहुमत्तं पडि विरोहाभावादो ।

पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[1] ॥ २५ ॥

एदस्स सुत्तस्स णिरओघदव्वपरूवणासुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं । एवं कए दव्वपरूवणा गदा भवदि ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ २६ ॥

शंका—अनन्तप्रमाण राशियोंमें द्रव्यप्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म रही आओ, क्योंकि, कालप्ररूपणामें पहले नहीं उपलब्ध हुए अनन्तानन्तकी उपलब्धि पाई जाती है, और अतीतकालसे अनन्तगुणत्व पाया जाता है । परंतु कालप्ररूपणासे क्षेत्रप्ररूपणा सूक्ष्म नहीं हो सकती है, क्योंकि, क्षेत्रप्ररूपणामें अधिक उपलब्धिका कोई निमित्त नहीं पाया जाता है । इसलिये द्रव्यप्ररूपणाके अनन्तर कालप्ररूपणा और कालप्ररूपणाके अनन्तर क्षेत्रप्ररूपणा, इसप्रकार प्ररूपणाकी परिपाटी नहीं वन सकती है ?

समाधान—नहीं, अनन्त लोकमात्र द्रव्योंका एक लोकमें अवकाश पाया जाता है, इसप्रकारकी विशेपताकी उपलब्धि होनेसे कालकी अपेक्षा क्षेत्र सूक्ष्म है, इसमें कोई विरोध नहीं आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ २५ ॥

सामान्य नारकियोंके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान ही इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये (देखो सूत्र १५) । इसप्रकार व्याख्यान करने पर द्रव्यप्रमाणकी प्ररूपणा समाप्त होती है ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ २६ ॥

१ संसारी पचक्खा तप्पुण्णा तिगदिहीणया कमसो । सामण्णा पचिंदी पचिंदियपुण्णतेरिक्खा ॥ गो. जी. १५५.

एदस्स सुत्तस्स वि दोहि पयारेहि अवदारं[1] परूविय णिरओघकालपरूवणा-सुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं। एत्थ मिच्छाइट्ठिणिद्देसो किमट्ठं ण कदो? ण, अणंतरादीद-सुत्तादो मिच्छाइट्ठि त्ति अणुवट्टमाणत्तादो।

अध सिया असंखेज्जासंखेज्जासु ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीसु अदिक्कंतासु तिरिक्ख-गईए पंचिंदियतिरिक्खाणं वोच्छेदो हवदि, पंचिंदियतिरिक्खट्ठिदीए उवरि तत्थ अवट्ठाणाभावादो त्ति? ण एस दोसो, एइंदिय-विगलिंदिएहिंतो देव-णेरइय-मणुस्सेहिंतो च पंचिंदियतिरिक्खेसुप्पज्जमाणजीवसंभवादो। आयविरहिय-सव्वयरासीए[2] वोच्छेदो हवदि। एसा पुण सव्वया आयसहिया चेदि ण वोच्छिज्जदे। सम्मामिच्छाइट्ठिरासीव किं ण भवदीदि चेण्ण, तत्थ गुणट्ठिदिकालादो अंतरकालस्स बहुत्तुवलंभादो। ण च एत्थ पंचिंदियतिरिक्खेसु भवट्ठिदिकालादो विरहकालस्स बहुत्तणमत्थि, अंतरकालस्स अंतो-

इस सूत्रका भी दोनों प्रकारसे अवतारका प्ररूपण करके सामान्य नारकियोंके काल प्रमाणकी अपेक्षा प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान व्याख्यान करना चाहिये (देखो सूत्र १६)।

शंका—इस सूत्रमें मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश क्यों नहीं किया?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अनन्तर पूर्ववर्ती सूत्रसे 'मिथ्यादृष्टि' इस पदकी अनुवृत्ति चली आ रही है।

शंका—कदाचित् असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके निकल जाने पर तिर्यंचगतिके पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका विच्छेद हो जायगा, क्योंकि, पंचेन्द्रिय तिर्यंचकी स्थितिके ऊपर तिर्यंचगतिमें उनका अवस्थान नहीं रह सकता है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, एकेन्द्रियों और विकलेन्द्रियोंमेंसे तथा देव, नारकी और मनुष्योंमेंसे पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव संभव हैं। जो राशि व्ययसहित और आयरहित होती है उसका ही सर्वथा विच्छेद होता है। परंतु यह पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि राशि तो व्यय और आय इन दोनों सहित है, इसलिये इसका विच्छेद नहीं होता है

शंका—जिसप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशि कदाचित् विच्छिन्न हो जाती है, उसीप्रकार यह राशि भी क्यों नहीं होती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वहां पर गुणस्थानके कालसे अन्तरकाल बड़ा है, इसलिये सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिका कदाचित् विच्छेद हो जाता है। परंतु यहां पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें भवस्थितिके कालसे विरहकाल बड़ा नहीं है, क्योंकि, आगममें पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके अन्तर-

१ अ प्रतौ 'अवहार' इति पाठः। २ प्रतिषु 'सव्वरासीए' इति पाठः।

मुहुत्तुवएसादो। भवट्ठिदिकालस्स[१] सादिरेयतिण्णिपलिदोवमोवदेसादो। 'णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा' त्ति सुत्तादो वा विरहाभावो णव्वदे। एवं कालपरूवणा गदा।

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देव-अवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणकालेण ॥ २७ ॥

असिद्धेण देवअवहारकालेण कथं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो साहिज्जदे? ण एस दोसो, अणाइणिहणस्स आगमस्स असिद्धत्ताणुववत्तीदो। अणवगमो असिद्धत्तणमिदि चे ण, वक्खाणादो तदवगमसिद्धीदो। संपहि वेसय-छप्पण्णंगुलवग्ग-मावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। अहवा आवलियाए असंखेज्जदिभागेण वेसय-छप्पण्णमेत्तसूचिअंगुलेसु भागे हिदेसु तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। अहवा पुव्विल्ल-मावलियाए असंखेज्जदिभागं वग्गेऊण पण्णट्ठिसहस्स-पंचसय-छत्तीसमेत्तपदरंगुलेसु भागे

कालका अन्तर्मुहूर्तमात्र उपदेश पाया जाता है; और भवस्थिति कालका कुछ अधिक तीन पल्योपमका उपदेश दिया है। इसलिये पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि राशिका विच्छेद नहीं होता है। अथवा, 'नाना जीवोंकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव सर्व काल रहते हैं' इस सूत्रसे भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका विरहाभाव जाना जाता है। इसप्रकार काल-प्ररूपणा समाप्त हुई।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ २७ ॥

शंका—देवोंका प्रमाण लानेके लिये जो अवहारकाल कहा है वह असिद्ध है, इसलिये असिद्ध देव अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल कैसे साधा जाता है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अनादिनिधन आगम असिद्ध नहीं हो सकता है।

शंका—आगमका ज्ञान नहीं होना ही आगमका असिद्धत्व है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, व्याख्यानसे आगमके ज्ञानकी सिद्धि हो जाती है।

अब बतलाते हैं कि दोसौ छप्पन सूच्यंगुलके वर्गको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। अथवा, आवलीके असंख्यातवें भागसे दोसौ छप्पन सूच्यंगुलोंके भाजित करने पर वहां जो लब्ध आवे उसका वर्ग कर देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है। अथवा, पहले स्थापित आवलीके असंख्यातवें भागको वर्गित करके जो प्रमाण आवे उससे पेंसठ हजार पांचसौ

१ प्रतिषु 'अवट्ठिदिकालस्स' इति पाठ।

हिदेसु पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि[1]। अहवा पण्णट्ठिसहस्स-पंच-सय-छत्तीसरूवोवट्टिदआवलियाए असंखेज्जदिभागस्स वग्गेण पदरंगुले भागे हिदे पंचिं-दियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि।

एत्थ खंडिदादिविहिं वत्तइस्सामो। तं जहा– पदरंगुले असंखेज्जे खंडे कए एयं खंडं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। खंडिदं गदं। आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे पंचिं-दियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। भाजिदं गदं। आवलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स पदरंगुलं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगखंडं पंचिंदियतिरिक्ख-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। विरलिदं गदं। तमवहारकालं सलागभूदं ठवेऊण पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालपमाणेण पदरंगुलादो अवहिरिज्जदि सलागाहिंतो एगरूवमवणिज्जदि। एवं पुणो पुणो अवणिज्जमाणे सलागाओ पदरंगुलं च जुगवं णिट्ठिदं[2]। तत्थ आदीए वा अंते वा मज्झे वा एगवारमवहिदपमाणं पंचिंदियतिरिक्ख-

---

छत्तीसमात्र प्रतरांगुलोंके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है। अथवा, पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीससे आवलीके असंख्यातवें भागके वर्गको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल आता है। अब यहां खंडित आदिककी विधिको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

प्रतरांगुलके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार खंडितका वर्णन समाप्त हुआ। आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ। आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रतरांगुलको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर उनमेंसे एक विरलनके प्रति प्राप्त एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ। उस आवलीके असंख्यातवें भागरूप अवहारकालको शलाकारूपसे स्थापित करके अनन्तर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालके प्रमाणको प्रतरांगुलमेंसे घटा देना चाहिये। एकवार घटाया इसलिये शलाका-राशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। इसप्रकार पुनः पुनः प्रतरांगुलमेंसे आवलीके असंख्यातवें भागको और शलाकाराशिमेंसे एकको उत्तरोत्तर कम करते जानेपर शलाकाराशि और प्रतरांगुल एक साथ समाप्त होते हैं। यहां पर आदिमें अथवा मध्यमें अथवा अन्तमें एकवार जितना प्रमाण घटाया उतना पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार

---

१ अ-प्रतौ ' होदि ', आ-प्रतौ ' होदि आगच्छदि ' इति पाठ.।

२ प्रतिषु ' णिट्ठिद ' इति पाठ.।

मिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। अवहिदं गदं। तस्स पमाणं पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि। पमाणं गदं। केण कारणेण? सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि। सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुल-पढमवग्गमूलम्हि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि लब्भंति। एवमसंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि आगच्छंति। कारणं गदं। आवलियाए असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि। अहवा आवलियाए असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुलपढमवग्गमूलमवहरिय लद्धेण सूचिअंगुल-पढमवग्गमूलं चेव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि पंचिंदिय-तिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एवं गंतूण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण आवलियाए भागे हिदाए लद्धेण आवलियं गुणियं तदो पदरावलियं गुणिय एवं जाव सूचिअंगुलपढमवग्गमूलं ति णिरंतरं सयलवग्गाणं अण्णोण्णब्भत्थे कदे तत्थ जत्तियाणि

अपहृतका कथन समाप्त हुआ। उस पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण प्रतरांगुलके असंख्यातवें भाग है जो असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण होता है। इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ।

शंका—पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण असंख्यात सूच्यंगुल किस कारणसे है?

समाधान—सूच्यंगुलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर एक सूच्यंगुलका प्रमाण आता है। सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतने सूच्यंगुल लब्ध आते हैं। इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर असंख्यात सूच्यंगुल लब्ध आते हैं। इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ।

आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यंगुलप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है। अथवा, आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको अपहृत करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यंगुलप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है। इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे आवलीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे आवलीको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे प्रतरावलीको गुणित करके इसीप्रकार सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलपर्यंत संपूर्ण वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर यहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यंगुल आते हैं और यही पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि हवंति । णिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा तेणेव भागहारेण सूचि-अंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणेऊण तेण सूचिअंगुले गुणिदे पंचिंदिय-तिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एवमसंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण आवलियाए भागे हिदाए जं लद्धं तेण तं चेव गुणिय तस्सुवरिमवग्गं गुणिय एवं जाव सूचिअंगुलेत्ति णिरंतरं सव्ववग्गाणं अण्णोण्णब्भासे कए पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो गदो । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदसूचिअंगुलेण घणंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं जहा– सूचिअंगुलेण[1] घणंगुले भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदिय-तिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । घणाघणे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । आवलियाए

है । इसप्रकार निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे उसी सूच्यंगुलके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है । अथवा, उसी आवलीके असंख्यातवें भागरूप भागहारसे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे आवलीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे उसी आवलीको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे उस आवलीके उपरिम वर्गको गुणित करके इसीप्रकार गुणित करते हुए सूच्यंगुलपर्यंत संपूर्ण वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार द्विरूपमें अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— सूच्यंगुलका घनांगुलमें भाग देने पर प्रतरांगुल आता है । पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है ।

१ अ-आ-प्रत्योः 'अंगुलस्स' क-प्रतौ 'अंगुल' इति पाठः ।

असंखेज्जदिभागेण गुणिदसूचिअंगुलेण घणंगुलपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणाघणंगुल-पढमवग्गमूले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तं जहा– घणंगुलपढमवग्गमूलेण घणाघणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे घणंगुलमागच्छदि। पुणो सूचिअंगुलेण घणंगुले भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि। पुणो आवलियाए असंखेज्जदि-भाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एवं हेट्ठिमवियप्पो गदो।

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि। तत्थ वेरूवे गहिदं वत्तइस्सामो। आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुलं भागे हिदे पंचिंदिय-तिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स छेदणए कदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एसो मज्झिम-वियप्पो, एदमवेक्खिय हेट्टिम-उवरिमववएससंभवादो। एसो उवयारेण उवरिमवियप्पो

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यं-गुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनांगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनाघनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर घनांगुलका प्रमाण आता है। पुनः सूच्यंगुलसे घनांगुलके भाजित करने पर प्रतरांगुलका प्रमाण आता है। पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार। उनमेंसे द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है। उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। वास्तवमें यह मध्यम विकल्प है और इसीकी अपेक्षा करके ही अधस्तन और उपरिम संज्ञा संभव है, इसलिये उपचारसे यह उपरिम विकल्प कहा जाता है।

विशेषार्थ— विवक्षित भाजकका किसी विवक्षित भाज्यमें भाग देनेसे जो लब्ध आता है वही लब्ध जब उस विवक्षित भाज्य और भाजकसे नीचेकी संख्याओंका आश्रय लेकर निकाला जाता है, तब वह अधस्तन विकल्प कहलाता है; और जब वही लब्ध उस विवक्षित भाज्य और भाजकसे ऊपरकी संख्याओंका आश्रय लेकर निकाला जाता है, तब उसे उपरिम विकल्प कहते हैं। इस नियमके अनुसार प्रकृतमें भाजक आवलीका असंख्यातवां भाग और भाज्य प्रतरांगुल, इन दोनोंसे नीचेकी संख्याओंका आश्रय लेकर जब पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

त्ति वुच्चदे। संपहि अणुवयारेण उवरिमवियप्पं वत्तइस्सामो। तं जहा– आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदपदरंगुलेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एत्थ अद्धच्छेदणयमेलावणविहाणं चिंतिय वत्तव्वं। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तं जहा– पदरंगुलउवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि। पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभाएण[1] पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठि-

लाया जायगा, तब इस प्रक्रियाको अधस्तन विकल्प कहेंगे; और जब उक्त दोनों संख्याओंसे ऊपरकी संख्याओंका आश्रय लेकर उक्त अवहारकाल लाया जायगा, तब उसे उपरिम विकल्प कहेंगे। आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको भाजित करके पंचेन्द्रिय तिर्यंच अवहारकालके लानेकी जो प्रक्रिया है वही वास्तवमें अधस्तन या उपरिम विकल्प नहीं कही जा सकती है, क्योंकि, अधस्तन और उपरिम विकल्पके निश्चित करनेके लिये यहां वही आधार है। अतः वास्तवमें वह मध्यम विकल्प ही है, उपरिम नहीं।

अब अनुपचारसे उपरिम विकल्पको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है। उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है। यहां पर अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिका विचार कर कथन करना चाहिये। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्तस्थानोंमें भी ले जाना चाहिये।

अब अष्टरूपमें उपरिम विकल्प बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है। वह इसप्रकार है— प्रतरांगुलके उपरिम वर्गसे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरांगुल आता है। पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है। उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

1 प्रतिषु ' असखेज्जासखेज्जदिभाएण '. इति पाठः।

अवहारकालो आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । घणाघणे वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणंगुलउवरिम-वग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण घणाघणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्ख-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा– घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणाघणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे घणंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुल-उवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदिय-तिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । पदरंगुलस्स घणंगुलस्स घणाघणंगुलपढमवग्ग-मूलस्स चासंखेज्जदिभागेण पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण गहिदगहिदो गहिद-गुणगारो वत्तव्वो । एदेण अवहारकालेण जगसेढिम्हि भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्ख-मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई आगच्छदि । जहा णेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालस्स खंडिदादि-परूवणा कदा तहा एदिस्से विक्खंभसूईए खंडिदादिपरूवणा कायव्वा । एदेण अवहार-कालेण जगपदरे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि । एत्थ खंडिद-

आता है । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्तस्थानोंमें ले जाना चाहिये ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनाघनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर घनांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलके उपरिम वर्गसे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरांगुल आता है । पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागरूप, घनांगुलके असंख्यातवें भागरूप और घनाघनांगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन (पहलेके समान) करना चाहिये । इस अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है । पहले जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके खंडित आदिककी प्ररूपणा कर आये हैं, उसीप्रकार इस विष्कंभसूचीके खंडित आदिकका प्ररूपण करना चाहिये ।

पूर्वोक्त अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि

भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पा जहा णेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वपरूवणाए परूविदा तहा परूवेयव्वा।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति तिरिक्खोघं ॥ २८ ॥

एदस्स सुत्तस्स जहा तिरिक्खोघगुणपडिवण्णपमाणपरूवणसुत्तस्स वक्खाणं कदं तहा कायव्वं। तिरिक्खेसु पंचिंदिए मोत्तूण अण्णत्थ गुणपडिवण्णजीवाणं संभवाभावादो। एवं पंचिंदियतिरिक्खपरूवणा समत्ता।

संपहि पज्जत्तणामकम्मोदयपंचिंदियतिरिक्खपमाणपरूवणं हवदि—

पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[1] ॥ २९ ॥

एत्थ पंचिंदियगहणं एइंदिय-विगलिंदियवुदासट्ठं। तिरिक्खणिद्देसो देव-णेरइय-मणुसवुदासट्ठो। पज्जत्तणिद्देसो अपज्जत्तवुदासट्ठो। मिच्छाइट्ठिणिद्देसेण सेसगुणट्ठाण-

---

द्रव्यका प्रमाण आता है। खंडित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्पका प्ररूपण जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी प्ररूपणाके समय कर आये हैं उसीप्रकार यहां पर उन सबका प्ररूपण करना चाहिये।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक पंचेन्द्रिय तिर्यंच प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य तिर्यंचोंके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥२८॥

जिसप्रकार सामान्य तिर्यंचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले सूत्रका व्याख्यान कर आये हैं उसीप्रकार इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि, तिर्यंचोंमें पंचेन्द्रिय जीवोंको छोड़कर दूसरे तिर्यंचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव संभव नहीं हैं। इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच प्ररूपणा समाप्त हुई।

अब जिनके पर्याप्त नामकर्मका उदय पाया जाता है ऐसे पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं—

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ २९ ॥

सूत्रमें एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके निराकरण करनेके लिये पंचेन्द्रिय पदका ग्रहण किया है। देव, नारकी और मनुष्योंके निराकरण करनेके लिये तिर्यंच पदका निर्देश किया है। अपर्याप्त जीवोंके निराकरण करनेके लिये पर्याप्त पदका निर्देश किया है। सूत्रमें मिथ्यादृष्टि

---

1 ×× तप्पुण्णा तिगदिहीणया ×× पचिंदियपुण्णतेरिक्खा। गो. जी. १५४.

वुदासो कदो हवदि । दव्वपमाणेणेत्ति णिद्देसेण खेत्त-कालवुदासो कदो हवदि । केवडिया इदि पुच्छासुत्तणिद्देसेण छदुमत्थाणं कत्तारत्तमवणिदं हवदि । असंखेज्जा इदि णिद्देसेण संखेज्जाणंताणं वुदासो कदो । किमट्ठं दव्वपमाणमेव पढमं परूविज्जदि ? ण एस दोसो, अदीव¹थूलत्तादो दव्वपरूवणा पढमं परूविज्जदे । कधमेदिस्से थूलत्तणं ? असंखेज्जमेत्त-विसेसिदजीवोवलंभणिमित्तादो । खेत्त-कालेहिंतो दव्वं थोवेत्ति वा पुव्वं परूविज्जदे । दव्वथोवत्तणं कधं जाणिज्जदे ? 'वड्डीदु जीव-पोग्गल-कालागासा अणंतगुणा' एदम्हादो गाहासुत्तादो णव्वदे । सेसपरूवणा जहा णेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणपरूवणसुत्तस्स उत्ता तहा वत्तव्वा ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३० ॥

पदके निर्देशसे शेष गुणस्थानोंका निराकरण हो जाता है । 'द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा' इसप्रकारके निर्देशसे क्षेत्र और कालप्रमाणका निराकरण हो जाता है । 'कितने हैं' इसप्रकार पृच्छारूप सूत्रके निर्देशसे छद्मस्थकर्तृकत्वका निराकरण हो जाता है । 'असंख्यात हैं' इसप्रकारके निर्देशसे संख्यात और अनन्तका निराकरण हो जाता है ।

शंका—पहले द्रव्यप्रमाणका ही प्ररूपण क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यप्ररूपणा अतीव स्थूल है, इसलिये उसका पहले प्ररूपण किया जाता है ।

शंका—यह द्रव्यप्ररूपणा स्थूल कैसे है ?

समाधान—क्योंकि, यह द्रव्यप्ररूपणा केवल असंख्यात विशेषणसे युक्त जीवोंके ग्रहण करनेमें निमित्त है, इसलिये स्थूल है ।

अथवा, क्षेत्र और कालसे द्रव्य स्तोक है, इसलिये उक्त दोनों प्ररूपणाओंके पहले द्रव्यप्ररूपणाका कथन किया जाता है ।

शंका—क्षेत्र और कालसे द्रव्य स्तोक है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'वृद्धिकी अपेक्षा जीव, पुद्गल, काल और आकाश उत्तरोत्तर अनन्तगुणे हैं' इस गाथासूत्रसे जाना जाता है कि काल और क्षेत्रसे द्रव्य स्तोक है ।

शेष प्ररूपणा जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले सूत्रकी कह आये हैं उसप्रकार कहना चाहिये ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३० ॥

१ प्रतिषु 'अदीद' इति पाठः ।

एत्थ असंखेज्जासंखेज्जणिद्देसो सेस-असंखेज्जाणं वुदासट्ठो। ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणिद्देसो कप्पमाणपरूवणट्ठो। कालेणेत्ति णिद्देसो खेत्तादिणियत्तणट्ठो। कधं दव्वपरूवणादो कालपरूवणा सुहुमा? असंखेज्जासंखेज्जोवलंभणिमित्तादो पल्ल-सायर-कप्पाणमुवरिमसंखाविसेसिदजीवोवलंभणिमित्तादो च। संपहि सुहुमदरपरूवणट्ठं सुत्तमाह—

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो संखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३१ ॥

एत्थ पदरगहणेण जगपदरस्स गहणं, ण पदरंगुलस्स, 'देवअवहारकालादो संखेज्जगुणहीणेण कालेण' इदि वयणण्णहाणुववत्तीदो। देवाणमवहारकाले संखेज्जरूवेहि भागे हिदे जो भागलद्धो सो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो होदि। तं कधं जाणिज्जदे? संविग्गगीदत्थ-आइरियाणमविरुद्धवयणादो णव्वदे। एसो पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि। अहवा संखेज्जरूवेहि सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धे वग्गिदे

शेष असंख्यातोंके निराकरण करनेके लिये यहां सूत्रमें असंख्यातासंख्यात पदका ग्रहण किया है। कल्पके प्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी पदका ग्रहण किया है। क्षेत्रादि प्रमाणोंके निराकरण करनेके लिये 'कालकी अपेक्षा' इस पदका ग्रहण किया है।

शंका—द्रव्यप्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म कैसे है?

समाधान—असंख्यातासंख्यातके ग्रहण करनेका निमित्त कालप्ररूपणा है। अथवा, कालप्ररूपणा पल्य, सागर और कल्पसे ऊपरकी संख्यासे विशिष्ट जीवोंके ग्रहण करानेमें निमित्त है, इसलिये द्रव्यप्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म है।

अब अत्यंत सूक्ष्मप्ररूपणाके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियों द्वारा देव अवहारकालसे संख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३१ ॥

यहां सूत्रमें प्रतर पदके ग्रहण करनेसे जगप्रतरका ग्रहण किया है, प्रतरांगुलका नहीं, क्योंकि, यदि ऐसा न माना जाय तो 'देव अवहारकालकी अपेक्षा संख्यातगुणे हीन कालसे' यह वचन नहीं बन सकता है। देवोंके अवहारकालमें संख्यातका भाग देने पर जो लब्ध आवे वह प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग होता है।

शंका—यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—संविग्न होकर जिन्होंने पदार्थोंका निरूपण किया है ऐसे आचार्योंके अविरुद्ध उपदेशसे जाना जाता है कि देवोंके अवहारकालमें संख्यातका भाग देने पर प्रतरांगुलका संख्यतावां भाग लब्ध आता है। और यही पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल है। अथवा, संख्यातसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसका वर्ग कर देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता

पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि । अहवा तप्पाओग्गसंखेज्जरूवे वग्गिऊण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि । एदस्स खंडिदादओ जाणिय भाणियव्वा । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठि-दव्वपरूवणा गदा ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ ३२ ॥

एदस्स सुत्तस्स जहा तिरिक्खगुणपडिवण्णाणं सुत्तस्स वक्खाणं कदं तहा कायव्वं, विसेसाभावादो । एवं पंचिंदियतिरिक्खपरूवणा समत्ता ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केव-डिया, असंखेज्जा[1] ॥ ३३ ॥

एत्थ पंचिंदियणिद्देसो सेसिंदियवुदासट्ठो । तिरिक्खणिद्देसो सेसगदिवुदासट्ठो । जोणिणीणिद्देसो पुरिस-णवुंसयलिंगवुदासट्ठो । मिच्छाइट्ठिणिद्देसो सेसगुणपडिवण्णवुदासट्ठो ।

है । अथवा, तद्योग्य संख्यातका वर्ग करके और उस वर्गित राशिका प्रतरांगुलमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहारकालके खंडित आदिकको समझकर कथन करना चाहिये ।

इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोका द्रव्य होता है । इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी द्रव्यप्ररूपणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ३२ ॥

जिसप्रकार तिर्यंचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रका व्याख्यान कर आये हैं, उसीप्रकार इस सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि, उस सूत्रके व्याख्यानसे इस सूत्रके व्याख्यानमें कोई विशेषता नहीं है । इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच प्ररूपणा समाप्त हुई ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ३३ ॥

सूत्रमें पंचेन्द्रिय पदका निर्देश शेष इन्द्रियोंके निवारण करनेके लिये किया है । तिर्यंच पदका निर्देश शेष गतियोंके निवारण करनेके लिये किया है । योनिमती पदका निर्देश पुरुषलिंग और नपुंसकलिंगके निवारण करनेके लिये किया है । मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश

१ असंखिज्जा पंचिंदियतिरिक्खजोणिआ । अनु. सू. १४१ पृ. १७९.

केवडिया इदि पुच्छाणिद्देसो सुत्तस्स पमाणपडिवायणट्ठो। असंखेज्जा इदि णिद्देसो संखेज्जाणंताणं पडिसेहफलो। सेसं पुव्वं व परूवेदव्वं।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३४ ॥

एत्थ पुव्वसुत्तादो मिच्छाइट्ठि त्ति अणुवट्टावेयव्वं, अण्णहा सुत्तत्थाणुववत्तीदो। सेसं पचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिकालपरूवणसुत्तम्हि वुत्तविहाणेण वत्तव्वं।

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो संखेज्जगुणेण कालेण ॥ ३५ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खाणं कीरदे। तं जहा– तिण्णिसयसहस्स-चउवीससहस्स-कोडिरूवेहि देवअवहारकालं गुणिदे तदो संखेज्जगुणो पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। अहवा छज्जोयणसदमंगुलं काऊण वग्गिदे इगवीसकोडाकोडिसयाणि तेवीसकोडाकोडीओ छत्तीसकोडिसयसहस्साणि चउसट्ठिकोडिसहस्साणि पदरंगुलाणि[1] पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। अहवा इगवीसकोडा-

शेष गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके निवारण करनेके लिये किया है। 'कितने हैं' इसप्रकार पृच्छारूप पदका निर्देश सूत्रकी प्रमाणताके प्रतिपादन करनेके लिये किया है। 'असंख्यात' इस पदके निर्देश करनेका फल संख्यात और अनन्तका प्रतिषेध करना है। शेष व्याख्यान पहलेके समान करना चाहिये।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३४ ॥

यहां पहलेके सूत्रसे मिथ्यादृष्टि इस पदकी अनुवृत्ति कर लेना चाहिये, अन्यथा सूत्रार्थ नहीं बन सकता है। शेष कथन पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणका कालकी अपेक्षा प्ररूपण करनेवाले सूत्रके अनुसार करना चाहिये।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे संख्यातगुणे अवहारकालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३५ ॥

आगे इस सूत्रका व्याख्यान करते हैं। वह इसप्रकार है— तीन लाख चौवीस हजार करोड़ संख्यासे देवोंके अवहारकालके गुणित करने पर जो लब्ध आवे उससे भी संख्यातगुणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल है। अथवा, छहसौ योजनके अंगुल करके वर्ग करने पर इक्कीससौ कोड़ाकोड़ी, तेवीस कोड़ाकोड़ी, छत्तीस कोड़ी लाख और चौसठ कोड़ी हजार प्रतरांगुल प्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता

१ छस्सयजोयणकदिहिदजगपदरं जोणिणीण परिमाणं। गो. जी. १५६.

कोडिसद-तेवीसकोडाकोडि-छत्तीसकोडिलक्ख-चउसट्ठिकोडिसहस्सरूवेहि पदरंगुलमोवट्टि-ऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एदं केसिंचि आइरियवक्खाणं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिजोणिणीअवहारकालपडिबद्धं ण घडदे। कुदो ? पुरदो वाणवेंतरदेवाणं तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गमेत्तअवहारकालो होदि त्ति वक्खाणदंसणादो। इदं वक्खाणं असच्चं वाणवेंतरअवहारकालपमाणवक्खाणं सच्चमिदि कधं जाणिज्जदे ? णत्थि एत्थ अम्हाणमेयंतो, किंतु दोण्हं वक्खाणाणं मज्झे एक्केण वक्खाणेण असच्चेण होदव्वं। अहवा दोण्णि वि वक्खाणाणि असच्चाणि, एसा अम्हाणं पइज्जा। कधमेदं जाणिज्जदे ? 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीहिंतो वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा,

है। अथवा इकवीससौ कोड़ाकोड़ी, तेवीस कोड़ाकोड़ी, छत्तीस कोड़ी लाख, और चौसठ कोड़ी हजार प्रमाण संख्यासे प्रतरांगुलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

विशेषार्थ—एक योजनके चार कोस, एक कोसके दो हजार धनुष, एक धनुषके चार हाथ और एक हाथके चौवीस अंगुल होते हैं,* इसलिये एक योजनके अंगुल करने पर १ × ४ × २००० × ४ × २४ = ७६८००० प्रमाण अंगुल आते हैं। ७६८००० को ६०० से गुणा कर देने पर ६०० योजनके ४६,०८,००००० प्रमाण अंगुल हो जाते हैं। ४६०८००००० संख्यातका वर्ग कर लेने पर २१,२३,३६,६४,०००००००००० प्रमाण प्रतरांगुल होते हैं। इनका भाग जगप्रतरमें देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालसे संबन्ध रखनेवाला यह कितने ही आचार्योंका व्याख्यान घटित नहीं होता है, क्योंकि, तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र व्यंतर देवोंका अवहारकाल होता है, ऐसा आगे व्याख्यान देखा जाता है।

शंका—यह पूर्वोक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालका व्याख्यान असत्य है और वाणव्यंतर देवोंके अवहारकालके प्रमाणका व्याख्यान सत्य है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—इस विषयमें पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीसंबन्धी अवहारकालका व्याख्यान असत्य ही है और व्यन्तर देवोंके अवहारकालका व्याख्यान सत्य ही है, ऐसा कुछ हमारा एकान्त मत नहीं है, किंतु हमारा इतना ही कहना है कि उक्त दोनों व्याख्यानोंमेंसे कोई एक व्याख्यान असत्य होना चाहिये। अथवा, उक्त दोनों ही व्याख्यान असत्य हैं, यह हमारी प्रतिज्ञा है।

शंका—उक्त दोनों व्याख्यान असत्य हैं, अथवा, उक्त दोनों व्याख्यानोंमेंसे एक

* छहिं अगुलेहि पादो वेपादेहिं विहत्थिणामा य। दोण्णि विहत्थी हत्थो वेहत्थेहिं हवे रिक्कू॥ वेरिक्कूहि दंडो दंडसमा जुगधणूणि मुसलं वा। तस्स तहा णाली दोदंडसहस्सयं कोसं॥ चउकोसेहिं जोयण × ×। ति. प. पत्र ५।

तत्थेव देवीओ संखेज्जगुणाओ ' एदम्हादो खुद्दाबंधसुत्तादो णाणिज्जदे । ण च सुत्तमप्पमाणं काऊण वक्खाणं पमाणमिदि वोत्तुं सक्किज्जदे, अइप्पसंगादो । ण च एक्केक्कस्स देवस्स एक्का चेव देवी होदि त्ति जुत्ती अत्थि, भवणादियाणं[1] भूओदेवीणमागमेणोवलंभादो देवेहिंतो देवीओ बत्तीसगुणाओ[2] त्ति वक्खाणदंसणादो च । तम्हा जदि वाणवेंतरदेवअवहारकालो तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गमेत्तो त्ति णिच्छओ अत्थि तो जोणिणीअवहारकालमुप्पायणट्ठं तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गम्हि बत्तीसोत्तरसदपहुडि जिणदिट्ठभावो गुणगारो पवेसेयव्वो । अध जोणिणीअवहारकालो छज्जोयणसदंगुलवग्गमेत्तो त्ति णिण्णओ अत्थि तो वाणवेंतरअवहारकालमुप्पायणट्ठं छज्जोयणसदंगुलवग्गो तेत्तीसपहुडि जिणदिट्ठभावसंखेज्जरूवेहि ओवट्टेयव्वं । अहवा उभयत्थ वि पदरंगुलस्स तप्पाओग्गो गुणगारो दादव्वो ।

एत्थ खंडिदादिविहिं वत्तइस्सामो । तं जहा– पदरंगुलउवरिमवग्गे पदरंगुलस्स

व्याख्यान तो असत्य है ही, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — ' पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंसे वाणव्यन्तर देव संख्यातगुणे हैं और उनकी देवियां वाणव्यन्तर देवोंसे संख्यातगुणी हैं' इस खुद्दाबंधके सूत्रसे उक्त अभिप्राय जाना जाता है । सूत्रको अप्रमाण करके उक्त व्याख्यान प्रमाण है, ऐसा तो कहा नहीं जा सकता है, अन्यथा, अतिप्रसंग दोष आ जायगा । यदि एक एक देवके एक एक ही देवी होती है, यह युक्ति दी जाय सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, भवनवासी आदि देवोंके बहुतसी देवियोंका आगममें उपदेश पाया जाता है । और 'देवोंसे देवियां बत्तीसगुणी होती हैं' ऐसा व्याख्यान भी देखा जाता है। इसलिये वाणव्यन्तरदेवोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र है, यदि ऐसा निश्चय है तो पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालके उत्पन्न करनेके लिये तीनसौ योजनके अंगुलोंके वर्गमें जो राशि जिनदेवने देखी हो तदनुसार बत्तीस अधिक सौ आदि रूप गुणकारका प्रवेश कराना चाहिये । अथवा, ' पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल छहसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र है ' यदि ऐसा निश्चय है तो वाणव्यंतर देवोंका अवहारकाल उत्पन्न करनेके लिये तेतीस आदि जो संख्या जिनेन्द्रदेवने देखी हो उससे छहसौ योजनोंके अंगुलोंके वर्गको अपवर्तित करना चाहिये । अथवा, वाणव्यन्तर और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती, इन दोनोंके अवहारकालोंके लिये दोनों स्थानोंमें भी प्रतरांगुलके उसके योग्य गुणकार दे देना चाहिये ।

अब यहां खंडित आदिककी विधिको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके प्रतरांगुलके संख्यातवें भागमात्र खंड करने पर उनमेंसे एक खंड प्रमाण

१ प्रतिषु ' अणादियादीण ' इति पाठ. ।

२ इगिपुरिसे बत्तीस देवी । गो. जी. २७८.

३ प्रतिषु ' तिण्णिजोयण ' इति पाठः ।

संखेज्जदिभागमेत्तखंडे कए तत्थेयखंडं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। खंडिदं गदं। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। भाजिदं गदं। पदरंगुलस्स-संखेज्जदिभागं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स पदरंगुलस्सुवरिमवग्गं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। विरलिदं गदं। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं सलागभूदं ठवेऊण पदरंगुलउवरिमवग्गादो पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालपमाणमवणिय सलागादो एगरूवमवणेयव्वं। एवं पुणो पुणो अवहिरिज्जमाणे पदरंगुलउवरिमवग्गो सलागाओ च जुगवं णिट्ठिदाओ। तत्थ आदीए अंते मज्झे वा एयवारमवहिदपमाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहार-कालो होदि। अवहिदं गदं। तस्स पमाणं पदरंगुलउवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिभागो संखेज्जाणि पदरंगुलाणि। तं जहा– पदरंगुलेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुल-मागच्छदि। पदरंगुलस्स दुभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे दोण्णि पदरंगुलाणि आगच्छंति। पदरंगुलस्स तिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे तिण्णि पदरंगुलाणि

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसप्रकार खंडितका वर्णन समाप्त हुआ। प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ। प्रतरांगुलके संख्यातवें भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंडमात्र पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ। प्रतरांगुलके संख्यातवें भागको शलाकारूप स्थापित करके प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमेंसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल घटा देना चाहिये। एकवार घटाया, इसलिये शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। इसप्रकार प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमेंसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि-योंका अवहारकाल और शलाकाराशिमेंसे एक पुनः पुनः घटाते जाने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग और शलाकाएं एकसाथ समाप्त हो जाती हैं। वहां आदिमें, अन्तमें अथवा मध्यमें एकवार जितना प्रमाण घटाया जाय उतना पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अव-हारकाल होता है। इसप्रकार अपहृतका वर्णन समाप्त हुआ। उस पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण प्रतरांगुलके उपरिम वर्गका असंख्यातवां भाग है जो संख्यात प्रतरांगुलप्रमाण है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरांगुलका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर एक प्रतरांगुल आता है। प्रतरांगुलके दूसरे भागका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर दो प्रतरांगुल लब्ध आते हैं। प्रतरांगुलके तीसरे भागका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीन प्रतरांगुल लब्ध आते हैं। इसीप्रकार क्रमसे आगे जाकर

आगच्छंति। एवं कमेण गंतूण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे संखेज्जाणि पदरंगुलाणि आगच्छंति। पमाण-कारणाणि गदाणि। तस्स का णिरुत्ती? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे लद्धम्हि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पदरंगुलाणि हवंति। णिरुत्ती गदा।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि। तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। अहवा वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, विहज्जमाणरासीदो हेट्ठिमपदरंगुलं पेक्खिय पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालस्स बहुत्तुवलंभादो। ण च थोवरासिमवहरिय तत्तो बहुवरासी उप्पादेदुं सक्किज्जदे, विरोहा[1]। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलं गुणेऊण पदरंगुलघणे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तं जहा– पदरंगुलेण पदरंगुलघणे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि। पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठि-

प्रतरांगुलके संख्यातवें भागका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर संख्यात प्रतरांगुल लब्ध आते हैं। इसप्रकार प्रमाण और कारणका वर्णन समाप्त हुआ।

शंका– इसकी क्या निरुक्ति है?

समाधान–प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर लब्धमें जो प्रमाण आवे उतने प्रतरांगुल योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं। इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प। उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं–प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे उसीके अर्थात् प्रतरांगुलके गुणित कर देने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। अथवा, यहां द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प नहीं बनता है, क्योंकि, भज्यमान राशिकी अपेक्षा अधस्तन प्रतरांगुलको देखते हुए पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल बहुत बड़ा है। कुछ स्तोक राशिको अपहृत करके उससे बड़ी राशि नहीं उत्पन्न की जा सकती है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं– प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके घनके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है– प्रतरांगुलसे प्रतरांगुलके घनके भाजित करने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है। पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच

1 प्रतिषु 'विरोहाभावादो' इति पाठः।

अवहारकालो आगच्छदि। अट्ठरूवणा गदा। घणाघणे वत्तइस्सामो। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलं गुणेऊण तेण पदरंगुलघणस्स पढमवग्गमूलं गुणिय घणाघणंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। तं जहा– घणंगुलेण घणाघणंगुले भागे हिदे घणंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि। पुणो पदरंगुलेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलुवरिमवग्गो आगच्छदि। पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। हेट्ठिमवियप्पो गदो।

गहिदादिभेएण उवरिमवियप्पो तिविहो। तत्थ वेरूवे गहिदं वत्तइस्सामो। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एसो मज्झिमवियप्पो उवरिमवियप्पणिण्णयजणणट्ठं संभाविदो[1]। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-

योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है। इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनांगुलमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनांगुलसे घनाघनांगुलके भाजित करने पर घनांगुलका उपरिम वर्ग आता है। पुनः प्रतरांगुलसे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है। पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है। इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ।

गृहीत आदिके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है। उनमेंसे द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है। उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है। यह मध्यम विकल्प है जो उपरिम विकल्पका निर्णय करानेके लिये बतलाया गया है। प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है। इसीप्रकार

१ प्रतिषु 'समवाविदो' इति पाठः।

मिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । एवमुवरि जाणिऊण वत्तव्वं ।

अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा– पदरंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणंगुलउवरिमवग्गस्स तव्वग्गवग्गं[1] गुणेऊण घणाघणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा– घणंगुलउवरिमवग्गस्स तव्वग्गवग्गेण घणाघणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलउवरिम-

---

ऊपर जानकर भी कथन करना चाहिये ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम वर्गके वर्गके वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनांगुलके उपरिम वर्गके वर्गके वर्गका घनाघनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनांगुलके उपरिम वर्गका उपरिम वर्ग आता है । पुनः

---

१ प्रतिषु 'तत्तस्स वग्ग' इति पाठः ।

वग्गस्सुवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । एवमुवरि जाणिऊण णेयव्वं । पदरंगुलउवरिमवग्गस्स घणंगुलउवरिमवग्गस्स घणाघणंगुलस्स च असंखेज्जदिभाएण पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च साहेयव्वो । एदेण अवहारकालेण जगसेढिम्हि भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई आगच्छदि । तेणेव जगपदरे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ ३६ ॥

दव्वट्ठियणयमस्सिऊण ओघपरूवणा हवदि । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे तिरिक्खोघपरूवणाए पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तोघपरूवणाए वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीगुणपडिवण्णपरूवणा समाणा ण हवदि, तिवेदरासीदो इत्थिवेदगरासिस्स समाणत्ताणुव-

प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । इसीप्रकार ऊपर जानकर ले जाना चाहिये । प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप, घनांगुलके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप और घनाघनांगुलके असंख्यातवें भागरूप पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारको साध लेना चाहिये । इस अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची आती है । और उसी अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती जीव तिर्यंच-सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ३६ ॥

द्रव्यार्थिक नयका आश्रय लेकर सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवर्ती पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती जीवोंकी प्ररूपणा तिर्यंच सामान्य प्ररूपणाके समान है । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्ब करने पर तिर्यंच सामान्य प्ररूपणा अथवा पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त सामान्य प्ररूपणाके समान पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी प्ररूपणा नहीं होती है, क्योंकि, तीन वेदवाली राशिसे एक स्त्रीवेदी जीवराशिकी समानता नहीं बन

वत्तीए, तम्हा विसेसेण होदव्वं । तं विसेसं पुव्वाइरियाविरुद्धोवएसेण वत्तइस्सामो । तं जहा- पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे तत्थेव सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि खंडिदादओ ओघभंगो । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तेसु पुरिसवेदासंजदसम्माइट्ठिरासीदो तत्थेव इत्थिवेदासजदसम्माइट्ठिरासी किमट्ठमसंखेज्जगुणहीणा ? पुरिसवेदादो सुट्ठु अप्पसत्थित्थिवेदोदएण पउरं दंसणमोहणीयखओवसमाभावादो । जदि एवं तो तत्थतणइत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिरासीदो तत्तो अप्पसत्थतणणवुंसगवेदअसंजदसम्माइट्ठिरासिस्स असंखेज्जगुणहीणत्तं पसज्जदे ? भवदु णाम अविरुद्धत्तादो । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ततिवेदसम्मामिच्छाइट्ठिरासीदो पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीअसंजदसम्माइट्ठिरासी किं समो किं

सकती है । इसलिये सामान्य प्ररूपणासे यह प्ररूपणा विशेष होना चाहिये । आगे उस विशेषको पूर्व आचार्योंके अविरुद्ध उपदेशके अनुसार बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल होता है । उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । उसे संख्यातसे गुणित करने पर वहीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती संयतासंयत अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंके द्वारा खंडित आदिकका कथन सामान्य तिर्यंचोंके खंडित आदिकके कथनके समान है।

शंका— पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तोंमें पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे वहीं पर स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि असंख्यातगुणी हीन किस कारणसे है ?

समाधान— पुरुषवेदकी अपेक्षा अप्रशस्त स्त्रीवेदके उदयके साथ प्रचुररूपसे दर्शनमोहनीयके क्षयोपशमका अभाव है ।

शंका— यदि ऐसा है तो उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे स्त्रीवेदियोंसे भी अप्रशस्त नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके असंख्यातगुणी हीनता प्राप्त हो जाती है ?

समाधान— स्त्रीवेदियोंसे नपुंसकवेदियोंके असंख्यातगुणी हीनता प्राप्त होती है तो हो जाओ, क्योंकि, ऐसा स्वीकार कर लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त तीनों वेदवाली सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि क्या समान है, या संख्यातगुणी है, या असंख्यातगुणी

संखेज्जगुणो किमसंखेज्जगुणो किं सखेज्जगुणहीणो किमसंखेज्जगुणहीणो किं विसेसाहिओ विसेसहीणो वा त्ति णत्थि संपहियकाले उवएसो ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ३७ ॥

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहिरंति कालेण ॥ ३८ ॥

एदाणि दोण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि । किंतु एत्थ अपज्जत्ता इदि वुत्ते अपज्जत्तणामकम्मोदयपंचिंदियतिरिक्खा घेत्तव्वा । पज्जत्तणामकम्मस्स उदए अपज्जत्तो वि पज्जत्तो चेव, णोकम्मणिव्वत्तिअवेक्खाभावादो ।

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३९ ॥

पण्णट्ठिसहस्स-पंचसय-छत्तीसपदरंगुलमेत्तदेवअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो होदि । अवसेसा खंडिदादिवियप्पा पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं व भाणेदव्वा ।

हैं, या संख्यातगुणी हीन है, या असंख्यातगुणी हीन है, या विशेषाधिक है, या विशेष हीन हैं, इत्यादिरूपसे इस कालमें कोई उपदेश नहीं पाया जाता है ।

पंचेंद्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ३७ ॥

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३८ ॥

ये दोनों भी सूत्र सुगम हैं । किंतु यहां पर अपर्याप्त ऐसा कथन करने पर अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका ग्रहण करना चाहिये । तथा जिसके पर्याप्त नामकर्मका उदय है वह (शरीर पर्याप्तिके पूर्ण होने तक) अपर्याप्त होता हुआ भी पर्याप्त ही है, क्योंकि, यहां पर नोकर्मकी निर्वृतिकी अपेक्षा नहीं है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३९ ॥

पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीस प्रतरांगुलमात्र देवोंके अवहारकालमें आवलीके असंख्यातवें भागका भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त अवहारकाल होता है । अवशिष्ट खंडित आदि विकल्पोंका कथन पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके खंडित आदिके कथनके समान करना चाहिये ।

भागाभागं वत्तइस्सामो। तिरिक्खरासिमणंतखंडे कदे तत्थ बहुखंडा एइंदिय-वियलिंदिया होंति। सेसं संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खलद्धिअपज्जत्ता होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छादिट्ठी होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठी होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदसासणसम्माइट्ठिदव्वं होदि। सेसेगखंडा संजदासंजदा होंति।

अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि। तत्थ सत्थाणे भण्णमाणे तिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो धुवरासिस्स बहुत्तुवलंभादो। सासणादीणं सत्थाणमोघं। पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं सत्थाणप्पाबहुगं वुच्चदे। सव्वत्थोवो पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सगअवहारकालो।

अब भागाभागको बतलाते हैं— तिर्यंच राशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुखंडप्रमाण एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव हैं। शेषके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तक जीव हैं। शेषके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेषके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेषके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच तीन वेदवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है। शेषके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच तीन वेदवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य है। शेषके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच तीन वेदवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है। शेष एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच तीन वेदवाले संयतासंयत हैं।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व। उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करने पर तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे ध्रुवराशिका प्रमाण बड़ा है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य प्ररूपणाके समान है। अब पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व बतलाते हैं— पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सबसे थोड़ा है। उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा,

अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडि-भागो ? सगअवहारकालवग्गो। अहवा असंखेज्जाणि घणंगुलाणि। केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? सग-अवहारकालो। दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? सगअवहारकालो। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? सेढी। एवं चेव पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणं पि। णवरि जम्हि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदि-भागमेत्ताणि घणंगुलाणि त्ति वुत्तं तम्हि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वत्तव्वं। एवं चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठीणं हि। णवरि जम्हि सूचि-अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वुत्तं तम्हि संखेज्जसूचिअंगुलमेत्ताणि त्ति वत्तव्वं। पंचिंदियतिरिक्खापज्जत्तसत्थाणप्पाबहुगं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिसत्थाणभंगो। पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीगुणपडिवण्णाणं सत्थाणं तिरिक्खगुण-पडिवण्णसत्थाणभंगो।

परत्थाणे पयदं। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालादो जाव पलिदोवमेत्ति

जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है। अथवा, असंख्यात घनांगुल गुणकार है। वे कितने हैं ? सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र हैं। विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगश्रेणीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है। इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये। पर इतना विशेष है कि जहां पर सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र घनांगुल होते हैं ऐसा कहा है वहां पर सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र घनांगुल होते हैं ऐसा कहना चाहिये। इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व होता है। इतना विशेष है कि जहां पर सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र घनांगुल होते हैं ऐसा कहा है वहां पर संख्यात सूच्यंगुलमात्र घनांगुल होते हैं ऐसा कहना चाहिये। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती गुणस्थान-प्रतिपन्न जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व तिर्यंच गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्वका कथन प्रकृत है— असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे

१ प्रतिषु 'सूचि-' इति पाठः।

ओघपरत्थाणभंगो। तदो मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा। को गुणगारो? तिरिक्ख-मिच्छाइट्ठिणवुंसगसंखेज्जदिभागो। पंचिंदियतिरिक्खेसु असंजदस्स अवहारकालादो जाव पलिदोवमेत्ति ओघपरत्थाणभंगो। तदो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। को पडिभागो? असंखेज्जाणि पलिदोवमाणि। उवरि सत्थाण-भंगो। एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं। णवरि जम्हि असंखेज्जाणि पलिदोवमाणि त्ति वुत्तं तम्हि संखेज्जाणि पलिदोवमाणि त्ति वत्तव्वं। एवं जोणिणीणं पि। णवरि जम्हि संखेज्जाणि पलिदोवमाणि त्ति वुत्तं तम्हि पलिदोवमस्स संखेज्जदि-भागो। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तपरत्थाणं सगसत्थाणतुल्लं।

सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो। एवं जाव पलिदोवमेत्ति णेयव्वं। तदो पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो। पुव्वभणिदो। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदएयखंडमेत्तेण। पंचिंदियतिरिक्ख-

---

लेकर पल्योपमतक ओघ परस्थान अल्पबहुत्वके कथनके समान कथन जानना चाहिये। पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? तिर्यंच मिथ्यादृष्टि नपुंसक-वेदियोंका संख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें असंयतोंके अवहारकालसे लेकर पल्योपमतक ओघ परस्थानके कथनके समान कथन जानना चाहिये। पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? असंख्यात पल्योपमोंका प्रमाण प्रतिभाग है। इसके ऊपर स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान कथन जानना चाहिये। इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तोंके अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये। इतना विशेष है कि जहां पर असंख्यात पल्योपम हैं ऐसा कहा है वहां पर संख्यात पल्योपम हैं ऐसा कथन करना चाहिये। इसीप्रकार योनिमतियोंके अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये। इतना विशेष है कि जहां पर संख्यात पल्योपम हैं ऐसा कहा है वहां पर पल्योपमका संख्यातवां भाग है ऐसा कथन करना चाहिये। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका परस्थान अल्पबहुत्व अपने स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्वका कथन प्रकृत है— असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पूर्व कथित प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका अवहारकाल विशेष अधिक है। कितने मात्र विशेषसे अधिक है? पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके

पज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जा समया। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पुव्वभणिदो। पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जा समया। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण विसेसो? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? अवहारकालो। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगविक्खंभसूई। पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिपज्जत्तदव्वं संखेज्जगुणं। को गुणगारो? संखेज्जा समया। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जभागो। पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठि-

जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है? गुणकार क्या है? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं। पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची संख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है। कितनेमात्रसे अधिक है? पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीको आवलीके असंख्यातवे भागसे खंडित करने पर जितना लब्ध आवे तन्मात्र अधिक है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगश्रेणीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंका द्रव्य संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य

दव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागेखंडिदमेत्तेण । पदरम-संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । तिरिक्खमिच्छाइट्ठिदव्वमणंतगुणं । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धेहि वि अणतगुणो भवसिद्धियजीवाणमणंताभागस्स असंखेज्जदिभागो ।

मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[2] ॥ ४० ॥

एत्थ मणुसगइग्गहणेण सेसगइपडिसेहो कदो । मणुस्सेसु त्ति वयणेण तत्थ ट्ठिद-सेसजीवादिदव्वपडिसेहो कओ । मिच्छाइट्ठि त्ति वयणेण सेसगुणट्ठाणपडिसेहो कदो । खेत्त-कालपमाणवुदासट्ठं दव्वगहणं । सुत्तस्स पमाणपरूवणट्ठं केवडियगहणं । संखेज्जाणंताणं वुदासट्ठं असंखेज्जगहणं । अइथूलपरूवणं परूविय सुहुमट्ठपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

विशेष अधिक है। कितनेमात्रसे अधिक है ? पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्रसे अधिक है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल गुणकार है। जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणी गुणकार है। लोकसे तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा या भव्यसिद्ध जीवोंके अनन्त बहुभागोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है।

मनुष्यगतिप्रतिपन्न मनुष्योंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्य प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ४० ॥

इस सूत्रमें 'मनुष्यगति' इस पदके ग्रहण करनेसे शेष गतियोंका प्रतिषेध कर दिया गया है। 'मनुष्योंमें' इसप्रकारके वचनसे वहां पर स्थित शेष जीवादि द्रव्योंका प्रतिषेध कर दिया है। 'मिथ्यादृष्टि' इस वचनसे शेष गुणस्थानोंका प्रतिषेध कर दिया है। क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणका निराकरण करनेके लिये द्रव्य पदका ग्रहण किया है। सूत्रकी प्रमाणताका प्ररूपण करनेके लिये 'कितने हैं' इस पदका ग्रहण किया है। संख्यात और अनन्तका निराकरण करनेके लिये असंख्यात पदका ग्रहण किया है। अब अतिस्थूल प्ररूपणाका प्ररूपण करके सूक्ष्म प्ररूपणाका प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

---

१ प्रतिषु '-भाए'-इति पाठः।

२ असखिज्जा मणुस्सा । अनु. सू. १४१ पृ. १७९.

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति-कालेण ॥ ४१ ॥

दव्वपमाणमवेक्खिय कालपमाणस्स महत्तोवलंभादो असंखेज्जासंखेज्जदिओसप्पिणि-उस्सप्पिणिविसेससंखापरूवणादो वा कालपमाणस्स सुहुमत्तणं वत्तव्वं। सेसपरूवणा पुव्वं व परूवेयव्वा।

खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो। तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जदिजोयणकोडीओ। मणुसमिच्छाइट्ठीहि रूवा पक्खित्तएहि सेढी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण[1] ॥ ४२ ॥

सेढीए असंखेज्जदिभागो इदि सामण्णवयणेण संखेज्जजोयणप्पहुडि हेट्ठिमसंखावियप्पाणं सव्वेसिं गहणे संपत्ते तप्पडिसेहट्ठं असंखेज्जजोयणकोडीओ त्ति वुत्तं। तिस्से सेढीए असंखेज्जदिभागस्स सेढीए पंतीए आयामो दीहत्तणमिदि संबंधेयव्वं। असंखेज्जदि-

कालकी अपेक्षा मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ४१ ॥

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कालप्रमाणकी महत्ता पाई जानेके कारण अथवा, कालप्रमाण असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीरूप विशेष संख्याका प्ररूपण करनेवाला होनेसे उसकी (कालप्रमाणकी) सूक्ष्मताका कथन करना चाहिये। शेष प्ररूपणाका कथन पहलेके समान करना चाहिये।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। उस श्रेणीका आयाम (अर्थात् जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका आयाम) असंख्यात करोड योजन है। सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकारूपसे स्थापित करके रूपाधिक (अर्थात् एकाधिक तेरह गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक) मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिके द्वारा जगश्रेणी अपहृत होती है ॥ ४२ ॥

सूत्रमें 'जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण' इसप्रकार सामान्य वचन देनेसे संख्यात योजन आदि अधस्तन संपूर्ण संख्याका ग्रहण प्राप्त होता है, अतः उसका प्रतिषेध करनेके लिये 'असंख्यात करोड़ योजन' पदका ग्रहण किया। सूत्रमें आये हुए 'उस श्रेणीका आयाम' इस पदसे उस श्रेणीके असंख्यातवें भागकी पंक्तिका आयाम अर्थात् दीर्घता ऐसा संबन्ध

१ मनुष्यगतौ मनुष्या मिथ्यादृष्टयः श्रेण्यसंख्येयभागप्रमिताः। स चासंख्येयभागः असंख्येया योजनकोट्यः। स. सि. १, ८. सेढी सूईअंगुलआदिमतदियपदभाजिदेगूणा। सामण्णमणुसरासी। गो. जी. १५७. उक्कोसपए मणुया सेढी रूवाहिया अवहरंति। तइयमूलाहएहिं अंगुलमूलप्पएसेहिं। पञ्चसं. २, २१.

जोयणकोडीओ त्ति वयणे पदरंगुल घणंगुलादीणं गहणे पत्ते तप्पडिसेहट्ठं अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेणेत्ति[1] वयणं। अंगुलवग्गमूलमिदि वुत्ते सूचिअंगुलपढमवग्गमूलं गहेयव्वं। तदियवग्गमूलमिदि वुत्ते सूचिअंगुलतदियवग्गमूलस्स गहणं। कुदो? सूचि-अंगुलसहचारादो अणुवट्टणादो वा। सूचिअंगुलतदियवग्गमूलेण तस्सेव पढमवग्गमूलं गुणिदे मणुसमिच्छाइट्ठीण अवहारकालो होदि। अहवा सूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण तदिय-वग्गमूलं गुणिय सूचिअंगुले भागे हिदे मणुसमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। तस्स खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि जाणिऊण वत्तव्वाणि। तस्स पमाणं सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि। तं जहा— सूचिअंगुलपढम-वग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे पढमवग्गमूलमेव लभामहे। विदियवग्गमूलेण सूचि-अंगुले भागे हिदे विदियवग्गमूलम्हि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि लब्भंति। विदिय-तदियवग्गमूलमण्णोण्णब्भत्थं करिय सूचिअंगुले भागे हिदे असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि लब्भंति त्ति ण संदेहो। तस्स णिरुत्ती तदियवग्गमूलेण

करना चाहिये। 'असंख्यात करोड़ योजन' इसप्रकारका वचन रहने पर प्रतरांगुल और घनांगुल आदिका ग्रहण प्राप्त होता है, अतः उसका प्रतिषेध करनेके लिये सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल तृतीय वर्गमूलसे गुणित' इसप्रकारका वचन दिया है। यहां पर 'अंगुलका वर्गमूल' ऐसा कथन करने पर उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका ग्रहण करना चाहिये। 'तृतीय वर्गमूल' ऐसा कथन करने पर उससे सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलका ग्रहण करना चाहिये। क्योंकि, यहां पर सूच्यंगुलका साहचर्य संबन्ध है। अथवा, ऊपरसे उसीकी अनुवृत्ति है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे उसी सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। अथवा, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सूच्यंगुलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है। इस अवहारकालके खंडित, भाजित, विरलित और अपहृतको जानकर उनका कथन करना चाहिये। उस मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल ही प्राप्त होता है। सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलमें जितनी संख्या हो उतने सूच्यं-गुलके प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं। इसीप्रकार सूच्यंगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं, इसमें संदेह नहीं। उसी मनुष्य मिथ्यादृष्टि

१ प्रतिषु 'गुणिदे त्ति' इति पाठः।

विदियवग्गमूले भागे हिदे लद्धस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । विदिय-तदियवग्गमूले अण्णोण्णगुणे करिय पढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, सूचिअंगुल-पढमवग्गमूलादो अवहारकालस्स बहुत्तादो । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । सूचिअंगुलविदिय-वग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो होदि । तं जहा– सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि । विदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । विदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण अंगुलवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणंगुलविदियवग्गमूलं गुणिय घणाघणंगुलविदियवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं जहा– घणंगुलविदियवग्गमूलेण घणाघणंगुल-

अवहारकालकी निरुक्ति इसप्रकार है— सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर लब्ध राशिका जितना प्रमाण हो उतने सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूल मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो लब्ध आया उससे उसी सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। अथवा, यहां द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प नहीं बनता है, क्योंकि, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल बहुत बड़ा है ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके लब्ध राशिका घनांगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । जैसे, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है । पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिसे घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है। जैसे, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे घनाघनांगुलके द्वितिय वर्गमूलके भाजित करने पर

विदियवग्गमूले भागे हिदे घणंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि । पुणो सूचिअंगुलपढम-वग्गमूलेण (घणंगुलपढमवग्गमूले) भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि । पुणो अण्णोण्ण-गुणिदविदिय-तदियवग्गमूलेण (सूचिअंगुले) भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि ।

गहिदादिभेएण उवरिमवियप्पो तिविहो । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । तेणेव भागहारेण सूचिअंगुलं गुणिय पदरंगुले भागे हिदे मणुसमिच्छाइट्ठिअवहार-कालो आगच्छदि । तं जहा- सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुल-मागच्छदि । पुणो पुव्वभागहारेण सूचिअंगुले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । सूचिअंगुलविदिय-तदियवग्गमूलं अण्णोण्णं गुणिय तेण पदरंगुलं गुणिय घणंगुले भागे हिदे मणुसअवहारकालो आगच्छदि । एसो मज्झिमवियप्पे किण्ण पददि त्ति वुत्ते ण, सूचिअंगुलादो अहियरासिमवलंबिय उप्पाइज्जमाणे उवरिमवियप्पत्तं पडि विरोहाभावादो । घणाघणे वत्तइस्सामो । विदिय-तदियवग्गमूलेहि पदरंगुलं गुणिय तेण घणंगुलउवरिमवग्गं गुणिय तेण घणाघणंगुले भागे हिदे मणुसमिच्छाइट्ठिअवहारकालो

घनांगुलका प्रथम वर्गमूल आता है । पुनः सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है । पुन सूच्यंगुलके दूसरे और तीसरे वर्ग-मूलका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

गृहीत आदिके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— इसी भागहारसे अर्थात् सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूल गुणित तृतीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । जैसे, सूच्यंगुलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है । पुनः पूर्वोक्त भागहारसे अर्थात् सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूल गुणित तृतीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलको परस्पर गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिसे घनांगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

शंका—प्रस्तुत विकल्प मध्यम विकल्पमें समाविष्ट क्यों नहीं होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सूच्यंगुलसे बड़ी राशिका अवलम्बन करके मनुष्य मिथ्या-दृष्टि अवहारकालके उत्पन्न करने पर इसे उपरिम विकल्पके होनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— परस्पर गुणित सूच्यंगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके लब्ध राशिका घनाघनांगुलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अव-

आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते घणाघणंगुलस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मणुसमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । सूचिअंगुल-घणंगुलपढमवग्गमूल-घणाघणंगुल-विदियवग्गमूलाणं असंखेज्जदिभाएण भागहारेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च साहेयव्वो । एदेण भागहारेण जगसेढिम्हि भागे हिदे रूवाहिओ मणुसरासी आगच्छदि । तं कधं जाणिज्जदि त्ति वुत्ते 'मणुसगईए मणुसेहि रूवं पक्खित्तएहि सेढी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण' इदि खुद्दाबंधसुत्तादो । एत्थ रासी दुविहा भवदि, ओजं जुम्मं चेदि । ओजं दुविहं, तेजोजं कलिओजं चेदि । तं जहा— जम्हि रासिम्हि चदुहि अवहिरिज्जमाणे तिण्णि ट्ठांति सो तेजोजं । चदुहि अवहिरिज्जमाणे जम्हि एगं ठादि तं कलिओजं । जुम्मं दुविहं, कदजुम्मं बादरजुम्मं चेदि । तं जहा— चदुहि अवहिरिज्जमाणे जम्हि रासिम्हि चत्तारि ट्ठांति तं कदजुम्मं । जम्हि रासिम्हि दोण्णि ट्ठांति तं बादरजुम्मं । जम्हा मणुस्सरासी तेजोजं तम्हा लद्धम्हि कदजुम्मम्हि एगरूवमवणेयव्वं । अवसेससद-

हारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशि घनाघनांगुलके अर्धच्छेद करने पर भी मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागरूप, घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप और घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप भागहारसे गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारको साध लेना चाहिये ।

उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर एक अधिक मनुष्यराशि आती है । यह कैसे जाना जाता है, ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि 'मनुष्यगतिमें सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकाराशि करके एक अधिक मनुष्य जीवोंके द्वारा जगश्रेणी अपहृत होती है, अर्थात् एक अधिक मनुष्यराशिको जगश्रेणीमेंसे घटाते जाना चाहिये और शलाकाराशिमेंसे उत्तरोत्तर एक कम करते जाना चाहिये । इसप्रकार करनेसे शलाकाराशिके साथ जगश्रेणी समाप्त हो जाती है' । इस खुद्दाबंधके सूत्रसे जाना जाता है कि उक्त भागहारसे जगश्रेणीके अपहृत करने पर एक अधिक मनुष्य राशि लब्ध आती है ।

राशि दो प्रकारकी है, ओजराशि और युग्मराशि । उनमेंसे ओजराशि दो प्रकारकी है, तेजोज और कलिओज । आगे इन्हींका स्पष्टीकरण करते हैं— जिस राशिको चारसे भाजित करने पर तीन शेष रहते हैं वह तेजोजराशि है । जिस राशिको चारसे भाजित करने पर एक शेष रहता है वह कलिओजराशि है । युग्मराशि दो प्रकारकी है, कृतयुग्म और बादरयुग्म । आगे उसी युग्मराशिके भेदोंका स्पष्टीकरण करते हैं— जिस राशिको चारसे भाजित करने पर चार शेष रहते हैं अर्थात् जिसमें चारका पूरा भाग जाता है वह कृतयुग्मराशि है । तथा चारसे भाजित करने पर जिस राशिमें दो शेष रहते हैं वह बादरयुग्मराशि है । प्रकृतमें क्योंकि मनुष्यराशि तेजोजरूप है, इसलिये जगश्रेणीमें सूच्यंगुलके प्रथम

मणुसरासिपरूवणादो जुत्तं खुद्दाबंधम्हि भागलद्धादो एयरूवस्स अवणयणं, एत्थ पुण जीवट्ठाणम्हि मिच्छत्तविसेसिदजीवपमाणपरूवणे कीरमाणे रूवाहियतेरसगुणट्ठाणमेत्तेण अवणयणरासिणा होदव्वमिदि। तं कधं जाणिज्जदे? 'मणुसमिच्छाइट्ठीहि रूवा पक्खित्तएहि सेढी अवहिरिज्जदि' त्ति सुत्तम्हि रूवा इदि बहुवयणणिद्देसादो। अहवा रूवपक्खित्तएहिं त्ति बहुव्वीहिसमासेण लक्खणविसेसेण कयपुव्वणिवाएण अवणिदबहुवयणादो बहुत्तोवलद्धी होज्ज। रूवं पक्खित्तएहि त्ति एगवयणमपि कहिं दिस्सदे तो वि ण दोसो, बहूणं जीवाणं जादिदुवारेण एयत्तदंसणादो[1]। का एत्थ जाई णाम? चेदणादिसमाणपरिणामो। तदो भागलद्धादो रूवाहियतेरसगुणट्ठाणपमाणे अवणिदे मणुसमिच्छाइट्ठि-

और तृतीय वर्गमूलके गुणनफलरूप भागहारका भाग देनेसे जो राशि लब्ध आयगी वह कृतयुग्मरूप होनेसे उसमेंसे एक कम कर देना चाहिये।

खुद्दाबंधमें मिथ्यादृष्टि इत्यादि विशेषणसे रहित सामान्य मनुष्यराशिका प्ररूपण होनेसे वहां पर सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलोंके परस्पर गुणफलरूप भागहारका जगश्रेणीमें भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसमेंसे एक संख्याका कम करना युक्त है। परंतु यहां जीवस्थानमें तो मिथ्यात्व विशेषणसे युक्त जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण किया गया है, अतएव मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशि लानेके लिये उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि अपनयनराशि होना चाहिये।

शंका—यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—'रूपाधिक मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवराशिके द्वारा जगश्रेणी अपहृत होती है' इस सूत्रमें 'रूवा' यह बहुवचन निर्देश पाया जाता है, जिससे जाना जाता है कि यहां पर उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशि अपनयनराशि है। अथवा, 'रूवपक्खित्तएहिं' इस पदमें नियमविशेषसे जिसमें पूर्वनिपात हो गया है ऐसा बहुव्रीहि समास होनेके कारण रूप पदके बहुवचनसे रहित होनेके कारण भी उससे बहुत्वकी उपलब्धि हो जाती है। कहीं पर 'रूवं पक्खित्तएहि' इसप्रकार एकवचन भी कहीं देखा जाता है, तो भी कोई दोष नहीं आता है, क्योंकि, बहुत जीवोंका जातिद्वारा एकत्व देखनेमें आता है।

शंका—यहां पर जातिसे क्या अर्थ अभिप्रेत है?

समाधान—यहां पर चेतना आदि समान परिणाम जातिसे अभिप्रेत है।

इसलिये उक्त भागहारका जगश्रेणीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके प्रमाणके कम कर देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि

१ 'जात्याख्यायामेकस्मिन्बहुवचनमन्यतरस्याम्' १. २, ५८. पाणिनि। एकोऽप्यर्थो वा बहुवद्भवति। वृत्तिः'

रासी होदि त्ति सिद्धं । एदस्स खंडिदादओ विदियपुढविमिच्छाइट्ठीणं जहा वुत्ता तहा वत्तव्वा । णवरि एत्थ अंगुलवग्गमूलेण तदियवग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि । सव्वत्थ रूवाहियतेरसगुणट्ठाणपमाणमवणेयव्वं ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा॥ ४३ ॥

एत्थ पहुडिसद्दो आदिसद्दत्थे वट्टदे । तेण सासणसम्माइट्ठिमादिं करिय जाव संजदासंजदा एदेसु गुणट्ठाणेसु मणुसरासी संखेज्जा चेव होदि त्ति जं वुत्तं होदि । संखेज्जा इदि सामण्णेण वुत्ते बावण्णकोडिमेत्ता सासणसम्माइट्ठिणो हवंति[2] । तत्तो दुगुणा सम्मामिच्छाइट्ठिणो हवंति । सत्तसयकोडिमेत्ता असंजदसम्माइट्ठिणो हवंति । संजदा-

जीवराशिका प्रमाण होता है, यह सिद्ध हो गया ।

विशेषार्थ—सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर एक अधिक सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण आता है। अतएव लब्धमें एक कम कर देने पर सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण होता है। परंतु प्रकृतमें मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशि लाना है, अतएव उक्त सामान्य मनुष्यराशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशिके प्रमाणको और कम कर देना चाहिये, तब मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशिका प्रमाण होगा।

जिसप्रकार दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंके खंडित आदिका कथन कर आये हैं उसीप्रकार इस मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवराशिके खंडित आदिकका कथन करना चाहिये। इतना विशेष है, कि यहां पर सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण होता है। तथा मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण लानेके लिये सर्वत्र एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण घटा देना चाहिये।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ४३ ॥

यहां पर प्रभृति शब्द आदि शब्दके अर्थमें आया है, इसलिये सासादनसम्यग्दृष्टिसे प्रारंभ करके संयतासंयत गुणस्थानतक इन चार गुणस्थानोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि संख्यात ही होती है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि संख्यात है, ऐसा सामान्यरूपसे कथन करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य बावन करोड़ है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे दूने हैं। असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सातसौ करोड़ प्रमाण हैं। संयतासंयतोंका प्रमाण तेरह

१ सासादनसम्यग्दृष्ट्याद्यः संयतासंयतान्ताः संख्येयाः । स. सि १, ८.

२ प्रतिषु अतः परं ' तत्तो दुगुणा सम्माइट्ठिणो हवंति ' इत्यधिकः पाठः ।

संजदाणं पमाणं तेरहकोडीओ। के वि आइरिया सासणसम्माइट्ठीणं पमाणं पण्णारस-कोडीओ हवंति सम्मामिच्छाइट्ठिपमाणं तत्तो दुगुणमिदि भणंति। पुव्विल्लपमाणमेत्थ घेत्तव्वं। किं कारणं? आइरियपरंपरागदादो। वुत्तं च—

तेरह कोडी देसे बावण्णं सासणे तु णेयव्वा।
मिस्से वि य तद्दुगुणा असंजदे सत्तकोडिसया[1] ॥ ६८ ॥

अहवा—

तेरह कोडी देसे पण्णास सासणे मुणेयव्वा।
मिस्से वि य तद्दुगुणा[2] असंजदे सत्तकोडिसया ॥ ६९ ॥

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं[3] ॥ ४४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परूविदो त्ति इह ण वुच्चदे। कुदो? मणुसगदि-वदिरित्तसेसगईसु पमत्तादिगुणट्ठाणाणमसंभवादो। मणुसेसु पमत्तादीणं ओघपरूवणा चेव।

करोड़ है। कितने ही आचार्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंका प्रमाण पचास करोड़ कहते हैं। सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंका प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे दूना कहते हैं। परंतु यहां पर पूर्वोक्त प्रमाणका ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, पूर्वोक्त प्रमाण आचार्य परंपरासे आया हुआ है। कहा भी है—

संयतासंयतमें तेरह करोड़, सासादनमें बावन करोड़, मिश्रमें सासादनके प्रमाणसे दूने और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सातसौ करोड़ मनुष्य जानना चाहिये ॥ ६८ ॥

अथवा—

संयतासंयतमें तेरह करोड़, सासादनमें पचास करोड़, मिश्रमें सासादनके प्रमाणसे दूने और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सातसौ करोड़ मनुष्य जानना चाहिये ॥ ६९ ॥

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें मनुष्य सामान्य प्ररूपणाके समान संख्यात हैं ॥ ४४ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले कह आये हैं, इसलिये यहां नहीं कहा जाता है, क्योंकि, मनुष्य-गतिको छोड़कर शेष तीन गतियोंमें प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानोंका होना असंभव है। अतः मनुष्योंमें प्रमत्तसंयत आदिका प्रमाणप्ररूपण सामान्य प्ररूपणाके समान ही है।

१ गो. जी. ६४२. स. सि. १, ८, टि.।
२ प्रतिषु 'तद्दुणा' इति पाठः।
३ प्रमत्तादीनां सामान्योक्ता संख्या। स. सि. १, ८.

मणुसपज्जत्तेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्ठदो छण्हं वग्गाणमुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेट्ठदो ॥ ४५ ॥

छट्ठवग्गस्स उवरि सत्तमवग्गस्स हेट्ठदो त्ति वुत्ते अत्थवत्ती ण जादेत्ति अत्थवत्तीकरणट्ठं कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्ठदो त्ति वुत्तं। एदस्स मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिरासिस्स पमाणपरूवणमाइरियोवएसेण वुच्चदे। वेरूवस्स पंचमवग्गेण छट्ठमवग्गं गुणिदे मणुसपज्जत्तरासी होदि। सत्तमवग्गे संखेज्जखंडे कए एगखंडं मणुसपज्जत्तरासी होदि। खंडिदं गदं। पंचमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे मणुसपज्जत्तरासी होदि। भाजिदं गदं। विरलिदं अवहिदं च चिंतिय वत्तव्वं। पमाणं सत्तमवग्गस्स

मनुष्य पर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? कोड़ाकोड़ाकोड़िके ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़िके नीचे छह वर्गोंके ऊपर और सात वर्गोंके नीचे अर्थात् छठवें और सातवें वर्गके बीचकी संख्याप्रमाण मनुष्यपर्याप्त होते हैं ॥ ४५ ॥

'छठवें वर्गके उपर और सातवें वर्गके नीचे' ऐसा कहने पर अर्थकी प्रतिपत्ति नहीं होती है, इसलिये अर्थकी प्रतिपत्ति करनेके लिये 'कोड़ाकोड़ाकोड़िके ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़िके नीचे' ऐसा कहा। अब इस मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि राशिके प्रमाणका प्ररूपण अन्य आचार्योंके उपदेशानुसार कहते हैं—

द्विरूपके पांचवें वर्गसे उसीके छठवें वर्गके गुणित करने पर मनुष्य पर्याप्त राशि होती है। द्विरूपके सातवें वर्गके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे एक खंडप्रमाण मनुष्य पर्याप्त राशि होती है। इसप्रकार खंडितका कथन समाप्त हुआ। द्विरूपके पांचवें वर्गसे उसीके सातवें वर्गके भाजित करने पर मनुष्य पर्याप्त राशि होती है। इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ। इसीप्रकार विचार कर विरलित और अपहृतका कथन कर लेना चाहिये। मनुष्य

१ एक दस सय सहस्स दससहस्सं लक्ख दहलक्ख कोडि दहकोडि कोडिसय कोडिसहस्स दसकोडिसहस्स कोडिलक्ख दहकोडिलक्ख कोडाकोडी दहकोडाकोडी कोडाकोडिसयं कोडाकोडिसहस्स दहकोडाकोडिसहस्स कोडाकोडिलक्ख दहकोडाकोडिलक्ख कोडाकोडिकोडी दहकोडाकोडिकोडी कोडाकोडिकोडिसय कोडाकोडिकोडिसहस्स दहकोडाकोडिकोडिसहस्स कोडाकोडिकोडिलक्ख दहकोडाकोडिकोडिलक्ख कोडाकोडिकोडिकोडी इत्यादिकवाचनप्रकारः। लो. प्र. सर्ग ७, पत्र १०८.

२ सामण्णमणुसरासी पंचमकदिघणसमा पुण्णा ॥ गो. जी. १५७. गर्भजानां मनुष्याणामथ मानं निरूप्यते। एकोनत्रिंशताङ्कैस्ते मिता जघन्यतोऽपि हि ॥ लो. प्र. सर्ग ७. पत्र १०७. संख्या च तेषां जघन्यतोऽपि पंचमवर्गगुणितषष्ठवर्गप्रमाणा द्रष्टव्या ॥ अयं च राशिरेकोनत्रिंशदंकस्थानो न कोटाकोट्यादिप्रकारेणाभिधातुं कथमपि शक्यते। ×× एष च राशिः पूर्वसूरिभिस्त्रियमलपदादूर्ध्वं चतुर्यमलपदस्याधस्तादित्युपवर्ण्यते। पञ्चसं. २, २१ टीका.

संखेज्जदिभागो संखेज्जाणि छट्ठवग्गाणि। तं जहा— छट्ठमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे छट्ठवग्गो आगच्छदि। पंचमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे संखेज्जा छट्ठवग्गा[1] आगच्छंति। कारणं गदं। णिरुत्ती वियप्पो य चिंतिय वत्तव्वो। एदम्हादो मणुसपज्जत्तरासीदो—

> तेरस कोडी देसे बावण्णं सासणे मुणेयव्वा।
> मिस्से वि य तद्दुगुणा असंजदे सत्तकोडिसया ॥ ७० ॥

एदीए गाहाए वुत्तगुणपडिवण्णरासीओ एयत्तं करिय पमत्तादि-णव-संजदरासिं च तत्थेव पक्खिविय अवणिदे मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिरासी होदि।

पंचमवग्गं चदुहि रूवेहि गुणिदे दुवेदमणुसपज्जत्तअवहारकालो होदि। तेण सत्तमवग्गे भागे हिदे मणुसपज्जत्तदुवेदरासी आगच्छदि[2]। मणुसपज्जत्ता बायालवग्गस्स घण-

पर्याप्त मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण द्विरूपके सातवें वर्गका संख्यातवां भाग है जो संख्यात छठवें वर्गप्रमाण है। आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं— द्विरूपके छठवें वर्गका उसीके सातवें वर्गमें भाग देने पर छठवां वर्ग आता है। पांचवें वर्गसे सातवें वर्गके भाजित करने पर संख्यात छठवें वर्ग आते हैं। इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ। निरुक्ति और विकल्पका विचार कर कथन करना चाहिये। इस मनुष्य पर्याप्त राशिमेंसे—

संयतासंयतमें तेरह करोड़, सासादनमें बावन करोड़, मिश्रमें सासादनके प्रमाणसे दूने और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सातसौ करोड़ मनुष्य होते हैं ॥ ७० ॥

इस गाथाके द्वारा कही गई गुणस्थानप्रतिपन्न राशिको एकत्रित करके और प्रमत्तसंयत आदि नौ संयतराशिको उसी पूर्वोक्त एकत्र की हुई राशिमें मिलाकर जो जोड़ हो उसके घटा देने पर मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है।

द्विरूपके पांचवें वर्गको चारसे गुणित करने पर दो वेदवाले मनुष्य पर्याप्तोंका अवहारकाल होता है। उस अवहारकालसे सातवें वर्गके भाजित करने पर मनुष्य पर्याप्त दो वेदवाले जीवोंकी राशि आती है।

विशेषार्थ—किसी भी विवक्षित वर्गात्मक राशिको चारसे गुणित करके लब्धका उस वर्गात्मक राशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर उस विवक्षित वर्ग राशिके घनका चौथा भाग लब्ध आता है। तदनुसार प्रकृतमें द्विरूपके पांचवें वर्गको चारसे गुणित करके उसका सातवीं वर्गराशिमें भाग देने पर पांचवें वर्गके घनप्रमाण पर्याप्त मनुष्य राशिका चौथा भाग लब्ध आता है। स्त्रीवेदियोंको छोड़कर द्विवेदी मनुष्योंका यही प्रमाण है।

१ प्रतिषु ' अट्ठवग्गा ' इति पाठः।

२ चउ अट्ठ पच सत्तट्ठ णव य पचट्ठ तिद य अट्ठ णवा वि चउक्कट्ठणहाइ छ छक्क पंचट्ठ दुग कक्ख चउक्का। णभ सत्त गयण अट्ठ णव एक्क पज्जत्तरासिपरिमाण ॥ ११८०७०४०६२८५६६०८४३९८३८५९८७५८४. ति. प. १६० पत्र.

मेत्ता त्ति जं वक्खाणे भणिदं जुत्तीए जोइज्जमाणे तं ण घडदे, 'कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्ठदो' त्ति सुत्तेण सह विरोधत्तादो। तं कधं जाणिज्जदे ? एगुणतीसट्ठाणेसु ट्ठिदबायालवग्गघणस्स एगुणत्तीसट्ठाणेहिंतो ऊणत्तविरोहादो। किं च जदि बायालवग्गघणमेत्तो मणुसपज्जत्तरासी होज्ज तो माणुसखेत्त ६१९७०८४६६६८१६-४१६२००००००००।*

गयणट्ठ-णय-कसाया चउसट्ठि-मियंक-वसु-खरा-दव्वा।
छायाल-वसु-णभाचल-पयत्थ-चदो रिदू कमसो ॥ ७१ ॥

'मनुष्य पर्याप्त जीवराशि बादालके घनमात्र है' यह जो ऊपर व्याख्यान करते समय कह आये हैं, युक्तिसे विचार करने पर वह कथन घटित नहीं होता है, क्योंकि, 'कोड़ाकोड़ाकोड़ीके ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीके नीचे मनुष्य पर्याप्त राशि है' इस सूत्रके साथ उक्त कथनका विरोध आता है।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि, उनतीस स्थानोंमें स्थित बादालरूप वर्गके घनको उनतीस स्थानोंसे कम अंकरूप माननेमें विरोध आता है।

विशेषार्थ—ऊपर सूत्रद्वारा पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रमाण कोड़ाकोड़ाकोड़ीके ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीके नीचे बीचकी कोई संख्या बतलाई जा चुकी है। जब कि एक अंकके ऊपर २१ शून्य रखनेसे बाईस अंकप्रमाण कोड़ाकोड़ाकोड़ी होती है और एक अंकके ऊपर २८ शून्य रखनेसे उनतीस अंकप्रमाण कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ी होती है, तब यह निश्चित हो जाता है कि सूत्रानुसार पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रमाण उनतीस अंकके नीचे और बाईस अंकके ऊपर बीचकी कोई संख्या होना चाहिये। अब यदि द्विरूपके पांचवें वर्गका घनप्रमाण पर्याप्त मनुष्य राशि मानी जाय तो पूर्वोक्त सूत्रके कथनके साथ इस कथनका विरोध आ जाता है, क्योंकि द्विरूपके पांचवें वर्गके घनका प्रमाण उनतीस अंकप्रमाण होते हुए भी कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीके प्रमाणके ऊपर है, इसलिये द्विरूपके पांचवें वर्गके घनका प्रमाण उनतीस अकसे नीचेकी संख्या नहीं हो सकती है। पर सूत्रानुसार पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण उनतीस अंकसे नीचेकी संख्या विवक्षित है, इसलिये 'पज्जत्तमणुस्साणं तिचदुपंचमवग्ग' इत्यादि रूपसे जो पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण पाया जाता है, वह सूत्रानुसार नहीं है, ऐसा प्रतीत होता है।

दूसरे, यदि बादालरूप वर्गके घनप्रमाण मनुष्य पर्याप्त राशि होवे तो वह राशि मनुष्य-क्षेत्रमें ६१९७०८४६६६८१६४१६२०००००००० अर्थात्—

क्रमशः आठ शून्य, नय अर्थात् दो, कषाय अर्थात् सोलह, चौसठ, मृगांक अर्थात् एक,

---

* प्रतिषु अष्टानां शून्यानां प्राक् '६२' इति स्थाने केवलं '६' इति पाठः।

एत्तियमेत्तपदरंगुलेण सम्माएज्ज । मणुसखेत्तपदरंगुले आणिज्जमाणे—

सत्त णव सुण्ण पच छट्ट णव चदु एक्कं च पंच सुण्णं च ।
जंबूदीवस्सेदं गणिदफलं होदि णादव्वा ॥ ७२ ॥

७९०५६९४१५० एदम्हि तेरसंगुलं[1] च किंचूणअद्धंगुलं च पक्खिविय आणेयव्वं । किंचूणपमाणं—

सत्तसहस्सडसीदेहि खंडिदे पंचवण्णखंडाणि ।
अद्धंगुलस्स हीणं करेह अद्धंगुलं णियदं ॥ ७३ ॥

$\frac{१}{२}$ $\frac{५५}{७०८८}$ एदाणि जंबूदीवपदरजोयणाणि माणुसखेत्तजंबूदीवसलागाहि दो-समुद्दसलागूणाहि गुणिय पदरंगुलाणि कायव्वाणि ।

आठ, स्वर अर्थात् छह, द्रव्य अर्थात् छह, छयालीस, आठ, शून्य, अचल अर्थात् सात, पदार्थ अर्थात् नौ, चन्द्र अर्थात् एक, और ऋतु अर्थात् छह,— ॥ ७१ ॥

इतने प्रतरांगुलोंके द्वारा समा जाना चाहिये। मनुष्यक्षेत्रमें प्रतरांगुलोंके लाने पर—

सात, नौ, शून्य, पांच, छह, नौ, चार, एक, पांच, शून्य, अर्थात् सात अरब नव्वे करोड़ छप्पन लाख चौरानवे हजार एक सौ पचास योजन, यह जम्बूद्वीपका गणितफल अर्थात् क्षेत्रफल है, ऐसा जानना चाहिये ॥ ७२ ॥

७९०५६९४१५० इस संख्यामें तेरह अंगुल और कुछ कम आधा अंगुल मिलाकर मनुष्य क्षेत्रके प्रतरांगुल ले आना चाहिये । आधे अंगुलमें कुछ कमका प्रमाण—

अर्धांगुलके पचवन खंडोंको अर्थात् $\frac{५५}{२}$ को सात हजार अठासीसे खंडित अर्थात् भाजित करने पर जो लब्ध आवे उतना हीन अर्धांगुल निश्चित करना चाहिये ॥ ७३ ॥

यथा $\frac{१}{२} \times \frac{५५}{७०८८}$

उदाहरण— $\frac{१}{२} - \left(\frac{१}{२} \text{ का } \frac{५५}{७०८८}\right) = \frac{१}{२} - \frac{५५}{१४१७६} = \frac{७०३३}{१४१७६}$ हीन अर्धांगुल.

जम्बूद्वीपसंबन्धी इन प्रतर योजनोंको लवण और कालोद समुद्रकी शलाकाओंसे न्यून मनुष्यक्षेत्रकी जम्बूद्वीप प्रमाणसे की गई शलाकाओंके द्वारा गुणित करके पुनः प्रतरांगुल कर लेना चाहिये ।

---

१ जम्बूद्वीपस्य गणितपद वक्ष्येऽथ तत्त्वत ॥ ३५ ॥ शतानि सप्तकोटीनां नवति· कोटय परा· । लक्षाणि सप्तपचाशत् षट्सहस्रोनितानि च ॥ ३६ ॥ सार्द्धं शत योजनानां पादोनक्रोशयामलम् । धनूषि पचदश च सार्द्धं करद्वय तथा ॥ ३७ ॥ अंकतोऽपि यो ७९०५६९४१५० को १ धनुः १५१५ कर २ अ. १२ लो प्र सर्ग १५, पत्र १६५.

विशेषार्थ—यद्यपि 'विक्खंभवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिरओ होदि' अर्थात् किसी वृत्त क्षेत्रकी परिधि लानेके लिये पहले उस क्षेत्रका जितना विस्तार हो उसका वर्ग कर ले। अनन्तर उस वर्गित राशिको दशसे गुणित करके उसका वर्गमूल निकाल ले। इसप्रकार जो वर्गमूलका प्रमाण होगा वही उस गोल क्षेत्रकी परिधिका प्रमाण होगा। इस नियमके अनुसार एक लाख विस्तारवाले जम्बूद्वीपकी परिधिका प्रमाण तीन लाख सोलह हजार दोसौ सत्ताईस योजन, तीन कोस, एकसौ अट्ठाईस धनुष और साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ अधिक आता है। परंतु धवलाकारने साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ अधिकके स्थानमें साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ कम ग्रहण किया है। उन्होंने कुछ कमका प्रमाण $\frac{२७}{२}$ मेंसे $\frac{१}{२} \times \frac{५५}{७०८८}$ कम बतलाया प्रतीत होता है। यद्यपि इसका निश्चित कारण प्रतीत नहीं होता है, फिर भी इसे ग्रहण करके उक्त परिधिके प्रमाणके ऊपरसे जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल लानेके लिये 'वासचउत्थाहदो दु खेत्तफलं' अर्थात् परिधिके प्रमाणको व्यासकी चौथाईरूप प्रमाणसे गुणित कर देने पर क्षेत्रफलका प्रमाण होता है, इस नियमके अनुसार पच्चीस हजारसे गुणित कर देने पर जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल आ जाता है। यहां सर्व क्षेत्रफल योजनोंमें लानेके लिये यथायोग्य प्रक्रिया कर लेना चाहिये। अब यहां पर दो समुद्रोंके क्षेत्रफलको छोड़कर जम्बूद्वीप, धातकीखंडद्वीप और पुष्करार्धद्वीपका सम्मिलित क्षेत्रफल लाना है, अतएव 'बाहिरसूईवग्गं' इत्यादि करणसूत्रसे ढाई द्वीपके जम्बूद्वीपप्रमाण खंड लाने पर वे १३२९ होते हैं। इनसे उपर्युक्त क्षेत्रफलके गुणित करने पर दो समुद्रोंके क्षेत्रफलके विना ढाई द्वीपका क्षेत्रफल योजनोंमें आता है। इसके प्रतरांगुल बनानेके लिये एक योजनके चार कोस, एक कोसके दो हजार धनुष, एक धनुषके चार हाथ और एक हाथके चौवीस अंगुलोंके वर्गसे गुणा कर देना चाहिये, क्योंकि, पूर्वोक्त राशि वर्गात्मक हैं अतएव वर्गात्मक राशिके गुणकार और भागहार भी वर्गात्मक ही होना चाहिये। इस प्रक्रियासे दो समुद्रोंके क्षेत्रफलके विना ढाई द्वीपका क्षेत्रफल प्रमाणप्रतरांगुलोंमें आ जाता है। आगे गणितद्वारा उसीका स्पष्टीकरण किया गया है। यहां धवलाके उपलभ्य पाठमें जो संशोधनकी कल्पना पादटिप्पणमें व्यक्त की गई है, उसीके अनुसार अर्थ किया गया है क्योंकि मूलकी अंकसंदृष्टि की सार्थकता तभी सिद्ध होती है जो कि निम्न उदाहरणसे स्पष्ट है—

उदाहरण—३१६२२७ यो., ३ को., १२८ ध., और कुछ कम १३$\frac{१}{२}$ अंगुल जो श्री धवलके अनुसार $\frac{२७}{२} - \frac{१}{२} \times \frac{५५}{७०८८}$ अंगुल होते हैं। यह जम्बूद्वीपकी परिधि है।

जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल लानेके लिये उपर्युक्त प्रमाणमें जम्बूद्वीपके व्यासके चतुर्थांश अर्थात् पच्चीस हजारसे गुणा करना चाहिये जिससे जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल आया—

$$\frac{८६०७०६२०३७२९५०२२५}{१०८८७१६८}$$ प्रतर योजन

७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ एत्तियमेत्तमणुसपज्जत्त-रासिम्हि[1] संखेज्जपदरंगुलेहि गुणिदे माणुसखेत्तादो संखेज्जगुणत्तप्पसंगा। माणुसलोग-खेत्तफलपमाणपदरंगुलेसु संखेज्जुस्सेहंगुलमेत्तोगाहणो मणुसपज्जत्तरासी सम्मादि त्ति णासंकणिज्जं, सव्वुक्कस्सोगाहणमणुसपज्जत्तरासिम्हि संखेज्जपमाणपदरंगुलमेत्तोगाहण-गुणगारमुहवित्थारुवलंभादो। सव्वट्ठसिद्धिदेवाणं पि मणुसपज्जत्तरासीदो संखेज्जगुणाणं ण सव्वट्ठसिद्धिविमाणे जंबूदीवपमाणे ओगाहो अत्थि, तत्तो संखेज्जगुणोगाहणाणं तत्थावट्ठाणविरोहादो। तम्हा मणुसपज्जत्तरासी एयकोडाकोडाकोडीओ सादिरेया त्ति घेत्तव्वा।

इसे दो समुद्रोंके विना ढाईद्वीपकी जम्बूद्वीपप्रमाण की गई खंडशलाकाओं अर्थात् १३२९ से गुणित कर देने पर दो समुद्रोंके विना ढाईद्वीपका क्षेत्रफल आया—

$$\frac{११४३८७८५४४७४९८६३४९०२५}{१०८८७१६८}$$ प्रमाण प्रतर योजन

इसके प्रमाणप्रतरांगुल बनानेके लिये पूर्वोक्त मापके प्रमाणानुसार $४^2 \times २०००^2 \times ४^2 \times २४^2$ से गुणित करने पर इष्ट क्षेत्रफल आया—

६१९७०८४६६६८१६४१६२०००००००० प्रमाण प्रतर अंगुल.

अब यदि ७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ इतनी मनुष्य पर्याप्त राशिको संख्यात प्रतरांगुलोंसे गुणा किया जाय तो उस प्रमाणको मनुष्य क्षेत्रसे संख्यातगुणेका प्रसंग आ जायगा। यदि कोई ऐसी आशंका करे कि मनुष्यलोकका क्षेत्रफल जो प्रमाण प्रतरांगुलोंसे लाया गया है उसमें संख्यात उत्सेधांगुलमात्र अवगाहनासे युक्त मनुष्य पर्याप्त राशि समा जायगी, सो ठीक नहीं है, क्योंकि, सबसे उत्कृष्ट अवगाहनासे युक्त मनुष्य पर्याप्त राशिमें संख्यात प्रमाण-प्रतरांगुलमात्र अवगाहनाके गुणकारका मुख विस्तार पाया जाता है। उसीप्रकार मनुष्य पर्याप्त राशिसे संख्यातगुणे सर्वार्थसिद्धिके देवोंकी भी जम्बूद्वीपप्रमाण सर्वार्थसिद्धिके विमानमें अवगाहना नहीं बन सकती है, क्योंकि, सर्वार्थसिद्धि विमानके क्षेत्र फलसे संख्यातगुणी अवगाहनासे युक्त देवोंका वहां पर अवस्थान माननेमें विरोध आता है। इसलिये मनुष्य पर्याप्त राशि एक कोड़ाकोड़ाकोड़ीसे अधिक है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये।

विशेषार्थ—मनुष्योंका निवास क्षेत्र ढाई द्वीप है, जिसका व्यास पैंतालीस लाख योजन है। इसका क्षेत्रफल १६००९०३०६५४६०१$\frac{११}{२५६}$ योजनप्रमाण होता है। इसके प्रतरांगुल ९४४२५१०४९६८१९४३४०००००००००० होते हैं, परंतु ढाई द्वीपके क्षेत्रफलमेंसे दो समुद्रोंका

१ तलीनमधुगविमल धूमसिलागाविचोरभयमेरू। तटहरिखझसा होंति हु माणुसपज्जत्तसखंका ॥ गो. जी. २५८. छ ति ति ख पण नव तिग चउ पण तिग नव पच सग तिग चउरो। छ दु चउ इग पण दु छ इग अड दु दु नव सग जहन्न नरा ॥ लो. प्र. सर्ग ७ पत्र १०८.

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ४६ ॥

क्षेत्रफल घटा देने पर शेष क्षेत्रफल ६११९७०८४६६६८१६४१६२०००००००० प्रतरांगुलप्रमाण रहता है, क्योंकि, दोनों समुद्रोंमें अन्तर्द्वीपज मनुष्य होते हुए भी उनका प्रमाण अत्यल्प होनेसे उनके क्षेत्रफलकी यहां विवक्षा नहीं की गई है। एक मनुष्यका निवास क्षेत्र संख्यात प्रतरांगुल-प्रमाण है, इसलिये ऊपर जो प्रतरांगुलोंकी संख्या बतलाई है मनुष्यराशि उससे कम ही होना चाहिये। पर मनुष्यराशिको २९ अंकप्रमाण मान लेने पर २५ अंकप्रमाण क्षेत्रफलवाले क्षेत्रमें उनका रहना किसी प्रकार भी संभव नहीं है। कारण कि ढाई द्वीपका क्षेत्रफल २५ अंकप्रमाण ही है। कदाचित् यह कहा जाय कि ऊपर जो २५ अंक प्रतरांगुल-प्रमाण क्षेत्रफल कहा है वह प्रमाणांगुलकी अपेक्षा कहा गया है। यदि इसके उत्सेधां-गुल कर लिये जांय तो इसमें २९ अंकप्रमाण मनुष्यराशि समा जायगी, सो भी बात नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्ट अवगाहनाकी अपेक्षा २९ अंकप्रमाण मनुष्यराशिका उक्त क्षेत्रमें समा जाना अशक्य है। आकाशकी अवगाहनाकी विचित्रतासे यह कोई दोष नहीं रहता है, ऐसा कहना भी युक्तियुक्त नहीं है, क्योंकि, अवगाह्यमान पदार्थोंका संयोगरूप अन्योन्य प्रवेशरूप संबन्ध ही अल्प क्षेत्रमें बहुत पदार्थोंके अधिष्ठानके लिये कारण है[1]। परंतु मनुष्योंमें परस्पर इसप्रकारका संबन्ध गर्भादि अवस्थाको छोड़कर प्रायः नहीं पाया जाता है, इसलिये सूत्रमें जो कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीसे नीचेकी और कोड़ाकोड़ाकोड़ीसे ऊपरकी संख्या मनुष्योंका प्रमाण कहा है वही युक्तियुक्त है। दूसरे यदि उनतीस अंकप्रमाण मनुष्यराशि मान ली जाय, तो मनुष्यनियोंसे तिगुणे अथवा, सातगुणे जो सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण कहा है वह नहीं बन सकता है, क्योंकि, एक लाख योजनप्रमाण सर्वार्थसिद्धिके विमानमें इतने देवोंका रहना अशक्य है। इसका कारण यह है कि एक लाख योजनके क्षेत्रफलके उत्सेधरूप प्रतरांगुल करने पर भी उनका प्रमाण अट्ठाईस अंकप्रमाण आता है और सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण मनुष्यराशिको २९ अंकप्रमाण मान लेने पर ३० अंकप्रमाण होता है। यह तो निश्चित है कि एक देव संख्यात प्रतरांगुलोंमें रहता है, परंतु यहां क्षेत्रफलके प्रतरांगुल देवोंके प्रमाणसे कम हैं, इसलिये ३० अंकप्रमाण देवोंका २८ अंकप्रमाण क्षेत्रफलवाले क्षेत्रमें रहना किसी प्रकार भी संभव नहीं है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि सूत्रमें पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण जो कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीके नीचे और कोड़ाकोड़ाकोड़ीके ऊपर कहा है वही ठीक है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-स्थानमें पर्याप्त मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥ ४६ ॥

१ एतेभ्य पर्याप्तमनुष्याणां संख्यातगुणत्वेऽपि आकाशस्यावगाहशक्तिवैचित्र्यात्सशीतिर्न कर्तव्या। गो. जी. १५९ टीका.

एदम्हि सुत्तम्हि मणुसोघे जं चउण्हं गुणट्ठाणाणं पमाणं वुत्तं तं चेव पमाणं वत्तव्वं, संगहिदतिवेदत्तणेण पज्जत्तभावेण च दोण्हं विसेसाभावादो।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगकेवलि त्ति ओघं ॥ ४७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परूविदो त्ति ण वुच्चदे।

मणुसिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया? कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्ठदो छण्हं वग्गाणमुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेट्ठदो ॥ ४८ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खाणं मणुसपज्जत्तसुत्तवक्खाणेण तुल्लं। णवरि पंचमवग्गस्स तिभागे पंचमवग्गम्हि चेव पक्खित्ते मणुसिणीणमवहारकालो होदि। तेण सत्तमवग्गे भागे हिदे मणुसणीणं दव्वमागच्छदि[1]। लद्धादो सगतेरसगुणट्ठाणपमाणे अवणिदे मणुसिणीमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि।

सामान्य मनुष्य राशिका प्रमाण कहते समय सासादनादि चार गुणस्थानवर्ती राशिका जो प्रमाण कह आये हैं, इस सूत्रका व्याख्यान करते समय उसी प्रमाणका व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि, संगृहीत त्रिवेदत्वकी अपेक्षा और पर्याप्तपनेकी अपेक्षा उक्त दोनों राशियोंमें कोई विशेषता नहीं है।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पर्याप्त मनुष्य सामान्य प्ररूपणाके समान संख्यात हैं ॥ ४७ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले कह आये हैं, इसलिये यहां नहीं कहा जाता है।

मनुष्यनियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? कोड़ाकोड़ाकोड़ीके ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीके नीचे छठवें वर्गके ऊपर और सातवें वर्गके नीचे मध्यकी संख्याप्रमाण हैं ॥ ४८ ॥

इस सूत्रका व्याख्यान मनुष्य पर्याप्तकी संख्याके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके तुल्य है। इतनी विशेषता है कि पांचवें वर्गके त्रिभागको पांचवें वर्गमें प्रक्षिप्त कर देने पर मनुष्यनियोंके प्रमाण लानेके लिये अवहारकाल होता है। उस अवहारकालसे सातवें वर्गके भाजित करने पर मनुष्यनियोंके द्रव्यका प्रमाण आता है। इसप्रकार जो मनुष्यनियोंकी संख्या लब्ध आवे उसमेंसे अपने तेरह गुणस्थानके प्रमाणके घटा देने पर मनुष्यनी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है।

१ दो पण सग दुग छण्णव सग पण इगि पच णवा एक्क। तिय पण दुग अड छप्पण अट्ठट्ठ एक्क दुगमेव। इगि दुग चउ णव पच य मणुसिणिरासिस्स परिमाण। ५९४२११२१८८५६९८२५३१९५१५७९६२७५२ ति. प. १६० पत्र. पज्जत्तमणुस्साण तिचउत्थो माणुसीण परिमाण ॥ गो. जी. १५९.

मणुसिणीसु सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ ४९ ॥

मणुसोघे वुत्तसासणादीणं संखेज्जदिभागो सासणादीणं गुणपडिवण्णाणं पमाणं मणुसिणीसु हवदि । कुदो ? अप्पसत्थवेदोदएण सह पउरं सम्मद्दंसणलंभाभावादो । तं कधं जाणिज्जदे ? 'सव्वत्थोवा णवुंसयवेदअसंजदसम्मादिट्ठिणो । इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा' इदि अप्पाबहुअसुत्तादो कारणस्स थोवत्तणं जाणिज्जदे । तदो सासणसम्माइट्ठिआदीणं पि थोवत्तणं सिद्धं

....

विशेषार्थ — किसी भी विवक्षित वर्गमें उसीके त्रिभाग को जोड़कर उसका उसके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर उस विवक्षित वर्गके घनका तीन चतुर्थांश लब्ध आता है । तदनुसार पांचवें वर्गमें उसीका त्रिभाग जोड़कर सातवें वर्गमें भाग देने पर पांचवें वर्गके घनरूप मनुष्य राशिका तीन चतुर्थांश लब्ध आता है। यही मनुष्य योनिमतियोंका प्रमाण है। इसमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका प्रमाण घटा देने पर मिथ्यादृष्टि स्त्रियोंका प्रमाण होता है, यह जो मूलमें कहा है इससे प्रतीत होता है कि उपर्युक्त प्रमाण स्त्रियोंका भाववेदकी प्रधानतासे कहा गया है । यदि यह प्रमाण द्रव्यस्त्रियोंका होता तो मूलमें 'इसमेंसे सासादनादि तेरह गुणस्थानराशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्यादृष्टि मनुष्य योनिमतियोंका प्रमाण होता है' ऐसा न कह कर केवल इतना ही कहा जाता कि इस प्रमाणमेंसे सासादनादि चार गुणस्थानवर्ती राशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंका प्रमाण होता है । परंतु गोम्मटसारकी टीकामें यह प्रमाण द्रव्यवेदकी अपेक्षा बतलाया है[1] ।

मनुष्यनियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ४९ ॥

सामान्य मनुष्योंमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी जो संख्या कही गई है उसके संख्यातवें भाग मनुष्यनियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण है, क्योंकि, अप्रशस्त वेदके उदयके साथ प्रचुर जीवोंको सम्यग्दर्शनका लाभ नहीं होता है ।

शंका — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — 'नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव सबसे स्तोक हैं । स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। और पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि उनसे असंख्यातगुणे हैं ।' इस अल्पबहुत्वके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे स्त्रीवेदियोंके अल्प होनेके कारणका स्तोकपना जाना जाता है । और इसीसे सासादनसम्यग्दृष्टि आदिकके भी स्तोकपना सिद्ध हो

....

१ पर्याप्तमनुष्यराशेः त्रिचतुर्भागो मानुषीणां द्रव्यस्त्रीणां परिमाणं भवति । गो. जी. १५९ टीका.

हवदि । णवरि एत्तियं तेसिं पमाणमिदि ण णव्वदे, संपहि उवएसाभावादो ।

मणुसअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा ॥ ५० ॥

एत्थ णिव्वत्ति-अपज्जत्ते मोत्तूण लद्धि-अपज्जत्ताणं गहणं कायव्वं । कुदो ? एत्थ गुणपडिवण्णपमाणपरूवणाभावण्णहाणुववत्तीदो । सामण्णेण अवगद-असंखेज्जसविसेसपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ५१ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं बहुसो परूविदो त्ति पुणो ण वुच्चदे पुणरुत्तभएण ।

खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ । मणुस-अपज्जत्तेहि रूवा पक्खित्तेहि सेढिमवहिरादि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ५२ ॥ इदि

एदं वयणं ण घडदे, फलाभावा । संते संभवे वियहिचारे च विसेसणमत्थवंतं

जाता है। परंतु इतनी विशेषता है कि उन सासादनसम्यग्दृष्टि आदि योनिमतियोंका प्रमाण इतना है, यह नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस कालमें इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है।

लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ५० ॥

यहां पर निर्वृत्यपर्याप्तकोंको ग्रहण न करके लब्ध्यपर्याप्तकोंका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रमाणके प्ररूपणका अभाव अन्यथा बन नहीं सकता है।

अपर्याप्त मनुष्य राशि असंख्यातरूप है यह बात सामान्यरूपसे तो जान ली, पर विशेषरूपसे उसका ज्ञान नहीं हुआ, अतः उस असंख्यातके विशेषरूपसे प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा लब्धपर्याप्त मनुष्य असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५१ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले अनेकवार कह आये हैं, अतः पुनरुक्त दोषके भयसे पुनः नहीं कहते हैं।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण लब्धपर्याप्त मनुष्य हैं। उस जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका आयाम असंख्यात करोड़ योजन है। सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूल गुणित प्रथम वर्गमूलको शलाकारूपसे स्थापित करके रूपाधिक लब्धपर्याप्तक मनुष्योंके द्वारा जगश्रेणी अपहृत होती है ॥ ५२ ॥

शंका—यह सूत्र-वचन घटित नहीं होता है, क्योंकि, इस वचनका कोई फल नहीं

भवदि। एत्थ पुण संभवो णेव इदि। परिहारो वुच्चदे। सुत्तेण विणा सेढी असंखेज्ज-जोयणकोडिपमाणो होदि त्ति ण जाणिज्जदे, तदो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेढिपमाण-मिदि जाणावणट्ठमिदं वयणं। परियम्मादो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेढीए पमाण-मवगदमिदि चे ण, एदस्स सुत्तस्स बलेण परियम्मपवुत्तीदो। अहवा सेढीए असंखेज्जदि-भागो वि सेढी वुच्चदे, अवयविणामस्स अवयवे पवुत्तिदंसणादो। जहा गामेगदेसे दड्ढे गामो दड्ढ इदि। अहवा एवं संबंधो कायव्वो। तिस्से सेढीए असंखेज्जदिभागस्स आयामो दीहत्तणं असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ होदि त्ति। अपज्जत्तएहि रूवपक्खित्तएहि रूवा पक्खिएहि रूवं पक्खित्तएहिं ति तिसु वि पादेसु रूवाहियपज्जत्तरासी पक्खिविदव्वो। पुणो लद्धम्हि रूवाहियमणुसपज्जत्तरासिमवणिदे मणुस्सापज्जत्ता होंति। अंगुलवग्गमूलं च तं तदियवग्गमूलगुणिदं च अंगुलवग्गमूलतदियवग्गमूलगुणिदं तेण सलागभूदेण सेढी अवहिरिज्जदि त्ति जं वुत्तं होदि।

है। व्यभिचारकी संभावना होने पर ही विशेषण फलवाला होता है। परंतु यहां पर तो उसकी संभावना ही नहीं है?

समाधान—आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं। सूत्रके विना 'जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणी असंख्यात करोड़ योजनप्रमाण है' यह नहीं जाना जाता है, अतः जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका प्रमाण असंख्यात करोड़ योजन है, इसका ज्ञान करानेके लिये उक्त वचन दिया है।

शंका—जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका आयाम असंख्यात करोड़ योजन है, यह परिकर्मसे जाना जाता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इस सूत्रके बलसे परिकर्मकी प्रवृत्ति हुई है।

अथवा, जगश्रेणीके असंख्यातवें भागको भी श्रेणी कहते हैं, क्योंकि, अवयवीके नामकी अवयवमें प्रवृत्ति देखी जाती है। जैसे, ग्रामके एक भागके दग्ध होने पर ग्राम जल गया ऐसा कहा जाता है। अथवा, इसप्रकारका संबन्ध कर लेना चाहिये कि उस श्रेणीके असंख्यातवें भागका आयाम अर्थात् लंबाई असंख्यात करोड़ योजन है। 'अपज्जत्तएहि रूवपक्खित्तएहि रूवा पक्खित्तएहि रूवं पक्खित्तएहि' इन तीनों भी स्थानोंमें किसी भी वचनसे रूपाधिक पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रक्षेप करना चाहिये। पुनः लब्धमेंसे रूपाधिक पर्याप्त मनुष्य राशिके घटा देने पर लब्धपर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण होता है। सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे शलाकारूप उस राशिसे जगश्रेणी अपहृत होती है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है।

विशेषार्थ—सामान्य मनुष्यराशिके प्रमाणमेंसे पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण घटा देने पर लब्ध्यपर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण शेष रहता है। सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उससे जगश्रेणीको भाजित करके लब्ध

भागाभागं वत्तइस्सामो । मणुसरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुस-अपज्जत्ता होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसिणीमिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठी होंति । (सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो होंति ।) सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा संजदासंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अपमत्तसंजदा होंति । उवरि ओघं ।

अप्पाबहुगं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि । तत्थ सत्थाणं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवो मणुसमिच्छाइट्ठिअवहारकालो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । के गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहार-

राशिमेंसे एक कम कर देने पर सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण आता है और इसमेंसे पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण घटा देने पर लब्ध्यपर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण आता है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— मनुष्यराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अपर्याप्त मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण संयतासंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अप्रमत्तसंयत मनुष्य हैं । इसके ऊपर सामान्य प्ररूपणाके समान भागाभाग जानना चाहिये ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्व परस्थान अल्पबहुत्व । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हीं मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग

कालवग्गो। अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि। केत्तिय-मेत्ताणि? विदियवग्गमूलमेत्ताणि। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगअवहारकालो। एवं मणुसअपज्जत्ताणं पि सत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं। सासणादीणं सत्थाणं णत्थि। मणुसपज्जत्त-मणुसिणीणं पि णत्थि सत्थाणप्पाबहुगं।

परत्थाणे पयदं– सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। पंच खवगा संखेज्जगुणा। सजोगिकेवली संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। संजदासंजदा संखेज्जगुणा। सासणसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा। सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा। तदो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सगअवहारकालस्स संखेज्जदिभागो। को पडिभागो? असंजदसम्माइट्ठिणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? पुव्वभणिदो। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पुव्वं भणिदो। मणुसपज्जत्तेसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। पंच खवगा संखेज्जगुणा। एवं जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति। तदो मिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। को

गुणकार है जो प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है। असंख्यात सूच्यंगुलोंका प्रमाण कितना है? सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण है। मनुष्यमिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। इसीप्रकार मनुष्य लब्धपर्याप्तोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवर्ती मनुष्योंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं है। उसीप्रकार पर्याप्त मनुष्य और मनुष्यनियोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं है।

अब परस्थान अल्पबहुत्वका आश्रय लेकर प्रकृत विषयका वर्णन करते हैं— चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक सबसे स्तोक हैं। पांचों गुणस्थानवर्ती क्षपक संख्यातगुणे हैं। सयोगिकेवली क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। संयतासंयत मनुष्य प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य संयतासंयत मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने अवहारकालका संख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंका प्रमाण प्रतिभाग है। उन्हीं मिथ्यादृष्टि मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं। मनुष्य मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं। मनुष्य पर्याप्तकोंमें चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक सबसे थोड़े हैं। पांचों गुणस्थानवर्ती क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। इसीप्रकार उत्तरोत्तर असंयतसम्यग्दृष्टि तक अल्पबहुत्व समझना चाहिये। असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे

गुणगारो ? संखेज्जा समया। एवं चेव मणुसिणीसु वि परत्थाणं वत्तव्वं।

सव्वपरत्थाणे पयदं– सव्वत्थोवा अजोगिकेवलिणो। चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा। चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा। सजोगिकेवली संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। संजदासंजदा संखेज्जगुणा। सासणसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा। सम्मामिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा। मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा। मणुसिणीमिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा। मणुसअपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो। मणुसअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। उवरि जाव लोगो त्ति ताव जाणिऊण वत्तव्वं। मणुसिणीगुणपडिवण्णाणं पमाणमेत्तियमिदि णावहारिदं, तम्हा सव्वपरत्थाणप्पाबहुए तेसिं परूवणा ण कदा।

एवं मणुसगई समत्ता।

देवगईए देवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ५३ ॥

मिथ्यादृष्टि पर्याप्त मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। इसीप्रकार मनुष्यनियोंमें भी परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्वका कथन प्रकृत है– अयोगिकेवली मनुष्य सबसे स्तोक हैं। चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक अयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं। चारों गुणस्थानवर्ती क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। सयोगिकेवली क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसंयत मनुष्य सयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत मनुष्य अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। संयतासंयत मनुष्य प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य संयतासंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं। असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं। मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं। मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव पर्याप्त मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। मनुष्य अपर्याप्त अवहारकाल मनुष्यनी मिथ्यादृष्टियोंसे असंख्यातगुणा है। मनुष्य अपर्याप्तोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यात गुणा है। इसके ऊपर लोक तक जानकर अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। गुणस्थानप्रतिपन्न मनुष्यनियोंका प्रमाण इतना है, यह निश्चित नहीं है, इसलिये सर्व परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते समय गुणस्थानप्रतिपन्न उनके प्रमाणकी प्ररूपणा नहीं की।

इसप्रकार मनुष्यगतिका कथन समाप्त हुआ।

देवगतिप्रतिपन्न देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ५३ ॥

एत्थ देवगइगहणेण सेसगइपडिसेहो कदो हवदि। देवेसु त्ति वयणेण तत्थ ट्ठिददव्वपडिसेहो कदो हवदि। मिच्छाइट्ठि त्ति वयणेण सेसगुणट्ठाणपडिसेहो कदो हवदि। दव्वपमाणेणेत्ति वयणेण खेत्तादिपडिसेहो कदो हवदि। केवडिया इदि वयणेण सुत्तस्स पमाणत्तं सूचिदं हवदि। असंखेज्जा इदि वयणेण संखेज्जाणंताणं पडिणियत्ती कदो हवदि।

किमसंखेज्जं णाम ? जो रासी एगेगरूवे अवणिज्जमाणे णिट्ठादि सो असंखेज्जो। जो पुण ण समप्पइ सो रासी अणंतो। जदि एवं तो वयसहिदसक्खयअद्धपोग्गलपरियट्ट-कालो वि असंखेज्जो जायदे ? होदु णाम। कधं पुणो तस्स अद्धपोग्गलपरियट्टस्स अणंतववएसो ? इदि चे ण, तस्स उवयारणिबंधणत्तादो। तं जहा– अणंतस्स केवलणाणस्स विसयत्तादो अद्धपोग्गलपरियट्टकालो वि अणंतो होदि। केवलणाणविसयत्तं पडि विसेसाभावा सव्वसंखाणाणमणंतत्तणं जायदे ? चे ण, ओहिणाणविसयवदिरित्तसंखाणे अणण्णविसयत्तणेण तदुवयारपवुत्तीदो। अहवा जं संखाणं पंचिंदियविसओ तं संखेज्जं

सूत्रमें देवगति पदके ग्रहण करनेसे शेष गतियोंका प्रतिषेध हो जाता है। 'देवोंमें' ऐसा वचन देनेसे देवलोकमें स्थित अन्य द्रव्योंका प्रतिषेध हो जाता हैं। 'मिथ्यादृष्टि' इस वचनसे अन्य गुणस्थानोंका प्रतिषेध हो जाता है। 'द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा' इस वचनसे क्षेत्र आदि प्रमाणोंका प्रतिषेध हो जाता है। 'कितने हैं' इस वचनसे सूत्रकी प्रमाणता सूचित हो जाती है। 'असंख्यात हैं' इस वचनसे संख्यात और अनन्त संख्याकी निवृत्ति हो जाती है।

शंका— असंख्यात किसे कहते हैं, अर्थात् अनन्तसे असंख्यातमें क्या भेद है ?

समाधान— एक एक संख्याके घटाते जाने पर जो राशि समाप्त हो जाती है वह असंख्यात है और जो राशि समाप्त नहीं होती है वह अनन्त है।

शंका— यदि ऐसा है तो व्ययसहित होनेसे नाशको प्राप्त होनेवाला अर्धपुद्गल परिवर्तन काल भी असंख्यातरूप हो जायगा ?

समाधान— हो जाओ।

शंका— तो फिर उस अर्धपुद्गल परिवर्तनरूप कालको अनन्त संज्ञा कैसे दी गई है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अर्धपुद्गल परिवर्तनरूप कालको जो अनन्त संज्ञा दी गई है वह उपचारनिमित्तक है। आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं— अनन्तरूप केवलज्ञानका विषय होनेसे अर्धपुद्गल परिवर्तनकाल भी अनन्त है, ऐसा कहा जाता है।

शंका— केवलज्ञानके विषयत्वके प्रति कोई विशेषता न होनेसे सभी संख्याओंको अनन्तत्व प्राप्त हो जायगा ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जो संख्याएं अवधिज्ञानका विषय हो सकती हैं उनसे अतिरिक्त ऊपरकी संख्याएं केवलज्ञानको छोड़कर दूसरे और किसी भी ज्ञानका विषय नहीं हो सकती हैं, अतएव ऐसी संख्याओंमें अनन्तत्वके उपचारकी प्रवृत्ति हो जाती है। अथवा, जो संख्या पांचों इन्द्रियोंका विषय है वह संख्यात है। उसके ऊपर जो संख्या अवधिज्ञानका विषय

णाम । तदो उवरि जमोहिणाणविसओ तमसंखेज्जं णाम । तदो उवरि जं केवलणाणस्सेव विसओ तमणंतं णाम । संपहि सुहुमदरपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ५४ ॥

णादत्थमिदं सुत्तं ।

खेत्तेण पदरस्स वेछप्पण्णंगुलसयवग्गपडिभागेण[1] ॥ ५५ ॥

देवमिच्छाइट्ठि त्ति अणुवट्टदे । अंगुलमिदि वुत्ते एत्थ सूचिअंगुलं घेत्तव्वं । सद-

है वह असंख्यात है। उसके ऊपर जो केवलज्ञानके विषयभावको ही प्राप्त होती है वह अनन्त है।

अब अतिसूक्ष्म प्ररूपणाके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५४ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले बतलाया जा चुका है।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगप्रतरके दोसौ छप्पन अंगुलोंके वर्गरूप प्रतिभागसे देव मिथ्यादृष्टि राशि आती है, अर्थात् दोसौ छप्पन सूच्यंगुलके वर्गरूप भागहारका जगप्रतरमें भाग देने पर देव मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ॥ ५५ ॥

विशेषार्थ—यद्यपि दोसौ छप्पन सूच्यंगुलोंके वर्गका भाग जगप्रतरमें देनेसे ज्योतिषी देवोंकी संख्या आती है, फिर भी व्यन्तर आदि शेष देवोंका प्रमाण ज्योतिषी देवोंके संख्यातवें भागमात्र है, इसलिये यहां पर द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा संपूर्ण देवराशिका प्रमाण पूर्वोक्त कहा है। विशेषरूपसे विचार करने पर तो दोसौ छप्पन सूच्यंगुलोंके वर्गका जगप्रतरमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उससे कुछ अधिक संपूर्ण देवोंका प्रमाण है, ऐसा समझना चाहिये। साथ ही यह भी ध्यानमें रखना चाहिये कि यहां जीवट्ठाणमें चौदह मार्गणाओंमें मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थानोंकी अपेक्षा पृथक् पृथक् संख्या बतलाई है। इसलिये उस उस मार्गणामें सामान्य संख्याके प्रमाणसे मिथ्यादृष्टिके प्रमाणको कुछ कम कहना चाहिये था। परंतु वैसा न कह कर सामान्य संख्याका प्रमाण ही यहां प्राय कर मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण कहा है सो यह कथन भी द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षासे ही सर्वत्र समझना चाहिये। विशेषरूपसे विचार करने पर तो सामान्य संख्याके प्रमाणमेंसे गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रमाणको घटा देने पर ही मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण होगा।

यहां पर देव मिथ्यादृष्टि पदकी अनुवृत्ति हुई है। सूत्रमें ' अगुल ' ऐसा सामान्य पद

1 देवगतौ देवा मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८.

सद्दो वेण्हं विसेसणं हवदि, ण छप्पण्णस्स। वेहि विसेसिदछप्पण्णसद्दस्स गहणं पसज्जदि त्ति ण च एवं, अणिट्ठत्तादो। पडिभागो भागहारो। तदो वेसयछप्पण्णंगुलवग्गेण जगपदरे खंडिदे तत्थ एगखंडेण तुल्ला देवमिच्छाइट्ठी होंति त्ति जं वुत्तं होदि। पण्णट्ठिसहस्स-पंचसय-छत्तीसपदरंगुलाणि भागहारं कट्टु जगपदरस्सुवरि खंडिदादओ पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिणीमिच्छाइट्ठीणं वत्तव्वा।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीणं ओघं[2] ॥ ५६ ॥

एदेसिं देवगुणपडिवण्णाणं परूवणा सामण्णेण ओघगुणपडिवण्णदव्वपमाण-परूवणमणुहरदि त्ति ओघेणेत्ति भणिदं। पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो, अण्णहा सेसगइगुणपडिवण्णाणमभावप्पसंगा। तं विसेसं वत्तइस्सामो। तं जहा— आवलियाए असंखेज्जदिभाएण ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं खंडेऊण लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते देवअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तमावलियाए असं-

कहने पर यहां उससे सूच्यंगुलका ग्रहण करना चाहिये। शत शब्द दोका विशेषण है, छप्पनका नहीं। यदि कोई कहे कि दो विशिष्ट छप्पनसौका ग्रहण हो जाना चाहिये सो बात नहीं है, क्योंकि, ऐसा मानना इष्ट नहीं है। प्रतिभागका अर्थ भागहार है, अतः यह अभिप्राय हुआ कि दोसौ छप्पन सूच्यंगुलोंके वर्गसे जगप्रतरके खंडित करने पर उनमेंसे एक खंडके बराबर देव मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। पेंसठ हजार पांचसौ छत्तीस प्रतरांगुलोंको भागहार करके जगप्रतरके ऊपर खंडित आदिको पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके खंडित आदिकके समान कहना चाहिये।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य देवोंका द्रव्यप्रमाण ओघ प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग है ॥ ५६ ॥

इन गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी संख्या-प्ररूपणा सामान्यरूपसे गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य जीवोंकी संख्या प्ररूपणाका अनुकरण करती है, अतएव 'ओघसे' ऐसा कहा है। पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो विशेषता है ही, अन्यथा शेष गतिसंबन्धी गुणस्थान-प्रतिपन्न जीवोंके अभावका प्रसंग आ जाता है। आगे उसी विशेषताको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

आवलीके असंख्यातवें भागसे सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर देव असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। उस देव असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको

२ सासादनसम्यग्दृष्टि-सम्यग्मिथ्यादृष्टयसंयतसम्यग्दृष्टयः पल्योपमासंख्येयभागप्रमिताः स. सि. १, ८.

खेज्जदिभाएण गुणिदे देवसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे देवसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमस्सुवरि खंडिदादओ पुव्वं व वत्तव्वा।

भवणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[1] ॥ ५७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो।

असंखेज्जासंखेज्जाहि[2] ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ५८ ॥

एदस्स वि अत्थो सुगमो चेव।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेढीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो। तेसिं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदेण[3] ॥ ५९ ॥

एदस्स अइसुहुमट्ठसुत्तस्स विवरणं वुच्चदे। असंखेज्जासंखेज्जमणेयवियप्पं। तत्थ

आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर देव सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। उस देव सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर देव सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इन अवहारकालोंके द्वारा पल्योपमके ऊपर खंडित आदिकका कथन पहलेके समान कहना चाहिये।

भवनवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ५७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है।

कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि भवनवासी देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५८ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है।

क्षेत्रकी अपेक्षा भवनवासी मिथ्यादृष्टि देव असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण हैं जो असंख्यात जगश्रेणियां जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। उन असंख्यात जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची, सूच्यंगुलको सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे, उतनी है ॥ ५९ ॥

अत्यन्त सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका विवरण लिखा जाता है—

१ असखेज्जा असुरकुमारा जाव असखेज्जा थणियकुमारा। अनु द्वा. सू. १४१, पृ. १७९.

२ प्रतिपु ' सखेज्जासखेज्जाहि ' इति पाठः।

३ घणअंगुलपढमपद ×× सेढिसगुण ××। भवणे ×× देवाण होदि परिमाण। गो जी. १६१.

असंखेज्जाओ सेढीओ इदि वुत्तं जगपदरमाई काऊण उवरिम-असंखेज्जासंखेज्जवियप्प-पडिसेहट्ठं। पदरस्स असंखेज्जदिभागो वि अणेयवियप्पो इदि कट्टु तं णिण्णयट्ठं सेढीणं विक्खंभसूई उत्ता। तिस्से पमाणं वुच्चदे। अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदं भवणवासिय-मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई हवदि त्ति संबंधेयव्वं। घणंगुलपढमवग्गमूलमिदि जं वुत्तं होदि। अंगुलवग्गमूलगुणिदेणेत्ति तइयाणिद्देसो कधं घडदे? पढमाविहत्तीए अट्ठे एसो तइयाणिद्देसो दट्ठव्वो। अण्णत्थ ण एवं दिस्सदीदि चे ण, 'वेछप्पण्णंगुलसदवग्गपडिभागेण' इच्चादिसु सुत्तेसुवलंभा। अहवा णिमित्ते एसा तइयाविहत्ती दट्ठव्वा। अंगुलवग्गमूल-गुणणकारणेण जमुप्पण्णंगुलं सा विक्खंभसूई होदि त्ति जं वुत्तं होदि। एदाए विक्खंभ-सूईए जगसेढिं गुणिदे भवणवासियमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि--असंजदसम्माइट्ठिपरूवणा ओघं ॥ ६० ॥

असंख्यातासंख्यात अनेक प्रकारका है, इसलिये जगप्रतरको आदि करके उपरिम असंख्याता-संख्यातके विकल्पोंका प्रतिषेध करनेके लिये भवनवासी मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण असंख्यात जगश्रेणिप्रमाण कहा है। वह जगप्रतरका असंख्यातवां भाग भी अनेक प्रकारका है ऐसा समझकर उसका निर्णय करनेके लिये उन असंख्यात जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची कही। आगे उस विष्कंभसूचीका प्रमाण कहते हैं— सूच्यंगुलको सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे इतनी भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची है, ऐसा इस कथनका संबन्ध करना चाहिये। जो विष्कंभसूची घनांगुलके प्रथम वर्गमूलप्रमाण है, यह इस कथनका अभिप्राय है।

शंका—'अंगुलवग्गमूलगुणिदेण' इसप्रकार यहां तृतीया विभक्तिका निर्देश कैसे बन सकता है?

समाधान—प्रथमा विभक्तिके अर्थमें यह तृतीया विभक्तिका निर्देश जानना चाहिये।

शंका—दूसरी जगह ऐसा नहीं देखा जाता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'वेछप्पण्णंगुलसदवग्गपडिभागेण' इत्यादिक सूत्रोंमें प्रथमा विभक्तिके अर्थमें तृतीया विभक्ति देखी जाती है। अथवा निमित्तरूप अर्थमें यह तृतीया विभक्ति जानना चाहिये। जिससे यह अभिप्राय हुआ कि अंगुलके वर्गमूलके गुणनकारणसे जो अंगुल उत्पन्न हो तत्प्रमाण भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची है। इस विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके गुणित करने पर भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भवनवासी जीवोंकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणाके समान है ॥ ६० ॥

दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे ओघेण सह एगत्तदंसणादो। पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो तं पुरदो भणिस्सामो।

वाणवेंतरदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[1] ॥ ६१ ॥

एदस्स थूलत्थस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ६२ ॥

एदस्स वि सुहुमत्थसुत्तस्स अत्थो णव्वदे।

खेत्तेण पदरस्स संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएण[2] ॥ ६३ ॥

एदस्स अइसुहुमट्ठपरूवणट्ठमागदसुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। पदरस्सेदि विहज्जमाणरासिणिद्देसो। संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएणेत्ति लद्धणिद्देसो। पदरस्स संखेज्जजोयण-

द्रव्यार्थिक नयका अवलम्ब करने पर ओघ प्ररूपणाके साथ गुणस्थानप्रतिपन्न भवनवासी प्ररूपणाकी एकता अर्थात् समानता देखी जाती है। परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो उक्त दोनों प्ररूपणाओंमें विशेषता है ही। उस विशेषताको आगे बतलावेंगे।

वानव्यन्तर देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ६१ ॥

स्थूल अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका अर्थ सुगम है।

कालकी अपेक्षा वानव्यन्तर देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ६२ ॥

सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका भी अर्थ ज्ञात है।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगप्रतरके संख्यातसौ योजनोंके वर्गरूप प्रतिभागसे वानव्यन्तर मिथ्यादृष्टि राशि आती है, अर्थात् संख्यातसौ योजनोंके वर्गरूप भागहारका जगप्रतरमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उतने वानव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देव हैं ॥ ६३ ॥

अति सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेके लिये आये हुए इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— सूत्रमें 'पदरस्स' इस पदसे अपह्रियमाण राशिका निर्देश किया है। 'संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएण' इस पदसे भागहार राशिके प्रतिपादनपूर्वक लब्ध राशिका निर्देश किया है।

१ असंखिज्जा वाणमंतरा। अनु. द्वा. सू. १४१ पत्र १७९.

२ तिण्णिसयजोयणाणं ××। कदिहिदपदरं वेंतरपरिमाणं ॥ गो. जी. १६०. संखेज्जजोयणाणं सूइपएसेहिं भाइओ पयरो। वंतरसुरेहिं हीरइ एवं एक्केक्कभेएण ॥ पञ्चसं. २, १४.

सयवग्गपडिभागो वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं होदि । पडिभागो इदि किं वुत्तं हवदि ? संखेज्जजोयणसयवग्गमेत्तजगपदरस्स भागेसु एगभागो पडिभागो णाम । पडिभागसद्दो भागहारम्मि वट्टमाणो कज्जे कारणोवयारेण लद्धम्मि वट्टदि त्ति घेत्तव्वं । एत्थ पढमाए विहत्तीए अट्ठे तदिया दट्ठव्वा । अहवा एस णिद्देसो पढमाविहत्ती चेव जहा हवदि तहा साहेयव्वो । संखेज्जजोयणेत्ति वुत्ते तिण्णिजोयणसयमंगुलं काऊण वग्गिदे जो उप्पज्जदि रासी सो घेत्तव्वो । तस्स पमाणं पंच कोडाकोडिसयाणि तीसकोडा-कोडीओ चउरासीदिकोडिसयसहस्साणि सोलसकोडिसहस्साणि च भवदि । जदि जोणिणीणमवहारकालो तप्पाओग्गसंखेज्जरूवगुणिदछज्जोयणसयमंगुलवग्गमेत्तो हवदि तो वाणवेंतरमिच्छाइट्ठीणं पि अवहारकालो एत्तियपदरंगुलमेत्तो हवदि । अध जदि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो छज्जोयणसयअंगुलवग्गमेत्तो चेव तो वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण[1] तिण्णिजोयणसयंगुलवग्गस्स संखेज्जदिभाएण होदव्वं, अण्णहा अप्पाबहुगसुत्तेण सह विरोहादो । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे

इसका यह तात्पर्य हुआ कि जगप्रतरमें संख्यातसौ योजनोंके वर्गका भाग देने पर जो प्रतिभाग आवे उतना वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण है ।

शंका — प्रतिभाग इस पदसे यहां क्या कहा गया है ?

समाधान — संख्यातसौ योजनोंके वर्गका जितना प्रमाण हो उतने जगप्रतरके भाग करने पर उनमेंसे एक भागरूप प्रतिभाग है । अर्थात् प्रतिभाग शब्दसे यहां लब्धरूप अर्थ लिया गया है । यद्यपि प्रतिभाग शब्द भागहाररूप अर्थमें रहता है तो भी कार्यमें कारणके उपचारसे यहां लब्धमें उसका ग्रहण करना चाहिये ।

यहां प्रथमा विभक्तिके अर्थमें तृतीया विभक्ति जानना चाहिये । अथवा, '-पडिभाएण' यह निर्देश प्रथमा विभक्तिरूप जिसप्रकार होवे उसप्रकार सिद्ध कर लेना चाहिये । सूत्रमें 'संख्यात योजन' ऐसा कहने पर तीनसौ योजनोंके अंगुल करके वर्गित करने पर जो राशि उत्पन्न हो वह राशि लेना चाहिये । उन अंगुलोंका प्रमाण पांचसौ कोड़ाकोड़ी, तीस कोड़ाकोड़ी, चौरासी लाख कोड़ी और सोलह हजार कोड़ी ५३०८४१६०००००००००० है । यदि तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल तद्योग्य संख्यात गुणित छहसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र हो तो वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका भी अवहारकाल इतने अर्थात् तीनसौ योजनोंके अंगुलोंके वर्गरूप प्रतरांगुलप्रमाण हो सकता है । और यदि पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल छहसौ योजनोंके अंगुलोंके वर्गमात्र ही है तो वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके किये गये अंगुलोंके वर्गके संख्यातवें भाग होना चाहिये, अन्यथा अल्पबहुत्वके सूत्रके साथ इस कथनका विरोध आता है ।

१ प्रतिषु 'अवहारकालो' इति पाठः ।

वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिपमाणमागच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठी ओघं ॥ ६४ ॥

दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे केण वि अंगेण विसेसाभावादो ओघत्तमिदि वुच्चदे । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । तं विसेसं पुरदो भणिस्सामो ।

.. ..

उक्त अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है।

विशेषार्थ—वाणव्यन्तर देवोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्ग है और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल छहसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्ग है। तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुल ५३०८४१६०००००००००० होते हैं और छहसौ योजनोंके प्रतरांगुल २१२३३६६४०००००००००० होते हैं। किसी विवक्षित राशिके वर्गसे उस राशिसे दूनी राशिका वर्ग चौगुना होता है। जैसे ४ के वर्ग १६ से, ४ के दूने ८ का वर्ग ६४ चौगुना है। तथा किसी एक भाज्यमें ८ के वर्ग ६४ का भाग देनेसे जो लब्ध आयगा, ४ के वर्ग १६ का भाग देनेसे पूर्वोक्त लब्धसे चौगुना ही लब्ध आयगा। इसीप्रकार यहां तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंसे छहसौ योजनोंके प्रतरांगुल चौगुने होते हैं, अतएव छहसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंका जगप्रतरमें भाग देनेसे तिर्यंच योनिमतियोंका जितना प्रमाण लब्ध आयगा, उससे, तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंका उसी जगप्रतरमें भाग देने पर वाणव्यन्तर देवोंका प्रमाण, चौगुना ही लब्ध आता है। पर अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारमें तिर्यंच योनिमतियोंसे वाणव्यन्तर देव संख्यातगुणे कहे हैं और उन्हींकी देवीयां देवोंसे संख्यातगुणी कही हैं। देवगतिमें निकृष्ट देवके भी बत्तीस देवियां होती हैं। इसप्रकार आगमानुसार तिर्यंच योनिमतियोंके प्रमाणसे वाणव्यन्तर देवोंका प्रमाण १ + ३२ = ३३ गुणेसे अधिक ही होना चाहिये पर पूर्वोक्त भागहारके अनुसार चौगुना ही आता है। इससे प्रतीत होता है कि उक्त दोनों भागहारोंमेंसे कोई एक भागहार असत्य है। यदि वाणव्यन्तरोंका भागहार सत्य है ऐसा मान लिया जाता है तो योनिमतियोंका भागहार छहसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंसे संख्यातगुणा होना चाहिये और यदि तिर्यंच योनिमतियोंका भागहार सत्य मान लिया जाय तो वाणव्यन्तरोंका भागहार तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंका संख्यातवां भाग होना चाहिये।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वाणव्यन्तर देव सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ६४ ॥

द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर किसी भी प्रकारसे गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य प्ररूपणा और गुणप्रतिपन्न वाणव्यन्तरोंकी प्ररूपणामें विशेषता न होनेसे गुणस्थानप्रतिपन्न वाणव्यन्तरोंकी प्ररूपणा गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य प्ररूपणाके समान कही। पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो विशेषता है ही। उस विशेषताका कथन आगे करेंगे।

किमट्ठं सव्वत्थ दव्वट्ठिय-पज्जवट्ठियणयद्दयमवलंबिय परूवणा कीरदे ? ण एस दोसो, संगह-वित्थररुचिसत्ताणुग्गहवावदत्तादो । अण्णहा असमाणदापसंगादो ।

जोइसियदेवा देवगईणं[1] भंगो ॥ ६५ ॥

देवगईणमिदि बहुवयणणिद्देसो ण घडदे, एक्काए देवगईए बहुत्ताभावादो इदि ? ण एस दोसो, संगहिदाणेयत्ते[2] एयत्ते बहुत्ताविरोहादो । जोइसियदेवा इदि गुणा-विसिट्ठदेवग्गहणादो जोइसियदेवेसु चदुण्हं गुणट्ठाणाणं पमाणपरूवणा ओघपरूवणाए[3] तुल्ला । एसो दव्वट्ठियणयमवलंबिय णिद्देसो कओ । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । तं जहा– तत्थ ताव मिच्छाइट्ठीसु विसेसो वुच्चदे । वाणवेंतरादिसेससव्वे देवा जोइसियदेवाणं संखेज्जदिभागमेत्ता हवंति । तेहि सामण्णदेवरासिमोवट्टिदे संखेज्ज-

शंका—सर्वत्र द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक इन दो नयोंका अवलम्बन करके प्रमाण-प्ररूपणा क्यों की जा रही है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, संग्रहरुचि और विस्तररुचि शिष्योंके अनुग्रहके लिये इन दोनों नयोंका व्यापार हुआ है। यदि ऐसा नहीं माना जाय तो असमानताका प्रसंग आ जाता है।

देवगतिप्रतिपन्न सामान्य देवोंकी संख्या जितनी कही है ज्योतिषी देव उतने हैं ॥ ६५ ॥

शंका– सूत्रमें आये हुए 'देवगईणं' यह बहुवचन निर्देश घटित नहीं होता है, क्योंकि, देवगति एक है, अतः उसे बहुत्व प्राप्त नहीं हो सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जिसमें बहुत्व संगृहीत है ऐसे एकत्वमें बहुत्वके रहनेमें विरोध नहीं आता है।

'जोइसियदेवा' इसप्रकार मिथ्यादृष्टि आदि गुणोंकी विशेषतासे रहित सामान्य ज्योतिषी देवोंका ग्रहण करनेसे ज्योतिषी देवोंमें चारों गुणस्थानोंकी संख्या-प्ररूपणा सामान्य देवगतिसंबन्धी संख्या-प्ररूपणाके समान है, ऐसा सिद्ध होता है। यह कथन द्रव्यार्थिक नयका आश्रय लेकर किया है। परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर विशेषता है ही। वह इसप्रकार है। उसमें भी पहले मिथ्यादृष्टियोंमें विशेषताको बतलाते हैं– वाणव्यन्तर आदि शेष संपूर्ण देव ज्योतिषी देवोंके संख्यातवें भाग हैं। उनसे सामान्य देवराशिके अपवर्तित करने पर

१ असंखिज्जा जोइसिआ । अनु. द्वा. १४१ सू. १७९ पत्र. ×× बेसदछप्पण्णअंगुलाणं च । कदिहिद-पदर ×× जोइसियाण च परिमाण ॥ गो. जी. १६०. छप्पन्नदोसयंगुलसूइपएसेहिं भाइओ पयरो । जोइसिएहिं हीरइ सट्ठाणे त्थीय संखगुणा । पञ्चसं. २, १५.

२ प्रतिषु 'संगहिदो णेयत्ते' इति पाठः ।

३ प्रतिषु 'परूवणदिवोध' इति पाठः ।

रूवाणि आगच्छंति। ताणि विरलिय दव्वमिच्छाइट्ठिरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि वाणवेंतरप्पमुहमिच्छाइट्ठिरासी पावेदि। तमुवरिमरूवधरिदसामण्णदेवमिच्छाइट्ठि-रासिम्हि अवणिदे जोइसियदेवमिच्छाइट्ठिरासी होदि। एवं समकरणं करिय रूवूणहेट्ठिम-विरलणाए देवअवहारकाले भागे हिदे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो आगच्छदि। तं देव-अवहारकालम्हि पक्खित्ते जोइसियदेवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। सेसं देवमिच्छा-इट्ठिभंगो। सासणादिगुणट्ठाणगदविसेसं पुरदो वत्तइस्सामो।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केव-डिया, असंखेज्जा॥ ६६॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो अवगदो त्ति पुणो ण वुच्चदे।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण॥ ६७॥

एदस्स सुत्तस्सत्थो सुगमो चेय। सव्वत्थ सुहुम-सुहुमदर-सुहुमतमभेएण तिविहा परूवणा किमट्ठं परूविज्जदे? ण एस दोसो, तिव्व-मंद-मज्झिमसत्ताणुग्गहट्ठत्तादो। अण्णहा

संख्यात लब्ध आते हैं। उनका (संख्यातका) विरलन करके सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिको समान खंड करके दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति वाणव्यन्तर आदि मिथ्यादृष्टि देवराशि प्राप्त होती है। उसे उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे घटा देने पर ज्योतिषी मिथ्यादृष्टिराशि आती है। इसप्रकार समीकरण करके एक कम अधस्तन विरलनसे देव अवहारकालके भाजित करने पर प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग लब्ध आता है। उसे देव अवहारकालमें मिला देने पर ज्योतिषी देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। शेष कथन देव मिथ्यादृष्टि प्ररूपणाके समान है। सासादन आदि गुणस्थानगत विशेषताको आगे बतलावेंगे।

सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं॥ ६६॥

इस सूत्रका अर्थ अवगत है, इसलिये फिरसे नहीं कहते हैं।

कालकी अपेक्षा सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देव असंख्याता-संख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं॥ ६७॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम ही है।

शंका—सब जगह सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतमके भेदसे तीन प्रकारकी प्ररूपणा किसलिये कही जा रही है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, तीव्र बुद्धिवाले, मंद बुद्धिवाले और मध्यम बुद्धिवाले जीवोंके अनुग्रहके लिये तीन प्रकारकी प्ररूपणा कही है। यदि ऐसा न माना जाय तो

जिणाणं सव्वसत्तसमाणत्तविरोहो। ण पुणरुत्तदोसो वि जिणवयणे संभवइ, मंदबुद्धि-सत्ताणुग्गहट्ठदा एदस्स साफल्लादो।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेढीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो। तासिं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूल-गुणिदेण ॥ ६८ ॥

पदरस्स असंखेज्जदिभागो इदि णिद्देसो जगपदरादिउवरिमवियप्पणियत्तावणट्ठो। असंखेज्जाओ सेढीओ इदि णिद्देसो जगसेढीदो हेट्ठिमअसंखेज्जासंखेज्जवियप्पणियत्तावणट्ठो। तासिं सेढीणं पमाणपरिच्छेदं काउं अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण इदि विक्खंभसूई वुत्ता। गुणिदेणेत्ति पढमाणिद्देसो दट्ठव्वो। सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूलेण गुणिदं सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई होइ। अहवा सूचिअंगुल-तदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे सोहम्मीसाणदेवमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई होदि। एदिस्से विक्खंभसूईए खंडिदादओ जहा णेरइयविक्खंभसूईए तहा वत्तव्वा।

जिनदेव सर्व जीवोंमें समान परिणामी होते हैं इस कथनमें विरोध आ जायगा। जिनवचनमें पुनरुक्त दोष भी संभव नहीं है, क्योंकि, जिनवचन मंदबुद्धि शिष्योंका भी अनुग्रह करनेवाला होनेसे पुनः पुनः कथन करनेकी सफलता है।

क्षेत्रकी अपेक्षा सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देव असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण हैं जो असंख्यात जगश्रेणियोंका प्रमाण जगप्रतरके असंख्यातवें भाग है। उन असंख्यात जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जितना लब्ध आवे, उतनी है ॥ ६८ ॥

सूत्रमें 'जगप्रतरका असंख्यातवां भाग' यह निर्देश जगप्रतर आदि उपरिम विकल्पोंके निराकरण करनेके लिये दिया है। 'असंख्यात जगश्रेणियां' इसप्रकारका निर्देश जगश्रेणीसे नीचेके असंख्यातासंख्यात विकल्पोंकी निवृत्तिके लिये दिया है। उन श्रेणियोंके प्रमाणका ज्ञान करानेके लिये सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको उसीके तृतीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो लब्ध आवे उतनी उन श्रेणियोंकी विष्कंभसूची कही। 'गुणिदेण' यह पद प्रथमा विभक्तिरूप जानना चाहिये, जिससे यह तात्पर्य हुआ कि सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे गुणित करने पर जो लब्ध आवे उतनी सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देवोंकी विष्कंभसूची होती है। अथवा, सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची होती है। ऊपर जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके खंडित आदिकका कथन कर आये हैं उसीप्रकार इस विष्कंभ-सूचीके खंडित आदिकका कथन करना चाहिये।

संपहि खुद्दाबंधेण सामण्णेण जीवपमाणपरूवणाए जाओ विक्खंभसूईओ णेरइय-सोहम्मीसाण-भवणवासियदेवाणं वुत्ताओ ताओ चेव विक्खंभसूईओ एत्थ वि जीवट्ठाणे मिच्छाइट्ठिपरूवणाए अण्णूणाहियाओ वुत्ताओ। तं जहा– अंगुलस्स वग्गमूलं विदियवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा खुद्दाबंधे णेरइयविक्खंभ-सूई उत्ता। तासिं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा भवणवासियविक्खंभसूई खुद्दाबंधे उत्ता। तासिं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा सोहम्मीसाणदेवविक्खंभसूई खुद्दाबंधे वुत्ता। एत्थ वि णेरइय-भवणवासिय-सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठीणं विक्खंभसूईओ एदाओ चेव वुत्ताओ। एदं च ण घडदे, सामण्णविसेसपरूवणाणमेगत्तविरोहादो। तम्हा एत्थ वुत्तविक्खंभसूईहि ऊणियाहि खुद्दाबंधवुत्तविक्खंभसूईहि वा अधियाहि होदव्वमिदि चोदगो भणदि। एत्थ परिहारो वुच्चदे। जीवट्ठाणवुत्तविक्खंभसूईओ संपुण्णाओ खुद्दाबंधम्हि वुत्तविक्खंभसूईओ

शंका—सामान्यसे जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करनेवाले खुद्दाबंधके द्वारा नारकी, सौधर्म-ऐशान और भवनवासी देवोंकी जो विष्कंभसूचियां कही हैं, न्यूनता और अधिकतासे रहित वे ही विष्कंभसूचियां यहां जीवट्ठाणमें भी नारकी, सौधर्म-ऐशान और भवनवासी देवोंसंबन्धी मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणामें कही हैं। आगे इसी विषयका स्पष्टीकरण करते हैं— सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करने पर जितना लब्ध आवे उतनी खुद्दाबंधमें सामान्य नारकियोंकी विष्कंभसूची कही है। भवन-वासियोंके प्रमाणरूपसे जो असंख्यात जगश्रेणियां बतलाई हैं उन जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करने पर जितना लब्ध आवे उतनी है, यह भवनवासियोंकी विष्कंभसूची खुद्दाबंधमें कही है। सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंके प्रमाणरूपसे जो असंख्यात जगश्रेणियां बतलाई हैं उन जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे, उतनी है, यह सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंकी विष्कंभसूची खुद्दाबंधमें कही है। यहां जीवट्ठाणमें भी नारकी, भवनवासी और सौधर्म-ऐशान मिथ्यादृष्टि जीवोंकी विष्कंभसूचियां ये ही (खुद्दाबंधमें कही हुई) कही हैं। परंतु यह कथन घटित नहीं होता है, क्योंकि, सामान्य प्ररूपणा और विशेष प्ररूपणा इन दोनोंको एक माननेमें विरोध आता है। अतएव जीवट्ठाणमें जो विष्कंभसूचियां कही गई हैं वे खुद्दाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियोंसे न्यून होनी चाहिये या खुद्दाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियां यहां जीवट्ठाणमें कही गई विष्कंभसूचियोंसे अधिक होनी चाहिये, ऐसा शंकाकारका कहना है?

समाधान—आगे इस शंकाका परिहार करते हैं— जीवट्ठाणमें जो विष्कंभसूचियां कही गई हैं वे संपूर्ण हैं और खुद्दाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियां जीवट्ठाणमें कही गई विष्कंभसूचियोंसे साधिक हैं।

साधियाओ । तं कधं जाणिज्जदे ? अण्णहा वग्गट्ठाणे हेट्ठिम-उवरिमवियप्पाणुववत्तीदो । खुद्दाबंधम्हि वुत्तविक्खंभसूईओ संपुण्णाओ किण्ण होंति त्ति चे ण, तहाविधगुरूवदेसाभावा । अहवा एत्थ वुत्तविक्खंभसूईओ देसूणाओ खुद्दाबंधम्हि वुत्तविक्खंभसूईओ संपुण्णाओ । कुदो ? अट्ठरूवे वग्गिज्जमाणे सोहम्मीसाणविक्खंभसूचिं पावदि, सा सई वग्गिदा णेरइयविक्खंभसूइं पावदि, सा सई वग्गिदा भवणवासियविक्खंभसूचिं पावदि त्ति परियम्मे वग्गसमुट्ठिदसामण्णविक्खंभसूचिपादादो खुद्दाबंधे वि घणधारुप्पण्णविक्खंभसूईणं पादोवलंभादो वा । जीवट्ठाणमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूचिपादो वि खुद्दाबंधसामण्णविक्खंभसूचिपादेण समाणो उवलंभदे चे ण, दव्वट्ठियणयदो समाणत्तुवलंभा । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे णियमेण तत्थ अत्थि विसेसो । खुद्दाबंधुवसंहारजीवट्ठाणस्स मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूईए सामण्णविक्खंभसूचिसमाणत्तविरोहा । एवं खुद्दाबंधम्हि वुत्तसव्वअवहारकाला जीवट्ठाणे सादिरेया वत्तव्वा । एदं वक्खाणमेत्थ पधाणमिदि गेण्हिदव्वं ण पुव्विल्लं ।

शंका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यदि ऐसा न माना जाय तो वर्गस्थानमें अधस्तन और उपरिम विकल्प नहीं बन सकता है ।

शंका— खुद्दाबंधमें कही गईं विष्कंभसूचियां संपूर्ण क्यों नहीं होती हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, इसप्रकारका गुरुका उपदेश नहीं पाया जाता है ।

अथवा, यहां जीवट्ठाणमें कही गईं विष्कंभसूचियां कुछ कम हैं और खुद्दाबंधमें कही गईं विष्कंभसूचियां संपूर्ण हैं, क्योंकि, अष्टरूपके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर सौधर्म और ऐशान देवोंकी विष्कंभसूचीका प्रमाण प्राप्त होता है । उसका (सौधर्मद्विकसंबन्धी विष्कंभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर नारक विष्कंभसूची प्राप्त होती है । उसका (नारक विष्कंभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर भवनवासी देवोंकी विष्कंभसूची प्राप्त होती है, इसप्रकार परिकर्ममें वर्गस्थान प्रकरणमें कही गईं सामान्य विष्कंभसूचियोंके अभिप्रायसे अथवा खुद्दाबंधमें भी घनधारामें उत्पन्न हुई विष्कंभसूचियोंके अभिप्रायके पाये जानेसे यह जाना जाता है कि खुद्दाबंधमें कही गईं विष्कभसूचियां संपूर्ण हैं ।

शंका—जीवट्ठाणमें कहे गये मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचियोंके अभिप्रायसे खुद्दाबंधमें कहा गया सामान्य विष्कंभसूचियोंका अभिप्राय समान पाया जाता है ?

समाधान – नहीं, क्योंकि, इन दोनों कथनोंमें द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा समानता पाई जाती है । पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो नियमसे उन दोनों कथनोंमें विशेषता है ही, क्योंकि, खुद्दाबंधके उपसंहाररूपसे जीवट्ठाणमें कही गईं मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचियोंसे सामान्य विष्कंभसूचियोंके समान माननेमें विरोध आता है । इसीप्रकार खुद्दाबंधमें कहे गये संपूर्ण अवहारकाल जीवट्ठाणमें कुछ अधिक जान लेना चाहिये । यह व्याख्यान यहां पर प्रधान है, इसलिये इसका ग्रहण करना चाहिये, पहलेके व्याख्यानका नहीं ।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठी ओघं ॥ ६९ ॥

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगईए इदि च दुवयणमणुवट्टदे । एसा दव्वट्ठियणयमस्सिऊण परूवणा उत्ता । पज्जवट्ठियणयमासिसिऊण एदेसिं परूवणं पुरदो भणिस्सामो ।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणं भंगो ॥ ७० ॥

एत्थ जहा इदि वुत्ते तं जहा इदि एदस्स अत्थो ण वत्तव्वो किं तु उवमत्थे जहा सद्दो घेत्तव्वो । जहा सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणं पमाणं परूविदं तहा सणक्कुमारादि-देवाणं पमाणं परूवेदव्वं । णवरि आइरियपरंपरागदोवदेसेण विसेसपरूवणं कस्सामो । तं जहा—

सणक्कुमार-माहिंदे जगसेढीए भागहारो सेढीए हेट्ठा एक्कारसवग्गमूलं । बम्ह-बम्होत्तरकप्पे णवमवग्गमूलं । लांतव-काविट्ठकप्पे सत्तमवग्गमूलं । सुक्क-महासुक्ककप्पे पंचमवग्ग-

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म-ऐशान कल्पवासी देव सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ६९ ॥

'सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगईए' इन दो शब्दोंकी यहां अनुवृत्ति होती है । यहां द्रव्यार्थिक नयका आश्रय करके यह प्ररूपणा कही है । पर्यार्थिक नयका आश्रय करके इनकी प्ररूपणा आगे कहेंगे ।

जिसप्रकार सातवीं पृथिवीमें नारकियोंकी प्ररूपणा कही गई है उसीप्रकार सनत्कुमारसे लेकर शतार और सहस्रार तक कल्पवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि देवोंकी प्ररूपणा है ॥ ७० ॥

सूत्रमें 'जहा' इसप्रकार कहने पर 'तं जहा' इसका अर्थ नहीं कहना चाहिये, किंतु यहां उपमारूप अर्थमें 'जहा' शब्दका ग्रहण करना चाहिये । इससे यह अभिप्राय हुआ कि जिसप्रकार सातवीं पृथिवीमें नारकियोंका प्रमाण कहा गया है उसीप्रकार सानत्कुमार आदि देवोंके प्रमाणका कथन करना चाहिये । अब आगे आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशके अनुसार विशेष प्ररूपणा करते हैं । वह इसप्रकार है—

सानत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीके नीचे ग्यारहवां वर्गमूल है । ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर कल्पमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका नौवां वर्गमूल है । लांतव और कापिष्ठ कल्पमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका सातवां वर्गमूल है । शुक्र और महाशुक्र कल्पमें

मूलं । सदार-सहस्सारकप्पे चउत्थवग्गमूलं भागहारो हवदि । सासणदीणं पमाणपरूवणा वि सत्तमपुढविपरूवणाए समाणा । विसेसपरूवणं पुरदो वत्तइस्सामो ।

आणद-पाणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ७१ ॥

मुहुत्तसद्दो कालवाची चेव, तेण पुध कालग्गहणं ण कदं । दव्वपमाणपरूवणाए चेव अत्थणिच्छओ जादो त्ति एत्थ खेत्त-कालेहि परूवणा ण कदा । 'पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो' इदि सामण्णेण वुत्ते दव्वपमाणेण सुट्ठु णिच्छओ ण जादो त्ति तत्थ णिच्छयउप्पायणट्ठं 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण' त्ति भागहारपरूवणा विहज्जमाणपरूवणा च कदा । एत्थ आइरिओवएसमस्सिऊण विसेसवक्खाणं पुरदो भणिस्सामो ।

अणुद्दिस जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ७२ ॥

जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका पांचवां वर्गमूल है । शतार और सहस्रार कल्पमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका चौथा वर्गमूल है । सानत्कुमारसे लेकर सहस्रारतक सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवर्ती देवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा भी सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणाके समान है । विशेष प्ररूपणाको आगे बतलावेंगे ।

आनत और प्राणतसे लेकर नौ ग्रैवेयक तक विमानवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं । इन उपर्युक्त जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ ७१ ॥

मुहूर्त शब्द कालवाची ही है, इसलिये सूत्रमें पृथक्रूपसे काल पदका ग्रहण नहीं किया । प्रकृतमें द्रव्यप्रमाणके प्ररूपण करनेसे ही अर्थका निश्चय हो जाता है, इसलिये यहां पर क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणके द्वारा प्ररूपणा नहीं की । 'पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं' इसप्रकार सामान्यसे कहने पर द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अच्छी तरह निश्चय नहीं हो पाता है, इसलिये इस विषयमें निश्चयके उत्पन्न करानेके लिये 'इन जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है' इसप्रकार भागहारप्ररूपणा और विभज्यमाणराशिकी प्ररूपणा की । इस विषयमें आचार्योंके उपदेशका आश्रय करके विशेष व्याख्यान आगे कहेंगे ।

अनुदिश विमानसे लेकर अपराजित विमानतक उनमें रहनेवाले असंयतसम्य-

एत्थ असंजदसम्माइट्ठिदव्वपरूवणं सेसगुणट्ठाणाणं तत्थाभावं सूचेदि। ण च संतं ण परूवेंति जिणा, तेसिमजिणत्तप्पसंगादो। एत्थ आइरिओवएसेण सव्वदेवगुणपडिवण्णाणं विसेसपरूवणं भणिस्सामो। तं जहा– देवअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय तत्थेगखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। कुदो? उवक्कमणकालभेदादो। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। कुदो? उवक्कमणकालभेदादो उभयगुणं पडिवज्जमाणरासिविसेसदो वा। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सणक्कुमार-माहिंदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। कुदो? सुहकम्माहियजीवबहुत्ताभावादो। एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सारो त्ति। तस्स सासणसम्माइट्ठिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे जोइसियदेवअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि।

ग्दृष्टि देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं। इन उपर्युक्त जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ ७२ ॥

इन अनुदिश आदि विमानोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणा वहां पर शेष गुणस्थानोंके अभावको सूचित करती है। यदि कोई कहे कि यहां पर शेष गुणस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा नहीं की होगी सो बात नहीं है, क्योंकि, जिनदेव विद्यमान अर्थका प्ररूपण नहीं करते हैं ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर उन्हें अजिनपनेका प्रसंग आ जाता है। अब यहां आचार्योंके उपदेशानुसार सपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी विशेष प्ररूपणाको कहते हैं। वह इसप्रकार है— देव असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको उसी देव असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर सौधर्म और ऐशानसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सौधर्म और ऐशानसंबन्धी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सम्यग्दृष्टियोंके उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके उपक्रमण कालमें भेद है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर सौधर्म और ऐशानसंबन्धी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके उपक्रमण कालसे सासादनसम्यग्दृष्टियोंके उपक्रमण कालमें भेद है। अथवा, उक्त दोनों गुणस्थानोंको प्राप्त होनेवाली राशियोंमें विशेषता है। सौधर्म और ऐशान सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सानत्कुमार और माहेंद्र असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, ऊपर शुभ कर्मोंकी बहुलता होनेसे बहुत जीव नहीं पाये जाते हैं। इसीप्रकार शतार सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये। उन शतार-सहस्रार कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर ज्योतिषी असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि,

कुदो ? तत्थ वोग्गाहिदादिमिच्छत्तेण सह उप्पण्णदेवेसु जिणसासणपडिकूलेसु बहूणं सम्मत्तं पडिवज्जमाणजीवाणमसंभवादो । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो होदि । एत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवं वाणवेंतर-भवणवासियदेवेसु णेयव्वं । कुदो ? मिच्छत्तोच्छाइददिट्ठीसु भूओसम्मदंसणुप्पत्तिसंभवाभावादो । भवणवासिय-सासणसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे आणद-पाणदअसंजद सम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? सुहकम्माणं दीहाऊणं बहूणमसंभवा । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कारणं उवरिम-उवरिमकप्पेसु उप्पज्जमाणसुहकम्माहियदीहाउवजीवेहिंतो हेट्ठिमहेट्ठिमकप्पेसु थोवपुण्णेण डहरभवट्ठिदीसु उप्पज्जमाणजीवाणं बहुत्तोवलंभादो । होंता वि असंखेज्जगुणा चेय । कारणं सव्वीजीभूदमणुसपज्जत्तरासिम्हि संखेज्जत्तुवलंभादो । एवं णेयव्वं जाव उवरिम-उवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो त्ति । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आणद-

वहां पर व्युद्ग्राहित आदि मिथ्यात्वके साथ उत्पन्न हुए और जिन शासनके प्रतिकूल देवोंमें सम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाले बहुत जीवोंका अभाव है । उन असंयतसम्यग्दृष्टि ज्योतिषी देवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टि ज्योतिषियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि ज्योतिषियोंका अवहारकाल होता है । यहां पर उत्तरोत्तर संख्याहानि या अवहारकालकी वृद्धिके कारणका कथन पहलेके समान कर लेना चाहिये । इसीप्रकार वाणव्यन्तर और भवनवासी देवोंमें क्रमसे अवहारकाल ले जाना चाहिये, क्योंकि, जिनकी दृष्टि मिथ्यात्वसे आच्छादित है उनमें बहुत सम्यग्दृष्टियोंकी उत्पत्ति संभव नहीं है । भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहार-कालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर आनत और प्राणतकल्पके असंयत-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, शुभ कर्मवाले दीर्घायु जीव बहुत नहीं होते हैं । इस असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युत कल्पवासी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, उपरिम उपरिम कल्पोंमें उत्पन्न होनेवाले शुभ कर्मोंकी अधिकतासे दीर्घायुवाले जीवोंसे नीचे नीचेके कल्पोंमें स्तोक पुण्यसे स्तोक भवस्थितिमें उत्पन्न होनेवाले जीव अधिक पाये जाते हैं । नीचे नीचे अधिक जीव होते हुए भी वे असंख्यातगुणे ही होते हैं, क्योंकि, बारहवें कल्पसे लेकर ऊपरके कल्पोंमें जीव मनुष्य राशिसे आकर ही उत्पन्न होते हैं । इसलिये ऊपरके कल्पोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके लिये मनुष्यराशि बीजीभूत है और मनुष्य राशि संख्यात ही होती है, अतः ऊपर ऊपरके कल्पोंसे नीचेके कल्पोंमें जीव असंख्यातगुणे हैं । यही क्रम उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल तक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयत-सम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका

पाणदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? जिणलिंगं घेत्तूण दव्वसंजमेण ट्ठिदसंजदाणं बहूणं मणुसेसु अणुवलंभादो । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जमिच्छाइट्ठिअवहारकालो त्ति । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे णवाणुद्दिमअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे अणुत्तरविजय-वइजयंत-जंयत-अवराइदविमाणवासियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? उवक्कमणजीवाणं थोवत्तादो । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो त्ति । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? थोवुवक्कमणकालत्तादो । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो त्ति[१] । एदेहि अवहारकालेहि खंडि-

अवहारकाल होता है, क्योंकि, जिनलिंगको स्वीकार करके द्रव्यसंयमके साथ स्थित हुए बहुतसे संयतोंका मनुष्योंमें सद्भाव नहीं पाया जाता है। आनत और प्राणतसंबन्धी मिथ्यादृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। यहां कारण पहलेके समान कहना चाहिये. अर्थात् जिनलिंगको स्वीकार करके द्रव्यसंयमके साथ बहुतसे मनुष्य नहीं होते हैं, इसलिये आरण और अच्युतमें कम मिथ्यादृष्टि पाये जाते हैं। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकाल तक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर नौ अनुदिशोंके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानवासी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, यहां पर सम्यग्मिथ्यात्वके साथ उत्पन्न होनेवाले जीव थोड़े हैं। आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंका उपक्रमणकाल स्तोक है। आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम

१ देवाण अवहारा होंति असंखेण ताणि अवहरिय । तत्थेव य पक्खित्ते सोहम्मीसाण अवहारा ॥ सोहम्म-

दादओ जाणिय वत्तव्वा। सव्वदेवगुणपडिवण्णाणं ओघभंगो इदि भणिय आणदादि-उवरिमगुणपडिवण्णाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ' एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ' इदि विसेसिय किमट्ठं वुच्चदे ? एवं भणंतस्स अहिप्पाओ परूविज्जदे। तं जहा— ओघभंगो इच्चेदेण आणदुत्तादो सुत्तमिदमणत्थयं। अणत्थयं च जाणावयं होदि। किमेदेण जाणाविज्जदि ? सोहम्मअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो आवलियाए असंखेज्जदिभागो। तत्थतणखइयसम्माइट्ठीणमवहारकालो संखेज्जावलियमेत्तो। एदे दो वि अवहारकाले मोत्तूण अवसेसगुणपडिवण्णाणं सव्वे अवहारकाला असंखेज्जावलिमेत्ता विउलत्तवाइणो अंतोमुहुत्तसद्देण वुच्चंति त्ति जाणाविदं, तदो णाणत्थयमिदं सुत्तं।

ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालतक ले जाना चाहिये। इन अवहारकालोंके द्वारा खंडित आदिकका कथन जान कर करना चाहिये।

सर्व गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान है ऐसा कथन करके ' गुणस्थानप्रतिपन्न इन आनत आदि देवोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्त कालसे पल्योपम अपहृत होता है ' इतनेसे विशेषित करके गुणस्थानप्रतिपन्न आनतादि देवोंका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण किसलिये कहा। आगे ऐसा कथन करनेवालेके अभिप्रायका प्ररूपण करते हैं। वह इसप्रकार है—

सर्व गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंका प्रमाण ' सामान्य प्ररूपणाके समान है ' इतनेमात्रसे संबन्धित होनेके कारण यह सूत्र अनर्थक है, फिर भी जो सूत्र अनर्थक होता है वह किसी स्वतन्त्र नियमका ज्ञापक होता है।

शंका—इससे क्या ज्ञापन होता है ?

समाधान—सौधर्म असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल आवलीके असंख्यातवें भाग है। वहींके क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यात आवलीमात्र है। इन दो अवहार-कालोंको छोड़कर शेष गुणस्थानप्रतिपन्नोंके संपूर्ण अवहारकाल असंख्यात आवलीमात्र हैं, अवहारकालकी विपुलताको माननेवाले आचार्य अन्तर्मुहूर्त शब्दसे ऐसा कहते हैं, यह इस सूत्रसे ज्ञापित होता है, इसलिये यह सूत्र अनर्थक नहीं है।

साणहारमसंखेण य संखरूवसंगुणिदे। उवरि असंजद-मिस्सय-सासणसम्माण अवहारा॥ सोहम्मादासार जोइसि वण-भवण-तिरिय पुढवीसु। अविरद मिस्से संख संखासंखगुण सासणे देसे॥ चरमधरासाणहरा आणदसम्माण आरणप्पहुदिं। अंतिमगेवेज्जंत सम्माणमसंखसंखगुणहारा॥ तत्तो ताणुत्ताण वामाणमणुद्दिसाण विजयादि। सम्माणं संखगुणो आणदमिस्से असंखगुणो॥ तत्तो संखेज्जगुणो सासणसम्माण होदि संखगुणो। उत्तट्ठाणे कमसो पणछस्सत्तट्ठचदुर-संदिट्ठी॥ गो. जी ६६५–६७०.

सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ७३ ॥

मणुसिणीरासीदो तिउणमेत्ता हवंति ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वदेवरासिमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा जोइसियदेवमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा वाणवेंतरमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठी होंति । एव जाव सदार-सहस्सारमिच्छाइट्ठि त्ति । सेसमसखेज्जखडे कए बहुभागा सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठी होंति । सेसं सखेज्जखंडे कए बहुभागा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सासणसम्माइट्ठिणो होंति । एवं सणक्कुमार-माहिंदप्पहुडि जाव सहस्सारो त्ति णेयव्वं । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासिएत्ति णेयव्वं । पुणो सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुखडा आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं

सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ७३ ॥

सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव मनुष्यनियोंके प्रमाणसे तिगुणे हैं ।

आगे भागाभागको बतलाते हैं— सर्व देवराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहु भागप्रमाण ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यान खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार शतार और सहस्रार कल्पके मिथ्यादृष्टि देवों तक ले जाना चाहिये । शतार और सहस्रारके मिथ्यादृष्टि प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वहींके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वहींके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । इसीप्रकार सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पसे लेकर सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये । सहस्रार कल्पसे आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर और भवनवासी देवों तक यही क्रम ले जाना चाहिये । पुनः भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं ।

जावुवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा आणद-पाणदमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जावुवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा अणुद्दिस-असंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अवराइदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जावुवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुद-सासणसम्माइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जावुवरिममज्झिमगेवज्जसासणसम्माइट्ठि त्ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा उवरिमउवरिमगेवज्जसासणसम्माइट्ठिणो होंति । एय-खंडं सव्वट्ठसिद्धिअसंजदसम्माइट्ठी होंति । एवं भागाभागं समत्तं ।

इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयक तक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आनेके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके मिथ्यादृष्टिप्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुदिशके असंयतसम्यग्दृष्टि होते हैं । शेषके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानोंके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेषके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयक तक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एकभाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । इसीप्रकार उपरिम मध्यम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आने तक ले जाना चाहिये । उपरिम मध्यम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक खंडप्रमाण सर्वार्थसिद्धिके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । इस-प्रकार भागाभाग समाप्त हुआ ।

अप्पाबहुअं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि । सत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो देवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? अवहारकालवग्गो । अहवा असंखेज्जाणि घणंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? पण्णट्ठिसहस्स-पंचसय-छत्तीसवग्गसूचिअंगुलमेत्ताणि । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । सासणादीणं मूलोघभंगो । एवं जोइसिय-वाणवेंतराणं पि णेयव्वं । भवणवासियाणं सत्थाणे सव्वत्थोवा मिच्छाइट्ठि-विक्खंभसूई । अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? विक्खंभसूई । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो । विक्खंभसूचिवग्गो । अहवा घणंगुलं । सेढी

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व । इनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयका निरूपण करते हैं– देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींकी विष्कंभसूची अवहाकालसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, असंख्यात घनांगुल गुणकार है । वे कितने हैं ? पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीसके वर्गरूप सूच्यंगुलप्रमाण हैं । देव विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगश्रेणीसे मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे घनलोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । देव सासादनसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य प्ररूपणाके समान है । इसीप्रकार ज्योतिषी और वाणव्यन्तरोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व ले जाना चाहिये । भवनवासियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वमें सबसे स्तोक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची है । उससे अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है प्रतिभाग क्या है ? विष्कंभसूची प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम-वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा घनांगुल गुणकार है । जगश्रेणी अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या

असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । सासणादीणं मूलोघभंगो । सोहम्मादि जाव उवरिमगेवज्जो त्ति सत्थाणप्पाबहुगं जाणिय णेयव्वं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमो त्ति । तदो उवरि मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । उवरि सत्थाणभंगो । भवणवासियाणं सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमो त्ति । तदो उवरि भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचि-अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमो । उवरि

है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । उन्हींका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? विष्कंभसूची गुणकार है । द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका मूलोघके समान स्वस्थान अल्पबहुत्व है । सौधर्मसे लेकर उपरिम ग्रैवेयकतक स्वस्थान अल्पबहुत्व जान कर ले जाना चाहिये ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है । असंख्यात सूच्यंगुलोंका प्रमाण कितना है ? सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग उनका प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपमका संख्यातवां भाग प्रतिभाग है । इसके ऊपर अपने स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । भवनवासियोंके परस्थानका कथन करने पर असंयत-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो असंख्यात सूच्यंगुल-प्रमाण है । वे कितने हैं ? सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । इसके ऊपर वाणव्यन्तरोंसे लेकर उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक अपने

सगसत्थाणभंगो (वाणवेंतरादि जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति ।) उवरि परत्थाणं णत्थि, तत्थ सेसगुणट्ठाणाणमभावादो । सव्वट्ठे सत्थाणं पि णत्थि एगपदत्थादो ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा । सोहम्मीसाण-असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदि-भागस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सव्वट्ठसिद्धिदेवसम्मादिट्ठि त्ति । तत्थेव सम्मा-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो सणक्कुमार-माहिंदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव सदर-सहस्सारेत्ति । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासियाणं पि कमेण णेयव्वं । भवणवासिय-

स्वस्थानके समान है । उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके ऊपर परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, वहां पर शेष गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं । सर्वार्थसिद्धिमें एक पदार्थ होनेसे स्वस्थान अल्पबहुत्व भी नहीं है ।

विशेषार्थ—प्रतियोंमें देवोंके स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वके पाठ गड़बड़ और कुछ छूटे हुए प्रतीत होते हैं । बहुत कुछ विचारके पश्चात् दूसरे प्रकरणोंके अल्पबहुत्वके विभागानुसार यहां भी उन्हें व्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया गया है । प्रतियोंमें पहले सामान्य देवोंका स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्व कहकर अनन्तर इसी प्रकार वाणव्यन्तर और ज्योतिषियोंका है, ऐसा कहा है । तदनन्तर भवनवासियोंका स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्व कह कर सौधर्मादि उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक स्वस्थान अल्पबहुत्वको समझकर लगा लेनेकी सूचना की है । अनन्तर अनुदिशादिमें परस्थानके अभावका कारण और सर्वार्थसिद्धिमें दोनोंके अभावका कारण बतलाया है ।

इन अल्पबहुत्वोंको व्यवस्थित कर देने पर भी सौधर्मादि उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक परस्थानकी कोई व्यवस्था नहीं पाई जाती है । अनुदिशादिमें परस्थानके अभावका कारण बतलाया है, पर स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । इसे देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि यहां कुछ पाठ भी छूट गया है ।

अब सर्व परस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयको बतलाते हैं— सर्वार्थसिद्धि विमान-वासी देव सबसे स्तोक हैं । उनसे सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? सर्वार्थसिद्धिके सम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । वहीं पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । सौधर्म और ऐशान कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार शतार और सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये । शतार और सहस्रार कल्पके आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर और भवनवासियोंका भी क्रमसे ले जाना चाहिये ।

सासणाण अवहारकालादो आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तदो आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। एवं णेयव्वं जाव उवरिम-उवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो त्ति। तदो आणद-पाणदमिच्छाइट्ठिअवहार-कालो संखेज्जगुणो। तदो आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति। तदो अणुदिसअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्ज-गुणो। तदो अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अवराइदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्ज-ज्जगुणो। तदो आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तदो आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिम-गेवज्जो त्ति। तदो आणद पाणदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तदो आरणच्चुद-सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति। तदो उवरि तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। उवरिममज्झिमसासणसम्माइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। तदो उवरिमहेट्ठिमसासणसम्माइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। एवं णेयव्वं

भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टि-योंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। उससे आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहार-कालसे आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। इससे आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे अनु-दिशोंके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। इससे विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानवासी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यात-गुणा है। इससे आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इससे आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। इससे आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। इसी-प्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये। तदनन्तर उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालके ऊपर उसी उपरिम उपरिम ग्रैवेयकका सासादनसम्यग्दृष्टि-द्रव्य असंख्यातगुणा है। इससे उपरिम मध्यम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है। इससे उपरिम अधस्तन ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है। इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमरूपसे जबतक सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयत-

अवहारकालपडिलोमेण जाव सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं पत्तं ति। तदो पलिदोवममसंखेज्जगुणं। तदो उवरि सोहम्मीसाणविक्खंभसूची असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? पलिदोवमपडिभागो। अहवा सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि विदियवग्गमूलाणि। केत्तियमेत्ताणि? तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभाणमेत्ताणि। को पडिभागो? पलिदोवमपडिभागो। भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि। केत्तियमेत्ताणि? तदियवग्गमूलमेत्ताणि। को पडिभागो? सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई व। मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो संखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई पडिभागो। जोइसियदेवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। केवडिओ विसेसो? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो। वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जा समया। सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो।

सम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य प्राप्त होवे तबतक ले जाना चाहिये। सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है। पल्योपमके ऊपर सौधर्म और ऐशान कल्पकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? पल्योपम प्रतिभाग है। अथवा, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके असंख्यात द्वितीय वर्गमूलप्रमाण है। सूच्यंगुलके उन असंख्यात द्वितीय वर्गमूलोंका प्रमाण कितना है? तीसरे वर्गमूलके असंख्यातवें भाग है। प्रतिभाग क्या है? पल्योपम प्रतिभाग है। सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है। उन असंख्यात सूच्यंगुलोंका प्रमाण कितना है? तृतीय वर्गमूलमात्र है। प्रतिभाग क्या है? सौधर्म और ऐशान कल्पकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके प्रतिभागके समान प्रतिभाग है। सामान्य देव मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? सूच्यंगुलके असंख्यातवें भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके संख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? भवनवासियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची प्रतिभाग है। इस देव मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी देवोंके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल विशेष अधिक है। कितना विशेष है? प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग विशेष है। ज्योतिषियोंके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे वाणव्यन्तरोंके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार

को गुणगारो ? सेढिएक्कारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि बारसवग्गमूलाणि। को पडिभागो ? वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालो पडिभागो । तस्सुवरि बम्ह-बम्होत्तर-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढिणवमवग्गमूलस्स असंखे-ज्जदिभागो असंखेज्जाणि दसमवग्गमूलाणि । लांतव-काविट्ठमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सत्तमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि अट्ठम-वग्गमूलाणि । सुक्क-महासुक्कमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पंचमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि छट्ठमवग्गमूलाणि । सदार-सहस्सार-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पंचमवग्गमूलं । तदो सदार-सहस्सारदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालपडिभागो । एवं णेयव्वं पडिलोमेण जाव सणक्कुमार माहिंदमिच्छा-इट्ठिदव्वमिदि । तस्सुवरि वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? तस्सेव विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो एक्कारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि

क्या है ? जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात बारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतिभाग है। सानत्कुमार और माहेन्द्रके मिथ्यादृष्टि अवहारकालके ऊपर ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके नौवें वर्गमूलका असंख्यतवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात दशम वर्गमूलप्रमाण है । ब्रह्मद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे लान्तव और कापिष्ठके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके सातवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात आठवें वर्गमूलप्रमाण है । लान्तवद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शुक्र और महाशुक्रके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके पांचवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात छठवें वर्गमूलप्रमाण है । शुक्रद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शतार और सहस्रारके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका पांचवां वर्गमूल गुणकार है । शतारद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शतार और सहस्रारका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । इसीप्रकार प्रतिलोमक्रमसे सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण आने तक ले जाना चाहिये । सानत्कुमारद्विकके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? उन्हीं वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके

बारसवग्गमूलाणि वा। को पडिभागो? सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइट्ठिदव्वपडिभागो। जोइसियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जसमया। देव-मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? संखेज्जरूवखंडिदएयखंडमेत्तेण। भवणवासिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पुव्वं भणिदो। सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पुव्वं भणिदो। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? विक्खंभसूई। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगविक्खंभसूई। भवणवासियमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? पुव्वं भणिदो। वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? भवण-वासिविक्खंभसूचिगुणिदसगअवहारकालपडिभागो। जोइसियमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्ज-गुणं। को गुणगारो? संखेज्जसमया। देवमिच्छाइट्ठिदव्व विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण? संखेज्जरूवखंडिदएयखंडमेत्तेण। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अवहारकालो। लोगो

असंख्यात बारहवें वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण प्रतिभाग है। वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे ज्योतिषियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची संख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे देव मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची विशेष अधिक है। कितनेमात्रसे अधिक है। ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीको संख्यातसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। देव मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे भवनवासी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं। भवनवासी मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं। सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? विष्कंभसूची गुणकार है। जगश्रेणीसे उन्हीं सौधर्म कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है। सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे भवनवासियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं। भवनवासी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं जो जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग है। जिस जगश्रेणीके असंख्यातवें भागका प्रमाण जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूल है। प्रतिभाग क्या है? भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे अपने अवहारकालको गुणित करके जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है। वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे देव मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है। कितनेमात्रसे अधिक है? संख्यातसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके खंडित करने पर उनमेंसे एक खंड-

असंखेज्जगुणो ? को गुणगारो ? सेढी ।

चउग्गइभागाभागं वत्तइस्सामो । तं जहा– सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए तत्थ बहुखंडा एइंदिय-विगलिंदिया होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा जोइसियमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखडा भवणवासियमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पढमपुढविमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा विदियपुढविमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइट्ठी होंति । एवं तदियपुढवि-बम्ह-बम्होत्तर-चउत्थपुढवि-लांतवकाविट्ठ-पंचमपुढवि-सुक्कमहासुक्क-सदारसहस्सार-छट्ठपुढवि-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठि त्ति णेयव्वं । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सोहम्मीसाणअसंजद-

मात्र विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है ।

अब चतुर्गतिसंबन्धी भागाभागको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण सिद्ध हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण भवनवासी मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकी हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य अपर्याप्त हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकी हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवी, ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर, चौथी पृथिवी, लांतव और कापिष्ठ, पांचवी पृथिवी, शुक्र और महाशुक्र, शतार और सहस्रार, छठवी पृथिवी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आनेके अनन्तर शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुखंडप्रमाण सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण है । शेष एक भागके

सम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तस्सेव सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसं असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो होंति। एवं णेयव्वं जाव सदार सहस्सारो त्ति। तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासिय-तिरिक्ख-पढमादि जाव सत्तमपुढवि त्ति णेयव्वं। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइट्ठि त्ति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणद-मिच्छाइट्ठी होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदमिच्छाइट्ठी होंति। एवं णेयव्वं जाव उवरिमुवरिमगेवज्जमिच्छाइट्ठि त्ति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणुदिसअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अवराइदअसंजदसम्माइट्ठी होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठी होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठी होंति। एवं णेयव्वं जाव उवरिमुवरिमगेवज्जसम्मामिच्छाइट्ठि त्ति। सेसं संखेज्जखंडे कए

संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उन्हीं सौधर्म और ऐशान कल्पके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और ऐशान कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। इसप्रकार शतार और सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये। इसके आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर, भवनवासी, तिर्यंच और प्रथमादि सातों पृथिवियोंतक ले जाना चाहिये। सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आणत और प्राणतके मिथ्यादृष्टि देव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आरण और अच्युत कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि देवोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण अनुदिशके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण विजय, वैजयंत, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तरोंके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके प्रमाणके अनन्तर शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे

बहुखंडा आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदसासणसम्माइट्ठी होंति । एवं णेयव्वं जाव उवरिममज्झिमसासणेत्ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवरिमउवरिमसासणसम्माइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसिणीमिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसअसंजदसम्माइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अपमत्तसंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सजोगित्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउण्हं खवगा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउण्हमुवसामगा । सेसेगखंडं अजोगिकेवली होंति । एवं चउग्गइभागाभागं समत्तं ।

एत्तो चउग्गइअप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा । सव्वत्थोवो अजोगिकेवलिरासी ।

बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । इसीप्रकार उपरिम मध्यम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण संयतासंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अप्रमत्तसंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सयोगिकेवली जिन हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानके क्षपक हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानोंके उपशामक हैं । शेष एक खंडप्रमाण अयोगिकेवली जिन हैं ।

इसप्रकार चारों गतिसंबन्धी भागाभाग समाप्त हुआ ।

अब इसके आगे चारों गतिसंबन्धी अल्पबहुत्वको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

चउण्हमुवसामगा संखेज्जगुणा । चउण्हं खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । मणुससंजदासंजदा संखेज्जगुणा । मणुससासणा संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा । मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा । मणुसिणीमिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा । सव्वट्ठसिद्धि-विमाणवासियदेवा तिउणा सत्तगुणा वा[1] । सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सव्वट्ठसिद्धिदेवपडिभागो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सारो त्ति । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासियदेवि त्ति णेयव्वं । तदो तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठि अवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो ।

अयोगिकेवली जीवराशि सबसे स्तोक है । इससे चारों गुणस्थानोंके उपशामक संख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानोंके क्षपक उपशामकोंसे संख्यागुणे हैं । सयोगिकेवली क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्य संयतासंयत प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य संयतासंयत मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । पर्याप्त मिथ्यादृष्टि मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । मिथ्यादृष्टि मनुष्यनी पर्याप्त मिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंसे तिगुणे अथवा सातगुणे हैं । सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सर्वार्थसिद्धिके देवोंसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । सौधर्म और ऐशान कल्पके देवोंका सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल उन्हींके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उन्हींके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार शतार और सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये । शतार और सहस्रार कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर और भवनवासी देवियों तक ले जाना चाहिये । भवनवासी देवियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे तिर्यंचोंका असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल संख्यातगुणा

१ तिगुणा सत्तगुणा वा सव्वट्ठा माणुसीपमाणादो । गो. जी. १६२.

संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं विदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति । तदो आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । तदो आणद-पाणदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । तदो अणुदिसअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अपराजिद-असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । तदो आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो

है । इससे उन्हींका संयतासंयत अवहारकाल असंख्यातगुणा है । तिर्यंच संयतासंयतोंके अवहारकालसे प्रथम पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसीप्रकार दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक ले जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे अनुदिशके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । अनुदिशोंके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन अनुत्तरवासी देवोंका असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार

संखेज्जगुणो। को गुणगारो ? संखेज्जसमया। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति। तदो आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो ? संखेज्जसमया। आरणच्चुदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो ? संखेज्जसमया। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। उवरिममज्झिमसासण-सम्माइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव सोहम्मीसाणअसंजद-सम्माइट्ठिदव्वं त्ति। तदो पलिदोवममसंखेज्जगुणं[1]। को गुणगारो ? अवहारकालो। सोहम्मी-साणविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदि-भागो असंखेज्जाणि विदियवग्गमूलाणि। केत्तियमेत्ताणि ? तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदि-भागमेत्ताणि। को पडिभागो ? पलिदोवमपडिभागो। मणुसअपज्जत्तअवहारकालो असं-खेज्जगुणो। को गुणगारो ? सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं। णेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? सूचिअंगुलतदियवग्गमूलं। भवणवासियमिच्छाइट्ठि-विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? णेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई। पंचिंदिय-

उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सम्यग्मिथ्या-दृष्टियोंके अवहारकालसे आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है। इससे आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे उन्हींका द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है। इससे उपरिम मध्यम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है। इसप्रकार अवहार-कालके प्रतिलोम क्रमसे जब सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य आवे तबतक ले जाना चाहिये। सौधर्मद्विकके असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है। पल्योपमसे सौधर्म और ऐशान-कल्पके मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके असंख्यात द्वितीय वर्गप्रमाण है। वे असंख्यात द्वितीय वर्गमूल कितने हैं ? सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागमात्र हैं। प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है। सौधर्मद्विककी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे मनुष्य अपर्याप्त अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलका द्वितीय वर्ग-मूल गुणकार है। मनुष्य अपर्याप्त अवहारकालसे नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलका तृतीय वर्गमूल गुणकार है। नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभ-सूचीसे भवनवासियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? नारक

१ प्रतिषु ' पलिदोवम सखेज्जगुणं ' इति पाठ ।

तिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सूचिअंगुलपढमवग्ग-मूलस्स असंखेज्जदिभागो। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ। केत्तिय-मेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तेण। पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छा-इट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदि-भागो[1]। देवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। जोइ-सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। केत्तियमेत्तेण? संखेज्जरूवेहिं खंडिदएयखंड-मेत्तेण। वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्ज-समया। विदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? बारहवग्ग-मूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि। को पडिभागो? जोणिणीअव-

मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है। भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका अवहारकाल विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त अवहारकालसे देव मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। देव मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है? देव मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके अव-हारकालसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? योनिमतियोंका अवहारकाल प्रतिभाग

१ प्रतिषु 'संखेज्ज० असखेज्ज०' इति पाठ।

हारकालपडिभागो। तदो सणक्कुमारमाहिंद-तदियपुढवि-बम्हबम्होत्तर-चउत्थपुढवि-लांतव-काविट्ठ-पंचमपुढवि-सुक्कमहासुक्क-सदारसहस्सार-छट्ठ-सत्तमपुढवीणं मिच्छाइट्ठिअवहारकालो कमेण असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढिबारसमेक्कारसम-दसम-णवम-अट्ठम-सत्तम-छट्ठम-पंचम-चउत्थ-तदियवग्गमूलाणि जहाकमेण गुणगारा। तदो सत्तमपुढविअवहारकालस्सुवरि तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? पढमवग्गमूलं। तदो छट्ठपुढवि-सदारसहस्सार-सुक्क-महासुक्क-पंचमपुढवि-लांतवकाविट्ठ-चउत्थपुढवि-बम्हबम्होत्तर-तइयपुढवि-सणक्कुमारमाहिंद-विदियपुढवीणं मिच्छाइट्ठिदव्वं कमेण असंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सेढितदिय-चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तम-अट्ठम-णवम-दसम-एक्कारसम-बारसमवग्गमूलाणि जहाकमेण गुणगारा? तदो विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्सुवरि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? बारसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि। वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जसमया। जोइसियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्ज-समया। देवमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? संखेज्जसमय-

है। दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सानत्कुमार-माहेन्द्र, तीसरी पृथिवी, ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर, चौथी पृथिवी, लान्तव-कापिष्ठ, पांचवीं पृथिवी, शुक्र-महाशुक्र, शतार-सहस्रार छठवीं और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल क्रमसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीका बारहवां, ग्यारहवां, दशवां, नौवां, आठवां, सातवां, छठा, पांचवां, चौथा तीसरा वर्गमूल क्रमसे गुणकार है। तदनन्तर सातवीं पृथिवीके अवहारकालके ऊपर उसीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल गुणकार है। इससे छठी पृथिवी, शतार-सहस्रार, शुक्र-महाशुक्र, पांचवी पृथिवी, लान्तव-कापिष्ठ, चौथी पृथिवी, ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर, तीसरी पृथिवी, सानत्कुमार-माहेन्द्र और दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य क्रमसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीका तीसरा, चौथा, पांचवां, छठा, सातवां, आठवां, नौवां, दशवां, ग्यारहवां और बारहवां वर्गमूल क्रमसे गुणकार हैं। अनन्तर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है। इससे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची संख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। इससे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची संख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। इससे देव मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है। संख्यात समयोंसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभ-सूचीको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। इससे पंचेन्द्रिय

खंडिदएयखंडमेत्तेण । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदएयखंडमेत्तेण । भवणवासियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? णेरइयविक्खंभसूई । मणुसअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सूचिअंगुलतदियवग्गमूलं । सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सोहम्मीसाणविक्खंभसूई । भवणवासियमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? णेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखे-

तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची संख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। इससे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। इससे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीको खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। इससे भवनवासियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है। पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे मनुष्य अपर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? सूच्यंगुलका तृतीय वर्गमूल गुणकार है। मनुष्य अपर्याप्तोंके द्रव्यसे सौधर्म और ऐशानके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? सूच्यंगुलका द्वितीय वर्गमूल गुणकार है। सौधर्मद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? विष्कंभसूची गुणकार है। जगश्रेणीसे सौधर्म और ऐशानके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है। सौधर्मद्विकके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? सौधर्म और ऐशानकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है। पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है। भवनवासी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि द्रव्य

ज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? असंखेज्जाणि घणंगुलाणि पडिभागो । केत्तियमेत्ताणि ? संखेज्जसूईपढमवग्गमूलमेत्ताणि । वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । जोइसियमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । देवमिच्छाइट्ठिदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जरूवखंडिदमेत्तेण । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तदव्वं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पंचिंदिय-तिरिक्खअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाग-खंडिदमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । लोगमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेढी । सिद्धा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? लोगपडिभागो । एइंदिय-विगलिंदिया अणंत-गुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धेहिं वि अणंतगुणो जीववग्गमूलस्स

असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात घनांगुल प्रतिभाग है । उन असंख्यात घनांगुलोंका प्रमाण कितना है ? सूच्यंगुलके संख्यात प्रथम वर्गमूलोंका जितना प्रमाण हो उतना है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । वाण-व्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे देव मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? संख्यातसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यात-गुणा है। गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यको खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । लोकसे सिद्ध अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? लोक प्रतिभाग है । सिद्धोंसे एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे अनंतगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, जीवराशिके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा और भव्यसिद्ध जीवोंके अनन्त

वि अणंतगुणो भवसिद्धियजीवाणमणंताभागस्स अणंतिमभागो। को पडिभागो ? सिद्धपडिभागो। एवं चदुगदिअप्पाबहुगं समत्तं।

एवं गइमग्गणा समत्ता।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता[1] ॥ ७४ ॥

एत्थ एइंदियगहणेण सेसिंदियाणं पडिसेहो कदो भवदि। सुहुमपडिसेहट्ठं बादरग्गहणं। बादरपडिसेहफलो सुहुमणिद्देसो। अपज्जत्तपडिसेहफलो पज्जत्तणिद्देसो। पज्जत्तपडिसेहफलो अपज्जत्तणिद्देसो। एइंदिया बादरेइंदिया सुहुमेइंदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता च एदे णव वि रासीओ दव्वपमाणेण केवडिया इदि पुच्छिदं होदि। किमट्ठं सव्वत्थ पण्हपुव्वं परिमाणं वुच्चदे ? ण एस दोसो, मंदबुद्धिसिस्साणुग्गहणट्ठत्तादो। अणंता इदि परिमाणणिद्देसो संखेज्ज-असंखेज्जपरिमाणपडिसेहफलो। सेसं जहा मूलोघसुत्ते वुत्तं तहा वत्तव्वं।

बहुभागोंका अनन्तवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है ? सिद्धराशि प्रतिभाग है। इसप्रकार चारों गतिसंबन्धी अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

इसप्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई।

इन्द्रिय मार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, एकेन्द्रिय पर्याप्त, एकेन्द्रिय अपर्याप्त, बादर एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ ७४ ॥

इस सूत्रमें एकेन्द्रिय पदके ग्रहण करनेसे शेषेन्द्रिय जीवोंका निषेध किया है। सूक्ष्म जीवोंका प्रतिषेध करनेके लिये बादर पदका ग्रहण किया है। बादर जीवोंका निषेध करनेके लिये सूक्ष्म पदका ग्रहण किया है। अपर्याप्त जीवोंका निषेध करनेके लिये पर्याप्त पदका ग्रहण किया है। और पर्याप्त जीवोंका निषेध करनेके लिये अपर्याप्त पदका ग्रहण किया है। एकेन्द्रिय जीव, बादर एकेन्द्रिय जीव और सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव ये तीन राशियां तथा ये तीनों पर्याप्त और तीनों अपर्याप्त, इसप्रकार कुल नौ जीवराशियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी हैं, यहां ऐसा पूंछनेका अभिप्राय है।

शंका—सर्वत्र प्रश्नपूर्वक परिमाण (संख्या) किसलिये कहा जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मन्दबुद्धि शिष्योंके अनुग्रहके लिये ऐसा कहा गया है।

संख्यात और असंख्यातका निषेध करनेके लिये सूत्रमें अनन्तरूप परिमाणका निर्देश

१ एकेन्द्रिया मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ता। स. सि. १, ८. तसहीणो ससारी एयक्खा ताण संखगा भागा। पुण्णाण परिमाणं संखेज्जदिमं अपुण्णाण ॥ गो. जी. १७६.

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ ७५ ॥

अदीदकालो ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिपमाणेण कीरमाणो अणंतोसप्पिणि-उस्सप्पिणि-पमाणं होदि। तेण तारिसेण वि अदीदकालेण एदे णव वि रासीओ ण अवहिरिज्जंति। एइंदिएहिंतो एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा तसकाइएसुप्पज्जंति। तसकाइया वि एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण पदरस्स असंखे-ज्जदिभागमेत्ता एइंदिएसुप्पज्जंति। बादरेइंदिया विसयं पडि अणंता सुहुमेइंदिएसुप्पज्जंति। सुहुमेइंदिया वि तत्तिया चेव बादरेइंदिएसुप्पज्जंति। एवं चेव सव्वेसिं पज्जत्ताणमपज्जत्ताणं च वत्तव्वं। तदो सरिसाय-व्वयत्तादो एदेसिं णवण्हं रासीणं वोच्छेदो तिसु वि कालेसु णत्थि त्ति अणुत्तसिद्धीदो एदं सुत्तं णादरेदव्वमिदि। एत्थ परिहारो वुच्चदे। तं जहा— एदेसिं णवण्हं रासीणं जदि आय-व्वया सरिसा हवंति तो एदं सुत्तं णादरेदव्वं[1] भवदि। किं तु आयादो वओ अब्भहिओ। कुदो? तत्तो णिप्फिदिऊण तसेसुप्पज्जिय सम्मत्तं घेत्तूण

किया है। शेष कथन जिसप्रकार मूलोघ सूत्रमें कह आये हैं उसप्रकार जानना चाहिये।

कालप्रमाणकी अपेक्षा पूर्वोक्त एकेन्द्रिय जीव आदि नौ राशियां अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होती हैं ॥ ७५ ॥

अतीत कालको अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीके प्रमाणसे करने पर अनन्त अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीप्रमाण अतीत काल होता है। इसप्रकारके भी उस अतीत कालके द्वारा ये नौ राशियां अपहृत नहीं होती हैं।

शंका— एकेन्द्रियोंमेंसे एक जीवको आदि करके उत्कृष्टरूपसे जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव त्रसकायिकोंमें उत्पन्न होते हैं और त्रसकायिक भी एक जीवको आदि करके उत्कृष्टरूपसे जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं। विषयकी अपेक्षा अनन्त बादर एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं और सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव भी उतने ही बादर एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं। इसीप्रकार सभी पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका भी कथन करना चाहिये। इसप्रकार समान आय और व्यय होनेसे इन नौ राशियोंका विच्छेद तीनों भी कालोंमें नहीं होता है, इसलिये यह कथन अनुक्तसिद्ध होनेसे यह सूत्र ग्रहण करने योग्य नहीं है?

समाधान— आगे पूर्वोक्त कथनका परिहार किया जाता है। वह इसप्रकार है— इन पूर्वोक्त नौ राशियोंका आय और व्यय यदि समान हो तो यह सूत्र ग्रहण करने योग्य नहीं होवे, किन्तु इन राशियोंका आयसे व्यय अधिक है, क्योंकि, पूर्वोक्त नौ राशियोंमेंसे निकल कर और त्रसोंमें उत्पन्न होकर तथा सम्यक्त्वको ग्रहण करके जिन संसारी जीवोंने एकेन्द्रिय,

१ अ प्रतौ 'णादव्वेदव्व' आ-क प्रत्योः 'णादवेदव्व' इति पाठः।

विणासिदएइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदिय-णेरइय-तिरिक्ख-भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसिय-इत्थि-णवुंसय-हय-गय-गंधव्व-णागादि-संसारिजीवाणं पुणो तेसु पवेसाभावादो। तदो एदे णव वि रासीओ वयसहिया णिच्छएण हवंति। एवं हि वए संते वि एदे णव वि रासीओ ण वोच्छिज्जंति[1] सरागसरूवेण ट्ठिदअदीदकालत्तादो। सव्वजीवरासीदो अदीदकाले अणंतगुणे संते अदीदकालेण सव्वजीवा अवहिरिज्जंति। ण च एवं, तधा अणुवलंभादो। जं तेण कालेण सव्वजीवाणं वोच्छेदो किण्ण होदि त्ति भणिदे ण, अभव्वपडिवक्खवोच्छेदे अभव्वत्तस्स विणासप्पसंगादो। सेसं वक्खाणं जहा ओघकालसुत्तम्हि भणिदं तहा वत्तव्वं।

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ ७६ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खाणे भण्णमाणे जहा मूलोघखेत्तसुत्तस्स भणिदं तहा भणिदव्वं। णवरि एत्थ धुवरासी एवमुप्पाएदव्वो। तं जहा— बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिय-

---

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय असंज्ञीपंचेन्द्रिय, नारकी, तिर्यंच, भवनवासी, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, स्त्रीवेद, नपुसकवेद, घोड़ा, हाथी, गंधर्व और नाग आदि पर्यायोंका नाश कर दिया है वे पुनः उन पर्यायोंमें प्रवेश नहीं करते हैं, इसलिये ये नौ राशियां नियमसे व्ययसहित हैं। इसप्रकार इन नौ राशियोंके व्ययसहित होने पर भी ये नौ राशियां कभी भी विच्छिन्न नहीं होती हैं, क्योंकि, अतीतकालसे वे अपने सरागस्वरूपसे स्थित हैं। यदि संपूर्ण जीवराशिसे अतीतकाल अनन्तगुणा होता तो अतीतकालसे संपूर्ण जीवराशि अपहृत होती; परंतु ऐसा तो है नहीं, क्योंकि, इसप्रकारकी उपलब्धि नहीं होती है।

शंका—उस अतीत कालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका विच्छेद क्यों नहीं होता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अभव्यराशिकी प्रतिपक्षभूत भव्यराशिका विच्छेद मान लेने पर अभव्यत्वकी सत्ताके नाशका प्रसंग आ जाता है।

शेष व्याख्यान ओघप्ररूपणाके कालसूत्रमें जिसप्रकार कर आये हैं उसप्रकार उसका कथन करना चाहिये।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा पूर्वोक्त एकेन्द्रियादि नौ जीवराशियां अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥ ७६ ॥

इस सूत्रका व्याख्यान करने पर जिसप्रकार मूलोघ प्ररूपणाके समय क्षेत्रसूत्रका अर्थ कह आये हैं उसप्रकार कथन करना चाहिये। परंतु यहां पर ध्रुवराशि इसप्रकार उत्पन्न करना चाहिये। वह इसप्रकार है—

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय और अनिन्द्रिय जीवोंकी राशिको संपूर्ण जीव

---

1 प्रतिपु 'वोच्छेज्जतो' इति पाठः।

अणिंदियाणं रासिं सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खिविय तस्स चेव वग्गं एइंदियभाजिदं तत्थेव पक्खित्ते एइंदियधुवरासी होदि । तं संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते एइंदियपज्जत्तधुवरासी होदि । एइंदियधुवरासिं संखेज्जरूवेहि गुणिदे एइंदियअपज्जत्तधुवरासी होदि । पुणो एइंदियधुवरासिमसंखेज्जलोएण गुणिदे बादरेइंदियधुवरासी होदि । तमसंखेज्जलोएण गुणिदे बादरेइंदियपज्जत्ताणं धुवरासी होदि । तमसंखेज्जलोएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते बादरेइंदियअपज्जत्ताणं धुवरासी होदि । सामण्णेइंदियधुवरासिमसंखेज्जलोएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमेइंदियधुवरासी होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमेइंदियपज्जत्तधुवरासी होदि । सामण्णसुहुमेइंदियधुवरासिं संखेज्जरूवेहि गुणिदे सुहुमेइंदियअपज्जत्तधुवरासी होदि । सग-सगधुवरासीहि सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे खंडिदादओ ओघमिच्छाइट्ठीणं व वत्तव्वा । णवरि पमाणं भण्णमाणे एइंदियाणं ओघभंगो । एइंदियपज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जा भागा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स संखेज्जदिभागो । बादरेइंदियाणं

राशिमें ऊपर प्रक्षिप्त करके और उन्हीं अनिन्द्रियादि जीवोंके प्रमाणके वर्गको एकेन्द्रिय जीवराशिसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी पूर्वोक्त राशिमें प्रक्षिप्त करने पर एकेन्द्रिय जीवराशिसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । इसे संख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी पूर्वोक्त ध्रुवराशिमें मिला देने पर एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी ध्रुवराशिको संख्यातसे गुणित करने पर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । पुनः एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी ध्रुवराशिको असंख्यात लोकसे गुणा करने पर बादर एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । इसे असंख्यात लोकोंसे गुणित करने पर बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । इसमें असंख्यात लोकोंका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । सामान्य एकेन्द्रियसंबन्धी ध्रुवराशिमें असंख्यात लोकोंका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसको उसीमें मिला देने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । इसे संख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे इसी सूक्ष्म एकेन्द्रिय ध्रुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । सामान्य सूक्ष्म एकेन्द्रियसंबन्धी ध्रुवराशिको संख्यातसे गुणित करने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । इन अपनी अपनी ध्रुवराशियोंके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके ऊपर खंडित आदिकका कथन ओघ मिथ्यादृष्टियोंके खंडित आदिकके कथनके समान करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि प्रमाणका कथन करते समय एकेन्द्रियोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान कहना चाहिये । एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव संपूर्ण जीवराशिके संख्यात बहुभागप्रमाण हैं । उन्हीं एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंका प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके संख्यातवें भाग हैं । बादर एकेन्द्रिय तथा बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त

तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागो। सुहुमेइंदिया सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जा भागा। सुहुमेइंदियपज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जा भागा। सुहुमेइंदियापज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जदिभागो। कारणमेइंदियाणं ताव वुच्चदे। सेसिंदियाणिंदिएहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेयखंडं सेसिंदियाणिंदिया च होंति। सेसबहुखंडा एइंदिया हवंति। सेसिंदियाणिंदिय-एइंदियापज्जत्तेहि य सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं संखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा एइंदियपज्जत्ता होंति। एइंदियअपज्जत्तेहि चेव सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे संखेज्जरूवाणि लब्भंति। ताणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडं एइंदियअपज्जत्ता होंति। सेसिंदिय-अणिंदिय बादरेइंदिएहि य सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धअसंखेज्जदिलोगरासिं विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदिया होंति। बि-ति चदु-पंचाणिंदिय-बादरेइंदियसहिदसुहुमेइंदिअपज्जत्तएहि सव्वजीवरासिम्हि

और अपर्याप्तोंका प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके असंख्यातवें भाग है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव संपूर्ण जीवराशिके असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके संख्यात बहुभागप्रमाण हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके संख्यातवें भाग हैं। अब एकेन्द्रियोंके प्रमाणका कारण कहते हैं– शेषेन्द्रिय अर्थात् द्वीन्द्रियादि जीव और अनिन्द्रिय जीव इनके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके दे देने पर उनमेंसे एक खंडप्रमाण द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले और अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है। शेष बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय जीव हैं। द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले, अनिन्द्रिय और एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर जो संख्यात लब्ध आवे उसका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव होते हैं। एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके प्रमाणसे भी सर्व जीवराशिके भाजित करने पर संख्यात लब्ध आते हैं। उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंडप्रमाण एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं। द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले, अनिन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो असंख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव होते हैं। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, अनिन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय जीवोंसे युक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर संख्यात लब्ध आते हैं। उसका

भागे हिदे संखेज्जरूवाणि आगच्छंति। ताणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियपज्जत्ता होंति। सुहुमेइंदियअपज्जत्तेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगखंडं सुहुमेइंदियअपज्जत्ता होंति। बादरेइंदिएहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धअसंखेज्जलोगे विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं बादरेइंदिया होंति। बादरेइंदियअपज्जत्तेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धअसंखेज्जलोगे विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं बादरेइंदियअपज्जत्ता होंति। एवं बादरेइंदियपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं। एसा चेव णिरुत्ती हवदि। कुदो? एत्थ कारणादो णिरुत्तीए भेदाणुवलंभादो।

बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[१] ॥ ७७ ॥

विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव प्राप्त होते हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो संख्यात अंक लब्ध आवें उनका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंड प्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं। बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो असंख्यात लोक लब्ध आवें उन्हें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने बादर एकेन्द्रिय जीव होते हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो असंख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं। इसीप्रकार बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये। और यही निरुक्ति है, क्योंकि, यहां पर कारणसे निरुक्तिमें भेद नहीं पाया जाता है।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ७७ ॥

१ थावरसखपिपीलियभमर ×× आदिगा समेदा जे। जुगवारमसखेज्जा ॥ गो जी. १८५. असखेज्जा बेइंदिआ जाव असखिज्जा चउरिंदिया। अनु. द्वा सू. १४१ पत्र १७९.

बहूणं बीइंदियादीणं तस्सेवेत्ति एगवयणणिद्देसो कधं घडदे ? ण एस दोसो, बहूणं पि जादीए एयत्तविरोहाभावादो । एत्थ अपज्जत्तवयणेण अपज्जत्तणामकम्मोदयसहिदजीवा घेत्तव्वा । अण्णहा पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदणिव्वत्ति-अपज्जत्ताणं पि अपज्जत्तवयणेण गहणप्पसंगादो । एवं पज्जत्ता इदि वुत्ते पज्जत्तणाम-कम्मोदयसहिदजीवा घेत्तव्वा । अण्णहा पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदणिव्वत्तिअपज्जत्ताणं गहणाणुववत्तीदो । बि-ति-चउरिंदिए त्ति वुत्ते बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादिणामकम्मोदय-सहिदजीवाणं गहणं । बेण्णि इंदियाणि जेसिं ते बेइंदिया इदि घेप्पमाणे को दोसो ? चे ण, अपज्जत्तकाले वट्टमाणजीवाणमिंदियाभावेण तेसिमगहणप्पसंगादो । खओवसमो इंदियं ण दव्विंदियमिंदियमिदि चे ण, सजोगिकेवलिस्स पणट्ठखओवसमस्स अणिंदियत्तप्पसंगादो । होदु ? चे ण, सुत्तस्स पंचिंदियत्तपदुप्पायणादो । कम्हि तं सुत्तमिदि चे एत्थेव । तं

शंका— द्वीन्द्रियादिक जीव बहुत हैं, अतएव उनके लिये ' तस्सेव ' इसप्रकार एक वचन निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, बहुतके भी जातिसे एकत्वके प्रति कोई विरोध नहीं आता है ।

यहां सूत्रमें अपर्याप्त पदसे अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये । अन्यथा पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त निर्वृत्यपर्याप्त जीवोंका भी अपर्याप्त इस वचनसे ग्रहण प्राप्त हो जायगा । इसीप्रकार पर्याप्त ऐसा कहने पर पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये । अन्यथा पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त निर्वृत्यपर्याप्त जीवोंका ग्रहण नहीं होगा । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय, ऐसा कहने पर द्वीन्द्रिय जाति, त्रीन्द्रिय जाति और चतुरिन्द्रिय जाति नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये ।

शंका— ' जिन जीवोंके दो इन्द्रियां पाई जाती हैं वे द्वीन्द्रिय जीव हैं ' ऐसा ग्रहण करनेमें क्या दोष आता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उपर्युक्त अर्थके ग्रहण करने पर अपर्याप्त कालमें विद्यमान जीवोंके इन्द्रियां नहीं पाई जानेसे उनके नहीं ग्रहण होनेका प्रसंग प्राप्त हो जायगा ।

शंका— क्षयोपशमको इन्द्रिय कहते हैं, द्रव्येन्द्रियको इन्द्रिय नहीं कहते हैं, इसलिये अपर्याप्त कालमें द्रव्येन्द्रियोंके नहीं रहने पर भी द्वीन्द्रियादि पदोंके द्वारा उन जीवोंका ग्रहण हो जायगा ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, यदि इन्द्रियका अर्थ क्षयोपशम किया जाय तो जिनका क्षयोपशम नष्ट हो गया है ऐसे सयोगिकेवलीको अनिन्द्रियपनेका प्रसंग आ जाता है ।

शंका— आ जाने दो ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सूत्र सयोगिकेवलीको पंचेन्द्रियरूपसे प्रतिपादन करता है ।

जहा– पंचिंदिया सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, ओघमिदि ।

सुहुमट्ठपरूवणट्ठं सुत्तमाह—

असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥७८॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुच्चदे । एदाओ रासीओ सव्वकालमायाणु रूववयसहिदाओ त्ति ण वोच्छेदमुवढुक्कंते तदो असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति त्ति कधमेदं घडदे ? सच्चं, ण वोच्छिज्जंति चेव किं तु एदासिमाएण विणा जदि वओ चेव भवदि तो णिच्छएण वोच्छिज्जंति । अण्णहा असंखेज्जत्ताणुववत्तादो । एदस्सत्थस्स अवबोहणट्ठं अवहिरंति त्ति वुत्तं ।

शंका – यह सूत्र कहां पर है ?

समाधान—यहीं आगे है । यथा— 'पंचेन्द्रिय जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्ररूपणाके समान पांचवें गुणस्थानतक पल्योपमके असंख्यातवें भाग और छठवेंसे संख्यात हैं ।

अब सूक्ष्म अर्थका प्ररूपण करनेके लिये सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव असंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ७८ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं ।

शंका—ये द्वीन्द्रियादि सर्व जीवराशियां सर्व काल आयके अनुरूप व्ययसे युक्त हैं, इसलिये यदि विच्छेदको प्राप्त नहीं होती हैं तो 'असंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होती हैं, यह कथन कैसे घटित हो सकता है ?

समाधान—यह सत्य है कि उपर्युक्त द्वीन्द्रियादिक जीवराशियां विच्छिन्न नहीं होती हैं, किन्तु इन राशियोंका आयके विना यदि व्यय ही होता तो निश्चयसे विच्छिन्न हो जातीं । यदि ऐसा न माना जाय तो 'द्वीन्द्रियादि राशियां असंख्यात हैं' यह कथन नहीं बन सकता है । इसी अर्थका ज्ञान करानेके लिये ' अवहिरंति ' ऐसा कहा ।

विशेषार्थ—यहां सूत्रमें ' असंखेज्जाहि ' पाठ है, किन्तु अर्थसंदर्भकी दृष्टिसे वहां ' असंखेज्जासंखेज्जाहि ' ऐसा पाठ प्रतीत होता है । खुद्दाबंध खंडके इसी प्रकरणमें इन्हीं जीवोंकी सामान्य संख्या बतलाते हुए यह सूत्र पाया जाता है— ' असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।' किन्तु यहां टीकामें भी ' असंखेज्जाहि ' पद होनेसे उसी पाठकी रक्षा की गई ।

खेत्तेण बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्तेहि पदर-मवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण[1] ॥७९॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा– 'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो पुव्वुद्दिट्ठबि-ति-चउरिंदियाणं पमाणं पुव्वुद्दिट्ठमेव भवदि । मज्झिल्लं मज्झम्हि समुद्दिट्ठपज्जत्ताणं भवदि । अंतिल्लं पि अंतुद्दिट्ठं तेसिमपज्जत्ताणं हवदि । एदेहि सामण्णविगलिंदिएहि तेसिं चेव पज्जत्तेहि विगलिंदियअपज्जत्तएहि जगपदरमवहिरदि । अंगुलस्स सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो सूचिअंगुलमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदेयभागो । तस्स वग्गो तारिसेण अवरेण गुणिदरासी पडिभागो अवहारकालो । एवं चेव अपज्जत्तसुत्तं पि विवरेयव्वं । एवं चेव पज्जत्तसुत्तं पि वक्खाणेयव्वं । णवरि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभाए

क्षेत्रकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है । तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके द्वारा क्रमशः सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ७९ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है– 'उद्देशके अनुसार निर्देश किया जाता है' इस न्यायके अनुसार सर्व प्रथम कहे गये द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण सर्व प्रथम कहा गया ही है । मध्यमें कहे गये पर्याप्तोंका प्रमाण मध्यमें कहा गया है । और अन्तमें कहा गया प्रमाण भी अन्तमें कहे गये उन्हींके अपर्याप्तकोंका है । इनके द्वारा अर्थात् सामान्य विकलत्रयोंके द्वारा, उन्हींके पर्याप्तकोंके द्वारा और विकलेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है । यहां पर अंगुलसे तात्पर्य सूच्यंगुलका और उसके असंख्यातवें भागसे तात्पर्य सूच्यंगुलको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे उससे है । उस सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग इसका यह तात्पर्य हुआ कि उस सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागको तत्प्रमाण दूसरी राशिसे गुणित कर दो । ऐसा करने पर जो राशि उत्पन्न होगी वह यहां पर प्रतिभाग अर्थात् अवहारकाल है । इसीप्रकार अपर्याप्त-सूत्रका भी स्पष्टीकरण करना चाहिये और इसीप्रकार पर्याप्त-सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये । इतना विशेष है कि सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गित करने पर

१ द्वीन्द्रियास्त्रीन्द्रियाश्चतुरिन्द्रिया असंख्येया श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिता । स. सि. १, ८ पज्जत्ता-पज्जत्ता बितिचउ ×× अवहरंति । अंगुलसंख × × पएसभइयं पुढो पयरं ॥ पञ्चसं. २, १२.

वग्गिदे पज्जत्ताणमवहारकालो होदि। तेण पडिभाएण। पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागं सलागभूदं ठविय विगलिंदियअपज्जत्तेहि जगपदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जगपदरं समप्पदि। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं सलागभूदं ठविय विगलिंदियपज्जत्तेहि जगपदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जगपदरं समप्पदि त्ति जं वुत्तं होदि।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[1] ॥ ८० ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुच्चदे।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ८१ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुच्चदे।

खेत्तेण पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण[2] ॥ ८२ ॥

पर्याप्तोंका अवहारकाल होता है। इस प्रतिभागसे। प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागको शलाकारूपसे स्थापित करके विकलेन्द्रिय अपर्याप्तोंके द्वारा जगप्रतरके पुनः पुनः अपहृत करने पर अर्थात् घटाने पर शलाकाओंके साथ जगप्रतर समाप्त होता है। तथा प्रतरांगुलके संख्यातवें भागको शलाकारूपसे स्थापित करके विकलेन्द्रिय पर्याप्तकोंके द्वारा जगप्रतरके पुनः पुनः अपहृत करने पर शलाकाओंके साथ जगप्रतर समाप्त होता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८० ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८१ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ८२ ॥

---

१ ×× मणुस्सादिगा समेदा जे। जुगवारमसखेज्जा ॥ गो. जी. १७५.

२ पञ्चेन्द्रियेषु मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येया श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिता। स. सि. १, ८, प्रतिषु 'संखेज्जदिभायपडिभाएण' इति पाठ.।

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागस्स वग्गो पंचिंदियाणं जगपदरस्स पडिभागो होदि। सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागस्स वग्गो जगपदरस्स पडिभागो होदि पंचिंदियपज्जत्ताणं। पडिभागो भागहारो त्ति एयट्ठो। विगलिंदियसुत्तेण सह पंचिंदियसुत्तं किमिदि ण वुत्तं? ण एस दोसो, उवरिमगुणपडिवण्णसुत्तस्स पंचिंदियत्ताणुवट्टावणट्टत्तादो पुध पंचिंदियसुत्तं वुच्चदे। तत्थ ट्ठियपंचिंदियणिद्देसो किमिदि णाणुवट्टाविज्जदे? ण, एगजोगणिद्दिट्ठाणमेगदेसस्स अणुवट्टणाभावादो।

संपहि उवरि वुच्चमाणअप्पाबहुगअणियोगद्दारसुत्तबलेण पुव्वाइरिओवएसबलेण च एदेण सुत्तेण सूचिदविगल-सयलिंदियाणमवहारकालविसेसे भणिस्सामो। तं जहा– आवलियाए असंखेज्जदिभाएण सूचिअंगुले भागे हिदे तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे बेइंदियाणमवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते बेइंदियअपज्जत्तअवहारकालो होदि। तं आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव

'उद्देशके अनुसार निर्देश होता है' इस न्यायके अनुसार अंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग पंचेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जगप्रतरका प्रतिभाग है, और सूच्यंगुलके संख्यातवें भागका वर्ग पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जगप्रतरका प्रतिभाग है। प्रतिभाग और भागहार ये दोनों एकार्थवाची शब्द हैं।

शंका—विकलेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं कहा?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आगे कहे जानेवाले गुणप्रतिपन्न जीवोंके सूत्रमें पंचेन्द्रियत्वकी अनुवृत्ति करनेके लिये पृथक्रूपसे पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र कहा।

शंका—विकलेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके एकत्र कर देने पर वहां स्थित पंचेन्द्रिय पदके निर्देशकी अनुवृत्ति क्यों नहीं होती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, एक योगरूपसे निर्दिष्ट अनेक पदोंमेंसे एक देशकी अनुवृत्ति नहीं होती है।

अब आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारके सूत्रके बलसे और पूर्वाचार्योंके उपदेशके बलसे इस सूत्रके द्वारा सूचित विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय जीवोंके अवहारकाल विशेषोंको कहते हैं। वे इसप्रकार हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसको वर्गित करने पर द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल होता है। द्वीन्द्रियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवें उसे उसी द्वीन्द्रियोंके अवहारकालमें मिला देने पर द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। इस द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित

पक्खित्ते तेइंदियअवहारकालो होदि। पुणो तम्हि चेव आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे जं लद्धं तं तम्हि चेव पक्खित्ते तेइंदियअपज्जत्ताणमवहारकालो होदि। एवं चउरिंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त-पंचिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्ताणं जहाकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदेयखंडेण अवहारकाला अब्भहिया कायव्वा। तदो पंचिंदियअपज्जत्त-अवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो तेइंदिय-पज्जत्ताणं अवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते बेइंदियपज्जत्ताणमवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-भाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पंचिंदियपज्जत्ताणमवहारकालो होदि। तम्हि आव-लियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते चउरिंदियपज्जत्तअवहार-कालो होदि। एत्थ सव्वत्थ रासिविसेसेण रासिमोवट्टिय लद्धं रूवूणं करिय भागहार-भूदआवलियाए असंखेज्जदिभागो उप्पाएदव्वो। एदेहि अवहारकालेहि पुध पुध जगपदरे भागे हिदे अप्पप्पणो दव्वपमाणाणि भवंति। एत्थ खंडिदादओ जाणिऊण वत्तव्वा।

करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी द्वीन्द्रिय अपर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल होता है। पुनः इस त्रीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालको क्रमसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उत्तरोत्तर एक एक भागसे अधिक करना चाहिये। अनन्तर पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाण त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालमें मिला देने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। इस द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी द्वीन्द्रिय पर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहार-काल होता है। इस पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे इसी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। यहां सर्वत्र राशि विशेषसे राशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके भागहाररूप आवलीका असंख्यातवें भाग उत्पन्न कर लेना चाहिये। इन अवहारकालोंसे पृथक् पृथक् जगप्रतरके भाजित करने पर अपने अपने द्रव्यका प्रमाण आता है। यहां पर खंडित आदिकका कथन समझ कर करना चाहिये।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥८३॥

पहुडिसद्दो किरियाविसेसणं। सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि आइं करिएत्ति। एत्थ पुव्वसुत्तादो पंचिंदिय इदि अणुवट्टदे। तेण सव्वे गुणपडिवण्णा पंचिंदिया चेव। सजोगि-अजोगिकेवलीणं पणट्ठासेसिंदियाणं पंचिंदियववएसो कधं घडदे ? ण, पंचिंदियजादिणामकम्मोदयमवेक्खिय तेसिं पंचिंदियववएसादो। एदेसिं पमाणपरूवणा मूलोघपरूवणाए तुल्ला। कुदो ? पंचिंदियवदिरित्तजादीसु गुणपडिवण्णाभावादो।

पंचिंदियअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ८४ ॥

एदस्स सुत्तस्स सुगमो अत्थो।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ८५ ॥

एदस्स वि अत्थो सुगमो।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यतवें भाग हैं ॥ ८३ ॥

यहां पर प्रभृति शब्द क्रियाविशेषण है। जिससे सासादनसम्यग्दृष्टि प्रभृतिका अर्थ सासादनसम्याग्दृष्टिको आदि लेकर होता है। यहां पर पूर्व सूत्रसे पंचेन्द्रिय पदकी अनुवृत्ति होती है, इसलिये संपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न जीव पंचेन्द्रिय ही होते हैं, यह अभिप्राय निकल आता है।

शंका—सयोगिकेवली और अयोगिकेवलियोंके संपूर्ण इन्द्रियां नष्ट हो गई हैं, अतएव उनके पंचेन्द्रिय यह संज्ञा कैसे घटित होती है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पंचेन्द्रियजाति नामकर्मकी अपेक्षा सयोगिकेवली और अयोगिकेवलियोंके पंचेन्द्रिय संज्ञा बन जाती है।

इन गुणस्थानप्रतिपन्न पंचेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा मूलोघ प्ररूपणाके समान है, क्योंकि, पंचेन्द्रियजातिको छोड़कर दूसरी जातियोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव नहीं पाये जाते हैं।

पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८५ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम है।

१ सासादनसम्यग्दृष्ट्यादयोऽयोगकेवल्यन्ता सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८.

खेत्तेण पंचिंदियअपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ ८६ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेव। एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि पंचिंदियअपज्जत्तपडिवद्धाणि विगलिंदियापज्जत्तसुत्तं व पंचिंदियमिच्छाइट्ठिसुत्तम्हि चेव किण्ण वुत्ताणि त्ति वुत्ते ण, पंचिंदियअपज्जत्तेसु गुणपडिवण्णाभावपरूवणट्ठत्तादो पुध सुत्तारंभस्स। अपज्जत्तकाले वि पंचिंदिएसु गुणपडिवण्णा अत्थि वेउव्विय-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगेसु सम्मत्त-णाण-दंसणोवलंभादो। इदि चे, होदु णाम णिव्वत्तिं पडि अपज्जत्तएसु गुणपडिवण्णाणमत्थित्तं, अपज्जत्तणामकम्मोदएण सह गुणाणं अवट्ठाणविरोहा।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिं सखेज्जखंडे कए तत्थ वहुखंडा सुहुमेइंदियपज्जत्ता होंति। सेसमसंखेज्जलोगमेत्तखंडे कए तत्थ वहुखंडा सुहुमेइंदियअपज्जत्ता होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए वहुखंडा वादरेइंदियअपज्जत्ता होंति। सेसमणंतखंडे कए वहुखंडा

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ८६ ॥

यह सूत्र भी सुगम ही है। ये पूर्वोक्त तीनों भी सूत्र पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे प्रतिबद्ध हैं।

शंका— जिसप्रकार विकलेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र स्वतन्त्र न होकर विकलेन्द्रिय और उनके पर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ ही निवद्ध है, उसीप्रकार पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रोंमें ही, पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्र निवद्ध करके क्यों नहीं कहे ?

समाधान— ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि नहीं, क्योंकि, पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रोंका पृथक्‌रूपसे आरंभ पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अभावके प्ररूपण करनेके लिये किया है।

शंका— अपर्याप्त कालमें भी पंचेन्द्रियोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव होते हैं, क्योंकि, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोगमें सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान तथा दर्शनकी उपलब्धि पाई जाती है ?

समाधान— यदि ऐसा है तो निर्वृत्तिकी अपेक्षा अपर्याप्तकोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका सद्भाव रहा आवे, परंतु अपर्याप्त नामकर्मके उदयके साथ सम्यग्दर्शन आदि गुणोंका सद्भाव माननेमें विरोध आता है।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात लोकप्रमाण खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त

बादरेइंदियपज्जत्ता होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणिंदिया होंति। सेसरासीदो पलिदोवमअसंखेज्जदिभागमवणेऊण सेसरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाए ऊणेगखंडं पि पुणो पुध ट्ठविय सेसबहुभागे घेत्तूण चत्तारि सरिसपुंजे काऊण ठवेयव्वा। पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण अवणिदएगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते बेइंदिया होंति। पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण दिण्णसेसेगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुभागे विदियपुंजे पक्खित्ते तेइंदिया होंति। पुव्वविरलणादो संपहि विरलणा किं सरिसा, किमधिया, किमूणा त्ति पुच्छिदे णत्थि एत्थ उवएसो। पुणो वि तप्पाओग्गमावलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण सेसेगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडे तदियपुंजे पक्खित्ते चउरिंदिया होंति। सेसेगखंडं चउत्थपुंजे पक्खित्ते पंचिंदियमिच्छाइट्ठी होंति[2]। बेइंदियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बेइंदियअपज्जत्ता होंति। सेसेगखंडं तेसिं पज्जत्ता होंति। तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाणं पि एवं चेव वत्तव्वं। पुव्वमवणिदपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागरासिमसंखेज्जखंडे कए

खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अनिन्द्रिय जीव हैं। शेष राशिमेंसे पल्योपमके असंख्यातवें भागको घटा कर जो राशि अवशिष्ट रहे उसके आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण खंड करके बहुभागमेंसे एक भागको भी पुनः पृथक् स्थापित करके शेष बहुभागको लेकर चार समान पुंज करके स्थापित कर देना चाहिये। पुनः आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर निकाल कर पृथक् रखे हुए एक खंडको समान खंड करके देयरूपसे दे देनेके पश्चात् उनमेंसे बहुभागोंको प्रथम पुंजमें प्रक्षिप्त करने पर द्वीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है। पुनः आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर प्रथम पुंजमें देनेसे शेष रहे हुए एक भागको समान खंड करके देयरूपसे देनेके पश्चात् उनमेंसे बहुभागको दूसरे पुंजमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है।

पूर्व विरलनसे यह दूसरा विरलन क्या समान है, क्या अधिक है, या क्या न्यून है? ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि इस विषयमें उपदेश नहीं पाया जाता है। फिर भी तद्योग्य आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर शेष एक खंडको समान खंड करके देयरूपसे दे देनेके अनन्तर उनमेंसे बहुभाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर चतुरिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है। शेष एक खंडको चौथे पुंजमें मिला देने पर पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है। द्वीन्द्रिय जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं। त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रियोंका भी इसीप्रकार कथन करना चाहिये। पहले घटा कर पृथक् रक्खी

१ प्रतिषु 'पलिदोवमसंखेज्जदि-' इति पाठः। २ गो. जी. १७८-१७९.

बहुभागा असंजदसम्माइट्ठी होंति । एवं णेयव्वं जाव अजोगिकेवलि त्ति । अहवा एइं-दियाणं भागाभागो एवं वा वत्तव्वो । सव्वेइंदियरासी अद्धद्धेण छेत्तव्वो जाव बादरेइंदिय-रासी अवचिट्ठिदो त्ति । तत्थ लद्धअद्धच्छेदणयसलागा विरलेऊण विगं काऊण अण्णोण्ण-ब्भासे कदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी उप्पज्जदि । एस रासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सव्वमेइंदियरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बादरेइंदियाणं पमाणं पावेदि । तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदिया एयखंडं बादरेइंदिया । पुणो सुहुमेइंदियरासी अद्धद्धेण छिंदिदव्वो जाव सुहुमेइंदियअपज्जत्तरासी अवचिट्ठिदो त्ति । तत्थ अद्धच्छेदणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भासकरणेणुप्पण्णसंखेज्जरासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सुहुमेइंदियरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सुहुमेइंदियअपज्जत्तरासी पावुणदि । तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदिय-पज्जत्ता एयखंडं तेसिमपज्जत्ता होंति । एवं बादरेइंदियाणं पि वत्तव्वं । एत्थ संदिट्ठी । तं जहा— एइंदियरासी बेछप्पण्णसदमेत्तो २५६ । सुहुमेइंदियरासी चालीसब्भहियबेसयमेत्तो

हुई पल्योपमके असंख्यातवें भागरूप राशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । इसीप्रकार अयोगिकेवलियोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । अथवा, एकेन्द्रियोंके भागाभागको इसप्रकार भी कहना चाहिये— बादर एकेन्द्रिय राशि प्राप्त होने तक एकेन्द्रिय राशिको आधी आधी करते जाना चाहिये । इसप्रकार अर्धार्ध करनेसे जितनी अर्धच्छेद शलाकाएं प्राप्त होवें उनका विरलन करके और उस राशिके प्रत्येक अंकको दोरूप करके परस्पर गुणा करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि उत्पन्न होती है । इस राशिको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व एकेन्द्रिय राशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति बादर एकेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है । वहां बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव और एक भागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय जीव हैं । पुनः सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि प्राप्त होने तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवराशिको अर्धार्धरूपसे छेदित करना चाहिये । ऐसा करनेसे वहां जितने अर्धच्छेद प्राप्त हों उनका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो असंख्यात राशि उत्पन्न होवे उसका विरलन करके और उस राशिके प्रत्येक एकके प्रति सूक्ष्म एकेन्द्रिय राशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि प्राप्त होती है । वहां पर बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि है और एक भागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि है । इसीप्रकार बादर एकेन्द्रियोंका भी कथन करना चाहिये । यहां पर संदृष्टि देते हैं । वह इसप्रकार है—

एकेन्द्रिय जीवराशि दोसौ छप्पन २५६ है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय राशि दोसौ चालीस २४० है । बादर एकेन्द्रियराशि सोलह १६ है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तराशि एकसौ अस्सी

२४०। बादरेइंदियरासी सोलसमेत्तो १६। सुहुमेइंदियपज्जत्तरासी असीदिसयमेत्तो १८०। तेसिमपज्जत्ता सट्ठी ६० हवंति। बादरेइंदियअपज्जत्ता बारस १२ हवंति। तेसिं पज्जत्ता चत्तारि ४।

संपहि बेइंदियपज्जत्तरासीदो बेइंदिय-तेइंदियरासीणं विसेसो किं सरिसो किमहिओ हीणो वा इदि वुत्ते असंखेज्जगुणो हवदि। तं जहा। वुच्चदे– तेइंदिय-चउरिंदियरासीणं विसेसादो बेइंदिय-तेइंदियरासिविसेसो असंखेज्जगुणो। तं कधं जाणिज्जदे? आइरिओव-देसादो भागाभागम्हि परूविदवक्खाणादो य जाणिज्जदे। तेइंदिय-चउरिंदियरासिविसेसो पुण तेइंदियपज्जत्तरासीदो बहुगो। तं कधं णव्वदे? तेइंदियअपज्जत्तरासीदो चउरिंदियरासी विसेसहीणो त्ति वुत्तअप्पाबहुगसुत्तादो। तेइंदियपज्जत्तरासीदो पुण बेइंदियपज्जत्तरासी विसेसहीणो। तं कधं णव्वदे? एदं पि अप्पाबहुगसुत्तादो चेव णव्वदे। तदो जाणिज्जदे जहा बीइंदियपज्जत्तरासीदो विसेसाहियतीइंदियपज्जत्तरासीदो बहुदरतीइंदिय-चउरिंदिय-

है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तराशि साठ ६० है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि बारह १२ है और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि चार ४ है।

अब द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशियोंका विशेष अर्थात् अन्तर क्या समान है, क्या अधिक है या हीन है? ऐसा पूछने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है ऐसा समझना चाहिये। वह इसप्रकार है। आगे उसीको कहते हैं— त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय जीवराशिका विशेष असंख्यातगुणा है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— आचार्योंके उपदेशसे और भागाभागमें प्ररूपण किये गये व्याख्यानसे जाना जाता है।

त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे अधिक है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— त्रीन्द्रिय अपर्याप्त राशिके प्रमाणसे चतुरिन्द्रिय राशि विशेष हीन है ऐसा अल्पबहुत्वके सूत्रमें कहा है, अतएव उससे जाना जाता है।

त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिका प्रमाण विशेष हीन है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— यह भी अल्पबहुत्वके सूत्रसे ही जाना जाता है।

इसलिये जाना जाता है कि जिसप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तराशि विशेष अधिक है और इससे त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष बड़ा है। त्रीन्द्रिय

रासिविसेसादो असंखेज्जगुणो। वेइंदिय-तेइंदियरासिविसेसो वेइंदियपज्जत्तेहिंतो असंखेज्ज-गुणो त्ति।

अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाण-परत्थाण-सव्वपरत्थाणभेएण। एत्थ ताव सत्थाण-प्पाबहुअं वुच्चदे। सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। बादरेइंदिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? सगपज्जत्तपक्खित्तमेत्तेण। सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियअपज्जत्ता। तेसिं पज्जत्ता संखेज्ज-गुणा। को गुणगारो? संखेज्जा समया। सुहुमेइंदिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? सगअपज्जत्तमेत्तेण। सव्वत्थोवो वेइंदियअवहारकालो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सगअवहारकालो। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? सगअवहारकालवग्गो। सो वि असंखेज्जाणि घणंगुलाणि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदि-भागमेत्ताणि। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? अवहारकालो। दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? विक्खंभसूई। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अवहारकालो। लोगो असंखेज्ज-

और चतुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशिका विशेष असंख्यातगुणा है उसीप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशिका विशेष असंख्यातगुणा है।

स्वस्थान, परस्थान और सर्व परस्थानके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे यहां पर पहले स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंसे बादर एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? अपनी पर्याप्त राशिको प्रक्षिप्त करने रूप विशेषसे अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव उनसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। द्वीन्द्रियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। अवहारकालसे विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है। वह प्रतिभाग भी सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात घनांगुलप्रमाण है। विष्कंभ-सूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगश्रेणीसे द्वीन्द्रियोंका द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है। द्वीन्द्रियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणी

गुणो। को गुणगारो? सेढी। एवं बेइंदियअपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं। एवं पज्जत्ताणं पि। णवरि जम्हि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि घणंगुलाणि त्ति वुत्तं तम्हि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वत्तव्वं। ति-चदु-पंचिंदियाणं तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं पि जहाकमेण बेइंदिय-बेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं भंगो। सासणादीणं मूलोघसत्थाणभंगो।

परत्थाणे पयदं। तत्थ ताव एइंदियपरत्थाणं वुच्चदे— सव्वत्थोवा बादरेइंदिया। सुहुमेइंदिया असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। तेसिं छेदणा वि असंखेज्जा लोगा। एवं चेव बिदियवियप्पो। णवरि एइंदिया विसेसाहिया। अहवा सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। तेसिं छेयणा वि असंखेज्जा लोगा। सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जसमया। चउत्थो वियप्पो एवं चेव। णवरि एइंदिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरेइंदियसाहिदसुहुमेइंदियअपज्जत्तमेत्तेण। सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता

गुणकार है। इसीप्रकार द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका भी अल्पबहुत्व कहना चाहिये। इसीप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंका भी कहना चाहिये। इतना विशेष है कि जहां पर सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र घनांगुल कहे हैं वहां पर सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र घनांगुल कहना चाहिये। त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय तथा इन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन यथाक्रमसे द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय पर्याप्त और द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये। इन्द्रियमार्गणामें सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व मूलोघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है। उनमेंसे पहले एकेन्द्रियोंके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं— बादर एकेन्द्रिय जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव इनसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। उनके अर्धच्छेद भी असंख्यात लोक हैं। इसीप्रकार दूसरा विकल्प है। इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं। अथवा, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंसे असंख्यतगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। उनके अर्धच्छेद भी असंख्यात लोकप्रमाण हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। चौथा विकल्प भी इसीप्रकार है। इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणमें बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणको मिला देने पर जो प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव

असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। बादरेइंदिया विसेसाहिया। को विसेसो? पुव्वं भणिदो। सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जसमया। सुहुमेइंदिया विसेसाहिया। को विसेसो? पुव्वं भणिदो। छट्ठो वियप्पो एवं चेव। णवरि एइंदिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरेइंदियमेत्तेण। अहवा सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। बादरेइंदिया विसेसाहिया। सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। एइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरेइंदियअपज्जत्तमेत्तेण। सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जसमया। एइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरेइंदियपज्जत्तमेत्तेण। सुहुमेइंदिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरेइंदिय-

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर एकेन्द्रिय जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। विशेषका प्रमाण कितना है? पहले कहा जा चुका है अर्थात् बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है विशेषका प्रमाण उतना है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। विशेष क्या है? पहले कहा जा चुका है, अर्थात् सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है उतना विशेष है। छठा विकल्प इसीप्रकार है। इतना विशेष है कि एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर एकेन्द्रियोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। अथवा, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव इनसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर एकेन्द्रिय जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव एकेन्द्रियअपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रियजीव एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर एकेन्द्रिय

पज्जत्तविरहिदसुहुमेइंदियापज्जत्तमेत्तेण । एवं चेव अट्ठमो वियप्पो । णवरि एइंदिया विसेसाहिया । सव्वत्थोवो बेइंदियअवहारकालो । तस्सेव अपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तेण । पज्जत्त-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढम-वग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो असंखेज्जाणि घणंगुलाणि । केत्तिय-मेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि । बेइंदियअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बेइंदियविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तिय-मेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? बेइंदियअवहारकालो । बेइंदियपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई ।

पर्याप्तकोंके प्रमाणसे रहित सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। इसीप्रकार आठवां विकल्प है। इतना विशेष है कि एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। उन्हींके अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल पूर्वोक्त अवहारकालसे विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका अवहारकाल द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उन्हीं द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है जो असंख्यात घनांगुलप्रमाण है। असंख्यात घनांगुल कितने हैं ? सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूची द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूचीसे विशेष अधिक है। उस विशेषका कितना प्रमाण है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंकी विष्कंभसूचीको खंडित करके जो एक भाग आवे तन्मात्र विशेष समझना चाहिये। द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? अपनी (द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी)

तस्सेव अपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । बेइंदियदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदसगअपज्जत्तमेत्तो । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? बेइंदियअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । एवं तीइंदिय-चउरिंदियाणं । एवं पंचिंदियाणं पि । णवरि अजोगिभगवंतमाइं काऊण वत्तव्वं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवमजोगिकेवलिदव्वं । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवलिदव्वं संखेज्जगुणं । अप्पमत्तसंजददव्वं संखेज्जगुणं । पमत्तसंजददव्वं संखेज्जगुणं । असंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवरि पलिदोवमं त्ति ओघं । तदो बीइंदियअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स संखेज्जदिभागो[1] । को पडिभागो ? पलिदोवमं । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदपलिदोवमं । तस्सेव अपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ ।

विष्कंभसूची गुणकार है। उन्हीं द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। द्वीन्द्रिय जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है। कितनामात्र विशेष अधिक है? द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है। जगप्रतर द्वीन्द्रिय जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है। जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणी गुणकार है। इसीप्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व है। तथा इसीप्रकार पंचेन्द्रिय जीवोंका भी परस्थान अल्पबहुत्व है। इतना विशेष है कि पंचेन्द्रिय जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व कहते समय अयोगी भगवान्‌को आदि करके उसका कथन करना चाहिये।

अब सर्वपरस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयको कहते हैं— अयोगिकेवलियोंका द्रव्यप्रमाण सबसे स्तोक है। चारों गुणस्थानोंके उपशामक अयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं। चारों गुणस्थानोंके क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। सयोगिकेवलियोंका द्रव्यप्रमाण क्षपकोंसे संख्यातगुणा है। अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण सयोगियोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है। प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है। असंयतोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है। इसके ऊपर पल्योपम तक ओघके समान है। पल्योपमसे द्वीन्द्रियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणाकर क्या है? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? पल्योपम प्रतिभाग है। अथवा, प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? आवलीके असंख्यातवें भागसे पल्योपमको गुणित करके जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है। उन्हीं द्वीन्द्रियोंके अपर्याप्तक जीवोंका अवहारकाल द्वीन्द्रियोंके

1 अ-क प्रत्यो. ' असखे० ' इति पाठः ।

केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो। एवं तेइंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त-पंचिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्ताणं अवहारकाला कमेण विसेसाहिया। तदो तीइंदियपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो। बेइंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ। केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदतीइंदियपज्जत्तअवहारकालमेत्तो विसेसो। पंचिंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसो। चउरिंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? पुव्वं भणिदो। पंचिंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसेसाहिया। बेइंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसेसाहिआ। तेइंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसेसाहिया। पंचिंदियअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो। पंचिंदियविक्खंभसूई विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपंचिंदियअपज्जत्तविक्खंभसूचिमेत्तेण। [1]एवं णेयव्वं

अवहारकालसे विशेष अधिक है। कितनामात्र विशेष अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रियोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है। इसीप्रकार त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाल भी क्रमसे विशेष अधिक हैं। पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है। कितनामात्र विशेष अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालको खंडित करके जो भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है। पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे उन्हींकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? पहले कहा जा चुका है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है। पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कंभ-

१ प्रतिषु 'पंचिंदिय' इति पाठो नास्ति।

जाव चउरिंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-तेइंदिय-बेइंदियअपज्जत्त-बेइंदियाणं विक्खंभसूईओ त्ति । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? बीइंदियअवहारकालो । चउरिंदियपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पंचिंदियपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । बेइंदियपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । तेइंदियपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । पंचिंदियअपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पंचिंदियदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपंचिंदियअपज्जत्तदव्वमेत्तेण । एवं चउरिंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-तेइंदिय-बेइंदियअपज्जत्त-बेइंदियाणं दव्वाणि जहाकमेण विसेसाहियाणि । तदो पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? बेइंदियअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । अणिंदिया अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? लोगो । बादरेइंदियपज्जत्ता अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि

सूचीको खंडित करके जो भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूची आनेतक ले जाना चाहिये । द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है । जगश्रेणीसे चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका द्रव्य विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे त्रीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे पंचेन्द्रियोंका अपर्याप्त द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्त द्रव्यसे पंचेन्द्रिय द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तद्रव्यको खंडित करके जो लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय जीवोंका द्रव्यप्रमाण यथाक्रमसे विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय द्रव्यप्रमाणसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । लोकसे अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्ध जीवोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? लोकका प्रमाण प्रतिभाग है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंका प्रमाण अनिन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, जीवराशिके प्रथम वर्गमूलसे भी

वि अणंतगुणो जीववग्गमूलस्स वि अणंतगुणो सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागस्स अणंतिमभागो। को पडिभागो? अणिंदिया। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। बादरेइंदिया विसेसाहिया। सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। एइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया। सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा। एइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया। सुहुमेइंदिया विसेसाहिया। एइंदिया विसेसाहिया।

एवं इंदियमग्गणा समत्ता।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाया वाउकाइया बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया बादरवणप्फइकाइया पत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइया सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्तापज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा लोगा[१] ॥ ८७ ॥

अनन्तगुणा और सर्व जीवराशिके असंख्यातवें भागका अनन्तवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे उन्हींके अपर्याप्तक जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे बादर एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं। इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं। इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं। इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं। इनसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं।

इसप्रकार इन्द्रियमार्गणा समाप्त हुई।

कायानुवादसे पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक जीव तथा बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजस्कायिक, बादर वायुकायिक, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव तथा इन्हीं पांच बादरसंबन्धी अपर्याप्त जीव, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक जीव तथा इन्हीं चार सूक्ष्मसंबन्धी पर्याप्त जीव और अपर्याप्त जीव, ये सब प्रत्येक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात लोकप्रमाण हैं॥ ८७ ॥

१ कायानुवादेन पृथिवीकायिका अप्कायिकास्तेजःकायिका वायुकायिका असंख्येयलोकाः। स. सि. १, ८. आउड्ढरासिवारं लोगे अण्णोण्णसगुणे तेऊ। भू-जल-वाऊ अहिया पडिभागो असखलोगो दु॥ गो. जी. २०४. अपदिट्ठिदपत्तेया असंखलोगप्पमाणया होंति। तत्तो पदिट्ठिदा पुण असखलोगेण सगुणिदा॥ गो. जी. २०५. असंखया सेसा। पञ्चस. २, ९. पत्तेयपज्जवणकाइयाउ पयरं हरंति लोगस्स। अंगुलअसखभागेण भाइय भूदगतणू य। आवलिवग्गो अन्तरावली य गुणिओ हु बायरा तेऊ। वाऊ य लोगसख सेसतिगमसखिया लोगा॥ पञ्चस. २, १०-११. असखिज्जा

एत्थ पुढवी काओ सरीरं जेसिं ते पुढवीकाया त्ति ण वत्तव्वं, विग्गहगईए वट्ट-माणाणं जीवाणमकाइत्तप्पसंगादो। पुणो कधं वुच्चदे ? पुढविकाइयणामकम्मोदयवंतो जीवा पुढविकाइया त्ति वुच्चंति। पुढविकाइयणामकम्मं ण कहिं वि वुत्तमिदि चे ण, तस्स एइंदियजादिणामकम्मतब्भूदत्तादो। एवं सदि कम्माणं संखाणियमो सुत्तसिद्धो ण घडदि त्ति वुत्ते वुच्चदे। ण सुत्ते कम्माणि अट्ठेव अट्ठेदालसयमेवेत्ति, संखंतरपडिसेहविधायय-एवकाराभावादो। पुणो केत्तियाणि कम्माणि होंति ? हय-गय-विय-फुल्लंधुव-सलह-मक्कु-णुद्देहि-गोमिंदादीणि जेत्तियाणि कम्मफलाणि लोगे उवलब्भंते कम्माणि वि तत्तियाणि चेव। एवं सेसकाइयाणं पि वत्तव्वं। बादरणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ बादरा। थूलसरीराणं जीवाणं बादरत्तं किण्ण वुच्चदे ? ण, बादरेइंदियओगाहणादो

यहां पर पृथिवी है काय अर्थात् शरीर जिनके उन्हें पृथिवीकाय जीव कहते हैं, ऐसा नहीं कहना चाहिये, क्योंकि, पृथिवीकायका ऐसा अर्थ करने पर विग्रहगतिमें विद्यमान जीवोंके अकायित्वका अर्थात् पृथिवीकायित्वके अभावका प्रसंग आ जाता है।

शंका—तो फिर पृथिवीकायिकका अर्थ कैसा कहना चाहिये ?

समाधान—पृथिवीकाय नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंको पृथिवीकायिक कहते हैं, इसप्रकार पृथिवीकायिक शब्दका अर्थ करना चाहिये।

शंका—पृथिवीकायिक नामकर्म कहीं भी अर्थात् कर्मके भेदोंमें नहीं कहा गया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पृथिवीकाय नामका कर्म एकेन्द्रिय नामक नामकर्मके भीतर अन्तर्भूत है।

शंका—यदि ऐसा है तो सूत्रसिद्ध कर्मोंकी संख्याका नियम नहीं रह सकता है ?

समाधान—ऐसा प्रश्न करने पर आचार्य कहते हैं कि सूत्रमें कर्म आठ ही अथवा एकसौ अड़तालीस ही नहीं कहे हैं, क्योंकि, आठ या एकसौ अड़तालीस संख्याको छोड़कर दूसरी संख्याओंका प्रतिषेध करनेवाला 'एव' ऐसा पद सूत्रमें नहीं पाया जाता है।

शंका—तो फिर कर्म कितने हैं ?

समाधान—लोकमें घोड़ा, हाथी, वृक (भेड़िया) भ्रमर, शलभ, मत्कुण, उद्देहिका (दीमक), गोमी और इन्द्र आदि रूपसे जितने कर्मोंके फल पाये जाते हैं, कर्म भी उतने ही होते हैं।

इसीप्रकार शेष कायिक जीवोंके विषयमें भी कथन करना चाहिये। उनमें बादर नामकर्मके उदयसे युक्त पृथिवीकायिक आदि जीव बादर कहलाते हैं।

शंका—स्थूल शरीरवाले जीवोंको बादर क्यों नहीं कहा जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वेदनक्षेत्रविधानसे बादर एकेन्द्रियोंकी अवगाहनासे

पुढवीकाइया जाव असंखिज्जा वाउकाइया। अनु. सू. १४१, पत्र १७९.

सुहुमेइंदियओगाहणाए वेदणखेत्तविहाणादो बहुत्तोवलंभा । तदो पडिहम्ममाणसरीरो बादरो । अण्णेहि पोग्गलेहि अपडिहम्ममाणसरीरो जीवो सुहुमो त्ति घेत्तव्वं । एकमेकं प्रति प्रत्येकम्, प्रत्येकं शरीरं येषां ते प्रत्येकशरीराः । एत्थ पत्तेयसरीरणिद्देसो साहारणसरीरवणप्फइकाइयपडिसेहफलो । पुढविकाइयादओ जीवा पत्तेयसरीरा चेव । तेसिं पत्तेयववएसो सुत्ते किण्ण कदो ? तत्थ पत्तेयसरीरस्स संभवो चेव असंभवो णत्थि त्ति ण तेण ते विसेसिज्जंते 'सति संभवे व्यभिचारे च विशेषणमर्थवद्भवति' इति न्यायात् । सुहुमणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ जीवा सुहुमा हवंति । थोवसरीरोगाहणाए वट्टमाणा जीवा सुहुमा त्ति ण घेप्पंति, सुहुमेइंदियओगाहणादो बादरेइंदियओगाहणाए वेदणाखेत्तविहाणसुत्तादो थोवत्तुवलंभा । अपज्जत्तणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ अपज्जत्ता त्ति घेत्तव्वा णाणिप्पण्णसरीरा, पज्जत्तणामकम्मोदयअणिप्पण्णसरीराणं पि गहणप्पसंगादो । तहा पज्जत्तणामकम्मोदयवंतो जीवा पज्जत्ता । अण्णहा णिप्पण्णसरीरजीवाणमेव गहणप्प-

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी अवगाहना बड़ी पाई जाती है, इसलिये स्थूल शरीरवाले जीवोंको बादर नहीं कह सकते हैं। अतः जिनका शरीर प्रतिघातयुक्त है वे बादर हैं और अन्य पुद्गलोंसे प्रतिघातरहित जिनका शरीर है वे सूक्ष्म जीव हैं, यह अर्थ यहां पर बादर और सूक्ष्म शब्दसे लेना चाहिये।

एक एक जीवके प्रति जो शरीर होता है उसे प्रत्येक कहते हैं। जिन जीवोंका प्रत्येकशरीर होता है वे प्रत्येकशरीर जीव हैं । यहां सूत्रमें 'प्रत्येकशरीर' पदका निर्देश साधारणशरीर वनस्पतिकायिकके प्रतिषेधके लिये किया है । पृथिवीकायिक आदि जीव प्रत्येकशरीर ही होते हैं।

शंका— सूत्रमें पृथिवीकायिक आदि जीवोंको प्रत्येक संज्ञा क्यों नहीं दी गई है ?

समाधान—उन पृथिवीकायिक आदि जीवोंमें प्रत्येक शरीरका संभव ही है असंभव नहीं है, इसलिये प्रत्येक पदसे उन्हें विशेषित नहीं किया गया है, क्योंकि, व्यभिचारके होने पर, अथवा उसकी संभावना होने पर, दिया गया विशेषण सार्थक होता है, ऐसा न्याय है।

सूक्ष्म नामकर्मके उदयसे युक्त पृथिवीकायिक आदि जीव सूक्ष्म होते हैं। यहां शरीरकी स्तोक अवगाहनामें विद्यमान जीव सूक्ष्म होते हैं, ऐसा अर्थ नहीं लिया गया है, क्योंकि वेदनाक्षेत्रविधानके सूत्रसे सूक्ष्म एकेन्द्रियोंकी अवगाहनाकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रियोंकी अवगाहना भी स्तोक पाई जाती है। अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त बादर पृथिवीकायिक आदि जीव अपर्याप्त हैं, ऐसा अर्थ यहां पर लेना चाहिये। किंतु जिनका शरीर अभी निष्पन्न नहीं हुआ अर्थात् जिनकी शरीर-पर्याप्ति पूर्ण नहीं हुई है वे अपर्याप्त हैं, ऐसा अर्थ यहां नहीं लेना चाहिये, क्योंकि, ऐसा अर्थ लेने पर पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए भी जिनका शरीर पूर्ण नहीं हुआ है अपर्याप्त पदसे उनके भी ग्रहणका प्रसंग आ जाता है। उसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीव पर्याप्त हैं, प्रकृतमें पर्याप्त पदसे ऐसा अर्थ लेना चाहिये, अन्यथा जिन जीवोंका शरीर निष्पन्न हो चुका है पर्याप्त पदसे उनका ही ग्रहण होगा।

संगा। बादर-सुहुमजीवेसु पंच-चउब्भेएसु तस्सेवेत्ति एगवयणणिद्देसो कधं घडदे? ण, तेसिं जादीए एगत्तसंभवादो।

एत्थ चोदगो भणदि। विग्गहगईए वट्टमाणवणप्फइकाइया किं पत्तेयसरीरा आहो साहारणसरीरा इदि? किं चातः? ण पत्तेयसरीरा, कम्मइयकायजोगे वट्टमाणवणप्फइ-काइया अणंता त्ति कट्टु वणप्फइकाइयपत्तेयसरीराणमणंतत्तप्पसंगा। ण च एवं सुत्ते, तेसिं असंखेज्जलोगमेत्तपमाणपदुप्पायणादो[1]। ण ते साहारणसरीरा वि, तत्थ—

> साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणं च।
> साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणिदं[2] ॥ ७४ ॥

इच्चादिगाहाहि वुत्तसाहारणलक्खणाणुवलंभादो। ण च पत्तेय-साहारणसरीरवदिरित्ता वणप्फइकाइया अत्थि, तहाविहोवएसाभावादो। तस्मात्प्रत्येकं शरीरं देहो येषां ते प्रत्येक-शरीरा इत्येतन्न घटत इति?

शंका— बादर जीव पांच प्रकारके और सूक्ष्म जीव चार प्रकारके होते हैं, अतः सूत्रमें 'तस्सेव' इसप्रकार एकवचन निर्देश कैसे बन सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उन पांच प्रकारके बादर और चार प्रकारके सूक्ष्म जीवोंके जातिकी अपेक्षा एकत्व संभव है, इसलिये एकवचन निर्देश करनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

शंका—यहां पर शंकाकार कहता है कि विग्रहगतिमें विद्यमान वनस्पतिकायिक जीव क्या प्रत्येकशरीर हैं या साधारणशरीर हैं? यदि इस प्रश्नका फल पूछा जाय तो यह है कि वे जीव इन दोनों विकल्पोंमेंसे प्रत्येकशरीर तो हो नहीं सकते, क्योंकि, कार्मणकाययोगमें रहने-वाले वनस्पतिकायिक जीव अनन्त होनेसे वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके अनन्तत्वका प्रसंग आ जाता है। परंतु सूत्रमें ऐसा है नहीं, क्योंकि, सूत्रमें वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका असंख्यात लोकमात्र प्रमाण कहा है। उसीप्रकार वे जीव साधारणशरीर भी नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, वहां पर—

साधारण जीवोंका साधारण ही तो आहार होता है और साधारण श्वासोच्छ्वासका ग्रहण होता है। इसप्रकार आगममें साधारण जीवोंका साधारण लक्षण कहा है ॥ ७४ ॥

इत्यादि गाथाओंके द्वारा कहा गया साधारण जीवोंका लक्षण नहीं पाया जाता है। और प्रत्येकशरीर तथा साधारणशरीर इन दोनोंसे व्यतिरिक्त वनस्पतिकायिक जीव पाये नहीं जाते हैं, क्योंकि, इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है। इसलिये 'जिनका देह प्रत्येक है वे प्रत्येकशरीर हैं' यह कथन घटित नहीं होता है?

१ प्रतिषु 'संखेज्ज' इति पाठः।

२ गो. जी. १९२.

एत्थ परिहारो वुच्चदे। जेण जीवेण एक्केण चेव एकसरीरट्ठिएण सुह-दुःखमणुभवेदव्वमिदि कम्ममुवज्जिदं सो जीवो पत्तेयसरीरो। जेण जीवेण एगसरीरट्ठियबहूहि जीवेहि सह कम्मफलमणुभवेयव्वमिदि कम्ममुवज्जिदं सो साहारणसरीरो। ण च अच्छिण्णाउअस्स तव्ववएसो, तत्र प्रत्यासत्तेरभावात्। विग्गहगईए पुण पच्चासत्ती अत्थि त्ति हवदि एसो ववएसो तम्हा ण पुव्वुत्तदोसस्स संभवो। अहवा पत्तेयसरीरणामकम्मोदयवंतो वणप्फइकाइया पत्तेयसरीरा। साहारणणामकम्मोदयवंतो साहारणसरीरा त्ति वत्तव्वं। सरीरगहिदपढमसमए दोण्हं सरीराणमेगदरस्स उदओ हवदीदि विग्गहगईए वट्टमाणजीवाणं पत्तेय-साहारणसरीरववएसो ण पावदि त्ति वुत्ते, ण एस दोसो, तत्थ वि पच्चासत्ती अत्थि त्ति उवयारेण तेसिं पत्तेय-साहारणसरीरववएससंभवादो। विग्गहगईए वट्टमाणाणंतजीवाणं साहारणकम्मोदयपरवसाणमण्णोण्णाणुगयत्तणेण एयत्तमुवगयएयसरीरम्मि वट्टमाणत्तादो वा

समाधान – यहां पर उपर्युक्त शंकाका परिहार करते हैं। जिस जीवने एक शरीरमें स्थित होकर अकेले ही सुख दुःखके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है वह जीव प्रत्येकशरीर है। तथा जिस जीवने एक शरीरमें स्थित बहुत जीवोंके साथ सुख-दुःखरूप कर्मफलके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है, वह जीव साधारणशरीर है। परंतु जिसकी आयु छिन्न नहीं हुई है, अर्थात् जो जीव अपनी पर्यायको छोड़कर प्रत्येक व साधारण पर्यायमें उत्पन्न नहीं हुआ है उस जीवके इसप्रकारका व्यपदेश नहीं हो सकता है, क्योंकि, वहां पर प्रत्यासत्ति नहीं पाई जाती है। विग्रहगतिमें तो प्रत्यासत्ति पाई जाती है, इसलिये वहां पर यह व्यपदेश होता है, अतएव यहां पूर्वोक्त दोष संभव नहीं है। अथवा, प्रत्येकशरीर नामकर्मके उदयसे युक्त वनस्पतिकायिक जीव प्रत्येकशरीर हैं और साधारण नामकर्मके उदयसे युक्त वनस्पतिकायिक जीव साधारणशरीर हैं, ऐसा कथन करना चाहिये।

शंका — शरीर ग्रहण होनेके प्रथम समयमें दोनों शरीरोंमेंसे किसी एकका उदय होता है, इसलिये विग्रहगतिमें रहनेवाले जीवोंके प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर, इन दोनोंमेंसे कोई भी संज्ञा नहीं प्राप्त होती है?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, विग्रहगतिमें भी प्रत्यासत्ति पाई जाती है, इसलिये उपचारसे उन जीवोंके प्रत्येकशरीर अथवा, साधारणशरीर संज्ञा संभव है। अथवा, साधारण नामकर्मके उदयके आधीन हुए और विग्रहगतिमें विद्यमान हुए अनन्त जीव परस्पर अनुगत होनेसे एकत्वको प्राप्त हुए एक शरीरमें रहते हैं, इसलिये वे प्रत्येकशरीर नहीं हैं।

विशेषार्थ — वर्तमान आयुके समाप्त होने पर वर्तमान शरीरको छोड़कर उत्तर शरीरके ग्रहण करनेके लिये जो गति होती है उसे विग्रहगति कहते हैं। यहां विग्रहका अर्थ शरीर है, इसलिये विग्रह अर्थात् शरीरके लिये जो गति होती है उसे विग्रहगति कहते हैं। इसके इषुगति, पाणिमुक्तागति, लांगलिकागति और गोमूत्रिकागति इसप्रकार चार भेद हैं।

ण ते पत्तेयसरीरा। एदे छव्वीसरासीओ दव्वपमाणेण असंखेज्जलोगमेत्ता हवंति। एत्थ विसेस-पदुप्पायणोवायाभावादो काल-खेत्तेहि परूवणा ण कदा।

संपहि सुत्ताविरुद्धेणाइरियपरंपरागदोवएसेण तेउकाइयरासिउप्पायणविहाणं वत्त-इस्सामो। तं जहा– एगं घणलोगं सलागभूदं ठविय अवरेगं घणलोगं विरलिय एक्केक्कस्स रूवस्स एक्केक्कं घणलोगं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरूवमवणेयव्वं। ताधे एक्का अण्णोण्णगुणगारसलागा[१] लद्धा हवदि। तस्सुप्पण्णरासिस्स पलिदोवमस्स

इनमेंसे प्रथम गतिको छोड़कर शेष तीन गतियां विग्रह अर्थात् मोड़ेरूप हैं। जब वनस्पति-कायिक जीव ऐसी मोड़ेवाली गतिसे न्यूतन शरीरको ग्रहण करता है तब उसके एक, दो या तीन समयतक साधारण या प्रत्येक नामकर्मका उदय नहीं होता है, क्योंकि, प्रत्येक या साधारण नामकर्मका उदय शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लगाकर होता है। इसी अभिप्रायको ध्यानमें रखकर शंकाकारने यह शंका की है कि जबतक वनस्पतिकायिक जीव विग्रहगतिमें रहता है तबतक उसके उक्त दोनों कर्मोंमेंसे किसी भी कर्मका उदय नहीं पाया जाता है, इसलिये उसकी साधारणशरीर और प्रत्येकशरीर इन दोनोंमें किसी भी भेदमें गणना नहीं हो सकती है। इस शंकाका समाधान दो प्रकारसे किया गया है। एक तो यह कि यद्यपि विग्रह अर्थात् मोड़ेवाली गतिमें उक्त दोनों कर्मोंमेंसे किसी कर्मका उदय नहीं पाया जाता है, यह ठीक है; फिर भी प्रत्यासत्तिसे ऐसे जीवको भी प्रत्येक या साधारण कह सकते हैं। अर्थात् ऐसा जीव एक दो या तीन समयके अनन्तर ही प्रत्येक या साधारण नामकर्मके उदयसे युक्त होनेवाला है, अतएव उपचारसे उसे प्रत्येक या साधारण कहनेमें कोई आपत्ति नहीं है। दूसरे विग्रहका अर्थ मोड़ा न लेकर शरीर ले लेने पर इषुगतिकी अपेक्षा विग्रहगतिमें अर्थात् न्यूतन शरीरके ग्रहण करनेके लिये होनेवाली गतिमें साधारण या प्रत्येक नामकर्मका उदय पाया ही जाता है, क्योंकि, इषुगतिसे उत्पन्न होनेवाला जीव आहारक ही होता है।

ये पूर्वोक्त छव्वीस जीवराशियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात लोकप्रमाण हैं। यहां पर विशेषरूपसे प्रतिपादन करनेका कोई उपाय नहीं पाया जाता है, इसलिये काल और क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा इन छव्वीस जीवराशियोंकी प्ररूपणा नहीं की।

अब सूत्राविरूद्ध आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशके अनुसार तेजस्कायिक जीव-राशिके प्रमाणके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है— एक घनलोकको शलाकारूपसे स्थापित करके और दूसरे घनलोकको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर और परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। तब एक अन्योन्य गुणकार शलाका प्राप्त होती है। परस्पर

१ का गुणकारशलाका ? विरलनराशिमात्रततसर्वदेयराशीनां। गुणितवाररूपा गो. जी. पृ. २८३. (पर्याप्ति अधिकार)

असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गसलागा हवंति । तस्सद्धच्छेदणयसलागा असंखेज्जा लोगा । रासी वि असंखेज्जलोगमेत्तो जादो । पुणो उट्ठिदमहारासिं विरलेऊण तत्थ एक्केक्कस्स रूवस्स उट्ठिदमहारासिपमाणं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो अवरेगं रूवमवणेयव्वं । ताधे अण्णोण्णगुणगारसलागा दोण्णि । वग्गसलागा अद्धच्छेदणयसलागा रासी च असंखेज्जा लोगा । एवमेदेण कमेण णेदव्वं जाव लोगमेत्तसलागरासी समत्तो त्ति । ताधे अण्णोण्ण-गुणगारसलागपमाणं लोगो । सेसतिगमसंखेज्जा लोगा । पुणो उट्ठिदमहारासिं विरलेऊण तं चेव सलागभूदं ठविय विरलिय-एक्केक्कस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिपमाणं दाऊण वग्गिद-संवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरूवमवणेयव्वं । ताधे अण्णोण्णगुणगारसलागा लोगो रूवाहिओ । सेसतिगमसंखेज्जा लोगा । पुणो उप्पण्णरासिं विरलिय रूवं पडि उप्पण्ण-रासिमेव दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो अण्णेगरूवमवणेयव्वं । तदो अण्णोण्ण-गुणगारसलागाओ[1] लोगो दुरूवाहिओ । सेसतिगमसंखेज्जा लोगा । एवमेदेण कमेण

वर्गितसंवर्गित करनेसे उत्पन्न हुई उस राशिकी वर्गशलाकाएं पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र होती हैं, उस उत्पन्न राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं असंख्यातलोकप्रमाण होती है और वह उत्पन्न राशि भी असंख्यात लोकप्रमाण होती है। पुनः इस उत्पन्न हुई महाराशिको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिको देय-रूपसे देकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे दूसरीवार एक कम करना चाहिये। तब अन्योन्य गुणकार शलाकाएं दो होती हैं और वर्गशलाकाएं अर्धच्छेदशलाकाएं, तथा उत्पन्नराशि असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं। इसीप्रकार लोकप्रमाण शलाकाराशि समाप्त होनेतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये। तब अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका प्रमाण लोक होगा और शेष तीन राशियां अर्थात् उस समय उत्पन्न हुई महाराशि और उसकी वर्गशलाकाएं तथा अर्धच्छेदशलाकाएं असंख्यात लोकप्रमाण होंगी। पुनः इसप्रकार उत्पन्न हुई महाराशिको विरलित करके और इसी राशिको शलाकारूपसे स्थापित करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिके प्रमाणको देयरूपसे देकर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। तब अन्योन्य गुणकार शलाकाएं एक अधिक लोकप्रमाण होती हैं। शेष तीनों राशियां अर्थात् उत्पन्न हुई महाराशि, वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेदशलाकाएं असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं। पुनः उत्पन्न हुई महाराशिको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिको देकर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे दूसरीवार एक घटा देना चाहिये। उस समय अन्योन्य गुणकार शलाकाएं दो अधिक लोकप्रमाण होती हैं। शेष तीनों राशियां असंख्यात लोकप्रमाण

१ प्रतिषु '– सलागादो ' इति पाठः।

दुरूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्तलोगसलागासु दुरूवाहियलोगम्हि पविट्ठासु चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा हवंति । एवं णेयव्वं जाव विदियवारट्ठविदसलागरासी समत्तो त्ति । ताधे वि चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा । पुणो उट्ठिदरासिं सलागभूदं ठविय अवरेगमुट्ठिदमहारासिपमाणं विरलेऊण उट्ठिदमहारासिपमाणमेव रूवं पडि दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगं रूवमवणेयव्वं। ताधे चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा। एवमेदेण कमेण णेदव्वं जाव तदियवारं ठवियसलागरासी समत्तो त्ति । ताधे चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा । पुणो उट्ठिदमहारासिं तिप्पडिरासिं काऊण तत्थेगं सलागभूदं ट्ठविय अण्णेगरासिं विरलेऊण तत्थ एक्केक्कस्स रूवस्स एगरासिपमाणं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरूवमवणेयव्वं । एवं पुणो पुणो करिय णेयव्वं जाव अदिक्कंतअण्णोण्णगुणगारसलागाहि ऊणचउत्थवारट्ठिद-अण्णोण्णगुणगारसलागरासी[1] समत्तो त्ति । ताधे तेउकाइयरासी उट्ठिदो हवदि[2] । तस्स

होती हैं। इसप्रकार इसी क्रमसे दो कम उत्कृष्ट संख्यातमात्र लोकप्रमाण अन्योन्य गुणकार शलाकाओंके दो अधिक लोकप्रमाण अन्योन्य गुणकार शलाकाओंमें प्रविष्ट होने पर चारों राशियां भी असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं। इसीप्रकार दूसरीवार स्थापित शलाकाराशि समाप्त होनेतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये। तब भी चारों भी राशियां असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं। पुनः अन्तमें उत्पन्न हुई महाराशिको शलाकारूपसे स्थापित करके और दूसरी इसी उत्पन्न हुई महाराशिके प्रमाणको विरलित करके और उत्पन्न हुई उसी महाराशिके प्रमाणको विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति देयरूपसे देकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। तब भी चारों राशियां असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं। इसीप्रकार तीसरीवार स्थापित शलाकाराशि समाप्त होनेतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये। तब भी चारों राशियां असंख्यात लोकप्रमाण हैं। पुनः अन्तमें इस उत्पन्न हुई महाराशिको तीन प्रतिराशिरूप करके उनमेंसे एक राशिको शलाकारूपसे स्थापित करके, दूसरी एक राशिको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति एक राशिके प्रमाणको देयरूपसे देकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। इसप्रकार पुनः पुनः करके तब तक ले जाना चाहिये जब तक कि अतिक्रान्त शलाकाओंसे अर्थात् पहली दूसरी और तीसरीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शलाकाओंसे न्यून चौथीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शलाकाराशि समाप्त होती है। तब तेजस्कायिक

१ एवं प्रथम-द्वितीय-तृतीयवारस्थापितशलाकाराशिन्यूनचतुर्थवारस्थापितशलाकाराशिपरिसमाप्तौ सत्यां तत्रोत्पन्नमहाराशिः तेजस्कायिकजीवराशेः प्रमाणं भवति । गो. जी., जी प्र, टी. २०४. पुनः तत्रोत्पन्नमहाराशिं प्राग्वत् त्रि-प्रतिकं कृत्वा अतीतगुणकारशलाकाराशित्रयहीनोऽयं चतुर्थवारस्थापितशलाकाराशिर्निष्ठाप्यते । गो. जी., जी प्र, टी. पृ. २८४. (पर्याप्ति अधिकार).

२ ति. प. पत्र १८२.　　गो. जी. पृ, २८२-२८४.

गुणगारसलागा चउत्थवारं हुविदसलागरासिपमाणं होदि ।

के वि आइरिया सलागरासिस्स अद्धे गदे तेउक्काइयरासी उप्पज्जदि त्ति भणंति। के वि तं णेच्छंति। कुदो? अद्धुट्ठरासिसमुदयस्स वग्गसमुट्ठिदत्ताभावादो। तेउक्काइय-अण्णोण्णगुणगारसलागा वग्गसमुट्ठिदा त्ति कधं जाणिज्जदे? परियम्मवयणादो। के वि आइरिया एवं भणंति। जहा— एसो रासी तेउक्काइयरासिस्स गुणगारसलागपमाणं ण भवदि। पुणो को होदि त्ति वुत्ते वुच्चदे— गुणेज्जमाणस्स लोगस्स गुणगारसरूवेण पवेसमाणलोगाणं जाओ सलागाओ ताओ तेउक्काइयअण्णोण्णगुणगारसलागा वुच्चंति। एदाओ वग्गसमुट्ठिदाओ ण पुव्विल्लाओ त्ति। तम्हा अद्धुट्ठगुणगारसलागोवएसो विरुज्झदे, एसो ण विरुज्झदे इदि। एवं पि ण घडदे। कुदो? लोगद्धछेयणएहिं तेउक्काइयरासिस्स अद्धच्छेदणए भागे हिदे जं लद्धं तं विरलिय एक्केक्कस्स रूवस्स घणलोगं दाऊणण्णोण्णब्भत्थे कदे तेउकाइय-रासी उप्पज्जदि। हेट्ठिल्लविरलिदरासी वि तेउकाइयअण्णोण्णगुणगारसलागपमाणं भवदि।

राशि उत्पन्न होती है। उस तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाएं चौथीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शलाकाराशिप्रमाण हैं।

कितने ही आचार्य चौथीवार स्थापित शलाकाराशिके आधे प्रमाणके व्यतीत होने पर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न होती है, ऐसा कहते हैं। परंतु कितने ही आचार्य इस कथनको नहीं मानते हैं, क्योंकि, साढ़े तीनवार राशिका समुदाय वर्गधारामें उत्पन्न नहीं है।

शंका— यह ठीक है कि हूठवार (साढ़े तीनवार) राशिका समुदाय वर्गोत्पन्न नहीं है, पर तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाएं वर्गधारामें उत्पन्न हैं, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— उक्त आचार्योंके मतमें यह बात परिकर्मके वचनसे जानी जाती है।

कितने ही आचार्य इसप्रकार कहते हैं कि यह पूर्वोक्त राशि (हूठवार राशि) तेजस्कायिक राशिकी गुणकार शलाकाराशिके प्रमाणरूप नहीं है। फिर कौनसी राशि तेजस्कायिक राशिकी गुणकार शलाकाराशिके प्रमाणरूप है, ऐसा पूछने पर वे कहते हैं कि गुण्यमान लोकके गुणकाररूपसे प्रवेशको प्राप्त होनेवाले लोकोंकी जितनी शलाकाएं हों उतनी तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाएं कही जाती हैं। ये अन्योन्य गुणकार शलाकाएं वर्गमें उत्पन्न हुई हैं पहलेकी अर्थात् साढ़े तीनवार राशिरूप नहीं, इसलिये हूठवार राशिप्रमाण गुणकार-शलाकाओंका उपदेश विरोधको प्राप्त होता है, यह उपदेश नहीं।

परंतु इसप्रकारका कथन भी घटित नहीं होता है, क्योंकि, लोकके अर्धच्छेदोंसे तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करने पर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती है और अधस्तन विरलित राशि भी तेजस्कायिक राशिकी

णवरि अण्णोण्णगुणगारसलागा तेउक्काइयरासिवग्गसलागाहिंतो असंखेज्जगुणत्तं पत्ताओ। कुदो? तेउक्काइयरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागापढमवग्गमूलादो असंखेज्जगुणत्तादो। ण च एदमिच्छिज्जदे। कुदो? तेउक्काइयरासिवग्गसलागादो तस्स असंखेज्जगुणहीणत्तादो। तं कथं णव्वदे? परियम्मवयणादो। तं जहा– तेउक्काइयरासिस्स अण्णोण्णगुणगारसलागा वग्गिज्ज-माणा वग्गिज्जमाणा असंखेज्जे लोगे वग्गे हेट्ठादो उवरिमसंखेज्जगुणं गंतूण तेउक्काइय-रासिस्स वग्गसलागं पावदि त्ति। एस विरलिदरासी ण वग्गसमुट्ठिदो वि। कुदो? लोग-द्धछेदणयच्छिण्णतेउक्काइयरासिस्स[1] अद्धच्छेदणयमेत्तत्तादो। विरलिद–दिण्णमाणरासीणं समाणत्तणेण तेउक्काइयरासिस्स घणाघणधारासमुप्पण्णत्तणेण च तेउक्काइयरासिस्स अद्ध-च्छेदणयसलागाओ ण वग्गसमुट्ठिदाओ त्ति? ण एदं, इट्ठत्तादो। ण च परियम्मेण सह-विरोहो, तस्स तदुद्देसपदुप्पायणे वावारादो। एत्थ पुण अद्धुट्ठवारमेत्ताओ चेव तेउक्का-

अन्योन्य गुणकार शलाकाओंके प्रमाणरूप होती है। पर इस मतमें इतना विशेष है कि अन्योन्य गुणकार शलाकाएं तेजस्कायिक राशिकी वर्गशलाकाओंसे असंख्यातगुणी हो जाती हैं, क्योंकि, इसप्रकार जो अन्योन्य गुणकार शलाकाएं उत्पन्न होती हैं वे तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके प्रथम वर्गमूलसे असंख्यातगुणी हो जाती हैं। लेकिन यह इष्ट नहीं है, क्योंकि, तेजस्कायिक राशिकी वर्गशलाकाओंसे अन्योन्य गुणकार शलाकाराशि असंख्यातगुणी हीन है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— परिकर्मके वचनसे जाना जाता है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाओंको उत्तरोत्तर वर्गित करते हुए असं-ख्यात लोकप्रमाण अर्थात् अधस्तन वर्गोंसे ऊपर असंख्यातगुणे जाकर तेजस्कायिकराशिकी वर्गशलाकाएं प्राप्त होती हैं।

दूसरे यह विरलित राशि, अर्थात् गुणकाररूपसे प्रवेशको प्राप्त होनेवाले लोकोंकी जितनी शलकाएं हों वह राशि, वर्गसमुत्पन्न भी नहीं है, क्योंकि, वह लोकके अर्धच्छेदोंसे छिन्न तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदप्रमाण है।

शंका— विरलितराशि और देयराशि समान होनेसे और तेजस्कायिकराशि घनाघन-धारामें उत्पन्न हुई होनेसे तेजस्कायिकराशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं भी तो वर्गसमुत्पन्न नहीं हैं।

समाधान— पर यह कोई बात नहीं है, क्योंकि, यह बात हमें इष्ट है। और इसतरह परिकर्मके साथ भी विरोध नहीं आता है, क्योंकि, परिकर्मका उसके उद्देशमात्रके प्रतिपादन कर-नेमें व्यापार होता है। यहां पर तो केवल तेजस्कायिकराशिकी साढ़े तीन राशिवार अन्योन्य

१ 'लोगद्धछेदणयच्छेण तेउ-' इति पाठः।

इयरासिअण्णोण्णगुणगारसलागाओ त्ति घेत्तव्वं, आइरियपरंपरागओवएसत्तादो। ण च वग्गसमुट्ठिदत्तं गुणगारसलागाणं णत्थि त्ति अद्धुट्ठुवएसो ण भद्दओ, अद्धुट्ठुवएसण्णहाणुववत्तीदो चेव तदवग्गसमुट्ठिदत्तस्स अवगमादो। ण परियम्मदो वग्गत्तसिद्धी, तस्स तेउक्काइयअद्धच्छेदणएहि अणेयंतियत्तादो।

अहवा तेउक्काइयरासिस्स अण्णोण्णगुणगारसलागाओ सलागभूदाओ ठुविऊण

गुणकार शलाकाएं होती हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। क्योंकि, आचार्य परंपरासे इसी-प्रकारका उपदेश आ रहा है। गुणकार शलाकाएं वर्गसमुत्पन्न नहीं हैं, इसलिये साढ़े तीनवारका उपदेश ठीक नहीं है, सो बात भी नहीं है, क्योंकि, साढ़े तीनवारका उपदेश अन्यथा बन नहीं सकता है, इसीसे गुणकार शलाकाएं वर्गसमुत्पन्न नहीं हैं, यह बात जानी जाती है। परिकर्मसे इनके वर्गत्वकी भी सिद्धि नहीं होती है, क्योंकि, इसका तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंके साथ अनेकान्त है।

विशेषार्थ—यहां पर तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकारशलाकाएं कितनी हैं, इस विषयमें आचार्य परंपरासे आये हुए मतके अतिरिक्त दो और मतोंका उल्लेख किया गया है। घनलोकको लेकर विरलन, देय और शलाकाक्रमसे तीसरीवार शलाकाराशिके समाप्त होने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसमेंसे पहली, दूसरी और तीसरी शलाकाराशिके घटा देने पर शेष राशिको शलाका मान कर साढ़े तीन राशिवार अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका प्रमाण आ जाता है। यह मत आचार्य-परंपरासे आया हुआ होनेसे प्रमाण है। दूसरा मत यह है कि तीसरीवार शलाकाराशिके समाप्त होने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसके आधे प्रमाणको शलाकारूपसे स्थापित करना चाहिये तब जाकर साढ़े तीन राशिवार अन्योन्य गुणकार शला-काओंका प्रमाण होता है। पर कितने ही आचार्य इस मतका विरोध करते हैं। उनके मतसे यह साढ़े तीन राशिवार अन्योन्य गुणकार शलाकाराशिका उपदेश वर्गसमुत्पन्न नहीं है, इसलिये प्रमाणभूत नहीं है। तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शला-काएं वर्गोत्पन्न हैं इस मतकी पुष्टि वे आचार्य परिकर्मके आधारसे करते हैं। कितने ही आचार्य ऐसा कथन करते हैं कि जितने लोकप्रमाणराशिके प्रत्येक एक पर लोकको स्थापित करके परस्पर गुणित करनेसे तेजस्कायिकराशि उत्पन्न होती है उतने लोकप्रमाणराशि तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाएं होती हैं। इन्हें वे वर्गसमुत्पन्न भी मानते हैं। पर वीरसेनस्वामीने दूसरे मतके समान इस मतको भी प्रमाणभूत नहीं माना है, क्योंकि, इसप्रकार अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका जो प्रमाण प्राप्त होता है वह तेजस्कायिकराशिकी वर्गशलाकाराशिसे असंख्यातगुणा हो जाता है। पर क्रमानुसार अन्योन्य गुणकार शलाकाराशिसे वर्गशलाकाराशि असंख्यातगुणी होनी चाहिये।

अथवा, तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाओंको शलाकारूपसे स्थापित

तदुप्पत्तिणिमित्तरासीणं वग्गिदसंवग्गिदे काऊण तेउक्काइयरासी उप्पाएदव्वा। तेउक्का-इयरासिं भागहारं काऊण तस्सुवरिमवग्गं विहज्जमाणरासिं करिय खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि जाणिऊण वत्तव्वाणि। तस्स पमाणमुवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिभागो। कारणं, तेउक्काइयरासिणा उवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी चेव आगच्छदि त्ति। एत्थ संदेहा-भावा णिरुत्ती ण वत्तव्वा।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि। एत्थ हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, तेउक्काइयरासिस्स विहज्जमाणरासिपढमवग्गमूलमेत्तत्तादो। उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि। तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो। तेउक्काइयरासिणा उवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणये कदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि। अहवा तेउक्काइयरासिणा तस्सु-वरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि। तस्सद्धच्छेदण-यमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणये कदे वि तेउक्काइयरासी आगच्छदि। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। तेउक्काइयरासिणा तेउक्काइयउवरिमवग्गसमाणअट्ठरूववग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण-

करके और उसकी उत्पत्तिकी निमित्तभूत राशियोंको वर्गितसंवर्गित करके तेजस्कायिकराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये। तेजस्कायिकराशिको भागहार करके और उसके उपरिम वर्गको भज्यमानराशि करके खंडित, भाजित, विरलित और अपहृतका जानकर कथन करना चाहिये। उसका प्रमाण तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गका असंख्यातवां भाग है। इसका कारण यह है कि तेजस्कायिकराशिसे उसके उपरिम वर्गके भाजित करने पर तेजस्कायिक जीवराशि ही आती है। यहां पर संदेह नहीं होनेसे निरुक्तिके कथनकी आवश्यकता नहीं है।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प। परंतु यहां पर अधस्तन विकल्प नहीं पाया जाता है, क्योंकि, तेजस्कायिकराशि भज्यमान राशिके प्रथम वर्गमूलप्रमाण है।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार। उनमेंसे गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— तेजस्कायिक राशिसे उसके उपरिम वर्गके भाजित करने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है। उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशि आती है। अथवा, तेजस्कायिक राशिके प्रमाणसे उसके उपरिम वर्गको गुणित करके लब्ध राशिका उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है। उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है।

अब अष्टरूपमें उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— तेजस्कायिक राशिसे तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके समान घनके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको छोड़कर उसके उपरिम वर्गमें भाग देने

तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि तेउक्काइयरासी आगच्छदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । तेउक्काइयरासिणा तेउक्काइयरासिउवरिमवग्गसमाणअट्ठरूववग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण तदुवरिमवग्गसमाणवेरूववग्गं[1] गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि तेउक्काइयरासी अवचिट्ठदे । विहज्जमाणवग्गाणं असंखेज्जदिभाएण गहिद-गहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । एवं तेउक्काइयपरूवणा समत्ता ।

तेउक्काइयरासिमसंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पुढविकाइयरासी होदि । तम्हि असंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते आउकाइयरासी होदि । तम्हि असंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वाउकाइयरासी होदि । एदेसिं तिण्णं रासीणं अवहारकालस्सुप्पायण-

पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है। उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है।

अब घनाघनमें उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— तेजस्कायिक राशिसे तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके समान घनके उपरिम वर्गको गुणित करके पुन तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको छोड़कर उसके उपरिम वर्गके समान द्विरूपके वर्गको गुणित करके तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको छोड़कर उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है। उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है। विभज्यमान वर्गोंके असंख्यातवें भागरूप तेजस्कायिक राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये। इसप्रकार तेजस्कायिक जीवराशिकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

तेजस्कायिक राशिको असंख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी तेजस्कायिक राशिके प्रमाणमें प्रक्षिप्त करने पर पृथिवीकायिक राशिका प्रमाण होता है। इस पृथिवीकायिक राशिको असंख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी पृथिवीकायिक राशिमें मिला देने पर अप्कायिक राशिका प्रमाण होता है। इस अप्कायिक राशिको असंख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अप्कायिक राशिमें मिला देने पर वायुकायिक राशिका प्रमाण होता है।

अब इन तीनों राशियोंके अवहारकालके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते

१ प्रतिपु ' वेरूवे ' इति पाठः ।

विहाणं उच्चदे। तं जहा– तेउक्काइयरासिं पुढविकाइयरासिम्हि सोहिय सेसेण तेउक्काइयरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगरासी आगच्छदि। तेण रूवाहिएण तेउक्काइयरासिमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे पुढविकाइयअवहारकालो होदि। पुणो पुढविकाइयरासिं आउकाइयरासिम्हि सोहिय सेसेण पुढविकाइयरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी आगच्छदि। तेण रूवाहिएण पुढविकाइयअवहारकालमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे आउक्काइयअवहारकालो होदि। पुणो आउक्काइयरासिं वाउकाइयरासिम्हि सोहिय तत्थावसिट्ठरासिणा आउकाइयरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी लब्भदि। तेण रूवाहिएण आउकाइयअवहारकाले भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे वाउकाइयअवहारकालो होदि। एत्थुवउज्जंती गाहा–

रासिविसेसेणवहिदरासिम्हि य जं हियें[1] समुवलद्धं।
रूवूणहिएणवहिदहारो ऊणाहिओ तेण ॥ ७५ ॥

हैं। वह इसप्रकार है— तेजस्कायिक राशिको पृथिवीकायिक राशिमेंसे घटा कर जो शेष रहे उससे तेजस्कायिक राशिके भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि आती है। एक अधिक उस असंख्यात लोकप्रमाणराशिसे तेजस्कायिक राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी तेजस्कायिक राशिमेंसे घटा देने पर पृथिवीकायिक राशिसंबन्धी अवहारकाल होता है। पुनः पृथिवीकायिक राशिको जलकायिक राशिमेंसे घटा कर जो शेष रहे उससे पृथिवीकायिक राशिके भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाणराशि आती है। एक अधिक उस असंख्यात लोकप्रमाण राशिसे पृथिवीकायिक राशिके अवहारकालको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी पृथिवीकायिक राशिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर जलकायिक राशिसंबन्धी अवहारकाल होता है। पुनः अप्कायिक राशिको वायुकायिक राशिमेंसे घटा कर वहां जो राशि अवशिष्ट रहे उससे अप्कायिक राशिके भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आती है। एक अधिक उस असंख्यात लोकप्रमाण राशिसे अप्कायिक राशिके अवहारकालके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अप्कायिक राशिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर वायुकायिक राशिसंबन्धी अवहारकाल होता है। यहां पर उपयुक्त गाथा दी जाती है—

राशिविशेषसे राशिके भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे उसमेंसे यदि एक कम करके शेष राशिसे भागहार भाजित किया जाय तो उस लब्धको उसी भागहारमें मिला देवे और यदि लब्ध राशिमें एक अधिक करके उससे भागहार भाजित किया जाय तो भागहारके भाजित करने पर जो लब्ध राशि आवे उसे भागहारमेंसे घटा देना चाहिये ॥ ७५ ॥

१ प्रतिषु ' ज हिवे ' इति पाठ. ।

एसा किरिया इंदिय-कसाय जोगमग्गणासु विसेसाहियरासीणं विसेसहीणरासीणं च णिरवयवा कायव्वा। एदे पुव्वुत्ते चत्तारि अवहारकाले विरलिय तेउकाइयरासिस्सुवरिमवग्गं चउण्हं विरलणाणं पुध पुध समखंडं करिय दिण्णे अप्पप्पणो रासिपमाणं पावदि। पुणो सगसगबादरजीवेहिं सगसगविरलणाए एगरूवोवरि ट्ठिदसगसगरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी आगच्छदि। तेण रूवूणेण सगसगअवहारकालेसु ओवट्टिदेसु लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते सगसगसुहुमाणं अवहारकाला भवंति। पुणो एदे चत्तारि वि सुहुमजीवअवहारकाले[1] पुध पुध विरलिय तेउक्काइयरासिस्सुवरिमवग्गं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सगसगसुहुमपमाणं पावेदि। पुणो सगसगविरलणाए एगरूवोवरि ट्ठिदसुहुमरासिं सगसगसुहुमअपज्जत्तएहिं भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवेहि रूवूणेहि सगसगसुहुमअवहारकाले ओवट्टिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते सगसगसुहुमपज्जत्ताणमवहारकाला भवंति। पुव्वं भागलद्धसंखेज्जरूवेहिं सगसगसुहुमजीवअवहारकालेसु गुणिदेसु सगसगसुहुमअपज्जत्तअवहारकाला भवति। चउण्हं बादराणं पुव्वुप्पादिदेहिं असंखेज्जलोगमेत्त-

इन्द्रिय, कषाय और योग इन तीन मार्गणाओंमें विशेष अधिक राशियोंके और विशेष हीन राशियोंके संबन्धमें संपूर्ण रूपसे यह क्रिया करना चाहिये। पूर्वोक्त इन चारों अवहारकालोंको विरलित करके और तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको चारों विरलनोंके ऊपर पृथक् पृथक् समान खंड करके दे देने पर अपनी अपनी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अपनी अपनी बादरकायिक जीवराशिके प्रमाणका अपने अपने विरलनके एक अंकके ऊपर स्थित अपनी अपनी राशिके प्रमाणमें भाग देने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि प्राप्त होती है। एक कम उस असंख्यात लोकप्रमाण राशिसे अपने अपने अवहारकालोंके भाजित करने पर जो जो लब्ध आवे उसे उसी अपने अपने अवहारकालमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके प्रमाण लानेके लिये अवहारकाल होते हैं। पुनः सूक्ष्म जीवसंबन्धी इन चारों भी अवहारकालोंको पृथक् पृथक् विरलित करके और उन विरलनोंके प्रत्येक एकके ऊपर तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको समान खंड करके दे देने पर विरलनोंके प्रत्येक एकके प्रति अपने अपने सूक्ष्म जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अपने अपने विरलनके एक विरलन-अंकके ऊपर स्थित सूक्ष्म जीवराशिके प्रमाणको अपनी अपनी सूक्ष्म अपर्याप्त जीवराशिके प्रमाणसे भाजित करने पर वहां जो संख्यात लब्ध आवें उनमेंसे एक कम करके शेष राशिसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकालको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उन्हीं अवहारकालोंमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म पर्याप्त जीवोंके अवहारकाल होते हैं। पहले भाग देने पर जो संख्यात लब्ध आये थे उनसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकालोंके गुणित करने पर अपने अपने सूक्ष्म अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाल होते हैं। चारों बादरोंके

१ प्रतिषु '-कालेसु' इति पाठः।

गुणगारेहिं सगसगसामण्णअवहारकालेसु गुणिदेसु सगसगबादराणमवहारकाला भवंति ।

पुणो सुत्ताविरुद्धेण आइरिओवएसेण सुत्तं व पमाणभूदेण बादराणमद्धच्छेदणए वत्तइस्सामो । तं जहा– एगसागरोवमादो एगं पलिदोवमं घेत्तूण तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिय तत्थेगखंडं पुध ट्ठविय सेसबहुभागे तम्हि चेव पक्खित्ते बादरतेउक्काइय-अद्धच्छेदणयसलागा हवंति । जं पुध ट्ठविदेयखंडं तं पुणो वि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय तत्थेगखंडमवणिय बहुखंडे पुव्वरासिं दुप्पडिरासिं काऊण पक्खित्ते बादरवणप्फइ-पत्तेयसरीराणं अद्धच्छेदणयसलागा हवंति । एवं बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरपुढवि-बादर-आऊणं च वत्तव्वं । अंते अवणिदएगखंडं बादरआउक्काइयअद्धच्छेदणयसलागासु पक्खित्ते बादरवाउक्काइयअद्धच्छेदणयसलागा सायरोवममेत्ता जादा[1] । बादरतेउक्काइयअद्धच्छेदणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे बादरतेउक्काइयरासी उप्पज्जदि । अहवा घणलोयछेयणएहिं बादरतेउक्काइयअद्धच्छेदणएसु ओवट्टिदेसु लद्धं विरलेऊण रूवं पडि

जो पहले असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार उत्पन्न किये थे उनसे अपने अपने सामान्य अवहारकालोंके गुणित करने पर अपने अपने बादर जीवोंके अवहारकाल होते हैं ।

अब आगे सूत्रके समान प्रमाणभूत सूत्राविरुद्ध आचार्योंके उपदेशके अनुसार बादर जीवोंके अर्धच्छेद बतलाते हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— एक सागरोपममेंसे एक पल्योपमको ग्रहण करके और उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके वहां जो एक भाग लब्ध आवे उसे पृथक् स्थापित करके शेष बहुभागको उसी राशिमें अर्थात् पल्यकम सागरमें मिला देने पर बादर तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेद शलाकाएं होती हैं । जो एक भाग पृथक् स्थापित किया था उसे फिर भी आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके वहां जो एक भाग लब्ध आया उसे घटा कर अवशेष बहुभागको पूर्वराशि अर्थात् बादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंकी दो प्रतिराशियां करके और उनमेंसे एकमें मिला देने पर बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं । इसीप्रकार बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक और बादर अप्कायिक जीवराशिके अर्धच्छेदोंका कथन करना चाहिये । अन्तमें अपनीत एक खंडको बादर अप्कायिक जीवोंकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें मिला देने पर सागरोपमप्रमाण बादर वायुकायिक जीवोंकी अर्धच्छेदशलाकाएं हो जाती हैं ।

बादर तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करने पर बादर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न होती है । अथवा, घनलोकके अर्धच्छेदोंसे बादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंके

१ आवलिअसंखभागेणवहिदपल्लूणसायरद्धछिदा । बादरतेपणिभूजलवादाणं चरिमसायरं पुण्णं ॥ गो. जी. २१३.

घणलोगं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थे कए बादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि । अहवा बादर-तेउअद्धच्छेदणए बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरद्धछेदणएहिंतो सोहिय अवसेसरासिं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिम्हि भागे हिदे बादरतेउकाइय-रासी उप्पज्जदि । अहवा बादरवणप्फइपत्तेयरासिस्स अहियद्धच्छेयणयमेत्ते[1] अद्धच्छे-यणए कए बादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि । अहवा घणलोगछेदणएहि अहियद्धछेदणएसु ओवट्टिदेसु तत्थ लद्धं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स घणलोगं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थे कए जो रासी तेण बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिम्हि भागे हिदे बादरतेउकाइयरासी होदि । एवं बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय बादरवाउकाइयाणं अप्पप्पणो अद्धच्छेदणएहिंतो बादरतेउकाइयरासी उप्पादेदव्वा । एवं बादरतेउकाइयरासिस्स सत्तारसविहा परूवणा कदा ।

भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देकर परस्पर गुणित करने पर बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती है । अथवा, बादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंको बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंके अर्धच्छेदोंमेंसे घटाकर जो राशि शेष रहे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंकी राशिके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती है । अथवा, बादर वनस्पति प्रत्येकराशिके जितने अधिक अर्धच्छेद हों उतनीवार बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके अर्धच्छेद करने पर भी बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती है । अथवा, घनलोकके अर्धच्छेदोंसे अधिक अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर वहां जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणित करने पर जो राशि आवे उससे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशिके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक राशि आती है । इसीप्रकार बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वायुकायिक जीवोंके अपने अपने अर्धच्छेदोंसे बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न कर लेना चाहिये । इसप्रकार बादर तेजस्कायिक राशिकी सत्रह प्रकारकी प्ररूपणा की ।

विशेषार्थ—ऊपर पांच प्रकारसे तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न करके बतला आये हैं । प्रथमवार तेजस्कायिक जीवराशिके अर्धच्छेदोंका और दूसरीवार घनलोकके अर्धच्छेदोंका आश्रय लेकर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न की गई है । अन्तिम तीन प्रकारसे तेजस्कायिक जीवराशिके उत्पन्न करनेमें बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशिके अर्धच्छेदोंकी मुख्यता

१ प्रतिषु ' अद्धच्छेयणयमेचे ' इति पाठः ।

बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीररासिस्स अद्धच्छेदणए विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे बादरवणप्फदिपत्तेयसरीररासी उप्पज्जदि। अहवा घणलोगछेदणएहिं बादरवणप्फइपत्तेगसरीरअद्धछेयणएसु ओवट्टिदेसु लद्धं विरलेऊण रूवं पडि घणलोगं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थे कए बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासी उप्पज्जदि। बादरतेउकाइयरासीदो बादरवणप्फदिपत्तेगसरीररासिमुप्पाइज्जमाणे अहियद्धच्छेयणमेत्तें[1] बादरतेउकाइयरासिस्स दुउणगुणगारे कए बादरवणप्फइपत्तेगसरीररासी उप्पज्जदि। अहवा अब्भहिय-

है। बादर तेजस्कायिक राशिसे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशि बड़ी है, अतएव तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंसे इस राशिके जितने अधिक अर्धच्छेद हों, उतनीवार दो रखकर परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके भाजित कर देने पर, अथवा जितने अर्धच्छेद अधिक हैं उतनीवार बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके अर्धित करले पर, बादर तेजस्कायिक जीव राशि उत्पन्न होती है। बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके अर्धच्छेदोंका आश्रय करके बादर तेजस्कायिक राशिके उत्पन्न करनेके दो प्रकार तो ये हुए। तीसरे प्रकारमें घनलोकके अर्धच्छेदोंका आश्रय और ले लिया जाता है। अर्थात् घनलोकके अर्धच्छेदोंसे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीव राशिके बादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंसे अधिक अर्धच्छेदोंके भाजित कर देने पर जो लब्ध आवे उतनीवार घनलोकके परस्पर गुणित करने पर आई हुई राशिका बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशिमें भाग देने पर बादर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न होती है। इन्हीं तीनों प्रकारोंसे बादर निगोद प्रतिष्ठित जीवराशि, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वायुकायिक राशिके अर्धच्छेदोंका आश्रय लेकर तेजस्कायिक राशिके उत्पन्न करने पर बारह प्रकारसे तेजस्कायिक राशिका प्रमाण उत्पन्न होता है। इन बारह भेदोंमें पूर्वोक्त पांच भेदोंके मिला देने पर तेजस्कायिक राशिकी प्ररूपणा सत्रह प्रकारसे हो जाती है।

बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशिके अर्धच्छेदोंको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है। अथवा, घनलोकके अर्धच्छेदोंसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिके अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है। बादर तेजस्कायिक राशिसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिके उत्पन्न करने पर अधिक अर्धच्छेदप्रमाण बादर तेजस्कायिक राशिके दुगुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है। अथवा, अधिक अर्धच्छेदोंको विरलित करके और

१ प्रतिषु ' अद्धच्छेयणयमेचे ' इति पाठः।

च्छेयणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थकदरासिणा बादरतेउकाइयरासिं गुणिदे बादरवणप्फदिपत्तेगसरीररासी होइ । अहवा अहियच्छेयणए घणलोगछेयणएहि ओवट्टिय लद्धं विरलेऊण रूवं पडि घणलोगं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थकदरासिणा बादरतेउकाइयरासिं गुणिदे बादरवणप्फइपत्तेगसरीररासी होदि । बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरपुढविकाइय-बादर-आउकाइय-बादरवाउकाइएहिंतो बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिमुप्पाइज्जमाणे जहा तेउका-इयरासी उप्पाइदो तहा उप्पादेदव्वा । बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरपुढविकाइय-बादरआउ-काइय-बादरवाउकाइयाणं च एवं चेव सत्तारसविहा परूवणा परूवेदव्वा । पत्तेग-साधारणसरीरवदिरित्तो बादरणिगोदपदिट्ठिदरासी ण जाणिज्जदि त्ति वुत्ते सच्चं, तेहिं वदिरित्तो वणप्फइकाइएसु जीवरासी णत्थि चेव, किं तु पत्तेयसरीरा दुविहा भवंति बादरणिगोदजीवाणं

उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो, उससे बादर तेजस्कायिक राशिके गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि होती है। अथवा, अधिक अर्धच्छेदोंको घनलोकके अर्धच्छेदोंसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बादर तेजस्कायिक जीव-राशिके गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि होती है। बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वायुकायिक जीवराशिके प्रमाणसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिके उत्पन्न करने पर जिसप्रकार इन राशियोंसे तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न की गई उसीप्रकार उत्पन्न करना चाहिये । बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वायुकायिक जीवराशिका इसीप्रकार सत्रह सत्रह प्रकारकी प्ररूपणासे प्ररूपण करना चाहिये।

विशेषार्थ — जहां बड़ी राशिका आश्रय लेकर छोटी राशि उत्पन्न की जावे वहां पर छोटी राशिके अर्धच्छेदोंसे बड़ी राशिके अर्धच्छेद जितने अधिक होवें उतनीवार बड़ी राशिके आधे आधे करने पर, अथवा, उतने अर्धच्छेदप्रमाण दोके परस्पर गुणित करनेसे जो लब्ध आवे उसका बड़ी राशिमें भाग देने पर छोटी राशि आती है। तथा जहां छोटी राशिका आश्रय लेकर बड़ी राशि उत्पन्न की जावे वहां अधिक अर्धच्छेदप्रमाण छोटी राशिके द्विगुणित करने पर, अथवा, उतने अर्धच्छेदप्रमाण दोके परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे छोटी राशिके गुणित कर देने पर बड़ी राशि आ जाती है। शेष कथन स्पष्ट ही है। इसप्रकार तेजस्कायिक राशिकी सत्रह प्रकारकी प्ररूपणाके समान प्ररूपणा करनेसे उपर्युक्त प्रत्येक राशिकी प्ररूपणा सत्रह सत्रह प्रकारकी हो जाती है।

शंका — प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर, इन दोनों जीवराशियोंको छोड़कर बादर-निगोद प्रतिष्ठित जीवराशि क्या है, यह नहीं मालूम पड़ता है ?

समाधान — यह सत्य है कि उक्त दोनों राशियोंके अतिरिक्त वनस्पतिकायिकोंमें और कोई जीवराशि नहीं है, किन्तु प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके हैं, एक

जोणीभूदसरीरा तव्विवरीदसरीरा चेदि । तत्थ जे बादरणिगोदाणं जोणीभूदसरीरपत्तेग-सरीरजीवा ते बादरणिगोदपदिट्ठिदा भणंति । के ते ? मूलयद्दु-भल्लय-सूरण-गलोइ-लोगेसरप-भादओ । उत्तं च—

> बीजे जोणीभूदे जीवो वक्कमइ सो व अण्णो वा ।
> जे वि य मूलादीया ते पत्तेया पढमदाए[2] ॥ ७६ ॥

सुत्ते बादरवणप्फदिपत्तेयसरीराणमेव गहणं कदं, (ण तब्भेदाणं)? ण[3], बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरजीवेसु चेव तेसिमंतब्भावादो । एदेसिं बादरपज्जत्ताणं परू-वमाणाण परूवणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीर-पज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ८८ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुच्चदे । असंखेज्जा इदि सामण्णवयणेण

तो बादरनिगोद जीवोंके योनिभूत प्रत्येकशरीर और दूसरे उनसे विपरीत शरीरवाले अर्थात् बादरनिगोद जीवोंके अयोनिभूत प्रत्येकशरीर जीव । उनमेंसे जो बादरनिगोद जीवोंके योनिभूतशरीर प्रत्येकशरीर जीव हैं उन्हें बादरनिगोद प्रतिष्ठित कहते हैं ।

शंका—वे बादरनिगोद जीवोंके योनिभूत प्रत्येकशरीर जीव कौन हैं ?

समाधान—मूली, अदरक (?) भल्लक (भद्रक), सूरण, गलोइ (गुडुची या गुरवेल) लोकेश्वरप्रभा ? आदि बादरनिगोद प्रतिष्ठित हैं । कहा भी है—

योनिभूत बीजमें वही जीव उत्पन्न होता है, अथवा दूसरा कोई जीव उत्पन्न होता है । वह और जितने भी मूली आदिक सप्रतिष्ठितप्रत्येक हैं वे प्रथम अवस्थामें प्रत्येक ही हैं ॥७६॥

शंका—सूत्रमें बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका ही ग्रहण किया है, उनके भेदोंका क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंमें ही उनका अन्तर्भाव हो जाता है ।

अब इन बादर पर्याप्तोंकी प्ररूपणाके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८८ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं । सूत्रमें 'असंख्यात हैं' ऐसा

१ आ. प्रतौ ' सलोई ' इति पाठ ।

२ गो. जी. १८७. बीए जोणिब्भूए जीवो वक्कमइ सो व अन्नो वा । जोऽवि य मूले जीवो सोऽवि य पत्ते पढमयाए ॥ प्रज्ञापना १, ४५, गा. ५१, पृ. ११९.

३ प्रतिषु ' गहण कध ण ' इति पाठ. । ४ प्रतिषु ' बादरआउकाइय ' इति पाठः नास्ति ।

णवण्हमसंखेज्जाणं गहणं पत्ते अणिच्छिदासंखेज्जपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ८९ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो चेव । एदेण अवगद-असंखेज्जासंखेज्जस्स विसेसेण तल्लद्धिणिमित्तमुत्तरसुत्तमाह—

खेत्तेण बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणप्फइकाइय-पत्तेयसरीरपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्ग-पडिभागेण[1] ॥ ९० ॥

एत्थ अंगुलमिदि उत्ते पमाणांगुलं घेत्तव्वं । तस्स असंखेज्जदिभागस्स जो वग्गो तेण पडिभागेण भागहारेण । एत्थ णिमित्ते तइया दट्ठव्वा । एदेण अवहारकालेण बादर-पुढविपज्जत्तादीहि जगपदरमवहिरदि त्ति जं वुत्तं होदि ।

सामान्य वचन देनेसे नौ प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिच्छित असंख्यातोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त बादर अप्कायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८९ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है । यद्यपि इस सूत्रसे असंख्यातासंख्यात अवगत हो गया, फिर भी उसकी विशेषरूपसे प्राप्ति करानेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर अप्कायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ९० ॥

यहां सूत्रमें अंगुल ऐसा कहने पर प्रमाणांगुलका ग्रहण करना चाहिये। उस प्रमाणांगुलके असंख्यातवें भागका जो वर्ग तद्रूप प्रतिभागसे अर्थात् भागहारसे। यहां निमित्तमें तृतीया विभक्ति जानना चाहिये। इस अवहारकालसे बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त आदि जीवोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है।

विशेषार्थ—उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुलके भेदसे अंगुल तीन प्रकारका है। आठ यवका एक उत्सेधांगुल होता है। पांचसौ उत्सेधांगुलोंका एक प्रमाणांगुल होता है।

१ पल्लासंखेज्जवहिदपदरंगुलमाजिदे जगप्पदरे । जलभूणिपबादरया पुण्णा आवलिअसंखभजिदकमा ॥ गो. जी. २०९.

एत्थ सुत्तसूचिदमाइरिओवएसेण भागहाराणं विसेसं भणिस्सामो। तं जहा– पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुलमवहरिय लद्धं वग्गिदे बादरआउकाइयपज्जत्त-अवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे बादरपुढविकाइय-पज्जत्तअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे बादरणिगोद-पदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे बादर-वणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्तअवहारकालो होदि। कारणं, सगरासिबहुत्तणिबंधणत्ता। एदेसि-मवहारकालाणं खंडिदादीणं पंचिंदियतिरिक्खभंगो। णवरि पदरंगुलभागहारो एत्थ पलि-दोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एदेहि अवहारकालेहि जगपदरे भागे हिदे सगसगदव्वपमाण-मागच्छदि।

बादरतेउपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा। असंखेज्जा-वलियवग्गो आवलियघणस्स अंतो[1] ॥ ९१ ॥

अपने अपने अंगुलको आत्मांगुल कहते हैं। इनमेंसे यहां प्रमाणांगुलरूप सूच्यंगुलका ही ग्रहण किया गया है, क्योंकि, द्वीप आदिकी गणनामें यही अंगुल लिया गया है। इसीप्रकार द्रव्य-प्रमाणानुगममें जहां अंगुलका संबन्ध आया है वहां इसी अंगुलका अभिप्राय जानना चाहिये।

अब यहां पर आचार्योंके उपदेशानुसार सूत्रसे सूचित भागहारोंके विशेषको कहते हैं। वह इसप्रकार है— पल्योपमके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलको भाजित करके जो लब्ध आवे उसके वर्गित करने पर बादर अप्कायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। इस बादर अप्कायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। इस बादर पृथिवी-कायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। इस बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। यहां अवहारकालोंके उत्तरोत्तर अधिक होनेका कारण यह है कि पूर्व पूर्ववर्ती अपनी अपनी राशि बहुत बहुत पाई जाती है। इन अवहारकालोंके खंडित आदिकका कथन पंचेन्द्रिय तिर्यंचके खंडित आदिकके कथनके समान करना चाहिये। इतना विशेष है कि वहां पर प्रतरांगुल भागहार है और यहां पर पल्योपमका असंख्यातवां भाग भागहार है। इन अवहारकालोंसे जगप्रतरके भाजित करने पर अपने अपने द्रव्यका प्रमाण आता है।

बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं। यह असंख्यातरूप प्रमाण असंख्यात आवलियोंके वर्गरूप है जो आवलीके घनके भीतर आता है ॥ ९१ ॥

१ विंदावलिलोगाणमसंख संख च तेउवाऊणं। पज्जत्ताणं पमाणं.... ॥ गो. जी. २१०. आवलिवग्गो अन्तरावलीय गुणिओ हु बायरा तेऊ। पञ्चस. २, ११.

असंखेज्जा इदि सामण्णेण उत्ते णवविहस्स असंखेज्जस्स गहणं पसत्तं तप्पडिसेहट्ठं असंखेज्जावलियवग्गो त्ति णिद्देसो कदो। असंखेज्जावलियवग्गो त्ति वयणेण घणावलियादीणमुवरिमाणं गहणे पत्ते तप्पडिसेहट्ठमावलियघणस्स अंतो इदि णिद्देसो कदो। घणावलियाए अब्भंतरे चेव बादरतेउपज्जत्तरासी होदि त्ति उत्तं भवदि। आइरियपरंपरागओवएसेण बादरतेउपज्जत्तरासिस्स अवहारकालं भणिस्सामो। तं जहा– आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियमवहारिय लद्धेण पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउकाइयपज्जत्तरासी होदि। एत्थ खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि जाणिऊण भणिऊण भाणिदव्वाणि। तस्स पमाणं उच्चदे। पदरावलियउवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ पदरावलियाओ। तं जहा– पदरावलियाए तदुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरावलियं आगच्छदि। तिस्से दुभागेण भागे हिदे दोण्णि, तिण्णिभागेण भागे हिदे तिण्णि, एवं

सूत्रमें 'असंख्यात हैं' इसप्रकार सामान्यरूपसे कथन करने पर नौ प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होता है, अतः उनके प्रतिषेध करनेके लिये 'वह असंख्यातरूप प्रमाण असंख्यात आवलियोंके वर्गरूप है' ऐसा निर्देश किया है। 'असंख्यात आवलियोंके वर्गरूप है' इस वचनसे घनावली आदि उपरिम संख्याओंके ग्रहणके प्राप्त होने पर उसके प्रतिषेध करनेके लिये 'आवलीके घनके भीतर है' इसप्रकारका निर्देश किया। इसका अभिप्राय यह हुआ कि बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि घनावलीके भीतर ही है। अब आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशके अनुसार बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका अवहारकाल कहते हैं। वह इसप्रकार है— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है। यहां पर खंडित, भाजित, विरलित और अपहृतोंको जानकर, कहकर, कहलवाना चाहिये।

विशेषार्थ—यद्यपि ऊपर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिके अवहारकाल लानेकी प्रतिज्ञा की गई है और अन्तमें बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण कितना है यह बतलाया है। फिर भी इससे ऊपरकी प्रतिज्ञामें कोई विसंगति नहीं आती है, क्योंकि, 'आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको भाजित करके जो लब्ध आवे' इस कथनके द्वारा बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिके अवहारकालका कथन हो जाता है।

आगे बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण कहते हैं। प्रतरावलीके उपरिम वर्गका असंख्यातवां भाग बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण है, जो प्रतरावलीके उपरिम वर्गका असंख्यातवां भाग असंख्यात प्रतरावलीप्रमाण है। आगे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं— प्रतरावलीका उसीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर प्रतरावलीका प्रमाण आता है। प्रतरावलीके द्वितीय भागका प्रतरावलीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर दो प्रतरावलियां लब्ध

गंतूण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपदरावलियाए तदुवरिमवग्गे भागे हिदे असंखेज्जाओ पदरावलियाओ लब्भंति । कारणं गदं । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियाए ओवट्टिदाए तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ पदरावलियाओ हवंति । णिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वेरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियमोवट्टिय लद्धेण तं चेव पदरावलियं गुणिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियं गुणिय पदरावलियघणे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । तं जहा– पदरावलियाए पदरावलियघणे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण तम्हि भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियं गुणिय तेण पदरावलियघणपढमवग्गमूलं गुणिय पदरावलियघणाघणपढमवग्गमूले भागे हिदे बादर-

आती हैं । प्रतरावलीके तृतीय भागका प्रतरावलीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीन प्रतरावलियां लब्ध आती हैं । इसीप्रकार नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको खंडित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरावलीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर असंख्यात प्रतरावलियां लब्ध आती हैं । इसप्रकार कारणका कथन समाप्त हुआ । प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे तत्प्रमाण प्रतरावलियां बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीवोंका प्रमाण होता है । इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे द्विरूपमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं– प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उसी प्रतरावलीको गुणित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीवराशि होती है ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके घनके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है– प्रतरावलीसे प्रतरावलीके घनके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे उसी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है ।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं– प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरावलीके घनाघनके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर बादर

तेउपज्जत्तरासी होदि । तं जहा– पदरावलियघणपढमवग्गमूलेण घणाघणपढमवग्गमूले भागे हिदे पदरावलियघणो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए पदरावलियघणे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए असंखेज्जदिभागेण तम्हि भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि ।

उवरिमवियप्पो तिविहो गहिदादिभेएण । वेरूवे गहिदं वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । अहवा पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । (एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं[1] । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि बादरतेउकाइयपज्जत्तरासी आगच्छदि ।) अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । तं जहा– पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण

तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके घनके प्रथम वर्गमूलसे प्रतरावलीके घनाघनके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर प्रतरावलीका घन आता है । पुनः प्रतरावलीसे प्रतरावलीके घनके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे उसी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है ।

गृहीत आदिके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । अथवा, प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । इसप्रकार भी बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता

१ प्रतिषु ' त्ति-गुणेऊण भागग्गहणं कद-' इत्यधिक पाठः ।

पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदि-भागेण पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण पदरावलियघणउवरिमवग्गस्सु-वरिमवग्गं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणाघणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । तं जहा- पदरावलियघणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणाघणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण तम्हि भागे हिदे पदरावलिय-उवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिम-वग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । पदरावलिय-उवरिमवग्गस्स घणावलियउवरिमवग्गस्स घणाघणा (-वलियउवरिमवग्गस्स) च असंखेज्जदि-

है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसप्रकार बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो गुणित राशि लब्ध आवे उससे घनाघनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनाघनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर घनावलीके उपरिम वर्गका उपरिम वर्ग आता है । फिर भी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता है । फिर भी प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसप्रकार बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले जाना चाहिये । प्रतरावलीके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप, घनावलीके उपरिम वर्गके

भाएण बादरतेउपज्जत्तरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो। एत्थ सुत्तगाहा—

आवलियाए वग्गो आवलियासखभागगुणिदो दु ।
तम्हा घणस्स अतो बादरपज्जत्ततेऊण ॥ ७७ ॥

बादरवाउकाइयपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥९२॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो । असंखेज्जा इदि सामण्णवयणेण णवविहासंखेज्जस्स गहणे पत्ते अणिच्छिदासंखेज्जपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ९३ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो णिक्खेवादीहि पुव्वं व परूवेदव्वो । एदम्हादो सुत्तादो सेसअट्ठविहअसंखेज्जरस पडिसेहे जादे वि अजहण्णाणुक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ घणलोगादिभेएण अणेयवियप्पाओ तदो तप्पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण असंखेज्जाणि जगपदराणि लोगस्स संखेज्जदिभागो[1] ॥९४॥

असंख्यातवें भागरूप और घनाघनावलीके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये। यहां सूत्रगाथा दी जाती है—

चूंकि आवलीके असंख्यातवें भागसे आवलीके वर्गको गुणित कर देने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण होता है, इसलिये वह प्रमाण घनावलीके भीतर है ॥ ७७ ॥

बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है। सूत्रमें 'असंख्यात हैं' ऐसा सामान्य वचन देनेसे नौ प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिच्छित असंख्यातोंका प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ९३ ॥

निक्षेप आदिके द्वारा इस सूत्रके भी अर्थका पहलेके समान प्ररूपण करना चाहिये। इस सूत्रसे शेष आठ प्रकारके असंख्यातोंके प्रतिषेध हो जाने पर भी अजघन्यानुत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियां और उत्सर्पिणियां घनलोक आदिके भेदसे अनेक प्रकारकी हैं, इसलिये उनका प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यात जगप्रतरप्रमाण हैं,

१ × लोगाण × सखं ×× वाऊण। पज्जत्ताण पमाण। गो. जी. २१० वाऊ य लोगसंखं। पञ्चसं. २, ११.

असंखेज्जाणि त्ति णिद्देसो जगपदरादिहेट्ठिमअसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलो। घण-लोगादिउवरिमसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहट्ठं लोगस्स संखेज्जदिभागवयणं। खेत्तेण इदि वयणे तइया दट्ठव्वा। सेसं सुगमं। संखेज्जरूवेहि घणलोगे भागे हिदे बादरवाउपज्जत्त-दव्वमागच्छदि त्ति वुत्तं होदि। एत्थ गाहा—

जगसेढीए वग्गो जगसेढीसंखभागगुणिदो दु।
तम्हा घणलोगंतो बादरपज्जत्तवाऊणं ॥ ७८ ॥

वणप्फइकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता ॥ ९५ ॥

वनस्पतिः कायः शरीरं येषां ते वनस्पतिकायाः, वनस्पतिकाया एव वनस्पति-

-

जो असंख्यात जगप्रतरप्रमाण लोकके संख्यातवें भाग है ॥ ९४ ॥

सूत्रमें 'असंख्यात' यह वचन जगप्रतर आदि अधस्तन असंख्यातासंख्यातके प्रतिषेधके लिये दिया है। घनलोक आदि उपरिम असंख्यातासंख्यातके प्रतिषेध करनेके लिये 'लोकके संख्यातवें भागप्रमाण' यह वचन दिया है। 'खेत्तेण' इस पदमें तृतीया विभक्ति जानना चाहिये। शेष कथन सुगम है। संख्यातसे घनलोकके भाजित करने पर बादर वायु-कायिक पर्याप्त जीवोंका द्रव्य आता है, यह इस कथनका तात्पर्य है। यहां गाथा दी जाती है—

चूंकि जगश्रेणीके वर्गको जगश्रेणीके संख्यातवें भागसे गुणित करने पर बादर वायु-कायिक पर्याप्त राशि आती है। इसलिये उक्त प्रमाण घनलोकके भीतर आता है ॥ ७८॥

वनस्पतिकायिक जीव, निगोद जीव, वनस्पतिकायिक बादर जीव, वनस्पति-कायिक सूक्ष्म जीव, वनस्पतिकायिक बादर पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक बादर अपर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, निगोद बादर जीव, निगोद सूक्ष्म जीव, निगोद बादर पर्याप्त जीव, निगोद बादर अपर्याप्त जीव, निगोद सूक्ष्म पर्याप्त जीव और निगोद सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, प्रत्येक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं ॥ ९५ ॥

वनस्पति ही काय अर्थात् शरीर जिन जीवोंके होता है वे वनस्पतिकाय कहलाते हैं।

१ तसरासिपुढविआदिचउक्कपत्तेयहीणससारी। साहारणजीवाणं परिमाणं होदि जिणदिट्ठं ॥ सगसग-असंखभागो बादरकायाण होदि परिमाणं। सेसा सुहुमपमाणं पडिभागो पुव्वणिद्दिट्ठो ॥ सुहुमेसु संखभागं संखाभागा अपुण्णगा इदरा। जस्सि अपुण्णद्धादो पुण्णद्धा संखगुणिदकमा ॥ गो जी २०६–२०८. साहारणबादरेसु असंखं भागं असंखगा भागा। पुण्णाणमपुण्णाणं परिमाणं होदि अणुकमसो ॥ गो. जी. २११. साहारणाण भेया चउरो अणंता। पञ्चस. २, ९.

कायिकाः। एवं सदि विग्गहगईए वट्टमाणाणं वणप्फइकाइयत्तं ण पावेदि ? चे, ण एस दोसो, वणप्फइकाइयसंबंधेण सुह-दुक्खाणुहवणणिमित्तकम्मेणेयत्तमुवगयजीवाणमुवयारेण वणप्फइकाइयत्ताविरोहा। वणप्फइणामकम्मोदया जीवा विग्गहगईए वट्टमाणा वि वणप्फइकाइया भवंति। जेसिमणंताणंतजीवाणमेक्कं चेव सरीरं भवदि साधारणरूवेण ते णिगोदजीवा भणंति। संखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलो अणंतणिद्देसो। सेसं सुगमं। अणंता इदि सामण्णवयणेण णवविहस्स अणंतस्स गहणे पत्ते अविवक्खिदस्स अट्ठविहाणंतस्स पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तथा वनस्पतिकाय ही वनस्पतिकायिक कहलाते हैं।

शंका—यदि ऐसा है तो विग्रहगतिमें विद्यमान जीवोंको वनस्पतिकायिकपना नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वनस्पतिकायके संबन्धसे सुख और दुःखके अनुभव करनेमें निमित्तभूत कर्मके साथ एकत्वको प्राप्त हुए जीवोंके उपचारसे विग्रहगतिमें वनस्पतिकायिक कहनेमें कोई विरोध नहीं आता है। जिन जीवोंके वनस्पति नामकर्मका उदय पाया जाता है वे विग्रहगतिमें रहते हुए भी वनस्पतिकायिक कहे जाते हैं।

विशेषार्थ—यहां पर शंकाकारका यह अभिप्राय है कि जो जीव विग्रहगतिमें रहते हैं उनके एक, दो या तीन समयतक नोकर्म वर्गणाओंका ग्रहण नहीं होता है, इसलिये उन्हें उस समय वनस्पतिकायिक आदि नहीं कह सकते हैं। इस शंकाका समाधान यह है कि विग्रहगतिके प्रथम समयसे ही जीवोंके स्थावरकाय या त्रसकाय नामकर्मका उदय हो जाता है। स्थावरकायके पृथिवीकायिक आदि पांच अवान्तर भेद हैं और सामान्य अपने विशेषोंको छोड़कर स्वतंत्र नहीं पाया जाता है, इसलिये पृथिवी जीवके पृथिवीकाय, वनस्पति जीवके वनस्पतिकाय नामकर्मका उदय विग्रहगतिके प्रथम समयसे ही हो जाता है, यह सिद्ध हुआ। अब यदि एक, दो या तीन समयतक उसके नोकर्म-वर्गणाओंका ग्रहण नहीं भी होता है, तो भी वह जीव उस उस पर्यायमें सुख और दुःखके अनुभव करनेमें निमित्तभूत कर्मोंके साथ एकत्वको प्राप्त हो चुका है, इसलिये उसे उपचारसे वनस्पतिकायिक आदि कहना विरोधको प्राप्त नहीं होता है।

जिन अनन्तानन्त जीवोंका साधारणरूपसे एक ही शरीर होता है उन्हें निगोद जीव कहते हैं। सूत्रमें संख्यात और असंख्यातका प्रतिषेध करनेके लिये 'अनन्त' पदका निर्देश किया है। शेष कथन सुगम है। सूत्रमें 'अनन्त हैं' ऐसा सामान्य वचन देनेसे नौ प्रकारके अनन्तोंके ग्रहणके प्राप्त होने पर अविवक्षित आठ प्रकारके अनन्तोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ १६ ॥

जदि पुव्वरासीणमणंताणंतत्तावबोहणट्ठमागदमिदं सुत्तं, तो ण अवहिरंति कालेणेत्ति वयणं णिरत्थयमिदि चे, ण एस दोसो, उभयकज्जसाहणट्ठत्तादो। पुव्वरासीणमणंताणंतत्तं च संते वि वए अणंतेण वि अदीदकालेण असमत्ति च पदुप्पादेदि त्ति। अवसेसं सुगमं।

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ १७ ॥

अदीदकाले ओसप्पिणि उस्सप्पिणीपमाणेण कीरमाणे ण अणंताणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ भवंति। एदाहि अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि पुव्वुत्तचोद्दस-जीवरासीओ ण अवहिरंति त्ति भणंतेण पुव्विल्लसुत्तेण एदाणं रासीणमणंताणंतत्तमदीद-कालादो बहुत्तं च जाणाविदं। संपहि इमेण सुत्तेण को अपुव्वो अत्थो जाणाविदो जेणेदस्स सुत्तस्स पारंभो सफलो होज्ज? वुच्चदे– एदाणं रासीणमदीदकालादो बहुत्तमेत्तं पुव्विल्ल-सुत्तेण जाणाविदं, ण तस्स विसेसो। एदेण पुण सुत्तेण तेसिं रासीणमदीदकालादो अणंत-

कालकी अपेक्षा पूर्वोक्त चौदह जीवराशियां अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होती हैं ॥ १६ ॥

शंका— यदि पूर्वोक्त जीवराशियोंके अनन्तानन्तत्वके ज्ञान करानेके लिये यह सूत्र आया है तो 'ण अवहिंरति कालेण' यह वचन निरर्थक है?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उभय कार्योंके साधन करनेके लिये उक्त वचन दिया है। उक्त पद एक तो पूर्वोक्त राशियोंके अनन्तानन्तत्वका और दूसरे उनमेंसे प्रत्येक राशिके व्यय होने पर भी अनन्त अतीत कालके द्वारा भी वे समाप्त नहीं होती हैं, इसका प्रतिपादन करता है। शेष कथन सुगम है।

वे चौदह जीवराशियां क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥ १७ ॥

शंका— अतीत कालको अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीके प्रमाणसे करने पर वे अवसर्पिणियां और उत्सर्पिणियां अनन्तानन्त नहीं होती हैं, ऐसी अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा पूर्वोक्त चौदह जीवराशियां अपहृत नहीं होती हैं, इसप्रकार प्रतिपादन करनेवाले इसके पहले सूत्रसे इन चौदह राशियोंके अनन्तानन्तत्वका और अतीतकालसे बहुत्वका ज्ञान हो जाता है। परंतु इस समय कहे गये इस सूत्रसे कौनसा अपूर्व अर्थ जाना जाता है, जिससे इस सूत्रका प्रारंभ सफल होवे?

समाधान— पूर्व अतीत सूत्रने इन चौदह राशियोंका अतीत कालसे बहुत्वका ज्ञान करा दिया, किन्तु उसकी विशेषताका ज्ञान नहीं कराया। परंतु यह सूत्र उन राशियोंका अतीत कालसे अनन्तगुणत्वका ज्ञान कराता है। आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं— पूर्व सूत्रमें

गुणत्तं जाणाविज्जदे। तं जहा– पुव्विल्लसुत्ते गुणिज्जमाणरासी कप्पो, एत्थ पुण तदो असंखेज्जगुणो लोगो त्ति वुत्तो। कप्पस्स गुणगाररासीदो घणलोगगुणगारो अणंतगुणो। कुदो? एदस्स सुत्तस्स अवयवभूदसोलसवडियअप्पाबहुगवयणादो जाणिज्जदे। तम्हा सफलो एस सुत्तारंभो त्ति घेत्तव्वं।

संपहि एत्थ धुवरासी उप्पाइज्जदे। तं जहा– पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइयवाउकाइय-तसकाइए अकाइए च, एदेसिं चेव पमाणं वग्गं वणप्फइयकाइयभाजिदं च सव्वजीवरासिम्हि पक्खित्ते वणप्फइकाइयधुवरासी होदि। वणप्फइकाइयवदिरित्तसेसरासिणा[1] सव्वजीवरासिमोवट्टिय लद्धरूवूणेण भजिदसव्वजीवरासिं तम्हि चेव पक्खित्ते वणप्फइकाइयधुवरासी होदि त्ति वुत्तं भवदि। एदेण धुवरासिणा सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे वणप्फइकाइयरासी आगच्छदि। वणप्फइकाइयधुवरासिमसंखेज्जलोगेण खंडिदेयखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमवणप्फइकाइयधुवरासी होदि। एदेण पुव्वुत्तअसंखेज्जलोगवणप्फदिकाइयधुवरासिभागहारेण रूवाहिएण वणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे बादरवणप्फइकाइयधुवरासी

गुण्यमान राशि कल्प कही गई है, परंतु इस सूत्रमें कल्पसे असंख्यातगुणा लोक गुण्यमान राशि कहा गया है। तथा कल्पकी गुणकार राशिसे घनलोकका गुणकार अनन्तगुणा है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— इस सूत्रके अवयवभूत सोलहप्रतिक अल्पबहुत्वके वचनसे यह जाना जाता है।

इसलिये इस सूत्रका आरंभ सफल है, ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिये।

अब यहां ध्रुवराशि उत्पन्न की जाती है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, त्रसकायिक और अकायिक, इन जीवराशियोंके प्रमाणको तथा वनस्पतिकायिक जीवराशिके प्रमाणसे भाजित उक्त राशियोंके प्रमाणके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशि होती है। वनस्पतिकायिक जीवराशिको छोड़कर शेष राशिके द्वारा सर्व जीवराशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे सर्व जीवराशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सर्व जीवराशिमें मिला देने पर वनस्पतिकायिक जीवराशिकी ध्रुवराशि होती है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस ध्रुवराशिसे सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर वनस्पतिकायिक जीवराशि आती है। वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे उसे उसी वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवराशिकी ध्रुवराशि होती है। ऊपर जो असंख्यात लोकप्रमाण वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिका भागहार कह आये हैं उसमें एक मिला कर जो प्रमाण हो उससे वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिके गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशि होती है। पुनः

१ प्रतिषु 'सेसरासी' इति पाठ।

होदि। पुणो सुहुमवणप्फइअपज्जत्तरासिणा[1] सुहुमवणप्फइकाइयरासिम्हि भागे हिदे तत्थ जं लद्धं, तं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगेण सुहुमवणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे सुहुमवणप्फदि-काइयअपज्जत्तधुवरासी होदि। पुणो पुधट्ठवियपुव्विल्लसंखेज्जरूवेहि रूवूणेहि सुहुम-वणप्फादिकाइयधुवरासिं खंडिय तत्थेयखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्त-धुवरासी होदि। बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तएहि बादरवणप्फइकाइयरासिम्हि भागे हिदे लद्धं असंखेज्जलोगं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगेण बादरवणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे बादर-वणप्फइकाइयपज्जत्तधुवरासी होदि। पुध ट्ठवियरासिणा रूवूणेण बादरवणप्फइकाइय-धुवरासिं खंडिय तत्थेगखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तधुवरासी होदि। एवं चेव णिगोदाणं पि धुवरासी उप्पादेदव्वो। णवरि पत्तेयसरीरेहि सह सत्त पक्खेवरासीओ भवंति। सेसविहीणं वणप्फइकाइयभंगो।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[2] ॥ ९८ ॥

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवराशिसे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो लब्ध आवे उसकी दो प्रतिराशियां करके उनमेंसे एक प्रतिराशिके द्वारा सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिके गुणित करने पर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। पुनः पृथक् स्थापित पूर्वोक्त प्रतिराशिके संख्यात प्रमाणमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिके खंडित करके वहां जो एक खंड लब्ध आवे उसे उसी सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त राशिके प्रमाणसे बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त राशिके भाजित करने पर जो असंख्यात लोक लब्ध आवें उनकी दो प्रतिराशियां करके उनमेंसे एक प्रतिराशिसे बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिके गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवराशिकी ध्रुवराशि होती है। पुन पृथक् स्थापित प्रतिराशिमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिको खंडित करके वहां जो एक खंड लब्ध आवे उसे उसी बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिमें मिला देने पर बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। इसीप्रकार निगोद जीवोंकी भी ध्रुवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये। इतना विशेष है कि प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिकोंके साथ सात प्रक्षेपराशियां होती हैं। शेष विधि वनस्पतिकायिकके कथनके समान है।

त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ९८ ॥

१ प्रतिषु ' अपज्जत्तरासि ' इति पाठ ।

२ त्रसकायिकसंख्या पञ्चेन्द्रियवत् । स. सि. १, ८.

एदस्स सुत्तस्स अत्थो असइं परूविदो त्ति ण वुच्चदे। असंखेज्जा इदि सामण्ण-वयणेण णवण्हमसंखेज्जाणं गहणे संपत्ते अविवक्खिदे अवणिय विवक्खियपरूवणट्ठमुत्तर-सुत्तं भणदि।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ९९ ॥

एदस्स वि अत्थो बहुसो उत्तो त्ति ण उच्चदे। तं च असंखेज्जासंखेज्जयमणेय-वियप्पमिदि तस्स विसेसपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण[1] अंगुलस्स संखेज्जदिभाग-वग्गपडिभाएण ॥ १०० ॥

एदेण सुत्तेण जगपदरादो जगसेढीदो च उवरिम-हेट्ठिमसंखेज्जवियप्पा अवणिदा भवंति। 'अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण[2]' इमेण वयणेण जगपदरस्स अंतब्भूद-

इस सूत्रका अर्थ कईवार कह चुके हैं, इसलिये यहां नहीं कहते हैं। 'सूत्रमें असंख्यात हैं' इस सामान्य वचनके देनेसे नौ ही प्रकारके असंख्यातोंके ग्रहणके प्राप्त होने पर अविवक्षित असंख्यातोंका अपनयन करके विवक्षित असंख्यातके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ९९ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ अनेकवार कहा जा चुका है, इसलिये नहीं कहते हैं। वह असंख्यातासंख्यात अनेक प्रकारका है, इसलिये उसके विशेषके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा त्रसकायिकोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और त्रसकायिक पर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १०० ॥

इस सूत्रसे जगप्रतर और जगश्रेणीसे ऊपर और नीचेके असंख्यात विकल्प अपनीत होते हैं। 'अंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे' इस वचनसे जगप्रतरके अन्तर्भूत

१ प्रतिषु 'असखेज्जदिभागवणप्फादिभागेण' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'असखेज्जदिभागपडिभागेण' इति पाठः।

सेसवियप्पा पडिसिद्धा त्ति दट्ठव्वा। जगपदरं कदजुम्मं वग्गसमुट्ठिदं पदरंगुलं पि कदजुम्मं वग्गसमुट्ठिदं चेव। तेसिं ट्ठविदसव्वभागहारा वि वग्गसमुट्ठिदा कदजुम्मं चेदि जाणावणट्ठमंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गवयणं। अण्णहा तस्स फलाणुवलंभादो। पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभाएण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण च जगपदरे भागे हिदे जहाकमेण तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता च भवंति त्ति वुत्तं भवदि।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १०१ ॥

एत्थ तसकाइय-तसकाइयपज्जत्ता इदि पुव्वसुत्तादो अणुवट्टदे। कुदो? उवरि पुध अपज्जत्तसुत्तारंभण्णहाणुववत्तीदो। सेसं सुगमं।

तसकाइयअपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ताण भंगो ॥ १०२ ॥

शेष विकल्प प्रतिषिद्ध हो जाते हैं, ऐसा समझना चाहिये। जगप्रतर कृतयुग्म संख्यारूप और वर्गसमुत्थित है। प्रतरांगुल भी कृतयुग्म संख्यारूप और वर्गसमुत्थित है। उसीप्रकार उनके स्थापित भागहार भी वर्गसमुत्थित और कृतयुग्मरूप हैं, इसका ज्ञान करानेके लिये 'अंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग' यह वचन दिया, अन्यथा उसकी दूसरी कोई सफलता नहीं पाई जाती है। प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागसे और प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर यथाक्रमसे त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीव होते हैं, यह इस सूत्रका अभिप्राय है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १०१ ॥

इस सूत्रमें 'त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त' इस वचनकी पूर्व सूत्रसे अनुवृत्ति होती है, क्योंकि, आगेके लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके प्रमाणके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रका आरंभ पृथक्‌रूपसे अन्यथा वन नहीं सकता था। शेप कथन सुगम है।

विशेषार्थ—चूंकि आगे त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके प्रमाणका प्रतिपादन करनेवाला सूत्र पृथक्‌रूपसे रचा गया है, इससे प्रतीत होता है कि पूर्वोक्त सूत्रमें 'त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त' पदकी अनुवृत्ति अपने पूर्ववर्ती सूत्रसे हुई है। इस कथनका तात्पर्य यह है कि यद्यपि सामान्य त्रसकायिक जीवोंमें लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंका अन्तर्भाव हो जाता है फिर भी लब्ध्यपर्याप्तक जीव गुणस्थानप्रतिपन्न नहीं होते हैं, अर्थात् मिथ्यादृष्टि ही होते हैं। अतएव इस विषयका ज्ञान करानेके लिये त्रसकायिकोंके प्रमाणके अनन्तर बीचमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण कह कर अनन्तर लब्ध्यपर्याप्त त्रसकायिकोंका प्रमाण कहा।

त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवोंका प्रमाण पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके प्रमाणके समान है ॥ १०२ ॥

बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्तजीवे[1] एगट्ठे कदे तसकाइयअपज्जत्ता हवंति । कधं तेसिं परूवणा पंचिंदियअपज्जत्तपरूवणाए समाणा भवदि ? ण एस दोसो, उभयत्थ पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागं भागहारं पेक्खिऊण तहोवएसादो । अत्थदो पुणो तेसिं विसेसो गणहरेहि वि ण वारिज्जदे ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुहुमणिगोदजीवपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुहुमणिगोदअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरणिगोदअपज्जत्ता होंति । सेसं अणंतखंडे कए बहुखंडा बादरणिगोदपज्जत्ता होंति । सेसे अणंतखंडे कए बहुखंडा अकाइया होंति । सेसरासीदो असंखेज्जलोगपमाणमवणेऊण पुध ठविय पुणो सेसरासिमसंखेज्जलोएण खंडिय एयखंडमवणेऊण तं पि पुध ठविय पुणो सेसरासिं चत्तारि समपुंजे काऊण अवणिदएयखंडं असंखेज्जलोगेण खंडिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते सुहुमवाउकाइया होंति । सेसेगखंडमसंखेज्जलोगेण खंडिय तत्थ बहुखंडा

शंका—जब कि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंको एकत्र करने पर त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीव होते हैं, तब फिर त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तकोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तोंकी प्ररूपणाके समान कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उभयत्र अर्थात् पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक और त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तक, इन दोनोंका प्रमाण लानेके लिये प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागरूप भागहारको देखकर इस प्रकारका उपदेश दिया । अर्थकी अपेक्षा जो उन दोनोंकी प्ररूपणामें विशेष है उसका गणधर भी निवारण नहीं कर सकते हैं ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर निगोद अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर निगोद पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अकायिक जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण राशिमेंसे असंख्यात लोकप्रमाण राशिको निकालकर पृथक् स्थापित करके पुनः शेष राशिको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके जो एक खंड आवे उसे निकालकर और उसे भी पृथक् स्थापित करके पुनः जो शेष बहुभाग राशि है उसके चार समान पुंज करके निकाले हुए पृथक् स्थापित एक खंडको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके उनमेंसे बहुभागोंको प्रथम पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक खंडको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित

१ प्रतिषु ' अपज्जत्तजीवेहिंतो ' इति पाठः ।

विदियपुंजे पक्खित्ते सुहुमआउकाइया होंति । सेसेयखंडमसंखेज्जलोएण खंडिय बहुखंडा तदियपुंजे पक्खित्ते सुहुमपुढविकाइया होंति । सेसेयखंडं चउत्थपुंजे पक्खित्ते सुहुमतेउकाइया होंति । सग-सगरासिं संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुखंडा अप्पप्पणो पज्जत्ता होंति । एयखंडं तेसिमपज्जत्ता[1] । पुव्वमवणिदमसंखेज्जलोगरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरवाउअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरआउकाइयअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरपुढविअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरणिगोदपदिट्ठिदा[2] अपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरवणप्फदिकाइयअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरतेउकाइयअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरवाउकाइयपज्जत्ता होंति । बादरआउकाइय-बादरपुढविकाइय-बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरवणप्फइपत्तेगसरीरपज्जत्ताणमेवं चेव णेयव्वं । तदो सेसे असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तसकाइयअपज्जत्ता[3] होंति । सेसमसंखेज्जखंडे

करके उनमेंसे बहुभागको दूसरे पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंका प्रमाण होता है। पुनः शेष एक भागको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके उनमेंसे बहुभागको तीसरे पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंका प्रमाण होता है। पुनः शेष एक खंडको चौथे पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवोंका प्रमाण होता है। इन चारों राशियोंमेंसे अपनी अपनी राशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अपने अपने पर्याप्त जीवोंका प्रमाण होता है और एक भागप्रमाण उन उनके अपर्याप्त जीव होते हैं। पुनः पहले निकाल कर पृथक् स्थापित की हुई असंख्यात लोकप्रमाण राशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर अप्कायिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर निगोदप्रतिष्ठित वनस्पति अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर-वायुकायिक पर्याप्त जीव होते हैं। आगे बादर अप्कायिक, बादर पृथिवीकायिक, बादर निगोदप्रतिष्ठित और बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका भागाभाग इसीप्रकार ले जाना चाहिये। बादर प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके

१ गो. जी. २०७.   २ प्रतिषु 'बादरणिगोदकाइया' इति पाठः ।

३ अ प्रतौ 'तसकाइयअसजदा'; आ प्रतौ 'तसकाइयअसंखेज्जा'; क प्रतौ 'तसकाइयअस.' इति पाठः ।

कए बहुखंडा तसकाइयपज्जत्तमिच्छाइट्ठी होंति। सेसे असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो होंति। एवं णेयव्वं जाव संजदासंजदा त्ति। सेसे असंखेज्ज-खंडे कए बहुखंडा बादरतेउकाइयपज्जत्ता होंति। सेसे संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति। एवं णेयव्वं जाव अजोगिकेवलि त्ति।

अप्पाबहुगं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि। सत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइयपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। बादरपुढविकाइया विसेसाहिया। सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता। तेसिं पज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जसमया। सुहुमपुढविकाइया विसे-साहिया। एवं आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइयाणं च सत्थाणं वत्तव्वं। सव्वत्थोवा बादर-वणप्फइकाइयपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया। सव्वत्थोवा सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता। तेसिं

असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण त्रसकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण त्रसकायिक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण असंयतसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। इसीप्रकार संयतासंयतोंका प्रमाण आने तक भागा-भागका कथन ले जाना चाहिये। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग-प्रमाण बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत जीव हैं। इसीप्रकार अयोगिकेवलियोंके प्रमाण आनेतक भागा-भागका कथन करना चाहिये।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्व परस्थान अल्पबहुत्व। उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयको बतलाते हैं— बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असं-ख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। इसीप्रकार अप्कायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर वनस्पति-कायिक जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक

पज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जा समया। सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया। सव्वत्थोवो तसकाइयअवहारकालो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगअवहारकालो। दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? विक्खंभसूई। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगअवहारकालो। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढी। एवं बादरवप्फइपज्जत्त-पत्तेयसरीरपज्जत्त-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्त-बादरपुढविपज्जत्त-बादरआउपज्जत्त-तसकाइयपज्जत्तमिच्छाइट्ठि-तसकाइयअपज्जत्ताणं च वत्तव्वं। सासणादीणमोघसत्थाणभंगो। एवं सत्थाणप्पाबहुगं समत्तं।

परत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया। सुहुमपुढविकाइया असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया। सुहुमपुढविकाइया असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। पुढविकाइया विसेसाहिया। सव्वत्थोवा बादरपुढविपज्जत्ता। तस्सेव अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा।

अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। त्रसकायिक जीवोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। त्रसकायिक जीवोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है। जगप्रतर त्रसकायिक जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणी गुणकार है। इसीप्रकार बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त, प्रत्येकशरीर पर्याप्त, बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त, बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर अप्कायिक पर्याप्त, त्रसकायिक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि और त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये। कायमार्गणामें सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है। इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— बादर पृथिवीकायिक जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। अथवा, बादर पृथिवीकायिक जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं। अथवा, बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। सूक्ष्म

सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । एवं चउत्थो वियप्पो । णवरि पुढविकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता । असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । एवं चेव छट्ठो वियप्पो । णवरि पुढविकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरपुढविकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । केत्तिय-

पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार चौथा विकल्प है । इतनी विशेषता है कि पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार छठवां विकल्प है । इतनी विशेषता है कि पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्रसे विशेष अधिक हैं ? बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है उतने प्रमाणसे अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है

मेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तपरिहीणसुहुमपुढविकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । एवं चेव अट्ठमो वियप्पो । णवरि पुढविकाइया विसेसाहिया । एगुत्तरवड्डिकमेण[1] एत्तिया चेव अप्पाबहुग-वियप्पा । अवहारकाल-विक्खंभसूई-सेढि-पदर-लोगे कमेण पवेसिय अप्पाबहुगे कीरमाणे वि वियप्पा लब्भंति त्ति ? ण, ताणं कमप्पवेसस्स कारणाभावा । पुढविकाइयरासिस्स संगहभेयपदुप्पायणट्ठं पुढविकाइयरासिस्स कमेण भेदो कीरदे । ण च अवहारकालादिसु कमेण पवेसिज्जमाणेसु पुढविकाइयरासी भिज्जदे । तदो एत्तिया चेव एगुत्तरवड्डिवियप्पा होंति त्ति ट्ठिदं । अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवो बादरपुढविकाइयपज्जत्तअव-हारकालो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो । अवहारकालवग्गो । सेढी असंखेज्ज-गुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई ।

उतने प्रमाणसे अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे हीन सूक्ष्म पृथिवी-कायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण रहे उतनेसे अधिक हैं । इसप्रकार आठवां विकल्प है । इतनी विशेषता है कि पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । एकोत्तर वृद्धिके क्रमसे अल्पबहुत्वके इतने ही विकल्प होते हैं ।

शंका — अवहारकाल, विष्कंभसूची, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक इनको क्रमसे प्रविष्ट करके अल्पबहुत्व करने पर भी विकल्प प्राप्त होते हैं ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, इन अवहारकाल आदिकके क्रमप्रवेशका कोई कारण नहीं है । संग्रहरूप पृथिवीकायिक राशिके भेदोंके प्रतिपादन करनेके लिये पृथिवीकायिक राशिका क्रमसे भेद किया है । परंतु अवहारकालादिकके क्रमसे प्रविश्यमान होने पर पृथिवीकायिक राशि भेदको प्राप्त नहीं होती है । इसलिये एकोत्तर वृद्धिके क्रमसे विकल्प इतने ही होते हैं, यह बात निश्चित हो जाती है ।

अब अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं — बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यात-गुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । उन्हींका (बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका) द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । जगप्रतर

१ प्रतिपु ' वज्जकमेण ' इति पाठः ।

पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । बादरपुढविकाइयअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइयअपज्जत्ता[1] विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्ज-गुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमपुढवि-काइया विसेसाहिया । पुढविकाइया विसेसाहिया । एवं आउ-तेउ-वाउणं परत्थाणं जाणि-ऊण वत्तव्वं ।

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहार-काल गुणकार है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य लोकसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव पृथिवी-कायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पृथिवी-कायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवी-कायिकोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार अप्कायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वका समझकर कथन करना चाहिये ।

पृथिवीकायिक जीवोंके एकोत्तर वृद्धिक्रमसे भेदोंके अल्पबहुत्वके क्रमका बतलानेवाला कोष्ठक.

बा. पृ.	बा. पृ.	बा. पृ. प.	बा. पृ. प.	बा. पृ. प.	बा पृ. प	बा. पृ. प.	बा. पृ. प.
सू. पृ.	सू पृ.	बा. पृ अप.	बा. पृ. अप.	बा. पृ. अप.	बा. पृ. अप.	बा. पृ. अ.	बा. पृ. अ.
	पृ. सा.	सू. पृ. अप.	सू. पृ. अप.	बा. पृ	बा. पृ.	बा. पृ.	बा. पृ.
		सू. पृ. प.	सू. पृ. प.	सू पृ. अप.	सू. पृ. अप.	सू. पृ अ.	सू. पृ. अ.
			पृ सा	सू पृ. प	सू. पृ. प.	पृ. अ.	पृ. अ.
				सू पृ.	सू पृ.	सू. पृ. प.	सू. पृ. प.
					पृ सा.	पृ. प.	पृ. प.
						सू. पृ.	सू. पृ.
							पृ. सा.

१ प्रतिषु ' पज्जत्त ' इति पाठः ।

संपहि वणप्फइपरत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवा बादरवणप्फइकाइया । सुहुमवणप्फइकाइया असंखेज्जगुणा । एवं विदियं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जलोगा । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जलोगा । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं चउत्थं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादरवणप्फइपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । एवं छट्ठं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादरवणप्फइ-

अब वनस्पतिकायिक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— बादर वनस्पतिकायिक जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार दूसरा विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार चौथा विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसीप्रकार छठवां विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबके स्तोक हैं । बादर

काइयपज्जत्ता। बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया। सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण। सुहुमवणप्फदिकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा। वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तमेत्तेण। सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तविरहिदसुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण। एवमट्ठमं पि। णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया।

वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं। वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं। वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे रहित सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण रहे तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। इसीप्रकार आठवां विकल्प भी है। इसमें इतनी विशेषता है कि वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं।

वनस्पतिकायिक जीवोंके एकोत्तर वृद्धिक्रमसे भेदोंके अल्पबहुत्वके क्रमका बतलानेवाला कोष्ठक.

बा. व.	बा. व.	बा. व. प.	बा. व. प.	बा. व. प.	बा. व. प.	बा. व. प.	बा. व. प.
सू. व.	सू. व.	बा. व. अ.	बा. व. अ.	बा. व. अ.	बा. व. अ.	बा. व. अ.	बा. व. अ.
	व.	सू. व. अ.	सू. व. अ.	बा. व.	बा. व.	बा. व.	बा. व.
		सू. व. प.	सू. व. प.	सू. व. अ.	सू. व. अ.	सू. व. अ.	सू. व. अ.
			व.	सू. व. प.	सू. व. प.	व. अ.	व. अ.
				सू. व.	सू. व.	सू. व. प.	सू. व. प.
					व.	व. प.	व. प.
						सू. व.	सू. व.
							व.

संपहि एदेसु णवपदेसु णिगोदछपदाणि पविसिय पण्णारसपदअप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता। बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तेण' पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण। उवरि अट्ठपदाणि पुव्वं व। अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता। बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया। बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तअसंखेज्जलोगमेत्तेण। उवरि सत्तपदाणि पुव्वं व। अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता। बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया। बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया। बादरणिगोदा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तेणूणबादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण। बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरमेत्तेण। उवरि

अब इन पूर्वोक्त नौ स्थानोंमें निगोदसंबन्धी छह स्थानोंका प्रवेश कराके पन्द्रह स्थानोंमें अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— बादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव बादरनिगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त, जो कि जगप्रतरके असंख्यातवें भाग हैं, तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। इसके ऊपर आठ स्थान पहलेके समान हैं। अथवा, बादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोक है। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक हैं। बादरनिगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त, जो कि असंख्यात लोकप्रमाण हैं, तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। इसके ऊपर सात स्थान पहलेके समान हैं। अथवा, बादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक हैं। बादरनिगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं। बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। बादरनिगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून बादरनिगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। बादर वनस्पतिकायिक जीव बादरनिगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र

छप्पदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरमेत्तेण । उवरि चत्तारि पदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया ।

विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर छह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा बादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादरनिगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं । असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर जीवोंसे विशेष अधिक हैं । इसके ऊपर चार स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव बादरनिगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर निगोदोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेषसे अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे

केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । णिगोदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदमेत्तेण । वणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीरवणप्फइकाइयमेत्तेण ।

अधिक हैं ? बादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेपसे अधिक हैं। वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेपसे अधिक हैं? प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेपसे अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं। अथवा, बादर निगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव इनसे विशेष अधिक हैं। बादर निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं। बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। बादर निगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर निगोदोंसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं। निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं। निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। निगोद जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेपसे अधिक हैं ? बादर निगोदोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेपसे अधिक हैं। वनस्पतिकायिक जीव निगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेपसे अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेपसे अधिक हैं।

संपहि बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्त-बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्त-बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीर-बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तं-बादरणिगोदपदिट्ठिदा एदाणि छप्पदाणि पुव्विल्लपण्णारसपदेसु पक्खेविय एक्कावीसपद-अप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। तं जहा— सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीर-पज्जत्तदव्वं। बादरणिगोदपज्जत्तदव्वमणंतगुणं। को गुणगारो? सगरासिस्स असंखेज्जदि-

पूर्वोक्त नौ राशियोंमें निगोदकी छह राशियां मिला देने पर अल्पबहुत्वके क्रमको बतलानेवाला कोष्ठक.

वा. नि. प.	वा. नि. प	वा. नि. प.	वा. नि. प.	वा. नि. प	वा. नि प.
वा. व. प.	वा. व. प.	वा. व. प.	वा. व. प.	वा. व. प.	वा. व प.
वा. व. अ.	वा. नि. अ	वा. नि. अ.	वा. नि. अ	वा. नि. अ.	वा. नि. अ.
वा. व.	वा. व. अ.	वा. व. अ.	वा. व. अ	वा. व. अ.	वा. व. अ.
सू. व. अ.	वा. व.	वा. नि.	वा नि.	वा. नि.	वा नि.
व. अ.	सू. व. अ.	वा. व.	वा. व	वा. व.	वा. व.
सू व. प.	व अ.	सू. व. अ.	सू. व. अ	सू. व. अ	सू. व. अ.
व. प.	सू. व. प.	व. अ.	नि अ.	नि अ.	नि. अ
सू. व.	व. प.	सू. व. प.	व. अ.	व अ.	व. अ.
व	सू. व.	व. प.	सू. व. प.	सू. व. प	सू. व. प.
	व.	सू व.	व. प.	नि. प.	नि. प.
		व.	सू. व.	व प.	व. प.
			व.	सू. व.	सू. व.
				व.	नि.
					व.

अब बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त, बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर, बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त और बादर निगोदप्रतिष्ठित, इन छह स्थानोंको पूर्वोक्त पन्द्रह स्थानोंमें मिलाकर इक्कीस स्थानोंमें अल्पबहुत्वको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है— बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है। बादर निगोद पर्याप्तोंका द्रव्य उससे अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग

१ प्रतिषु ' बादरवणप्फइ० पत्तेयसरीर- बादरवणप्फइ० पत्तेयसरीर- ' इति अधिक. पाठः।

भागो । को पडिभागो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं पडिभागो । उवरि चोद्दसपदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । उवरि पण्णारस पदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । को पडिभागो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वपडिभागो[1] । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । बादरणिगोदपज्जत्ता अणंतगुणा । को गुणगारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो । असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरदव्वपडिभागो[2] । उवरि चोद्दस पदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइ-

क्या है ? जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्यप्रमाण प्रतिभाग है । इसके ऊपर चौदह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य इससे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य उससे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य प्रतिभाग है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर निगोद पर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर द्रव्य प्रतिभाग है । इसके ऊपर चौदह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य इससे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर

१ क-आप्रत्योः असखेज्जा लोगा । को पडिभागो ? पदरस्स असखेज्जदिभागमेत्तबादरणिगोपदिट्ठिदपज्जत्तदव्व पडिभागो ' इत्याधिक पाठः ।

२ आ-कप्रत्योः ' को गुणगारो... ..दव्वपडिभागो ' इति पाठ नास्ति ।

काइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया । बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । उवरि पण्णारस पदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया । बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । बादरणिगोदपदिट्ठिदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तमेत्तेण । उवरिमपण्णारस पदाणि पुव्वं व ।

अपर्याप्त द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोद प्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य उससे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्य बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे असंख्यातगुणा है । बादर निगोदप्रतिष्ठित जीव बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं ।

विशेषार्थ—ऊपर दिये हुए तीन कोष्ठक और आगे दिये हुए निम्न कोष्ठकसे इस बातका ज्ञान अच्छे प्रकारसे हो जाता है कि प्रथम स्थानसे दूसरेमें और तीसरे आदिसे चौथे आदिमें क्या अन्तर है । यद्यपि इन कोष्ठकोंमें परस्पर अल्पबहुत्वकी विशेषता नहीं बतलाई है, तो भी इनसे अल्पबहुत्वका क्रम अवश्य ही समझमें आ जाता है । विशेषताका ज्ञान मूलसे किया जा सकता है । वनस्पतिके पहले कोष्ठकमें नौ भेदोंकी मुख्यतासे, दूसरेमें उन नौ भेदोंमें ६ और मिलाकर पन्द्रह भेदोंकी मुख्यतासे और निम्न तीसरे कोष्ठकमें उपर्युक्त पन्द्रह भेदोंमें छह भेद और मिलाकर इक्कीस भेदोंकी मुख्यतासे अल्पबहुत्व बतलाया है । जहां 'ऊपर सात स्थान पहलेके समान हैं, पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं' इत्यादि कहा है उसका यह अभिप्राय है कि प्रारंभके जितने स्थानोंमें विशेषता कहनी थी वह कह दी । आगे अन्तके सात या पन्द्रह आदि स्थान पहलेके कहे हुए जोड़ लेना चाहिये ।

संपहि बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-अवहारकालो तस्सेव विक्खंभसूई बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तविक्खंभसूई सेढी जगपदर-लोगा इदि सत्त पदाणि एक्कावीसपदेसु पक्खिविय अट्ठावीसपदप्पाबहुगं वत्तइस्सामो ।

पूर्वोक्त पन्द्रह स्थानोंमें छह स्थान जोड़कर इक्कीस स्थानोंमें अल्पबहुत्वके क्रमका ज्ञान करनेवाला कोष्टक

बा.व. प्र. प.	बा व प्र. प.	बा. व. प्र प	बा. व. प्र. प.	बा. व. प्र. प
बा. नि. प.	बा. नि. प्रति. प.	बा. नि. प्रति. प.	बा नि प्रति. प.	बा. नि. प्रति. प.
बा. व प.	बा नि. प.	बा. व. प्र. अ	बा. व. प्र. अ.	बा. व. प्र. अ.
बा. नि. अ.	बा व. प.	बा. व प्र.	बा. व प्र.	बा. व. प्र.
बा. व. अ.	बा नि. अ	बा. नि प.	बा. नि. प्रति. अ.	बा. नि. प्रति. अ.
बा. नि.	बा. व. अ.	बा. व. प.	बा. नि. प.	बा नि. प्रति.
बा. व	बा. नि	बा. नि. अ.	बा. व. प.	बा. नि. प.
सू. व. अ.	बा. व.	बा. व. अ.	बा. नि. अ.	बा. व. प.
नि. अ.	सू. व. अ	बा. नि.	बा. व अ.	बा. नि. अ.
व. अ	नि. अ.	बा व.	बा नि.	बा व अ.
सू. व. प.	व. अ.	सू. व अ.	बा व	बा. नि.
नि. प.	सू व. प.	नि अ	सू. व. अ	बा. व.
व. प.	नि. प.	व. अ.	नि. अ.	सू. व. अ.
सू. व.	व. प.	सू व प.	व. अ.	नि. अ
नि.	सू. व.	नि. प	सू. व. प.	व. अ.
व.	नि.	व. प.	नि प.	सू. व. प.
	व.	सू. व.	व. प.	नि. प.
		नि.	सू व.	व. प
		व.	नि.	सू. व.
			व.	नि.
				व.

अब बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका अवहारकाल, उसीकी विष्कंभसूची, बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंकी विष्कंभसूची, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक, इन सात स्थानोंको पूर्वोक्त इक्कीस स्थानोंमें मिलाकर अट्ठाईस स्थानोंमें अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— यहां ये सातों स्थान एकसाथ मिला

एदाणि सत्त वि पदाणि एक्कवारेण पविसिदव्वाणि। कुदो ? कमप्पवेसकारणाभावा। रासिसंगहभेदपदुप्पायणट्ठं कमेण पवेसो कीरदे। ण च एत्थ रासिभेदो अत्थि, पत्तभिज्जमाणभेदपज्जंतत्तादो। सव्वत्थोवो बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो। बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। सेढी असंखेज्जगुणा। बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? सेढी। बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? तस्सेव बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण। बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। बादरणिगोदपदिट्ठिदा विसेसाहिया।

देना चाहिये। क्योंकि, उनके क्रमसे मिलानेका कोई कारण नहीं है। संग्रहरूप राशियोंके भेदके प्रतिपादन करनेके लिये क्रमसे राशि मिलाई जाती है। परंतु यहां पर तो राशिमें कोई भेद पाया नहीं जाता है, क्योंकि, विद्यमान राशियोंमें जितने भेद प्राप्त थे उतने भेद किये जा चुके हैं। बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका अवहारकाल पूर्वोक्त अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उन्हीं बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंकी विष्कंभसूची पूर्वोक्त विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। जगश्रेणी उक्त विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। जगप्रतर बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका अवहारकाल गुणकार है। लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है। बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका द्रव्य लोकसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? उन्हींके पर्याप्तोंका अर्थात् बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक

केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तमेत्तेण । बादरणिगोदपज्जत्ता अणंतगुणा । को गुणगारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स को पडिभागो ? बादरणिगोदपदिट्ठिदा पडिभागो । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइय-पत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइय-पत्तेयसरीरअपज्जत्तमेत्तेण । बादरणिगोदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीर-अपज्जत्तेणूणबादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फादिपत्तेयसरीरमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदअपज्जत्त-मेत्तेण । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेय-

गुणकार है । बादर निगोदप्रतिष्ठित जीव बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर निगोद पर्याप्त जीव बादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है ? बादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव बादर निगोद पर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर निगोद अपर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर निगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून बादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर निगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक जीवोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पति-कायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म

सरीरअपज्जत्तमेत्तेण। सुहुमवणप्फदिकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जा समया। णिगोदपजत्ता विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण। वणप्फइ-काइयपज्जत्ता विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण। सुहुमवणप्फदिकाइया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरवणप्फदिपज्जत्तेणूणसुहुमवण-प्फदिअपज्जत्तमेत्तेण। णिगोदा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरणिगोदमेत्तेण। वणप्फइकाइया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरमेत्तेण। एवं वणप्फइकाइयपरत्थाणप्पाबहुगं समत्तं। तसकाइयपरत्थाणस्स पंचिंदियपरत्थाणभंगो। एवं परत्थाणप्पाबहुगं समत्तं।

सव्वपरत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। सव्वत्थोवा अजोगिकेवली। चत्तारि उव-सामगा संखेज्जगुणा। चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा। सजोगिकेवली संखेज्जगुणा। अपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तापमत्तरासीहिंतो बादरवाउ-पज्जत्तअवहारकालो किमहिओ ऊणो त्ति ण जाणिज्जदे। कुदो? संपहि उवएसाभावादो।

वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर वनस्पति पर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। निगोद जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर निगोद जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। वनस्पतिकायिक जीव विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। इसप्रकार वनस्पतिकायिक जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ। त्रसकायिक जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व पंचेन्द्रिय जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान है। इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब सर्वपरस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— अयोगिकेवली जीव सबसे थोड़े हैं। चारों गुणस्थानोंके उपशामक अयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं। चारों गुणस्थानोंके क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीवराशिसे बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल क्या अधिक है, या कम, यह नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस समय इस प्रकारका

तदो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं जाणिऊण णेयव्वं जाव संजदासंजदअवहारकालो त्ति । तदो बादरतेउपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । तदो संजदासंजददव्वमसंखेज्जगुणं । एवं जाणिऊण णेदव्वं जाव पलिदोवमो त्ति । तदो बादरआउपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । बादरपुढविपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तसकाइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तसकाइयअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदेगखंडेण । तसकाइयपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । तदो तसकाइयपज्जत्त-

उपदेश नहीं पाया जाता है । बादर वायुकायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार समझकर संयतासंयतोंके अवहारकालतक ले जाना चाहिये । संयतासंयतोंके अवहारकालसे बादर तेजस्कायिक पर्याप्त असंख्यातगुणे हैं । इससे संयतासंयतोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार जानकर पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे बादर अप्कायिक जीवोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल बादर अप्कायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । बादर निगोदप्रतिष्ठित प्रत्येक जीवोंका अवहारकाल बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । त्रसकायिक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है । त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल त्रसकायिक मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे त्रसकायिक मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । त्रसकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल त्रसकायिक अपर्याप्तोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । त्रसकायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे त्रसकायिक पर्याप्तोंकी विष्कंभसूची

१ प्रतिषु ' वाउ० ' इति पाठः ।

विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । तसकाइयअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । तसकाइय-विक्खंभसूई विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइयपज्जत्तविक्खंभ-सूई असंखेज्जगुणा । बादरआउकाइयपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । बादर-वाउकाइयपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सेढी संखेज्जगुणा । तसकाइय-पज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । तसकाइयअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । तसकाइयदव्वं विसे-साहियं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरणिगोदपदि-ट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । (बादरपुढविकाइयपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं ।) बादरआउ-पज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । बादरवाउपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । लोगो संखेज्जगुणो । तदो बादरतेउअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरतेउदव्वं विसेसाहियं ।

असंख्यातगुणी है । त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची त्रसकायिक पर्याप्तोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । त्रसकायिक जीवोंकी विष्कंभसूची त्रसकायिक अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे विशेष अधिक है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची त्रसकायिकोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर अप्कायिक पर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। बादर वायुकायिक पर्याप्तोंकी विष्कंभसूची बादर अप्कायिक पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । जगश्रेणी बादर वायुकायिक पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है। त्रसकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। त्रसकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य त्रसकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । त्रसकायिकोंका द्रव्य त्रसकायिक अपर्याप्तोंके द्रव्यसे विशेष अधिक । है बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य त्रसकायिकोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठितोंसे असं-ख्यातगुणा है । बादर अप्कायिक पर्याप्तोंका द्रव्य बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । जगप्रतर बादर अप्कायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर वायुकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । लोक बादर वायुकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । लोकसे बादर तेजस्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । बादर तेजस्कायिकोंका द्रव्य बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष

१ प्रतिषु ' बादरणिगोदविपज्जत्त- ' इति पाठ. ।

बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। बादरवणप्फइपत्तेयसरीरदव्वं विसेसाहियं। बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। बादरणिगोदपदिट्ठिददव्वं विसेसाहियं। (बादरपुढविकाइयअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। बादरपुढविकाइयदव्वं विसेसाहियं।) बादरआउअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। बादरआउकाइयदव्वं विसेसाहियं। बादरवाउअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। बादरवाउकाइयदव्वं विसेसाहियं। सुहुमतेउअपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं। तेउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं। सुहुमपुढविअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं। पुढविअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं। (सुहुमआउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं।) आउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं। सुहुमवाउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं। (वाउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं।) सुहुमतेउपज्जत्ता संखेज्जगुणा। तेउपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं। सुहुमपुढविपज्जत्ता विसेसाहिया। पुढविपज्जत्ता विसेसाहिया। सुहुमआउपज्जत्ता विसेसाहिया। आउपज्जत्ता

अधिक है। बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर तेजस्कायिक द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंका द्रव्य बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है। बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। बादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है। बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। बादर पृथिवीकायिकोंका द्रव्य बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है। बादर अप्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर पृथिवीकायिक द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। बादर अप्कायिक जीवोंका द्रव्य बादर अप्कायिक अपर्याप्तोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है। बादर वायुकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर अप्कायिकोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। बादर वायुकायिकोंका द्रव्य बादर वायुकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है। सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर वायुकायिक द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। तेजस्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है। सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य तेजस्कायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है। पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है। सूक्ष्म अप्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है। अप्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य सूक्ष्म अप्कायिक अपर्याप्तोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है। सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य अप्कायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है। वायुकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है। सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे संख्यातगुणे हैं। तेजस्कायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव तेजस्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं।

विसेसाहिया। सुहुमवाउपज्जत्ता विसेसाहिया। वाउपज्जत्ता विसेसाहिया। सुहुमतेउकाइया विसेसाहिया। तेउकाइया विसेसाहिया। सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया। पुढविकाइया विसेसाहिया। सुहुमआउकाइया विसेसाहिया। आउकाइया विसेसाहिया। सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया। वाउकाइया विसेसाहिया। अकाइया अणंतगुणा। बादरणिगोदपज्जत्ता[1] अणंतगुणा। बादरवणप्फइपज्जत्ता विसेसाहिया। बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। बादरवणप्फइअपज्जत्ता विसेसाहिया। बादरणिगोदा विसेसाहिया। बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया[2]। सुहुमवणप्फइअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया। वणप्फइअपज्जत्ता विसेसाहिया। सुहुमवणप्फइपज्जत्ता संखेज्जगुणा। णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया। वणप्फइपज्जत्ता विसेसाहिया। सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया।

सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। अप्कायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त जीव अप्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। वायुकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म तेजस्कायिक जीव वायुकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। तेजस्कायिक जीव सूक्ष्म तेजस्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव तेजस्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म अप्कायिक जीव पृथिवीकायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। अप्कायिक जीव सूक्ष्म अप्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वायुकायिक जीव अप्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। वायुकायिक जीव सूक्ष्म वायुकायिक जीव द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। अकायिक जीव वायुकायिक द्रव्यसे अनन्तगुणे हैं। बादर निगोद पर्याप्त जीव अकायिक जीवोंसे अनन्तगुणे हैं। बादर वनस्पति पर्याप्त जीव बादर निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। बादर निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणे हैं। बादर वनस्पति अपर्याप्त जीव बादर निगोद अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। बादर निगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर निगोद द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक द्रव्यसे असंख्यातगुणे हैं। निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। वनस्पति अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त जीव वनस्पति अपर्याप्त द्रव्यसे संख्यातगुणे हैं। निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पति

१ प्रतिषु 'अपज्ज०' इति पाठ ।

२ आ-कप्रत्यो 'सुहुमवणप्फइ० विसे०-' इति अधिक. पाठ ।

णिगोदा विसेसाहिया । वणप्फइकाइया विसेसाहिया ।

एवं कायमग्गणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-तिण्णिवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्व-पमाणेण केवडिया ? देवाणं संखेज्जदिभागो ॥ १०३ ॥

एत्थ तिण्हं चेव वचिजोगाणं संगहो किमट्ठो कदो ? ण एस दोसो । कुदो ? वचिजोग-असच्चमोसवचिजोगेहिं सह एदेसिं तिण्हं वचिजोगाणं दव्वालावं पडि समाणत्ता-भावादो । समाणालावाणमेगजोगो भवदि, ण भिण्णालावाणं । देवाणं जाणि दव्व-काल-खेत्त-पमाणाणि पुव्वं परूविदाणि तेसिं संखेज्जदिभागो एदेसिमट्ठण्हं रासीणं पमाणं होदि । कुदो ? जदो एदे अट्ठ वि जोगा सण्णीणं चेव भवंति, णो असण्णीणं, तत्थ पडिसिद्धत्तादो । सण्णीसु वि पहाणा[2] देवा चेव, सेसगदिसण्णीणं देवाणं संखेज्जदिभागत्तादो । तत्थ वि देवेसु पहाणो कायजोगरासी, मण-वचिजोगरासीदो संखेज्जगुणत्तादो । तं पि कधं जाणिज्जदे ?

जीव वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । निगोद जीव सूक्ष्मवनस्पतिकायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक जीव निगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं ।

इसप्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचों मनोयोगियों और तीन वचनयोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंके संख्यातवें भाग हैं ॥ १०३ ॥

शंका—यहां तीन ही वचनयोगियोंका संग्रह किसलिये किया है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगि-योंके साथ इन तीन वचनयोगियोंकी द्रव्यालापके प्रति समानता नहीं पाई जाती है । समाना-लापोंका ही एक योग होता है, भिन्नालापोंका नहीं । देवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा जो प्रमाण पहले कह आये हैं उसके संख्यातवें भाग इन आठ राशियोंका प्रमाण है । क्योंकि, ये आठों योग संज्ञियोंके ही होते हैं असंज्ञियोंके नहीं, क्योंकि, असंज्ञियोंमें ये आठों योग प्रतिषिद्ध हैं । संज्ञियोंमें भी प्रधान देव ही हैं, क्योंकि, शेष तीन गतिके संज्ञी जीव देवोंके संख्यातवें भाग ही हैं । वहां देवोंमें भी प्रधान काययोगियोंकी राशि है, क्योंकि, काययोगियोंका प्रमाण मनोयोगियों और वचनयोगियोंसे संख्यातगुणा है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

---

१ मनोयोगिनो ×× मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८.

२ प्रतिषु 'पहाण्ण' इति पाठः ।

जोगद्धप्पाबहुगादो । तं जहा– 'सव्वत्थोवा मणजोगद्धा । वचिजोगद्धा संखेज्जगुणा । कायजोगद्धा संखेज्जगुणा त्ति ।' पुणो एदेसिमद्धाणं समासं काऊण तेण तिण्हं जोगाणं सण्णिरासिमोवट्टिय अप्पप्पणो अद्धाहि पुध पुध गुणिदे मण-वचि-कायजोगरासीओ हवंति । तदो ट्ठिदमेदं एदे अट्ठ वि मिच्छाइट्ठिरासीओ देवाणं संखेज्जदिभागो त्ति ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १०४ ॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तं पडि ओघजीवेहि सह एदेसिं समाणत्तमत्थि त्ति ओघमिदि उत्तं । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे तेहिंतो एदेसिं अत्थि महंतो भेदो । कुदो ? एदेसिमोघरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो । तं पि कधं णव्वदे ? पुव्वुत्तद्धप्पाबहुगादो । सेसं सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १०५ ॥

समाधान—योगकालके अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है । वह इसप्रकार है— 'मनोयोगका काल सबसे स्तोक है । वचनयोगका काल उससे संख्यातगुणा है । काययोगका काल वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है ।' अनन्तर इन कालोंका जोड़ करके जो फल हो उससे तीनों योगोंकी संज्ञी जीवराशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे अपने अपने कालसे पृथक् पृथक् गुणित करने पर मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगी जीवराशि होती है । इसलिये यह निश्चित हुआ कि ये आठ ही मिथ्यादृष्टि जीवराशियां देवोंके संख्यातवें भाग हैं ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पूर्वोक्त आठ योगवाले जीवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग है ॥ १०४ ॥

पल्योपमके असंख्यातवें भागके प्रति ओघ जीवोंके साथ इन आठ जीवराशियोंकी समानता है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलंबन करने पर तो सासादनादि संयतासंयतान्त गुणस्थानप्रतिपन्न ओघप्ररूपणासे गुणस्थानप्रतिपन्न इन आठ राशियोंमें महान् भेद है, क्योंकि, ये राशियां ओघराशिके संख्यातवें भाग हैं ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—पूर्वोक्त योगकालके अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है । शेष कथन सुगम है ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें

१ प्रतिषु 'जोगवदप्पा' इति पाठः ।

एत्थ ओघरासिणा संखेज्जत्तं पडि एदेसिं रासीणं समाणत्ते संते किमट्ठमोघमिदि ण परूविदं सुत्ते ? ण, एत्थ अवलंबिदपज्जवट्ठियणयत्तादो। सो वि एत्थ किमट्ठमवलंबिज्जदे ? जोगद्धप्पाबहुगमस्सिऊण रासिविसेसपदुप्पायणट्ठं। कधं जोगद्धप्पाबहुगमिदि वुत्ते वुच्चदे– 'सव्वत्थोवा सच्चमणजोगद्धा। मोसमणजोगद्धा संखेज्जगुणा। सच्चमोसमणजोगद्धा संखेज्जगुणा। असच्चमोसमणजोगद्धा संखेज्जगुणा। मणजोगद्धा विसेसाहिया। सच्चवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा। मोसवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा। सच्चमोसवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा। असच्चमोसवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा। वचिजोगद्धा विसेसाहिया। कायजोगद्धा संखेज्जगुणा[1] त्ति'।

वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ १०६ ॥

पूर्वोक्त आठ जीवराशियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी हैं ? संख्यात हैं ॥ १०५॥

यहां पर संख्यातत्वकी अपेक्षा प्रमत्तादि ओघराशिके साथ इन राशियोंकी समानता रहने पर सूत्रमें 'ओघं' ऐसा किसलिये नहीं कहा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यहां पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है, अतः सूत्रमें 'ओघं' ऐसा नहीं कहा।

शंका—वह पर्यायार्थिक नय भी यहां पर किसलिये ग्रहण किया गया है ?

समाधान—योगकालका आश्रय लेकर राशिविशेषका प्रतिपादन करनेके लिये यहां पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है।

योगकालके आश्रयसे अल्पबहुत्व किसप्रकार है, ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं— सत्य मनोयोगका काल सबसे स्तोक है। मृषामनोयोगका काल उससे संख्यातगुणा है। उभयमनोयोगका काल मृषामनोयोगके कालसे संख्यातगुणा है। अनुभयमनोयोगका काल उभय मनोयोगके कालसे संख्यातगुणा है। इससे मनोयोगका काल विशेष अधिक है। सत्य वचनयोगका काल मनोयोगके कालसे संख्यातगुणा है। मृषा वचनयोगका काल सत्य वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है। उभय वचनयोगका काल मृषा वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है। अनुभय वचनयोगका काल उभय वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है। वचनयोगका काल अनुभय वचनयोगके कालसे विशेष अधिक है। काययोगका काल वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है।

वचनयोगियों और असत्यमृषा अर्थात् अनुभय वचनयोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ १०६ ॥

१ अंतोमुहुत्तमेत्ता चउमणजोगा कमेण संखगुणा। तज्जोगो सामण्णं चउवचिजोगा तदो दु संखगुणा ॥ तज्जोगो सामण्णं काओ संखाहदो तिजोगमिदं। गो. जी. २६२-२६३.

एत्थ मिच्छाइट्ठी इदि एगवयणणिद्देसो, केवडिया इदि बहुवयणणिद्देसो; कधमेदाणं भिण्णाहियरणाणमेयट्ठपउत्ती ? ण, एयाणेयाणमण्णोण्णाजहवुत्तीणमेयट्ठत्ताविरोहा । सेसं सुगमं । असंखेज्जा इदि सामण्णेण णवविहस्सासंखेज्जस्स गहणे पसत्ते अणिच्छिदासंखेज्जपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ १०७ ॥

एदं सुत्तमइसुगमं । अणिच्छिदासंखेज्जासंखेज्जवियप्पपडिसेहणिमित्तमुत्तरसुत्तावदारो भवदि[1]—

खेत्तेण वचिजोगि[2]-असच्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण ॥ १०८ ॥

वचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो च बीइंदियप्पहुडीणमुवरिमाणं जीवसमासाणं भासापज्जत्तीए पज्जत्तयाणं भवदि, तेण बि-ति-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियपज्जत्तरासीओ

शंका—इस सूत्रमें 'मिच्छाइट्ठी' यह एकवचन निर्देश है, और 'केवडिया' यह बहुवचन निर्देश है। अतएव भिन्न भिन्न अधिकरणवाले इन दोनोंकी एकार्थमें कैसे प्रवृत्ति हो सकती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, एक और अनेक अन्योन्य अजहद्वृत्ति हैं, इसलिये इन दोनोंकी एकार्थमें प्रवृत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

शेष कथन सुगम है। 'असंख्यात हैं' इसप्रकार सामान्य वचन देनेसे नौ प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होता है, अतएव अनिच्छित असंख्यातोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा वचनयोगी और अनुभय वचनयोगी जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ १०७ ॥

यह सूत्र अतिसुगम है। अनिच्छित असंख्यातासंख्यातरूप विकल्पके प्रतिषेध करनेके लिये आगेके सूत्रका अवतार हुआ है—

क्षेत्रकी अपेक्षा वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा अंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १०८ ॥

द्वीन्द्रियोंसे लेकर ऊपरके संपूर्ण जीवसमासोंमें भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवोंके वचनयोग और अनुभय वचनयोग पाया जाता है, इसलिये द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय

१ प्रतिषु 'भणदि' इति पाठः।

२ योगानुवादेन ×× वाग्योगिनश्च मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येया श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः। स. सि. १, ८.

एगखंडं करिय वचिजोग-कायजोगद्धासमासेण खंडिय एगखंडं वचिजोगद्धाए गुणिय पंचिंदियअसच्चमोसवचिजोगरासिं पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगरासी होदि। एत्थ सच्चादि-सेसवचिजोगरासिं पक्खित्ते वचिजोगरासी होदि। अद्धासमासस्स आवलियाए गुणगारत्तेण ट्ठविदसंखेज्जरूवेहिंतो पदरंगुलस्स हेट्ठा भागहारत्तेण ट्ठविदसंखेज्जरूवाणि जेण संखेज्जगुणाणि तेण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो भागहारो भवदि।

सेसाणं मणजोगिभंगो[1] ॥ १०९ ॥

जधा मणजोगरासी ओघसासणादीणं संखेज्जदिभागो, तहा वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीसु सासणादओ ओघसासणादीणं संखेज्जदिभागो। सेसं सुगमं।

संपहि अप्पाबहुगबलेण पुव्विल्लसुत्तेसु वुत्तरासीणमवहारकाला परूविज्जंते। तं जहा– संखेज्जरूवेहि सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धे वग्गिदे वचिजोगिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो

और असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवराशिको एकत्रित करके और उसे वचनयोग और काययोगके कालके जोड़रूप प्रमाणसे खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे उसे वचनयोगके कालसे गुणित करके जो प्रमाण हो उसमें पंचेन्द्रिय अनुभय वचनयोगी राशिके मिला देने पर अनुभय वचनयोगी जीवराशि होती है। इसमें सत्यवचनयोगी जीवराशि आदि शेष वचनयोगी जीवराशियोंके मिला देने पर वचनयोगी जीवराशि होती है। यहां पर अद्धासमासके लिये आवलीके गुणकाररूपसे स्थापित संख्यातसे प्रतरांगुलके नीचे भागहाररूपसे स्थापित संख्यात चूंकि संख्यातगुणा है, इसलिये प्रकृतमें प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग भागहार है।

सासादनसम्यग्दृष्टि आदि शेष गुणस्थानवर्ती वचनयोगी और अनुभय वचनयोगी जीव सासादनसम्यग्दृष्टि आदि मनोयोगिराशिके समान हैं ॥ १०९ ॥

जिसप्रकार मनोयोगी जीवराशि ओघसासादनसम्यग्दृष्टि आदिके संख्यातवें भाग है, उसीप्रकार वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवराशि ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके संख्यातवें भाग है। शेष कथन सुगम है।

अब अल्पबहुत्वके बलसे पूर्वोक्त सूत्रोंमें कही गई राशियोंके अवहारकाल कहे जाते हैं। वे इसप्रकार हैं— संख्यातसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसके वर्गित करने पर वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे इसी वचनयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर वैक्रियिक काययोगियोंका अवहारकाल

[1] वियोगिनां सासादनसम्यग्दृष्ट्यादयः संयतासंयतान्ताः पल्योपमासंख्येयभागप्रमिताः। स. सि. १, ८.

होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वेउव्वियकायजोगिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्ज-रूवेहि गुणिदे सच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोस-वचिजोगिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चवचिजोगिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मणजोगिअवहारकालो होदि। तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोसमण-जोगिअवहारकालो होदि तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमणजोगिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वेउव्वियमिस्सअवहारकालो होदि। किं कारणं? जेण अंतो-मुहुत्तमेत्तवेउव्वियमिस्सुवक्कमणकालादो संखेज्जवस्साउवदेवाणमुवक्कमणकालो संखेज्जगुणो तेण देवाणं संखेज्जदिभागो वेउव्वियमिस्सरासी होदि। होंतो वि सच्चमणरासिस्स संखेज्जदिभागो। कुदो? सच्चमणजोगद्धोवट्टिदसयलद्धासमासअंतोमुहुत्तमेत्तद्धाए आव-लियगुणगारसंखेज्जरूवेहिंतो वेउव्वियमिस्सद्धोवट्टिदसंखेज्जवस्सेसु संखेज्जगुणरूवोव-लंभादो।

संपहि ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव

होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर उभय वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर मृषा वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर सत्यवचनयोगियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर मनयोगियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे इसी मनोयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय मनोयोगियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर उभय मनोयोगियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर मृषा मनोयोगियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर सत्यमनोयोगियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका अवहारकाल होता है।

शंका—इसका क्या कारण है?

समाधान—चूंकि अन्तर्मुहूर्तमात्र वैक्रियिकमिश्रके उपक्रमणकालसे संख्यात वर्षकी आयुवाले देवोंका उपक्रमणकाल संख्यातगुणा है, इससे तो यह सिद्ध हुआ कि वैक्रियिकमिश्र-काययोगियोंकी राशि देवोंके संख्यातवें भाग है, पर वह वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी राशि देवोंके संख्यातवें भाग होते हुए भी सत्यमनोयोगियोंके प्रमाणके संख्यातवें भाग है, क्योंकि, सत्यमनोयोगके कालसे सर्व कालके जोड़रूप अन्तर्मुहूर्त कालके अपवर्तित करने पर जो लब्ध आवे उसके लिये आवलीके गुणकार संख्यातसे वैक्रियिकमिश्रके कालसे अपवर्तित संख्यात वर्षोंमें संख्यातगुणी संख्या पाई जाती है।

अब ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो

पक्खित्ते कायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-भाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेउव्वियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तं हि संखेज्ज-रूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहार-कालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहार-कालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मणजोगिअवहारकालो होदि। तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि। (तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि।) तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोसमणजोगिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमणजोगि-अवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियकायजोगि-

लब्ध आवे उसे उसी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी असंयतसम्य-ग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहार-कालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस अनुभय वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर उभय-वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस उभय वचनयोगी असंयतसम्य-सम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मृषावचनयोगी असंयतसम्य-ग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर सत्यवचनयोगी असंयत-ग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस सत्यवचनयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मनयोगियोंका अवहारकाल होता है। इस मनयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी मनोयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय मनो-योगियोंका अवहारकाल होता है। इस अनुभय मनोयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर उभयमनोयोगियोंका अवहारकाल होता है। इस उभय मनोयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मृषामनोयोगियोंका अवहारकाल होता है। इस मृषामनोयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर सत्यमनोयोगियोंका अवहारकाल होता है। इस सत्यमनोयोगियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिक

असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे कम्मइयकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। एवं सम्मामिच्छाइट्ठिस्स। णवरि वेउव्वियमिस्सं कम्मइयं च छोड्डिय वत्तव्वं। ओघसासणसम्माइट्ठिअवहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तं हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेउव्वियकायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वचिजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो होदि। एवं मोसवचिजोगि-सच्चवचिजोगिअवहारकालाणं जहाकमेण संखेज्जरूवेहि गुणेयव्वं। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मणजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तदो सच्चमोसमण-

काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका भी अवहारकाल करना चाहिये। परंतु इतनी विशेषता है कि वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोगको छोड़कर ही कथन करना चाहिये। ओघ सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर उभय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार मृषावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीवोंका अवहारकाल लानेके लिये यथाक्रमसे संख्यातसे गुणित करना चाहिये। सत्यवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे इसी मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसके आगे

जोगि-मोसमणजोगि-सच्चमणाणं जहाकमेण संखेज्जरूवेहिं गुणिज्जदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियकायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियमिस्ससासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउव्वियमिस्सजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहार-कालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे कम्मइयसासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो होदि। एवं संजदासंजदाणं। णवरि ओघावहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते ओरालियकायजोगिसंजदासंजदाणं अवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहिं गुणिदे वचिजोगिसंजदासंजदअवहारकालो होदि। सेसं पुव्वं व वत्तव्वं। पमत्तादीणं वुच्चदे। मणजोग-वचिजोग-कायजोगद्धाणं समासेण अप्पप्पणो रासिम्हि भागे हिदे लद्धं तिप्पडिरासिं काऊण पुणो अप्पप्पणो अद्धाहि गुणिदे एक्केक्कम्हि गुणट्ठाणे मण-वचि-कायजोगरासीओ हवंति। पुणो सच्चमोस-असच्चमोसमणजोगद्धाणं समासेण मणजोगरासिं खंडिय लद्धं च दुप्पडिरासिं काऊण अप्पप्पणो अद्धाहि गुणिदे सच्चमोस-

उभयमनोयोगी, मृषामनोयोगी और सत्यमनोयोगी जीवोंका अवहारकाल लानेके लिये यथाक्रमसे संख्यातसे गुणित करना चाहिये। सत्यमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिककाययोगी सासादन-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असं-ख्यातवें भागसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहार-काल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार संयतासंयत वचनयोगी, मनोयोगी और काययोगियोंका अवहारकाल जानना चाहिये। यहां इतनी विशेषता है कि संयतासंयत ओघ अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी संयतासंयत ओघ अवहार-कालमें मिला देने पर औदारिककाययोगी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। शेष कथन पहलेके समान करना चाहिये। अब प्रमत्तसंयत आदिका द्रव्यप्रमाण कहते हैं— मनोयोग, वचनयोग और काययोगके कालके जोड़से अपने अपने गुणस्थानसंबन्धी राशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसकी तीन प्रतिराशियां करके पुनः उन्हें अपने अपने कालसे गुणित कर देने पर एक एक गुणस्थानमें मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगियोंकी राशियां होती हैं। पुनः उभय मनोयोग और अनुभय मनोयोगके कालोंके जोड़से मनोयोगी जीवराशिको खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी दो प्रतिराशियां करके अपने अपने कालसे गुणित करने पर उभय

१ प्रतिषु 'सच्चमोस-' इति पाठः।

असच्चमोसमणजोगरासीओ हवंति । एवं वचिजोगरासिस्स वि वत्तव्वं ।

कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी मूलोघं[1] ॥ ११० ॥

एदे दो वि रासीओ अणंता। अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण । खेत्तेण अणंताणंता लोगा इदि वुत्तं होदि । सेसं सुगमं ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति जहा मणजोगि-भंगो ॥ १११ ॥

एदं सुत्तं सुगमं । एत्थ धुवरासिविहाणं वुच्चदे । तं जहा– सगुणपडिवण्णमण-जोगि-वचिजोगिरासिं सिद्ध-अजोगिरासिं च कायजोगिभजिदं एदेसिं वग्गं च सव्वजीव-रासिम्हि पक्खित्ते कायजोगिधुवरासी होदि । तं पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिम्हि संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते ओरालियकायजोगिधुवरासी होदि ।

मनोयोगी और अनुभय मनोयोगी जीवराशियां होती हैं । इसीप्रकार वचनयोगी जीवराशिका भी कथन करना चाहिये ।

काययोगियों और औदारिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ ११० ॥

उपर्युक्त ये दोनों भी राशियां अनन्त हैं । कालकी अपेक्षा काययोगी और औदारिक-काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं और क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं, यह इस कथनका तात्पर्य है । शेष कथन सुगम है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक काययोगी और औदारिककाययोगी जीव मनोयोगियोंके समान हैं ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है । अब यहां पर ध्रुवराशिकी विधिका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है– गुणस्थानप्रतिपन्न मनोयोगिराशि, वचनयोगिराशि, सिद्धराशि और अयोगि-राशिको तथा इन चारों राशियोंके वर्गमें काययोगिराशिका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर काययोगियोंकी ध्रुवराशि होती है । अनन्तर इसकी प्रतिराशि करके उनमेंसे एक राशिमें संख्यातका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ध्रुवराशिमें मिला देने पर औदारिककाययोगियोंकी ध्रुवराशि होती है । सासादनसम्यग्दृष्टि

१ काययोगिषु मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ता. । स. सि. १, ८ तदूणा ससारी एक्कजोगा हु । गो. जी. २६१.

सासणादीणं सग-सगअवहारकाले संखेज्जरूवेहि[1] खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते काय-जोगिसासणादिगुणपडिवण्णाणं अवहारकाला भवंति। एदे अवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियकायजोगिसासणादीणमवहारकाला भवंति । कुदो ? तिरिक्ख-मणुस्सगुणपडिवण्णरासीणं देवगुणपडिवण्णरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तादो। संजदा-संजदाणं पुण कायजोगिअवहारकालो चेव ओरालियकायजोगिअवहारकालो होदि, तत्थ तव्वदिरित्तकायजोगाभावादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी मूलोघं[2] ॥ ११२ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं । एत्थ धुवरासी उच्चदे। ओरालियकायजोगिधुवरासिं पुव्वं परूविदं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे ओरालियमिस्सकायजोगिधुवरासी होदि । कुदो ? सुहुमे-इंदियअपज्जत्तरासीए पज्जत्तरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो । तं जहा– तिरिक्ख-मणुस-अपज्जत्तद्धादो पज्जत्तद्धा संखेज्जगुणा। ताणमद्धाणं समासेण तिरिक्खरासिं खंडिय

आदि गुणस्थानोंके अपने अपने अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे इसी सामान्य अवहारकालमें मिला देने पर काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थान-प्रतिपन्न जीवोंके अवहारकाल होते हैं। इन अवहारकालोंको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंके अवहारकाल होते हैं, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यंच और मनुष्य राशियां गुणस्थानप्रतिपन्न देवराशिके असंख्यातवें भागमात्र हैं । औदारिककाययोगकी अपेक्षा संयतासंयतोंका अवहारकाल ही औदारिककाययोगियोंका अवहारकाल है, क्योंकि, संयतासंयत गुणस्थानमें औदारिककाय-योगको छोड़कर और दूसरा कोई काययोग नहीं पाया जाता है ।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥११२॥

यह सूत्र भी सुगम है। अब यहां ध्रुवराशिका कथन करते हैं— पहले जो औदारिक काययोगियोंकी ध्रुवराशि कह आये हैं उसे संख्यातसे गुणित करने पर औदारिकमिश्रकाय-योगियोंकी ध्रुवराशि होती है, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि पर्याप्त राशिके संख्यातवें भागमात्र है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— तिर्यंच और मनुष्योंके अपर्याप्त कालसे पर्याप्त काल संख्यातगुणा है। पुन उन कालोंके जोड़से तिर्यंच राशिको खंडित करके

१ प्रतिषु ' सखेज्जरूवे' इति पाठ ।

२ कम्मोरालियमिस्सयओरालद्धासु संचिदअणंता । कम्मोरालियमिस्सयओरालियजोगिणो जीवा । समय-त्तयसंखावलिसंखगुणावलिसमासहिदरासी । सगगुणगुणिदे थोवो असंखसंखाहदो कमसो ॥ गो जी. २६४–२६५

लद्धमपज्जत्तद्धाए गुणिदे ओरालियमिस्सरासी हवदि । तमद्धाए गुणगारेण गुणिदे ओरालियकायजोगरासी हवदि । तेण ओरालियकायजोगरासीदो ओरालियमिस्सकायजोगरासी संखेज्जगुणहीणो ।

सासणसम्माइट्ठी ओघं ॥ ११३ ॥

सासणसम्माइट्ठिणो देव-णेरइया जेण तिरिक्ख-मणुस्सेसु उववज्जमाणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता लब्भंति तेण एदेसिं पमाणपरूवणाए ओघभंगो हवदि । एदेसिमवहारकालो वुच्चदे । तं जहा– ओरालियकायजोगिसासणअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? देव-णेरइएहिंतो तिरिक्ख-मणुस्सेसु उप्पज्जमाणरासिणो पुव्वट्ठिदरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तादो ।

असंजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ११४ ॥

देव णेरइयसम्माइट्ठिणो मणुसेसु उववज्जमाणा संखेज्जा चेव लब्भंति, मणुसपज्जत्तरासिस्स अण्णहा असंखेज्जत्तप्पसंगा । ओरालियमिस्सकायजोगम्हि सुत्ताविरुद्धेण

जो लब्ध आवे उसे अपर्याप्त कालसे गुणित कर देने पर औदारिकमिश्रकाययोगी राशि होती है । इस औदारिकमिश्रकाययोगी जीवराशिको औदारिककाययोगके कालके गुणकारसे गुणित कर देने पर औदारिककाययोगीराशि होती है । इसलिये औदारिककाययोगी जीवराशिसे औदारिकमिश्रकाययोगी जीवराशि संख्यातगुणी हीन है, यह सिद्ध हुआ ।

औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ ११३ ॥

चूंकि तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए सासादनसम्यग्दृष्टि देव और नारकी जीव पल्योपमके असंख्यातवें भाग पाये जाते हैं, इसलिये औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणाके समान होती है। अब इनका अवहारकाल कहते हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, देव और नारकियोंमेंसे तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाली राशियां पहले स्थित राशिके असंख्यातवें भागमात्र होती हैं ।

असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली औदारिकमिश्रकाययोगी जीव कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ११४ ॥

सम्यग्दृष्टि देव और नारकी जीव मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए संख्यात ही पाये जाते हैं । यदि ऐसा न माना जाय तो मनुष्य पर्याप्त राशिको असंख्यातपनेका प्रसंग आ जाता है ।

आइरिओवएसेण[1] सजोगिकेवलिणो चत्तालीसं हवंति । तं जहा– कवाडे आरुहंता वीस २०, ओदरंता वीसेत्ति २० ।

वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवाणं संखेज्जदिभागूणो[2] ॥ ११५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । देवाणं जो रासी[3] अप्पप्पणो संखेज्जदिभाएण परिहीणो वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्ठीणं पमाणं होदि । कुदो ? देव-णेरइयरासिमेगट्ठं करिय मण-वचिकायजोगद्धासमासेण खंडिय लद्धं तिप्पडिरासिं काऊण अप्पप्पणो अद्धाहि गुणिदे सग-सगरासीओ हवंति । जेण मण-वचिजोगरासीओ देवाणं संखेज्जदिभागो हवंति,

विशेषार्थ—असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिश्रकाययोग तिर्यंच और मनुष्य दोनोंमें पाया जाता है। फिर भी जो सम्यग्दृष्टि जीव मरकर तिर्यंचोंमें उत्पन्न होते हैं वे मनुष्य ही होते हैं, अतएव ऐसे उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण स्वल्प ही रहेगा। तथा मनुष्यगतिसे जो जीव सम्यक्त्वके साथ मनुष्योंमें उत्पन्न होंगे उनका भी प्रमाण स्वल्प ही रहेगा। अब रह गई नरक और देवगतिकी बात, सो इन दोनों गतियोंसे सम्यग्दृष्टि मरकर मनुष्योंमें ही उत्पन्न होते हैं। किन्तु पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण संख्यात ही है। अतएव नरक और देवगतिसे मरकर मनुष्योंमें होनेवाले सम्यग्दृष्टि जीव संख्यात ही उत्पन्न होंगे, अधिक नहीं। इसलिये औदारिकमिश्रकाययोगी सम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण संख्यात ही होगा, अधिक नहीं, यह सिद्ध हो जाता है।

सूत्रके अविरुद्ध आचार्योंके उपदेशानुसार औदारिकमिश्रकाययोगमें सयोगिकेवली जीव चालीस होते हैं। इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— कपाट समुद्घातमें आरोहण करनेवाले औदारिकमिश्रकाययोगी वीस और उतरते हुए वीस होते हैं।

वैक्रियिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंके संख्यातवें भाग कम हैं ॥ ११५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—अपनी अपनी राशिके संख्यातवें भागसे न्यून देवोंकी जो राशि है उतना वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण है, क्योंकि, देव और नारकियोंकी राशिको एकत्रित करके मनोयोग, वचनयोग और काययोगके कालके जोड़से खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी तीन प्रतिराशियां करके अपने अपने कालसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियोंका प्रमाण होता है। चूंकि मनोयोगी जीवराशि और वचनयोगी जीव-

१ प्रतिषु '-ओवएस ' इति पाठ ।

२ सुरणिरयकायजोगा वेगुव्वियकायजोगा हु ॥ गो. जी. २६९.

३ प्रतिषु ' रासीओ ' इति पाठ. ।

तेण वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्ठिरासिपमाणं संखेज्जदिभागपरिहीणदेवरासिणा समाणं भवदि।

एत्थ अवहारकालो उच्चदे। देव-णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिसमासम्मि मण-वचि-वेउव्वियमिस्सकाय-कम्मइयकायजोगिदेव-णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिसमासेण भागे हिदे संखेज्जरूवाणि लब्भंति। तेहि रूवूणेहि संखेज्जपदरंगुलमेत्तं देव-णेरइयसमासअवहारकालं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि।

सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ ११६ ॥

देवगुणपडिवण्णाणं रासिपमाणं अप्पप्पणो संखेज्जदिभाएण ऊणं वेउव्वियकायजोगिगुणपडिवण्णरासिपमाणं होदि। तं जहा— देव-णेरइयगुणपडिवण्णरासिम्हि अप्पप्पणो मण-वचि-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयरासीहि भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवेहि रूवूणेहि देव-णेरइयसमासअवहारकालं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेउव्वियकायजोगिगुणपडिवण्णाणमवहारकाला भवंति।

राशि देवोंके संख्यातवें भाग है, इसलिये वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण संख्यातवें भाग कम देवराशिके समान होता है।

अत्र यहां पर अवहारकालका कथन करते हैं— देव मिथ्यादृष्टिराशि और नारक मिथ्यादृष्टिराशिका जितना योग हो उसे मनोयोगी, वचनयोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी और कार्मणकाययोगी देव और नारकी मिथ्यादृष्टि राशिके योगसे भाजित करने पर संख्यात लब्ध आते हैं। एक कम उस संख्यातसे संख्यात प्रतरांगुलमात्र देव और नारकियोंके जोड़रूप अवहारकालको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उन्हीं दोनोंके जोड़रूप अवहारकालमें मिला देने पर वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वैक्रियिककाययोगी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ ११६ ॥

गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी राशिका जो प्रमाण है, अपनी अपनी उस राशिमेंसे संख्यात भाग न्यून करने पर वैक्रियिककाययोगी गुणस्थानप्रतिपन्न अपनी अपनी राशिका प्रमाण होता है। वह इसप्रकार है— गुणस्थानप्रतिपन्न देव और नारक राशिमें अपनी अपनी मनोयोगी, वचनयोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी और कार्मणकाययोगी जीवोंकी राशियोंका भाग देने पर वहां जो संख्यात लब्ध आवे उसमें एक कम करके शेषसे देव और नारकियोंके योगरूप अवहारकालको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी देव और नारकियोंके मिले हुए अवहारकालमें मिला देने पर वैक्रियिककाययोगी गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अवहारकाल होते हैं।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवाणं संखेज्जदिभागो[1] ॥ ११७ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खाणं वुच्चदे। संखेज्जवस्साउअब्भंतरआवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तउवक्कमणकालेण[2] जदि[3] देवरासिसंचओ लब्भदि, तो एदम्हादो संखेज्जगुणहीणवेउव्वियमिस्सउवक्कमणकालम्हि केत्तियमेत्तरासिसंचयं लभामो त्ति इच्छारासिणा पमाणरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवेहि देवरासिम्हि भागे हिदे तत्थेगभागो वेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि। सेसं सुगमं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? देवोंके संख्यातवें भाग हैं ॥ ११७ ॥

अब इस सूत्रका व्याख्यान करते हैं— संख्यात वर्षकी आयुके भीतर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र उपक्रमण कालसे यदि देवराशिका संचय प्राप्त होता है, तो इससे संख्यातगुणे हीन वैक्रियिकमिश्र उपक्रमण कालके भीतर कितनामात्र राशिका संचय प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके इच्छाराशिसे प्रमाणराशिके भाजित करने पर वहां जो संख्यात लब्ध आवेंगे उससे देवराशिके भाजित करने पर वहां एक भागप्रमाण वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है। शेष कथन सुगम है।

विशेषार्थ—उत्पत्तिको उपक्रमण कहते हैं, और इस सहित कालको सोपक्रमकाल कहते हैं। यह सोपक्रमकाल आवलीके असंख्यातवें भागमात्र है। अर्थात् देवोंमें यदि निरन्तर जीव उत्पन्न हों तो इतने काल तक उत्पन्न होंगे। इसके पश्चात् अन्तर पड़ जायगा। वह अन्तरकाल जघन्य एक समय है और उत्कृष्ट सोपक्रमकालसे संख्यातगुणा है। देवोंमें संख्यात वर्षकी आयु लेकर अधिक जीव उत्पन्न होते हैं, इसलिये यहां उन्हींकी विवक्षा है। इसप्रकार संख्यात वर्षके भीतर जितने उपक्रमकाल होते हैं उनमें यदि देवराशिका संचय प्राप्त होता है तो इससे संख्यातगुणे हीन मिश्रकालमें (अपर्याप्त अवस्थाके सोपक्रमकालमें) कितने जीव होंगे। इसप्रकार त्रैराशिक करने पर सर्व देवराशिके संख्यातवें भागमात्र वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका प्रमाण होता है। यहां असंख्यात वर्षकी आयुवाले देवों और नारकियोंकी अपेक्षा वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंके प्रमाणके नहीं लानेका कारण यह है कि उनका अनुपक्रमकाल अधिक होनेसे उनमें वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका प्रमाण अल्प होगा, इसलिये उनकी यहां विवक्षा नहीं की है।

१ सोवक्कमाणुवक्कमकालो सखेज्जवासठिदिवाणे। आवलिअसंखभागो सखेज्जावलिपमा कमसो ॥ तहिं सव्वे सुद्धसला सोवक्कमकालदो दु सखगुणा। तत्तो सखगुणूणा अपुण्णकालम्हि सुद्धसला ॥ त सुद्धसलागाहिदणियरासिमपुण्णकाललद्धाहिं। सुद्धसलागाहिं गुणे वेंतरवेगुव्वमिस्सा हु ॥ तहिं सेसदेवणारयमिस्सजुदे सव्वमिस्सवेगुव्व ॥ गो. जी. २६६–२६९.

२ तत्र उत्पत्ति उपक्रम, तत्सहित काल सोपक्रमकाल निरन्तरोत्पत्तिकाल इत्यर्थ। गो. जी २६६ टीका

३ अ प्रतौ '–कालेण गहिदे जदि' इति पाठ.

सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ ११८ ॥

तिरिक्ख-मणुससासण-असंजदसम्माइट्ठिणो जेण देवेसुप्पज्जमाणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता लब्भंति तेणेदेसिं पमाणपरूवणा ओघं, ओघेण समाणा त्ति वुत्तं होदि। एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे। तं जहा– ओरालियमिस्ससासणसम्माइट्ठिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। ओरालियकायजोगिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। किं कारणं? तिरिक्खाणमसंखेज्जदिभागस्स देवेसुप्पत्तीदो। केण कारणेण वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासणेहिंतो ओरालियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा? ण एस दोसो, कुदो? देवेसुप्पज्जमाणतिरिक्खसासणेहिंतो तिरिक्खेसुप्पज्जमाणदेवसासणाणमसंखेज्जगुणत्तादो।

आहारकायजोगीसु पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, चदुवण्णं[१] ॥ ११९ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ ११८ ॥

चूंकि सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंच और मनुष्य देवोंमें उत्पन्न होते हुए पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण पाये जाते हैं, इसलिये इनके प्रमाणकी प्ररूपणा ओघ अर्थात् ओघप्ररूपणाके तुल्य होती है, यह इसका अभिप्राय है। अब इनके अवहारकालकी उत्पत्तिका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है— औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। असंयतसम्यग्दृष्टि औदारिककाययोगियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, तिर्यंचोंके असंख्यातवें भागप्रमाण राशि देवोंमें उत्पन्न होती है।

शंका— वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंसे औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणे किस कारणसे हैं?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, देवोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंसे तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले देव सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणे पाये जाते हैं।

आहारकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं?

---

१ आहारकायजोगा चउवण्ण होंति एकसमयम्हि ॥ गो. जी. २७०

आहारसरीरमण्णगुणट्ठाणेसु णत्थि त्ति जाणावणट्ठं पमत्तग्गहणं कदं। सेसं सुट्ठु सुगमं।

आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥ १२० ॥

एत्थ आइरियपरंपरागदोवएसेण आहारमिस्सकायजोगे सत्तावीस २७ जीवा हवंति। अहवा आहारमिस्सकायजोगे जिणदिट्ठभावा संखेज्जजीवा हवंति, ण सत्तावीसं, सुत्ते संखेज्जणिद्देसण्णहाणुववत्तीदो मिस्सकायजोगेहिंतो आहारकायजोगीणं संखेज्जगुणत्तादो च। ण च दोण्हमेत्थ गहणं, अजहण्णअणुक्कस्ससंखेज्जस्स सव्वगहणादो, सव्वअपज्जत्तद्धाहिंतो एज्जत्तद्धाणं जहण्णाणं पि संखेज्जगुणत्तदंसणादो।

कम्मइयकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, मूलोघं[2] ॥ १२१ ॥

चौवन हैं ॥ ११९ ॥

प्रमत्तसंयत गुणस्थानको छोड़कर दूसरे गुणस्थानोंमें आहारशरीर नहीं पाया जाता है, इसका ज्ञान करानेके लिये प्रमत्तसंयत पदका ग्रहण किया। शेष कथन सुगम है।

आहारमिश्रकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? संख्यात हैं ॥ १२० ॥

यहां पर आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशानुसार आहारमिश्रकाययोगमें सत्तावीस जीव होते हैं। अथवा, आहारमिश्रकाययोगमें जिनदेवने जितनी संख्या देखी हो उतने संख्यात जीव होते हैं, सत्तावीस नहीं, क्योंकि, सूत्रमें संख्यात, यह निर्देश अन्यथा बन नहीं सकता है। तथा मिश्रयोगियोंसे आहारकाययोगी जीव संख्यातगुणे हैं, इससे भी प्रतीत होता है कि आहारमिश्रकाययोगी जीव संख्यात हैं, सत्तावीस नहीं। कदाचित् कहा जाय कि दो भी तो संख्यात हैं। परंतु दो यह संख्या संख्यात होते हुए भी उसका यहां पर ग्रहण नहीं किया है, क्योंकि, सबके द्वारा अजघन्यानुत्कृष्टरूप संख्यातका ही ग्रहण किया है। अथवा, सर्व अपर्याप्तकालसे जघन्य पर्याप्त काल भी संख्यातगुणा है, इससे भी यही प्रतीत होता है कि आहारमिश्रकाययोगी सत्तावीस नहीं लेना चाहिये।

कार्मणकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १२१ ॥

---

१ आहारमिस्सजोगा सत्तावीसा दु उक्कस्स ॥ गो. जी. २७०

२ गो. जी. २६४–२६५.

जदो सव्वजीवरासी गंगापवाहो व्व णिरंतरं विग्गहं काऊणुप्पज्जदि, तेण कम्मइय-रासिस्स मूलोघपरूवणा ण विरुद्धा। एदस्स सुत्तस्स धुवरासी वुच्चदे। कायजोगिधुव-रासिमंतोमुहुत्तेण गुणिदे कम्मइयजोगिधुवरासी होदि। तं जहा— संखेज्जावलियमेत्त-अंतोमुहुत्तकालेण जदि सव्वजीवरासिस्स संचओ होदि, तो तिण्हं समयाणं केत्तियं संचयं लभामो त्ति पमाणेण इच्छागुणिदफलमोवट्टिय अंतोमुहुत्तोवट्टियसव्वजीवरासी आगच्छदि।

सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १२२ ॥

जेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठिणो विग्गहं काऊण देवेसुप्पज्जमाणा लब्भंति, देव-तिरिक्खसासणसम्माइट्ठिणो पलिदोवमस्स असंखे-ज्जदिभागमेत्ता तिरिक्ख-देवेसु विग्गहं करिय उववज्जमाणा लब्भंति, तेण एदेसिं पमाण-परूवणा ओघपरूवणाए तुल्ला। एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे। असंजदसम्मादिट्ठि-सासण-सम्मादिट्ठिवेउव्वियमिस्सअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे कम्मइयकाय-जोगिअसंजदसम्मादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिअवहारकाला भवंति। कुदो? विग्गहं करिय

चूंकि सर्व जीवराशि गंगानदीके प्रवाहके समान निरंतर विग्रह करके उत्पन्न होती है, इसलिये कार्मणकाय राशिकी प्ररूपणा मूलोघ प्ररूपणाके समान होती है, विरुद्ध नहीं।

अब इस सूत्रमें कहे गये कार्मणकाययोगियोंके प्रमाणकी ध्रुवराशि कहते हैं— काययोगियोंकी ध्रुवराशिको अन्तर्मुहूर्तसे गुणित करने पर कार्मणकाययोगियोंकी ध्रुवराशि होती है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— संख्यात आवलीमात्र अन्तर्मुहूर्तकालके द्वारा यदि सर्व जीवराशिका संचय होता है, तो तीन समयमें कितना संचय प्राप्त होगा, इसप्रकार इच्छाराशिसे फलराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे प्रमाणराशिसे भाजित करने पर अन्तर्मुहूर्तकालसे भाजित सर्व जीवराशि आती है।

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि कार्मणकाययोगी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १२२॥

चूंकि पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीव विग्रह करके देवोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं। तथा पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण देव सासादनसम्यग्दृष्टि जीव, और उतने ही तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीव क्रमसे तिर्यंच और देवोंमें विग्रह करके उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं, इसलिये सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि कार्मणकाययोगियोंकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणाके तुल्य है। अब इनके अवहारकालकी उत्पत्तिको कहते हैं— असंयतसम्यग्दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि वैक्रियिक-मिश्र अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर क्रमसे कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि और सासासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अवहारकाल होते हैं, क्योंकि, विग्रह

मरमाणरासीए देवेसु उववज्जमाणरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तादो ।

सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १२३ ॥

एत्थ पुव्वाइरिओवएसेण सट्ठी जीवा हवंति । कुदो ? पदरे वीस, लोगपूरणे वीस, पुणरवि ओदरमाणा पदरे वीस चेव भवंति त्ति ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा ओरालियकायजोगरासीओ। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियमिस्सकायजोगरासी होदि। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायमिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणमिच्छाइट्ठी होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणमिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणमिच्छा-

---

करके मरनेवाली राशि देवोंमें उत्पन्न होनेवाली राशिके असंख्यातवें भागमात्र पाई जाती है ।

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली जीव कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १२३ ॥

पूर्व आचार्योंके उपदेशानुसार सयोगिकेवलियोंमें कार्मणकाययोगी जीव साठ होते हैं, क्योंकि, प्रतर समुद्घातमें वीस, लोकपूरण समुद्घातमें वीस और उतरते हुए प्रतर समुद्घातमें पुनः वीस जीव होते हैं ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण औदारिककाययोगी जीवराशि है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण औदारिकमिश्रकाययोगी जीवराशि है । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि राशि है । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण सिद्ध जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग उभय वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषा वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्य वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभय मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषा मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्य मनोयोगी

इट्ठी होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसंमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कदे बहुखंडा वेउव्वियकायजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कदे असच्चमोसवचिजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कदे बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचि-

मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिकमिश्र-काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिक-काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभय वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषा वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्य वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभय मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषा मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्य मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिककाययोगी सम्य-ग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय वचनयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभय वचनयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषावचनयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर

जोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छा-इट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। ओघसासणरासीदो ओघसम्मामिच्छाइट्ठिरासी संखेज्जगुणो त्ति सुत्तसिद्धो। संपहि ओघसम्मामिच्छाइट्ठिरासिस्स संखेज्जदिभागो सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी कधं ओघसासणरासीदो संखेज्जगुणो होदि त्ति उत्ते वुच्चदे– जोगद्धागुणगारादो[1] सम्मामिच्छाइट्ठिरासिं पडि सासणसम्मा-इट्ठिरासिस्स गुणगारो बहुगो, तेण सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी सेसस्स संखेज्ज-भागो[2]। तं कधं णव्वदे सुत्तेण विणा? णत्थि सुत्तं वक्खाणं वा, किंतु आइरियवयणमेव केवलमत्थि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियकायजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि।

बहुभाग सत्यवचनयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभयमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषामनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि संख्यातगुणी है, यह सूत्र सिद्ध है। अब ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिके संख्यातवें भागप्रमाण सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे संख्यातगुणी कैसे है, आगे इसी विषयके पूछने पर कहते हैं– योगकालके गुणकारसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका गुणकार बहुत है, इसलिये सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि भागाभागमें मृषामनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टिका प्रमाण आनेके अनन्तर जो एक भाग शेष रहता है उसका संख्यातवां भाग है।

शंका—सूत्रके विना यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—यद्यपि इस विषयमें सूत्र या व्याख्यान नहीं पाया जाता है, किंतु आचार्योंके वचन ही केवल पाये जाते हैं, जिससे यह कथन जाना जाता है।

सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभयवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि

१ आ प्रतौ 'जोगद्धाए गुण–' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'संखेज्जा भागो' इति पाठः।

सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठी होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सच्चमणजोगिसासणसम्माइट्ठी होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा ओरालियकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियकायजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियकायजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोस-

है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभयवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषावचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभयमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभयमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषामनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग औदारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग औदारिककाययोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभयवचनयोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभयवचनयोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषावचनयोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यवचनयोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभयमनोयोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभयमनोयोगी संयतासंयत जीवराशि

मणजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सुत्तेण विणा वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी तिरिक्खसम्मामिच्छाइट्ठिप्पहुडि तीहिं वि रासीहिंतो असंखेज्जगुणहीणो त्ति कधं णव्वदे ? आइरियवयणादो। आइरियवयणमणेयंतमिदि चे, होदु णाम, णत्थि मज्झेत्थ अग्गहो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासणा होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं जाणिऊण णेयव्वं।

अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाणादिभेएण। सत्थाणे पयदं। पंचमणजोगि-तिण्णिवचिजोगि-

है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषामनोयोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी संयतासंयत जीवराशि है।

शंका—सूत्रके विना वैक्रियिकमिश्र काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे लेकर तीनों राशियोंसे असंख्यातगुणी हीन है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह कथन आचार्योंके वचनसे जाना जाता है।

शंका—आचार्योंके वचनोंमें अनेकान्त है, अर्थात् वे अनेक प्रकारके पाये जाते हैं ?

समाधान—यदि वे अनेक प्रकारके पाये जाते हैं तो पाये जाओ, इसमें हमारा आग्रह नहीं है।

सत्यमनोयोगी संयतासंयत राशिके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष कथन समझकर ले जाना चाहिये।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है। पांचों मनोयोगी, तीन वचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका

वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं सत्थाणस्स देवगइभंगो । वचिजोगि-असच्चमोस-वचिजोगीणं सत्थाणस्स पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तभंगो । सेसकायजोगीसु मिच्छाइट्ठीणं सत्थाणं णत्थि । सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं सत्थाणस्स ओघभंगो ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा असच्चमोसमणजोगिणो चत्तारि उवसामगा । असच्चमोसमणजोगिणो चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो सजोगिकेवली[1] संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा[2] । असच्चमोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । असच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व देवगतिके समान है । वचनयोगी और अनुभयवचनयोगियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । शेष काययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । उन्हींके सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है । अनुभय मनोयोगी चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक सबसे स्तोक हैं । अनुभय मनोयोगी चार गुणस्थानवर्ती क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभय मनोयोगी सयोगिकेवली जीव उक्त क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभय मनोयोगी अप्रमत्तसंयत जीव उक्त सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभय मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीव उक्त अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभयमनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उक्त प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उक्त असंयत अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उक्त सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी संयतासंयतोंका अवहारकाल उक्त सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं अनुभयमनोयोगी संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य उक्त संयतासंयतोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सम्यमिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य उक्त सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । अनुभयमनो-

१ प्रतिपु ' अजोगिकेवली ' इति पाठ ।

२ प्रतिपु असखे० गुणा ' इति पाठः ।

असच्चमोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । असच्चमोसमणजोगिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । दव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । एवं चत्तारिमण-पंचवचिजोगीणं परत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं । वेउव्वियकायजोगीसु सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । उवरि मणजोगपरत्थाणभंगो । वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । उवरि मणजोगिपरत्थाणभंगो । सव्वत्थोवा कायजोगिणो उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । पलिदोवमादो उवरि मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । एवं ओरालियकायजोगीणं पि वत्तव्वं । ओरालियमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली । असंजदसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । आहार-आहारमिस्सेसु णत्थि सत्थाणं परत्थाणं

योगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य उक्त सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। पल्योपम उक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। अनुभयमनोयोगी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल पल्योपमसे असंख्यातगुणा है। उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। उन्हीं अनुभयमनोयोगी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। जगप्रतर द्रव्यप्रमाणसे असंख्यातगुणा है। लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार शेष चार मनोयोगी और पांचों वचनयोगियोंका परस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये। वैक्रियिककाययोगियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। इसके ऊपर मनोयोगके परस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये। वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। असंयतसम्यग्दृष्टि वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य सासादन द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। इसके ऊपर मनोयोगियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये। काययोगी उपशामक सबसे स्तोक हैं। काययोगी क्षपक काययोगी उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमके ऊपर काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं। इसीप्रकार औदारिककाययोगियोंका भी कथन करना चाहिये। औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं। असंयतसम्यग्दृष्टि जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंयत सम्यग्दृष्टियोंसे असंख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। पल्योपम सासादनसम्यग्दृष्टि औदारिकमिश्रकाययोगियोंसे असंख्यातगुणा है। औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव पल्योपमसे

वा। कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा सजोगिणो। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। पलिदोवममसंखेज्जगुणं। कम्मइयकायजोगिमिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा।

सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा आहारमिस्सकायजोगिजीवा। आहारकायजोगिजीवा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। सव्वेसिमसंजदसम्मादिट्ठीणं अवहारकालो असंखेज्जगुणो। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं त्ति। किमट्ठमेवं जाणिज्जदे? वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगीसु सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिरासीणं माहप्पं ण जाणिज्जदि त्ति। पुव्वं किमिदं परूविदं? ण, आइरियाणं तस्स अभिप्पायंतरदरिसणट्ठत्तादो। पलिदोवमादो उवरि वचिजोगिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। असच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो विसेसाहिओ। वेउव्वियकायजोगि-

अनन्तगुणे हैं। आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगमें स्वस्थान अथवा परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है। कार्मणकाययोगियोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं। असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सयोगियोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य सासादन द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। पल्योपम असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य पल्योपमसे अनन्तगुणा है।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है। आहारमिश्रकाययोगी जीव सबसे स्तोक है। आहारकाययोगी जीव आहारमिश्र जीवोंसे संख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसंयत जीव आहारकाययोगियोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। सभीका असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये।

शंका—ऐसा किसलिये समझें?

समाधान—वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोगियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि राशियोंका माहात्म्य अर्थात् परस्पर अल्पबहुत्व नहीं जाना जाता है, इसलिये ऐसा समझना चाहिये।

शंका—तो फिर इनके अल्पबहुत्वका पहले प्ररूपण किसलिये किया है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वहां दूसरे आचार्योंका अभिप्रायान्तर दिखलाना उनके अल्पबहुत्वके कथनका प्रयोजन था।

पल्योपमके ऊपर वचनयोगियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। अनुभयवचनयोगियोंका अवहारकाल वचनयोगियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है। वैक्रियिककाययोगियोंका

अवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं सच्चमोसवचिजोगि-मोसवचिजोगि-सच्चवचिजोगि-मणजोगीणं अवहारकाला[1] संखेज्जगुणा। असच्चमोसमणजोगीणं अवहारकालो विसेसाहिओ। सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो संखेज्जगुणो। एवं मोसमणजोगि-सच्चमणजोगि-वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं अवहारकाला संखेज्जगुणा। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। सच्चमणजोगिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । एवं मोसमणजोगि-सच्चमोसमणजोगि-असच्चमोसमणजोगीणं। तदो मणजोगिविक्खंभसूई विसेसाहिया। सच्चवचिजोगिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । एवं मोसवचिजोगि-(सच्चमोसवचिजोगि)-वेउव्वियकायजोगि-असच्चमोसवचिजोगिविक्खंभसूचीओ संखेज्जगुणाओ । वचिजोगिविक्खंभसूई विसेसाहिया। सेढी असंखेज्जगुणा। तदो वेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। सच्चमणजोगिदव्वं संखेज्जगुणं। एवं मोसमणजोगि-सच्चमोसमणजोगि-असच्चमोसमणजोगिदव्वाणि जहाकमेण संखेज्जगुणाणि। मणजोगिदव्वं विसेसाहियं। सच्चवचिजोगिदव्वं

अवहारकाल अनुभयवचनयोगियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार उभयवचनयोगी, मृषावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीवोंका अवहारकाल उत्तरोत्तर संख्यातगुणा है। अनुभयमनोयोगियोंका अवहारकाल सत्यवचनयोगियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । उभयमनोयोगियोंका अवहारकाल अनुभयमनोयोगियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। इसीप्रकार असत्यमनोयोगी, सत्यमनोयोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका अवहारकाल उत्तरोत्तर संख्यातगुणा है। उन्हींकी अर्थात् वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। सत्यमनोयोगियोंकी विष्कंभसूची वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है। इसीप्रकार मृषामनोयोगी, उभयमनोयोगी और अनुभयमनोयोगियोंकी विष्कंभसूची भी समझना चाहिये। अनुभयमनोयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे मनोयोगियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है। सत्यवचनयोगियोंकी विष्कंभसूची मनोयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है। इसीप्रकार मृषावचनयोगी, उभयवचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी और अनुभयवचनयोगियोंकी विष्कंभसूचीयां भी उत्तरोत्तर संख्यातगुणी हैं। वचनयोगियोंकी विष्कंभसूची अनुभयवचनयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे विशेष अधिक है। जगश्रेणी वचनयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । जगश्रेणीसे वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। सत्यमनोयोगियोंका द्रव्य वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है। इसीप्रकार मृषामनोयोगी, उभयमनोयोगी, अनुभयमनोयोगियोंका द्रव्य यथाक्रमसे संख्यातगुणा है। मनोयोगियोंका द्रव्य अनुभय मनोयोगियोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है। सत्यवचनयोगियोंका

१ प्रतिषु ' अवहारकालमेत्तेण ' इति पाठः ।

संखेज्जगुणं। एवं मोसवचिजोगि-सच्चमोसवचिजोगि-वेउव्वियकायजोगि-असच्चमोसवचिजोगिदव्वाणि जहाकमेण संखेज्जगुणाणि। तदो वचिजोगिदव्वं विसेसाहियं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। तदो अजोइणो अणंतगुणा। कम्मइयकायजोगिणो अणंतगुणा। ओरालियमिस्सकायजोगिणो असंखेज्जगुणा। ओरालियकायजोगिणो मिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा।

एवं जोगमग्गणा समत्ता।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवीहि सादिरेयं[1] ॥ १२४ ॥

देवगइमग्गणाए देवीणं पमाणमेत्तियं होदि त्ति सुत्तम्हि ण वुत्तं, तो कधं जाणिज्जदे इत्थिवेदरासी देवीहितो सादिरेगो इदि? जदि वि एत्थ ण वुत्तो तो वि 'ईसाणकप्पवासियदेवाणमुवरि तम्हि चेव देवीओ संखेज्जगुणाओ। तदो सोहम्मकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा। तम्हि चेव देवीओ संखेज्जगुणाओ। पढमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्ज-

द्रव्य मनोयोगियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है। इसीप्रकार मृषावचनयोगी, उभयवचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी और अनुभय वचनयोगियोंका द्रव्य यथाक्रमसे संख्यातगुणा है। अनुभय वचनयोगियोंके द्रव्यसे वचनयोगियोंका द्रव्य विशेष अधिक है। जगप्रतर वचनयोगियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। लोकसे अयोगी जीव अनन्तगुणे हैं। अयोगियोंसे कार्मणकाययोगी जीव अनन्तगुणे हैं। कार्मणकाययोगियोंसे औदारिकमिश्रकाययोगी जीव असंख्यातगुणे हैं। औदारिकमिश्रकाययोगियोंसे औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव संख्यातगुणे हैं

इसप्रकार योगमार्गणा समाप्त हुई।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? देवियोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १२४ ॥

शंका—देवगति मार्गणामें देवियोंका प्रमाण इतना है, यह सूत्रमें नहीं कहा है, अतएव यह कैसे जाना जाता है कि स्त्रीवेदराशि देवियोंसे साधिक होती है?

समाधान—यद्यपि यहां जीवट्ठाणमें यह बात नहीं कही है तो भी 'ऊपर ईशानकल्पवासी देवोंके वहीं पर देवियां उनसे संख्यातगुणी हैं। उनसे सौधर्म कल्पवासी देव संख्यातगुणे हैं और वहीं पर देवियां देवोंसे संख्यातगुणी हैं। पहली पृथिवीमें नारकी जीव सौधर्म कल्पकी देवियोंसे असंख्यातगुणे हैं। भवनवासी देव नारकियोंसे

१ वेदानुवादेन स्त्रीवेदा ×× मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येया श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः। स. सि. १, ८. देवीहिं साहिया इत्थी। गो. जी. २७९.

गुणा। भवणवासियदेवा असंखेज्जगुणा। देवीओ संखेज्जगुणाओ। पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिणीओ संखेज्जगुणाओ। वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा। देवीओ संखेज्जगुणाओ। जोइसियदेवा संखेज्जगुणा। देवीओ संखेज्जगुणाओ त्ति' एदम्हादो खुद्दाबंधसुत्तादो जाणिज्जदे जहा देवाणं संखेज्जा भागा देवीओ होंति त्ति। तिरिक्खजोणिणीओ देवीणं संखेज्जदिभागो। ताओ देवीसु पक्खित्ते इत्थिवेदरासी होदि त्ति कट्टु देवीहि सादिरेयमिदि तासिं पमाणं सुत्ते वुत्तं।

तासिमवहारकालुप्पत्तिं वत्तइस्सामो। देवअवहारकालम्हि बत्तीसरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खिविय तिरिक्ख-मणुसित्थिवेदागमणणिमित्तं तत्तो एक्कस्स पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाए अवणिदे इत्थिवेदअवहारकालस्स भागहारो होदि। बत्तीसरूवाणि देव-अवहारकालस्स भागहारो होंति त्ति कधं णव्वदे? तेहिंतो देवीओ बत्तीसगुणा हवंति त्ति आइरियपरंपरागयुवदेसादो णव्वदे। एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे इत्थिवेद-रासी होदि।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं[1] ॥ १२५ ॥

असंख्यातगुणे हैं। तथा वहीं पर देवियां देवोंसे संख्यातगुणी हैं। पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती जीव भवनवासी देवोंसे संख्यातगुणे हैं। वाणव्यन्तर देव पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंसे संख्यातगुणे हैं। तथा वहीं पर देवियां देवोंसे संख्यातगुणी हैं। ज्योतिषी देव वाणव्यन्तर देवियोंसे संख्यातगुणे हैं। तथा वहीं पर देवियां देवोंसे संख्यातगुणी हैं।' इस खुद्दाबन्धके सूत्रसे यह जाना जाता है कि देवोंके संख्यात बहुभाग देवियां होती हैं। तथा तिर्यंच योनिमती जीव देवियोंके संख्यातवें भाग होते हैं। अतएव इन तिर्यंच योनिमतियोंके प्रमाणको देवियोंके प्रमाणमें मिला देने पर स्त्रीवेद जीवराशि होती है, ऐसा समझकर देवियोंसे कुछ अधिक इस-प्रकार स्त्रीवेदी जीवोंका प्रमाण सूत्रमें कहा।

अब स्त्रीवेदियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलाते हैं— देवोंके अवहारकालको बत्तीससे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी देव अवहारकालमें मिला कर जो योग हो उसमेंसे, तिर्यंच और मनुष्य स्त्रीवेदी जीवोंका प्रमाण लानेके लिये, एक प्रतरांगुलके संख्यातवें भागके निकाल लेने पर स्त्रीवेदी जीवोंका अवहारकाल होता है।

शंका— देव अवहारकालका भागहार बत्तीस होता है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— देवोंसे देवियां बत्तीसगुणी हैं, इसप्रकार आचार्य-परंपरासे आये हुए उपदेशसे यह जाना जाता है।

योनिमतियोंके इस पूर्वोक्त अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर स्त्रीवेद जीवराशि होती है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-

१ स्त्रीवेदाः ×× सासादनसम्यग्दृष्ट्यादयः संयतासंयतान्ताः सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८.

जेणेदे चदुगुणट्ठाणिणो[1] जीवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता तेणेदेसिं परूवणा ओघ होदि। ओघपमाणादो ऊणइत्थिवेदगुणपडिवण्णाणं कधमोघत्तं जुज्जदे ? ण, ओघमिव ओघमिदि उवयारेण तिस्से ओघत्तसिद्धीदो। ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाल-मावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। कुदो ? कारिसग्गिसमाणइत्थिवेदेण दज्झंतहिययाणमित्थीणं सणिदाणाणं[2] पउरं सम्मत्तपरिणामा-संभवादो। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि। एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे सग-सगरासीओ भवंति।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[3] ॥ १२६ ॥

स्थानमें स्त्रीवेदी जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १२५ ॥

चूंकि ये चार गुणस्थानवर्ती जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, इसलिये इनकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान होती है।

शंका— गुणस्थानप्रतिपन्न ओघप्ररूपणासे न्यून गुणस्थानप्रतिपन्न स्त्रीवेदियोंके प्रमाणको ओघपना कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ओघके समानको भी ओघ कहा जाता है, इसलिये उपचारसे स्त्रीवेदियोंकी संख्याको ओघत्व सिद्ध हो जाता है।

ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, उपलेकी अग्निके समान स्त्रीवेदसे जिनका हृदय जल रहा है और जो कामाभिलाष सहित हैं, ऐसी स्त्रियोंके प्रचुरतासे सम्यक्त्वपरिणाम संभव नहीं है। अर्थात् स्त्रीवेदके साथ प्रचुर सम्यग्दृष्टि जीव नहीं होते हैं। उस स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इन अवहारकालोंसे पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियोंका प्रमाण आता है।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिबादरसांपरायप्रविष्ट उपशमक और

१ प्रतिषु ' चदुगुणट्ठाणाणि ' इति पाठ । २ प्रतिषु ' सणिधाणाण ' इति पाठः ।

३ प्रमत्तसंयतादयोऽनिवृत्तिबादरान्ता संख्येया । स. सि १, ८.

पमत्तादीणं ओघरासिं संखेज्जखंडे कए एयखंडमित्थिवेदपमत्तादओ भवंति। इत्थिवेदउवसामगा दस १०, खवगा वीस २०।

पुरिसवेदएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवेहि सादिरेयं[1] ॥ १२७ ॥

देवलोए देवीणं संखेज्जदिभागमेत्ता देवा भवंति। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागमेत्ता तिरिक्खेसु पुरिसवेदा भवंति। तेसु देवेसु पक्खित्तेसु देवेहि सादिरेयं पुरिसवेदरासिपमाणं होदि।

एत्थ अवहारकालुप्पत्तिं वत्तइस्सामो। देवअवहारकालं तेत्तीसरूवेहि गुणिय तत्तो एक्कपदरंगुलं घेत्तूण संखेज्जखंडं काऊण तत्थेगखंडमवणिय बहुखंडे तत्थेव पक्खित्ते पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एदेण जगपदरे भागे हिदे पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिरासी होदि।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १२८ ॥

क्षपक गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥ १२६ ॥

प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानसंबन्धी ओघराशिको संख्यातसे खंडित करने पर एक खंडप्रमाण स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानवर्ती जीव होते हैं। स्त्रीवेदी उपशामक दश और क्षपक वीस हैं।

पुरुषवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १२७ ॥

देवलोकमें देवियोंके संख्यातवें भागमात्र देव हैं। पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके संख्यातवें भागमात्र तिर्यंचोंमें पुरुषवेदी जीव हैं। इन पुरुषवेदी तिर्यंचोंके प्रमाणको देवोंमें प्रक्षिप्त कर देने पर देवोंसे कुछ अधिक पुरुषवेद जीवराशिका प्रमाण होता है।

अब यहां उक्त जीवोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलाते हैं— देवोंके अवहारकालको तेतीससे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके उनमेंसे एक खंडको घटाकर बहुभाग उसी पूर्वोक्त राशिमें मिला देने पर पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि राशि होती है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्ति बादरसांपरायप्रविष्ट उपशमक

१ वेदानुवादेन ×× पुंवेदाश्च मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिता। स. सि. १, ८ देवेहिं सादिरेया पुरिसा। गो. जी. २७९.

इत्थिवेद-णवुंसयवेदरासिपरिहीणो ओघरासी पुरिसवेदस्स भवदि । कधं तस्स ओघत्तं जुज्जदे ? ण एस दोसो, ओघमिव ओघमिदि तस्स ओघत्तासिद्धीदो ।

एत्थ अवहारकालो वुच्चदे । ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । ओघपमत्तादिसु अप्पणो संखेज्जभागभूदइत्थि-णवुंसयवेदरासिपमाणमवणिदे पुरिसवेदपमत्तादओ भवंति ।

णवुंसयवेदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं[१] ॥ १२९ ॥

और क्षपक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १२८ ॥

ओघराशिमेंसे स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी राशिको कम कर देने पर जो लब्ध रहे उतना पुरुषवेदियोंका प्रमाण है ।

शंका — इस सासादनसम्यग्दृष्टि आदि पुरुषवेदीराशिको ओघपना कैसे बन सकता है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ओघके समानको भी ओघ कहते हैं, इसलिये उस सासादनसम्यग्दृष्टि आदि पुरुषवेदीराशिके ओघपना सिद्ध हो जाता है ।

अब पुरुषवेदियोंके अवहारकालको कहते हैं — ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पुरुषवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । ओघ प्रमत्तसंयत आदि राशियोंमेंसे उन्हींके संख्यातवें भागभूत स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी राशिके प्रमाणको घटा देने पर पुरुषवेदी प्रमत्तसंयत आदि जीव होते हैं ।

नपुंसकवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १२९ ॥

१ नपुंसकवेदा मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः । ×× नपुंसकवेदाश्च सासादनसम्यग्दृष्टयादयः संयतासंयतान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. तेहिं विहीण सवेदो रासी संढाण परिमाण ॥ गो. जी. २७९.

णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठिणो अणंतत्तणेण ओघमिच्छाइट्ठीहि समाणा। सासणादओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण ओघगुणपडिवण्णेहि समाणा त्ति ओघत्तमेदेसिं जुज्जदे। एत्थ अवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे। तं जहा— इत्थि-पुरिसवेदसगुणपडिवण्णे अवगदवेदजीवे च णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठिरासिभजिदमेदेसिं वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते धुवरासी होदि। एदेण सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठिरासी होदि। इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे णवुंसयवेद-असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहार-कालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥ १३० ॥

नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तत्वकी अपेक्षा ओघमिथ्यादृष्टियोंके समान हैं और नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा ओघ गुणस्थानप्रतिपन्नोंके समान हैं, इसलिये नपुंसकवेदी इन राशियोंके ओघपना बन जाता है। अब इन नपुंसकवेदियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको कहते हैं। वह इसप्रकार है— गुणस्थान-प्रतिपन्न स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीव राशिको तथा अपगतवेदी जीवराशिको तथा नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित इन्हीं स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और अपगतवेदी राशिके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशि होती है। इससे सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी संयतासंयतोंका अवहार-काल होता है।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिबादरसांपरायिकप्रविष्ट उपशामक और क्षपक गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥ १३० ॥

1 प्रमत्तसंयतादयोऽनिवृत्तिबादरान्ता संख्येयाः। स. सि. १, ८.

इत्थिवेदपमत्तादिरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्तो णवुंसयवेदपमत्तादिरासी होदि। कुदो? इट्टपागग्गिसमाणेण णवुंसयवेदोदयेण सणिदाणेण[1] पउरं सम्मत्त-संजमादीणमुवलंभाभावादो। ओघपमाणं ण पावेंति त्ति जाणावणट्ठं सुत्ते संखेज्जणिद्देसो कओ। णवुंसयवेद-उवसामगा पंच ५, खवगा दस १०। इत्थिवेद-णवुंसयवेदे पमत्ता अपमत्ता च एत्तिया चेव होंति त्ति संपहि उवएसो णत्थि।

अपगदवेदएसु तिण्हं उवसामगा[2] केवडिया, पवेसेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण चउवण्णं[3] ॥ १३१ ॥

एत्थ पुरदो भण्णमाणअवगदवेदजीवसंचयपदुप्पायणसुत्तेणेव पज्जत्तं किमणेण अवगदवेदपवेसपरूवणासुत्तेणेत्ति? ण एस दोसो, उवसमसेढिपवेसणतुल्लो अवगयवेदपज्जाय-पवेसो त्ति जाणावणफलत्तादो। तिण्हमिदि णेदं छट्ठीबहुवयणं किंतु पढमाबहुवयणमिदि घेत्तव्वं, छट्ठविहत्तिउप्पत्तिणिमित्ताभावादो। कधमुवसंतकसायस्स उवसामगववएसो? ण,

स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत आदि राशिके संख्यातवें भागमात्र नपुंसकवेदी प्रमत्तसंयत आदि जीवराशि होती है, क्योंकि, इष्टपाककी अग्निके समान नपुंसकवेदके उदयसे अतिकामाभिलाषसे युक्त होनेके कारण प्रचुरतासे सम्यक्त्व और संयमादि परिणामोंका उपलंभ नहीं पाया जाता है। प्रमत्तसंयत आदि नपुसकवेदी जीवराशि ओघप्रमाणको नहीं प्राप्त होती है, इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें संख्यात पदका निर्देश किया है। नपुंसकवेदी उपशामक पांच और क्षपक दश होते हैं। स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव इतने ही होते हैं, इसप्रकार इस समय उपदेश नहीं पाया जाता है।

अपगतवेदियोंमें तीन गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव कितने हैं? प्रवेशसे एक, दो या तीन, और उत्कृष्टरूपसे चौवन हैं ॥ १३१ ॥

शंका—यहां आगे कहा जानेवाला अपगतवेदी जीवोंके संचयका प्ररूपक सूत्र ही पर्याप्त है, फिर अपगतवेदी जीवोंके प्रवेशके प्ररूपण करनेवाले इस सूत्रका क्या प्रयोजन है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उपशमश्रेणीमें प्रवेश करनेके समान ही अपगतवेद पर्यायमें प्रवेश होता है, इस बातका ज्ञान कराना इस सूत्रका फल है।

सूत्रमें आया हुआ 'तिण्हं' पद षष्ठी विभक्तिका बहुवचन नहीं है, किन्तु प्रथमा विभक्तिका बहुवचन है, यहां ऐसा अर्थ लेना चाहिये, क्योंकि, यहां पर षष्ठी विभक्तिकी उत्पत्तिका कोई निमित्त नहीं पाया जाता है।

१ प्रतिषु 'सणिणधाणेण' इति पाठः। २ प्रतिषु 'उवसमागेण' इति पाठ।

३ अपगतवेदा अनिवृत्तिबादरादयोऽयोगकेवल्यन्ताः सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८.

दव्वट्ठियणयं पडुच्च उवसंतकसायस्स वि उवसामगववएसं पडि विरोहाभावादो । एत्थ पवेसविधी उवसमसेढिपवेसणेण तुल्ला । एदेण खवगअवगदवेदपवेसो वि खवगसेढिपवेसेण तुल्लो त्ति जाणाविदं । कुदो ? खवगअवगदवेदपवेसं पडि पुध सुत्तारंभाभावादो ।

अद्धं पडुच्च संखेज्जा ॥ १३२ ॥

एत्थ संखेज्जा त्ति ण भणिय ओघमिदि वत्तव्वं ? ण, अवलंबियपज्जयत्तादो । सेसं सुगमं ।

तिण्णि खवा अजोगिकेवली ओघं ॥ १३३ ॥

ओघादो एदेसिं पमाणं पडि विसेसाभावा ओघत्तं जुज्जदे ।

शंका—उपशान्तकषाय जीवको उपशामक संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा उपशान्तकषाय जीवके भी उपशामक इस संज्ञाके प्रति कोई विरोध नहीं आता है ।

यहां अपगतवेदस्थानमें प्रवेशविधि उपशमश्रेणीसंबन्धी प्रवेशविधिके समान है । इसी कथनसे क्षपक अपगतवेदियोंका प्रवेश भी क्षपकश्रेणीसंबन्धी प्रवेशके समान है, इसका ज्ञान करा दिया, क्योंकि, क्षपक अपगतवेदियोंके प्रवेशके प्रति पृथक्रूपसे सूत्रका आरंभ नहीं पाया जाता है ।

विशेषार्थ—जिसप्रकार उपशमश्रेणीके प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्यसे जघन्य एक और उत्कृष्ट चौवन जीव प्रवेश करते हैं, और विशेषरूपसे पहले आदि समयमें एक जीवसे लेकर सोलह आदि जीवतक प्रवेश करते हैं; तथा क्षपकश्रेणीमें सामान्यसे जघन्य एक और उत्कृष्ट एकसौ आठ जीव प्रवेश करते हैं, और विशेषरूपसे पहले आदि समयमें एक जीवसे लेकर बत्तीस आदि जीव प्रवेश करते हैं; वही नियम यहां अपगतवेदियोंके लिये भी प्रवेशकी अपेक्षा समझना चाहिये ।

कालकी अपेक्षा अपगतवेदी उपशामक संख्यात हैं ॥ १३२ ॥

शंका—इस सूत्रमें 'संख्यात हैं' इसप्रकार न कहकर 'ओघप्ररूपणाके समान हैं' ऐसा कहना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यहां पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया है। शेष कथन सुगम है ।

अपगतवेदियोंमें तीन गुणस्थानवर्ती क्षपक और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १३३ ॥

ओघसे इन तीन गुणस्थानवर्ती क्षपक और अयोगिकेवलियोंके प्रमाणके प्रति कोई विशेषता नहीं है, इसलिये ओघपना बन जाता है ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ १३४ ॥

गदत्थमेदं सुत्तं ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठिणो भवंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अवगदवेदा हवंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सव्वेसिमसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमोघं ।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । सत्थाणे पयदं । इत्थिवेद-पुरिसवेदाणं सत्थाणं देवमिच्छाइट्ठीणं भंगो । सासणादि जाव संजदासंजदाणं सत्थाणमोघं । णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठिसत्थाणं णत्थि । सासणादीणं सत्थाणमोघं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा इत्थिवेदुवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो

अपगतवेदियोंमें सयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १३४ ॥

इस सूत्रका अर्थ भी वही है जैसा ऊपर कह आये हैं ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अपगतवेदी जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सर्व असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष कथन ओघप्ररूपणाके समान है ।

स्वस्थान आदिकके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है । स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व देव मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयततक स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, सासादनसम्यग्दृष्टि आदि नपुंसकवेदियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थानके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— स्त्रीवेदी उपशामक सबसे स्तोक हैं । स्त्रीवेदी क्षपक जीव स्त्रीवेदी उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीव स्त्रीवेदी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत जीव स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी

संखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं पडिलोमेण णेयव्वं जाव असंजदसम्माइट्ठिदव्वं त्ति। तदो पलिदोवममसंखेज्जगुणं। तदो इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। दव्वमसंखेज्जगुणं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। एवं पुरिसवेदस्स वि वत्तव्वं। एवं चेव णवुंसयवेदस्स। णवरि पलिदोवमादो उवरि मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा त्ति वत्तव्वं।

सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा णवुंसयवेदुवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। इत्थिवेदुवसामगा तत्तिया चेव। तेसिं खवगा संखेज्जगुणा। पुरिसवेदुवसामगा संखेज्जगुणा। तेसिं खवगा संखेज्जगुणा। णवुंसयवेदे अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तम्हि चेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। इत्थिवेदे अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तम्हि चेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। सजोगिकेवली संखेज्जगुणा। पुरिसवेदअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तम्हि

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हीं संयतासंयतोंका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसप्रकार प्रतिलोमरूपसे स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्य आने तक ले जाना चाहिये। स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है। पल्योपमसे स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे स्त्रीवेदियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। स्त्रीवेदियोंकी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। जगश्रेणीसे स्त्रीवेदियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है। जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पुरुषवेदका भी परस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये। तथा इसीप्रकार नपुंसकवेदका भी। परंतु इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेदियोंका कहते समय पल्योपमके ऊपर मिथ्यादृष्टि अनन्तगुणे हैं, यह कहना चाहिये।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— नपुंसकवेदी उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं। नपुंसकवेदी क्षपक जीव संख्यातगुणे हैं। स्त्रीवेदी उपशामक जीव नपुंसकवेदी क्षपकोंका जितना प्रमाण है उतने ही हैं। स्त्रीवेदी क्षपक जीव स्त्रीवेदी उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। पुरुषवेदी उपशामक जीव स्त्रीवेदी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। पुरुषवेदी क्षपक जीव पुरुषवेदी उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। नपुंसकवेदमें अप्रमत्तसंयत जीव पुरुषवेदी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। नपुंसकवेदमें ही प्रमत्तसंयत जीव नपुंसकवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीव नपुंसकवेदी प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। स्त्रीवेदमें ही प्रमत्तसंयत जीव स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। सयोगिकेवली जीव स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। पुरुषवेदी अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यात-

चेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्ज-गुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्ज-गुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । णवुंसयवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं पडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्ज-गुणो । पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । पुरिसवेदमिच्छाइट्ठि-

गुणे हैं । पुरुषवेदमें ही प्रमत्तसंयत जीव पुरुषवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यात-गुणा है । पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहार-कालसे संख्यातगुणा है । पुरुषवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि-योंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी संयतासंय-तोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल नपुंसकवेदी असंयत-सम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं नपुंसकवेदी संयतासंयतोंका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार प्रति-लोमक्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंके अवहार-कालसे संख्यातगुणा है । उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभ-सूचीसे संख्यातगुणी है । जगश्रेणी स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है ।

दव्वमसंखेज्जगुणं । इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । अवगतवेदा अणंतगुणा । णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । वेदगुणपडिवण्णगुणगारो[1] ण णव्वदि त्ति के वि आइरिया भणंति । तेसिमभिप्पाएण सव्वपरत्थाणं वुच्चदे । सव्वत्थोवा अप्पमत्तसंजदा तिवेदगदा । (पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । संजदा) तिवेदा विसेसाहिया । तिवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति । उवरि इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदुवरि पुव्वं व वत्तव्वं ।

एवं वेदमग्गणा समत्ता ।

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं[2] ॥ १३५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा– अणंतत्तणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-

पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य पुरुषवेद मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे संख्यातगुणा है। जगप्रतर स्त्रीवेद मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। अपगतवेदी जीव लोकसे अनन्तगुणे हैं। नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव अपगतवेदियोंसे अनन्तगुणे हैं। वेद गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अवहारकालका गुणकार ज्ञात नहीं है, ऐसा कितने ही आचार्योंका कथन है। आगे उन्हींके अभिप्रायानुसार सर्व परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। तीनों वेदोंसे युक्त अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं। तीनों वेदोंसे युक्त प्रमत्तसंयत जीव उनसे संख्यातगुणे हैं। तीन वेदवाले संयत जीव विशेष अधिक हैं। त्रिवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। इससे ऊपर स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इससे ऊपर पहलेके समान कथन करना चाहिये।

इसप्रकार वेदमार्गणा समाप्त हुई।

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभकषायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १३५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इसप्रकार है— अनन्तत्वकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव और पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा गुणस्थानप्रतिपन्न जीव ओघ मिथ्यादृष्टि और

१ प्रतिषु '-गुणगारेण' इति पाठः ।

२ कषायानुवादेन क्रोधमानमायासु मिथ्यादृष्ट्यादयः संयतासंयतान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । लोभकषायाणामुक्त एव क्रमः । स. सि. १, ८.

भागत्तणेण च मिच्छाइट्ठी गुणपडिवण्णा च ओघमिच्छाइट्ठि-गुणपडिवण्णेहि समाणा त्ति कट्टु सुत्ते एदेसिं परूवणा ओघमिदि वुत्ता। पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो। तं कधं ? चदुकसायमिच्छाइट्ठीसु तिरिक्खरासी पहाणो, सेसगदिरासिस्स तदणंतभागत्तादो। तत्थ वि चदुकसायमिच्छाइट्ठिरासी ण[1] अण्णोण्णेण समाणो। कुदो ? तदद्धाणं सारिच्छाभावा। तं जहा–

तिरिक्ख-मणुसेसु सव्वत्थोवा माणद्धा। कोधद्धा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण। मायद्धा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो विसेसो ? पुव्वं परूविदो। लोभद्धा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो विसेसो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो। ण च अद्धासु असरिसासु तत्थ ट्ठिदरासीणं समाणणिग्गम-पवेसाणं संताणं पडि गंगापवाहो व्व अवट्ठिदाणं सरिसत्तं जुज्जदे। तदो चउण्हमद्धाणं समासं काऊण चदुकसाइमिच्छाइट्ठिरासिम्हि भागे हिदे लद्धं चउप्पडिरासिं करिय माणादीणमद्धाहि पडिवाडीए गुणिदे सग-सगरासीओ भवंति[2]। एदमट्ठपदं काऊण चदुकसाइमिच्छाइट्ठिस्स रासिस्स अवहार-

गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके समान हैं, ऐसा समझकर सूत्रमें क्रोधादि कषाययुक्त ओघ मिथ्यादृष्टि और ओघ गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान है, यह कहा। परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर विशेषता है ही।

शंका—वह विशेषता कैसे है ?

समाधान—चारों कषायवाले मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तिर्यंचराशि प्रधान है, क्योंकि, शेष तीन गतिसंबन्धी जीवराशि तिर्यंचराशिके अनन्तवें भाग है। उसमें भी चारों कषायवाली मिथ्यादृष्टिराशि परस्पर समान नहीं है, क्योंकि, चारों कषायोंका काल समान नहीं है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— तिर्यंच और मनुष्योंमें मानका काल सबसे स्तोक है। क्रोधका काल मानकालसे विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागमात्र विशेषसे अधिक है। मायाका काल क्रोधके कालसे विशेष अधिक है। कितनामात्र विशेष है ? पहले प्ररूपण कर दिया है, अर्थात् आवलीका असंख्यातवां भाग विशेष है। लोभका काल मायाके कालसे विशेष अधिक है। कितनामात्र विशेष है ? आवलीका असंख्यातवां भागप्रमाण विशेष अधिक है। इसप्रकार कालोंके विसदृश रहने पर जिनका निर्गम और प्रवेश समान है और संतानकी अपेक्षा गंगानदीके प्रवाहके समान जो अवस्थित हैं, ऐसी वहां स्थित उन राशियोंकी सदृशता नहीं बन सकती है। तदनन्तर चारों कषायोंके कालोंका योग करके उसका चारों कषायवाली मिथ्यादृष्टिराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके मानादिकके कालोंसे परिपाटीक्रमसे

१ प्रतिषु 'ण' इति पाठ।

२ णरतिरियलोममायाकोहो माणो बिइंदियादिव्व। आवलिअसंखभज्जा सगकाल व समासेज्ज॥ गो. जी. २९८.

कालो वुच्चदे—

चउकसाइगुणपडिवण्णपमाणमकसाइपमाणं च चदुकसाइमिच्छाइट्ठिरासिभजिद-तव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते चदुकसाइधुवरासी होदि। तं चदुहि गुणिदे कसाय-रासिचदुब्भागस्स भागहारो होदि। पुणो तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते माणकसाइधुवरासी होदि। पुव्वभागहारमब्भहियं काऊण कसायचउ-ब्भागभागहाररासिम्हि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कोधकसाइधुवरासी होदि। पुणो कोधकसाइभागहारमब्भहियं काऊण पुव्विल्लधुवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते मायकसाइधुवरासी होदि। कसायचउब्भागधुवरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे लोभकसाइधुवरासी होदि। एदेहि अवहारकालेहि सव्वजीव-रासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सग-सगरासीओ आगच्छंति। तिण्हं कसायमिच्छाइट्ठीणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स चउब्भागो देसूणो। लोभकसाइमिच्छाइट्ठिपमाणं चदुब्भागो सादिरेगो। गुणपडिवण्णेसु देवरासी पहाणो। कुदो? सेसगदिरासिस्स तदसंखेज्जदि-

गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं। इस अर्थपदको समझकर चार कषायवाली मिथ्यादृष्टिराशिका अवहारकाल कहते हैं—

गुणस्थानप्रतिपन्न चारों कषायवाले जीवोंके प्रमाणको और कषाय रहित जीवोंके प्रमाणको तथा चारों कषायवाले मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणसे भक्त पूर्वोक्त दोनों राशियोंके वर्गको सर्व जीवराशिके ऊपर प्रक्षिप्त करने पर चारों कषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। उसे चारसे गुणित करने पर कषायराशिके चौथे भागका भागहार होता है। पुनः इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर मानकषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। पुनः इस भागहारको अभ्यधिक करके उसका कषायराशिके चौथे भागकी भागहारराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी भागहार-राशिमें मिला देने पर क्रोधकषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। पुनः क्रोधकषायके भागहारको अभ्यधिक करके उसका पूर्वोक्त ध्रुवराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ध्रुवराशिमें मिला देने पर मायाकषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। कषायराशिके चौथे भागकी ध्रुवराशिको (भागहारको) आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी ध्रुवराशिमेंसे निकाल लेने पर लोभकषाय जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। इन अवहारकालोंसे सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां आती हैं। क्रोध, मान, और माया, इन तीनों कषायवाले मिथ्यादृष्टियोंका पृथक् पृथक् प्रमाण सर्व जीवराशिका कुछ कम चौथा भाग है। लोभकषायवाले मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कुछ अधिक चौथा भाग है। गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंमें देवराशि प्रधान है, क्योंकि, शेष तीन गतियोंकी गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशि गुणस्थानप्रतिपन्न देवराशिके असंख्यातवें भाग है।

भागत्तादो । देवेसु चउक्कसायगुणपडिवण्णरासी ण समाणो तदद्धाणाणं समाणत्ताभावादो । तं जहा– देवेसु सव्वत्थोवा कोधद्धा । माणद्धा संखेज्जगुणा । मायद्धा संखेज्जगुणा । लोभद्धा संखेज्जगुणा । णेरईएसु सव्वत्थोवा लोभद्धा । मायद्धा संखेज्जगुणा । माणद्धा संखेज्जगुणा । कोधद्धा संखेज्जगुणा[1] । एत्थ देवगदिअद्धाणं समासं काऊण ओघअसंजद-रासिं खंडिय चउप्पडिरासिं काऊण परिवाडीए कोधादि[2]अद्धाहि गुणिदे सग-सगरासीओ भवंति । एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणं पि कायव्वं । संजदासंजदाणं पुण तिरिक्खगइअद्धासमासं काऊण ओघसंजदासंजदरासिं खंडिय चदुप्पडिरासिं करिय कमेण कोधादिअद्धाहि गुणिदे सग-सगरासीओ भवंति । एदेण बीयपदेण एदेसिमवहार-कालुप्पत्ती वुच्चदे । तं जहा– ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते लोभकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्ज-रूवेहि गुणिदे मायकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहिं

देवोंमें चारों कषायवाली गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशि समान नहीं है, क्योंकि, उन चारों कषायोंके काल समान नहीं हैं । आगे इसी विषयका स्पष्टीकरण करते हैं– देवोंमें क्रोधका काल सबसे स्तोक है । मानका काल उससे संख्यातगुणा है । मायाका काल मानके कालसे संख्यातगुणा है । लोभका काल मायाके कालसे संख्यातगुणा है । नारकियोंमें लोभका काल सबसे स्तोक है । मायाका काल लोभके कालसे संख्यातगुणा है । मानका काल मायाके कालसे संख्यातगुणा है । क्रोधका काल मानके कालसे संख्यातगुणा है । यहां देवगतिके कषायसंबन्धी कालका योग करके उससे देवोंकी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके उन्हें परिपाटीक्रमसे क्रोधादिकके कालोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं । इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशियोंका भी करना चाहिये । संयतासंयतोंका प्रमाण लाते समय तो तिर्यंचगतिसंबन्धी कषायोंके कालका योग करके और उससे ओघसंयतासंयत राशिको खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके क्रमसे क्रोधादिकके कालोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं । इस बीजपदके अनुसार इन पूर्वोक्त राशियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— ओघ असंयतसम्य-ग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर लोभकषायवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस लोभ असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मायाकषायवाले असंयत-

१ पुह पुह कसायकालो णिरये अंतोमुहुत्तपरिमाणो । लोहादी संखगुणा देवेसु य कोहपहुदीदो ॥ सव्व-समासेणवहिदसगसगरासी पुणो वि संगुणिदे । सगसगगुणगारेहिं य सगसगरासीण परिमाणं ॥ गो. जी. २९६, २९७.

२ प्रतिषु ' कोधाओ ' इति पाठ. ।

गुणिदे माणकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे कोधकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीणं पि वत्तव्वं। ओघसंजदासंजदअवहारकालं चदुहि गुणिय चदुप्पडिरासिं काऊण तत्थेग-रासिमसंखेज्जेहि रूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते माणकसाइसंजदासंजदअवहार-कालो होदि। पुणो पुव्वभागहारमब्भहियं काऊण चदुगुणियभागहारं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कोधकसाइसंजदासंजदअवहारकालो होदि। पुणो पुव्वभागहारमब्भहियं काऊण चदुगुणिदअवहारकालं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते मायकसाइसंजदासंजद-अवहारकालो होदि। चदुगुणभागहारमसंखेज्जरूवेहिं खंडिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे लोभकसाइसंजदासंजदअवहारकालो होदि।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥ १३६ ॥

ओघमिदि अभणिय सखेज्जा इदि किमट्ठं वुच्चदे ? ण एस दोसो, कुदो ? ओघ-

सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस मायाकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मानकषायवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस मानकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टियोंका भी कथन करना चाहिये। ओघ संयतासंयतोंके अवहारकालको चारसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके उनमेंसे एक राशिको असंख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी राशिमें मिला देने पर मानकषायवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। पुनः पूर्व भागहारको अभ्यधिक करके और उससे चतुर्गुणित भाग-हारको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर क्रोधकषायी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। पुनः पूर्व भागहारको अभ्यधिक करके और उससे चतुर्गुणित अवहार-कालको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर मायाकषायी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। चतुर्गुणित भागहारको असंख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी चतुर्गुणित भागहारमेंसे घटा देने पर लोभकषायी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतक चारों कषायवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १३६ ॥

शंका—सूत्रमें 'ओघ' ऐसा न कह कर 'संखेज्जा' इसप्रकार किसलिये कहा है ?

1 प्रमत्तसंयतादयोऽनिवृत्तिबादरान्ता सख्येयाः। स सि. १, ८.

पमत्तादिरासिं चदुण्हं कसायाणं पडिभागेण चउव्विहा विहत्ते तत्थ ओघरासिपमाणाणुव-लंभादो। कधमेत्थ विहज्जदे? वुच्चदे– चउण्हं कसायाणमद्धासमासं करिय चदुप्पडिरासिं अप्पप्पणो अद्धाहि ओवट्टिय लद्धसंखेज्जरूवेहि इच्छिदरासिम्हि भागे हिदे सग-सगरासीओ भवंति। एत्थ चोदगो भणदि– पमत्तादीणं चदुकसायरासीओ समाणा आवलियाए असंखेज्जादिभागमेत्तद्धाविसेसाओ त्ति[1]। आवलिअसंखेज्जदिभागमेत्तद्धाविसेसत्ते वि ण रासीणं विसेसाहियत्तं विरुज्झदे, पवेसांतराणं संखाणियमाभावादो। तेणेत्थ तेरासियं ण कीरदे? ण, पमत्तादिसु माणकसायरासी थोवो। कोधकसायरासी विसेसाहिओ। माय-कसायरासी विसेसाहिओ। लोभकसायरासी विसेसाहिओ।

णवरि लोभकसाईसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा मूलोघं[2] ॥ १३७ ॥

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ओघ प्रमत्तसंयत आदि राशिको चार कषायोंके भागहारसे भाजित करने पर वहां ओघराशिका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता है।

शंका— इन राशियोंका यह विभाग किसप्रकार होता है?

समाधान —चारों कषायोंके कालोंका योग करके और उसकी चार प्रतिराशियां करके अपने अपने कालसे अपवर्तित करके जो संख्यात लब्ध आवें उससे इच्छित राशिके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं।

शंका— यहां पर शंकाकार कहता है, एक तो प्रमत्तसंयत आदिमें चारों कषायराशियां समान हैं, क्योंकि, यहां पर आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण कालकी विशेषता नहीं है? दूसरे, आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण कालकी विशेषता नहीं होने पर भी राशियोंकी विशेषाधिकता विरोधको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि प्रवेशान्तर करनेवाले जीवोंके संख्याका कोई नियम नहीं पाया जाता है। इसलिये यहां पर त्रैराशिक नहीं करना चाहिये?

समाधान—नहीं, क्योंकि, प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानोंमें मानकषाय जीवराशि सबसे स्तोक है। क्रोधकषाय जीवराशि मानकषाय राशिसे विशेष अधिक है। मायाकषाय जीवराशि क्रोधकषाय राशिसे विशेष अधिक है। लोभकषाय जीवराशि मायाकषाय जीवराशिसे विशेष अधिक है।

इतना विशेष है कि लोभकषायी जीवोंमें सूक्ष्मसांपरायिक शुद्धिसंयत उपशमक और क्षपक जीव मूलोघ प्ररूपणाके समान हैं ॥ १३७ ॥

१ आ प्रतौ '-मेत्तद्धाए' इति पाठः।

२ अयं तु विशेषः, सूक्ष्मसांपरायसंयताः सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८.

खवगोवसामगसुहुमसांपराइएसु सुहुमलोभकसायवदिरित्तसांपरायाभावादो ओघत्तं ण विरुज्झदे ।

अकसाईसु उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था ओघं[१] ॥ १३८ ॥

एत्थ भावकसायाभावं पेक्खिऊण उवसंतकसाया अकसाइणो ण दव्वकसायाभावं पडि, उदओदीरणोकड्डणुकड्डण-परपयडिसंकमादिविरहिददव्वकम्मस्स तत्थुवलंभादो । चउव्विहदव्वकम्मभेएण चउव्विहत्तो मूलो उवसंतकसायरासी कधं पादेक्कं मूलोघपमाणं पावदे ? ण एस दोसो, कुदो ? वुच्चदे— ण ताव दव्वकसायविसेसणमेत्थ संभवइ, तेण अहियाराभावा । ण भावकसायविसेसणं पि संभवइ, तस्स तत्थाभावादो । तदो उवसंतकसायरासी ण चदुविहा विहज्जदे तो चेव मूलोघत्तं पि तस्स ण विरुज्झदि त्ति ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था अजोगिकेवली ओघं ॥ १३९ ॥

क्षपक और उपशामक सूक्ष्म सांपरायिक जीवोंमें सूक्ष्म लोभ कषायसे व्यतिरिक्त कषाय नहीं पाई जानेके कारण सूक्ष्म लोभियोंके प्रमाणको ओघत्वका प्रतिपादन करना विरोधको प्राप्त नहीं होना है ।

कषायरहित जीवोंमें उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १३८ ॥

यहां भाव कषायका अभाव देखकर उपशान्तकषाय जीवोंको अकषायी कहा है, द्रव्य कषायके अभावकी अपेक्षासे नहीं, क्योंकि, उदय, उदीरणा, अपकर्षण, उत्कर्षण और परप्रकृतिसंक्रमण आदिसे रहित द्रव्य कर्म वहां उपशान्तकषाय गुणस्थानमें पाया जाता है ।

शंका— द्रव्य कर्म चार प्रकारका होनेसे चार भेदोंमें विभक्त मूल उपशान्तकषायराशि प्रत्येक मूलोघ प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है । दोष क्यों नहीं है, आगे इसीका कारण कहते हैं— द्रव्यकषायरूप विशेषण तो यहां संभव नहीं है, क्योंकि, उसका यहां अधिकार नहीं है । भावकषाय विशेषण भी संभव नहीं है, क्योंकि, भावकषाय वहां पाया नहीं जाता है । अतएव उपशान्तकषाय जीवराशि चार भेदोंमें विभक्त नहीं होती है और इसलिये उसके मूलोघपना भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ जीव और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १३९ ॥

१ अकषाया उपशान्तकषायादयोऽयोगकेवल्यन्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

एत्थ समुच्चयट्ठं च-सद्दोवादाणं कायव्वं ? ण, च-सद्देण विणा वि तदट्ठोवलद्धीदो। एदेसिं दोण्हं गुणट्ठाणाणमेगजोगकरणं किमट्ठमिदि चे, ण एस दोसो, दव्वपमाणं पडि एदेसिं गुणट्ठाणाणं पच्चासत्तिं पेक्खिय एगत्तविरोहाभावादो[1]। ण च ओघत्तं विरुज्झदे, णिव्विसेसणत्तादो।

सजोगिकेवली ओघं ॥ १४० ॥

सजोगि अजोगिकेवलीणमेगमेव सुत्तं किण्ण कीरदे, केवलित्तं पडि पच्चासत्ति-संभवादो ? ण, दोण्हं पमाणगदपहाणपच्चासत्तीए अभावादो। कधं पमाणस्स पधाणत्तं ? तेणेत्थ अहियारादो। सेसं सुगमं।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए तत्थ बहुखंडा चउकसाय-मिच्छाइट्ठिणो भवंति। एगखंडमकसाइणो गुणपडिवण्णा च। पुणो चदुकसायमिच्छाइट्ठि-रासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय तत्थेगखंडं पुध ट्ठविय सेसबहुखंडे चत्तारि

शंका—इस सूत्रमें समुच्चयार्थ च शब्दका ग्रहण करना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, च शब्दके विना भी समुच्चयरूप अर्थकी उपलब्धि हो जाती है।

शंका—इन दोनों गुणस्थानोंका एक योग किसलिये किया है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यप्रमाणके प्रति दोनों गुणस्थानोंकी प्रत्यासत्ति देखकर एक योग करनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

ओघत्व भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, ये दोनों गुणस्थान निर्विशेषण हैं।

सयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४० ॥

शंका—सयोगिकेवली और अयोगिकेवली, इन दोनोंका एक ही सूत्र क्यों नहीं बनाया है, क्योंकि, केवलित्वके प्रति इन दोनोंकी प्रत्यासत्ति पाई जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इन दोनोंकी प्रमाणगत प्रधान प्रत्यासत्ति नहीं पाई जाती है, इसलिये इन दोनोंका एक सूत्र नहीं किया।

शंका—प्रमाणको प्रधानता किस कारणसे है ?

समाधान—क्योंकि, यहां उसका अधिकार है। शेष कथन सुगम है।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग चार कषाय मिथ्यादृष्टि जीव हैं और एक भागप्रमाण अकषायी और गुणस्थानप्रतिपन्न जीव हैं। पुनः चार कषाय मिथ्यादृष्टि राशिको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको पृथक् करके शेष बहुभागके चार समान पुंज करके स्थापित करना

१ अ प्रतौ 'णाणात्तविरोहादो भावादो' इति पाठः।

समपुंजे करिय ट्ठवेदव्वं । पुणो अवणिदएयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडेऊण तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते लोभकसायमिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसेयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडेऊण बहुखंडे विदियपुंजे पक्खित्ते मायकसायमिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसेयखंडमावलियाए असखेज्जदिभाएण खंडिय बहुखंडे तदियपुंजे पक्खित्ते कोध-कसाइमिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसं चउत्थपुंजे पक्खित्ते माणकसायमिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अकसाया होंति । एत्तो उवरि कसायगुणगारेहिंतो सम्मामिच्छाइट्ठिरासिं पडि सासणसम्माइट्ठिगुणगारो संखेज्जगुणो त्ति उवएसमवलंबिय भागाभागो वुच्चदे । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कोधकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायसम्मा-मिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायसम्मामिच्छाइट्ठिरासी

चाहिये । पुन निकालकर पृथक् रक्खे हुए एक भागको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे बहुभाग पहले पुंजमें मिला देने पर लोभकषाय मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक खंडको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर मायाकषाय मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक खंडको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके बहुभाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक भागको चौथे पुंजमें मिला देने पर मानकषाय मिथ्यादृष्टि राशि होती है । सर्व जीवराशिके अनन्त खंडोंमेंसे जो एक खंड प्रमाण अकषायी और गुणस्थानप्रतिपन्न बतलाये थे उस एक खंडके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अकषाय जीव होते हैं । अब आगे कषायके गुणकारसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रति सासादन-सम्यग्दृष्टिका गुणकार संख्यातगुणा है । इसप्रकारके उपदेशका अवलम्बन लेकर भागाभागका कथन करते हैं । शेषके संख्यात खंड करने पर बहुभाग लोभकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीव-राशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायाकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग क्रोधकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग लोभकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायाकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि

होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा कोधकसायसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कोधकसाय-सासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउकसायसंजदासंजदरासी होदि। तदो संजदासंजदरासिस्स असंखेज्जदिभागमवणिय सेसं चत्तारि समपुंजे करिय ट्ठवेदव्वं। पुणो पुव्वमवणिदएयखंडमसंखेज्जखंडं करिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते लोभकसाइसंजदासंजदरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे करिय बहुखंडे विदियपुंजे पक्खित्ते मायकसाइसंजदासंजदरासी होदि। सेसमसंखेज्जखडं करिय बहुखंडे तदियपुंजे पक्खित्ते कोधकसाइसंजदासंजदरासी होदि। सेसं चउत्थपुंजे पक्खित्ते माणकसाइसंजदासंजदरासी होदि। सेसं जाणिऊण णेयव्वं।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। तत्थ सत्थाणं वत्तइस्सामो। मिच्छाइट्ठीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो मिच्छाइट्ठिधुवरासिस्स अधिगत्तादो। असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति सत्थाणस्स मूलोघभंगो।

जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग क्रोधकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग लोभकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायाकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग क्रोधकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चार कषाय संयतासंयत जीवराशि है। तदनन्तर संयतासंयत जीवराशिके असंख्यातवें भागको घटा कर शेषके चार समान पुंज करके स्थापित कर देना चाहिये। पुनः पहले घटा कर रक्खे हुए एक खंडके असंख्यात खंड करके उनमेंसे बहुभाग प्रथम पुंजमें प्रक्षिप्त करने पर लोभकषाय संयतासंयत जीवराशि होती है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करके उनमेंसे बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर मायाकषायी संयतासंयत जीवराशि होती है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करके बहुभाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर क्रोधकषायी संयतासंयत जीवराशि होती है। शेष एक भागको चौथे पुंजमें मिला देने पर मानकषायी संयतासंयत जीवराशि होती है। शेष कथन जानकर ले जाना चाहिये।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे स्वस्थान अल्प-बहुत्वको बतलाते हैं— मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे मिथ्यादृष्टि ध्रुवराशि अधिक है। असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक स्वस्थान अल्पबहुत्व मूलोघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।

परत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा कोधकसाइउवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। कोधकसाइमिच्छाइट्ठिरासी अणंतगुणो। एवं माण-माय-लोभाणं पि परत्थाणं वत्तव्वं। अकसाईसु सव्वत्थोवा उवसंतकसाया। खीणकसाया संखेज्जगुणा। अजोगिकेवली तत्तिया चेव। सजोगिकेवली संखेज्जगुणा। सिद्धा अणंतगुणा।

सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा माणकसायउवसामगा। कोधकसायउवसामगा विसेसाहिया। मायकसायउवसामगा विसेसाहिया। लोभकसायउवसामगा विसेसाहिया। माणकसाइखवगा विसेसाहिया। कोधकसाइखवगा विसेसाहिया। मायकसाइखवगा विसेसाहिया। लोभकसाइखवगा विसेसाहिया। एवं जम्मि गुणट्ठाणे चत्तारि कसाया संभवंति तमस्सिऊण भणिदं। अण्णत्थुवसामएहिंतो खवगा दुगुणा चेव। संसारत्था अकसाया संखेज्जगुणा। माणकसायअपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। कोधकसायअपमत्तसंजदा विसे-

परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— क्रोधकषायी उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं। क्रोधकषायी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। क्रोधकषायी अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। क्रोधकषायी प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण अनन्तगुणा है। इसीप्रकार मान, माया और लोभकषायके परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये। कषायरहित जीवोंमें उपशान्तकषाय जीव सबसे स्तोक हैं। क्षीणकषाय जीव उपशान्तकषाय जीवोंसे संख्यातगुणे हैं। अयोगिकेवली जीव उतने ही हैं। सयोगिकेवली जीव अयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं। सिद्ध जीव सयोगियोंसे अनन्तगुणे हैं।

अब सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— मानकषायी उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं। क्रोधकषायी उपशामक जीव मानकषायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं। मायाकषायी उपशामक जीव मानकषायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं। लोभकषायी उपशामक जीव मायाकषायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं। मानकषायी क्षपक जीव लोभकषायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं। क्रोधकषायी क्षपक जीव मानकषायी क्षपकोंसे विशेष अधिक हैं। मायाकषायी क्षपक जीव क्रोधकषायी क्षपकोंसे विशेष अधिक हैं। लोभकषायी क्षपक जीव मायाकषायी क्षपकोंसे विशेष अधिक हैं। इसप्रकार जिस गुणस्थानमें चारों कषाय संभव हैं उसका आश्रय लेकर कथन किया। अन्यत्र उपशामकोंसे क्षपक दूने ही होते हैं। कषाय रहित संसारी जीव लोभकषायी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। मानकषाय अप्रमत्तसंयत जीव संसारी कषाय रहित जीवोंसे संख्यातगुणे हैं। क्रोधकषाय अप्रमत्तसंयत

साहिया। मायकसायअप्पमत्तसंजदा विसेसाहिया। लोभकसायअप्पमत्तसंजदा विसेसाहिया। माणकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया। कोधकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया। मायकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया। लोभकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया। लोभकसायअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। मायकसायअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। माणकसायअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। कोधकसायअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। लोभकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। मायकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। माणकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। कोधकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। लोभकसायसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। मायकसायसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। (माणकसायसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो।) कोधकसायसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। लोभकसायसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो।

जीव मानकषाय अप्रमत्तोंसे विशेष अधिक हैं। मायाकषाय अप्रमत्तसंयत जीव क्रोधकषाय अप्रमत्तोंसे विशेष अधिक हैं। लोभकषाय अप्रमत्तसंयत जीव मायाकषाय अप्रमत्तोंसे विशेष अधिक हैं। मानकषाय प्रमत्तसंयत जीव लोभकषाय अप्रमत्तोंसे विशेष अधिक हैं। क्रोधकषाय प्रमत्तसंयत जीव मानकषाय प्रमत्तोंसे विशेष अधिक हैं। मायाकषाय प्रमत्तसंयत जीव क्रोधकषाय प्रमत्तोंसे विशेष अधिक हैं। लोभकषाय प्रमत्तसंयत जीव मायाकषाय प्रमत्तोंसे विशेष अधिक हैं। लोभकषाय असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल लोभकषाय प्रमत्तोंसे असंख्यातगुणा है। मायाकषाय असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल लोभकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। मानकषाय असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल मायाकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल मानकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। लोभकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल मानकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। मायाकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल लोभकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। मानकषायी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल मायाकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। क्रोधकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल मानकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। लोभकषाय सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल क्रोधकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। मायाकषाय सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल लोभकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। मानकषाय सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल मायाकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। क्रोधकषाय सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल मानकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। लोभकषाय संयतासंयतोंका अवहारकाल क्रोधकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यात-

मायकसायसंजदासंजदअवहारकालो विसेसाहिओ। कोधकसायसंजदासंजदअवहारकालो विसेसाहिओ। माणकसायसंजदासंजदअवहारकालो विसेसाहिओ। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं अवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। अकसाई अणंतगुणा। माणकसाइमिच्छाइट्ठी अणंतगुणा। कोधकसाइमिच्छाइट्ठी विसेसाहिया। मायकसाइमिच्छाइट्ठी विसेसाहिया। लोभकसाइमिच्छाइट्ठी विसेसाहिया।

एवं कसायमग्गणा समत्ता।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणीसु मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं[1] ॥ १४१ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे। तं जहा— ओघमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिरासीहिंतो मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिरासिणो ण एक्केण वि जीवेण ऊणा भवंति, दुविहणाणविरहिय-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणमभावादो। विभंगणाणिणो मिच्छादिट्ठि-सासण-

गुणा है। मायाकषाय संयतासंयतोंका अवहारकाल लोभकषाय संयतासंयत अवहारकालसे विशेष अधिक है। क्रोधकषाय संयतासंयतोंका अवहारकाल मायाकषाय संयतासंयत अवहारकालसे विशेष अधिक है। मानकषाय संयतासंयत अवहारकाल क्रोधकषाय संयतासंयत अवहारकालसे विशेष अधिक है। मानकषाय संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे कषायरहित जीव अनन्तगुणे हैं। मानकषायी मिथ्यादृष्टि जीव कषायरहित जीवोंसे अनन्तगुणे हैं। क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीव मानकषायी मिथ्यादृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं। मायाकषायी मिथ्यादृष्टि जीव क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं। लोभकषायी मिथ्यादृष्टि जीव मायाकषायी मिथ्यादृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं।

इसप्रकार कषायमार्गणा समाप्त हुई।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इसप्रकार है— ओघ मिथ्यादृष्टिराशि और ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि राशिसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टिराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव राशि एक भी जीव प्रमाणसे कम नहीं है, क्योंकि, उक्त दोनों प्रकारके ज्ञानोंसे रहित मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव नहीं पाये जाते हैं।

१ ज्ञानानुवादेन मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्दृष्टयः सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८. सण्णाणिरासिपचयपरिहीणो सव्वजीवरासी हु। मदिसुदअण्णाणीणं पत्तेयं होदि परिमाणं ॥ गो. जी. ४६४.

सम्मादिट्ठिणो अत्थि त्ति ओघमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहिंतो मदि-सुदअण्णाणमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो ऊणा होंति त्ति ओघपमाणमेदेसिं णत्थि त्ति चे ण, मदि-सुदअण्णाणिविरहिदविभंगणाणीणमणुवलंभादो तदो ओघमिदि सुट्ठु घडदे । एत्थ मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिरासिस्स धुवरासी वुच्चदे । तं जहा– सिद्धतेरसगुणपडिवण्णरासिं मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिरासिभजिदतव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते मदि-सुद-अण्णाणिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । ओघसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो चेव मदि-सुद-अण्णाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।

विभंगणाणिसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवेहि सादिरेयं ॥ १४२ ॥

देवमिच्छाइट्ठिणो णेरइयमिच्छाइट्ठिणो च सव्वे विहंगणाणिणो, विहंगणाणभव-पच्चयसमण्णिदत्तादो । तिरिक्खविहंगणाणिणो वि पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता होंता वि

शंका—विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं, इसलिये ओघमिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव कम हो जाते हैं, इसलिये इनके ओघप्रमाणका निर्देश नहीं बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानियोंको छोड़कर विभंगज्ञानी जीव पृथक् नहीं पाये जाते हैं, इसलिये इनका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान अच्छीतरह बन जाता है।

अब यहां पर मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी ध्रुवराशिका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है— सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न राशिको तथा सिद्ध और तेरह गुणस्थान प्रतिपन्न राशिके वर्गमें मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देने पर जितना लब्ध आवे उसको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। ओघसासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल ही मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

विभंगज्ञानियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १४२ ॥

देव मिथ्यादृष्टि जीव और नारक मिथ्यादृष्टि जीव, ये सब विभंगज्ञानी होते हैं, क्योंकि, ये जीव भवप्रत्यय विभंगज्ञानसे युक्त होते हैं। तिर्यंच विभंगज्ञानी जीव जगप्रतरके

१ विभंगज्ञानिनो मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८. पल्लासंखघणंगुलहदसेढितिरिक्खगदिविभंगजुदा । णरसहिदा किंचूणा चदुगदिवेभंगपरिमाणं ॥ गो. जी. ४६२.

असंखेज्जसेढिमेत्ता भवंति। तासिं सेढीणं विक्खंभसूई असंखेज्जघणंगुलमेत्ता। केत्तिय-मेत्ताणि घणंगुलाणि ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। तदो देवमिच्छाइट्ठिरासीदो विहंगणाणमिच्छाइट्ठिरासी विसेसाहिओ भवदि। विहंगणाणविरहिददेवापज्जत्तरासिं णेरइय-तिरिक्खविहंगणाणीहिंतो असंखेज्जगुणं देवेहिंतो अवणिदे देवेहिं सादिरेयत्तं ण घडदि त्ति णासंकणिज्जं, विहंगणाणिसद्दस्सावित्तिकरणेण विहंगणाणिदेवाणं गहणादो। वेउव्वियमिस्स-रासिस्स सांतरत्तेण, देवपज्जत्ताणं सव्वकालमसंभवा च। एदस्स अवहारकालो वुच्चदे। तं जहा– देवमिच्छाइट्ठिअवहारकालम्हि एगपदरंगुलं घेत्तूण असंखेज्जखंडं करिय तत्थेग-खंडमवणिय बहुखंडे तम्हि चेव पक्खित्ते विहंगणाणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एदेण जगपदरे भागे हिदे विहंगणाणिमिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि।

सासणसम्माइट्ठी ओघं ॥ १४३ ॥

ओघसासणसम्माइट्ठिरासीदो जदि वि एसो सासणसम्माइट्ठिरासी अप्पणो असं-

असंख्यातवें भागप्रमाण होते हुए भी असंख्यात श्रेणीप्रमाण होते हैं। उन असंख्यात श्रेणियोंकी विष्कंभसूची असंख्यात घनांगुलप्रमाण है। वे असंख्यात घनांगुल कितने होते हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र होते हैं। अतएव देव मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशि विशेष अधिक होती है। नारक और तिर्यंच विभंगज्ञानियोंसे विभंगज्ञानसे रहित देव अपर्याप्त राशि असंख्यातगुणी है। अतएव उसे देवराशिमेंसे घटा देने पर देवोंसे साधिक विभंगज्ञानियोंका प्रमाण नहीं बन सकता है, इसप्रकार भी आशंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, प्रकृतमें विभगज्ञानी शब्दकी आवृत्ति कर लेनेसे विभंगज्ञानी देवोंका ग्रहण किया है। दूसरे वैक्रियिकमिश्र राशि सान्तर होनेके कारण देव अपर्याप्त जीव सर्वदा पाये भी नहीं जाते हैं, इसलिये विभंगज्ञानियोंका प्रमाण देवोंसे साधिक है इस कथनमें भी कोई बाधा नहीं आती है।

अब विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि राशिका अवहारकाल कहते हैं। वह इसप्रकार है— देव मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके असंख्यात खंड करके उनमेंसे एक खंडको निकाल कर बहुभाग उसी देव मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ १४३ ॥

ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि राशिसे यद्यपि यह विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि राशि

१ सासादनसम्यग्दृष्टयः पल्योपमासंख्येयभागप्रमिता । स. सि. १, ८.

खेज्जदिभाएण तिरिक्ख-मणुसदुणाणिपमाणेण हीणो, तो वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तत्तणेण दोण्हं पि रासीणं पच्चासत्ती अत्थि त्ति ओघमिदि वुच्चदे।

अभिणिबोहियणाणि-सुदणाणि-ओहिणाणीसु असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं[1] ॥ १४४ ॥

आभिणिबोहिय-सुदणाणीणं पमाणस्स ओघत्तं जुज्जदे, तेहि विरहिद-असंजदसम्माइट्ठिआदीणमणुवलंभादो। ण पुण ओहिणाणीणं ओघत्तं जुज्जदे, ओहिणाणविरहिदतिरिक्खमणुस्ससम्माइट्ठीणमुवलंभा ? ण एस दोसो, बहुसो दत्तुत्तरादो।

एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे। तं जहा— आभिणिबोहियणाणि-सुदणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो चेव भवदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते ओहिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहार-

अपने असंख्यातवें भागरूप मत्यज्ञान और श्रुताज्ञान इन दो अज्ञानोंसे युक्त तिर्यंच और मनुष्योंके प्रमाणसे हीन है, तो भी पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा ओघसासादनसम्यग्दृष्टि राशि और विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि राशि इन दोनोंकी प्रत्यासत्ति पाई जाती है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा है।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४४ ॥

शंका— आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके प्रमाणके ओघपना बन जाता है, क्योंकि, इन दोनों ज्ञानोंके विना असंयतसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं। परंतु अवधिज्ञानियोंके प्रमाणके ओघपना नहीं बन सकता है, क्योंकि, अवधिज्ञानसे रहित तिर्यंच और मनुष्य सम्यग्दृष्टि पाये जाते है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारके प्रश्नका अनेकवार उत्तर दे आये हैं।

अब इनके अवहारकालोंकी उत्पत्तिको कहते हैं। वह इसप्रकार है— ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका अवहारकाल ही आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी जीवोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर अवधिज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

[1] मतिश्रुतिज्ञानिनोऽसंयतसम्यग्दृष्ट्यादय क्षीणकषायान्ता. सामान्योक्तसंख्या। अवधिज्ञानिनोऽसंयतसम्यग्दृष्टि-संयतासंयतान्ता सामान्योक्तसंख्या। स. सि १, ८. चदुगदिमदिसुदबोहा पल्लासंखेज्जया ॥ गो जी. ४६१. ओहिरहिदा तिरिक्खा मदिणाणिअसंखभागगा मणुगा। संखेज्जा हु तदूणा मदिणाणी ओहिपरिमाणं॥ गो. जी. ४६२.

कालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे (मिस्समदि-सुदअण्णाणि-) सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं चेव पक्खित्ते मिस्सतिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते विहंगणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे आभिणिबोहियणाणि-सुदणाणिसंजदासंजद-अवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओहिणाणिसंजदासंजद-अवहारकालो होदि । अहवा ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-भाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते तिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे मिस्सतिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे तिणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलि-याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे दुणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे मिस्सदुणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि सखेज्ज-रूवेहि गुणिदे दुणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-

इस अवधिज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर मिश्र दो ज्ञानी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असं-ख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अवधिज्ञानी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। अथवा, ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर तीन अज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टि-योंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर मिश्र दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित

भाएण गुणिदे दुणाणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे तिणाणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि। एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे सग-सगरासीओ हवंति। पमत्तादीणं पमाणं ओघमेव भवदि, विसेसाभावादो। ओहिणाणिपमत्तादीणं पि ओघत्ते पत्ते तप्पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो, ओहिणाणिसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीयरायछदुमत्था त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥ १४५ ॥

ओहिणाणिणो पमत्तसंजदा अपमत्तसंजदा च सग-सगरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्ता भवंति। किंतु एत्तिया इदि परिप्फुडं ण णव्वंति, संपहियकाले गुरूवएसाभावादो। णवरि ओहिणाणिणो उवसामगा चोद्दस १४, खवगा अट्ठावीस २८।

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[2] ॥ १४६ ॥

पमत्तापमत्तगुणट्ठाणेसु मणपज्जवणाणिणो तत्थट्ठियदुणाणीणं संखेज्जदिभागमेत्ता

करने पर दो ज्ञानवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तीन ज्ञानवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इन अवहारकालोंसे पृथक् पृथक् पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां आती हैं। प्रमत्तसंयत आदिका प्रमाण ओघरूप ही होता है क्योंकि वहां विशेष का अभाव है। अवधिज्ञानी प्रमत्तसंयत आदिके प्रमाणको ओघत्वकी प्राप्ति होने पर उसका प्रतिषेध करनेकेलिये आगेका सूत्र कहते हैं—

इतना विशेष है कि अवधिज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १४५ ॥

अवधिज्ञानी प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव अपनी अपनी राशिके संख्यातवें भागमात्र होते हैं, किन्तु वे इतने ही होते हैं यह स्पष्ट नहीं जाना जाता है, क्योंकि, वर्तमानकालमें इसप्रकारका गुरुका उपदेश नहीं पाया जाता है। इतना विशेष है कि अवधिज्ञानी उपशामक चौदह और क्षपक अट्ठाईस होते हैं।

मनःपर्यायज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १४६ ॥

प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानोंमें मनःपर्ययज्ञानी जीव वहां स्थित दो

१ प्रमत्तसयतादयः क्षीणकषायान्ताः सख्येयाः। स. सि. १, ८.

२ मनःपर्ययज्ञानिनः प्रमत्तसंयतादयः क्षीणकषायान्ताः सख्येयाः। स. सि. १, ८. मणपज्जा सखेज्जा ॥ गो. जी. ४६१.

भवंति, लद्धिसंपण्णरासीणं बहूणमसंभवादो। ते च एत्तिया इदि सम्मं ण णव्वंति, संपहियकाले उवएसाभावादो। णवरि मणपज्जवणाणिणो उवसामगा दस १०, खवगा २०।

केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघं ॥ १४७॥

सुगममिदं सुत्तं।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिणो भवंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा केवलणाणिणो भवंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा विभंगणाणिमिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आभिणिबोहिय-सुदणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो भवंति। ते चेव पडिरासिं काऊण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे ओहिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिस्सदुणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। ते चेव पडिरासिं काऊण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि

ज्ञानवाले जीवोंके संख्यातवें भागमात्र होते हैं, क्योंकि, लब्धिसंपन्न राशियां बहुत नहीं हो सकती हैं। फिर भी वे इतने ही होते हैं, यह ठीक नहीं जाना जाता है, क्योंकि वर्तमानकालमें इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है। इतना विशेष है कि मनःपर्ययज्ञानी उपशामक दश और क्षपक वीस होते हैं।

केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग केवलज्ञानी जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। इन्हीं आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंकी प्रतिराशि करके और उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर अवधिज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मिश्र दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। उन्हीं मिश्र दो ज्ञानवाले जीवोंके प्रमाणकी प्रतिराशि करके और उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे

१ प्रतिषु 'तद्धि' इति पाठ।

२ केवलज्ञानिन सयोगा अयोगाश्च सामान्योक्तसंख्या। स. सि. १, ८. केवलिणो सिद्धादो होंति अदिरित्ता॥ गो. जी. ४६१.

चेव अवणिदे मिस्सतिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । ते चेव पडिरासिं काऊण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे विभंगणाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आभिणिबोहिय-सुदणाणिसंजदासंजदा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओहिणाणिसंजदासंजदा होंति । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

अहवा सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा केवलणाणिणो भवंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा विहंगणाणिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसंजदासंजदा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे

उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । उन्हीं मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिकी प्रतिराशि करके और उसे उसी आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी संयतासंयत होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अवधिज्ञानी संयतासंयत जीव होते हैं। शेष अल्पबहुत्वका जानकर कथन करना चाहिये। अथवा, सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग केवलज्ञानी जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड

करए बहुखंडा तिणाणिसंजदासंजदा होंति । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाणादिभेएण । मदि-सुदअण्णाणीसु सत्थाणं णत्थि । कारणं पुव्वभणिदं । सासणसम्माइट्ठिसत्थाणप्पाबहुगे ओघभंगो । विभंगणाणिमिच्छाइट्ठीणं सत्थाणस्स देवमिच्छाइट्ठीणं सत्थाणभंगो । तिणाणीसु मदि-सुदणाणीसु च असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदेसु सत्थाणमोघं । सत्थाणप्पाबहुगं गदं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । मिच्छाइट्ठिदव्वमणंतगुणं । सव्वत्थोवो विभंगणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । विभंगणाणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । (सेढी असंखेज्जगुणा ।) दव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । सव्वत्थोवा मदि-सुदणाणिणो[1] चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा

करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले संयतासंयत जीव हैं । शेषका जानकर कथन करना चाहिये ।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । कारण पहले कहा जा चुका है । मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व देव मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंमें तथा मति और श्रुत इन दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघस्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । पल्योपम द्रव्यप्रमाणसे असंख्यातगुणा है । मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य पल्योपमसे अनन्तगुणा है । विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । पल्योपम द्रव्यप्रमाणसे असंख्यातगुणा है । विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल पल्योपमसे असंख्यातगुणा है । उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । (जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है ।) जगश्रेणीसे उन्हींका द्रव्य असंख्यातगुणा है । द्रव्यप्रमाणसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी चार गुणस्थानोंके उपशामक सबसे स्तोक हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी प्रमत्तसंयत जीव

१ प्रतिषु 'मदि-सुदणाण' इति पाठः ।

संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। असंजदसम्माइट्ठि-दव्वमसंखेज्जगुणं। पलिदोवममसंखेज्जगुणं। एवं चेव ओहिणाणिपरत्थाणं पि वत्तव्वं। मणपज्जवणाणिणो सव्वत्थोवा उवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। केवलणाणीसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली। अजोगिकेवली अणंतगुणा। परत्थाणं गदं।

सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा मणपज्जवणाणिउवसामगा दस १०। ओहि-णाणिउवसामगा विसेसाहिया १४। मणपज्जवणाणिखवगा विसेसाहिया २०। ओहिणाणि-खवगा विसेसाहिया २८। मणपज्जवणाणिणो अप्पमत्तसजदा संखेज्जगुणा। तत्थेव ओहिणाणिणो विसेसाहिया। मणपज्जवणाणिणो पमत्ता विसेसाहिया। तत्थेव ओहिणाणिणो विसेसाहिया। कुदो एदमवगम्मदे ? उवसम-खवगसेढिम्हि एदेसिं दोण्हं णाणाणं एदेणेव

अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है। मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी संयतासंयतोंका अवहारकाल असंयत-सम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संयतासंयतोंके द्रव्यसे असंख्यात-गुणा है। पल्योपम असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार अवधि-ज्ञानियोंके परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये। मनःपर्ययज्ञानी उपशामक सबसे स्तोक हैं। मनःपर्ययज्ञानी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। मनःपर्ययज्ञानी अप्रमत्त-संयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। मनःपर्ययज्ञानी प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं। अयोगिकेवली जीव सयोगिकेवलियोंसे अनन्तगुणे हैं। इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— मनःपर्ययज्ञानी उपशामक जीव सबसे स्तोक होते हुए दश हैं। अवधिज्ञानी उपशामक मनःपर्ययज्ञानियोंसे विशेष अधिक होते हुए चौदह हैं। मनःपर्ययज्ञानी क्षपक विशेष अधिक होते हुए बीस हैं। अवधिज्ञानी क्षपक विशेष अधिक होते हुए अट्ठाईस हैं। मनःपर्ययज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। वहीं पर अर्थात् अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें अवधिज्ञानी जीव मनःपर्ययज्ञानि-योंसे विशेष अधिक हैं। मनःपर्ययज्ञानी प्रमत्तसंयत जीव अवधिज्ञानी अप्रमत्तसंयतोंसे विशेष अधिक हैं। वहीं पर अर्थात् प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें ही अवधिज्ञानी जीव मनःपर्यय-ज्ञानियोंसे विशेष अधिक हैं।

शंका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—उपशम और क्षपक श्रेणीमें इन दोनों ज्ञानोंके प्रमाणका प्ररूपण इसी

कमेण पमाणपरूवणादो। कज्जं कारणाणुरूवं सव्वहा ण होदि त्ति ण वत्तव्वं, कत्थ वि कारणाणुरूवकज्जदंसणादो। ण जिणंतरेण वभिचारो, तस्स पडिणियदतित्थपडिबद्धत्तादो। दुणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। दुणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। दुणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तिणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। दुणाणिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तिणाणिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवमवहारकालपडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो विहंगणाणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। दव्वमसंखेज्जगुणं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। केवलणाणिणो अणंतगुणा। मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा।

एवं णाणमग्गणा समत्ता।

क्रमसे किया है। कार्य सर्वदा कारणके अनुरूप नहीं होता है, यह भी नहीं कहना चाहिये, क्योंकि, कहीं पर भी कारणके अनुरूप कार्य देखा जाता है। जिनान्तरसे व्यभिचार भी नहीं आता है, क्योंकि, जिनान्तर प्रतिनियत तीर्थसे प्रतिवद्ध होना है।

अवधिज्ञानी प्रमत्तसंयतोंसे दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है। दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है। दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है। दो ज्ञानवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। तीन ज्ञानवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हीं तीन ज्ञानवाले संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। उन्हींका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। जगप्रतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। केवलज्ञानी लोकसे अनन्तगुणे हैं। मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव केवलज्ञानियोंसे अनन्तगुणे हैं।

इसप्रकार ज्ञानमार्गणा समाप्त हुई।

संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १४८ ॥

एत्थ ओघदव्वादो ण किंचि ऊणमधियं वा अत्थि, भेदणिबंधणविसेसाभावादो। तदो एत्थ ओघत्तं जुज्जदे।

सामाइय- छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिवादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा त्ति ओघं ॥ १४९ ॥

एत्थ वि ओघत्तं ण विरुज्झदे। कुदो? दव्वट्ठियणयावलंवणेण पडिगहिदेगजमा सामाइयसुद्धिसंजदा वुच्चंति, ते चेय पज्जवट्ठियणयावलंवणेण ति-चदु-पंचादिभेएण पुव्विल्लजमं फालिय[2] पडिवण्णा छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा णाम। तदो दो वि रासीओ ओघरासिपमाणादो ण भिज्जंति त्ति ओघत्तं जुज्जदे।

एत्थ चोदगो भणदि– उभयणयावलंवणं किं कमेण भवदि, आहो अकमेणेत्ति?

संयम मार्गणाके अनुवादसे संयमियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान संख्यात हैं ॥१४८॥

यहां ओघद्रव्यप्रमाणसे कुछ न्यून या अधिक प्रमाण नहीं होता है, क्योंकि, सामान्य प्ररूपणमें भेदका कारणभूत विशेषकी अपेक्षा नहीं होती है, इसलिये यहां संयममार्गणामें सामान्यसे ओघपना बन जाता है।

सामायिक और छेदोपस्थापन शुद्धिसंयत जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिवादरसांपरायिकप्रविष्ट उपशमक और क्षपक गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्रमाणके समान संख्यात हैं ॥ १४९ ॥

यहां सामायिक और छेदोपस्थापन शुद्धिसंयतोंमें भी प्रमाणकी अपेक्षा ओघत्व विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेकी अपेक्षा जिन्होंने 'मैं सर्व सावद्यसे विरत हूं' इसप्रकार एक यमको स्वीकार किया है, वे सामायिकशुद्धिसंयत कहे जाते हैं। तथा वे ही जीव पर्यायार्थिक नयके अवलम्बन करनेकी अपेक्षा तीन, चार और पांच आदि भेदरूपसे पहलेके यमको भेद करके स्वीकार करते हुए छेदोपस्थापन शुद्धिसंयत कहे जाते हैं। इसलिये ये दोनों राशियां ओघराशिके प्रमाणसे भेदको प्राप्त नहीं होती हैं, इसलिये ओघपना बन जाता है।

शंका—यहां पर शंकाकार कहता है कि दोनों नयोंका अवलम्बन क्या क्रमसे होता

१ संयमानुवादेन सामायिकच्छेदोपस्थापनशुद्धिसंयता प्रमत्तादयोऽनिवृत्तिबादरान्ता. सामान्योक्तसंख्याः स. सि. १, ८. पमत्तादिचउण्हं जुदी सामायियदुगं । गो. जी. ४८०.

२ प्रतिषु '–संजम पालिय ' इति पाठः।

ण ताव अक्कमेण[1], विरुद्धेहि भेदाभेदेहि जुगवं ववहाराणुववत्तीदो। अह कमेण, ण सामाइयसुद्धिसंजदा छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा भवंति, एगत्तज्झवसायाणं भेदज्झवसाइत्तविरोहादो। छेदोवट्ठावणासुद्धिसंजदा वि ण सामाइयसुद्धिसंजदा तक्काले भवंति, भेदज्झवसायाणमभेदज्झवसाइत्तविरोहादो। तदो अक्कमेण दोहि णएहि पादिदेोघसंजदरासी तत्थेगेण भागेण ओघपमाणं ण पावेदि त्ति ओघत्तं ण जुज्जदे। अध कदाइ सव्वो[2] संजदरासी अक्कमेण एक्कं चिय णयमवलंबिऊण जदि चिट्ठदि त्ति इच्छिज्जदि, तो एदाओ दुविहसंजदरासीओ सांतराओ हवंति। ण च एवं, कालाणिओगे एदासिं णिरंतरत्तुवलंभादो। एत्थ परिहारो वुच्चदे। तं जहा– दव्वट्ठियणए अवलंबिदे सव्वेसिं संजदाणं एक्केक्को चेव जमो होदि त्ति सामाइयसुद्धिसंजदाणं ओघसंजदपमाणं होदि। पज्जवट्ठियणए अवलंबिदे सव्वेसिं संजदाणं पादेक्कं पंच पंच जमा हवंति त्ति छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा वि ओघसंजदरासिपमाणं पावेंति तेणेदेसिमोघत्तं जुज्जदे। ण च एगं चेवज्झवसाया एयंतेण अप्पप्पणो पडिवक्खणिरवेक्खा,

है या अक्रमसे? अक्रमसे तो हो नहीं सकता, क्योंकि, परस्पर विरुद्ध भेद और अभेद इनके द्वारा एकसाथ व्यवहार नहीं बन सकता है। यदि क्रमसे होता है तो सामायिक शुद्धिसंयत जीव छेदोपस्थापनशुद्धिसंयत नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, एकत्वरूप परिणामोंका भेदरूप परिणामोंके साथ विरोध है। उसीप्रकार छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीव भी उसी समय सामायिकशुद्धिसंयत नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, भेदरूप परिणामोंका अभेदरूप परिणामोंके साथ विरोध है। इसलिये अक्रमसे दोनों नयोंकी अपेक्षा ओघसंयतराशि संयममार्गणामें एक भागके द्वारा ओघप्रमाणको प्राप्त नहीं हो सकती है, इसलिये सामायिकशुद्धिसंयतों और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतोंका प्रमाण ओघप्रमाणपनेको प्राप्त नहीं हो सकता है? कदाचित् संयतराशि अक्रमसे एक ही नयका अवलम्बन लेकर यदि रहती है, ऐसा आप चाहते हैं, तो ये दोनों संयतराशियां सान्तर हो जाती हैं। परंतु ऐसा है नहीं, क्योंकि, कालानुयोगमें ये राशियां निरन्तर हैं, ऐसा पाया जाता है?

समाधान—यहां पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं। वह इसप्रकार है— द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर सर्व संयमियोंके एक एक ही यम होता है, इसलिये सामायिकशुद्धिसंयतोंके ओघसंयतोंका प्रमाण बन जाता है। पर्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो सर्व संयमियोंके प्रत्येकके पांच पांच संयम होते हैं, इसलिये छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत भी ओघसंयतराशिके प्रमाणको प्राप्त हो जाते हैं, अतएव, इन दोनों संयतोंके ओघपना बन जाता है। कुछ एक जातिके परिणाम एकान्तसे अपने प्रतिपक्षी परिणामोंसे निरपेक्ष होते हैं,

१ प्रतिपु 'अक्कमे' इति पाठ। २ प्रतिपु 'सत्थो' इति पाठः।
३ अ-आप्रत्यो. 'एग चेद–', क प्रतौ 'एग चेद–' इति पाठः।

तेसिं दुण्णयत्तावत्तीदो। तदो जे सामाइयसुद्धिसंजदा ते चेय छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा होंति। जे छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा ते चेय सामाइयसुद्धिसंजदा होंति त्ति। तदो दोण्हं रासीणमोघत्तं जुज्जदे।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्तापमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥ १५० ॥

ओघसंजदपमाणं ण पावेंति त्ति भणिदं होदि। तो वि ते केत्तिया त्ति भणिदे उच्चदे, तिरूवूण-सत्तसहस्समेत्ता हवंति।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं[2] ॥ १५१ ॥

एत्थ एगं सुहुमसांपराइयग्गहणं अहियारपदुप्पायणट्ठं, अवरेगं गुणट्ठाणणिद्देसो। तेसिं पमाणं तिरूवूण-णवसदमेत्तं। वुत्तं च—

ऐसा नहीं है, क्योंकि, ऐसा मानने पर उनको दुर्णयपनेकी आपत्ति आ जाती है। इसलिये जो सामायिकशुद्धिसंयत जीव हैं, वे ही छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत होते हैं। तथा जो छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीव हैं, वे ही सामायिकशुद्धिसंयत होते हैं। अतएव उक्त दोनों राशियोंके ओघपना बन जाता है।

परिहारविशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥ १५० ॥

परिहारविशुद्धिसंयमसे युक्त प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण ओघसंयतोंके प्रमाणको प्राप्त नहीं होता है, यह इस सूत्रका तात्पर्य है। तो भी उन परिहारविशुद्धिसंयतोंका प्रमाण कितना है, ऐसा पूछने पर कहते हैं कि वे परिहारविशुद्धिसंयत तीन कम सात हजार होते हैं।

सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंमें सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत उपशमक और क्षपक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५१ ॥

इस सूत्रमें प्रथमवार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण अधिकारका प्रतिपादन करनेके लिये किया है। और दूसरीवार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण गुणस्थानका निर्देशरूप किया है। उन सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंका प्रमाण तीन कम नौ सौ है। कहा भी है—

१ परिहारविशुद्धिसंयताः प्रमत्ताश्चाप्रमत्ताश्च संख्येयाः। स. सि. १, ८. कमेण सेसतिय सत्तसहस्सा णवसय णवलक्खा तीहिं परिहीणा ॥ गो. जी. ४८०.

२ सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयताः सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८.

सत्तादी छक्कंता दोणवमज्झा य होंति परिहारा ।
सत्तादी अट्ठंता णवमज्झा सुहुमरागा दु ॥ ७९ ॥

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु चउट्ठाणं ओघं[1] ॥ १५२ ॥

चउट्ठाणमिदि कधमेगवयणणिद्देसो ? ण, चउण्हं पि जादीए एगत्तमवलंबिय तधोवदेसादो । सेसं सुगमं ।

संजदासंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं[2] ॥ १५३ ॥

सुगममिदं सुत्तं ।

असंजदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्व-पमाणेण केवडिया, ओघं[3] ॥ १५४ ॥

चदुण्हमसंजदगुणट्ठाणाणं ओघचदुगुणट्ठाणेहिंतो अविसिट्ठाणमोघत्तं जुज्जदे । एत्थ

जिस संख्याके आदिमें सात, अन्तमें छह और मध्यमें दोवार नौ हैं उतने अर्थात् छह हजार नौसौ सत्तानवें परिहारविशुद्धिसंयत जीव हैं। तथा जिस संख्याके आदिमें सात, अन्तमें आठ और मध्यमें नौ है उतने अर्थात् आठसौ सत्तानवें सूक्ष्मरागवाले जीव हैं ॥ ७९ ॥

यथाख्यात विहारशुद्धिसंयतोंमें ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें और चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान है ॥ १५२ ॥

शंका—सूत्रमें ' चउट्ठाणं ' इसप्रकार एकवचन निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जातिकी अपेक्षा एकत्वका अवलम्बन लेकर चारों गुणस्थानोंका एक वचनरूपसे उपदेश दिया है। शेष कथन सुगम है।

संयतासंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १५३ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १५४ ॥

असंयतसंबन्धी चारों गुणस्थान ओघ चारों गुणस्थानोंके समान हैं, इसलिये असंयत चारों गुणस्थानोंके प्रमाणके ओघपना बन जाता है। अब यहां पर अवहारकालकी उत्पत्ति

---

१ यथाख्यातविहारशुद्धिसंयताः सामान्योक्तसंख्या । स. सि १, ८.

२ संयतासंयताः सामान्योक्तसंख्या । स सि १, ८ पल्लासंखेज्जदिमं विरदाविरदाण दव्वपरिमाणं ॥ गो. जी. ४८१.

३ असंयताश्च सामान्योक्तसंख्या । स. सि. १, ८. पुव्वुत्तरासिहीणा संसारी अविरदाण पमा ॥ गो. जी. ४८१.

अवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे। तं जहा— सिद्ध-तेरसगुणपडिवण्णरासिं मिच्छाइट्ठिरासिभजिद-तव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते मिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि। सासणादीणमवहार-कालुप्पत्ती ओघसमाणा। एवं संजदासंजदाणं पि।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदा होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसम-संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा होंति। सेसं संखेज्जखंडे[1] कए बहुखंडा सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा जहाक्खादसुद्धिसंजदा होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा परिहारया होंति। (सेसेगखंडं सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा होंति।)

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। तत्थ सत्थाणे पयदं। संजदाणं सत्थाणं णत्थि, अवहाराभावादो। मिच्छाइट्ठीणं पि सत्थाणं णत्थि, रासीदो भागहारस्स बहुत्तादो। सासणसम्माइट्ठिमादिं करिय जाव संजदासंजदा त्ति एदेसिं सत्थाणस्स ओघभंगो।

कहते हैं। वह इसप्रकार है— सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिको तथा मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित सिद्ध और तेरह गुणस्थानवर्ती राशिके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर मिथ्यादृष्टिराशिकी ध्रुवराशि होती है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके अवहारकालोंकी उत्पत्ति ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि आदि अवहारकालोंकी उत्पत्तिके समान है। इसीप्रकार संयतासंयतोंके अवहारकालकी उत्पत्ति भी समझना चाहिये।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव होते है। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग सिद्ध जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव होते हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत होते हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग यथाख्यातशुद्धिसंयत होते हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग परिहारविशुद्धिसंयत होते हैं। (शेष एक भाग सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत हैं।)

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे यहां स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है— संयत जीवोंके अवहारकालका अभाव होनेसे स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है। मिथ्यादृष्टियोंके भी स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि राशिसे भागहार बहुत बड़ा है। सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक इन जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्वसामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।

१ प्रतिषु 'सेसमसखेज्जखडे' इति पाठः।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदउवसामगा । तेसिं खवगा संखेज्जगुणा । अपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । परिहारसुद्धिसंजदेसु सव्वत्थोवा अपमत्तसंजदा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । जहाक्खादसंजदेसु सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । संजदासंजदेसु परत्थाणं णत्थि । असंजदेसु सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा । परिहारसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा । जहाक्खादसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा । सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो उवरि मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ।

एवं संजममग्गणा गदा ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— सामायिक और छेदोपस्थापनशुद्धिसंयत उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं । उन्हींके क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । वे ही अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । वे ही प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। परिहारविशुद्धिसंयतोंमें अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं। प्रमत्तसंयत जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंमें उपशामक जीव सबसे थोड़े हैं । क्षपक जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । यथाख्यात संयतोंमें उपशामक जीव सबसे थोड़े हैं । क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । संयतासंयतोंमें परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । असंयतोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयत सम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं ।

अब सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत जीव सबसे स्तोक हैं । परिहारविशुद्धिसंयत जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । यथाख्यातशुद्धिसंयत जीव परिहारविशुद्धिसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सामायिक और छेदोपस्थापनशुद्धिसंयत जीव दोनों समान होते हुए यथाख्यातसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उक्त दोनों संयतोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे ऊपर मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ १५५ ॥

सुगममेदं सुत्तं, बहुसो वक्खाणिदत्तादो।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ १५६ ॥

अइथूल-थूल-सुहुमपरूवणाओ तिण्णि वि परिवाडीए किमट्ठं वुच्चंति, सुहुमपरूवणमेव किण्ण वुच्चदे ? ण, मेहावि-मंदाइमंदमेहाविजणाणुग्गहकारणेण तहोवएसा। सेसं सुगमं।

खेत्तेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरादि अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण[1] ॥ १५७ ॥

संखेज्जरूवेहि सूचिअंगुले भागे हिदे तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठीणं पडिभागो होदि। एदेण पडिभागेण चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठीहि जगपदरमवहिरदि। एत्थ किं चक्खुदंसणावरणकम्मक्खओवसमा जीवा चक्खुदंसणिणो वुच्चंति, आहो चक्खु-

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ १५५ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, अनेकवार व्याख्यान हो गया है।

कालकी अपेक्षा चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ १५६ ॥

शंका— अतिस्थूल, स्थूल और सूक्ष्म, ये तीनों प्ररूपणाएं परिपाटीक्रमसे किसलिये कही जाती हैं, केवल एक सूक्ष्म प्ररूपणा क्यों नहीं कही जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, मेधावी, मन्दबुद्धि और अतिमन्दबुद्धि जनोंका अनुग्रह करनेके कारण इसप्रकारका उपदेश दिया गया है। शेष कथन सुगम है।

क्षेत्रकी अपेक्षा चक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १५७ ॥

सूच्यंगुलमें संख्यातका भाग देने पर यहां जो लब्ध आवे उसे वर्गित करने पर चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रतिभाग होता है। इस प्रतिभागसे चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है।

शंका—यहां पर क्या चक्षुदर्शनावरणकर्मके क्षयोपशमसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं, या चक्षुदर्शनरूप उपयोगसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं ? इनमेंसे प्रथम

१ दर्शनानुवादेन चक्षुर्दर्शनिनो मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः। स. सि. १, ८. जोगे चउरक्खाण पंचक्खाण च खीणचरिमाणं चक्खूण। गो. जी. ४८७.

दंसणोवओगसहिदजीवा त्ति ? पढमपक्खे चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभाएण होदव्वं, चदु-पंचिंदियापज्जत्तरासीणं पाहण्णादो । ण विदियपक्खो वि, चक्खुदंसणट्ठिदीए[1] अंतोमुहुत्तप्पसंगादो त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे । असंखेज्जदिभाए चक्खिदियपडिभागे[2] चक्खुदंसणुवजोगपाओग्गचक्खुदंसणखओवसमा चक्खुदंसणिणो त्ति जेण वुच्चंति तेण लद्धिअपज्जत्ताणं गहणं ण भवदि, तेसु चक्खिदियणिप्पत्तिविरहिदेसु चक्खुदंसणोवओगसहिदतक्खओवसमाभावादो । संखेज्जसागरोवममेत्ता चक्खुदंसणिट्ठिदी[3] वि ण विरुज्झदे, खओवसमस्स पहाणत्तब्भुवगमादो । तदो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तो चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि त्ति सिद्धं, चदु-पंचिंदियपज्जत्तरासीणं पहाणत्त-ब्भुवगमादो ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ १५८ ॥

पक्षके ग्रहण करने पर चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागमात्र होना चाहिये, क्योंकि, ऐसी स्थितिमें चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्रधानता है । इसप्रकार पहला पक्ष तो ठीक नहीं है । उसीप्रकार दूसरा पक्ष भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उसके मानने पर चक्षुदर्शनकी स्थितिको अन्तर्मुहूर्तमात्रका प्रसंग आ जाता है ?

समाधान— आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं— चक्षुदर्शनवाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागरूप आक्षेपका परिहार यह है कि चूंकि चक्षुदर्शनोपयोगके योग्य चक्षुदर्शनावरणके क्षयोपशमवाले जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं, इसलिये यहां पर लब्ध्यपर्याप्त जीवोंका ग्रहण नहीं होता है, क्योंकि, वे जीव चक्षु इन्द्रियकी निष्पत्तिसे रहित होते हैं, इसलिये उनमें चक्षुदर्शनरूप उपयोगसे युक्त चक्षुदर्शनरूप क्षयोपशम नहीं पाया जाता है । तथा चक्षुदर्शनवाले जीवोंकी स्थिति संख्यातसागरोपममात्र होती है, यह कथन भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, वहां पर क्षयोपशमकी प्रधानता स्वीकार की है । इसलिये चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतरांगुलके संख्यातवें भागमात्र होता है, यह कथन सिद्ध होता है, क्योंकि, यहां पर चक्षुदर्शनी जीवोंके प्रमाणके कथनमें चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्रधानता स्वीकार की है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें चक्षुदर्शनी जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५८ ॥

१ प्रतिषु ' -दसणदिट्ठीए ' इति पाठः ।

२ अ-कप्रत्योः ' पडिभादे ', आप्रतौ ' पडिवादे ' इति पाठः ।

३ ' चक्खुदसणीसु मिच्छाइट्ठी ' उक्कस्सेण बेसागरोवमसहस्साणि ' जी. का. सू. २७९-२८१.

कुदो ? चक्खुदंसणक्खओवसमरहिदगुणपडिवण्णाभावादो ।

अचक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदराग-छदुमत्था त्ति ओघं[1] ॥ १५९ ॥

किं कारणं ? अचक्खुदंसणखओवसमविरहिदछदुमत्थजीवाभावादो । संपहि अचक्खुदंसणीणं धुवरासी वुच्चदे । तं जहा– सिद्ध तेरसगुणपडिवण्णरासिमचक्खुदंसणमिच्छाइट्ठिरासिभजिदतव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते अचक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । एदेण सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे अचक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । सासणादीणमोघम्हि भणिदअवहारो चेव वत्तव्वो, विसेसाभावादो ।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो[2] ॥ १६० ॥

क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न जीव चक्षुदर्शनरूप क्षयोपशमसे रहित नहीं होते हैं। अर्थात् गुणस्थानप्रतिपन्न प्रत्येक जीवके चक्षुदर्शनावरण कर्मका क्षयोपशम पाया जाता है, अतएव गुणस्थानप्रतिपन्न चक्षुदर्शनी जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान है।

अचक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५९ ॥

शंका—अचक्षुदर्शनी जीवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान है, इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि, अचक्षुदर्शनरूप क्षयोपशमसे रहित छद्मस्थ जीव नहीं पाये जाते हैं, इसलिये उनका प्रमाण ओघप्रमाणके समान कहा है।

अब अचक्षुदर्शनी जीवोंकी ध्रुवराशिका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है— सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशिको तथा मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित सिद्धराशि और गुणस्थानप्रतिपन्न राशिके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। इस ध्रुवराशिसे सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है। अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंका ओघप्ररूपणामें कहा गया अवहारकाल ही कहना चाहिये, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न ओघ अवहारकालसे अचक्षुदर्शनी गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अवहारकालमें कोई विशेषता नहीं है।

अवधिदर्शनी जीव अवधिज्ञानियोंके समान हैं ॥ १६० ॥

१ अचक्षुर्दर्शनिनो मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः । उभये च सासादनसम्यग्दृष्टयादय क्षीणकषायान्ताः सामान्योक्तसख्याः । स. सि. १, ८. एइंदियपहुदीण खीणकसायंतणन्तरासीण । जोगो अचक्खुदसणजीवाण होदि परिमाणं ॥ गो. जी. ४८८.

२ अवधिदर्शनिनोऽवधिज्ञानिवत् । स. सि. १, ८.

ओहिदंसणविरहिदओहिणाणीणमभावादो। एत्थ अवहारकालो वुच्चदे। जो ओघ-असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो सो चेव अचक्खुदंसणि-चक्खुदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते ओहिदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे ओहिदंसणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि।

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो[1] ॥ १६१ ॥

केवलणाणविरहिदकेवलदंसणाभावादो। सुद-मणपज्जवणाणाणं[2] किमिदि ण दंसणं? वुच्चदे– ण ताव सुदणाणस्स दंसणमत्थि, तस्स मदिणाणपुव्वत्तादो। ण मणपज्जव-

चूंकि अवधिदर्शनको छोड़कर अवधिज्ञानी जीव नहीं पाये जाते हैं, इसलिये दोनोंका प्रमाण समान है। अब यहां पर इनके अवहारकालका कथन करते हैं— जो ओघ असंयत-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल है, वही अचक्षुदर्शनी और चक्षुदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर अवधिदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस अवधिदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहार-काल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षु-दर्शनी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अवधिदर्शनी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है।

केवलदर्शनी जीव केवलज्ञानियोंके समान हैं ॥ १६१ ॥

चूंकि केवलज्ञानसे रहित केवलदर्शन नहीं पाया जाता है, इसलिये दोनों राशियोंका प्रमाण समान है।

शंका— श्रुतज्ञान और मनःपर्ययज्ञानका दर्शन क्यों नहीं कहा जाता है?

समाधान— श्रुतज्ञानका दर्शन तो हो नहीं सकता है, क्योंकि, वह मतिज्ञानपूर्वक होता है। उसीप्रकार मनःपर्ययज्ञानका भी दर्शन नहीं है, क्योंकि, मनःपर्ययज्ञान भी उसीप्रकारका है, अर्थात् मनःपर्ययज्ञान भी मतिज्ञानपूर्वक होता है, इसलिये उसका दर्शन नहीं पाया जाता है।

१ केवलदर्शनिन. केवलज्ञानिवत्। स. सि. १, ८. ओहिकेवलपरिमाण ताण णाण च ॥ गो. जी. ४८७.

२ प्रतिषु 'सुद-मणपज्जवणाण' इति पाठ।

णाणस्स वि दंसणमत्थि, तस्स वि तधाविधत्तादो । जदि सरूवसंवेदणं दंसणं तो एदेसिं पि दंसणस्स अत्थित्तं पसज्जदे चेन्न, उत्तरज्ञानोत्पत्तिनिमित्तप्रयत्नविशिष्टस्वसंवेदनस्य दर्शनत्वात् । ण च केवलिम्हि एसो कमो, तत्थ अक्कमेण णाण-दंसणपउत्तीदो । ण च छदुमत्थेसु दोण्हमक्कमेण वुत्ती अत्थि, 'हंदि दुवे णत्थि उवजोगा' त्ति पडिसिद्धत्तादो । ण च णाणादो पच्छा दंसणं भवदि, 'दंसणपुव्वं णाणं, ण णाणपुव्वं तु दंसणमत्थि' इदि वयणादो ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा अचक्खुदंसण-मिच्छाइट्ठी होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा केवलदंसणिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं होदि । तत्थ तस्सेव असंखेज्जदिभागमवणिदे ओहिदंसणि-दव्वं होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिदव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसंजदासंजददव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए

शंका—यदि दर्शनका स्वरूप स्वरूपसंवेदन है, तो इन दोनों ज्ञानोंके भी दर्शनके अस्तित्वकी प्राप्ति होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उत्तरज्ञानकी उत्पत्तिके निमित्तभूत प्रयत्नविशिष्ट स्वसंवेदनको दर्शन माना है । परंतु केवलीमें यह क्रम नहीं पाया जाता है, क्योंकि, वहां पर अक्रमसे ज्ञान और दर्शनकी प्रवृत्ति होती है । छद्मस्थोंमें दर्शन और ज्ञान, इन दोनोंकी अक्रमसे प्रवृत्ति होती है, यदि ऐसा कहा जावे सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, छद्मस्थोंके 'दोनों उपयोग एक साथ नहीं होते हैं' इस आगमवचनसे छद्मस्थोंके दोनों उपयोगोंके अक्रमसे होनेका प्रतिषेध हो जाता है । ज्ञानपूर्वक दर्शन होता है, यदि ऐसा कहा जावे सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, 'दर्शनपूर्वक ज्ञान होता है, किंतु ज्ञानपूर्वक दर्शन नहीं होता है' ऐसा आगमवचन है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग केवलदर्शनी जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है । इसमेंसे इसीका असंख्यातवां भाग घटा देने पर शेष अवधिदर्शनी जीवोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी संयतासंयतोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग

बहुखंडा ओहिदंसणिसंजदासंजददव्वं होदि। सेसं जाणिय वत्तव्वं।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। सत्थाणे पयदं। चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठि-सत्थाणस्स तसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिसत्थाणभंगो। सासणादीणं सत्थाणस्स ओघसत्थाणभंगो।

परत्थाणे पयदं। अचक्खुदंसणीसु सव्वत्थोवा उवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। उवरि ओघपंचिंदियं व वत्तव्वं[1] जाव पलिदोवमं ति। तदो मिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा। एवं चेव चक्खुदंसणिपरत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं। णवरि पलिदोवमादो उवरि चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिणो असंखेज्जगुणा। ओहि-दंसणीणमोहिणाणिभंगो। केवलदंसणीणं केवलणाणिभंगो।

सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा ओहिदंसणउवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिउवसामगा संखेज्जगुणा। खवगा संखेज्जगुणा। ओहिदंसण-अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। दुदंसणिअप्पमत्तसंजदा संखेज्ज-

अवधिदर्शनी संयतासंयतोंका द्रव्य होता है। शेष भागाभागका कथन जानकर करना चाहिये।

स्वस्थानादिकके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व त्रस पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघस्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— अचक्षुदर्शनियोंमें सबसे स्तोक उपशामक जीव हैं। क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। इसके ऊपर पल्योपमतक ओघ पंचेन्द्रियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान कथन करना चाहिये। पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं। इसीप्रकार चक्षुदर्शनियोंके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। इतना विशेष है कि पल्योपमसे ऊपर चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातगुणे हैं। अवधि-दर्शनवालोंका अल्पबहुत्व अवधिज्ञानियोंके अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये। केवलदर्शन-वालोंका केवलज्ञानियोंके अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये।

अब सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— अवधिदर्शनी उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं। अवधिदर्शनी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी उपशामक जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। वे ही क्षपक जीव अपने उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। अवधिदर्शनी अप्रमत्तसंयत जीव चक्षु और अचक्षुदर्शनवाले क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। वे ही प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। दो दर्शनवाले अप्रमत्तसंयत जीव अवधिदर्शनी प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। वे ही प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे संख्यातगुणे हैं। दो दर्शनवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो

१ प्रतिषु ' ओघं पचिंदिय वत्तव्व ' इति पाठः।

गुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। दुदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तिदंसणअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। दुदंसणसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। दुदंसणसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो[1]। दुदंसणसंजदासंजद-अवहारकालो असंखेज्जगुणो। तिदंसणसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवमवहारकालपडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो चक्खु-दंसणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्ज-गुणा। दव्वमसंखेज्जगुणं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। केवलदंसणी अणंतगुणा। अचक्खुदंसणी अणंतगुणा।

एवं दंसणमग्गणा गदा।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु मिच्छा-इट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ओघं[2] ॥ १६२ ॥

दर्शनवाले प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है। तीन दर्शनवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहार-काल दो दर्शनवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है। दो दर्शनवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल तीन दर्शनवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। दो दर्शनवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले सम्य-ग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। दो दर्शनवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। तीन दर्शनवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हीं तीन दर्शनवाले संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमरूपक्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे चक्षु-दर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। उन्हींकी विष्कंभसूची अपने अवहार-कालसे असंख्यातगुणी है। जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। उन्हींका द्रव्य जग-श्रेणीसे असंख्यातगुणा है। जगप्रतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। लोक जगप्रतरसे असंख्यात-गुणा है। केवलदर्शनी जीव लोकसे अनन्तगुणे हैं। अचक्षुदर्शनी जीव केवलदर्शनियोंके प्रमाणसे अनन्तगुण हैं।

इसप्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं॥ १६२ ॥

१ प्रतिषु 'असखेज्जगुणो' इति पाठ।

२ लेश्यानुवादेन कृष्णनीलकापोतलेश्या मिथ्यादृष्ट्यादयोऽसंयतसम्यग्दृष्ट्यन्ताः सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८. किण्हादिरासिमावलिअसंखभागेण भजिय पविभत्ते। हीणकमा कालं वा अस्सिय दव्वा दु भजिदव्वा॥

अणंतत्तणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तेण च ओघेण साधम्ममत्थि त्ति ओघमिदि भणिदं। विसेसे अवलंबिज्जमाणे पुण णत्थि समाणत्तं, सेसलेस्सोवलक्खिय-जीवाणं पयदगुणट्ठाणेसु असंभवादो। एत्थ धुवरासी वुच्चदे। तं जहा— सिद्ध-तेरसगुण-पडिवण्ण-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्समिच्छाइट्ठिरासिं किण्ह-णील-काउलेस्समिच्छाइट्ठिरासिभजिद-भेदेसिं वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते हि किण्ह-णील-काउलेस्समिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि। तं तीहि रूवेहि गुणेऊण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते काउलेस्सियधुवरासी होदि। पुव्वभागहारमब्भहियं काऊण तिगुणधुव-रासिम्हि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते णीललेस्सियधुवरासी होदि। तमावलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे किण्हलेस्सियधुवरासी होदि। काउ-णीललेस्सरासीओ सव्वजीवरासिस्स तिभागो देसूणो। किण्हलेस्सियरासी तिभागो सादिरेओ। गुणपडिवण्णाणमवहारकालं पुरदो भणिस्सामो।

उक्त तीन लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंकी अनन्तत्वकी अपेक्षा, और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवर्ती जीवोंकी पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा ओघप्रमाणके साथ समानता पाई जाती है, इसलिये सूत्रमें 'ओघं' ऐसा कहा है। विशेष अर्थात् पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो उक्त तीन लेश्यावाले जीवोंके प्रमाणकी ओघप्रमाणप्ररूपणाके साथ समानता नहीं है, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर शेष लेश्याओंसे उपलक्षित जीवोंका प्रकृत गुणस्थानोंमें रहना असंभव मानना पड़ेगा। अब यहां पर ध्रुवराशिका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है— सिद्धराशि, सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न राशि और पीत, पद्म तथा शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंकी राशिको, तथा इन सर्व राशियोंके वर्गमें कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाली मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर कृष्ण, नील और कापोतलेश्यासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। इसे तीनसे गुणित करके जो प्रमाण हो उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर कापोतलेश्यासे युक्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। पूर्वोक्त भागहारको अभ्यधिक करके और उसका त्रिगुणित ध्रुवराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रिगुणित ध्रुवराशिमें मिला देने पर नीललेश्यासे युक्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमेंसे घटा देने पर कृष्णलेश्यासे युक्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। कापोतलेश्यासे युक्त और नीललेश्यासे युक्त प्रत्येक जीवराशि सर्व जीवराशिके कुछ कम तीसरे भागप्रमाण है। तथा कृष्णलेश्यासे युक्त जीवराशि कुछ अधिक तीसरे भाग प्रमाण है। उक्त तीन लेश्याओंसे युक्त गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अवहारकालका कथन आगे करेंगे।

खेत्तादो असुहतिया अणंतलोगा कमेण परिहीणा। कालादो तीदादो अणंतगुणिदा कमा हीणा॥ केवलणाणाणंतिमभागा भावाद्दु किण्हतियजीवा॥ गो. जी. ५३७, ५३९.

तेउलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, जोइसियदेवेहि सादिरेयं[1] ॥ १६३ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे। जोइसियदेवा पज्जत्तकाले सव्वे तेउलेस्सिया भवंति। अपज्जत्तकाले पुण ते चेय किण्ह-णील-काउलेस्सिया होंति। ते च पज्जत्तरासिस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता। वाणवेंतरदेवा वि पज्जत्तकाले तेउलेस्सिया चेव होंति। ते च जोइसियदेवाणं संखेज्जदिभागमेत्ता होंति। एदेसिमपज्जत्ता किण्ह-णील-काउलेस्सिया भवंति। ते च सगपज्जत्ताणं संखेज्जदिभागमेत्ता। मणुस-तिरिक्खेसु वि तेउलेस्सिय-मिच्छाइट्ठिरासी पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो तिरिक्खपम्मलेस्सियरासीदो संखेज्जगुणो अत्थि। एदे तिण्णि वि रासीओ भवणवासिय-सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठीहि सह गदाओ जोइसियदेवेहि सादिरेया हवंति। एदेसिमवहारकालो वुच्चदे। तं जहा— जोइसियअवहार-कालादो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागे अवणिदे तेउलेस्सियअवहारकालो होदि। तदो एक्क-पदरंगुलं घेत्तूण संखेज्जखंडं करिय एगखंडमवणिय बहुखंडे तम्हि चेव पक्खित्ते तेउ-

तेजोलेश्यावाले जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? ज्योतिषी देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १६३ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— पर्याप्तकालमें सभी ज्योतिषी देव तेजोलेश्यासे युक्त होते हैं। तथा अपर्याप्त कालमें वे ही देव कृष्ण, नील और कापोतलेश्यासे युक्त होते हैं। ये अपर्याप्त ज्योतिषी जीव अपनी पर्याप्त राशिके असंख्यातवें भागमात्र होते हैं। वाणव्यन्तर देव भी पर्याप्तकालमें तेजोलेश्यासे युक्त होते हैं, और वे वाणव्यन्तर पर्याप्त जीव ज्योतिषियोंके संख्यातवें भागमात्र होते हैं। इन्हीं वाणव्यन्तरोंमें अपर्याप्त जीव कृष्ण, नील और कापोतलेश्यासे युक्त होते हैं, और वे अपर्याप्त वाणव्यन्तर देव अपनी पर्याप्त राशिके संख्यातवें भागमात्र होते हैं। मनुष्य और तिर्यंचोंमें भी तेजोलेश्यासे युक्त मिथ्यादृष्टिराशि जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण है, जो पद्मलेश्यासे युक्त तिर्यंचराशिसे संख्यातगुणी है। इन तीनों राशियोंको भवनवासी और सौधर्म-ऐशान राशिके साथ एकत्रित कर देने पर यह राशि ज्योतिषी देवोंसे कुछ अधिक हो जाती है। अब इस राशिके अवहारकालका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है— ज्योतिषी देवोंके अवहारकालमेंसे प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाणको घटा देने पर तेजोलेश्यासे युक्त जीवराशिका अवहारकाल होता है। उक्त तेजोलेश्यासे युक्त जीवराशिके अवहारकालमेंसे एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके एक खंडको घटा कर शेष बहुत खंडोंको उसी अवहारकालमें मिला देने पर

१ तेजःपद्मलेश्या मिथ्यादृष्ट्यादयो संयतासंयतान्ताः स्त्रीवेदवत्। स. सि. १, ८. तेउतिया संखेज्जा संखासंखेज्जभागकमा ॥ जोइसियादो अहिया तिरिक्खसण्णिस्स संखभागो दु। सूइस्स अंगुलस्स य असंखभागं तु तेउतियं ॥ तेउदु असंखकप्पा... । ओहिमसंखेज्जदिमं तेउतिया भावदो होंति ॥ गो. जी. ५३९, ५४०, ५४२.

लेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। सेसं जोइसियभंगो।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १६४ ॥

छसु लेस्सासु ट्ठिदओघअसंजदसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि सरिसो एक्काए तेउलेस्साए ट्ठिदरासी कधं होदि? ण, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तेण सरिसत्तमवेक्खिय ओघोवएसादो।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥ १६५ ॥

ओघरासिपमाणं ण पूरेदि त्ति जं वुत्तं होदि।

पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, सण्णिपंचिंदिय-तिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागो ॥ १६६ ॥

तेजोलेश्यासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अवहारकाल होता है। शेष कथन ज्योतिषी देवोंके कथनके समान है।

तेजोलेश्यासे युक्त जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १६४ ॥

शंका—ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि राशि, ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टिराशि और ओघ सासादनसम्यग्दृष्टिराशि छहों लेश्याओंमें स्थित है, अतएव उसके साथ केवल तेजोलेश्यामें स्थित असंयतसम्यग्दृष्टिराशि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिराशि और सासादनसम्यग्दृष्टिराशि समान कैसे हो सकती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा उक्त दोनों राशियोंमें समानता देखकर तेजोलेश्यासे युक्त सासादनसम्यग्दृष्टि आदि राशिका ओघरूपसे उपदेश किया है।

तेजोलेश्यासे युक्त प्रमत्तसंयत जीव और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥ १६५ ॥

उक्त दो गुणस्थानोंमें तेजोलेश्यासे युक्त जीवराशि ओघप्रमाणको पूर्ण नहीं करती है, यह इस सूत्रमें संख्यात पदके देनेका अभिप्राय है।

पद्मलेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ १६६ ॥

१ प्रमत्ताप्रमत्तसंयता: संख्येया:। स. सि. १, ८.

सुगममेदं सुत्तं। एदस्स अवहारकालो वुच्चदे। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीअवहारकाले संखेज्जरूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणमवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिंदियतिरिक्खतेउलेस्सियमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे पम्मलेस्सियमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १६७ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १६८ ॥

तेउलेस्सियाणं संखेज्जदिभागमेत्ता हवंति। कुदो ? पम्मलेस्साए[1] सह गदजीवाणं पउरं संभवाभावादो।

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण[2] ॥ १६९ ॥

यह सूत्र सुगम है। अब पद्मलेश्यासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवराशिके अवहारकालका कथन करते हैं— पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

पद्मलेश्यावाले जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ १६७ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सरल है।

पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीव और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १६८ ॥

पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव तेजोलेश्यावाले प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण होते हैं, क्योंकि, पद्मलेश्यासे युक्त प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानको प्राप्त हुए जीव प्रचुर नहीं होते हैं।

शुक्लेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक

१ प्रतिषु 'लेस्सा' इति पाठः।

२ शुक्ललेश्या मिथ्यादृष्टयादयः संयतासंयतान्ताः पल्योपमासंख्येयभागप्रमिताः। स. सि. १, ८. पल्लासंखेज्जभागया सुक्का ॥ गो. जी. ५४२.

एत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागवयणं सावहारपरूवणं ओघपमाणपडिसेहफलं। कुदोवगम्मदे ? संगहपरिहारेण पज्जवणयावलंबणादो। एत्थ अवहारकालो वुच्चदे। ओघ-असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते तेउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-भाएण गुणिदे पम्मलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे काउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे किण्हलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते णीललेस्सिय-असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सुक्क-लेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। सग-सगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले आव-लियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सग-सगसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। ते

गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। इन जीवोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्त कालसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ १६९ ॥

इस सूत्रमें अवहारकालसहित पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण इस वचनका प्ररूपण ओघप्रमाणके प्रतिषेध करनेके लिये दिया है।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—संग्रहनयका परिहार करके पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लेनेसे यह जाना जाता है।

अब यहां पर अवहारकालका प्ररूपण करते हैं— ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि अवहार-कालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर तेजोलेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पद्मलेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कापोतलेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कृष्णलेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर नीललेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर शुक्ललेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इन अपने अपने असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालोंको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अपने अपने सम्यग्मिथ्या-दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इन अपने अपने सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको

संखेज्जरूवेहि गुणिदे सग-सगसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तेसु आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदेसु तेउ-पम्मलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो होदि । णवरि सुक्कलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले संखेज्जरूवेहि गुणिदे सुक्कमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सुक्कलेस्सियसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे सुक्कलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो होदि । सग-सग-अवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सग-सगरासिणो हवंति ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥१७०॥

एदे दो वि रासिणो ओघपमाणं ण पावेंति, तेउ-पम्मसुक्कलेस्सासु अक्कमेण विहज्जिय ट्ठिदत्तादो । सेसं सुगेज्झं ।

अपुव्वकरणप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं[2] ॥ १७१ ॥

संख्यातसे गुणित करने पर अपने अपने सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इन्हें अर्थात् तेजोलेश्यावाले और पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालोंको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तेजोलेश्यावाले और पद्मलेश्यावाले संयतासंयतोंके अवहारकाल होते हैं । इतना विशेष है कि शुक्लेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर शुक्लेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर शुक्लेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर शुक्लेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर शुक्लेश्यावाले संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इस अपने अपने अवहारकालसे पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशिका प्रमाण आता है ।

शुक्लेश्यावाले प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १७० ॥

शुक्लेश्यासे युक्त प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत ये दोनों राशियां ओघप्रमाणको प्राप्त नहीं होती हैं, क्योंकि, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें जीव तेजोलेश्या, पद्मलेश्या और शुक्लेश्यामें युगपत् विभक्त होकर स्थित हैं । शेष कथन सुग्राह्य है ।

शुक्लेश्यावाले जीव अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७१ ॥

१ प्रमत्ताप्रमत्तसयताः सख्येया स. सि. १, ८.

२ अपूर्वकरणादयः सयोगकेवल्यन्ताः अलेश्याश्च सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

कुदो ? अण्णलेस्साभावादो। अजोगिणो अलेस्सिया। कुदो ? कम्मलेवणिमित्त-जोग-कसायाभावा। जोगस्स कधं लेस्साववएसो ? ण, लिंपदि त्ति जोगस्स वि लेस्सा-ववएससिद्धीदो।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए वहुखंडा तिलेस्सिया होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अलेस्सिया होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तेउ-लेस्सिया होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पम्मलेस्सिया। सेसेगभागो सुक्क-लेस्सिया। तिलेस्सियरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडेऊण तत्थेगखंडं तदो पुध ट्ठविय सेसे बहुभागे घेत्तूण तिण्णि समपुंजं करिय अवणिदेगखंडमावलियाए असंखेज्जदि-भाएण खंडिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते किण्हलेस्सिया। सेसेगखंडमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिय बहुखंडे विदियपुंजे पक्खित्ते णीललेस्सिया। सेसेगखंडं तदियपुंजे पक्खित्ते काउलेस्सिया। तदो काउलेस्सियरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छा-इट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो। सेसं संखेज्जखंडे कए

चूंकि अपूर्वकरण आदि गुणस्थानोंमें शुक्ललेश्याको छोड़कर दूसरी लेश्या नहीं पाई जाती है, इसलिये अपूर्वकरण आदि गुणस्थानोंमें ओघप्रमाण ही शुक्ललेश्यावालोंका प्रमाण है। अयोगी जीव लेश्यारहित हैं, क्योंकि, अयोगी गुणस्थानमें कर्मलेपका कारणभूत योग और कषाय नहीं पाया जाता है।

शंका — केवल योगको लेश्या यह संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, 'जो लिंपन करती है वह लेश्या है' इस निरुक्तिके अनुसार योगके भी लेश्या संज्ञा सिद्ध हो जाती है।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग-प्रमाण कृष्ण, नील और कापोत इन तीन लेश्यावाले जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग लेश्यारहित जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग तेजोलेश्यावाले जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग पद्मलेश्यावाले जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण शुक्ललेश्यावाले जीव हैं। कृष्ण, नील और कापोत इन तीन लेश्यासे युक्त जीवराशिको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको पृथक् स्थापित करके और शेष बहुभागके समान तीन पुंज करके घटाकर पृथक् रक्खे हुए एक खंडको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके वहां जो बहुभाग आवे उसे प्रथम पुंजमें मिला देने पर कृष्णलेश्यावाले जीवोंका प्रमाण होता है। शेष एक भागको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर नीललेश्यावाले जीवोंका प्रमाण होता है। शेष एक भाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर कापोतलेश्यावाले जीवोंका प्रमाण होता है। अनन्तर कापोतलेश्यावाली राशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि

बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसेगखंडं सासणसम्माइट्ठिणो। एवं णील-किण्हलेस्साणं पि भागाभागं कायव्वं। तेउलेस्सियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा। सेसेगभागो पमत्तापमत्तसंजदा। पम्मलेस्सियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा। सेसेगभागो पमत्तापमत्तसंजदा। सुक्कलेस्सियरासिं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा। सेसेगभागो पमत्तापमत्तादओ।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। सत्थाणे पयदं। किण्ह-णील-काउलेस्सिय-

---

जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भाग प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। इसीप्रकार नील और कापोतलेश्यावालोंका भी भागाभाग कर लेना चाहिये। तेजोलेश्यावाली जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं। पद्मलेश्यावाली जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं। शुक्ललेश्यक राशिके संख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत आदि जीव हैं।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व

मिच्छाइट्ठीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो थोवदरभागहाराभावा। सासणादीणमोघभंगो। सव्वत्थोवो तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। दव्वमसंखेज्जगुणं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। सासणादीणमोघं। एवं चेव पम्म-सुक्कलेस्साणं सत्थाणं वत्तव्वं। सत्थाणं गदं।

परत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवो काउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो काउलेस्सियमिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा। एवं णील-किण्हाणं। सव्वत्थोवा तेउलेस्सियअप्पमत्तसंजदा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो तेउ-

प्रकृत है— कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंके स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, कृष्ण नील और कापोतलेश्यक राशियोंसे उनके भागहार स्तोक नहीं हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान हैं। तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। जगप्रतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है। इसीप्रकार पद्मलेश्या और शुक्ललेश्यावालोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— कापोतलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे कापोतलेश्यक मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं। इसीप्रकार नील और कृष्णलेश्यक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये। तेजोलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। संयतासंयतोंका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे

लेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। उवरि सत्थाणभंगो। एवं पम्मलेस्साए। सुक्कलेस्साए सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। सजोगिकेवली संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो। मिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। संजदासंजद-अवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। परत्थाणं गदं।

सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। सजोगिकेवली संखेज्जगुणा। सुक्कलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पम्मलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तेउ-लेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तेउलेस्सियअसंजदसम्मा-इट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्मा-

तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इसके ऊपर स्वस्थान अल्प-बहुत्वके समान कथन करना चाहिये। इसीप्रकार पद्मलेश्याके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। शुक्ललेश्यामें चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं। क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है। मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टि-अवहारकालसे संख्यातगुणा है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल मिथ्यादृष्टियोंके अवहार-कालसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। संयतासंयतोंका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अव-हारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये। इसप्रकार परस्थान-अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं। क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। सयोगिकेवली संख्यातगुणे हैं। शुक्ललेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव सयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। पद्मलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव शुक्ललेश्यक प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। पद्मलेश्यक प्रमत्तसंयत जीव पद्मलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं। तेजोलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव पद्मलेश्यक प्रमत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं। तेजोलेश्यक प्रमत्तसंयत जीव तेजोलेश्यक अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। तेजोलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टि-योंका अवहारकाल तेजोलेश्यक प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि-

इट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। पम्मलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। काउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। किण्हलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। णीललेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। काउलेस्सियसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। किण्हलेस्सियसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। णीललेस्सियसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। किण्हलेस्सियसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। णीललेस्सियसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। तेउलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। पम्मलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो संखेज्जगुणो।

योंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। पद्मलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तेजोलेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। कापोतलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पद्मलेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। कृष्णलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल कापोतलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। नीललेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल कृष्णलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे विशेष अधिक है। कापोतलेश्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल नीललेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। कापोतलेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यागुतणा है। कृष्णलेश्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल कापोतलेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। नीललेश्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल कृष्णलेश्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है। कृष्णलेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल नीललेश्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। नीललेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल कृष्णलेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है। तेजोलेश्यक संयतासंयतोंका अवहारकाल नीललेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। पद्मलेश्यक संयतासंयतोंका अवहारकाल तेजोलेश्यक संयतासंयतोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। शुक्ललेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका

१ प्रतिषु 'प्रमत्त०' इति पाठः।

सुक्कलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सुक्कलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। सुक्कलेस्सियसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सुक्कलेस्सियसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। सुक्कलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवमवहारकालपडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। पम्मलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। पम्मलेस्सियमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। अलेस्सिया अणंतगुणा। काउलेस्सिया अणंतगुणा। णीललेस्सिया विसेसाहिया। किण्हलेस्सिया विसेसाहिया। एसो सव्वपरत्थाणअप्पाबहुओ गुरूवएसेण लिहिदो, णत्थि एत्थ सुत्तजुत्ती वक्खाणं वा।

एवं लेस्साणुवादो गदो।

अवहारकाल पद्मलेश्यक संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। शुक्ललेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। शुक्ललेश्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। शुक्ललेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। शुक्ललेश्यक संयतासंयतोंका अवहारकाल उन्हींके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य पल्योपमसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। पद्मलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टि जीवोंकी विष्कंभसूची पद्मलेश्यक जीवोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है। जगश्रेणी तेजोलेश्यक विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। पद्मलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्य पद्मलेश्यक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे संख्यातगुणा है। जगप्रतर तेजोलेश्यक द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। लेश्यारहित जीव लोकसे अनन्तगुणे हैं। कापोतलेश्यक जीव लेश्यारहित जीवोंसे अनन्तगुणे हैं। नीललेश्यावाले जीव कापोतलेश्यक जीवोंसे विशेष अधिक हैं। कृष्णलेश्यक जीव नीललेश्यक जीवोंसे विशेष अधिक हैं। यह सर्व परस्थान अल्पबहुत्व गुरुके उपदेशसे लिखा है। परंतु इस विषयमें सूत्रयुक्ति अथवा व्याख्यान नहीं पाया जाता है।

इसप्रकार लेश्यानुवाद समाप्त हुआ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १७२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो। णवरि अभवसिद्धियसहिदसिद्ध-तेरसगुणपडिवण्णरासिं भवसिद्धियमिच्छाइट्ठिभजिदं तेसिं वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते भवसिद्धियमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि।

अभवसिद्धिया दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता ॥ १७३ ॥

एत्थ अणंतवयण संखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलं। एत्थ कालपमाणं सुत्ते किमिदि ण वुत्तं? ण एस दोसो, अभवसिद्धियाणं वयाभावा। वयाभावो त्ति[3] तेसिं मोक्खाभावादो अवगम्मदे।

खेत्तपमाणं किमिदि ण वुत्तं इदि चे ण, अपरिप्फुडस्स अत्थस्स फुडीकरणट्ठं

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिकोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है। इतना विशेष है कि अभव्यसिद्धिक जीवराशिसहित सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशिको तथा उक्त राशियोंके वर्गमें भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि ध्रुवराशि होती है।

अभव्यसिद्धिक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं ॥ १७३ ॥

यहां सूत्रमें अनन्त यह वचन संख्यात और असंख्यातके प्रतिषेधके लिये दिया है।

शंका — यहां भव्य मार्गणामें अभव्योंका प्रमाण कहते समय सूत्रमें कालकी अपेक्षा प्रमाण क्यों नहीं कहा?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अभव्यसिद्धोंका व्यय नहीं होता। उनका व्यय नहीं होता है यह कथन उनको मोक्षकी प्राप्ति नहीं होती है इससे जाना जाता है।

शंका — अभव्योंका प्रमाण क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा क्यों नहीं कहा?

समाधान — नहीं, क्योंकि, जो अर्थ अपरिस्फुट हो उसके स्फुट करनेके लिये

१ भव्यानुवादेन भव्येषु मिथ्यादृष्ट्यादयोऽयोगकेवल्यन्ता सामान्योक्तसंख्या। स. सि. १, ८. तेण विहीणो सव्वो संसारी भव्वरासिस्स॥ गो. जी. ५६०.

२ अभव्या अनन्ताः। स. सि. १, ८. अवरो जुत्ताणंतो अभव्वरासिस्स होदि परिमाणं॥ गो. जी. ५६०.

३ प्रतिषु 'वयाभावादि' इति पाठः।

खेत्तपमाणं वुच्चदे । एसो पुण अभवसिद्धियरासिपमाणं सुट्ठु परिप्फुडो । कुदो ? अभवसिद्धियरासिपमाणं जहण्णजुत्ताणंतमिदि सयलाइरियजयप्पसिद्धादो ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा भवसिद्धियमिच्छाइट्ठिणो । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अभवसिद्धिया । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो । सेसमोघभंगो ।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । भवसिद्धियसत्थाणं परत्थाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं । अभवसिद्धियसत्थाणं णत्थि ।

सव्वपरत्थाणे सव्वत्थोवा अजोगिकेवली । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । एवं जाव पलिदोवमं ति णेयव्वं । तदो अभवसिद्धिया अणंतगुणा । णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया अणंतगुणा । भवसिद्धियमिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ।

एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा जाता है । परंतु यह अभव्यसिद्धिक राशिका प्रमाण अत्यन्त स्फुट है, क्योंकि, अभव्यसिद्धिक राशिका प्रमाण जघन्य युक्तानन्त है, यह सर्व आचार्य जगत्‌में प्रसिद्ध है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्परहित जीव होते हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अभव्यसिद्धिक जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष भागाभाग ओघ भागाभागके समान है ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे भव्यसिद्धिक जीवोंका स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्व मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ओघ स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वके समान है । अभव्यसिद्धिक जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है ।

सर्व परस्थान अल्पबहुत्वमें अयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं । चारों उपशामक अयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे अभव्यसिद्धिक जीव अनन्तगुणे हैं । भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पसे रहित जीव अभव्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि जीव अभव्योंसे अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवालि त्ति[1] ओघं ॥ १७४ ॥

केण कारणेण ? सम्मत्तसामण्णेण अहियारादो। ण हि सामण्णवदिरित्तो तव्विसेसो अत्थि। तम्हा ओघपरूवणा चेय णिरवयवा एत्थ वत्तव्वा।

खइयसम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठी ओघं[2] ॥ १७५ ॥

जदि वि एसो खइयसम्माइट्ठिरासी ओघअसंजदसम्माइट्ठिरासिस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो, तो वि ओघपरूवणं लभदे; पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तत्तं पडि विसेसाभावा।

संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[3] ॥ १७६ ॥

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७४ ॥

शंका—सम्यक्त्वी जीव असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ओघप्ररूपणाके समान किस कारणसे हैं ?

समाधान—क्योंकि, यहां पर सम्यक्त्व सामान्यका अधिकार है। सामान्यको छोड़कर उसके विशेष नहीं पाये जाते हैं। इसलिये ओघप्ररूपणा ही निरशेष यहां पर कहना चाहिये।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥१७५॥

यद्यपि यह क्षायिक असंयतसम्यग्दृष्टिराशि ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि राशिके असंख्यातवें भागमात्र है तो भी वह ओघप्ररूपणाको प्राप्त होती है, क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वके प्रति उक्त दोनों राशियोंमें कोई विशेषता नहीं है।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतक क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १७६ ॥

---

१ प्रतिषु '-केवली' इति पाठ ।

२ सम्यक्त्वानुवादेन क्षायिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्टयः पल्योपमासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८. वासपुधत्ते खइया संखेज्जा जइ हवंति सोहम्मे । तो संखपल्लठिदिये केवदिया एवमणुपादे ॥ संखावलिहिदपल्ला खइया ॥ गो. जी. ६५७–६५८.

३ संयतासंयतादय उपशान्तकषायान्ताः संख्येयाः । स. सि. १, ८.

पुव्वसुत्तादो खइयसम्माइट्ठि त्ति अणुवट्टदे। ओघपमाणं ण पूरेदि[1] त्ति जाणावणट्ठं संखेज्जवयणं। संजदासंजदखइयसम्माइट्ठिणो कधं संखेज्जा? ण, तेसिं मणुसगइवदिरित्तसेसगईसु अभावादो। पुव्वं बद्धतिरिक्खाउआ सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय तिरिक्खेसु उववज्जंता लब्भंति तेण संजदासंजद[2]खइयसम्माइट्ठिणो असंखेज्जा लब्भंति त्ति चे ण, पुव्वं बद्धाउअखइयसम्माइट्ठीणं तिरिक्खेसुप्पण्णाणं संजमासंजमगुणाभावादो। कुदो? भोगभूमिमंतरेण तेसिमुप्पत्तीए अण्णत्थ संभवाभावादो। ण च तिरिक्खेसु दंसणमोहणीयखवणा वि अत्थि, 'णियमा मणुसगईए' इदि वयणादो।

चउण्हं खवा अजोगिकेवली ओघं[3] ॥ १७७ ॥

एत्थ चउण्हं कम्माणं घाइसण्णिदाणं खवगा इदि अज्झाहारो कायव्वो। चउसद्दो-गुणट्ठाणाणं विसेसणं किण्ण होदि त्ति वुत्ते ण, तत्थ छट्ठीणिद्देसाणुववत्तीदो। सेसं सुगमं।

पूर्व सूत्रसे इस सूत्रमें क्षायिकसम्यग्दृष्टि इस पदकी अनुवृत्ति होती है। संयतासंयतसे उपशांतकषाय गुणस्थानतक क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण ओघप्रमाणको पूर्ण नहीं करता है, इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें 'संख्यात हैं' यह वचन दिया है।

शंका— संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यात कैसे हैं?

समाधान—नहीं, क्योंकि, संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव मनुष्य गतिको छोड़कर शेष गतियोंमें नहीं पाये जाते हैं, और पर्याप्त मनुष्य संख्यात ही होते हैं, इसलिये संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव भी संख्यात ही होते हैं, ऐसा कहा।

शंका—जिन जीवोंने पहले तिर्यंचायुका बंध कर लिया है ऐसे जीव सम्यक्त्वको ग्रहण करके और दर्शनमोहनीयका क्षय करके तिर्यंचोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं, इसलिये संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यात होना चाहिये।

समाधान—नहीं, क्योंकि, जिन्होंने पहले तिर्यंचायुका बन्ध कर लिया है ऐसे तिर्यंचोंमें उत्पन्न हुए क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंके संयमासंयमगुण नहीं पाया जाता है, क्योंकि, भोगभूमिके विना अन्यत्र उनकी उत्पत्ति संभव नहीं है। तथा तिर्यंचोंमें दर्शनमोहनीयकी क्षपणा भी नहीं पाई जाती है, क्योंकि, दर्शनमोहनीयकी क्षपणा नियमसे मनुष्यगतिमें ही होती है, ऐसा आगमवचन है।

चारों क्षपक और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७७ ॥

यहां पर क्षपक पदसे घातिसंज्ञक चारों कर्मोंके क्षपक, ऐसा अध्याहार कर लेना चाहिये।

शंका—सूत्रमें आया हुआ 'चउ' शब्द गुणस्थानोंका विशेषण क्यों नहीं होता है?

समाधान—ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि नहीं, क्योंकि, 'चउ' शब्दमें षष्ठी

...

१ प्रतिषु 'ओघपमाण पूरेदि त्ति' इति पाठः। २ प्रतिषु 'संजदा' इति पाठः।

३ चत्वारः क्षपकाः सयोगकेवलिनोऽयोगकेवलिनश्च सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८.

सजोगिकेवली ओघं ॥ १७८ ॥

कुदो ? खइयसम्मत्तेण विणा सजोगिकेवलीणमणुवलंभा ।

वेदगसम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति ओघं[1] ॥ १७९ ॥

एत्थ ओघरासी चेव त्थोवूणो[2] वेदगरासी होदि तेणोघत्तं ण विरुज्झदे ।

उवसमसम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदा ओघं[3] ॥१८०॥

एदे दो वि रासीओ ओघअसंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणमसंखेज्जदिभागमेत्ता जदि वि होंति, तो वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तेण समाणत्तमत्थि त्ति ओघमिदि भणिदं । सेसं सुगमं ।

विभक्तिका निर्देश नहीं बन सकता है । अर्थात् सूत्रमें आया हुआ 'चउण्हं' यह पद प्रथमा विभक्तिरूप है, षष्ठी नहीं, इसलिये गुणस्थानोंका विशेषण नहीं हो सकता है । शेष कथन सुगम है ।

सयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७८ ॥

चूंकि सयोगिकेवली जीव क्षायिकसम्यक्त्वके विना नहीं पाये जाते हैं, इसलिये उनका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७९ ॥

असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक ओघराशि ही कुछ कम वेदकसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है, इसलिये ओघत्व विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १८० ॥

ये दोनों भी राशियां ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं, तो भी पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा उपशमसम्यग्दृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासयतोंकी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके साथ समानता है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा है । शेष कथन सुगम है ।

---

१ क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्ट्यादयोऽप्रमत्तान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. तत्तो य वेदमुवसमया । आवलिअसंखगुणिदा असंखगुणहीणया कमसो ॥ गो. जी. ६५८.

२ प्रतिषु 'त्थोदूणो' इति पाठः ।

३ औपशमिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्टिसंयतासंयताः पल्योपमासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८.

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था त्ति दव्व-पमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥ १८१ ॥

एत्थ संखेज्जवयणं ओघपमाणपडिसेहफलं। ओघदव्वपमाणं ण पावेदि त्ति कधमवगम्मदे ? ओघपमत्तादिरासिस्स संखेज्जदिभागो तम्हि तम्हि उवसमसम्माइट्ठिरासी होदि त्ति अप्पाबहुगवयणादो।

सासणसम्माइट्ठी ओघं ॥ १८२ ॥

सम्मामिच्छाइट्ठी ओघं ॥ १८३ ॥

मिच्छाइट्ठी ओघं[2] ॥ १८४ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि ओघम्मि परूविदाणि त्ति णेह परूविज्जंत्ति। एत्थ अवहारकालुप्पायणविहिं वत्तइस्सामो। ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय वीतरागछद्मस्थ गुणस्थानतक उपशमसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १८१ ॥

यहां सूत्रमें 'संख्यात हैं' यह वचन ओघप्रमाणके प्रतिषेधके लिये दिया है।

शंका—प्रमत्तादि उपशान्तकषाय गुणस्थानतक उपशमसम्यग्दृष्टि जीव ओघ द्रव्यप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'ओघ प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानवर्ती राशिके संख्यातवें भाग उस उस गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं' इस अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारके वचनसे जाना जाता है कि प्रमत्तसंयत आदि उपशान्तकषायतक प्रत्येक गुणस्थानके उपशमसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १८२

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके सामन पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १८३ ॥

मिथ्यादृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान अनन्तानन्त हैं ॥ १८४ ॥

इन तीनों सूत्रोंका प्ररूपण ओघप्ररूपणाके समय कर आये हैं, इसलिये यहां उनका प्ररूपण नहीं करते हैं। अब यहां पर अवहारकालके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं—

१ प्रमत्ताप्रमत्तसंयता. संख्येया'। चत्वार औपशमिका. सामान्योक्तसंख्या । स सि. १, ८.

२ सासादनसम्यग्दृष्टयः सम्यग्मिथ्यादृष्टयो मिथ्यादृष्टयश्च सामान्योक्तसंख्याः । स सि. १, ८. पल्लासंखेज्जदिमा सासणमिच्छा य संखगुणिदा हु । मिस्सा तेहिं विहीणो संसारी वामपरिमाण ॥ गो जी. ६५९.

असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेदगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे खइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे असंजदउवसमसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेदगसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे उवसमसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो होदि। एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे सग-सगरासीओ आगच्छंति। सिद्ध-तेरसगुणट्ठाणरासिं मिच्छाइट्ठिभजिदतव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते मिच्छाइट्ठि-धुवरासी होदि।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेदग-असंजदसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा खइयअसंजदसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवसमअसंजदसम्माइट्ठिणो। सेसं संखेज्जखंडे कए

ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर वेदक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर क्षायिक असंयत-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर असंयत उपशमसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इन अवहारकालोंसे पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां आती हैं।

सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानवर्ती राशिको तथा मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित उन राशियोंके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशि होती है।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग सिद्ध जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वेदकअसंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग क्षायिक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग उपशम असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक

बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेदगसम्माइट्ठिसंजदासंजदा। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवसमसम्माइट्ठिसंजदासंजदा। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा खइयसम्माइट्ठि-संजदासंजदा। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अप्पमत्तसंजदा। सेसं जाणिय वत्तव्वं।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। सव्वेसिं सत्थाणमोघं। परत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा वेदगसम्माइट्ठिअप्पमत्तसंजदा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वम-संखेज्जगुणं। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। उवसमसम्माइट्ठीसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्ज-गुणा। उवरि वेदगपरत्थाणभंगो। खइयसम्माइट्ठीसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। संजदा-संजदा संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वम-

भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसंयत जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीव हैं। शेष भागाभागका कथन जानकर करना चाहिये।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे सभीका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघप्ररूणाके समान है। अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— वेदक-सम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं। इनसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इससे संयतासंयतोंका अवहार-काल असंख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें चारों उपशामक सबसे थोड़े हैं। क्षपक संख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। इसके ऊपर वेदकसम्यग्दृष्टियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये। क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंमें चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं। क्षपक उनसे संख्यातगुणे हैं। इनसे अप्रमत्तसंयत संख्यातगुणे हैं। इनसे प्रमत्तसंयत संख्यातगुणे हैं। इनसे संयतासंयत संख्यातगुणे हैं। इनसे असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा

संखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । केवलणाणिणो अणंतगुणा ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा उवसमसम्माइट्ठिणो चत्तारि उवसामगा । तत्थेव खइयसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदउवसमसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । कारणं, चारित्तमोहणीयखवणकालादो उवसमसम्मत्तकालस्स संखेज्जगुणत्ता । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा खइयसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । वेदगसम्माइट्ठिअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्ता संखेज्जगुणा । खइयसम्माइट्ठिसंजदासंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदाणं संखेज्जभागमेत्तपमत्तसंजदवेदगसम्माइट्ठीहिंतो कधं मणुससंजदासंजदाणं संखेज्जदिभागमेत्तखइयसम्माइट्ठिसंजदासंजदाणं संखेज्जगुणत्तं ? ण, सव्वसम्मत्तेसु संजदेहिंतो देससंजदाणं देससंजदेहिंतो असंजदाणं बहुत्तुवलंभादो । तं पि कुदो ? चारित्तावरणखओवसमस्स सव्वसम्मत्तेसुप्पायण-

है । इससे उन्हींका द्रव्य असंख्यातगुणा है । इससे पल्योपम असंख्यातगुणा है । इससे केवलज्ञानी अनन्तगुणे हैं ।

सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सबसे स्तोक हैं । उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । क्षपक जीव उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टि जीव क्षपक जीवोंसे संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, चरित्र मोहनीयके क्षपण कालसे उपशमसम्यक्त्वका काल संख्यातगुणा है । प्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टि जीव अप्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव प्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव अप्रमत्तसंयत क्षायिकससम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीव वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं ।

शंका— प्रमत्तसंयतोंके संख्यातवें भागमात्र प्रमत्तसंयत वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे मनुष्य संयतासंयतोंके संख्यातवें भागमात्र क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव संख्यातगुणे कैसे हो सकते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सर्व सम्यक्त्वोंमें संयतोंसे देशसंयत और देशसंयतोंसे असंयत जीव बहुत पाये जाते हैं, इसलिये मनुष्य संयतासंयतोंके संख्यातवें भागमात्र क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव प्रमत्तसंयतोंके संख्यातवें भागमात्र वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे बन जाते हैं ।

शंका— सर्व सम्यक्त्वोंमें संयतोंसे संयतासंयत और संयतासंयतोंसे असंयत बहुत होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

संभवाभावादो। ' तेरसकोडी देसे ' एदीए गाहाए एदस्स वक्खाणस्स किण्ण विरोहो? होउ णाम। कधं पुण विरुद्धवक्खाणस्स भद्दत्तं? ण, जुत्तिसिद्धस्स आइरियपरंपरागयस्स एदीए गाहाए णाभद्दत्तं काऊण सक्किज्जदि, अइप्पसंगादो। वेदगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। खइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। उवसमअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। वेदगसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। उवसमसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो खइयसम्माइट्ठिणो केवलणाणिणो अणंतगुणा। मिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा।

एवं सम्मत्तमग्गणा गदा।

समाधान—चूंकि चरित्रावरण मोहनीयकर्मका क्षयोपशम सर्व सम्यक्त्वोंमें प्रायः संभव नहीं है, इसलिये यह जाना जाता है कि सर्व सम्यक्त्वोंमें संयतोंसे संयतासंयत और संयतासंयतोंसे असंयत जीव अधिक होते हैं।

शंका—यदि ऐसा है तो 'देशसंयतमें तेरह करोड़ मनुष्य हैं' इस गाथाके साथ इस पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध क्यों नहीं आ जायगा?

समाधान—यदि उक्त गाथार्थके साथ पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध प्राप्त होता है तो होओ।

शंका—तो इसप्रकारके विरुद्ध व्याख्यानको समीचीनता कैसे प्राप्त हो सकती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जो युक्तिसिद्ध है और आचार्य परंपरासे आया हुआ है उसमें इस गाथासे असमीचीनता नहीं लाई जा सकती, अन्यथा अतिप्रसंग दोष आ जायगा।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंसे असंख्यातगुणा है। क्षायिकअसंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल वेदकअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उपशमअसंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल क्षायिकअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उपशमअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि केवलज्ञानी अनन्तगुणे हैं। मिथ्यादृष्टि जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि केवलज्ञानियोंसे अनन्तगुणे हैं।

इसप्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवेहिं सादिरेयं[1] ॥ १८५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। सव्वे देवमिच्छाइट्ठिणो सण्णिणो चेय। तेसिं संखेज्जदिभागमेत्ता तिगदिसण्णिमिच्छाइट्ठिणो होंति। तेण सण्णिमिच्छाइट्ठिणो देवेहि सादिरेया। एत्थ अवहारकालो वुच्चदे। तं जहा– देवअवहारकालादो पदरंगुलमेगं घेत्तूण संखेज्जखंडे करिय तत्थेगखंडमवणिय सेसबहुखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सण्णिमिच्छाइट्ठि-अवहारकालो होदि। एदेण जगपदरे भागे हिदे सण्णिमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं[1] ॥ १८६ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

असण्णी दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता[2] ॥ १८७ ॥

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १८५ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। सर्व देव मिथ्यादृष्टि जीव संज्ञी ही होते हैं। तथा उनके संख्यातवें भागप्रमाण तीन गतिसंबन्धी संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। इसलिये संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव देवोंसे कुछ अधिक हैं, ऐसा सूत्रमें कहा है।

अब यहां पर अवहारकालका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है— देव अवहारकालमें एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके उनमेंसे एक खंडको निकालकर शेष बहु खंड उसीमें मिला देने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस अवहार-कालसे जगप्रतरके भाजित करने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टि द्रव्य होता है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय वीतरागछद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें संज्ञी जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १८६ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंज्ञी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं ॥ १८७ ॥

१ संज्ञानुवादेन संज्ञिषु मिथ्यादृष्ट्याद्यः क्षीणकषायान्ताश्चक्षुर्दर्शनिवत्। स. सि. १, ८. देवेहि सादिरेगो रासी सण्णीण होदि परिमाणं॥ ॥ गो. जी. ६६२.

२ असंज्ञिनो मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः। तदुभयव्यपदेशरहिताः सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८. तेणूणो संसारी सव्वेसिमसण्णिजीवाणं ॥ गो. जी. ६६३.

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ १८८ ॥

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ १८९ ॥

एदाणि तिण्णि सुत्ताणि अवगदत्थाणि त्ति एदेसिं ण वक्खाणं वुच्चदे। एत्थ धुवरासिं वत्तइस्सामो। सण्णिरासिं णेव-सण्णि-णेव-असण्णिरासिं च असण्णिभजिदतव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते असण्णिधुवरासी होदि।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा असण्णिणो होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा णेव सण्णी णेव असण्णी होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सण्णिमिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमोघभागाभागभंगो।

तिविहमवि अप्पाबहुगं जाणिऊण भाणिदव्वं।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता।

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगि-केवलि त्ति ओघं[1] ॥ १९० ॥

कालकी अपेक्षा असंज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं ॥ १८८ ॥

क्षेत्रकी अपेक्षा असंज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥ १८९ ॥

इन तीनों सूत्रोंका अर्थ अवगत है, इसलिये इनका व्याख्यान नहीं किया है। अब यहां पर ध्रुवराशिका प्रतिपादन करते हैं— संज्ञीराशि और संज्ञी तथा असंज्ञी इन दोनों व्यपदेशोंसे रहित जीवराशिको तथा असंज्ञी राशिसे भाजित उक्त राशियोंके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर असंज्ञी जीवोंके प्रमाण लानेके लिये ध्रुवराशि होती है।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग असंज्ञी जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों व्यपदेशोंसे रहित जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष भागाभागका ओघ भागाभागके समान कथन करना चाहिये।

तीनों प्रकारके अल्पबहुत्वका भी जानकर कथन करना चाहिये।

इसप्रकार संज्ञीमार्गणा समाप्त हुई।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगि-

१ आहारानुवादेन आहारकेषु मिथ्यादृष्ट्यादयः सयोगकेवल्यन्ताः सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८.

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय। णवरि सगुणपडिवण्णअणाहाररासिं आहारमिच्छाइट्ठिरासिभजिदतव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते आहारिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि।

अणाहारएसु कम्मइयकायजोगिभंगो[1] ॥ १९१ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय। एत्थ धुवरासी वुच्चदे। ओघमिच्छाइट्ठिधुवरासिमंतोमुहुत्तेण गुणिदे अणाहारिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि। ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते आहारिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे अणाहारिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि।

केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १९० ॥

यह भी सूत्र सुगम है। इतना विशेष है कि गुणस्थानप्रतिपन्न राशि और अनाहारक जीवराशिको तथा आहारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे भाजित उक्त राशियोंके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण लानेके लिये ध्रुवराशि होती है।

अनाहारकोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली जीवोंका प्रमाण कार्मणकाययोगियोंके प्रमाणके समान है ॥ १९१ ॥

यह भी सूत्र सुगम ही है। अब यहां ध्रुवराशिका प्रतिपादन करते हैं— ओघ मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशिको अन्तमुहूर्तसे गुणित करने पर अनाहारक मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण लानेके लिये ध्रुवराशि होती है। ओघअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर आहारक संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके

तव्विवरीदससारी सव्वो आहारपरिमाण ॥ गो. जी. ६७१.

1 अनाहारकेषु मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्दृष्टयसयतसम्यग्दृष्टय' सामान्योक्तसख्या । सयोगिकेवलिनः सख्येयाः। स. सि. १, ८ कम्मइयकायजोगी होदि अणाहारयाण परिमाण ॥ गो. जी. ५७१.

तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे अणाहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि।

अजोगिकेवली ओघं[1] ॥ १९२ ॥

सुगममेदं।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारि-मिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणाहारिबंधगा होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअबंधगा होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारि-असंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारिसासणसम्माइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअसंजदसम्मा-इट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिसासणसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति। सेसेगखंडं अप्पमत्तसंजदादओ[2] होंति।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। तत्थ सत्थाणं मूलोघभंगो। परत्थाणे पयदं।

असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

अनाहारक अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १९२ ॥

यह सूत्र सुगम है।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके असंख्यात खंड करनेपर बहुभाग आहारक मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक बन्धयुक्त जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अबन्धक जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसंयत जीव हैं। शेष एकभाग प्रमाण अप्रमत्तसंयत आदि जीव हैं।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्व मूल ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।

१ अयोगकेवलिनः सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८. २ प्रतिषु 'अप्पमत्तसजदा' इति पाठः।

सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। आहारिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। आहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो आहारिमिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा। अणाहारएसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो अबंधगा अणंतगुणा। बंधगा अणंतगुणा।

सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा अणाहारिसजोगिकेवली। (अजोगिकेवली संखेज्जगुणा।) चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा। (खवगा संखेज्जगुणा।) आहारिसजोगिकेवली संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। आहारिअसंजदसम्माइट्ठिअव-

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं। क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। संयतासंयतोंका अवहारकाल आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे आहारक मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं। अनाहारकोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं। अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल अनाहारक सयोगिकेवलियोंसे असंख्यातगुणा है। अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे अबन्धक जीव अनन्तगुणे हैं। बन्धक जीव अबन्धकोंसे अनन्तगुणे हैं।

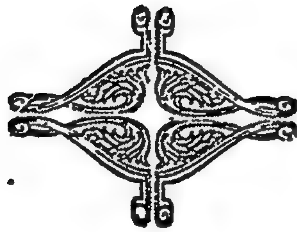
अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— अनाहारक सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं। अयोगिकेवली जीव उनसे संख्यातगुणे हैं। चार गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव अयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं। क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। आहारक सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसंयत जीव आहारक सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे

हारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । आहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । अणाहारिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । अणाहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो अबंधगा अणंतगुणा । अणाहारिणो बंधगा मिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा । तदो आहारिणो मिच्छाइट्ठिणो असंखेज्जगुणा ।

एवं दव्वाणिओगद्दारं समत्तं ।

असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । संयतासंयतोंका अवहारकाल आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे अबन्धक जीव अनन्तगुणे हैं । अनाहारक बन्धक मिथ्यादृष्टि जीव अबन्धकोंसे अनन्तगुणे हैं । इनसे आहारक बन्धक जीव असंख्यातगुणे हैं ।

इसप्रकार द्रव्यानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।



परिशिष्ट

१ दव्वपरूवणासुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	दव्वपमाणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य ।	१
२	ओघेण मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता ।	१०
३	अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ।	२७
४	खेत्तेण अणंताणंता लोगा ।	३२
५	तिण्हं पि अधिगमो भावपमाणं ।	३८
६	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरिज्जदि अंतोमुहुत्तेण ।	६३
७	पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, कोडिपुधत्तं ।	८८
८	अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	८९
९	चदुण्हमुवसामगा दव्वपमाणेण केवडिया, पवेसेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण चउवण्णं ।	९०
१०	अद्धं पडुच्च संखेज्जा ।	९१
११	चउण्हं खवा अजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, पवेसेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अट्ठुत्तरसदं ।	९२
१२	अद्धं पडुच्च संखेज्जा ।	९३
१३	सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, पवेसेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अट्ठुत्तरसयं ।	९५
१४	अद्धं पडुच्च सदसहस्सपुधत्तं ।	९५
१५	आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगईए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	१२१
१६	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	१२९
१७	खेत्तेण असंखेज्जाओ सेढीओ जगपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । तासिं सेढीणं विक्खंभसूची अंगुलवग्गमूलं विदियवग्गमूलगुणिदेण ।	१३१
१८	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ।	१५६
१९	एवं पढमाए पुढवीए णेरइया ।	१६१
२०	विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	१९८
२१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	१९८
२२	खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेढीए आयामो असं-	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
६६	सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा।	२७६
६७	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण।	२७६
६८	खेत्तेण असंखेज्जाओ सेढीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो। तासिं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण।	२७७
६९	सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठी ओघं।	२८०
७०	सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणं भंगो।	२८०
७१	आणद-पाणद जाव णवगेवेज्ज-विमाणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण।	२८१
७२	अणुदिस जाव अवराइदविमाण-वासियदेवेसु असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण।	२८१
७३	सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा।	२८६
७४	इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता।	३०५
७५	अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण।	३०६
७६	खेत्तेण अणंताणंता लोगा।	३०७
७७	बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा।	३१०
७८	असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण।	३१२
७९	खेत्तेण बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण।	३१३
८०	पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा।	३१४
८१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण।	३१४
८२	खेत्तेण पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण।	३१४
८३	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं।	३१७
८४	पंचिंदियअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा।	३१७
८५	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	संजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ।	४४७
१४९	सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा त्ति ओघं ।	४४७
१५०	परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्तापमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४४९
१५१	सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ।	४४९
१५२	जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु चउट्ठाणं ओघं ।	४५०
१५३	संजदासंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ।	४५०
१५४	असंजदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ।	४५०
१५५	दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	४५३
१५६	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	४५३
१५७	खेत्तेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ।	४५३
१५८	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ।	४५४
१५९	अचक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ।	४५५
१६०	ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ।	४५५
१६१	केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ।	४५६
१६२	लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय काउलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ओघं ।	४५९
१६३	तेउलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, जोइसियदेवेहि सादिरेयं ।	४६१
१६४	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ।	४६२
१६५	पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४६२
१६६	पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागो ।	४६२
१६७	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ।	४६३
१६८	पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४६३
१६९	सुक्कलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति	

२ अवतरण-गाथा सूची।

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहां	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहां
७५	रासिविसेसेणवहिद-	३४२		७३	सत्तसहस्सअडसदेहि	२५६	
२६	लद्धविसेसच्छिण्णं	४६		५१	सत्तादी अट्ठंता	९८	गो. जी. ६६३
२७	लद्धंतरसंगुणिदे	४७		७९	सत्तादी छक्कंता	४५०	
२३	लोगागासपदेसे	३३		७४	साहारणमाहारो	३३२	गो. जी. १९२
४३	वत्तीसमट्ठदालं	९३	गो. जी. ६२८	१६	सिद्धा णिगोदजीवा	२६	ति. प. आदि.
३७	वत्तीस सोलस चत्तारि	८७		१७	सुहुमो य हवदि .हवदि	२७	वि भा.
६६	वारस दस अट्ठेव य	१६७		६३	सुहुमो य हवदि जायदे	१३०	
६७	,,	२०१		१८	सुहुमं तु हवदि हवदि	२८	
३९	विसहस्सं अडयालं	८८		६४	सुहुमं तु हवदि ..जायदे	१३०	
५३	वे कोडि सत्तवीसा	१००		४२	सोलसयं चउवीसं	९१	गो. जी. ६२७
७२	सत्त णव सुण्ण पंच	२५६		२८	हारान्तरहृनहारा-	४७	

३ न्यायोक्तियां।

सूचना—न्यायवाक्यके पश्चात् १, ३ संख्या भागसूचक और शेष संख्याएं पृष्ठसूचक हैं।

	भाग पृष्ठ		भाग पृष्ठ
१ अग्निरिव माणवकोऽग्निः।	१, २८	१६ भूतपूर्वगतिन्यायसमाश्रयणात्।	१, २६३
२ कज्जणाणत्तादो कारणणाणत्त-मणुमाणिज्जदि।	१, २१९	१७ भूतपूर्वगति।	१, १६६
३ कारणकम्माणुसारी कज्जकमो।	१, २१८	१८ भूदपुव्वगइ।	१, १२९
४ कारणधर्मस्य कार्यानुवृत्तिः।	१, २३७	१९ भूदपुव्वणापण।	१, २५
५ कारणानुरूपं कार्यम्।	१, २७०	२० यथोद्देशस्तथा निर्देशः।	१, १६१
६ जहा उद्देसो तहा णिद्देसो।	३, १० ३१२-३१५	२१ यद्येकशब्देन न जानाति ततोऽन्येनापि शब्देन ज्ञापयितव्यः।	१, ३२
७ जं थूलं अप्पवण्णणीयं तं पुव्व-मेव भाणियव्वं।	३, २७-१३०	२२ रूढितन्त्रा व्युत्पत्तिः।	१, १४०
८ नदीस्रोतोन्याय।	१, १८०	२३ वक्तृप्रामाण्याद्वचनप्रामाण्यम्।	१, ७२-१९६, ३, ११
९ नहि प्रमाणं प्रमाणान्तरमपेक्षते-	१, २०४	२४ व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिः।	३, १८
१० न हि स्वभावाः परपर्यनु-योगार्हाः।	१, २९६	सति संभवे व्यभिचारे च विशेषणमर्थवद्भवति।	१, १८५
११ नागमस्तर्कगोचरः।	१, ३०४	२५ सव्वकालमवट्ठिदरासीणं वया-णुसारिणा आयण होदव्वं।	३, १२०
१२ पमाणेण पमाणाविरोहिणा होदव्वं।	१, २१७	२६ सामान्यचोदनाश्च विशेषेष्व-तिष्ठन्ते।	१, १४०
१३ परिशेषन्याय	१, ४२ १५७	२७ सिद्धासिद्धाश्रया हि कथामार्गाः	१, ३४९
१४ प्रतिपाद्यस्य बुभुत्सितार्थविषय-निर्णयोत्पादनं वक्तृवचसः फलम्।	१, ९२२	२८ संते संभवे वियहिचारे च विसे-सणमत्थवंतं भवदि।	१,२६२-३३१
१५ भाविनि भूतवत् (उपचार)	१, १८१	२९ सुपरिक्खा हिययणिव्वुइकरा।	१, ७०

४ ग्रन्थोल्लेख ।

भाग पृष्ठ

१ अप्पाबहुग सुत्त

१ 'उवसमसम्माइट्ठी थोवा। खइयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा। वेदयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा' त्ति अप्पाबहुगसुत्तादो णव्वदे। ३ ९८

२ 'तेइंदियअपज्जत्तरासीदो चउरिंदियरासी विसेसहीणो' त्ति वुत्तअप्पाबहुग-सुत्तादो। ××× एदं पि अप्पाबहुगसुत्तादो चेव णव्वदे। ३ ३२१

३ 'सव्वत्थोवा णवुंसयवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो। इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा। पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा' इदि अप्पाबहुअ-सुत्तादो कारणस्स थोवत्तणं जाणिज्जदे। ३ २६१

४ अण्णहा अप्पाबहुगसुत्तेण सह विरोहादो। ३ २७३

२ कसायपाहुड, पाहुडसुत्त

१ कसायपाहुडउवएसो पुण अट्ठकसाएसु खीणेसु पच्छा अंतोमुहुत्तं गंतूण सोलस कम्माणि खविज्जंति त्ति। १ २१७

२ आइरियकहियाणं ×× कसायपाहुडाणं। १ २२१

३ 'अणंतरं पच्छदो य मिच्छत्तं' इदि अणेण पाहुडसुत्तेण सह विरोहादो। २ ५६६

३ कालसूत्र (कालानुयोग)

१ कालसूत्रेण सह विरोधः किन्न भवेदिति चेन्न, तत्र क्षयोपशमस्य प्राधान्यात्। १ १४२

२ तो पदाओ दुविहसंजदरासीओ सांतराओ हवंति। ण च एवं, कालाणिओगे एदासिं णिरंतरत्तुवलंभादो। ३ ४४८

४ खुद्दाबंध

१ 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीहिंतो वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा, तत्थेव देवीओ संखेज्जगुणाओ' एदम्हादो खुद्दाबंधसुत्तादो जाणिज्जदे। ३ २३१

२ 'मणुसगईए मणुसेहि रूवं पक्खित्तएहि सेढी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण' इदि खुद्दाबंधसुत्तादो। ३ २४९

३ 'ईसाणकप्पवासियदेवाणमुवरि तम्हि चेव देवीओ संखेज्जगुणाओ। तदो सोहम्मकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा। तम्हि चेव देवीओ संखेज्जगुणाओ। पढमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा। भवणवासियदेवा असंखेज्जगुणा।

भाग पृष्ठ

देवीओ संखेज्जगुणाओ। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ। वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा। देवीओ संखेज्जगुणाओ। जोइसियदेवा संखेज्जगुणा। देवीओ संखेज्जगुणाओ' त्ति एदम्हादो खुद्दाबंधसुत्तादो जाणिज्जदे जहा देवाणं संखेज्जा भागा देवीओ होंति। ३ ४१४

४ खुद्दाबंधे वि घणधारुप्पण्णविक्खंभसूईणं पादोलंभादो वा। ३ २७९

५ खुद्दाबंधुवसंहारजीवट्ठाणस्स मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूईए सामण्णविक्खंभसूचिसमाणत्तविरोहा। एवं खुद्दाबंधम्हि वुत्तसव्वअवहारकाला जीवट्ठाणे सादिरेया वत्तव्वा। ३ २७९

६ अवसेसिदमणुसरासिपरूवणादो जुत्तं खुद्दाबंधम्हि भागलद्धादो एगरूवस्स अवणयणं। ३ २४९

७ संपहि खुद्दाबंधेण सामण्णेण जीवपमाणपरूवएण जाओ विक्खंभसूईओ ××× इदि एसा खुद्दाबंधे ××× खुद्दाबंधे उत्ता ××× खुद्दाबंधे वुत्ता ×××। तम्हा एत्थ वुत्ताविक्खंभसूईहि ऊणियाहि खुद्दाबंधवुत्तविक्खंभसूईहि वा अधियाहिं होदव्वामिदि चोदगो भणदि। एत्थ परिहारो वुच्चदे। जीवट्ठाणवुत्तविक्खंभसूईओ संपुण्णाओ, खुद्दाबंधम्हि वुत्तविक्खंभसूईओ साधियाओ। ३ २७४

८ खुद्दाबंधम्हि वुत्तविक्खंभसूईओ संपुण्णाओ किण्ण होंति? ××× अहवा एत्थ वुत्तविक्खंभसूईओ देसूणाओ, खुद्दाबंधम्हि वुत्ताविक्खंभसूईओ संपुणाओ। ३ २७५

५ जीवट्ठाण

१ जीवट्ठाणमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूचिपादो वि खुद्दाबंधसामण्णविक्खंभसूचिपादेण समाणो। ३ २७९

२ एत्थ पुण जीवट्ठाणम्हि मिच्छत्तविसेसिदजीवपमाणपरूवणे कीरमाणे रूवाहियतेरसगुणट्ठाणमेत्तेण अवणयणरासिणा होदव्वमिदि। ३ २५०

३ एत्थ वि जीवट्ठाणे ×× वुत्ताओ। ३ २७८

६ तत्वार्थभाष्य

१ उक्तं च तत्वार्थभाष्ये—उपपादो जन्म प्रयोजनमेषां त इमे औपपादिकाः। १ १०३

७ तत्वार्थसूत्र

१ 'वनस्पत्यन्तानामेकम्' इति तत्वार्थसूत्राद्वा। १ २३९

१ 'कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि' इति अस्मात्तत्त्वार्थसूत्राद्वा। १ २५८

८ तिलोयपण्णत्ती

१ 'दुगुण-दुगुणो दुवग्गो णिरंतरो तिरियलोगे' त्ति तिलोयपण्णत्तिसुत्तादो। ३ ३६

२ जोइसियभागहारसुत्तादो चंदाइच्चबिंबपमाणपरूवयतिलोयपण्णत्तिसुत्तादो च। ३ ३६

भाग पृष्ठ

९ परियम्म

१ 'जम्हि जम्हि अणंताणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्सअणंताणंतस्सेव गहणं' इदि परियम्मवयणादो। ३ १९

२ 'जहण्णअणंताणंतं वग्गिज्जमाणे जहण्णअणंताणंतस्स हेट्ठिमवग्गणट्ठाणेहिंतो उवरि अणंतगुणवग्गट्ठाणाणि गंतूण सव्वजीवरासिवग्गसलागा उप्पज्जदि' त्ति परियम्मे वुत्तं। ३ २४

३ ण च तदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिवग्गसलागाओ हेट्ठिमवग्गणट्ठाणेहिंतो उवरि परियम्मउत्तअणंतगुणवग्गणट्ठाणाणि गंतूणुप्पण्णाओ। ३ २४

४ 'अणंताणंतविसए अजहण्णमणुक्कस्सअणंताणंतेणेव गुणगारेण भागहारेण वि होदव्वं' इदि परियम्मवयणादो। ३ २५

५ 'जत्तियाणि दीवसागररूवाणि जंबूदीवछेदणाणि च रूवाहियाणि' त्ति परियम्मसुत्तेण सह विरुज्झइ। ३ ३६

६ जं तं गणणासंखेज्जयं तं परियम्मे वुत्तं। ३ ९९

७ 'जम्हि जम्हि असंखेज्जासंखेज्जयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं भवदि' इदि परियम्मवयणादो। ३ १२७

८ 'अट्ठरूवं वग्गिज्जमाणे वग्गिज्जमाणे असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि गंतूण सोहम्मीसाणविक्खंभसूई उप्पज्जदि। सा सइं वग्गिदा णेरइयविक्खंभसूई हवदि। सा सइं वग्गिदा भवणवासियविक्खंभसूई हवदि। सा सइं वग्गिदा घणंगुलो हवदि' त्ति परियम्मवयणादो। ३ १३४

९ एदासिं अवहारकालपरूवयगाहासुत्तादो वा परियम्मपमाणादो वा जाणिज्जदे। ३ २०१

१० परियम्मादो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेढीए पमाणमवगदमिदि चे ण, एदस्स सुत्तस्स बलेण परियम्मपवुत्तीदो। ३ २६३

११ परियम्मवयणादो। ३ ३३७

१२ परियम्मवयणादो। ३ ३३८

१३ ण च परियम्मेण सह विरोहो, तस्स तदुद्देसपदुप्पायणे वावारादो। ३ ३३८

१४ ण परियम्मदो वगत्तसिद्धी, तस्स तेउक्काइयअद्धच्छेदणएहि अणेयंतियत्तादो। ३ ३३९

१० पिंडिया

उत्तं च पिंडियाए—

१ लेस्सा य दव्व-भावं कम्मं णोकम्ममिस्सयं दव्वं।
जीवस्स भावलेस्सा परिणामो अप्पणो जो सो॥ २ ७८८

११ वर्गणासूत्र

१ कथमेतदवगम्यते ? वर्गणासूत्रात्। किं तद्वर्गणासूत्रमिति चेदुच्यते १ २९०

क्रम नं, भाग पृष्ठ

१२ वियाहपण्णत्ति

१ लोगो वादपदिट्ठिदो त्ति वियाहपण्णत्तीवयणादो। ३ ३५

१३ वेयणासुत्त, वेदनाक्षेत्रविधान

१ जो मच्छो जोयणसहस्सिओ सयंभूरमणसमुद्दस्स वाहिरिल्लए तडे वेयण-समुग्घाएण समुहदो काउलेस्सियाए लग्गो त्ति पदेण वेयणासुत्तेण सह विरोहो ३ ३७

२ तत्कुतोऽवसीयत इति चेद्वेदनाक्षेत्रविधानसूत्रात्। तद्यथा . . .। १ २५१

३ ण, वादरेइंदियओगाहणादो सुहुमेइंदियओगाहणाए वेदणखेत्तविहाणादो वहुत्तोवलंभा। ३ ३३०

४ सुहुमेइंदियओगाहणादो वादरेइंदियओगाहणाए वेदणखेत्तविहाणसुत्तादो थोवत्तुवलंभा। ३ ३३१

१४ सन्मतिसूत्र

१ णामं ठवणा दविए त्ति एस दव्वट्ठियस्स णिक्खेवो।
२ भावो दु पज्जवट्ठियपरूवणा एस परमत्थो।
३ अणेण सम्मइसुत्तेण सह कधमिदं वक्खाणं ण विरुज्झदे ? १ १५

१५ संतकम्मपाहुड

१ एवं काऊण××× सोलस पयडीओ खवेदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण पच्च-क्खाणापच्चक्खाणावरणकोध-माण माया-लोभे अक्कमेण खवेदि। एसो संतकम्म- १ २१७
२ पाहुडउवएसो
३ आइरियकहियाणं संतकम्म-कसायपाहुडाणं १ २२१

१६ संतसुत्त (परूवणा)

१ अपज्जत्तकाले पंचिंदियपाणाणमत्थित्तपदुप्पायणसंतसुत्तदंसणादो २ ६५८

५ परिभाषिक शब्दसूची ।

सूचना— जो शब्द ग्रंथमें अनेकवार आये हैं उनके प्राय. प्रथम एक दो पृष्ठांक ही यहा दिये गये हैं ।

---

६ मूडबिद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके मिलान ।

अ —मूडबिद्रीकी प्रतियोंके ऐसे पाठभेद जो अर्थ व पाठशुद्धिकी दृष्टिसे विशेषता रखते हैं, अतएव ग्राह्य हैं ।

भाग १.

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
९	२	सयलत्थवत्थूणं	सयलत्थवत्थाणं
,,	१३	अर्थ-वाचक	पदार्थोंकी अवस्थाके वाचक
१८	४	समवाय-णिमित्त	समवायदव्वणिमित्तं
३४	७	मङ्गलप्राप्तिः	मंगलत्वप्राप्तिः
३८	२	मंगलम् । तन्न,	मंगलत्वम् । न
३९	१०	देहितो कय-	×
४०	७	अव्वोच्छित्ति य	अव्वोच्छित्ति (त्ती)
४१	६	णिवद्धदेवदा	कयदेवदा
,,	१७	निवद्ध कर दिया	स्वयं किया

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
,,	७	कयदेवदा	णिवद्धदेवदा
,,	१८-१९	देवताको....जाता है,)	अन्यकृत देवतानमस्कार निबद्ध किया जाता है,
४९	७	-साहण-	-सोहण-
४९	२०	साधन अर्थात् व्रतोंकी रक्षा	शोधन अर्थात् व्रतोंकी शुद्धि
५२	८	रत्नाभोगस्य	रत्नभागस्य
६३	७	-प्राप्त्यतिशय-	प्राप्तातिशय
६३	१७	निश्चय व्यवहाररूप....प्राप्त हुई	निश्चय और व्यवहारसे प्राप्त अतिशयरूप
६४	३	चउक्क-घाइ-तिए	तहेव घाइतिए
,,	१४	चार घातिया कर्मोंमेंसे	×
६५	६	तेण गोदमेण	तेण वि गोदमेण
,,	१४	गौतम गणधरने	गौतम गणधरने भी
६७	४	होइदि त्ति	होहिदि त्ति
८०	८	चेव	चेव होंति
८३	११	द्रोष्यत्यदुद्रुवत्	द्रवति द्रोष्यत्यदुद्रुवत्
,,	२७	जो	जो वर्तमानमें पर्यायोंको प्राप्त होता है,
८६	५	सन्त्वेते	संतु ते
९७	३	पूजा-विहाणं	पूजादिविधाणं
,,	१३	पूजाविधिका	पूजा आदि विधिका
१०१	५	णेयप्पमाणं	णेयप्पमाण-
,,	१७	ज्ञेयप्रमाण है, क्योंकि ज्ञान-प्रमाण ही	है, क्योंकि ज्ञेयप्रमाण ज्ञानमात्र
१०२	१	धम्मदेसणं	धम्मुवदेसणं
१०६	५	समयस्स	ससमयस्स
११०	४	वेइयाणं	वेइया-वंसा
११९	६	संठाणं	संठाण-
,,	१४	नाना प्रकारके.. .गलाता है	छह प्रकारके संस्थानोंसे युक्त नाना प्रकारके शरीरोंसे पूरित होता है और गलाता है
१२३	८	अद्धुवमं पणिधिकप्पे	अद्धुवसंपणिधिकप्पे
,,	१०	वज्झए	वुज्झए
१४६	४	विक्रमेणोपलंभात्	ऽक्रमेणोपलंभात्

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
१५१	४	श्रद्धानमनुरक्तता	श्रद्धानमुत्कता
१५९	१	अवधरणं	अवधाणं
१७१	८	जायदि	जादि
१७१	९	सामिलियद्द	समल्लियद्द
१७१	२४	वेदक सम्यक्त्वसे मेल कर लेता है	वेदक सम्यक्त्वको प्राप्त होता है
१९४	६	सद्दापर्यावयवस्य	सद्दास्यापर्यावयवस्य
१९६	६	अपौरुपेयत्वस्य	अपौरुपेयस्य
१९८	७	पुनर्नैवोत्पत्तिरिति	पुनर्नोत्पत्तिरिति
२०१	७	पातयति	यातयाति
,,	२३	गिराता है	यातना देता है
२०३	८	द्रव्य-	दिव्य-
२०३	२२	द्रव्य और भावरूप	दिव्य स्वभाववाले
२१२	४	अणेणेव	अणेण
२१७	४	संखेज्जदि-	संखेज्जे
२२०	६	परिमाणत्तादो	परिणामत्तादो
२४३	२	उत्तिरंग-	उत्तिग (उत्तिग)
,,	४	घ्राणमिति	घ्राणमिति चेत्
२४८	२	भवेदिति	भवति
२५९	६	संज्ञिन इति	संज्ञिनः, अमनस्काः असंज्ञिन इति
,,	१९	कहते हैं	और मनरहित जीवोंको असंज्ञी कहते हैं
२६०	२	निष्पत्तौ	निष्पत्तेः
२७०	१	कर्मस्कन्धैः	नोकर्मस्कन्धैः
,,	१४	कर्मस्कंधोंके	नोकर्मस्कंधोंके
२८१	२	सच्चमोसं ति	सच्चमोसं तं
२८७	९	प्रयत्ना-	सप्रयत्ना-
,,	३०	प्रयत्न और	प्रयत्नसहित
२९३	१	तत्परित्यक्ता-	परित्यक्ता-
२९५	६	को ह्यौ-	केष्वौ-
३१८	५	भूतपूर्वगत-	भूतपूर्वगति-
३२०	७	ताभ्यां	एताभ्यां
३२१	४	जादि	जांति
,,	,,	जादि	जांति

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
३२१	५	जादि	जांति
३४१	११	नपुंसकमुभया-	नपुंसक उभया-
३४४	३	अभिलाषे	अभिलाषो
३४९	८	गर्द्धी	गृद्धी
३४९	३०	गर्द्धी	गृद्धि
३६०	१	भेयं च	भेयगयं
३७३	७	साचित्त-	सच्चित्त-
३७४	६	न,	च
३७७	३	निचंधनावेवाभविष्यतां	निबंधनावभाविष्यतां
३८८	५	पीत	तेज
३८९	५	अप्पाणमिव	अप्पाणं पिव
३९०	४	रायद्दोसो	रायद्दोसा
३९८	३	एकदेशे सत्यविरोधात्	एकदेशात्पत्यविरोधात्
३९८	१७	एकदेश रहनेमें	एकदेशकी उत्पत्तिमें

भाग २.

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
४१५	४	मिच्छाइट्ठी सिद्धा० वेदि	मिच्छइट्ठी० सिद्धा वेदि
४१९	४	एइंदियादी	अत्थि एइंदियादी
४२७	२	भणमाणे	ओघे भणमाणे
४४४	१	सिद्धमपज्जतं	सिद्धमपज्जत्तत्तं
४४४	२	सरीर-पट्ठवण-	सरीरादवण (सरीराढवण)
४६२	६	तिण्णि सम्मत्तं	तिण्णि सम्मत्ताणि
४६३	४	तिण्णि सम्मत्तं	तिण्णि सम्मत्ताणि
५१३	५	दव्वित्थिवेदा	दव्वित्थिवेदा पुण
५३४	७	असुह-ति-लेस्साणं गउरवण्णाभावापत्तीदो।	असुह-ति-लेस्साणं धवलवण्णाभावप्पसंगादो, कम्मभूमिमिच्छाइट्ठीणं पि अपज्जत्तकाले असुह-ति-लेस्साण गउरवण्णाभावापत्तीदो।
५३४	२६	भोगभूमियां मनुष्योंके गौर वर्णका	भोगभूमियां मनुष्योंके धवलवर्णके अभावका प्रसंग प्राप्त होगा। तथा, अशुभ तीनों लेश्यावाले कर्मभूमियां मिथ्यादृष्टि जीवोंके भी अपर्याप्त कालमें गौर वर्णका

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
५३५	९	तेउ-पम्म सुक्कलेस्साओ भवंति। पंच-वण्ण-रस-कागस्स	तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ भवंति। वहुवण्णस्स-जीवसरीरस्स कधमेक्कलेस्सा जुज्जदे ? ण, पाधण्णपदमासेज्ज 'कसणो कागो' त्ति पंच-वण्णस्स कागस्स
५३५	२५	तेज, पद्म और शुक्लेश्याएं होती हैं। जैसे पांचों वर्ण और पांचों रसवाले काकके अथवा पांचों वर्णवाले रसोसे युक्त काकके कृष्ण व्यपदेश	तेज, पद्म और शुक्लेश्याएं होती हैं। शंका—अनेक वर्णवाले जीवके शरीरके एक लेश्या कैसे वन सकती है ? समाधान—नहीं, क्योंकि, प्राधान्यपदकी अपेक्षा 'काक कृष्ण है' इसप्रकार पांचों वर्णोंसे युक्त काकके जैसे कृष्ण व्यपदेश
५६८	६	एवं देवगदी	एवं देवगदी समत्तो (त्ता)
५८९	३	तिरिक्खगदीओ त्ति	तिरिक्खगदि त्ति
५९०	१०	एवं विदियमग्गणा	एवमिंदियमग्गणा
५९८	४	अपज्जत्ता दुविहा	अपज्जत्तभेयेण दुविहा
६०९	१२	आयारभावे मट्टियाए	आधारभूमिमट्टियाए
६१०	१२	आधारके होनेपर मट्टीके	आधारभूत भूमिकी मट्टीके
६११	३	वादरकाइयाणं	वादरतेउकाइयाणं
६४८	८	केवलीणं	सयोगकेवलीणं
६४८	२०	केवली जिनके	सयोगिकेवली जिनके
६५३	३	भावगद-पुव्वगई च	भूदपुव्वगई च
६५३	१७	भावमनोगत पूर्वगति अर्थात् भूतपूर्व न्यायके	भूतपूर्वगति न्यायके
६५७	४	मिच्छाइट्ठीणं	मिच्छाइट्ठीणं व[1]
६५९	२	समणा भवदि	संभवो भवदीदि
६५९	७	प्राणोंका सद्भाव हो जाता है,	प्राणोंका होना संभव है,
६६०	४	वारिद जीव-पदेसाणं	वा ठिदजीवपदेसाणं
६६०	१६	व्याप्त जीवके	स्थित जीवके

१ देखो पृष्ठ ६५७ का अर्थ और विशेषार्थ।

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
६६०	५	एवं वंधद्दरस्स	एवं दद्दरस्स (डद्दरस्स)
,,	१८	विशिष्ट बंधको धारण करनेवाले शरीरके	इस छोटे शरीरके
८२३	२	चढमाणा	चढमाणाणं
८२३	३	उवसमसम्मत्तेण	उवसमसम्मत्ते
,,	१५	श्रेणि चढ़नेके पूर्वमें ही परिहार-शुद्धिसंयमके नष्ट हो जाने पर उपशमसम्यक्त्वके साथ परिहार-विशुद्धिसयमीका	श्रेणिसे उतरनेके पश्चात् ही उपशमसम्यक्त्वके नष्ट हो जाने पर परिहारविशुद्धिसंयमीका।
८४६	२	पज्जत्तापज्जत्ता आलावा	पज्जत्तापज्जत्ता वे आलावा
,,	११	पर्याप्त और अपर्याप्तकालसंवन्धी आलाप	पर्याप्त और अपर्याप्तकालसंबन्धी दो आलाप

भाग ३

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
१४	३	धनुर्धृतायामेवायं	धनुर्धृतावस्थायामेवायं
२०	३	पुणो	पुणो वि
२६	९	अवट्ठाणादो	अव्ववट्ठाणादो
,,	२५	वह पदार्थ प्रमाणसे अवस्थित है।	प्रमाणसिद्ध पदार्थकी पुनः प्रमाणसे परीक्षा करने पर किसी भी पदार्थकी व्यवस्था नहीं हो सकती है।
२८	१०	ण अवहिरिज्जंति	मा अवहिरिज्जंतु
३०	७	रूवसदपुधत्तं	रूवदसपुधत्तं, रूवदसमपुधत्तं[1]
,,	२६	शतप्रथक्त्वरूप	दसपृथक्त्वरूप
३४	४	पति	रासी
,,	१५	यह जगच्छ्रेणीका सातवा भाग आता है।	यह राशि जगच्छ्रेणीके सातवें भागप्रमाण है।
३६	५	एदस्स समवट्ठाणादो।	एदस्स वक्खाणस्स सम्मवट्ठाणादो।
३९	१	णाणपमाणमिदि	णाणं पमाणमिदि

---

१ ये दो पाठ दो भिन्न भिन्न ताडपत्रीय प्रतियोंके हैं।

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
३९	१२	अधिगम और ज्ञानप्रमाण ये दोनों	अधिगम, ज्ञान और प्रमाण ये तीनों
३९	२	दव्वत्थिविसयाणं	दव्वविसयाणं
,,	१५	द्रव्योंके अस्तित्व विषयक	द्रव्यविषयक
३९	५	साद्दियपमाणाभावे	सुद्दियपमाणाभावे
३९	६	अवधारणासिस्साणमभावादो।	अवधारणसमत्थासिस्साणमभावादो।
,,	२१	करनेवाले शिष्योंका	करनेमें समर्थ शिष्योंका
३९	६	अधवा एयं	अथवा एवं
,,	२३	अथवा, इस भावप्रमाणका कथन करना चाहिये।	अथवा, भावप्रमाणका कथन इसप्रकार करना चाहिये।
४०	१	एगखंडगहिदे	एगखंडं गहिदे
४४	४	खंडं	दो खंडं
४८	२	अवहारो	अवहारे
५४	४	केण कारणेण ?	केण कारणेण ? जेण
५६	५	सरूवेहि	रूवेहि
५८	२	तिगुणरूवूणेण	तिगुणिदरूवेणूणेण
६४	१	मिच्छाइट्ठिसिव	मिच्छाइट्ठिम्मि व
६५	३	अद्धापरूवणं	अत्थपरूवणं
,,	२४	कालका प्ररूपण	अर्थका प्ररूपण
६७	९	जाव उस्सासो	जावेगुस्सासो
६८	६	अवहारकालो	अवहारकालो आवलियाए
९७	५	परूविदसव्वं संजद-	परूविदसव्वसंजद-
१२५	४	संखातीदादो।	सखादीदत्तादो।
१७८	७	असंखेज्जदिभागं	असंखेज्जदिभागं च
१९१	६	-तिण्णि-	-तिण्णि-तिण्णि-
,,	२०	तीन संख्याको	तीन तीन संख्याको
१९१	९	अणंतरुप्पण्ण-	अणंतरुप्पण्णरूवाणं
२०८	४	असंखेज्जेसु	संखेज्जेसु
,,	१८	असख्यात खंड	संख्यात खंड
२०८	४	संखेज्जेसु	असखेज्जेसु
,,	१९	संख्यात खंड	असंख्यात खंड
२०८	७	असंखेज्जेसु	संखेज्जेसु

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
२०८	२२	असंख्यात खंड	संख्यात खंड
२०८	८	संखेज्जेसु	असंखेज्जेसु
,,	२३	संख्यात खड	असंख्यात खंड
२१५	६	ओघपडिवण्णेहि	ओघगुणपडिवण्णेहि
२३२	३	भवणादियाणं	भवणादियाणं देवाणं
२७१	२	पडिसेहट्ठं।	पडिसेहट्ठं। पदरस्स असंखेज्जदिभागो ते मिच्छाइट्ठी होंति त्ति उत्तं।
,,	१४	कहा है।	कहा है। भवनवासी मिथ्यादृष्टि देव जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, यह इस कथनका तात्पर्य है।
२७५	६	ओघपरूवणाए	देवओघपरूवणाए
२७६	१	दव्वमिच्छाइट्ठिरासिं	देवमिच्छाइट्ठिरासिं
२८३	१०	असंखेज्जगुणा	संखेज्जगुणा
,,	२७	हुए भी वे असंख्यातगुणे	हुए भी वे संख्यातगुणे
२८६	४	सव्वदेवरासिमसंखेज्जखडे	सव्वदेवरासिं संखेज्जखंडे
,,	१५	असंख्यात खंड	संख्यात खंड
२९५	६	सेसमसंखेज्जखंडे	सेसं संखेज्जखंडे
,,	२२	असंख्यात खड	संख्यात खंड
२९८	१०	भवणवासियदेवि त्ति	भवणवासियदेवेत्ति
,,	२९	देवियोंके	देवोंके
३६१	११	उवरिम-हेट्ठिमसंखेज्जावियप्पा	उपरिमहेट्ठिमसव्वे वियप्पा
,,	२५	असख्यात विकल्प	सर्व विकल्प
३८१	१२	त्ति	वेत्ति
३९८	५	रासी	रासी सो
४०४	६	-कायजोगरासीओ	-कायजोगरासी होदि
४१४	९	इत्थिवेदअवहारकालस्स भागहारो	इत्थिवेदअवहारकालो
४१९	६	उवसामगा केवडिया, पवेसेण	उवसामगा दव्वपमाणेण केवडिया, पवेसणेण
,,	१९	जाव कितने हैं ?	जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
४२६	६	-भागभागहाररासिम्हि	-भागधुवरासिम्हि
,,	२१	चौथे भागकी भागहार राशिमें	चौथे भागरूप ध्रुवराशिमें

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
४२७	४	देवगदिअद्धाणं	देवगदिकसाइअद्धाणं
४३०	६	मूलो उवसंतकसायरासी	मूलोघुवसंतकसायरासी
४३६	१०-११	दुविहणाणविरहिय-	दुविहण्णाणविरहिय-
४३६	२८	दोनों प्रकारके ज्ञानोंसे	दोनों प्रकारके अज्ञानोंसे
४४०	३	चेव	तम्हि चेव
४४२	१	लद्धिसंपण्णरासीणं	लद्धिसंपण्णरिसीणं
,,	१२	राशियां बहुत नहीं हो सकतीं हैं।	ऋषि बहुत नहीं हो सकते हैं।
४४२	६	सेसमसंखेज्जखंडे	सेसमणतखंड
,,	२०	असंख्यात खड	अनन्त खंड
४४४	२	मदि-सुदअण्णाणीसु	मदि-सुदअण्णाणमिच्छाइट्ठीसु
,,	१४	-ज्ञानी जीवोंमें	ज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंमें
४४५	९	विसेसाहिया २८।	विसेसाहिया २८। आभिणि-सुदणाणिउवसामगा संखेज्जगुणा। खवगा संखेज्जगुणा।
,,	२५	अट्ठाईस हैं। मनःपर्ययज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे	अट्ठाईस हैं। आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी उपशामक जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी क्षपक जीव उक्त उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। मनःपर्ययज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव उक्त क्षपकोंसे
४४६	३	दुणाणिअसंजद-	आभिणिणाणि-सुदणाणिअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तत्थेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। दुणाणि असंजद-
,,	१६	अवधिज्ञानी प्रमत्तसयतोंसे	अवधिज्ञानी प्रमत्तसयतोंसे आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणे हैं। इन्हीं दो ज्ञानोंमें प्रमत्तसंयत जीव उक्त अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। इनसे
४५४	३	चक्खुदंसणट्ठिदीए	चक्खुदंसणमिच्छाइट्ठिट्ठिदीए
,,	१५	-चक्षुदर्शनकी	चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंकी
,,	३	असंखेज्जदिभाए चक्खिदियपाडिभागे	असंते चक्खिदियपडिघादे

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
४५४	१७	चक्षुदर्शनवाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागरूप आक्षेपका परिहार यह है कि चूंकि	चूंकि चक्षुइन्द्रियके प्रतिघातके नहीं रहने पर
४६१	११	तेउलेस्सियअवहारकालो	देवतेउलेस्सियअवहारकालो
,,	२६	तेजोलेश्यासे युक्त जीवराशिका	तेजोलेश्यासे युक्त देवोंका
४७३	२	सयलाइरियजयप्पसिद्धादो।	सयलाइरियवियप्पसिद्धादो।
,,	१४	यह सर्व आचार्य जगत्में प्रसिद्ध है।	यह कथन सर्व आचार्योके वचनोंसे सिद्ध है।
४७८	९	मिच्छाइट्ठिभाजिदतव्वग्गं	मिच्छाइट्ठिरासिभजिदतव्वग्गं
४८६	१	खवगा संखेज्जगुणा।	खवगा संखेज्जगुणा। सजोगिकेवली आहारिणो संखेज्जगुणा।
,,	१३	अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे	सयोगिकेवली आहारक जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। इनसे अप्रमत्तसंयत जीव

च—मूडबिद्रीकी प्रतियोंके ऐसे पाठभेद जो शब्द और अर्थकी दृष्टिसे दोनों शुद्ध हैं, अतएव जो सभवतः प्राचीन प्रतियोंमें वैकल्पिकरूपसे निबद्ध पाये जाते हों।

भाग १

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
१३	२	साहू-पसाहा	साहुपसाहा
३२	१	किमिति	किमर्थं
७१	६	तदो	पुणो
९४	५	ओरालिय-सरीर-णिज्जरं	ओरालिय-णिज्जरं
१०८	३	स्वेष्टकृदैतिकायन-	स्विष्टिकृदैतिकायन-
१०८	११	स्वेष्टकृत्	स्विष्टिकृत्
११०	४	जिणहरादीणं	जिणहराणं
११०	१६	जिनालय आदिका	जिनालयोंका
११२	१	चउण्हमहियाराणमत्थि	चउण्हमहियाराणमत्थ-
११२	१४	चार अधिकारोंका नामनिर्देश	चार अधिकारोंका अर्थनिर्देश
११६	६	छ-अद्दिय-	छद्दि अद्दिय-
,,	७	वाक्संस्कारकारणं	संस्कारकारणं

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविद्रीका पाठ
११८	१	साद्यनादीनौपशमिकादीन्	साद्यनादीन् भावान्
११८	१५	सादि और अनादिरूप औपशमिक आदिभावोंकी	सादि और अनादि भावोंकी
१२५	९	णेयव्वा	णायव्वा
,,	२३	निषेध कर देना	निषेध जानना
१४७	१	अभावप्रसंगात्	अभावासंजनात्
,,	५	इति चेन्न	इति चेत्
,,	२२	ऐसी शंका करना ठीक नहीं है, क्योंकि,	क्योंकि,
१५६	६	वण्णणीओ	वण्णओ
१५८	५	तेहिंतो	तेहि
१८६	५	तदेकत्वोपपत्तेः	तदेकत्वोक्तेः
,,	२०	एकता बन जाती है।	एकता कही है।
२०९	१	प्रतिपादकार्पात्	प्रतिपादनार्पात्
२२८	४	मिश्रणमवगम्यते	मिश्रतेहावगम्यते
,,	१३	जीवोंके साथ मिश्रण	जीवोंके साथ यहां मिश्रण
२५४	९	-शक्तेर्निमित्तानामाप्तिः	×
,,	२६	परिणमन करनेरूप शक्तिसे बने हुए आगत पुद्गलस्कंधोंकी प्राप्तिको	परिणमन करनेकी शक्तिकी पूर्णताको
२५५	२	औदारिकादिशरीरत्रयपरिणाम-शक्त्युपेतानां स्कंधानामवाप्तिः	औदारिकादिपरिणमनशक्तेर्निष्पत्तिः
,,	१३	परिणमन करनेवाले औदारिक आदि तीन शरीरोंकी शक्तिसे युक्त पुद्गलस्कंधोंकी प्राप्तिको	औदारिक आदि शरीररूप परिणमन करनेरूप शक्तिकी पूर्णताको
,,	४	-ग्रहणशक्त्युत्पत्तेर्निमित्तपुद्गल प्रचयावाप्तिः	-ग्रहणशक्तेर्निष्पत्तिः
,,	१६	ग्रहण करनेरूप शक्तिकी उत्पत्तिके निमित्तभूत पुद्गलप्रचयकी प्राप्तिको	ग्रहण करनेरूप शक्तिकी पूर्णताको
,,	६	-निमित्तपुद्गलप्रचयावाप्तिः	×

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
२५५	२०	शक्तिकी पूर्णताके निमित्तभूत पुद्गल-प्रचयकी प्राप्तिको	शक्तिकी पूर्णताको
,,	८	निमित्तनोकर्मपुद्गलप्रचयावाप्तिः	×
,,	२३	शक्तिके निमित्तभूत नोकर्म पुद्गल-प्रचयकी प्राप्तिको	शक्तिकी पूर्णताको
,,	९	मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गल-प्रचयः अनुभूतार्थस्मरणशक्ति-निमित्तः मनःपर्याप्तिः द्रव्य-मनोवष्टम्भेनानुभूतार्थस्मरण-शक्तेरुत्पत्तिर्मनःपर्याप्तिर्वा	मनोवर्गणाभिर्निष्पन्नद्रव्यमनोवष्टंभेनानुभूत-स्मरणशक्तेरुत्पत्तिः मन पर्याप्ति·
,,	२५	अनुभूत अर्थके स्मरणरूप शक्तिके निमित्तभूत मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे निष्पन्न पुद्गलप्रचयको मनःपर्याप्ति कहते है । अथवा, द्रव्यमनके	मनोवर्गणाओंसे निष्पन्न द्रव्यमनके
२५६	३	निष्पत्तेः कारणं	निष्पत्तिः
,,	१५	पूर्णताके कारणको	पूर्णताको
२५७	४	इति चेन्न, पर्याप्तीनां	इति चेच्छक्तीनां
,,	२२	पर्याप्तियोंकी अपूर्णताको	शक्तियोंकी अपूर्णताको
२८३	३	परिस्पंदरूपस्य	×
,,	१४	मनके निमित्तसे जो परिस्पन्दरूप प्रयत्नविशेष	मनके निमित्तसे जो प्रयत्नविशेष
३५३	७	ज्ञानानुवादेन	ज्ञानानुवादे
३८३	९	आसंजननात्	आसंजनात्
४००	२	आसंजननात्	आसंजनात्

भाग ३

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
३	७	लोगपमाणं	लोगसमाणं
१६	७	तं पदरागारेण आगासं	तं पदरागारेण
२५	८	सव्वजीवरासिवग्गसलागाओ	×
३१	३	तेरसगुणट्ठाणमेत्तेण	तेरसगुणट्ठाण-
३६	४	जं भद्दत्तं	स भद्दत्तं

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
४६	६	अवहारविसेसेण य	अवहारविसेसेण
५१	४	पयं खंड	पयगंडं
५५	७	आगच्छदि त्ति ।	आगच्छदि ।
६०	७	„	„
६८	४	गुणिदे	गुणिदे हि
१०९	३	हेट्ठिमविरलणाए	हेट्ठिमविरलणाणं
११८	१	गुणगारो रासी	गुणगाररासी
११९	३	असंखेज्जगुणाए सेढीए	असंखेज्जगुणसेढीए
१२६	६	भणिज्जमाणं	वणिज्जमाणं
१३०	७	छडिय	छड्डिय
१३२	५	अप्पिदत्तादो	पदिदत्तादो
१४२	१	एगसेढी	एगा सेढी
१६२	१	विसेसाभावादो	विसेसाभावा
१८४	६	पेच्छामो	पच्छामो
१८५	८	„	„
१९१	५	उवरिमविरलणरुव-	उवरिमविरलण-
१९२	७	सो	पसो
१९३	५	इच्छाए	-मिच्छाए
१९८	४	-परूवय-	-परूवण-
२०१	४	देवेसु ॥ ६७ ॥	देवेसु (६७) इदि
२१५	७	-ट्ठियणए	-ट्ठियणए पुण
२१६	१	अवलंविज्जमाणे ओघपरूवणादो	अवलंवियओघपरूवणादो
२१८	१	सुत्तस्स वि	सुत्तस्स
२२४	७	होदि ।	आगच्छदि ।
४२६	२	चदुक्कसाइ-	चदुकसाइ
४४१	४	ओघत्तं	ओघत्ते
४४७	६	खवा	खवगा
४४८	५	चिय	चेय
४७६	७	पदे वो वि	पदेणावि

स—मूडबिद्रीय ताडपत्रीय प्रतियोंके वे पाठ भेद जो उच्चारण भेदसे संबन्ध रखते हैं, अतएव उनमेंसे किसीके भी रखनेमें कोई आपत्ति नहीं है ।

भाग १

६	३	विविद्दद्धि-	विविहिद्धि-
„	५	गओह-	गयोह-

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
७	१	पुप्फदंतं	पुप्फयंतं
,,	३	भूयबलिं	भूवबलिं
,,	५	हेऊ	हेउं
,,	६	आइरियो	आइरिओ
५	२	,,	,,
९	१	पयत्थ	पयट्ठ
११	२	भणिओ	भणिदो
१२	१	पज्जय	पज्जव
१५	२	सुकुक्खि-	सुवकुक्कि (-क्खि)
१६	८	मोली	मउलि
१८	७	अण्ण-णिमित्तंतर-	अण्णं णिमित्तंतर-
२५	१	णिवददि	णिप्पददि
२६	२	घादेणियरेण	घायेणियरेण
४०	२	आदीवसाण	आदि-अवसाण
५१	३	मारुद	मारुव
६२	७	वसप्पिणीए	उवसप्पिणीये
६४	२	दंसण-णाणं चरित्ते	दंसण-णाण-चरित्ते (णाणच्चरित्ते)
६६	१	जंबूसामी य	जंबूसामी च
७०	३	णिव्वुइकरे त्ति	णिव्वुइकरेत्ति
७१	७	जिणवालिदस्स	जिणपालिदस्स
,,	१०	पयं	पदं
७७	२	द्रामिल	द्राविल
८१	९-१०	जाणुग-	जाणग-
९९	३	पण्हवायरणं	पण्हवाहरणं
१०३	३	किष्किबिल	किष्कंबिल
१०८	८	दिट्ठिवादादो	दिट्ठिवायादो
११२	५	सव्वेहिं	सव्वेहि
,,	१३	उप्पाय	उप्पाद
११४	१	पगूण	पऊण
,,	८	-अणियोग-	-यणियोग-
११९	६	सुख	सुह
१२१	८	वि-सद	वि-सय
१२२	३	वि-सद	दु-सय

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
,,	५	लोक	लोग
१२३	३	अत्थाहियारो	अत्थाधियारो
१२४	४	चयण	चवण
१२६	४	पुच्छा	पच्छा
१२७	५	भवति	हवति
१३०	११	संपाहि	संपदि
१५७	२	संतमत्थ-	संतत्थ
,,	७	परिसेसादो	पारिसेसादो
१५८	५	तेहिंतो	तेहि
१७०	५	पुह भावं	पिह भावं
१८६	९	हुयवह	हुदवह
२०२	७	सुवियड	सुवियद
२१७	९	उवएसा	उवएसे
२२२	९	मेत्ति	मोत्ति (मेत्ती)
२४३	१	पिपीलिक	पिपीलिय
२५२	१	वणप्फदि	वणप्फइ
२६४	६	आदधाना	दधाना
३१३	७	पंचेंदिया त्ति	पंचेंदिय त्ति
३४३	७	णवुंसयवेदा	णवुंसगवेदा
३४७	११	सम्मूर्च्छिम	सम्मूर्च्छित
३५०	८	हारिद्द	हालिद्द
३५८	८	उवएसा	उवदेसा
३६४	१०	ओहिणाणं	ओधिणाणं
३७३	६	ज्झरिय	ज्झडिय
३९४	२	णिगोद	णियोद
४०७	४	अवराजिद	अवराइद

भाग २

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
४१७	७	चत्तारि (३ वार)	चारि (३ वार)
४१९	९	छ लेस्साओ	छल्लेसाओ
४२१	५	वा	च
,,	,,	,,	,,
,,	६	संपहि	संपदि
४३४	४	पओ	पगो

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
४४८	२	मूलोघालावा समत्ता	मूलोघालावो समत्तो
,,	८	सुद्ध कण्हेत्ति	सुद्ध कसणेत्ति
४५२	५	असंजम	असंजमो
४५३	३	असंजम	असंजमो
४५६	४	काऊ काऊ काऊ	काउ काउ तह काओ
४७१	३	पंचविधा भवंति	पंचविहा हवंति
४९३	२	आहारिणी अणाहारिणी	आहारिणीओ अणाहारिणीओ
४९७	७	तासिं चेव	तासिं
५०३	२	पक्खिऊण	पेक्खियूण
५२८	७	मणुसिणीसु	मणुसिणी-
५५९	७	परिणमिय	परिणामिय
५६३	८	कापिट्ठ	काविट्ठ
५६६	७	मणुस्साणं च	मणुसाण व
५६९	२	अदीदपज्जत्तीओ	अदीदपज्जत्तीणो
५९०	९	अणिंदियाणं	अणिंदिया
५९१	२	छव्वा	छावं
,,	,,	,,	,,
५९३	६	अट्ठारस	अट्ठारह
५९७	१	घेत्तूण	×
५९८	१०	पक्कावण	पक्कावण्ण
६००	१	पदे	पए
६०४	२	मूलोघब्भुत्त	मूलोघम्मि उत्त-
६२९	१	पेक्खिय	पेक्खिऊण
६८८	१	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि	सासणसम्माइट्ठि पहुडिं
६९९	८	ओघालावा मूलोघभंगा	ओघालाओ मूलोघभंगो
८२३	२	उवसंहरिद-	उवसंघरिद-

भाग २

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
१	२	णमिऊण	णमियूण
,,	,,	दव्वणिओगं	दव्वाणियोगं
१	५	दुविहो	दुविधो
३	१०	हेऊ	हेदू

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
५, ६	२, ३, ५, ७, ८	दुंद	दंद
६	१२	तक्त्थाभावादो	तदट्ठाभावादो
१३	४	दव्वाणतं चेदि	दव्वाणतमिदि
,,	,,	-जाणुगसरीरं	-जाणुगस्स सरीरं
१४	२	ढुक्केज्जेत्ति	ढुक्केज्जेदि त्ति
१४	२	गहेयव्वं	गहेदव्वं
१७	२	तधादंसणादो	तद्वादंसणादो
१९	७	अहवा	अथवा
२९	५	ववहारजोग्गो	ववहारजोगो
३०	५	अणाइस्स	अणादिस्स
३२	७	जधा	जहा
३२	७	मिणिज्जदि	मिणिज्जदे
३२	८	लोएण	लोगेण
३७	५	वेयणासुत्तेण	वेयणसुत्तेण, वेदणसुत्तेण
३८	७	होंति	हवंति, भवंति
४०	४	एगरूवं	एगं रूवं
४०	९	-भाजिद-	-भजिद-
४३	४	-विरलणय-	-विरलण-
६३	६	-मवहिरिज्जदि	-मवहिरदि
६४	५	अठतीस	अट्ठतीस
६७	१०	सेसुस्सासे वि	सेसुस्सासासो वि
७१	२	वलिदोवमे	पलिदोवमे
९०	२	तेणउदी	तेणउदा
९८	१०	भावमावण्णं	भावमावणं
,,	९	चउसट्ठी	चउसट्ठा
१००	१	णवणउदी	णवणउदा
१००	२	अट्ठाणउदी	अट्ठाणउदा
१००	१२	उणतीसा	उगुतीसा
११४	२	भवदि त्ति	भवदीदि
१२३	३	सव्व-भावा	सव्व-भावो
१४२	९	-सूईदो	सूचीदो
१५७	९	-स्सरण	चरण
१७३	१	आणेयव्वाओ	आणेदव्वाओ

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविद्रीका पाठ
१९०	२	एगुणवीसेहि	एक्कूणवीसेहि
२०१	३	दुर्ग	दुयं
२१०	१०	णेदव्वो	णेयव्वो
२१३	४	-अट्ठम-	-अट्ठ-
२१९	७, ९	वेसय-	विसय-
२२३	१	-भागेण	-भाएण
"	५	भागे	भाए
२२४	१	संपहि	संपदि
२२८	२	कप्पमाणपरूवणा	कप्पयमाणपरूवणादो ।
२३९	१४	भाणेदव्वा	भाणिदव्वा
२४४	७	सेसगइपडिसेहो	सेसगइपडिसेधो
२४६	५	-मिच्छाइट्ठीण	-मिच्छाइट्ठीणं
२६२	१२	वियहिचारे	वभिचारे
२७२	१०	पदरस्सेदि	पदरस्सेत्ति
२७३	३	विरोहादो	विरोहा
२७८	३	अण्णूणाहियाओ	अणूणाहियाओ
२९५	२	चउग्गइ-	चउगइ-
३३०	२	-मकाइत्त-	-मकाइयत्त-
३३७	६	गुणेज्ज-	गुणिज्ज-
३३७	६	पवेसमाण-	पविसमाण-
३४८	३	-भावओ	-भुदओ
३६०	१	पज्जत्तरासिणा	पज्जत्तरासिएहि
३७५	३	पक्खेविय	पक्खिविय
३७९	१	पविसिदव्वाणि	पवेसिदव्वाणि
३९०	३	-जोगरासिं	-जोगरासीओ
३९७	१	तमद्धाए गुणगारेण	तमद्धागुणगारेण
३९७	१३	-कायजोगम्हि	-कायजोगिम्हि
४०८	५	-मणेयंतमिदि	-मणेयंतियमिदि
४२०	२	पवेसविधी	पवेसणविधी
४२५	११	पडिवाडीए	परिवाडीए

छ —मूडबिद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके वे पाठ जो पाठ या अर्थकी दृष्टिसे अशुद्ध प्रतीत हुए।

नोट—जिन पाठोंके संबंधमें कुछ विशेष कहना है वह नीचे पाद टिप्पणमें देखिये। जो पद पाठ या अर्थकी दृष्टिसे स्पष्टतः अशुद्ध प्रतीत हुए उनके ऊपर कोई टिप्पण देनेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई।

भाग १

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
८	३	अरिहंताणं	अरहंताणं
१३	१	उजुसुद	उजुखुद
१६	४	णियत	च्चियत (?)
,,	८	तस्यायुक्तं	तस्याप्युक्तं
२१	१	अणुवजुत्तो	अणवजुत्तो
३१	५	विपर्यस्यतोः	विपर्यस्थयोः
४४	४	अरिहंता	अरिहंतः
,,	५	,,	,,
५३	५	तत्कणादप्युप-	तत्करणादप्युप-
५८	११	अव्वुच्छिण्णं	अव्वच्छिण्णं
६०	३	व्याकुलता	व्याकुल
६४	६	दिव्वज्झुणी	दिव्वज्झाणे
६८	५	पादमूलमुवगया	पादमूलमवगया
८२	१०	जीवट्ठाणे	जीवट्ठाण
८३	८	जीवट्ठाणं	जीवट्ठाणे

---

८ ३ पृष्ठ ४२ पर जो णमोकार सूत्रका अर्थ प्रारंभ किया गया है वहां 'अरिहंताणं' पाठ ही ग्रहण किया गया है और मूडबिद्री प्रतियोंसे भी वहां कोई पाठान्तर प्राप्त नहीं हुआ। उसके अर्थ करनेमें भी धवलाकारने 'अरिमोंह.' इत्यादि पदांश ग्रहण किया है। इससे अनुमान होता है कि धवलाकारके सन्मुख 'अरिहंताणं' पाठ ही रहा है। 'अरिहंताणं' पद ग्रहण करनेसे प्राकृत नियमानुसार उसका 'अरि+हंता' व 'अर्हत्' दोनों अर्थ हो सकते हैं (देखो हैम प्राकृत व्याकरण ८, २, १११) किन्तु अरहंत से केवल अर्हत् अर्थ ही निकल सकता है 'अरिहंता' नहीं।

३१, ५ 'विपर्यस्थयो' पाठ तो व्याकरणसे शुद्ध है ही नहीं, किन्तु यदि उसके स्थान पर 'विपर्ययस्थयो.' पाठ हो तो ग्राह्य हो सकता है, क्योंकि उसका वही अर्थ निकल आता है जो प्रकृतोपयोगी है।

४४, ४ ५ इसका विचार हम पहले ही कर चुके हैं। देखो षट्खण्डागम, भाग १, भूमिका पृ. १२ व ८७

मूडविद्रीकी ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलान

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविद्रीका पाठ
९२	३	वियोगापायस्य	वियोपायस्य
९७	१	पुरिसं च	पुरिस च
१०५	१	कहाओ	×
,,	२	सुद्धिं करेंती	सुद्धिमकरेंती
१११	२	उत्तं च	उत्ता च
११२	३	हवइ	×
१२४	१२	णामं कम्माणं	णाम कम्माणं
१५८	४	जमत्थित्तं	जमतित्थित्तं
१८६	८	जेसिं	जंस
२१९	६	तो वि	ते वि
२२०	३	अब्भहिय	अव्वहिय
२२२	४	णिवट्टति	पिव्वुदिचि (?)
२६२	९	असंज्ञिप्रभृतयः	संज्ञिप्रभृतयः
२९८	६	नैप	नैष दोषः
३१५	२	बाधा	बाधात्
३२६	१०	महव्वदाइं	महव्वदेसु य
३२८	८	तत्रैतासां	तत्रैतेषां
३३३	१	असमादेवार्षात्	यस्मादेवार्षात्
३५९	१	खइयुवसमियं	खदियुवसमियं
३६३	७	इदि ॥ ११९ ॥ अत्रैक-	इत्यत्र एक-
३६६	५	स्थितम्	स्थितः
३७६	७	पंचयमः	पंचयमाः
,,	८	,,	,,
३८०	११	चक्षुषा	चक्षुषो
३९२	८	तद्	ते

भाग २

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविद्रीका पाठ
४१२	५	क्षयोपशमापेक्षया	क्षयोपशमापेक्ष्य
४१३	३	मैथुनसंज्ञायाः	मैथुनसंज्ञायां
,,	,,	विशेषलक्षण	विशेषलक्षणं
,,	५	आलीढबाह्यार्थाः	आलीढबाह्यार्थ
४१४	१०	वेदमार्गणाप्रभेदः	वेदमार्गणाप्रभेदाः
४१७	११	आणप्पाणप्पाणा	आणपाणप्पाण

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
४२०	७	सिद्धगदी	सिद्धगदी वि
४३३	३	-सण्णा	सण्णाओ
४४३	६	-मणिच्चमिदि	-मणिच्चमि तेण
४५३	३	तिण्णि अण्णाण	तिण्णि णाणाणि
४९३	३	पज्जत्तजोणिणीणं	पज्जत्तजोणिणी
५१३	७	तेणित्थिवेदे पि	तेणित्थिवेदो पि
६०९	११	रत्ताअंब	वत्ताअंय
६५३	५	सत्तब्भुवगमादो वा	सत्तब्भुवादो वा
८२३	३	ओदिण्णाणं	उदिण्णाणं

भाग ३

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
२	५	सपरप्पगासओ	सपरप्पगासदि
५	११	-मनेकधा	-मनेकवा
६	७	दव्वपमाणाणं	दव्वपमाणाणं परूवणाणं
७	२	पूर्वमव्ययीभावस्य	पूर्वमव्यायिभावस्य[1]
१२	१	भेंडकम्मेसु	भेद्कम्मेसु
१८	८	अण्णभेदस्स	उप्पण्णभेदस्स
२२	१	अणंतगुणाओ	अणंतगुणादो
२५	१०	णट्ठंतस्स	णिट्ठंतस्स
२६	६	तात्तियमेत्तो	तात्तियाणिमेत्तो
२७	९	एवं महंती	एम्महंती
२८	२	मोगाढे	मोगादे
२८	८	अवहिरिज्जमाणे सव्वे	अवहिरिज्जमाणे सव्वे समया अवहिरिज्जमाणे सव्वे
३२	३	अणंताणंता	अणंता[2]
३८	२	अइंदियत्थविसए	अइंदियत्थविसयो
५२	५	सव्वजीवरासिणा तस्स घणो	सव्वजीवरासिणा पुणो
५८	३	अट्ठपरूवणा	अट्ठरूवणा

---

१ संस्कृत व्याकरणके नियमानुसार ' अव्ययीभाव ' ही होता है, किन्तु छंदकी रक्षाके हेतु वहां ह्रस्वत्व कर लिया जाना पड़ता है।

२ आगे इन्द्रिय आदि मार्गणाओंमें, जिनका प्रमाण क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त है, उनका प्रमाण ' अणंताणंता ' इसी रूपमें बतलाया गया है। देखो सूत्र ७६, ९७ व १८९.

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
६७	४	-मुहुत्तब्भुवगमादो।	-मुहुत्तब्भुगदो
७०	३	-संजुद-	-संजत्त
९९	९	छासट्ठि-	छावत्तरि-
,,	,,	परिमाणं	पमाणं[1]
१००	५	अट्ठसमयाहिय-	अट्ठसमयाविय
१०५	७	अध वेरूवाहिय-	अथवा रूवाहिय-
१२३	४	कट्ठकम्मादिसु	कट्ठमादिसु
१३१	१	ओगाहे	ओगाडे
१३३	७	जडाहि	जदाहि
१९१	९	अवणिदसेसपमाणं	अवणिदे सेसपमाणं
१९१	९	हेट्ठिमविरलणाए	विरलणाए
१९२	२	पुव्वट्ठविदवेति-	पुव्वट्ठविदजेत्ति-
१९५	६	सोधिदे	सोविदे
१९९	३	अण्णोण्णब्भासेण	अण्णोण्णब्भासो
२०९	४	पदरम-	पढम-
२२७	४	अदीव-	अदीद-
२३२	३	भवणादियाणं	भणादियाणं
२३२	८	छज्जोयण-	तिण्णिजोयण-
२३६	१०	तव्वग्गवण्णं	तत्तस्स वग्गं
२४३	१	पज्जत्तअवहारकालो	पज्जत्तामिस्सअवहारकालो
२४५	७	असंखेज्जदि-	असंखेज्जादि-
२६०	६	कोडाकोडाकोडाकोडीए	कोडाकोडाकोडीए
२६२	११	तदियवग्गमूलगुणिदेण	तदियवग्गमूलगुणिदेण। तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ[2]
२६३	१	णेव	चेव
२६८	३	असंखेज्जासंखेज्जाहि	असंखेज्जासंखेज्जाओ
२७५	५	बहुत्ताविरोहादो	बहुत्ताविरोहो
२७९	६	घणधारुप्पण्ण-	घडणधारुप्पण्ण-
३०७	२	गंधव्व-णागादि	गंधव्वणिगादि
३०७	४	वोच्छेज्जंति	वोच्छेज्जंतो

---

१ 'पमाण' पद रखनेसे अर्थमें कोई भेद न पड़ते हुए भी छंदोभंग दोष हो जाता है।

२ 'तिस्से सेढीए' आदि पाठ ऊपरसे पुनरावृत्त होगया है।

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविद्रीका पाठ
३४१	२	घणाघणे	वेरूवे
३४२	१०	ह्रिये	ह्वे
३५३	५	आगच्छादि ।	आगच्छादि त्ति गुणेऊण भागग्गहणं कदं ।
३५९	७	-सेसरासिणा	-सेसरासि
३७२	३	-सरीरपज्जत्तेण	सरीरपज्जत्त
३८१	१२	किमह्विओ ऊणो	किमादीओ ऊणा
३८२	३	बादरआउपज्जत्त-	बादरवाउपज्जत्त
३८४	१	-दव्वमसंखेज्जगुणं	-दव्वमणंतगुणं
३८६	९	जदो	जादो
४०४	४	पुणरवि ओदरमाणा	पुण दुवियोदरमाणा
४१२	१	मोसवचिजोगि-सच्चवचिजोगि	मोसवचिजोगि संभवदि
४१४	२	संखेज्जगुणाओ	असंखेज्जगुणाओ
४२५	८	-भागमेत्तो	भागमेत्ते
,,	९	ण च	णव
,,	९	णिग्गम-पवेसाणं	णिग्गमपवेसणं
४३०	४	अकसाइणो ण	अकसाइणा
४४८	११	चेवज्झवसाया	चेदज्झवसाया
४५४	६	चक्खुदंसणट्ठिदी	चक्खुदंसणट्ठिदीओ
४७४	६	एसो	एगो
४८१	३	णाभद्दत्तं	ण भद्दत्तं
४८४	१०	अणाहारिअसजद-	आहारिअसंजद-
४८६	१०	(खवगा संखेज्जगुणा)	बंधगा संखेज्जगुणा

